प्राकृत ग्रन्थ परिषद् ग्रन्थाङ्कः ४१

सिरिसोमप्पहायरिय-विरइयं

सुमइनाहचरियं

संपादक
डॉ. रमणीक शाह

द. मा. प्राकृत ग्रन्थ परिषद्
अहमदाबाद
ई.स. २००४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Prakrit Text Society Series No. 41

General Editors
Dr. N. J. Shah
Dr. R. M. Shah

SIRISOMAPPAHĀYARIYA-VIRAIYAṂ

SUMAINĀHACARIYAṂ

Edited by
Dr. RAMANIK SHAH

D. M. PRAKRIT TEXT SOCIETY
AHMEDABAD
2004

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Published by :
Ramanik Shah, Secretary
D. M. PRAKRIT TEXT SOCIETY
Shree Vijay-Nemisurishvarjee
Jain Swadhyay Mandir,
12, Bhagatbaug Society,
Sharada Mandir Road, Paldi,
Ahmedabad - 380 007.

First Edition : 2004

Price Rs. 250/-

Available From :

1. Saraswati Pustak Bhandar, Ratanpole, Ahmedabad-1.
2. Parshwa Prakashan, Zaveriwad, Relief Road, Ahmedabad-1.
3. Motilal Banarasi Das, Delhi, Varansi.

Printed by :

Mayank Shah
Laser Impressions,
215, Gold Souk, Off. C.G.Road,
Ahmedabad-380 015

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्राकृत ग्रन्थ परिषद् ग्रन्थाङ्क : ४१

सिरिसोमप्पहायरिय-विरइयं
पाइयभासाबद्धं

सुमइनाह-चरियं

: संपादक :
डॉ. रमणीक शाह

द. मा. प्राकृत ग्रन्थ परिषद्
अहमदाबाद
ई. स. २००४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रकाशक :
रमणीक शाह, सेक्रेटरी
द. मा. प्राकृत ग्रन्थ परिषद्,
श्री विजयनेमिसूरीश्वरजी जैन स्वाध्याय मंदिर,
१२, भगतबाग सोसायटी, शारदामंदिर रोड, पालडी,
अहमदाबाद - ३८० ००७

प्रथमावृत्ति : जनवरी २००४

मूल्य : रू. २५०/-

मुद्रक :

मयंक शाह
लेसर इम्प्रेशन्स,
२१५, गोल्ड सौक, सी. जी. रोड,
अहमदाबाद - ३८० ०१५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

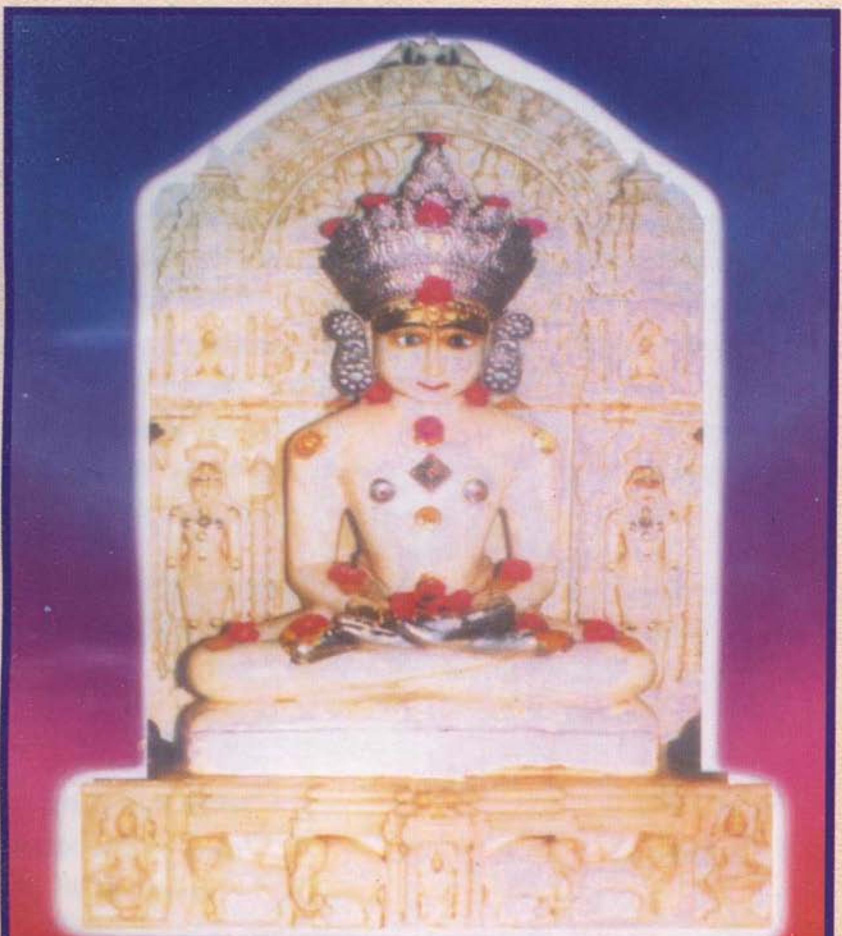

સાચાદેવ શ્રી સુમતિનાથ ભગવાન (માતર)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वावाल्लाकहाशो॥ निर्वाणावसथस्यातारणमहा स्वलावहूतास्तुसावकः श्रीमुनिचंद्रसूरिपरश्रीमानदेवप्रभुः॥ शिष्यस्त
ग्योरञ्जितदेवइतिश्रसिद्धः॥ सूरिःसमग्रगुणरत्ननिधर्बभूव॥ श्रीतियदेङ्किमाल्लमुनिहगरा॥ तेरास्माद्दितश्रुतरसातरसावबे
ध॥ २ श्रीदेवसूरिप्रमुखावदूवरान्पपितत्पादपद्मयाजहंसाः॥ यथामवाधारविरस्थितीना॥ नालीकमित्रीमुदमाततान॥ ३ वि
शारदश्रीरामणरञ्जितदेवसूरिपालोविनयतिलकाः स्नवद्धिजयसिंहसूरिरेन्द्रः॥ जगत्त्रयविजहत्तिविमलशीलवृम्
हंतव्याप्तदिनकदावनस्मरशारेर्यदीयमन॥ ४ ॥ गुतास्तस्यपदालाजपसादान्मदधीरपि॥ श्रीमान्नसामप्रसाम्नायेष
रित्रस्तुमतर्वधात्॥ ५ प्राग्वाटान्वयसागरेन्दुरसमप्रज्ञः क्षमी वाग्मीसूक्तसुधानिधानमजनिश्रीपाल्हनामाउमान्॥ यत्ला
काननरकाव्यरञ्जितमतिःसाहित्यविद्यारतिः॥ श्रीसिद्धाधिपतिः कवीद्रतिलककृत्वातितिव्याहरन्॥ ६ स्तुतस्सूस्मक
मारपालन्टपतिप्रीतिःपदेश्रीमतासुतस्संकविचक्रमस्तकमणिः श्रीसिद्धपालोऽनवत्॥ यस्यालोकपरा
पकारकरुणासौजन्यसत्यक्षमादाक्षिण्यैःकलितकलेरकृतयुगारंभजनामन्यात्॥ ७ तस्यपौषधशालायाश्व
रणदिनपाटका॥ निष्प्रत्यहमिदंप्राकृपरमार्थसमार्थित॥ ८ अनालागाकिंचिकिमपिमतिविकल्पवरातः॥ कृताप्यास्त
क्यनस्मृतिविरहादाषणकिमपि॥ साधाःसूत्रशास्त्रयदिहकिमपिप्रोक्तमखिलक्षमंताधीमनस्सूदसमदयाहसंहृदया॥
९ एवंग्रंथाग्रसहस्त्र ९ शतद २१॥ छ॥ इतिसुमतिनाथचरित्रंसमाप्तं॥ छ॥ श्री॥ छ॥ श्री॥ छ॥ श्री॥ छ॥ श्री॥ छ॥ श्री॥ छ॥

विमलगच्छ उपाश्रय, अहमदाबाद की हस्तप्रत का अंतिम पत्र

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रकाशकीय

प्राकृत ग्रंथ परिषद्-ग्रंथमाला के ४१वें पुष्प के रूपमें सुमइनाहचरियं (सुमतिनाथ-चरित)का प्रकाशन करते हुए हमें हर्ष अनुभव हो रहा है। प्राकृत गद्य-पद्यबद्ध सुमतिनाथ-चरित आचार्य सोमप्रभसूरि की रचना है। आचार्य सोमप्रभसूरि श्वेताम्बर परम्परा में ४३वें पट्टधर थे। गूर्जरनरेश कुमारपाल एवं आचार्य हेमचन्द्रसूरि के समकालीन आचार्य सोमप्रभसूरि प्रतिभावंत कवि भी थे। उनकी प्रसिद्ध रचना 'कुमारपाल प्रतिबोध' गायकवाड ओरिएण्टल सिरीझ में प्रसिद्ध हो चूकी है। सुमितनाथचरित अद्यापि अप्रकाशित था। कुमारपालप्रतिबोध की तरह यह भी एक उपदेशात्मक कथाओं का कोश है। प्राकृत भाषा, जैन धर्म और दर्शन, लौकिक कथापरंपरा और समसामयिक सांस्कृतिक सामग्री के अध्ययन के लिए सुमतिनाथचरित एक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ है। प्राकृत ग्रंथ परिषद् के मंत्री एवं प्राकृत भाषा-साहित्य के विद्वान डो. रमणीक शाहने इसका संशोधन-संपादन किया है। डो. शाह को प्राकृत ग्रंथ परिषद् की ओर से मैं धन्यवाद देता हूँ।

इस ग्रंथ के प्रकाशन के लिए पूज्यपाद आचार्यदेव श्रीमद् विजयनरचंद्रसूरीश्वरजी म. सा. के उपदेशसे हसमुखलाल चुनीलाल मोदी चेरिटेबल ट्रस्ट, मुंबई ने रू. ८०,०००/- दिया है। एतदर्थ प. पू. आचार्यश्री एवं दाताश्री के हम आभारी हैं। सुचारु मुद्रांकन के लिए श्री मयंक शाह को धन्यवाद।

द. मा. प्राकृत ग्रन्थ परिषद्
अहमदाबाद - ३८० ००७.
दिनांक : १-१-२००४

नगीन शाह
अध्यक्ष

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अनुक्रमणिका

संपादकीय	७--२१
मूल सुमइनाह-चरियं	१-५१३
पढमो पत्थावो	१-२४
बिइओ पत्थावो	२५-४८
तइओ पत्थावो	४९-६८
चउत्थो पत्थावो	६९-१२४
पंचमो पत्थावो	१२५-२१४
छट्ठो पत्थावो	२१५-२४८
सत्तमो पत्थावो	२४९-३२७
अट्ठमो पत्थावो	३२८-३८४
नवमो पत्थावो	३८५-४९४
दसमो पत्थावो	४९५-५१४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संपादकीय

'कुमारपालप्रतिबोध' जैसी विशिष्ट कृति के रचयिता, राजा कुमारपाल एवं आचार्य हेमचन्द्रसूरिके समकालीन, आचार्य सोमप्रभसूरि विरचित प्राकृतभाषाबद्ध अनुपम चंपूरचना सुमइनाह-चरियं (सुमतिनाथ-चरित) यहाँ प्रथमबार संशोधित-संपादित करके प्रकाशित करते हुए अत्यंत आनंद अनुभव कर रहा हूँ ।

स्व. आगमप्रभाकर पूज्य मुनिराजश्री पुण्यविजयजी ने इसकी नकल अहमदाबाद के 'लवारनी पोळ जैन-ज्ञान-भंडार' की हस्तप्रत पर से करवाई थी और दूसरी तीन हस्तप्रतों से पाठान्तर भी लिखवाये थे । उसी सामग्री की सहाय से प्रस्तुत संपादन किया गया है । परम पूज्य आचार्यश्री प्रद्युम्नसूरिजीने यह जानकर की मैं इस ग्रंथका संपादन कर रहा हूँ, महती कृपा करके दूसरी दो हस्तप्रतों की झेरोक्ष नकलें मुझे दी । ग्रंथका संपादन कार्य पूर्ण होने आया था अतः इन दोनो हस्तप्रतों के पाठान्तर तो मैं लिख नहीं पाया, किन्तु मूल में आते अपभ्रंश अंश की शुद्धि करने के लिए ये दोनों झेरोक्ष कापियाँ मुझे अत्यंत सहायभूत बनी ।

उपरोक्त सभी प्रतियों का परिचय इस प्रकार है—

(१) ल. प्रति :-

'लवारनी पोळ जैन ज्ञान भंडार', अहमदाबाद की १८० पत्रों की कागजी प्रत । कविप्रशस्ति के अंत में लिपिकार-प्रशस्ति इस प्रकार है—

॥ ग्रंथाग्रं ९८२१ ॥ छ ॥ इति सुमतिनाथपुस्तकं लिखितं समाप्तमिति ॥ छ ॥ शुभं भवतु ॥ कल्याणमस्तु ॥ चिरंजीवी ॥

(२) पा. प्रति :-

पूज्यपाद मुनिराज पुण्यविजयजी ने इस प्रति के पत्रों की संख्या २३६ दीखाई है (इन में पत्र १०८ दुबारा लिखा गया है ।)[१]

ग्रंथ के अंत में लिपिकार-प्रशस्ति इस प्रकार है—

एवं ग्रंथाग्रं सहस्र ९ शत ६२१ ॥ छ ॥ सुमतिनाथचरित्रं समत्तं ॥ छ ॥ श्री ॥ शुभं भवतु ॥

१. यह हस्तप्रत हेमचंद्राचार्य ज्ञान मंदिर, पाटन के संग्रह की प्रत नं. १६६२ होने की संभावना है ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

यादृशं पुस्तके दृष्टं तादृशं लिखितं मया ।
यदि शुद्धमशुद्धं वा मम दोषो न दीयते ॥

भग्नपृष्ठि कटि ग्रीवा बद्धमुष्ठिरधोमुखे ।
कष्टेन लिखितं शास्त्रं यत्नेन परिपालयेत् ॥

॥ छ ॥ संवत् १६५४ वर्षे पोस शद १० शं. लखितम् ॥ छ ॥

(३) रा. प्रति :-

यह प्रति राधनपुर(गुजरात) के किसी भंडार की होने के पू. पुण्यविजयजी के उल्लेख के अलावा अन्य कुछ विगतें मिली नहीं हैं ।

(४) दे. प्रति :-

इस प्रति अहमदाबाद के 'देवशानो पाडो ज्ञान भंडार' की प्रत होने का स्व. पूज्य मुनिजी ने लिखा है, इसके अलावा कुछ विगतें प्राप्त नहीं हैं ।

(५) हे. प्रति :-

पूज्य आचार्यश्री प्रद्युम्नसूरिजी से प्राप्त दो झेरोक्ष में से एक यह प्रत पाटन(उ. गुज.) के हेमचन्द्राचार्य ज्ञानभंडार की १५६५७ नंबर की प्रत है । उसका आदि-अंत इस प्रकार है—

आदि :-

॥ई०॥ ॐ नमो श्री वीतरागाय ॥ ॐ नमो श्री सारदायै नमः ॥ ॐ नमो श्री गुरुभ्यो नमः ॥

जयइ जयकप्परुक्खो पढमजिणो जस्स खंधसिहरेसु ।
सउणाण वल्लहा वालवल्लरी सहइ सिद्धिफला ॥१॥

अंत :-

ग्रंथाग्रं ॥ ९८५१ ॥ श्री सुमतिनाथ पुस्तकं लिखितं, समाप्तमिति ॥छ॥ संवत् १८४४ रा वर्षे काती वदी १० दिने लिखतं । पं. दौला ॥ श्री पाटणमध्ये ॥

(६) वि. प्रत :-

पूज्य आचार्यश्री प्रद्युम्नसूरिजी से प्राप्त झरोक्ष कापियों में से दूसरी २०५ पत्र की यह कागजी प्रत श्रीमत् पंन्यास श्री दयाविमलजी गणी शिष्य पंन्यासजी सौभाग्यविमलजी गणी ज्ञानभंडार, कालुशीकी पोळ, विमलगच्छ उपाश्रय, अहमदाबाद की है । उसका नं. ३३८० है ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आदि :-

॥र्द०॥ ॐ नमः श्री सुमतिजिनाय ॥

जयइ जय कप्परुक्खो पढम जिणो जस्स खंधसिहरेसु ।

सउणाण वल्लहा वालवल्लरी सहइ सिद्धिफला ॥१॥

अन्त :-

कवि-प्रशस्ति के अनन्तर प्राप्त लिपिकार-प्रशस्ति निम्न है–

एवं ग्रंथाग्रं सहस्र ९ शत ६२१ ॥ छ ॥ इति सुमतिनाथचरित्रं समत्तं ॥ छ ॥ श्री ॥ छ ॥ श्री ॥ छ ॥ श्री ॥ छ ॥ श्री ॥ छ ॥ श्री ॥ छ ॥

संपादन-पद्धति

इन हस्तप्रतों में **ल.**, **रा.** और **हे.** प्रतों के पाठ समान हैं और **पा.**, **दे.** तथा **वि.** प्रतों के पाठ समान हैं। इस तरह इनमें दो पाठ-परंपरा प्राप्त होती हैं। किन्तु दोनों परंपरामें पाठभेद नगण्य ही हैं।

ग्रंथकार ने मूल ग्रंथ को पूर्वार्ध-उत्तरार्ध स्वरूप दो भागो में ही विभाजित किया था। पूर्वार्ध में सुमतिनाथ तीर्थंकर के पूर्वजन्म के दो भवों का निरूपण किया गया था और उत्तरार्धमें तीर्थंकर-भव का। प्रस्तुत संपादन में पूर्वाध-उत्तरार्ध दोनों को पाँच-पाँच प्रस्तावों में विभाजित कर कुल दश प्रस्तावों में समग्र ग्रंथ विभाजित किया गया है। प्रत्येक प्रस्ताव के पाठान्तर प्रस्ताव के अंत में दिये गये हैं। पद्यों के क्रमांक नये सिरे से दिये गये हैं।

आ. सोमप्रभसूरि और उनकी कृतियाँ

सुमतिनाथचरित्र के रचयिता आचार्य सोमप्रभसूरि राजा कुमारपाल और आचार्य हेमचन्द्रसूरि के समकालीन थे। सुमतिनाथचरित्र की प्रशस्ति(प्रस्तुत ग्रंथ, पृ. ५१३-५१४) में उन्होंने अपनी गुरु-परंपराका एवं अपने समकालीन अन्य महानुभावो का ब्योरा दिया है। प्रशस्ति का अनुवाद इस प्रकार है–

"विशाल वृद्धगच्छ(चन्द्रगच्छ)स्वरूप गगनमण्डलके चंद्र और सूर्य समान, पृथ्वी के कर्णाभूषणरूप, धर्मरूपी रथ के दो धौरेय समान, संपूर्ण जगत के तत्त्वका अवलोकन करनेवाले दो नयन के समान, निर्वाणरूप महालय के तोरणद्वार के दो महास्तंभ समान थे श्रीमुनिचन्द्रसूरि और दूसरे श्रीमानदेवसूरि। उन दोनों के शिष्य, समग्र गुणरत्नों के निधि समान, प्रसिद्ध आचार्य हो गये अजितदेवसूरि, जिनके चरणकमलमें मुनिगणरूपी भ्रमर-पंक्ति श्रुत-रस के आस्वाद के लिए लगी रहती थी।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

श्रीदेवसूरि प्रमुख अन्य भी उनके चरणकमलों में हंस समान आचार्य हो गये, जिनकी निराबाध स्थिर सत्यपूर्ण मैत्री प्रमोद का विस्तार करती थी।

विशारद-शिरोमणि अजितदेवसूरि-प्रभु के विनेयतिलक समान विजयसिंह गुरु हुए जिनके मन को विमल शीलरूप कवच से आवृत्त होने के कारण कभी भी तीनों जगत के विजेता कामदेव के शर भी भेद नहीं पाये थे।

ऐसे गुरु के चरणकमल की कृपासे मन्दबुद्धि होने पर भी श्रीमान् सोमप्रभाचार्य ने सुमतिनाथचरित्र की रचना की।

प्राग्वाटवंशरूप सागर की वृद्धि करने में चन्द्र समान, असाधारण प्रज्ञावाले, कृतज्ञ, क्षमाशील, वाग्मी, सूक्ति-सुधानिधि श्रीपाल नामक कवि हुए।

उनके लोकोत्तर काव्यों से प्रसन्न, साहित्य और विद्या के रसिक श्री सिद्धराज इस कवीन्द्रतिलक को भ्राता समान मानते थे।

उनके पुत्र कविचक्रमस्तकमणिरूप, बुद्धिमानों में अग्रणी, श्री सिद्धपाल हुए, जो कुमारपाल नृपति के प्रीतिपात्र थे। परोपकार, करुणा, सौजन्य, सत्य, क्षमा, दाक्षिण्य आदिसे युक्त उनको देख के लोक कलियुग में कृतयुग का आरंभ हुआ मानते थे।

अणहिलपुर-पाटनकी उनकी पौषधशाला में रहते हुए यह परमार्थ-समर्थित चरित की रचना मैंने की है।

कुछ अज्ञान के कारण, कुछ मतिमंदता के कारण, कुछ अति उत्सुकता के कारण और क्वचित् स्मृति दोष के कारण मैंने शास्त्र-विरुद्ध जो कुछ भी कह दिया हो, तो मुझे सब दयापूर्ण हृदयवाले बुद्धिमान जन क्षमा करें।"

इस प्रशस्ति से दो निर्देश प्राप्त होते हैं–

(१) सोमप्रभसूरि चन्द्रगच्छ के आचार्यद्वय मुनिचन्द्रसूरि-मानदेवसूरि के शिष्य अजितदेवसूरि (जिनके गुरुबंधु देवसूरि–प्रसिद्ध वादिदेवसूरि थे) के शिष्य विजयसिंहसूरि के शिष्य थे।

(२) प्रसिद्ध चौलुक्य राजा सिद्धराज जयसिंह के मित्र कवि श्रीपाल का पुत्र कवि सिद्धपाल राजा कुमारपालका मित्र था। उनकी पौषधशाला में अणहिलपुर पट्टन में रह कर सोमप्रभाचार्य ने सुमतिनाथचरित की रचना की थी।

सोमप्रभाचार्य की दूसरी प्रसिद्ध रचना 'कुमारपालप्रतिबोध' की प्रशस्ति से भी यही तथ्य उजागर होते हैं। वहाँ पर कर्ता ने कुमारपालप्रतिबोध-अपरनाम जिनधर्मप्रतिबोध-का रचना समय विक्रम संवत १२४१ (ई. स. ११८५) बताया है। अर्थात् कुमारपाल के अवसान-वर्ष वि. सं. १२३० (ई. स. ११७४) के ग्यारह वर्ष के बाद इसकी रचना हुई थी।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सोमप्रभाचार्य के किसी शिष्यने आचार्य के शतार्थ काव्य में गुरुस्तुतिरूप जो पद्य जोड़ दिये हैं, उन से उनके पूर्व जीवन पर थोडा प्रकाश पडता है—

"मंत्रियों में मुकुटरूप प्राग्वाट जाति के जैन श्रावक जिनदेव थे। उनके सज्जन-शिरोमणि पुत्र सर्वदेव थे। सर्वदेवके पुत्र सोमप्रभने कुमारावस्था में जिनदीक्षा ली थी। वे शास्त्रोंके पारगामी, तर्कपटु, शीघ्रकवि और उत्तम व्याख्याता थे।"[१]

सुमतिनाथप्रभुचरित्र-भाषांतर की अपनी प्रस्तावना में पू. मुनिश्री रवीन्द्रसागरजी ने सोमप्रभसूरि के जीवन के बारेमें लिखा है— "वि. सं. १२३८ महा सुदी ४ शनिवार के दिन आचार्यश्री के करकमलों से प्रतिष्ठित चतुर्विंशति जिन मातृका-पट श्री शंखेश्वर तीर्थ में विद्यमान है।

वि. सं. १२८३ का चातुर्मास वडाली में करके, चातुर्मास पूर्ण होने पर छ'री पालक संघ के साथ वि. सं. १२८४ में सिद्धाचल की यात्रा आचार्यश्री ने की थी। वि. सं. १२८४ का चातुर्मास अंकेवालिया में किया, उसी चातुर्मास समयमें ही आचार्यश्रीका स्वर्गवास हुआ।"[२]

उपरोक्त तथ्यों के स्रोत का मुनिजी ने उल्लेख नहीं किया है। यदि उपरोक्त उल्लेख सही हैं, तो हम सोमप्रभसूरि का जीवन-काल विक्रमीय १३वीं सदी के प्रारंभ से वि. सं. १२८४ तक का मान सकते हैं।

इस तरह आचार्य सोमप्रभसूरि अपने समय के एक समर्थ प्रभावक आचार्य थे। उनका तत्कालीन जैन आचार्यों से एवं अन्य विद्वानोसे घनिष्ठ संबंध था। उनके

---

१. प्राग्वाटान्वयनीरराशिरजनीजानिर्जिनार्चापरः
संजातो जिनदेव इत्यभिधया चूडामणिर्मन्त्रिणाम्।
यस्यौदार्य-विवेक-विक्रम-दया-दाक्षिण्यपुण्यैर्गुणैः
साम्यं लब्धुमहर्निशं जगदपि क्लिश्यन् विश्राम्यति ॥
तस्याऽऽत्मजः सुजनमण्डलमौलिरत्न-
मुज्जृम्भितेन्द्रियजयोऽजनि सर्वदेवः।
एकस्थसर्वगुणनिर्मितकौतुकेन
धात्रा कृतोऽयमिति यः प्रथितः पृथिव्याम् ॥
सूनुस्तस्य प्रथमकमलादर्पणः पुण्यकायः
कौमारेऽपि स्मरमदजयी जैनदीक्षां प्रपन्नः।
विश्वस्यापि श्रुतजलनिधेः पारमासाद्य जज्ञे
श्रीमान् सोमप्रभ इति लसत्कीर्तिराचार्यवर्यः ॥
यो गृह्णाति समश्रुतं वहति यस्तर्केऽद्भुतं पाटवं
काव्यं यस्त्वरितं करोति तनुते यः पावनीं देशनाम्।

२. सुमतिनाथप्रभुचरित्र, भाग-२, अनुवादक मुनि रवीन्दसागरजी, आत्मानंद जैन सभा, भावनगर, प्रस्तावना पृ. १२।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

समय के गूर्जरनरेश कुमारपाल आदि भी उनका बहुमान करते थे। उन्होंने अपनी विशिष्ट कविप्रतिभासे कई संस्कृत, प्राकृत ग्रंथों की रचना की थी।

वे भगवान महावीर से चलनेवाली अपने गच्छ की पट्टपरंपरा के ४३वें पट्टधर आचार्य थे। उनके बाद उनकी पट्ट--परंपरा में ४४ वें पट्टधर आचार्य जगच्चन्द्रसूरि हुए, जिन्हें प्रकृष्ट तपश्चर्या के कारण उदयपुर के राणा ने 'तपा' बिरुद दिया था। उन्हीं के समय से बृहद्गच्छ 'तपगच्छ' नाम से प्रसिद्ध हुआ।

सोमप्रभसूरिकी कृतियाँ –

सोमप्रभसूरि की पाँच रचनाएँ -(१)सुमतिनाथ चरित्र (२) सूक्ति- मुक्तावली, (३) शतार्थ काव्य, (४) शृंगारवैराग्यतरंगिणी, (५) कुमारपालप्रतिबोध मिलती हैं।

सोमप्रभसूरि की पाँच प्राप्त रचनाओं में सुमतिनाथचरित प्रथम रचना है और संभवतः वह कुमारपाल के शासनकाल में रची गई थी। अंतिम रचना कुमारपालप्रतिबोध वि. सं. १२४१(ई. स. ११८५)में लिखी गई होने का उल्लेख खुद कर्ताने किया है। अन्य रचनाएँ इन दो रचनाओं के मध्य में रची गई थी। इनमें क्रमशः सूक्तिमुक्तावली, शतार्थकाव्य तथा शृंगारवैराग्यतरंगिणी का समावेश होता है।

सुमतिनाथचरित्र का विस्तृत परिचय देने से पूर्व दूसरी रचनाओं का साधारण परिचय दिया जा रहा है।

(२) सूक्तिमुक्तावली[१] —

१०० संस्कृत श्लोक प्रमाण यह रचनाका दूसरा नाम 'सिंदूरप्रकर' है। भर्तृहरि के वैराग्यशतक की शैली से रची गई इस कृति में अहिंसा, सत्य, अस्तेय, शील, सौजन्य, क्षमा, त्याग, वैराग्य आदि के बोधक सरल एवं सरस सुभाषितों का संग्रह है। हृदयहारि कोमल पदावली के कारण जैन एवं जैनेतरों में भी यह सूक्तिसंग्रह ने स्थान बनाया था। कर्ता सोमप्रभ की सौ पद्योंकी कृति होने के कारण इसका 'सोमशतक' नाम भी प्रचलित था। 'सिन्दूरप्रकर' शब्द से प्रारंभ होने के कारण इसका 'सिन्दूरप्रकर' नाम अधिक प्रसिद्ध हुआ।

(३) शतार्थ-काव्य[२] –

शतार्थ काव्य आचार्य की तृतीय कृति है। इस चमत्कृतिपूर्ण रचना में एक सौ अर्थ जिसमें निहित हैं ऐसे एक श्लोक की रचना करके उस पर आचार्य ने अपनी टीका लिखी है। श्लोक इस प्रकार है—

१. कुमारपाल-प्रतिबोध– संपा. आ. जिनविजयजी, प्रस्तावना।

२. अनेकार्थ-साहित्य-संग्रह, प्राचीन साहित्योद्धार ग्रंथावली, पुष्प-२, अहमदाबाद से प्रकाशित।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कल्याणसारसवितानहरेक्षमोह कान्तारवारणसमानजयाद्यदेव ।
धर्मार्थकामदमहोदयवीरधीर सोमप्रभावपरमागमसिद्धसूरे ॥

वसंततिलका छंद में रचे गये इस एक श्लोक की टीका में उन्होंने उस एक पद्य के १०६ विभिन्न अर्थ निकाल के दिखलाये हैं, जिनमें २४ तीर्थंकर, ब्रह्मा, विष्णु, महेश तीन हिन्दु देव तथा चौलुक्यनृप जयसिंह, कुमारपाल, अजयपाल आदि परक अर्थ शामिल हैं । शतार्थ काव्य की रचना के कारण सोमप्रभ का 'शतार्थिक' उपनाम भी हो गया था ।[१]

(४) शृंगारवैराग्यतरंगिणी[२] –

इसमें विविध छंदों के ४६ पद्यों में नैतिक उपदेशोंका संकलन है । इसमें कामशास्त्रानुसार स्त्रियों के हाव-भाव व लीलाओं का वर्णन कर उनसे सतर्क रहने का उपदेश दिया गया है । इस पर आगरा के पं. नन्दलाल ने संस्कृत टीका लिखी है ।

(५) कुमारवालपडिबोह[३] –

कुमारपालप्रतिबोध–इसे जिनधर्मप्रतिबोध और हेमकुमारचरित भी कहते हैं । इसमें पाँच प्रस्ताव हैं । यह प्रधानतः प्राकृत में लिखी गद्य-पद्यमयी रचना है । पाँचवाँ प्रस्ताव अपभ्रंश तथा संस्कृत में है । इसमें ५४ कहानियों का संग्रह है । ग्रंथकारने दिखलाया है कि इन कहानियों के द्वारा हेमचन्द्रसूरि ने कुमारपाल को जैनधर्म के सिद्धान्त और नियम समझाये थे । इसकी अधिकांश कहानियाँ प्राचीन जैन शास्त्रों से ली गइ हैं । इसमें श्रावक के १२ व्रतों का महत्त्व सूचित करने के लिए तथा पाँच-पाँच अतिचारों के दुष्परिणामों को सूचित करने के लिए कहानियाँ दी गई हैं । अहिंसाव्रत के महत्त्व के लिए अमरसिंह, दामन्नक आदि, देवपूजा का माहात्म्य बताने के लिए देवपाल-पद्मोत्तर आदि, सुपात्रदान के लिए चन्दनबाला-मृगावती आदि, द्युतक्रीडा का दोष दिखलाने के लिए नल, परस्त्री-सेवन का दोष बतलाने के लिए द्वारिकादहन तथा यादवकथा आदि कथाएँ दी गई हैं । अन्तमें विक्रमादित्य, स्थूलभद्र, दशार्णभद्र की कथाएँ भी दी गई हैं । अपने समय में प्रचलित कई लोककथाओं का भी कर्ताने कुशलतापूर्वक धर्मबोध के लिए विनियोग किया है ।

---

१. "सोमप्रभोमुनिपतिर्विदितः शतार्थी" । -मुनिसुंदरसूरिकृतगुर्वावली,
"ततः शतार्थिकः ख्यातः श्रीसोमप्रभसूरिराट् ।" -गुणरत्नसूरिकृत क्रियारत्नसमुच्चय ।

२. निर्णयसागर प्रेस, मुंबई, ई.स. १९४२ ।

३. श्री सोमप्रभाचार्य – विरचितः कुमारपालप्रतिबोधः – संपा. मुनि जिनविजय, गायकवाड ओरिएन्टल सिरीझ, बरोडा, १९२० ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इसकी रचना सोमप्रभसूरिने वि. स. १२४१ में की थी ।[१] आचार्य हेमचंद्रसूरि के शिष्य श्रीमहेन्द्रमुनि और वर्धमानगणि एवं गुणचंद्रगणि ने इस ग्रंथ का श्रवण ग्रंथकारके मुखसे किया था ।[२]

उपरोक्त रचनाओं के उपरांत एक 'लघुत्रिषष्टि'की रचना सोमप्रभ की होने का उल्लेख मेघविजयकृत 'लघुत्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित्र'की गुजराती प्रस्तावनामें पं. मफतलालने किया है ।[३]

शान्तिनाथ पर एक लघु रचना सोमप्रभकी होने का उल्लेख जिनरत्नकोशमें (पृ. ३८०)में मिलता है ।[४]

सुमतिनाथचरित

सुमइनाहचरियं(सं. सुमतिनाथचरितम्) सोमप्रभसूरिकी प्रथम कृति मानी जाती है। पंचम तीर्थंकर भगवान सुमतिनाथ के जीवनचरित्र का आलेखन करनेवाली समग्र प्राकृत-संस्कृत साहित्य की यह प्रथम कृति है। ९८०० से अधिक ग्रंथाग्र प्रमाणकी यह कृति महाराष्ट्री प्राकृत भाषामें रची गई है, तथापि पंचम प्रस्तावमें आठ कर्मो के प्रभाव के वर्णनमें संस्कृत गद्य का प्रयोग किया गया है (पृ. १२५-१२७) और नवम प्रस्तावमें नमस्कार-विषयक पुलिंद-मिथुन की कथा में संस्कृत गद्य-पद्य दोनों का प्रयोग किया गया है (पृ. ४७१-४८५)। सप्तम प्रस्ताव में जिनभक्ति-विषयक सुंदरकथा नामक विस्तृत कथा अपभ्रंश पद्यमें लिखी गई है। तदुपरांत एकाधिक स्थानोंमें संस्कृत और अपभ्रंश पद्य प्राप्त होते हैं।

आचार्य का संस्कृत, प्राकृत और अपभ्रंश तीनों भाषाओं पर समान प्रभुत्व है। अक्षरवृत्त और मात्रावृत्त दोनों प्रकार के छंद में भी उनकी निपुणता प्रत्येक पद में दिखाई देती है।

९८२१ ग्रंथाग्र के इस ग्रंथमें ३७०७ पद्य हैं। अर्थात् एक तृतीयांश से अधिक भाग पद्य है।

ग्रंथ का नाम एवं केन्द्रवर्ती विषय सुमतिनाथ तीर्थंकर का चरित है, किन्तु ग्रंथ एक प्रकार का कथाकोश ही बन गया है।

---

१. शशिजलधिसूर्यवर्षे शुचिमासे रविदिने सिताष्टम्याम् ।
जिनधर्मप्रतिबोधः क्लृप्तोऽयं गूर्ज्जरेन्द्रपुरे ॥ (कुमारपालप्रतिबोध- प्रशस्ति)

२. हेमसूरिपदपङ्कजहंसैः श्रीमहेन्द्रमुनिपैः श्रुतमेतत् ।
वर्द्धमान-गुणचन्द्र-गणिभ्यां साकमाकलितशास्त्ररहस्यैः ॥ (कुमार.प्रति.- प्रशस्ति)

३. जैन साहित्य का बृहद् इतिहास, खंड - ६, पृ. ७९ ।

४. जैन साहित्य का बृहद् इतिहास, खंड - ६, पृ. ८५ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कवि ने इस रचना का हेतु दिखाते हुए कहा है– "न कवियश के लिए, न पूजा-स्थान बनूं ऐसी बुद्धि से और न लोक के चित्त में चमत्कार पैदा करूं ऐसी इच्छा से इस प्रबंध की रचना मैं करता हूँ, केवल आंतरिक दुश्मनो के चक्र को नष्ट करनेवाले श्रीसुमतिप्रभु के चरितांश के किर्तन से मैं स्वयं को प्रसन्न करूं ऐसा सोचके इस कथा-प्रबंध की रचना करने को उद्यत हुआ हूँ। ऐसा करने पर दूसरों को भी लाभ हो तो अधिक अच्छा है।" (पृ. ३, गा. ३६-३८)

इस तरह पंचम तीर्थंकर सुमतिनाथ के जीवनचरित्र को केन्द्रवर्ती विषय बनाकर ग्रंथकारने चालीस से अधिक रसप्रद उपदेश कथाओ द्वारा जैन धर्म और दर्शन के अनेक तत्त्वों को अत्यंत मधुर प्रांजल भाषामें कौशल्यपूर्ण रीति से पेश किया है।

इन कथाओ में ग्रंथकार ने अपनी कल्पना से रची कथाओं के साथ लोक-साहित्यमें प्रचलित कथाओं का विनियोग भी किया है।

संक्षिप्त कथासार

प्रस्ताव १ (पृ. १-२४)– प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव, पंचम तीर्थंकर सुमतिनाथ, तेइसवें तीर्थंकर पार्श्वनाथ और अंतिम तीर्थंकर भगवान महावीर तथा शेष जिनों को वंदन करके(पद्य १-५) एवं श्रुतदेवी, गुरुजनों, गौतम गणधर को नमस्कार करके (५-९) ग्रंथकार कथाका प्रारंभ करते हैं, जिनधर्मकी प्रशंसा करके निर्जरा हेतु सुमतिनाथ भगवान के तीन भवों में बद्ध चरित्र की रचना का संकल्प करते हैं (१०-२७), फिर सज्जन-स्तुति आदि करके कथाप्रबंध का प्रारंभ करते हैं (२८-३८)।

भगवान सुमतिनाथ के तीन भवों में प्रथम भव पुरुषसिंह नामक राजकुमार का था। पुरुषसिंह-भवकी कथा प्रथमार्धमें अतिविस्तार से दी गई हैं।

पुरुषसिंह के पिता शंखपुर नगर के राजा विजयसेन थे। विजयसेन की सभा में एकबार सुमंगल नामक एक सार्थवाह आता है। वह बताता है कि गंधपुरनगर के राजा तारापीठकी पुत्री राजकन्या सुदर्शना विजयसेन राजा को वरण करने के लिए सार्थ के साथ आ रही थी तब रास्तेमें कोइ अदृष्ट तत्त्व द्वारा उसका अपहरण हो गया है। इस से राजा आनंद और दुःख दोनों का भाव अनुभव करता है। शुभ शकुनों द्वारा इस कन्या से विजयसेन का वरण होगा ऐसा आश्वासन मतिसागर मंत्री राजा को देता है।

एकदा मृगया के लिए निकले विजयसेन को अश्व उठा के एक अरण्यमें ले गया। वहां एक सरोवर के किनारे पहुँचा तब किसी स्त्री का सहाय के लिए शब्द सुना। वहां पहुँचने पर एक सुंदरीने उसके पास भोग के लिए प्रार्थना की। शीलवान राजा ने उसे इनकार कर दिया। सुंदरीरूप धारण करनेवाली व्यंतरी ने अपने पति

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पिंगलाक्ष नामक व्यंतर को असत्य कहकर उसके विरुद्ध उकसाया । व्यंतर के साथ राजाका युद्ध हुआ, शील के कारण राजाकी जीत हुई, व्यंतरने उसे चमत्कारिक महा हार और औषधि दी ।

आगे चलते राजा का रथनूपुरचक्रवाल नगर के विद्याधर चक्रवर्ती महेन्द्रसिंह के पुत्र मणिचूडके साथ मिलन होता है ।

प्रस्ताव - २ (पृ. २५-४८)— मणिचूड अपने पूर्वभव की कथा सुनाता है । उनके साथ भी वैसी ही घटना घटी थी । विजयसेन और मणिचूड मित्र बन गये । राजाने मणिचूड को सुदर्शना की शोध का कार्य सोंपा । दोनों विमान विकुर्वित करके निकल पडे ।

प्रस्ताव - ३ (पृ. ४९-६८)— इधर सुदर्शना का अपहरण करके क्षुद्र व्यंतरीने उसे भयंकर अटवी में छोड दिया । वहां उसे कायोत्सर्ग स्थित चारणश्रमण का दर्शन हुआ । उनके द्वारा धर्मोपदेश और पंचपरमेष्ठि मंत्र की प्राप्ति करके उसके प्रताप से वह निर्भय बनके आगे चली । हाथी पकडने के लिए वन में आया हुआ चक्रपुर नरेश सिंहराजा उसे अपने नगरमें ले जाता है, उससे बलात् विवाह करने का प्रयत्न करता है इसी बीच विजयसेन और मणिचूड वहां आ पहुंचते हैं । आत्महत्या करती हुइ राजकुमारीको विजयसेन बचाता है, सिंह के साथ उसका युद्ध होता है, सिंह को परास्त कर सुदर्शना के साथ विवाह करके मणिचूड द्वारा विकुर्वित विमानसे राजा विजयसेन स्वनगर में आ पहुंचता है । नगर में आनंदोत्सव मनाया जाता है ।

प्रस्ताव - ४ (पृ. ६९-१२४)— जीवानंदसूरि नामक आचार्य का नगर में आगमन होता है । राजा द्वारा सुदर्शना के लिए प्रश्न पूछने पर आचार्य ने उसके पूर्वजन्म का वृत्तांत सुनाया । पूर्वजन्म में विजयसेन जंबूद्वीप के भरतक्षेत्र में कुशपुर नगर में दत्त नामक धर्मपरायण वणिक था, व्यंतरी उसकी पद्मा नामक कुशील भार्या थी और सुदर्शना उसकी भद्रा नामक धर्मिष्ठ भार्या थी । मुनि के उपदेश से विजयसेन और सुदर्शना को जातिस्मरण ज्ञान हुआ और दोनों श्रावक व्रत का पालन करते हुए अनेकविध धर्मकार्य करने लगे ।

एक दिन उद्यानयात्रा के लिए राजा-रानी गए हुए थे तब रानी सुदर्शना को पुत्र न होने का दु:ख हुआ । अविवेकी मंत्री द्वारा पुत्र-प्राप्ति के लिए माणिभद्र नामक यक्ष को पशुबलि आदि चढ़ाने का सूचन हुआ, परंतु राजा द्वारा इनकार होने पर माणिभद्र यक्ष द्वारा अनेक उपसर्ग किये गये । किन्तु राजा निश्चल रहा । मतिसागर मंत्री द्वारा पुत्र प्राप्ति के लिए पुण्योपार्जनकी आवश्यकता समझा के पुण्योपार्जन के लिए धार्मिक उपायका सूचन किया गया । धार्मिक उपायों सें पुण्योपार्जन के कारण देवलोकसे च्यवित होकर रानी के गर्भ में एक देव का पुत्र रूपमें आगमन हुआ । वही भगवान सुमितनाथ का जीव था । पुत्र का

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पुरुषसिंह नाम दिया जाता है । क्रमशः कुमार युवास्थाको प्राप्त होता है ।

एकदा कुमार ने वधनिमित्त ले जाते हुए चोर को दयाके कारण छुडवाया । राजाने उसे उपालंभ दिया । अपमान समझकर कुमार गृहत्याग कर देता है । परिभ्रमण करता हुआ कुमार श्रीपुर नगर पहुँचता है । वहां के राजा पुरंदरकी पुत्री चंद्रलेखा पुरुषद्वेषिणी थी, किन्तु कुमार को देख उसे प्रेम करने लगी । कुमार द्वारा राजहस्ती को वश करने के पराक्रम को देखते हुए राजा ने उसके साथ चंद्रलेखा का विवाह कर दिया ।

तत्पश्चात् पुरुषसिंह कुमार अनेक नगरोंमें घुमता हुआ, अनेक पराक्रम करता हुआ, अनेक राजकन्याओं के साथ विवाह करता है— सिंहपुर नगर-सिंहविक्रम राजा-जयावली देवी की कन्या मदनलेखा, कंचनपुर नगर-राजा वैरसिंह-रानी नयनावली की राजकन्या कनकावली, विजयपुर नगर-अरिदमनराजा-जयश्री रानी की कन्या रत्नावली, हस्तिनापुरनगर-नरसिंह राजा-विलासवती महारानी की पुत्री राजकन्या लीलावती, मदनपुरनगर-विद्युत्वेग विद्याधर राजा-विद्युन्मालिका रानीकी कन्या कमलावती, पोतनपुर नगर-श्रेष्ठ राजा-सौभाग्यसुंदरी रानी की पुत्री सौभाग्यमंजरी — इस तरह अनेकों कन्याओं को प्राप्त करके अंतमें विद्याधर सैन्य के साथ युद्ध करके रत्नपुर नगर की रत्नमंजरी नामक कन्या का पाणिग्रहण करके, पिता विजयसेन द्वारा भेजे गए पुरुषों के प्रयत्न से शंखपुर नगर पुनः आया और प्रियाओं के साथ अनेकविध विनोदों से अपना समय पसार करने लगा ।

यहां नर प्रहेलिका प्रश्नोत्तरादि का विशद वर्णन(पृ. ११६-१२२) दिया गया है ।

प्रस्ताव - ५ (पृ. १२५-२१४)— इसी मध्य विनतानन्द और विनयनन्दन नामक दो आचार्य पधारे। उनका मनुष्य जीवनमें आठ कर्मों के प्रभाव विषयक हृदयस्पर्शी व्याख्यान सुनकर पुरुषसिंह कुमारने महाव्रत-ग्रहणका निश्चय किया, माता-पिताकी अनुमति ली और भार्याओं से निवेदन किया । उस समय एक के बाद एक भार्याने उनको अपनी बातका समर्थन करते हुए दृष्टांत के साथ यह आग्रह छोडने को कहा । कुमारने प्रत्येक दृष्टांत के विरुद्ध अपने दृष्टांत रखे । इस तरह इस प्रस्तावमें छोटी बडी १६ रोचक कथाएँ दी गई है—

[**दुग्गय १ चिंतामणी २ चूय ३ कूयनर ४ ससुर ५ सूरसेण निवा ६ ।**
वरदत्तो ७ जयवम्मो ८ कज्जो य ९ कुबेरदत्तो य १० ॥१२७१॥

अक्का ११ समुद्ददत्तो १२जंबुग १३ मित्ततिय १४ अक्क १५ वणिपुत्ता १६ ।
भज्जाहिं कुमारेण य कहियाओ कहाओ एयाओ ॥१२७२॥]

(१) **दुग्गय** - प्रियतमा चन्द्रलेखा द्वारा अधीरता के विषय में पुण्यहीन श्रावक की कथा (पृ. १३०-१३२)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(२) **चिंतामणी** - कुमार द्वारा प्रमाद विषय में चिन्तामणि प्राप्त करके गवाँनेवाले वणिकपुत्र की कथा (पृ. १३३-१३६)

(३) **चूय** - मदनरेखा द्वारा अविचारी कृत्य विषयक सहकारछेदक नरेन्द्र की कथा (पृ. १३६-१४४)

(४) **कूयनर** - कुमार द्वारा विषयकामना से दुःख विषयक मधुबिंदु दृष्टांत (पृ. १४५-१४८)

(५) **ससुर** - कनकावली द्वारा परिणाम का विचार करके कार्य करने के लिए मित्रवती के श्वसुर की कथा (पृ. १४८-१५३)

(६) **सूरसेण निव** - कुमार द्वारा राज्यलोभ के कारण जीववध करनेवाले को नरकप्राप्ति विषयक शूरसेन की कथा (पृ. १५४-१६१)

(७) **वरदत्त** - रत्नावली द्वारा अविचारिता विषयक वरदत्त की कथा (पृ. १६१-१६६)

(८) **जयवम्म** - कुमार द्वारा स्त्रीचरित्र-गहनता विषयक जयवर्म की कथा (पृ. १६७-१७१)

(९) **कज्ज** - लीलावती द्वारा अतिलोभ विषयक कार्यश्रेष्ठि-कथा (पृ. १७१-१७४)

(१०) **कुबेरदत्त** - कुमार द्वारा संबंधों की विचित्रता विषयक कुबेरसेन-कुबेरसेना कथा (पृ. १७५-१७७)

(११) **अक्का** - कमलावती द्वारा अतिलोभ विषयक कुट्टिनी कथा (पृ. १७७-१८६)

(१२) **समुद्ददत्त** - कुमार द्वारा संबंधों की कुटिलता विषयक समुद्रदत्त-कथा (पृ. १८८-१९१)

(१३) **जंबुग** - सौभाग्यमंजरी द्वारा लोभविषयक जंबुक-कथा (पृ. १९१-१९५)

(१४) **मित्ततिय** - कुमार द्वारा अन्याय-उपार्जित धन विषयक तीन मित्रों की कथा (पृ. १९७-१९९)

(१५) **अक्का** - रत्नमंजरी द्वारा अतिलोभ विषयक कुट्टिनी की कथा (पृ. १९९-२०५)

(१६) **वणिपुत्त** - कुमार द्वारा स्नेह की निरर्थकता विषयक वणिकपुत्र-कथा (पृ. २०६-२०८)

इस वार्तालाप के अंतमें सभी वधूएं संविग्न हुई, सभीने महाव्रतग्रहण का संकल्प किया।

महादान के बाद कुमार और सभी भार्याओंने दीक्षा ली। तत्पश्चात् कुमार अनेकविध तपश्चर्या करके, एकवीश स्थान द्वारा तीर्थंकर कर्म उपार्जित करके, संलेखनापूर्वक समाधिमरण प्राप्त करके वैजयंतविमान में देवरूप में उत्पन्न हुआ।

यहां पर कर्ताने ग्रंथ के पूर्वार्ध के पूर्ण होने की सूचक गाथा दी है (गाथा १३१४, पृ.२१२)— **श्रीसोमप्रभसूरि** विरचित **सुमतिस्वामीचरित**में तीर्थंकर कर्म अर्जन-प्रवर नर-सुर-भवोंका वर्णन पूर्ण हुआ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रस्ताव - ६ - (पृ. २१५-२४७) पुरुषसिंह का जीव वैजयंत विमान से च्यवित होकर अयोध्या नगरी के राजा मेघ की महारानी मंगलादेवी के गर्भ में पुत्र रूप से अवतीर्ण हुआ। पुत्र जब गर्भ में था तभी मंगलादेवी के जीवन में एक अद्भुत घटना घटी। एक पुत्र के लिए लड़ती दो माताओं में से सच्ची माता का निर्णय मंगलादेवी ने अपने बुद्धिकौशल्य से कर दिखाया (पृ. २२०-२१)।

पुत्रजन्म के बाद कुमारका सुमति नाम दिया जाता है। देवों द्वारा स्नानादि उत्सव किए जाते हैं। बचपन, शिक्षा और परिणयन के वर्णन के पश्चात् पिता मेघ की श्रमणदीक्षा और सुमति द्वारा राज्यसंचालन का वर्णन आता है। स्वयंबुद्धत्व, केवलज्ञानप्राप्ति, उपदेश, चमरप्रमुख मुनिगण, चमर गणधर इत्यादि के वर्णन के साथ प्रस्ताव पूर्ण होता है (पृ. २३०-२४७)।

प्रस्ताव - ७ (पृ. २४९-३२७) -यहां से गणधर चमर द्वारा दिए गए उपदेश का वर्णन आता है। इस उपदेश के अंतर्गत विविध उपदेशात्मक कथाएं आती हैं—

(१) जिनभक्ति विषय में सुन्दर-कथा (पृ. २४८-२५९)

(२) विधिदान विषयक सुदत्त-कथा (पृ. २६२-२७२)

(३) शील विषयक शीलवती कथा (पृ. २७३-२८१)

(४) तपश्चरण विषयक निर्भाग्य-कथा (पृ. २८४-३२०)

(५) भावना विषयक क्षुल्लकादि कथा (पृ. ३२०-३२६)

प्रस्ताव - ८ (पृ. ३२८-३८४) -

(१) अहिंसा विषयक देवप्रसाद-कथा (पृ. ३२८-३४०)

(२) सत्य विषयक कुलाल-कथा (पृ. ३४१-३५०)

(३) अस्तेय विषयक नागदत्त-कथा (पृ. ३५०-३५६)

(४) शील विषयक रणवीर-कथा (पृ. ३५७-३६८)

(५) परिग्रहविरति विषयक देवदत्त-कथा (पृ. ३६८-३८३)

प्रस्ताव - ९ (पृ. ३८५-४९४) -

(१) आगम-विराधना-आराधना विषयक नरसुन्दरराज-कथा (पृ. ३८५-३९३)

(२) उत्तम-सेवा विषयक दिवाकर-कथा (पृ. ३९३-३९८)

(३) गुरु-आराधन विषयक विमलमति-कथा (पृ. ३९८-४०८)

(४) कोप-उपशमन विषयक कपिल-केशव-कथा (पृ. ४०९ ४४७)

(५) मानविपाक विषयक लीलावती कथा (पृ. ४४९ ४५४)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(६) मायानिग्रह विषयक शंख कथा (पृ. ४५५ ४५९)

(७) लोभ-विपाक तथा जयाजय विषयक सुरासुर-कथा (पृ. ४६०-४६७)

(८) नमस्कार विषयक पुलिन्द-मिथुन कथा (पृ. ४६८-४९३)

इस प्रकार चमर गणधरने मोक्षमार्ग के अठारह सोपानरूप अठारह कथाओं द्वारा अनुपम धर्मदेशना की ।

प्रस्ताव - १० (पृ. ४८५-५१४) - तीर्थंकर भगवंत सुमतिनाथ का विहार एवं साकेत नगर में समवसरण का वर्णन । वहां के राजा निधिकुंडल के प्रश्न के उत्तर में भूत एवं भविष्य विषय का कथन, पुनः विहार ।

निर्वाण-समय समीप जानकर भगवान समेतशिखर गिरि पधारते है, देवों का आगमन होता है, समवसरण एवं धर्मदेशना के बाद १,००० मुनियों के साथ भगवंत का सर्वोपरि शिखर पर आरोहण एवं अनशनपूर्वक निर्वाण होता है । ३२ इन्द्रों द्वारा अग्निसंस्कार किया जाता है और चमर गणधर द्वारा संघ का अनुशासन प्रारंभ होता है ।

ग्रंथकार-प्रशस्ति के साथ ग्रंथ समाप्त होता है ।

* * *

आज से करीब पच्चीस वर्ष पूर्व भावनगर (सौराष्ट्र) स्थित जैन आत्मानंद सभा ने मुझे सुमतिनाथचरित के गुजराती भाषान्तर का कार्य सौंपा था । संस्था के पास सुमतिनाथचरित की एक प्रेसकापी थी, जो वहां के किसी ज्ञानभण्डार की हस्तप्रत के आधार से लिखी गई थी और अत्यन्त अशुद्ध थी । मुझे भाषान्तर उसी के आधार से करना था । अत्यन्त कठिनाई से मैनें एक खंड का भाषान्तर कर दिया, जो १९८० में प्रकाशित हो गया । भाषान्तर करते समय मुझे मूल ग्रन्थ के संशोधन-संपादन की आवश्यकता महसूस हुई । आदरणीय स्व. पं. दलसुखभाई मालवणिया से इस बारे में बात हुई तो उन्होंने प्राकृत ग्रन्थ परिषद के संग्रह में सुरक्षित स्व. पू. आगमप्रभाकर मुनिश्री पुण्यविजयजी द्वारा करवाई गई सुमतिनाथचरित की नकल मुझे दी । प्रस्तुत संपादन के लिए मैंने उसी नकल का उपयोग किया है । आज कई वर्षों के बाद यह ग्रन्थ प्रकट हो रहा है तब मैं स्व. पू. आगमप्रभाकर मुनिश्री पुण्यविजयजी और स्व. पं. दलसुखभाई दोनों महानुभावों का स्मरण करके हृदयपूर्वक कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ । अपने पास की सुमतिनाथचरित की दो हस्तप्रतों की झेराक्स नकलें बिना मांगे ही मुझे देकर और इस संपादनकार्य में रस दिखाकर जो प्रेरणा दी है इसके लिए परम पूज्य आचार्यश्री प्रद्युम्नसूरिजी म. सा. के प्रति भी वंदनपूर्वक आभार व्यक्त करता हूँ । बार बार संपादनकार्य शीघ्रता से सम्पन्न करने का आग्रह करके प्रेरित करने के

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लिए प्राकृत ग्रन्थ परिषद के अध्यक्ष डॉ. नगीनभाई शाह का भी यहाँ आभार मानता हूँ। जिनकी प्रेरणा से इस ग्रन्थ के प्रकाशन खर्च की व्यवस्था हो सकी वे परम पूज्य आचार्यश्री नरचन्द्रसूरिजी म. सा. के प्रति भी वंदनापूर्वक आभार व्यक्त करता हूँ।

अनेक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण इस ग्रन्थ की विस्तृत अभ्यासपूर्ण प्रस्तावना लिखने की इच्छा होने पर भी अनेक कार्यों में व्यस्त होने से अभी लिख नहीं पाया हूँ इस लिए विद्वद्जनों का क्षमाप्रार्थी हूँ।

– रमणीक शाह

दि. २५-१२-२००३
अहमदाबाद

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सिरि-सोमप्पहसूरि-विरइयं
सुमइनाह-चरियं

पढमो पत्थावो

जयइ जय-कप्परुक्खो पढम-जिणो जस्स खंध-सिहरेसु ।
सउणाण वल्लहा वाल-वल्लरी सहइ सिद्धि-फला ॥१॥

महिऊण मोह-जलहिं लद्धुं केवल-सिरिं च जो जाओ ।
पायडिय-सत्त-तत्तो तं अच्चह अच्चुयं सुमइं ॥२॥

पासो पियंगुकंती फणि-फण-मणि-किरण-रंजिय-सरीरो ।
पल्लविओ कप्पतरु व्व कुणउ मण-वंछियं मज्झ ॥३॥

दंसिय-सिवपुर-मग्गं सुरिंद-मणि-मउड-मसणिय-कमग्गं ।
परम-सुहामय-मग्गं नमामि वीरं गुणसमग्गं ॥४॥

असमे वि सम-समिद्धे अमए वि हु बहुमए बुहयणस्स ।
संग-रहिए वि निग्गहिय-संगरे नमह सेस-जिणे ॥५॥

परिणमउ पवयणामयमेयं मह मोह-विस-विणासखमं ।
लेसं पि जस्स पाऊण पाविया निव्वुइं विबुहा ॥६॥

कवि-चक्क-चित्त-रयणायरेसु पसरंति वयण-कल्लोला ।
जीइ मुहचंद-दंसणवसेण सा जयउ सुयएवी ॥७॥

जेसिं तुट्ठिं लहिउं व लहिय मंदो वि अखलिय-पएहिं ।
विसमे वि कव्व-मग्गे संचरइ जयंतु ते गुरुणो ॥८॥

जत्तो दुवालसंगी गंग व्व हिमालयाओ संभूया ।
सुरसत्थ-सेवियपया तुंगं तं गोयमं नमह ॥९॥

कविपुंगवाण वाणी मयंक-जोण्ह व्व निम्मला जयइ ।
नवनव-कविचक्क-चगोर-पिज्जमाणा वि अपमाणे ॥१०॥

इत्थं थोयव्व-पयत्थसत्थ-संथव-गलत्थियाणत्थो ।
वित्थारिय-परमत्थं पत्थुयमत्थं पवक्खामि ॥११॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जस्स पुरिसत्थ-साहणपरस्स पुरिसस्स जंति दियहाइं ।
मणुयत्तणाइ-लाभं सहलं तस्सेव बिंति बुहा ॥१२॥

तत्थ वि समत्थ-पुरिसत्थ-मत्थय-मणी समत्थिओ धम्मो ।
संपज्जंते जम्हा सेसा सव्वे वि धम्माओ ॥१३॥

सो उण परिक्खिऊणं गहियव्वो कंचणं व कसवट्टे ।
अन्नह विसंवयंतो कज्जे संजणइ संतावं ॥१४॥

धम्मो न नाम-तुल्लत्तणेण सव्वो वि वंछियं कुणइ ।
दुद्धं ति भणिय पीयं किमक्कछीरं दिहिं जणइ ? ॥१५॥

चंदो गहाण मेरू गिरीण चिंतामणी मणीण जहा ।
तह जिणवरिंद-धम्मो सिरोमणी सेस-धम्माणं ॥१६॥

जह वा जल-जलणाणं पीऊस-विसाण तेय-तिमिराणं ।
जिणधम्म-सेसधम्माणमंतरं तह इहं नेयं ॥१७॥

मण-वाया-काएहिं छक्काय-वहो न जम्मि कायव्वो ।
सो मोक्ख-सुक्ख-हेऊ जह जिण-धम्मो न तह सेसा ॥१८॥

ता उज्झिऊण सेसे भवाडवी-भमणहेउणो धम्मे ।
कल्लाण-वल्लि-जलकुल्ल-तुल्लमल्लियह जिणधम्मं ॥१९॥

सग्गो ताण घरंगणं सहयरी सव्वा सुहा संपया,
सोहग्गाइ-गुणावली विरयए सव्वंगमालिंगणं ।
संसारो न दुरुत्तरो सिव-सुहं पत्तं करंभोरुहे,
जे सम्मं जिणधम्म-कम्मकरणे वट्टंति बद्धायरा ॥२०॥

जम्हा जिणेण वुत्तो कित्तिज्जइ तो बुहेहिं जिणधम्मो ।
एसो वि जह जिणेणं पन्नत्तो भवियसत्ताण ॥२१॥

जह तेणावि जिणत्तं पत्तं काऊण कम्म-निम्महणं ।
सम्मत्त-नाण-चारित्त-पगरिसारोहण-कमेण ॥२२॥

तं सव्वमिणं सम्मं जाणिज्जइ जिणचरित्त-सवणेण ।
जंपेमि अओ चरियं जिणस्स सिरि-सुमइनाहस्स ॥२३॥

तं पुण जह- सो भयवं पुव्वभवे पाविऊण सम्मत्तं ।
सव्वविरइं' पवज्जिय समुवज्जिय-तित्थयर-कम्मो ॥२४॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पत्तो य वेजयंतं विमाणमणुभविय तत्थ सुर-रिद्धिं ।
तत्तो चुओ समाणो सुमइ-जिणिंदो समुप्पन्नो ॥२५॥

गाढंतरंग-रिउवग्ग-निग्गहुप्पन्न-केवलन्नाणो ।
पडिबोहिऊण भुवणत्तयं पि निव्वाणमणुपत्तो ॥२६॥

तं तह समग्गमेयं संखेवेणं सुयाणुसारेण ।
ति-भव-ग्गहण-निबद्धं विरइज्जइ निज्जरा-हेउं ॥२७॥

एत्थावसरे जं सज्जणाण कइणो कुणंति थुइवायं[२] ।
तत्थ न दोसो त्ति अओ अहमवि तं किंपि काहामि ॥२८॥

सुयणा जयंतु ते जाण माणसे माणसे व्व विमलम्मि ।
पिसुण-घण-रसिय-नट्ठा हंस व्व गुणा निलीयंति ॥२९॥

जं दुज्जणाण कीरइ दोस-समुक्कित्तणं महापावं ।
तं कह करेमि फुडमप्पणो वि पिसुणत्त-संजणणं ॥३०॥

सो कह न दुज्जणो दुज्जणाण जो दोस-पयडणं कुणइ ।
परदोस-भासणं चिय चवंति[३] जं दुज्जण-सरूवं ॥३१॥

जइ दुज्जणो न हुंतो सुयणो वि लभेज्ज तो न माहप्पं ।
छाया आयव-तवियाण[४] होइ सुहया विसेसेण ॥३२॥

पिसुणाण सज्जणाण व जं कीरइ पत्थणा न तं उचियं ।
जं पत्थिया वि पिसुणा कुडिल च्चिय कसिण-सप्प व्व ॥३३॥

सुयणा अपत्थिया वि हु परगुण-बहुमाणिणो मह पबंधं ।
जइ पेच्छिहंति सगुणं तो गिण्हिस्संति सयमेव ॥३४॥

अह निग्गुणं मुणिस्संति ते इमं तो न आयरिस्संति ।
तह वि न होही मह एस निप्फलो नूणमारंभो ॥३५॥

न कइ त्ति कित्तिकामो न होमि पूयापयं ति कयबुद्धी ।
जणचित्त-चमक्कारं काहं ति न वा विहियवंछो ॥३६॥

किंतु सिरिसुमइ-पहुणो पहीण-सयलंतरारि-चक्कस्स ।
चरियलव-कित्तणेणं विणोयमहमप्पणो काहं ॥३७॥

इय चिंतिऊण[५] काउं कहापबंधं इमं पयट्टो हं ।
एवं कए परेसिं पि जइ गुणो होज्ज ता भद्दं ॥३८॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सुरसेल-कणय-कलसं जलनिहि-नीलंबराभिरामं तं ।
भुयविंद-रुंद-दंडं छत्तं व महीयलं सहइ ॥३९॥

तत्थऽत्थि वित्थिन्न-लवणोयहि-महल्ल-कल्लोल-पेल्लणु-ल्लसिय-महग्घ-रयणुक्केर-किरण-दिप्पंत-पेरंतो पुन्निमा-मयंको व्व संपन्न-परिवेस-मंडलो जंबुद्दीवो नाम दीवो । तम्मि य पुव्वविदेहा-वयंसय-सरिच्छ-सुकच्छविजय-वसुंधरालंकारकप्पं, कप्पिय-पयत्थ-पयाण-[९] कप्पद्दुम-समाण-माणव-समूह-भूसियं, सियकर-किरण-संभार-भासुर-सुरागार-सिंगार-गारवियं, वियड-कूव-वावी-सरोवर-सहा-सहस्स-संकुलं, कुलभवणं व कला-कामिणीणं, उप्पत्ति-पयं पिव संपयाणं, आगरो[८] व्व गरुयच्छेरय-रयणाणं, विस्सामट्ठाणं व धम्मस्स, पडिबिंबं व पुरंदरपुरस्स, असंख-तरुसंड-मंडिय-परिसरं संखउरं नाम नयरं, जं च संचरंताणेग-गोरी-महेसर-पलोयण-कुऊहलागएण हिमाल-एणेव फलिहसिला-संघाय-घडिएण तुंग-पायारेण परिक्खित्तं, निस्सीम-सामुद्दियवाणियाणीय-नाणारयणरासि-लोभागएण 'गयणग्ग-लग्ग-पायार-प्पडिरुद्ध-प्पवेसेण, पारावारेणेव परिहा-वलएण अतुच्छ-सच्छ-सलिल-संपुन्नेण परिवेढिय-पेरंतं ।

तासो कुसुद्ध-रयणेसु अरिट्ठ-सद्दो भूमीरुहेसु सुरधाम-सिरेसु दंडो ।
केसेसु बंधणविही कलहोवलंभो गेहम्मि भूमिवइणो न जणेसु जम्मि ॥४०॥

मंजु-लवलि-रमणिज्जा असोगजुत्ता[९] पियाल-वण-पवरा ।
बाहिं जत्थाऽऽरामा सहंति रामा-गणा मज्झे ॥४१॥

तं पालए पणयभूव-पडंत-चूडा-माणिक्क-चक्क-टिवडिक्किय-पायवीढो ।
पच्चत्थि-पत्थिव-वहू-वयणारविंद-चंदुग्गमो विजयसेण-महानरिंदो ॥४२॥

तरला वि रज्जलच्छी जस्स भूयालाणखंभ-मूलम्मि ।
निबिड-गुणेहिं निबद्धा करणि व्व थिरत्तणं पत्ता ॥४३॥

[१०]भुवणवणं पल्लवियं व सहइ जस्स प्पयाव-पिंजरियं ।
चंदकिरणुज्जलेणं जसेण धवलं कुसुमियं व ॥४४॥

गयवाहणाओ हयपरियराओ हारावरुद्धकंठाओ ।
[११]दीसंति जस्स अंतेउरीओ रिउसुंदरीओ य ॥४५॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सो य राया निय-[12]सुंदेरिमोहामिय-मयणो सयल-कलाकलाव-कुलहरं परकलत्त-पलोयण-परम्मुहो, महत्थ-पसत्थ-सत्थ-परिकम्मिय-मईसु मइ-माहप्प-निज्जियामरगुरुसु सामिकज्ज-साहणाहीण-जीवियव्वेसु मइसायर-प्पमुह-महामंतीसु समारोविय-रज्जभारो, कयाइ मंजु-गुंजंत-पणव-वेणु-वीणा-रवाणुगय-गेय-मणहरं बहुपयार-चारु-चारी-करणंगहार-हीरंत-लोय-लोयणं[13] रभसभर-भमिर-भूयवल्लि-वेल्लिर-रणंत-कणय-कंकणं पणंगणाण नट्टं पलोयए, कयाइ करकमल-कलियंकुसो मत्त-करि-कंधराधिरूढो गाढ-विम्हय-रसाउत्त-नर-नारी-नयण-नीलुप्पल-मालोरुमालिज्जमाण-मुहकमलो विउल-रायमग्गमोगाढो कीला-सोक्खमणुहवइ, कयाइ सुहासियामयरस-परवसो कवियण-वयणाइं सवणगोयरीकरेइ, कयाइ पइक्खणं पेक्खगजण-जणिय-साहुवाओ तुरंगवग्ग-वग्गण-विणोयमणुचिट्ठइ, कयाइ पसत्थ-धम्मसत्थ-वियारमायरइ ।

इय पुव्वभवज्जिय-पुन्न-पगरिसागरिसियं गरुय-सोक्खं ।
सेवंतस्स नरिंदस्स वासरा तस्स वोलंति ॥४६॥

अन्नया अत्थाणसहा-सुहनिसन्नस्स राइणो रयणकुट्टिम-मिलंत-मउलिणा पणमिऊण विन्नत्तं पडिहारेण-'देव ! देव-दंसणाभिलासी सुमंगलो नाम सत्थवाहो दुवारे चिट्ठइ ।'

राइणा भणियं-'सिग्घं पवेसेह ।' तओ पविट्ठो समं पडिहारेण । पणमिओऽणेण राया । उवणीयं पहाण-पाहुडं । उचियासण-निसन्नो य भणिओ राइणा-

'तुह सत्थवाह ! सागयमेण्हिं सव्वत्थ वट्टए कुसलं ? ।
अक्खलिओ ववहारो चिराओ दिट्ठो सि वा कीस ?' ॥४७॥

सत्थवाहेण भणियं-

'तुह पाय-कप्पपायव-छायं सेवंतयस्स नरनाह ! ।
सव्वं पि सिद्ध-मणवंछियत्थसत्थस्स सुत्थं मे ॥४८॥

जं पुण चिरदंसण-कारणं तं सुणेउ देवो-

'एगया रयणी-विराम-समय-समत्तनिद्दस्स समुप्पन्ना मणम्मि मे चिंता' जहा-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जो न कुणइ काउरिसो धणज्जणं जोव्वणम्मि वट्टंतो ।
छगल-गलत्थण-जुयलं व जीवियं निप्फलं तस्स ॥४९॥

किंच नरेण मइमया न चेय चित्तम्मि चिंतियव्वमिणं ।
संते महंत-विहवे किमिह[१४] विहवज्जणेण जओ ? ॥५०॥

पइदियहं पूरिज्जइ जइ कहवि न निन्नया-सहस्सेहिं ।
ता सुसइ च्चिय अइरा गरुओ वि तरंगिणीनाहो ॥५१॥

एवमवड्ढिज्जंतो नवनव-दविणज्जणा-पयारेहिं[१५] ।
विलयं वच्चइ नूणं बहुओ वि हु विहव-संभारो ॥५२॥

तओ गुणी वि गुण-वज्जिओ, मणहरो वि [१६]रूवुज्झिओ, बुहो वि गयबुद्धिओ, [१७]नयपरो वि उव्वेवओ, पियं पि पभणंतओ कडुपयंपिरो गिज्जए, तणं व लहुयत्तणं लहइ दव्वहीणो नरो । तहा,

विगुणमवि गुणड्ढं रूवहीणं पि रम्मं,
जडमवि मइमंतं मंदसत्तं पि सूरं ।
अकुलमवि कुलीणं तं पयंपंति लोया,
नवकमलदलच्छी जं पलोएइ लच्छी ॥५३॥

लद्धूण धणं सहलं कायव्वं पत्तदाण-भोगेहिं ।
एवं [१८]अकरेमाणे संतं पि असंतसारिच्छं ॥५४॥

जे उण [१९]लद्धं पि धणं न दिंति पत्ते सयं न भुंजंति ।
ते तं परोवभोग्गं रक्खंति अवित्ति-कम्मयरा ॥५५॥

किं च,

जो न नियइ परिभमिउं महिवलयमणेग-कोउगाइन्नं ।
सो कूव-दद्दुरो इव सारासारं न याणेइ ॥५६॥

ता ''गंतूण देसंतरं करेमि सविसेस-दविणज्जणं'' ति । तओ काऊण समग्ग-सामग्गिं पउर-पाइक्कचक्क-परिवुडो, खर-करह-वसह-वेसर-विसरारोविय-वियड-कयाणगो पत्थिओ पसत्थे[२०] दियहे पुव्व-दिसाए । कइवय-पयाणगेहिं लंघिऊणाणेग-गामाऽऽगर-नगर-गिरि-सरि-सरोवर-विरायमाणं मेइणिं पत्तो महग्घ-मणिमयामर-मंदिर-सुंदेर-पराभग्ग-सग्ग-सोहग्ग-गव्वं गंधपुरं नाम नयरं ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जस्सिं पंकरुहाइं कोसविगमं पावंति मित्तोदए
विच्छायं कुमुयं मयंक-किरणा दोसागमुल्लासिणो ।
उच्चालाणवसंगया[21] मयगला दुव्वासणासंगिणो
गोवग्गा तरुणा करप्पियसुरा-मंसा, न सेसो जणो ॥५७॥

तम्मि काऊण सत्थ-सन्निवेसं ठिओ बाहिं । गहिऊण पाहुडं पत्तो नयरब्भंतरं । गओ राय-भवणं । पडिहार-निवेइओ पविट्ठो रायत्थाणं । पणमिओ मए महंत-सामंत-मंति-मंडलिय-लोय-मज्झवत्ती पुन्निमा-मयंको व्व तार-तारय-परिवारो तारावीढो नाम राया । उचियासणोवविट्ठो य पुट्ठो राइणा-'सत्थवाह ! सागयं ते !'। मए भणियं- 'तुम्ह दंसणेण' । पुणो वि रन्ना पयंपियं-'भद्द ! कत्तो तुमं समागओ ?' । मए भणियं-'देव ! संखउराओ' ।

एत्थंतरे समागया तत्थ समत्त-लोय-लोयणाणंद-संदोहदाइ-दंसणा सुदंसणा नाम निरुवम-रूवरेहाए सुर-रमणीणं पि कयावन्ना रायकन्ना ।

जसु सलूण-लोयणाइं पलोइवि लज्जियइं,[22]
गय वणि हरिण नाइ जलि कुवलय मज्जियइं[23] ।
नं जसु निरुवम-रूवु निरूविवि लज्जभरि,
गउरि हरंगि निलुक्की लच्छि किवण-घरि ॥५८॥

एत्थंतरे विजयसेण-रन्ना चिंतियं-अहो ! अच्छरियं ।

सवण-विसयं पि पत्ता जा कुणइ पमोयमेरिसं बाला ।
सा दिट्ठिगोयर-गया किं मह काहीं ? न याणामि ॥५९॥
जइ सउणाण व पक्खा विणिम्मिया होज्ज माणुसाणं पि ।
कीरव्व तत्थ गंतुं ता[24] सहलं नयण-निम्माणं ॥६०॥

एवं चिंतंतेण रन्ना भणियं-'सत्थवाह ! तओ तओ ?' । सत्थवाहेण जंपियं- 'देव ! सा रायकन्नगा पणमिऊण रायाणं निसन्ना तत्थेव । तं सव्वंगमालोइऊण भणिओ रन्ना मइसार मंती-

एसा असरिस-रूवा विहिणो विन्नाण-पगरिसो एस ।
तं नूणमित्तियं चिय दलं इमा जेण निम्मविया ॥६१॥
ता[25] होज्ज किं इमीए उचिओ रूवाइएहिं कोइ वरो ? ।
इय चिंता संतावइ वियंभमाणा मणं मज्झ ॥६२॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एत्थंतरे चिंतियं मए-'समग्ग-समर-संरंभ-लद्धविजये विजयसेणे [26]"महारायम्मि निरुवम-रूवरेहोहामिय-मयणे विज्जमाणे[27] किं राइणो चिंता संतावमुप्पाएइ ?'।

मंतिणा भणियं-'देव ! [28]"अलमित्थ चिंताए। निउणो विही।

जेणेसा ओहामिय-मयणवहू निम्मिया मयंकमुही।
सो च्चिय विही इमीए वरमुचियं काउमुज्जमिही ॥६३॥

जुण्हा तुसार-किरणे रयणायरम्मि
मंदाइणी जलहरम्मि वि विज्जुलेहा।
जम्हा परस्स किमु कस्सइ पत्थणाए,
संजोइया भयवया चउराणणेण ? ॥६४॥

अवि य- संखउर-सामिणो विजयसेणस्स अहरिय-रइरमण-रम्मत्तण- गुणुक्करिसो रूव-पगरिसो सुणीयइ, ता सत्थवाहो 'अवितहमेयं न व ?' 'त्ति पुच्छीयउ'। तओ 'साहु मंती संलवइ'त्ति जंपिऊण भणियं रन्ना- 'सत्थवाह ! संखउर-सामिणो केरिसी रूव-संपय?'त्ति। सत्थवाहेण भणियं- देव !

नूणं अणन्नसम-रूव-पसंसणम्मि,
अन्नं मुहं महइ जस्स चउम्मुहो वि।
एक्केण तस्स किमहं मुह-पंकएण,
कित्तेमि कित्तिनिहिणो नणु रूव-सोहं ॥ ६५॥

तहावि एत्तियं भणामि-

तेलोक्के वि तमत्थि वत्थु न परं जं तस्स सव्वप्पणा,
पाविज्जाऽखिल-लोय-लोयण-सुहासारस्स तुल्लत्तणं।
जे पंकेरुह-कुंद-चंद-पमुहा ते तस्स तेयस्सिणो,
एक्केक्कस्स वि अंगयस्स पुरओ दीसंति दासा इव ॥६६॥

एसा वि समत्त-रमणि-मत्थय-माणिक्कभूया धूया, ता देव ! एवं तक्केमि-

जइ सयल-तिलोए[29] लोयणच्छेरभूयं,
कहवि मिहुणमेयं नो विही संघडेजा।
अइसय-रमणिज्जं रूवमेयम्मि [30]काउं,
नणु विहलपयत्तो नूण सव्वो य होही ॥६७॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लच्छीए जह केसवो तिनयणो सेलंगयाए जहा,
पोलोमीएँ जहा सहस्सनयणो कामो रईए जहा ।
मुत्तुं संखउराहिवं सुरवहू-अब्भत्थणिज्जं तहा,
को अन्नो उचिओ इमीइ रमणी-चूडामणीए वरो ?' ॥६८॥

तओ रन्ना पहट्ठ-मुहपंकएण भणियं-'सत्थवाह ! ववगय-चिंताभारं च कयं तुमए मह मणं, ता गिन्हसु तुमं इमं तुट्ठिदाणं' ति भणिऊण[31] समप्पियं नियंग-लग्गमाभरणं, मुक्कं सुक्कं, समप्पिओ पवरावासो । रन्ना विसज्जिओ हं गओ नियावासं । एवं पइदिणं रायसमीवं वच्चंतस्स गरुय-सम्माणेण रन्ना संभासिज्जमाणस्स मे वोलंति दियहा ।

अन्न-दियहम्मि हक्कारिऊण सिणेहसारं भणिओ हं रन्ना-'सत्थवाह ! तुमाहिंतो विजयसेण-नरनाहस्स [32]निरुवम-रूवलावन्नाइ-गुण-पगरि-समायन्निऊण संजाय-गाढाणुराया रायकन्ना संपन्ना, ता सिग्घमेव [33]तत्थ पसत्थ-दियहे पेसिस्सामि, तुमए य तत्थ-गएण तह कह वि पयंपियव्वो विजयसेण-राओ जहा पडिवज्जइ एयाए पाणिग्गहणं, पिच्छए सिणिद्ध-लोयणेहिं, न कयाइ कुणइ पणय-भंगं, न दंसए सुविणे वि माण-खंडणं । किं बहुणा ? एसा अम्ह जीवियाओ वि सारभूया, सुविणे वि अलंघणीय-वयणा, मणसा वि अखंडिय-पणया तहा दट्ठव्वा जहा न सुमरइ अम्हाणं, न खिज्जए[34] सहियण-कए । जओ-

परिहरिय-जम्मभूमीण माइ-पिउ-पमुह-बंधु-रहियाण ।
मुत्तूण पइं परघर-गयाण कन्नाण को सरणं ? ॥६९॥
जस्स कए सयण-गणं मोत्तूण[35] तिणं व जंति परएसं ।
जइ सो वि पिओ विमुहो महिलाण हयं तओ जीयं ॥७०॥

मए भणियं-'महाराय ! अलमित्थ चित्त-संतावेणं । एसा खु रायकन्ना अणन्न-सामन्नेणं निय-गुण-कलावेणं चेव महग्घत्तणमुवगया न कस्सइ सोयणिज्जा । न खलु कस्स वि पत्थणाए अग्घंति महग्घ-रयणाइं ।' तओ रन्ना सम्माणिऊण विसज्जिओ हं ।[36] कया मए समग्ग-सामग्गी, पउणीकयाइं विविह-कयाणगाइं । तओ संवच्छरिय-विणिच्छिय-पसत्थ-दियहे[37] महया हरि-करि-करह-रह-जोह-संवाहेण कोस-कोट्ठागार-सामग्गीए य परिगया अंतेउर-पुरंधि-परिवुडेण

तारावीड-राएण अणुगम्ममाणा पत्थिया रायधूया वि । तओ कित्तियं पि भूमिभागमागंतूण रन्ना अणुसासिया सुदंसणा जहा-

जंपिज्ज पियं, विणयं करेज्ज, वज्जिज्ज पुत्ति ! परनिंदं ।
खंडिज्ज मा कयावि हु सव्वस्स वि उचिय-पडिवत्तिं ॥७१॥

रिद्धिं पत्ता वि हु मा वहेज्ज सुविणे वि माणलेसं पि ।
तह निक्कलंक-सीलं पाण-पणासे वि पालेज्जा ॥७२॥

जलणो वि जलं, जलही वि गोपयं, पन्नगो वि रज्जुसमो ।
जायइ विसं पि अमयं सील-समिद्धाण भुवणम्मि ॥७३॥

एवमणुसासिऊण धूयं सोय-संगलंत-बाहजल-पज्जाउल-लोयणेण अंतेउरेण समं नियत्तो राया । तओ [39]पडिहत्थिऊण जणय-सिक्खं, पणमिऊण जणणि-जणयाण पाय-पंकयाइं पयट्टा आगंतुं रायधूया । अहं पि तयणुमग्ग-लग्गो समागच्छामि ।

एवं च कइवय-पयाणगेहिं पत्ताइं महंतमणेग-सावय-गणाइन्नमरन्नमेगं । तत्थ पवणुव्वेल्लिर[39]-महल्ल-कल्लोल-मालुम्मालियस्स पप्फुल्ल-कमल-परिमल-मिलंतालि-जाल-मुहलस्स सरोवरस्स आसन्न-पएसे दिन्नो आवासो । निसाए [40]समुच्छलिओ अक्कंद-सद्द-गब्भिओ हाहारव-रउद्दो रायसुयाए आवासम्मि कोलाहलो । 'हा ! किमेयं ?' ति आउलीहूओ सयल-लोओ, पहाविया पहरण-हत्था सुहड-सत्था, मिलिया मंति-सामंताइणो । अहं पि सन्नद्ध-पउर-पाइक्क-चक्क-परिवुडो गओ तत्थ । पुट्ठो मए रायलोओ -'किमेयं ?' ति । कहियं तेण जहा- एत्थ सहीहिं सह विविह-कहाओ कुणंती 'हा ताय ! माय ! एसा असरणा अहं निज्जामि' त्ति पलावपरा केणइ अदिट्ठेण अवहडा रायधूया ।'

एत्थंतरे विजयसेण-राओ फुरंत-कोववस-विसप्पमाण-भिउडि-भीम[41]-भालवट्टो 'अरे ! को एस दुरप्पा ? कस्स वा सुमरियं कयंतेण ? जो मह पिययमं अवहरइ ?' त्ति भणंतो कयंत-जीहा-कराल-करवालमायड्ढिऊण उट्ठिओ सीहासणाओ । सत्थवाहेण चलणेसु लग्गिऊण भणिओ-'देव ! वित्त-वुत्तंत-कहणमेयं, तो पसायं काऊण देवो आसणमलंकरेउ ।' तओ उवविसिऊण सविलक्खं जंपियं रन्ना-'सत्थवाह ! एवमेयं, परं पेम्म-परवस-माणसत्तणेण मए सक्खं पिव लक्खियं ।' सत्थवाहेण वुत्तं- 'तओ रायधूया-गवेसणत्थं पयट्टा समंतओ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सामंताइणो, परं पभूयकालेणावि पउत्तिमेत्तं पि नोवलद्धं । तओ विसन्नचित्ता नियत्ता सव्वे वि ते । अहं पि समागओ एत्थ । ता महाराय ! एयं मे चिर-दंसण-कारणं ।' तओ राया गरुयाणुराय-रायधूयाए तहाविहमवत्थं निसामिऊण महंतं चित्त-संतावमुव्वहंतो भणिउं पवत्तो- 'सत्थवाह ! दिव्ववसा विसमा कज्जगई । जओ-

अन्नह परिचिंतिज्जइ कज्जं हरिसिय-मणेण मणुएण ।
परिणमइ अन्नह च्चिय दुव्वारो दिव्व-वावारो ।।७४।।

अहवा न जेहिं सुकयं समज्जियं होज्ज पुव्व-जम्मम्मि ।
नूणं न तेसिं होज्जा मणवंछिय-वत्थु-संपत्ती ।।७५।।

एत्थंतरे अन्नत्थ केणइ पढियं-

हीरंतीओ नीउन्नएहिं जइ वि हु वलंति सय-वारं ।
सायर ! तह वि हु ठाणं महानईणं तुमं चेव ।।७६।।

तओ मइसायर-मंतिणा भणियं- 'देव ! सोहणं निमित्तमेयं एसा रायधूया देवस्स चेव घरिणी होहि त्ति सूएइ ।' सत्थवाहेण भणियं-'देव ! अहं पि निय-मइ-माहप्पेण एवं संभावेमि-

एसा नरिंद-धूया निरुवम-रूवाइ-गुण-गण-महग्घा ।
अन्नस्स घरिणि-सद्दं न पाविही वज्जिउं देवं ।।७७।।

पंचाणणं विमुत्तुं सिंहिणिमक्कमिउमेत्थ को सक्को ? ।
किं च विणा कमलवणं रमइ मणं रायहंसीए ? ।।७८।।

जीए पउत्ति-मेत्तं पि नोवलब्भइ नरिंद-धूयाए ।
तीए सह संगमो दुल्लहो त्ति एयं न वत्तव्वं ।।७९।।

जओ-

जं दुल्लहं ति काउं मणोरहाणं पि न विसयमुवेइ ।
तं माणुसस्स सव्वं संपाडइ [४२]दिव्वमणुकूलं ।।८०।।

तेसिं नीरनिही वि गोपयमसिच्छेओ वि दिव्वोसही ।
पायालं पि बिलं विसं पि अमयं, सेलो वि भूमियलं ।
दूरत्थं पि हु पाणिपंकय-गयं, सत्तू वि मित्तं परं,
दुस्सज्झं पि सुसज्झमेव, दइवं जेसिं सपक्खं भवे ।।८१।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दीहं नीससिऊण भणियं रन्ना-'सत्थवाह ! तहा वि सा वराई रायकन्ना केणइ खयरेण देवेण वा अवहडा कं पि विसम-दसं अणुहवइ त्ति महंतो मे चित्त-संतावो ।' सत्थवाहेण भणियं-'देव ! अलमेत्थ चित्त-संतावेण । एसा खु रायधूया निय-पुन्न-पभाव-पडिहयाऽनिट्ठप्पसरा विसमं पि वसणं लंघिस्सइ त्ति ममाभिप्पाओ ।' मइसायर-मंतिणा भणियं- 'देव ! सोहणं संलवइ सत्थवाहो ।' तओ रन्ना वत्थाऽऽभरण-प्पयाणेण सम्माणिओ सो ।

एत्थंतरे पढियं काल-निवेयगेण -

सूरस्स तेय-लच्छी देव्ववसा विहडिया वि संघडइ ।
मा कुणह खेयमेवं कहइ रवी भुवण-मज्झत्थो ॥८२॥

काउं देवच्चण-निच्च-किच्चमज्जेह पुन्न-पब्भारं ।
पुन्नेहिं हुंति मण-वंछियाइं अच्चब्भुयाइं पि ॥८३॥

तओ उट्ठिओ राया सिंहासणाओ । कय-तक्कालोचिय-कायव्वो तं चेव[४३] चंद-सुंदर-मुहिं रायधूयं विचिंतयंतो भवणे वणे वा आसणे सयणे वा दिणे रयणीए वा निव्वुइं न पावेइ । एगया राईसर-सेणाहिव-पमुह-पहाण-जण-परिगओ निग्गओ रायवाडीए । उवणीओ तक्खणं चेव मंदुरावालेण सव्व-लक्खणालंकिओ रवि-रहाउ व्व वसुहमोइन्नो तुरंगमो । तं सो कोऊहलेण आरुहिऊण वाहिउं पवत्तो । तुरगो वि केणइ कारणेण [४४]वाहिज्जमाणो तं वेगाइरेगमुवगओ, जेण चक्क-चडियं पिव भमंतं भावियं भूवलयं भूवइणा, कय-चलण-चंकमणा सम्मुहमागच्छंत व्व लक्खिया[४५] भूरुहा, दोलायमाण-सिहर व्व मुणिया गिरिणो । तओ थेव कालेणावि लंघिऊण दीहमद्धाणं पत्तो अरन्नं राया । रन्ना वि निव्विन्नेण विमुक्का हत्थाउ वग्गा । ठिओ तेहिं चेव पएहिं तुरंगमो । मुत्तूण तं निसन्नो वडविडविच्छायाए राया । तुरगो वि अकज्जकारि ति व्व मुक्को तक्खणं[४६] पाणेहिं । तओ राया चिंतिउं पवत्तो-

विहि-परिणामस्स नमो जस्स पसाएण[४७] रिद्धि-वित्थारो ।
संघडइ असंतो वि हु, संतो वि हु विहडइ खणेण ॥८४॥

जं न विसओ मणस्स वि, सुविणस्स वि जं न गोयरमुवेइ ।
सुहमसुहं वा पुरिसस्स दावए तं विही सव्वं ॥८५॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विसमं पि वसण-रन्नं सुहेण लंघंति हुंति जे धीरा ।
कीबा उ विसय-पिसाय-परवसा लंघिउं न खमा ॥८६॥

तओ वीसमिऊण मुहुत्तमेत्तं संसार-सरूवं व आवया-सय-समाउलं, रयणी-मुहं व दीसंत-बहु-दीवियं, सरय-समयं व समंतओ भमंत-मत्त-करि-सयं महारन्नं पलोयंतो पत्तो राया महंतं सरोवरं; जं च रायाणमागच्छंतं पेच्छमाणं व पफुल्ल-कमल-लोयणेहिं, आलिंगणमणं व दूर-पसरिय-तरंग-बाहाहिं, कयग्घदाणं पिव मरगय-[४८]'थालीयमाण-पउमिणी-पत्त-परिट्ठिय-सलिल-मुत्ताहलुप्पीलेण, कयमंगल-गीयं व गंधलुद्ध-मुद्ध-[४९]फुल्लंधय-धोरणी-रणिएहिं, कुसलमाभासंतं व सारस-चगोर-चक्कवाय-कलहंस-कुल-कूजिएहिं । तओ तम्मि [५०]जल-कीला-सोक्खमणुभविऊण सरस-कंदफल-जणिय-पाणवित्ती चिंतिउं पवत्तो जहा- संपयं मज्झन्न-समओ वट्टइ, तहा हि -

कस्स न दहंति देहं दूहव-महिला-कर व्व संलग्गा ।
संपइ किरणा नीसेस-भुवण-दुद्दंसणा रविणो ? ॥८७ ॥

मज्जंति [५१]कास-रसयाइं सरोवरेसु,
किच्छेण ठंति विहगा निय-नीड-लीणा ।
रोमंथ-मंथर-मुहाइं महीरुहाण,
[५२]छायं कुरंगय-कुलाइं [५३]निसेवयंति ॥८८॥

'ता निरंतर-तरुण-दल-नियर-निरुद्ध-दिणयर-करप्पवेसं पविसिऊण तमाल-तरु-[५४]निउंजमियमइवाहेमि मज्झण्ह-समयं' ति चिंतिऊण जाव तत्थ पविसइ ताव 'परोवयारेक्क-रसिय ! सयल-जियलोय-वच्छल ! परदुक्ख-विमोक्खणक्खम ! महापुरिस ! रक्ख रक्ख ममं' ति करुण-सद्दं सुणेइ । तओ निक्किवेण केणावि का वि वराई पीडिज्जइ त्ति चिंतयंतो करुणारसाउन्न-हियओ सिग्घयरं तरु-निउंजम्मि पविट्ठो । कंकेल्लि-पल्लवारुण-कर-चलणाए कयलि-क्खंभ-विब्भमोरुजुयलाए सुरसरि-पुलिण-विसाल-नियंब-भर-मंथरंगीए तिवलि-रेहंत-मुट्ठिगेज्झ-मज्झभागाए थोर-थणवट्ट-घोलंत-महंत-मुत्ताहलहाराए कमलदल-दीह-नयणाए संपुन्न-मयंक-समाण-वयणाए रयण-कुंडलुल्लिहिय-गंडलेहाए रमणीए कयब्भुट्ठाणो तीए चेव नवपल्लव-विरइयासणम्मि 'उवविसरु' त्ति भणिए निसन्नो नरिंदो ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भणियं रन्ना- 'भद्दे! कुओ भयं ?' तीए भणियं- 'सयल-सुराऽसुरिंद-सिर-समुव्वूढ-सासणाओ कुसुम-सरासणाओ । जत्तो आरब्भ तुमं नयण-गोयरं गओ तयणंतरं चेव पंचबाणो वि सहस्सबाणो विव मयणो मं पीडेइ, ता तुमं चेव मे सरणं ।' ति भणिऊण साणुरायाए दिट्ठीए पलोइउं पवत्ता ।

रन्ना चिंतियं- 'अहो ! केरिसं संकडमावडियं ? जओ निम्माणुसाडवीए एसा का वि जुवई दिव्वजोणि-संभवा संभावीयइ, पत्थणा-भंग-जणिय-कोवा य किं पि विप्पियमुप्पाइउं खमा, पत्थणाए य कीरमाणीए[३३] सप्पुरिस-सम्मग्ग-चागो । जओ -

जे परदार-परम्मुहा, ते वुच्चहिं नरसीह ।
जे परिरंभहि पर-रमणि, ताहं फुसिज्जइ लीह ॥८९॥

निव्वडिय-सुहड-भावाण ताण को वहउ एत्थ समसीसिं ? ।
पर-रमणि-संकडे निवडिया वि न मुयंति जे मेरं ? ॥९०॥

'ता सव्वहाऽणुचियमेयं महापुरिसाण पर-रमणि-सेवणं' ति चिंतिऊण भणियं- 'भद्दे ! [३४]परित्थिया तुमं, ता कहं तए सह विसयासेवण-महिलसामि ?'। तीए वुत्तं- 'वियक्खण ! पुरिसस्स परा चेव इत्थिया होइ' । रन्ना भणियं- 'तहावि तुमं न मे परिग्गहे वट्टसि ।' तीए वुत्तं-

एस निजो एस परो त्ति तुच्छचित्ता नरा विचिंतंति ।
विउलासयाण सयलो जियलोओ चेव स-कुडुंबं ॥९१॥

ता कहं न परिग्गहे हं ? ।'

रन्ना भणियं- तहा वि तए सह विसयासेवणं उभयलोग-दुहावहं ।

तीए भणियं- मयण-सर-सल्लियंगीए गाढाणुराय-रसिय-हिययाए य मए सह विसयासेवणं स-परोवयार-संभवाउ कहं उभयलोग-दुहावहं ? ।

तओ 'किं तए सह वयण-कलहेण ? सव्वहा पररमणि-संगमं न समायरामि' त्ति भणंतो निग्गओ तमालतरु-निगुंजाउ राया । कीलंतो कलहंस-चक्कवाय-चक्क-चंकमण-रमणिज्ज-परिसरेसु सरेसु, वीसमंतो चारु-चूय-चंपयाऽसोय-सरल-कयलि-सोहा-सुहावणेसु वणेसु, मज्जमाणो रन्नलच्छि-वच्छयल-हारसरियासु सरियासु, पलोयंतो सुरय-केलि-कीलंत-किन्नरमिहुण-सुंदराउ गिरिकंदराउ जाव रन्नभूमी-सच्छंद-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पयार-सुहमणुभवइ ताव निरालंब-गयण-गमण-सुढिय-देहो व्व दियहनाहो वीसामत्थमत्थगिरि-सिहर-काणणमल्लीणो ।

काउमसक्को भीमाडवीए निवडिय-निवस्स पडियारं ।
लज्जावसेण मित्तो मित्तो व्व अदंसणं पत्तो ॥१२॥

¹⁰संझारायभरेणं पल्लवियं, कुसुमियं उडुगणेण ।
तिमिरेहि भमर-रुद्धं वणं व गयणं पि रमणिज्जं ॥१३॥

खणेण य -

रिक्खट्ठिमाल-भारी विलुलिय-तम-केसओ नह-कवाले ।
संझब्भ-राय-रुहिरं पियइ पओसो पिसाओ व्व ॥१४॥

तओ ¹¹राया चिंतिउं पवत्तो-रज्जं खु महंतं परवसत्तणं, जओ-

स-समय-नियमिय-भोयण-सयणाऽऽसण-रमणि-संग-ववहारो ।
दढ-रज्ज-रज्जु-बद्धो सच्छंद-सुहं जियइ न निवो ॥१५॥

परिवार-रुद्ध-सच्छंद-विहरणे पर-जणाणुवित्तिपरे ।
अवियाणिय-परमत्था रज्जे रज्जंति न हु कुसला ॥१६॥

अहं च असहाय[भूओ] वीर-चरिया-रसिय-चित्तो ।
अणुकूल-विहि-वसेण य तुरंगमेणेह पक्खित्तो ॥१७॥

अच्छेरय-सय-समाइन्नमरन्नमेयं, दिव्व-दंसणं पि एत्थ संभावीयइ, पओस-समओ य वीर-पुरिस-परक्कम-कणय-कसवट्टो, जइ वि चिरमणुचिय-चलण-चंकमण-जणिय-खेओ हं, तहावि केच्चिरं पि कालं सच्छंद-वण-विहरण-सुहमणुहवामि त्ति । तओ वियरिउं ¹²पवत्तो राया । जाव केत्तियं पि भूमि-भायं वच्चइ ताव दिट्ठा राइणा भूरि-भेरव-रवाऊरिय-नहंगणा पुरो परिभमंता भूयगणा, किलिकिलंता माणुसाऽऽमिसासणुत्ताला वेयाला, पसप्पंत-रोद्दऽट्टहास-भरिय-भुवणब्भंतरा जोट्टिंग-जक्ख-रक्खसाइ वंतरा । पयंपमाणा य परोप्परं-

रे रे ! धावह गिन्हह भिंदह भक्खह य मंस-रुहिराइं ।
भक्खण-निमित्तमम्हाणमेस पविसइ वणे को वि ॥१८॥

तओ राया तं तारिसं पेच्छिऊण 'अरे ! खुद्द-रयणीयरा एए मं संखोभेउमब्भुज्जया, अहं एए चेव भेसयामि त्ति चिंततो पसरंत-कंति-जाल-करालं करवालमायड्ढिऊण तेसिं चेव सम्मुहं सिग्घयरं पहाविओ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ते वि असंखुद्ध-माणसं रायाणमागच्छमाणमालोइऊण 'एसो अप्पडिहय-प्पहाव-भयंकरो को वि पुरिसो, एयस्स नव-मेह-लेहा-लसंत-विज्जुल्लयालोय-दुरवलोया दिट्ठी, पलय-काल-मायंड-मंडल-पहा-पसर-दूसहा तेय-लच्छी, कुविय-कयंत[60]-कडक्ख-च्छडाडोव-दुद्दंसणा [61]निसियासिलट्ठी । ता पलायम्ह पलायम्ह' त्ति पलवमाणा पलाणा ।

राया वि तहेव गंतुं पयट्टो । पुणो वि तालतरु-तुंग-जंघं, जमदंड-चंडिमुब्भड-भुयं, जलण-जाला-पलित्त-फाल-फार-जीहं, पलयकाल-दिप्पंतानल-फुलिंग-पिंग-लोयणं, चिबिड-वंक-फोक्क-नासं, तडितंतु-भासुर-सिरोयरुद्धमुद्धदेसं, हिमकर-कला-कुडिल-दाढा-[62]कराल-विरलिय-मुह-कुहरं, उब्भड-भिउडि-भीसण-भालवट्टं, सुराभंड-पलंबोयरं, मसि-महिस-मासरासि-सन्निगासच्छविं, अविरल-विगलंत-रुहिर-धारा-बीभच्छ-मयगलऽच्छ-विच्छाइअंगं, फार-फुंकार-मुक्क-विसकणुक्केर-कन्ह-पन्नग-पिणद्ध-चमूरुचम्म-निवसणं, विसमुन्नय-पंसु[लि]यंतर-पसुत्त-सरड-सरीसिवं, कसिण-सप्प-कय-कन्नपूरं, वाम-कक्ख-निक्खित्त-मणुय-मडयं, वाम-कर-कलिय-कवाल-ट्ठिय-सोणियाऽऽसव-वसा-पाण-लालसं, गल-पलंबमाण-नरमुंडमालं, दाहिणकरुग्गीरिय-गरुय-करवालं, घोरट्टहास-पूरिय-दिसाचक्कवालं, पावपुंजं व मुत्तिमंतं, कयंतं व रूवंतर-परिणयं, 'अरे रे ! हीणसत्त ! पुरिसाहम ! महा-सुहडवाय-गव्विर ! पलायसु पलायसु, ममं वा सरणं पवज्जसु, अन्नहा नत्थि ते जीवियं' ति पयंपमाणं पिसायं पासइ । गरुय-सत्तयाए य तं अवहीरिय राया जाव तहेव परिसक्कइ तो पुणो वि भणिउं पयट्टो-अरे दुन्नय-निहाण ! निहीण-पुरिस-पोरुसाभिमाण-विनडिय ! न गणेसि मह वयणं ?'

तओ ईसि हसिऊण कुंददल-धवल-दंतपंति-पसरंत-किरणुक्केर-विद्धंसियंधयारेण राइणा[63] भणियं- 'अहो निसायर ! सत्तगुण-रयण-सायर ! तुममेव पुरिसुत्तमो जो जीवियमविक्खमाणो माणुसमेत्तस्स वि न मे समीवमल्लियसि, दूर-देस-ट्ठिओ चेव वग्गसि, अहं च आजम्मं न सिक्खिओ कुओ वि पलाइउं, न याणामि[64] कस्सइ सरणं वा पवज्जिउं, ता कहं पलायामि ? कहं वा तुमं सरणं पवज्जामि ? ।'

पिसाओ वि 'अरे दुस्सिक्खिय ! कुविय-कयंत-कडक्खिय ! ममं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उवहससि ? ता दंसेमि ते दुन्नयस्स फलं, तालफलं व तड त्ति तोडेमि ते सीसं' ति भणिऊण समुग्गीरिय-खग्गवग्ग-हत्थो पत्थिओ पत्थिवाभिमुहं महावेगेण ।

तओ नरिंदस्स पवर[9]-पुन्न-पब्भारस्स प्पभावेण पडिहय-माहप्पो समीव-देसं [99] अक्कमिउं असक्कमाणो 'अहो ! महच्छरियं एसो [66]अनन्न-सामन्न-सत्ती को वि महापुरिसो, न पागय-नरो व्व अम्हारिसेहिं खोभिउं तीरइ' त्ति चिंतंतो लज्जावस-विलक्ख-वयणो उवसंहरिऊण सयल-डंबरं, पडिवज्जिऊण जणिय-लोयणाणंदं अमंद-रयणालंकार-किरण-करंबियंबरतलं पसंत-रूवं भणिउं पयट्टो- 'भद्द ! सप्पुरिस ! पराभूय-सयल-सत्तं तुह सत्तं, विजिय-जियलोय-दप्पं माहप्पं, अविमुक्क-नयक्कमो विक्कमो, जयस्स वि अजेयं तेयं, सयल-तेलोक्क-तिलयभूओ तुमं, जस्सेवंविहा परमहिल-परम्मुहा मई, सव्वहा सच्चरिएण पवित्तिया तुमए धरणी, अहं पि किं पि संपइ पवित्तो जाओ जेण तुमं दिट्ठो सि' ।

अह विम्हिएण भणियं रन्ना- 'भो महायस ! को तुमं ? न पच्चभिजाणामि भवंतं, साहेसु ।'

पिसाएण भणियं- 'अहं पिंगलक्खो महिड्ढिय-वंतरो, इहेव रन्ने कीलामि । संपयं पियथमाए मह पुरओ रुयंतीए वागरियं जहा- 'हं तमालतरु-निगुंजे वट्टमाणा माणवेण इमिणा पत्थिया[66] अणेगप्पयारं, न य पडिवन्नं मए तव्वयणं, तओ तेण रुट्ठेण इत्थमित्थं च कंठे घेत्तूण निच्छूढा, असब्भ-वयणेहिं खरंटिया, एवं ठिए य जइ[99] तुमं इमं न निगिण्हसि ता नाह ! नाहं तुह भज्जा, न तुमं मह पई ।' इमं च सुच्चा तक्काल-कलिय-कोवावेस-परवसत्तणेण अविभाविय-कज्जमज्झो पुव्वं निय-परिवारं पेसिऊण तुमं विद्दविउं पयट्टो हं । परिवारो वि मज्झ तुब्भ तेयमसहमाणो तक्खणा जिप्पुन्नय-पुरिस-ववसाओ व्व अकय-कज्जो नियत्तो । पच्छा सयमेव समुट्ठिओ हं । परं तुह अच्चब्भुय-पभाव-पडिहयप्पयावो समासन्न-देसं पि अक्कमिउं[७०] असक्को म्हि, किं पुण पहरिउं ?। तओ मए 'सच्च-सोय-रहियाणं पर-महिलाहिलास-लालस-माणसाणं माणुसाणं माहप्पमेरिसं न संभवइ, ता किं जं पियथमाए जंपियं तं सच्चं न व ?' त्ति चिंतंतेण विभंगबलेण नायं जहट्ठियं तुह सरूवं, निच्छियं पियथमा-पलत्तस्स अलियत्तणं, तुट्ठो य ते जणिय-सप्पुरिस-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पहरिसुक्करिसेण दुद्धरिस-धीरत्त-सत्तसारेण इमिणा सच्चरिएण । ता सप्पुरिस ! पत्थेसु किं पि जेण संपाडेमि समीहियमत्थं ।''

रन्ना भणियं- 'किमन्नं पत्थेमि ? संपाडियमेव सव्वं मणोरह-सएहिं पि दुल्लहं दिव्व-दंसणं दिंतेण तुमए ।'

तओ 'सप्पुरिस-चूडामणी उदारचित्तो एस न किं पि पत्थेइ, ता सयमेव किं पि संपाडेमि'त्ति चिंतिऊण भणियं पिसाएण- 'भद्द ! अमोहं दिव्व-दंसणं,[७१] ता गेन्हसु आरोग्गोदग-समुद्द-संभूयमेयं महाहारं, एसो य जस्स कंठ-कंदलमलंकरेइ न तस्स विसमा वि सत्थप्पहारा सरीरे संकमंति, इमस्स य ओहलण-सलिलेण सित्त-गत्तस्स तक्खणा पुव्वलग्गा वि रुज्झंति' त्ति पयंपमाणो गयणत्थो चेव नरनाह-कंठदेसम्मि पक्खिविऊणं तं महाहारं पत्तो अदंसणं पिसाओ ।

तओ रन्ना चिंतियं- चिर-चरण-संचरण-रीण-देहस्स मे निद्दाए मिलंति व्व लोयणाइं, [७२]ता कहिंचि वीसमिऊण रयणिं गमेमि त्ति । तओ जाव केत्तियं पि भूमिभागं वच्चइ ताव दिट्ठं नयरमेक्कमुव्वसं । पविट्ठो तत्थ राया । कोउगक्खित्त-माणसो तं पलोयंतो पत्तो तम्मज्झ-संठियं तुंग-मणहरं रायभवणं । आरूढो तम्मि दंतवलभियं । दिट्ठो तत्थ पहाण-पल्लंको । नुवन्नो तत्थ राया । समागया निद्दा । अद्ध-रयणीए य किंचि निद्दाविगमुम्मीलिय-लोयणेण दिट्ठो भेसणट्ठमुवट्ठिओ नाइ-दूरट्ठिओ विगराल-रूवो रक्खसो । तओ अवन्नाए भणिओ रन्ना-'पाए पमद्दसु' त्ति । पयट्टो तहेव काउं सो । पुणो पसुत्तो राया । पभायप्पायाए रयणीए पबुद्धेण रन्ना दिट्ठो पाए पलोट्टंतो रक्खसो, भणिओ य- भद्द ! चिरकालं किलेसं कारिओ सि, कहसु को तुमं ? किं वा नयरमेयमुव्वसं ?

तेण भणियं- महाराय ! एय-नयर-सामी लोहियक्खो नाम जक्खो अहं । एगया गय-राग-दोसो दसविह-समणधम्म-धुरा-धरण-कयतोसो चरित्त-रयणकोसो दुक्कर-किरियाकलाव-किलामिअ-काओ काउसग्गेण ठिओ इमस्स नयरस्स परिसरे महा-तवस्सी ।

पविसंत-नीहरंतो नयरजणो तं मुणिं महासत्तं ।
हणइ अहम्मसणओ कस-लट्ठी-[७३]लेट्ठु-घाएहिं ॥९९॥

धूलिं खिवइ सिरम्मि तहवि मुणी मुणिय-सयल-परमत्थो ।
सम्ममहियासयंतो चित्तम्मि विचिंतए एयं ॥१००॥

रे जीव ! तए नरए अणंतसो जाउ तिव्व-वियणाओ ।
पत्ताओ पुव्वजम्मेसु ताउ को वन्निउं तरइ ? ॥१०१॥

तिरियत्तणम्मि तुमए अणेग-जाईसु जायपुव्वेण ।
दुक्खं तितिक्खियं जं को तस्स करेज्ज परिमाणं ? ॥१०२॥

[74]तदवेक्खाए तं दुक्खं थोवमिणं ता गिरिंद-थिर-चित्तो ।
सम-सत्तु-मित्त-भावो होऊण तुमं सहसु सम्मं ॥१०३॥

एवं विसुद्ध-भावो स महप्पा मासखमण-पारणए ।
भिक्खट्ठा पविसंतो सणियं सणियं नयर-मज्झे ॥१०४॥

पारद्धि-पत्थिएणं दिट्ठो दुस्सासणेण नरवइणा ।
अवसउणो त्ति किलिट्ठाभिसंधिणा हियय-देसम्मि ॥१०५॥

भुयदंड-कुंडलीकय-कोयंड-विमुक्क-चंड-कंडेण ।
तह कह वि ताडिओ जह पंचत्तं सो मुणी पत्तो ॥१०६॥

एवमसमंजसं पेच्छिऊण रुट्ठेण सो मए निवई ।
[75]हणिउं तलप्पहारेण भासरासीकओ सहसा ॥१०७ ॥

साहूवसग्गकारि त्ति नयर-लोओ मए अभिद्दविउं ।
पारद्धो भीयमणो दिसोदिसं तो पलाणो सो ॥१०८॥

एएण कारणेणं संजायं उव्वसं नयरमेयं ।
संपइ नरिंद ! तुज्झ[76] वि उवसग्गं काउमाढत्तो ॥१०९॥

किंतु तुह पउर-पुन्नप्पभाव-पडिहय-पयाव-माहप्पो ।
मणसा वि विप्पियमहं नरिंद ! काउं न सक्केमि ॥११०॥

तुट्ठो तुह सत्तेणं संपइ ता भद्द ! किं पि पत्थेसु ।
तुह वंछियत्थ-करणा होमि कयत्थो अहं जेण ॥१११॥

तो नरवरेण वुत्तं जइ एवं ता तुमं तहा कुणसु ।
जह निवसंति पयाओ नयरम्मि इमेण(?इमम्मि) खेमेण ॥११२॥

एवं काहं ति पयंपिऊण जक्खो अदंसणं पत्तो ।
तत्तो तं भूअपुरं तप्पभिइं वसिउमाढत्तं ॥११३॥

अह समुग्गए समग्ग-तिमिरभर-हरण-पच्चले चंडंसुमंडले निग्गओ नयराओ राया । वच्चंतो य पत्तो कयलि-कयंब-जंबु-जंबीरंब-निकुरंब-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

निरंतरं वणंतरं । तम्मज्झादेस-ओसंठिय-सर-तीरम्मि दिट्ठो राइणा गाढप्पहार-नीहरंत[७७]-रुहिरधारा-सित्त-सव्व-गत्तो भू-विलुलिय-केसपासो मुच्छावस-नट्ठ-चेयणो[७८] निमीलिय-लोयणो धरणिवट्ठ-निवडिओ एगो तरुण-पुरिसो । तओ गंतूण समीवं सम्मं निरूविओ जाव 'जीवइ' त्ति । तओ करुणारसाइन्न-हियएण 'हा ! कहं महासत्तो को वि एस जुवाण-पुरिसो एरिसं विसम-दसं गओ ?' त्ति चिंतंतेण अणप्पमाहप्पं रयणावलिमोहलिऊण सलिलेण सित्तो सव्वंगं जाव उम्मिलिय-लोयणो उवसंत-वेयणो समागय-चेयणो सत्थीहुय-हियओ समुट्ठिऊण महीवट्ठाओ भणिउं पवत्तो-साहु महापुरिस ! साहु, सोहणो ववसाओ[७९], अपुव्वो करुणारसो, अच्चब्भूयं चरियं, अकित्तिमा मेत्ती[८०], विसुद्धा परोवयार-बुद्धी, किं च-

विहिणा विणिम्मिओ खलु सव्वंग-परोवयार-करणत्थं ।
तुम्हारिसाण जम्मो जयम्मि चंदण-दुमाणं व ॥११४॥

जइ न हु निहणिज्ज रवी तिमिर-समूहं स-कज्ज-निरवेक्खो ।
ता कह वट्टेज्ज जयं तम-नियर-निरुद्ध-दिट्ठिपहं ? ॥११५॥

अणवेक्खिय-निय-कज्जा[८१] वरिसंति घणा जहा महियलम्मि ।
तह उवयरंति नूणं परेसिं निक्कारणं सुयणा ॥११६॥

ता [८२]सप्पुरिस ! निक्कारण-बंधुणो तुज्झ पुरओ न याणामि किं पि जंपिउं, सव्वहा तुहायत्तं मे जीवियं ।

तओ राया सलज्जं खणमेक्कमहोमुहो ठाऊण भणिउं पयत्तो[८३]- भद्द ! जइ न रहस्सं ता कहेहि को तुमं ? केण वा निमित्तेण एयमवत्थंतर-मुवगओ[८४] ? त्ति ।

तेण भणियं- 'सप्पुरिस ! कुल-कलंकभूयं उभय-लोय-गरहणिज्जं अणाइक्खणीयमेव मह चरियं, तहावि तुह जीवियदायगत्तणेणालंघणीय-वयणस्स पुरओ निवेएमि, किंतु इओ वणनिउंजाओ पुरओ पवर-पासाओ चिट्ठइ, ता तत्थ गच्छम्ह ।'

गया तत्थ । समारुहिऊण पासायं निसन्ना सुहासणेसु । कहिउं पवत्तो जुवाणो । तं जहा-

अत्थि गयणग्ग-लग्ग-[८५]सिंग-सिंगार-गारविओ निरंतर-झरंत-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

निज्झरण-पसरंत-सीयरासार-सीय-सुरहि-पवण-पीणिज्जमाण-सुरयक्खिन्न-किन्नरमिहुण-सणाह-काणणोवेओ वेयड्ढो[६] नाम पव्वओ ।

दिवसम्मि पज्जलंतीहिं सूरिओवलसिलाहिं किर जत्थ ।
रत्तिं महोसहीहिं दीसइ दीवूसवो निच्चं ॥११७॥

तम्मि "[७]पइ-भवण-मज्झ-डज्झन्त-कालागरु-धूव-धूमंधयारेणाकाले वि कालब्भ-विब्भममुब्भावयंतं, नाणा-रयण-विणिम्मिय-पासाय-पंतिप्पहा-पूरेण सक्कचाव-चक्कवाल-संकुलं नहयलमुवदंसयंतं, गयण-मग्ग-वग्गंत-विज्जाहर-रमणि-माणिक्काभरण-संभारेण विज्जु-पुंज-संभवं संभारयंतं रहनेउरचक्कवालं" नाम नयरं । तत्थ पणमंत-विज्जाहर-नरिंद-मउलिमालोवलीढ[९]-पायवीढो, दस-दिसावहू-विहूसण-समुज्जल-जसकुसुम-समूह-महारामो, पररामा-रमण-परम्मुहो महासत्त-पत्तलीहो महिंदसीहो नाम विज्जाहर-चक्कवट्टी ।

बंधुं पि बंधणं पिव जो नाय-परम्मुहं परिच्चयइ ।
नय-तप्परं परं वि[१०] हु बहुमन्नइ निद्ध-बंधुं व ॥११८॥

तस्स मयरद्धय-महाराय-रायहाणी, अहरिय-रइ-रूव-सोहसोहग्ग-गुण-रयण-खाणी, कमल-कोमलारत्त-पाणी, महुमास-मत्त-कोइलाराव-रमणिज्ज-वाणी, विणयप्पवित्ति-पणरमणि-रंगसाला रयणमाला[११] नाम देवी । तीए य राइणा सह "[१२]विसयसुहमणुहवंतीए रयणचूड-मणिचूडाभिहाणा समुप्पन्ना दुवे पुत्ता । समए य कयकलागहणा साहिय-बहु-विज्जा, "[१३]पत्ता कुसुमसर-पसर-लीलावणं जोव्वणं, काराविया विसुद्ध-वंस-समुप्पन्नाणं निरुवम-रूव-लावन्नाणं खयरराय-कन्नाणं करग्गहणं । तत्थ कुलहरं कलाकलावस्स, संकेयट्ठाणं विसिट्ठ-चिट्ठाणं ति मुणिऊण निवेसिओ विज्जाहरिंदेण जुवराय-पए रयणचूडो । मणिचूडो वि कुमारभावम्मि वट्टमाणो अविवेय-वस-विसप्पमाण-जोव्वण-वियारो नाणा-कीलाहिं कीलंतो कालं गमेइ ।

अन्नया पुव्वनिकाइयाऽसुहकम्मोदएण रयणमाला-देवीए समुप्पन्नो महाजरो, पणट्ठा छुहा, उवट्ठिया "[१४]सरीरम्मि दाह-वेयणा, नाऽऽगच्छइ खणं पि निद्दा, विद्दाणं वयण-कमलं । निजुंजिया तच्चिकिच्छाकए रण्णा बहवे[१५] विज्जा । कीरंतेसु वि तेहिं विविहोवयारेसु असंजाय-पडीयारा[१६] विमुक्का जीवियव्वेण देवी । तओ अंसुजलाविल-लोयणो मुक्ककंठं 'हा

देवि ! कमलदल-दीह-नयणे ! हा चंद-चारु-वयणे ! हा विद्दुम-मणोहराहरदले ! हा कंकिल्लि-पल्लवारुण[97]-कर-चलणतले ! हा कुंद-सुंदर-दसणमाले ! रयणमाले ! कहिं पुणो[98] दट्ठव्वा सि ? तुमए विणा तिहुयणं पि सुन्नं व पडिहाइ' त्ति पलवमाणो [99]रोविउमाढत्तो खयर-राओ रयणचूड-मणिचूडेहिं समं ।

तहकहवि खयरनाहो अक्कंतो गरुय-सोग-सेलेण ।
जह सुक्खदुक्ख-निसदिवस-खुहपिवासाउ न मुणेइ ॥११९॥

परिचत्त-रज्जकज्जो निरुद्ध-नीसेस-कायवावारो ।
जोगि व्व वट्टमाणो मंतीहिं इमं समुल्लविओ ॥१२०॥

देव ! न जुत्तं तुम्हाणमेरिसं सोयकरणमविरामं ।
जेण विसीयइ सव्वं तुम्हाण विचित्तयाए जगं ॥१२१॥

उप्पत्ति-पलय-कलियं सव्वं खयरिंद ! तिजय-संभूयं ।
जं किं पि चराचरमत्थि वत्थु ता किमिह सोगेणं ? ॥१२२॥

इच्चाइ-पन्नविओ वि विओग-दुक्खभरक्कंतो कत्तो वि निव्वुइम-पावंतो जाव चिट्ठइ तावाऽऽगओ गयणलद्धि-संपन्नो विमलोहिनाण-नाय-सव्वभावो भव-दुह-दवग्गि-दाह-परसमणो समणो मणिप्पभो नाम नयरुज्जाणे, गओ वंदणत्थं तस्स खयरेसरो समं कुमारेहिं । परम-परिओसमुव्वहंतो पणमिऊण मुणिं निसन्नो उचियासणे । भणियं च मुणिणा-

भो भो ! चिट्ठह किं विसाय-वसगा वामोह-पज्जाउला ?
किं नाविक्खह जीव-लोयमखिलं माइंदजालोवमं ? ।
जम्हा को वि किमित्थ अत्थि भविही भूओ मुहं मच्चुणो
पत्तो पावइ पाविही व न हु जो मुत्तूण मुत्तिंगए ? ॥१२३॥

वाउद्धुय-धयग्ग-चंचलमिणं जीयं, कडक्खच्छडा-
सारिच्छं पिय-संगमं, गिरिनई-कल्लोल-लोलं सिरिं ।
तारुन्नं करि-कन्नताल-तरलं, संझब्भ-रागोवमं
[100]लायन्नं मुणिऊण धम्म-विसए मा होह मंदायरा ॥१२४॥

• • •

पाठांतर :

१. ०विरयं पव० **ल. रा** ॥ २. थुइवाइं । **ल. रा.** ॥ ३. वदति **पा.** ॥ ४. आयवभावेण होइ **ल. रा** ॥ ५. इय कयबुद्धी काउं **ल. रा.** ॥ ६. कप्पतरु स० **दे. पा.** ॥ ७. आगरु व्व **ल.रा** ॥ ८. गयणंगलग्ग० **ल.रा** ॥ ९. असोगकलिया पि० **दे. पा.** ॥

१०. भुवणवणं पल्लवियं व रेहए रंजियं पयावेण ।
जस्स जसप्पसरेणं धवलियमेयं कुसुमियं व ॥४४॥ **दे. पा.** ॥

११. जस्संतेउरिणीओ सहंते रिउसुंदरीओ य ॥ **दे. पा.** ॥ १२. सुंदरिम० **ल. रा.** ॥ १३. ०लोयणं हरिसिभर० **दे. पा.** ॥ १४. किं मह **पा.**; किमह **दे.** ॥ १५. ०पयारेण । **ल. रा** ॥ १६. रूववज्जिओ **रा.** ॥ १७. नइपरो **दे. पा.** ॥ १८. अकीरमाणो **दे. पा** ॥ १९. लद्धुं पि **दे. पा.** ॥ २०. पसत्थदियहे **दे. पा.** ॥ २१. ०या गयघडा दु० **दे. पा.** ॥ २२. लज्जियं **ल. रा.** ॥ २३. मज्जियं **ल. रा.** ॥ २४-२५. ता **दे. पा.**॥ २६.महाराए **दे. पा.** ॥ २७. विज्जमाणम्मि **दे. पा.** ॥ २८. अलमेत्थ **दे. पा.** ॥ २९. ०तिलोये **ल. रा.** ॥ ३०. ०मेयं ति काउं **दे.** ॥ ३१. ०ऊण दिन्नं नि० **दे. पा.** ॥ ३२. निरुवमला० **दे. पा.**॥ ३३. तत्थ चेसिस्सामि **दे. पा.** ॥ ३४. खिज्जये **ल.** ॥ ३५. मुत्तूण तणं **दे. पा.** ॥ ३६.०हं । काऊण कयाणगाइसामग्गिं संचलिओ संवच्छ० **दे. पा.** ॥ ३७. ०पसत्थमुहुत्ते **दे. पा.** ॥ ३८. पडिहत्थिऊण **ल. रा.** ॥ ३९. पवणव्वेल्लिर० **ल.** ॥ ४०. समुत्थलिओ **ल.** ॥ ४१. भीम-निडालपट्टो **ल. रा.** ॥ ४२. देव्वमणु० **दे. पा.** ॥ ४३. चेय **दे. पा.** ॥ ४४. वाहेज्जमाणो तु० **ल.** ॥ ४५. ०या तरुणो, दो० **दे. पा.** ॥ ४६. तक्खण **ल. रा.** ॥ ४७. ०एण सयलवित्थारो । **दे. पा.** ॥ ४८. ०थालायमाण० **दे. पा.** ॥ ४९. ०फुल्लंधुयधो० **दे. पा.** ॥ ५०. जलकीलासुक्ख० **दे. पा.** ॥ ५१ तामरसयाइं **ल. रा.** ॥ ५२. ०रुहाण मूले कु० **दे. पा. रा.** ॥ ५३. निवीसमंति **दे. पा.** ॥ ५४. ०निउंजमियमयमइ० **दे. पा.** ॥ ५५. कीरमाणाए **दे. पा.**॥ ५६. परिच्छिया **ल.** ॥ ५७. नक्खत्तेहिं कुसुमियं, पल्लवियं बहल-संझराएण । **ल. रा.** ॥ ५८. राओ **दे. रा. ल.** ॥ ५९. पयत्तो **दे. ल.** ॥ ६०. ०कयंतक्खडक्खच्छडा० **ल. रा.** ॥ ६१. निसाया० **दे. पा.** ॥ ६२. ०लविवलियमुह० **दे.** ॥ ६३. रायणा **ल. रा.** ॥ ६४. याणेमि **ल. रा.** ॥ ६५. पउरपुन्न० **दे. पा.** ॥ ६६. ०देसमक्कमिउमसक्क० **दे. पा.** ॥ ६७ अनन्नसत्ती **दे. पा.** ॥ ६८. पच्छिया **दे. पा.** ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

६९. जइ इमं न रा. पा. ॥ ७०.०उ न सक्को ल. रा. ॥ ७१. तो ल. रा. ॥ ७२. तो दे. पा. ॥ ७३. ०लेट्ठु-पाएहिं ॥ ल. ॥ ७४. तव काए तं ल. रा. ॥ ७५. हणिओ तलं ल. रा. ॥ ७६. तुब्भ ल. रा. ॥ ७७. ०नीहरेंत ल. ॥ ७८. चेयणो दे., ०चेअणो रा. ॥ ७९. ०साओ अच्चब्भूयं रा. ॥ ८०. मित्ती ल. रा. ॥ ८१. ०कज्जं वरि० ल. रा. ॥ ८२. सुपुरिस ल. रा. ॥ ८३. पवत्तो पा. ॥ ८४. ०मुवागओ सि । तेण दे. पा. ॥ ८५. ०रिंगसंगओ नि० दे. पा. ॥ ८६. वेयड्ढो पव्वओ दे. पा. ॥ ८७. पयभवणम० ल. रा. ॥ ८८. वालं नयरं दे. पा. ॥ ८९. ०मालावलीढ रा. ॥ ९०. परं पिहु ल. रा. ॥ ९१. ०माला देवी दे. पा. ॥ ९२. सह दिव्वसुह० ल. रा. ॥ ९३. पत्ता सुमसर० ल. रा. ॥ ९४. ०ट्ठिया सरीरम्मि दाह० ल. रा. ॥ ९५. बहवो दे. पा. ॥ ९६. पडियारा ल. रा. ॥ ९७. ०रुण चलणतले ल. रा. ॥ ९८. पुणोऽवदड्ढव्वा पा. ॥ ९९. रोदिउं ल. रा. ॥ १००. लावन्नं ल. रा. ॥

• • •

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बिइओ पत्थावो

एत्थंतरे खयरेसरेण भणियं- 'भयवं ! तुम्ह दंसणमेत्तेणावि पणट्ठो [1]सोग-संतावो मे, विहसियं हियएण, तुम्ह मुहकमल-पलोयण-लालसाण लोयणाण सोक्खो वि परिओसो संजाओ जो कहिउं पि न तीरइ, ता किमत्थि तुम्हाणं मम य पुव्वभविओ को वि संबंधो न व ?' त्ति ।

गुरुणा वागरियं—अत्थि ।

खयरेसरेण वुत्तं—करेह तक्कहणेणाणुग्गहं ।

मुणिणा वागरियं—निसामेह ।

भारहे वासे कुसत्थल-संन्निवेसे विसिट्ठ-रूव-लावन्नावगन्निय-मयणो [2]मयणो नाम कुलपुत्तओ । तस्स बालत्तणओ वि पढिय-सिद्धविज्जाओ [3]दोन्नि भज्जाओ । पढमा चंडा, अवरा पयंडा । तासिं च कलहं पेच्छिऊणं पयंडा ठविया समीववत्ति-गामंतरे । कओ मयणेण तासिं समीवावत्थाण-दिण-नियमो । एगया केणइ कारणेण पयंडाए समीवे दिणमहिगमेगं ठाऊण गओ चंडा-समीवं[4] सो । तओ तीए चंड-कोवावेस-वस-विसप्पंत-भिउडि-भीम-भालवट्टाए घरे पविसंतस्सेव तस्स पक्खित्तं मुसलमभिमुहं । तं समागच्छंतं पेच्छिऊण सत्तट्ठ-पयाइं ओहट्टिऊण ठिओ मयणो । [5]तं भूमिं पत्तं मुसलरूवं मुत्तूण जाओ भीम-भुयंगमो । सो पहाविओ मयणाभिमुहं । पलाणो भीयमणो मयणो पच्छाहुत्तं । अंतरा नइ-पुलिणम्मि भुयंगममासन्नं पेच्छिऊण पक्खित्त-मुत्तरिज्जं । विलग्गो तत्थ भुयंगमो खणं । पत्तो पयंडाए घरं मयणो । दिट्ठो अणाए सासाऊरिय-हियओ भयब्भंत-नयणो, भणिओ य-'अज्जउत्त ! किमेवं आउलो व्व लक्खीयसि ?' सिट्ठो य तेण सकोव-चंडा-पक्खित्त-मुसल-वुत्तंतो । तीए हसिऊण वुत्तं- एत्तियमेत्तं चेव ते भय-कारणं ? ता मुंच भयं । विम्हिओ मयणो । ताव फडाडोव-भयंकरो भवणंगणमागओ भुयंगमो दिट्ठो अणाए । सरीरमुव्वट्टमाणीए उव्वट्टण-वट्टीओ खित्ताओ तयभिमुहं । जायाओ ताओ नउलरूवाओ । [6]रुद्धो समंतओ नउलेहिं भुयंगो । तं खणेण खंडाखंडिं काऊण गया दिसोदिसं नउला ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अह अच्चब्भुय-चरियं दोण्ह वि दट्ठूण विम्हिओ मयणो ।
सप्प-[8]भय-चत्त-चित्तो चिंतिउमेवं समाढत्तो ॥१२५॥

चंडाए सकोवाए सरणं जाया इमा पयंडा मे ।
जइ पुण करेज्ज कोवं इमा वि ता होज्ज को सरणं ? ॥१२६॥

पियकारिणो वि मह विप्पिएण केण वि इमा वि कुप्पेज्ज ।
पियमप्पणो वि तीरइ पए पए केत्तियं काउं ? ॥१२७॥

सो नत्थि विप्पियाइं अवगणिउं गणइ जो सुकयमेव ।
एक्केण दुक्कएणं 'सुकय-सहस्सं फुसइ लोओ ॥१२८॥

ता भुयगीहिं व भयंकराहिं एयाहिं दोहिं वि अलं मे ।
इय चिंतिऊण चित्ते गेहाओ विणिग्गओ मयणो ॥१२९॥

पत्तो परिब्भमंतो कमेण मणि-निम्मियामर-निवासे ।
वासवपुर-संकासे संकासे पवर-नयरम्मि ॥१३०॥

तो कुसुम-गंध-लुद्धालि-जाल-मुहलम्मि परिसरुज्जाणे ।
कंकेल्लितरुस्स तले विस्साम-निमित्तमुवविट्ठो ॥१३१॥

तावाऽऽगंतूण इमं भणिओ सो भाणुदत्त-[9]गिहवइणा ।
भो मयण ! सागयं ! भद्द ! एहि नयरम्मि पविसामो ॥१३२॥

कह मुणइ मज्झ नामं इमो ? त्ति अह विम्हयं परिवहंतो ।
संचलिओ सो तेणं नीओ निय-मंदिरमुदारं ॥१३३॥

महया संरंभेणं कारविओ ण्हाण-भोयणाईयं ।
भणिओ य तदवसाणे सप्पणयं भाणुदत्तेणं ॥१३४॥

विज्जुलया-नामेणं मह धूया अत्थि कमल-दल-नयणा ।
सुरसुंदरि-सम-रूवा पाणिग्गहणं कुणसु तीसे ॥१३५॥

तो विम्हिएण मयणेण जंपियं मह अदिट्ठपुव्वस्स ।
कह मुणसि तुमं नामं ? कह वा अमुणियकुलस्स ममं ॥१३६॥

देसि तुमं निय-धूयं ? महंतमिह कोउगं महं हियए ।
तो भणइ भाणुदत्तो इत्थऽत्थे कारणं सुणसु ॥१३७॥

भद्द ! चउण्हं पुत्ताणमुवरि एसा मणोरह-सएहिं ।
संजाया मह धूया समग्ग-भुवणच्छरिअभूया ॥१३८॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पत्ता य जोव्वणमिमा पाणेहिंतो वि वल्लहा मज्झ ।
खणमित्तं[10] पि इमीए विरहं सोढुं न सक्को हं ॥१३९॥

एसा विवाह-जोग्गा वट्टइ संकडमिमं समावडियं ।
इय चिंताभारेणं गरुएण अहं समक्कंतो ॥१४०॥

ववगय-छुहा-पिवासो सुन्न-मणो चत्त-सयल-वावारो ।
वट्टामि मज्झ-रत्ते अलद्ध-निद्दा-सुहो जाव ॥१४१॥

ताव कुलदेवयाए भणिओ हं भद्द ! मा कुणसु चिंतं ।
अज्जं नयरुज्जाणे असोगतरुणो तल-निसन्नं ॥१४२॥

पिच्छिहिसि पुरिस-रयणं विसाल-कुल-संभवं कला-कुसलं ।
दिवसस्स पहर-समए मयणं नामेण गुणवंतं ॥१४३॥

पच्चक्खं पिव मयणं तस्स तुमं दिज्ज कन्नगं एयं ।
कुलदेवया मए तो नमिउं भणिया इमं वयणं ॥१४४॥

धूया-वरप्पयाणेण देवि ! तुमए अहं समुद्धरिओ ।
चिंता-समुद्दमग्गो तो सा वि अदंसणं पत्ता ॥१४५॥

तत्तो रयणीसेसं गमिउं काऊण गोस-किच्चाइं ।
उज्जाणमागओ हं ता चक्खुपहं तुमं पत्तो ॥१४६॥

एएण हेउणा ते मुणामि नामं इमं च दाहामि ।
विज्जुलयं निय-धूयं करेसु ता मज्झ वयणमिणं ॥१४७॥

पडिवन्नमिणं मयणेण सुह-मुहुत्ते करग्गहण-लग्गे ।
वित्ते परसत्थ-वत्थाऽलंकार-[11]सुवन्नमाईहिं ॥१४८॥

सम्माणिऊण मयणस्स भाणुदत्तेण अप्पियं भवणं ।
तो विज्जुलयाए सह[12] तत्थ गओ कीलइ जहिच्छं ॥१४९॥

अमुणिय-कुल-सीला वि हु जत्थ व तत्थ व गया वि सप्पुरिसा ।
पावंति पुव्व-पुन्नोदएण मणवंछियं सोक्खं ॥१५०॥

ता जइ महल्ल-कल्लाण[13]-कामिणो माणवा इहं तुब्भे ।
ता कुणह तह पयत्तं जह पुन्नं पावए [14]वुड्ढिं ॥१५१॥

अह भाणुदत्त-दत्त-दविण-विणिओग-संपज्जमाण-मणवंछिय-त्थसत्थस्स मयणस्स गएसु कइवय-वच्छरेसु कयाइ पयट्टो पाउसारंभो ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जत्थ विरहग्गि-डज्झंत-विरहिणी-हियय-समुल्लसिय-धूमलेहाहिं व मेह-मालाहिं सामलीकयं गयणयलं, जलय-पिययम-समप्पियं कणयमयाभरणं पिव विज्जुलयालोयं वहंति दिसि-वहूओ, पाउस-महाराय-रज्जघोसणा-डिंडिमो व्व सव्वत्थ-वित्थरिओ घण-गज्जिरवो, माणिणी-माण-खंडण-पयंड-खग्ग-धाराओ व्व निवडंति सलिल-धाराओ, [14]महि-महिला-हार-सरियाओ व्व सरिआओ पसरियाओ। एवंविहे य तम्मि ओलोयण-गयस्स मयणस्स नयण-विसयं समागया समासन्न-घरंगण-गया रुयमाणी रमणी पउत्थवइया, सुया य सावहाणेण होऊण किं पि पलवमाणी। जहा—

हा नाह ! अणाहं मं मुत्तुं देसंतरं तुमं पत्तो।
संपत्तो घण-समओ जइ वि तुमं तह वि नो पत्तो ॥१५२॥

घणगज्जि-विज्जुतट्ठा ! सरणं रयणीसु कं पवज्जिस्सं।
गलइ कुडीरं पि इमं निवडंते नीर-पूरम्मि ॥१५३॥

निट्ठिय-चिरंतण-धणा किं देमि अहं रुयंत-डिंभाणं ?।
अहह ! विहिणा अहं चिय विणिम्मिया दुक्ख-कुलभवणं ॥१५४॥

तओ चिंतियं मयणेण-'हा ! वराईओ रमणीओ पइ-विरहे एवंविहं दुत्थावत्थं अणुभवंति, चंडा-पयंडाओ वि मह विरहे महंतं दुक्खमावन्नाओ भविस्संति' त्ति सोग-संगलंत-जलेण तरंगियाइं नयणाइं मयणस्स। भणिओ सो विज्जुलाए-'नाह ! किमेवमुव्वेय-कारणं ?।' निब्बंधे य सिट्ठो अणेण पुव्व-भज्जा-संभरण-वइयरो। दूमिया इमा चित्तेण। अदंसिय-वयण-वियाराए भणियमणाए-नाह ! जइ एत्तियं हियय-दुक्खं तो तत्थ गंतूण किं न कीरइ रई तासिं?। मयणेण भणियं-पिए ! जइ तुमं विसज्जेसि। तीए भणियं-संपयं पंक-दुग्गमा मग्गा, विसमाओ गिरिनईओ, ता न तीरइ गंतुं, वित्ते पाउसे वच्चिज्जासि। तव्वयणेण ठिओ सो। अह पयट्टे फुट्टंत-कंदोट्ट-संघट्टे भमंतालि-थट्टे विसट्टंत-दोघट्ट-मरट्टे सरय-समए विज्जुला-समप्पिय-करंबय-पाहेज्जं घेत्तूण निग्गओ कुसत्थलाभिमुहं। वच्चंतो य पत्तो कमेण दिवस-पहर-दुग-समए गाममेक्कं। वीसंतो तत्थ सरोवर-तीर-तरु-तले। तओ पक्खालिय-कर-चलणो[16] कय-देव-गुरु-सुमरणो [17]भोत्तुमणो चिंतिउं पवत्तो—

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जइ एज्ज को वि अतिही चक्खुपहं मे इमम्मि समयम्मि ।
ता सुकय-लेसमज्जेमि तस्स दाऊण गासद्धं ॥१५५॥

एक्केण गुणेण जियं जयं पि काएण निग्गुणेणावि ।
काउं परेसि सद्दं जो भुंजइ थेव-भक्खं पि ॥१५६॥

ते च्चिय जयम्मि धन्ना ताण गया पाणि-पल्लवे लच्छी ।
जे अतिहि-संविभागं काऊण सया वि भुंजंति ॥१५७॥

एवं चिंतयंतेण तेण दिट्ठो पासवत्ति-देवउलाओ निग्गओ गामं पइ पत्थिओ भास-समुद्धूलियंगो जडा-मउड-वेढिय-सिरो पुडिया-वावड-करो तवस्सी । तओ पहट्ठ-हियएण वाहरिऊण दिन्नो तस्स करंबओ । 'पज्जत्तं' ति तस्सेव सरोवरस्स तीरे कयावस्सगो भोत्तुमारद्धो सो । मयणो य भोत्तुकामो कवलं करे कुणइ जाव, ताव केणइ च्छीयं । तओ संकिय-मणो पडिवालिउं खणमेक्कं जाव ताव सो तवस्सी करंबय-प्पभावेण जाओ तक्खणा ऊरणो । पहाविओ संकास-नयराभिमुहं । 'कहिं वच्चइ ?' त्ति विम्हिय-माणसो मयणो लग्गो तस्साणुमग्गेण । पत्ता दो वि नयरं । गया तयब्भंतरं । पविट्ठो विज्जुलाए भवणं ऊरणो । इयरो य 'किमेसो करेइ?' त्ति पच्छन्नं पेच्छंतो ठिओ बाहिं । दिट्ठो य ऊरणो विज्जुलाए । तओ खडक्कियं ढक्किऊण पारद्धो पुव्वावलिय-वत्थ-लउडेण हणिउं । तं च विरसमारसंतं सोऊण मिलिओ लोगो । तेणावि करुणावन्न-मणेण वारिया विज्जुला । तीए वि सो सित्तो मंताभिमंतिय-जलेण जाओ तवस्सी । तओ विम्हओफुल्ल-लोयणेण लोएण पुट्ठो सो-भयवं ! किमेयं ? ति । सिट्ठो तेण निय-वुत्तंतो । तओ लोगेण भणियं-

सच्चमिणं संजायं पसिद्धमाहाणयं जए सयले ।
खायइ करंबयं जो सो सहइ विलंबयं पुरिसो ॥१५८॥

इमं च दट्ठूण सव्वमुव्विग्गमणो मयणो चिंतिउं पवत्तो- अहो ! एयाए विज्जुलाए इमिणा निय-चरिएणं निज्जियाओ चंडा-पयंडाओ, ता कुसलकामिणा माणवेण दूरेण वज्जणिज्जाओ महिलाओ महंत-अणत्थ-सत्थेक्कसरणीओ,

दिट्ठं पि चित्त-संतास-कारणं जाणमेरिसं चरियं ।
ताओ वि महइ मूढो महिलाओ ही ! महामोहो ॥१५९॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अवराह-पयं थेवं पि पाविउं तह कहं पि कुप्पंति ।
जह अच्चंत-पियस्स वि पाण-पणासं पकुव्वंति ॥१६०॥

अन्नं चवंति अन्नं कुणंति अन्नं वहंति हियएण ।
जाउ रमणीउ मइमं कह तासु करेज्ज विस्सासं ? ॥१६१॥

एवं विभावयंतो नयराओ निग्गओ परिब्भमंतो ।
पत्तो कमेण मयणो पवर-पुरीए हसंतीए ॥१६२॥

गोरीओ पइ-मंदिरं, पइ-पयं दीसंति जत्थेसरा ।
लच्छीओ पइ-माणुसं, पइ-वणं रंभाण संभावणं ।
एक्केक्केण इमेण पावियमयं पासाय-पंति-प्पहा-
पूरेणं अमरावइं हसइ [18]सा नूणं हसंतीपुरी ॥१६३॥

तत्थ कुसुमावयंसुज्जाणस्स विभूसणम्मि जिण-भवणे ।
कणयमय-खंभ-कलिए मरगयमय-कुट्टिम-तलम्मि ॥१६४॥

कह वि पविट्ठो मयणो जुगाइदेवस्स पेच्छिउं पडिमं ।
निप्पडिमरूव-पिरुणिय-परम-दयं [19]थुणिउमाढत्तो ॥१६५॥

जं दिट्ठी करुणा-तरंगिय-पुडा एयस्स, सोमं मुहं
आगारो पसमागरो, परियरो संतो, पसन्ना तणू ।
तं मन्ने जर-जम्म-मच्चु-हरणो देवाहिदेवो इमो,
देवाणं अवराण दीसइ जओ नेवं सरूवं जए ॥१६६॥

जायं मज्झ मणुस्स-जम्म [20]सहलं, धन्नाण चूडामणी
संपन्नो हमिमं पि लोयण-जुयं पत्तं कयत्थत्तणं ।
पारं भीम-भवन्नवस्स दुलहं लद्धं मए संपयं,
जं एसो भयवं भवक्खयकरो चक्खूण लक्खं गओ ॥१६७॥

एवं भणंतो पणमिऊण जुगाइदेवं निसन्नो तत्थेव मयणो ।

एत्थंतरे समागओ तत्थ धणदेवो[21] नाम वणियपुत्तो । सो वि जयगुरुं नमंसिऊण निविट्ठो मयण-समीवे । पुट्ठो अणेण सिणेहसार-वयणेहिं मयणो-भद्द ! कत्तो समागओ सि ? किं वा कारणं जं हिययब्भंतर-फुरंत-दुक्खो व्व लक्खीयसि ? तओ मयणेण 'सिणिद्ध-बंधु व्व को वि महप्पा एस ममं समुल्लवइ' त्ति चिंतिऊण भणियं-भद्द ! संपयं संकास-नयराओ समागओ म्हि, जं पुण हियय-दुक्ख-कारणं तं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जइ वि लज्जणिज्जं तहा वि तुह पढम-दंसणे वि पयासियाणप्प-सिणेहत्तणेण परम-बंधुभूयस्स पुरओ सीसइ । तओ सिट्ठो जहट्ठिओ सव्वो वि निय-वुत्तंतो । धणदेवेण वुत्तं-केत्तियमेत्तमेयं जइ मह भज्जाण वुत्तंत्तं सुणेसि ? । विम्हिय-मणेण मयणेण वुत्तं- भद्द ! कहसु तुमं पि निय-भज्जा-वुत्तंतं । तओ धणदेवो कहिउमाढत्तो । तहाहि-

इहेव नयरीए जिणधम्म-[२२]किच्च-निच्चल-मणो[२३] मुणिजण-पज्जुवासणपरो परोवयार-निरओ धणवई सेट्ठी । तस्स य सयल-गुण-कलाव-कुलभवणं भवणंगण-संचारिणी मुत्तिमई लच्छि व्व लच्छी नाम भज्जा । ताणं च उभय-लोगाविरुद्धवित्तीए वट्टंताण जाया [२४]दोन्नि पुत्ता-पढमो धणसारो, इयरो धणदेवो । समए कराविया दो वि कला-गहणं । जोव्वणारूढा य परिणाविया विसिट्ठ-रूव-लावन्नाओ वणिय-कन्नाओ । अह निय-निय-कम्म-संपउत्ताणि सव्वाणि कालं वोलंति ।

अन्नया मरण-पज्जवसाणयाए जीवलोयस्स, पइसमय-विणस्सर-सरूवत्तणेण आउकम्मुणो मुणिय-निय-जीवियावसाण-समओ सम-सत्तु-मित्त-भावो भव-विरत्त-मणो कय-सव्व-सत्त-खामणो पंचपरमेट्ठि-मंत-सुमरणपरो परलोय-पहं पवन्नो धणवई । तओ पइ-विओग-सोग-सलिल-पज्जाउलच्छी लच्छी वि निच्छिऊण सुसाणं व भीसणं घरवासं विसय-वासंग-विमुही महंत-तव-विसेस-सोसिय-तणू पंचत्तमुवगया । अह अम्मा-पिउ-मरण-रणरणय-दूमिय-मणा मणागं पि निव्वुइमपावंता परिचत्त-सयल-कज्जा धणसार-धणदेवा अणुसासिया तक्कालागय-मुणिचंद-मुणिंदेण-

भो भो ! किमेवमच्चंत सोग-संभार-निब्भरा तुब्भे ।
गमह दिवसाइं ? जं नो परिभावह भव-सरूवमिणं ॥१६८॥

जं किं पि चराचरमत्थि वत्थु सयलम्मि जीव-लोयम्मि ।
खणभंगुरस्सरूवं सव्वं ता किमिह सोगेण ? ॥१६९॥

पाणेसु निच्च-पहिएसु चले सरीरे,
तारुन्नयम्मि तरले, मरणे धुवम्मि ।
धम्मं जिणिंद-भणियं चइऊण [२५]इक्कं
जंतूण ताणमवरं नणु नत्थि किंचि ॥१७०॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तओ मंदीकय-सोगा सगिह-कज्जाइं चिंतिउं पयट्टा । कयाइ कलहमाणीओ घरिणीओ पेच्छिऊण विभत्त-घरसारा ठिया भिन्न-भिन्न-घरेसु । अह वच्चंतेसु वासरेसु भणिओ धणसारेण लहुभाया-किमेवमुव्विग्ग-माणसो व्व दीससि ? धणदेवेण भणियं-न मे इमीए घरिणीए घरवासो संभाविज्जइ । जेट्ठेण वुत्तं-किमन्नं कन्नगं परिणावेमि ? इयरेण भणियं-एवं करेसु । तओ जेट्ठेण विसिट्ठ-वाणियगं मग्गिऊण परिणाविओ धणदेवो दुइय-दइयं । भवियव्वयावसेण सा वि तहाविहा चेव । न चित्त-संतोस-निबंधणं धणदेवस्स ।

तेणेगया भारिया-चरियं पलोइउकामेण कवडेण भणियाओ भज्जाओ, जहा - सज्जेह सेज्जं, सीयज्जर-बाहिज्जमाणो न तरामि ठाउं । तओ पगुणीकया सेज्जा । नुवन्नो धणदेवो । खित्ताणि उवरिं पउर-पावरणाइं । अह [२६]अत्थमुवगओ गयणमणी । ओत्थरिया समग्ग-दोस - पच्छायणी रयणी । घोर-सद्द-पयडिय-कवड-निद्दो धणदेवो जाव चिट्ठइ [२७]ताव जिट्ठाए भणिया इयरी - हले ! सिग्घं पगुणीहोसु । तओ तुरियं कय-गेहकिच्चा [२८]पगुणीहूया सा । अह गेहाओ निग्गंतूण गयाओ दो वि घरुज्जाणे । आरूढाओ महंतं [२९]सहयार-पायवं । पवत्ताओ मंत-सुमरणं काउं । धणदेवो वि सणिय-सणियं तयणुमग्ग-लग्गो निग्गंतूण तम्मि चेव चूय-पायवे उत्तरिज्जेण अप्पाणं बंधिऊण थुड-विलग्गो ठिओ । खणेण य अचिंत-सामत्थयाए मंत-माहप्पस्स पयट्टो गयणेण गंतुं चूय-तरू । लंघिऊण अणेग-तिमि-मगर-गाह-रउद्दं समुद्दं पत्तो रयणदीवावयंसभूयं पभूय-रयणखंड-मंडिय-परंडि-पासाय-सयसहस्स-सोहियं रयणपुरं नाम नयरं ।

तरुण-जण-समूहो जम्मि रूवाभिरामो,
　　वियरइ पडिवन्नाणेगमुत्ति व्व कामो ।
अवि अमुणिय-विज्जो जत्थ विज्जाहराणं,
　　कुणइ जुवइ-वग्गो दंसणेणावि थंभं ॥१७१॥

तत्थ परिसरे ठिओ महीए चुय-दुमो । मुत्तूण तं दूरीभूओ धणदेवो । तब्भज्जाओ अवयरिऊण पविट्ठाओ नयरं, तयणुमग्ग-लग्गो धणदेवो वि ।

इओ य तत्थ सिरिपुंजो सेट्ठी, तस्स चउण्ह पुत्ताणमुवरि वर-रूव-लावन्नेहिं तेलोक्क-तिलयभूया सिरिमई धूया । दिन्ना य सा वसुदत्त-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सत्थवाहपुत्तस्स । तम्मि समए य पयट्टो महया रिद्धि-वित्थरेण विवाह-महूसवो । विविह-नेवच्छ[10]-सच्छाय-देहच्छवीओ फुरंत-रयणालंकार-किरण-कडप्प-कप्पिय-सुरिंद-सरासणाओ नच्चंति चारु-तरुणीओ । तओ मुणियमेयाण चरियं नियत्तमाणीओ इमीओ पुणोवि अणुसरिस्सं ति चिंतिऊण धणदेवो तं चेव विवाह-महूसवं पलोयंतो ठिओ सिरिपुंज-घरदुवारे ।

एत्थंतरे तुरंगमारूढो वसुदत्त-पुत्तो सिरिपुंज-घरे पविसंतो कुऊहलाकुलिय-मिलिय-लोय-सम्मद्द-पणुल्लिय-तोरण-विणिग्गयाए तिक्खधाराए तलियाए अवियव्वयावसेणं 'तड' त्ति तोडिउत्तमंगो [11]पंचत्तमुवगओ । तओ वसुदत्तो सपरियणो सोग-संरंभ-निब्भरो रोवमाणो पत्तो निय-घरं ।

सिरिपुंजो वि तहाविहमयंड-डमरं उवट्ठियं दट्ठुं ।
'हा ! कहमिन्हिं धूया होहि' त्ति विसायमावन्नो ॥१७२॥

तो घर-जणेण भणिओ संतावो कीस कीरई एवं ? ।
अन्नस्स कस्स वि इमा दिज्जउ कन्ना किमन्नेण ? ॥१७३॥

तत्तो सिरिपुंजेणं आणत्ता तक्खणं निय-मणुस्सा ।
आणेह कं पि पुरिसं गवेसिउं राय-मग्गम्मि ॥१७४॥

एयं वयणं पडिवज्जिऊण पुरिसा वि निग्गया जाव ।
ता दिट्ठि-पहं पत्तो धणदेवो दिव्व-रूव-धरो ॥१७५॥

नीओ य घरे 'पेच्छामि विहि-विलसियं इमं' ति चिंतंतो ।
तक्खण-न्हाय-विलित्तो परिहिय-बहुमुल्लय-दुगुल्लो ॥१७६॥

परिणाविओ य धूयं तत्थ पयट्टो तहेव आणंदो ।
धणदेवो उ सचिंतो चिट्ठइ बाहिं पलोयंतो ॥१७७॥

ता आगयाओ ताओ अज्जाओ कीलिऊण सेच्छाए ।
दट्ठूण विवाहमहं जेट्ठाए जंपिया इयरी ॥१७८॥

अज्ज वि गरुया रयणी महूसवं तो पलोइमो एयं ।
पडिवन्नमेयमियरीए दो वि तो दट्ठुमाढत्ता ॥१७९॥

अह लहुईए भणिया इयरी- पेच्छ सुरमिहुणं व मणहरागार-वहूवरं, नवरं वरो अज्जउत्तो व्व लक्खीयइ । जेट्ठाए भणियं -- हले ! मुद्धा तुमं,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अज्जउत्त-सरिसो अन्नो को वि एसो, सो पुण सीयज्जर-परिगओ गेहे मुक्को कहमिहागओ ? एवं खणमेक्कं ठाऊण चलियाओ ताओ । धणदेवो वि सिरिमईए वत्थंचले कुंकुम-रसेण–

कहिं हसंति ? कहिं रयणउरु ? कहिं नह-हिंडणु भूउ ? ।
धणदेवह धणवइ-सुयह विहि सुहकारणु हूउ ॥१८०॥

एयं लिहिऊण केणावि मिसेण निग्गओ । तब्भज्जाओ आरूढाओ तं चेव चूय-पायवं । इयरो तहेव अप्पाणं बंधेऊण विलग्गो थुडे । उप्पइओ चूय-पायवो, पत्तो खणमेत्तेण हसंतीए । ठिओ तत्थेव घरुज्जाणे । धणदेवो मुत्तूण चूयं पविट्ठो भवणब्भंतरं । णुवन्नो सयणिज्जे पाउय-पउर-पावरणो कणंतो ठिओ । इयरीओ चूयाओ अवयरिऊण पविट्ठाओ भवणं । दिट्ठो पसुत्तो धणदेवो । पसुत्ताओ खणमेक्कं ।

अह पभाया रयणी । समुग्गओ समग्ग-तिमिरभर-हरण-पच्चलो चंडकरो । धणदेव-भज्जाओ य सेज्जाओ मुत्तूण लग्गाओ स-कज्जेसु । अह लहुईए दिट्ठो कह वि पावरण-बाहिं विणिग्गओ विवाह-कंकण-सणाहो धणदेव-करो, दंसिओ जेट्ठाए-किमेयं ? ति । जेट्ठाए भणियं–सच्चं तया तए संलत्तं 'जहेस वरो अज्जउत्तो व्व दीसइ' त्ति, ता इमिणा अम्हे लक्खियाओ त्ति । न भेयव्वं, करेमि इमस्स दुस्सिक्खियस्स सिक्खं ति भणंतीए बद्धो चलणम्मि मंतेण अभिमंतिऊण दोरो । तप्पभावेण जाओ धणदेवो सुगो ।

खित्तो य पंजरे सो सुदीण-वयणो दिणाइं वोलेइ ।
भवणं बंधुयणं परियणं च निययं पलोयंतो ॥१८१॥

अह चुल्लि-निवेसिय-थालिगाए पक्खित्त-वेसवाराए ।
विहिय-छमक्कारं भज्जिगाए पागं कुणंतीए[३२] ॥१८२॥

ताओ य तं सुगं भेसयंति धरिऊण सत्थ-धाराए ।
न हि भज्जिया-छमक्केण मुणसि अरे ! इय वयंतीओ ॥१८३॥

एवं आरोविज्जइ पइ-दिवसं जीय-संसय-तुलाए ।
सो कीरो कलुण-मणो ताहिं दुरायार-भज्जाहिं ॥१८४॥

इओ य रयणपुरे सिरिपुंज-सेट्ठिणा गवेसिओ सव्वत्थ धणदेवो । न दिट्ठो कत्थ वि । तओ विसन्न-चित्तेण पभाए य वत्थंचल-लिहियक्खर-

निरिक्खणाओ नायं, जहा- 'एस हसंती-वत्थव्वओ सेट्ठिपुत्तो धणदेव-नामो' त्ति । पहिट्ठ-चित्तेण सिट्ठिणा संठविया निय-धूया ।

एगया सागरदत्त-सत्थवाहो पत्थिओ अत्थोवज्जणत्थं हसंती-नयरीए, तस्स सिरिपुंज-सेट्ठिणा समप्पिओ महग्घ-रयणालंकारो जामाउग-जोग्गो । संदिट्ठं च- सिग्घमागंतूण निय-भज्जा संभाल-णिज्जा । सो य सागरदत्तो पवहणेण समुद्दं लंघिऊण पत्तो हसंतीए । पारद्धो कयाणग-कयविक्कयं काउं । कयाइ गओ धणदेव-गेहं । दिट्ठाओ तब्भज्जाओ, भणियाओ- कहिं धणदेवो सेट्ठिपुत्तो ? ताहिं भणियं-कज्जवसेण देसतरं गओ । तओ 'रयणउर-वत्थव्वएण सिरिपुंज-सेट्ठिणा पट्ठविओ जामाउग-जोग्गो इमो' त्ति भणंतेण सत्थवाहेण समप्पिओ रयणालंकारो, सिट्ठो य पुव्वुत्त-संदेसो । ताहिं भणियं- सोहणं कयं सिरिपुंजेण, जओ धणदेवो अच्चंतं तद्दंसणूसुग-मणो सयं चेव वट्टइ, परं अणइक्कमणिज्जयाए कज्जस्स देसंतरं गओ, गच्छंतेण य तेण भणियमेयं-'जइ को वि रयणपुराओ एज्जा तो तस्स हत्थे सिरिपुंज-कन्ना-कीलणकए कीरो [13]एसो समप्पियव्वो' त्ति, ता एयं गेण्हसु । तओ गहिऊण कीरं तं कीरंताणेग-मंगलो पवहणमारूढो सागरदत्तो सागरमुल्लंघिऊण संपत्तो रयणपुरं । समप्पिओ णेण सिरिपुंजस्स कीरो, सिट्ठो य सव्व-वुत्तंतो, तेणावि निय-धूयाए । तओ सा पहिट्ठ-हियया गहिऊण तं कीरं कीलावए विविहप्पयारेहिं । एगया कीरस्स चरण-बद्धो दोरओ 'मलिणो' त्ति काऊण उच्छोडिओ तीए । तक्खणे जाओ सहावत्थो धणदेवो । विम्हिय-मणाए भणियमणाए- अज्जउत्त ! किमेयं ? ति । तेण भणियं- जं पेच्छसि तुमं ति । नायमेयं सिरिपुंज-सेट्ठिणा । सम्माणिओ[14] धणदेवो । समप्पिओ पवर-पासाओ । भुंजए सिरिमईए समं भोए । करेइ दविणज्जणं ।

कयाइ सुविणिंदयाल-विब्भमत्तणओ जीवलोयस्स परलोय-मग्गमोगाढे सिरिपुंजम्मि भाउज्जायाण अणक्खरं किं पि सोऊण सोयभर-गग्गिर-गिराए भणिओ सिरिमईए धणदेवो- अज्जउत्त !

तिविहा हुंति मणुस्सा उत्तिम-मज्झिम-जहन्नया लोए ।
कित्तिज्जंता पिइ-माइ-भज्जनामेहिं जहसंखं ॥१८५॥

जइ वि तुमं गुणवंतो कलासु कुसलो धणज्जण-समत्थो ।
तह वि सिरिपुंज-जामाउगो त्ति गिज्जसि [35]जणेणित्थ ॥१८६॥

तत्तो जइ उत्तम-पुरिस-मग्गमोगाहिउं तुहं वंछा ।
ता जम्मभूमिमणुसरसु नाह ! भणिएण किं बहुणा ? ॥१८७॥

[36]तो धणदेवेण वुत्तं एयमहमवि मुणामि किंतु महं ।
ते भज्जिया-छमक्का अज्ज वि हियए [37]चमक्कंति ॥१८८॥

तीए वुत्तं– अज्जउत्त ! केरिसा ते भज्जिया-छमक्का ? । तओ तेण सिट्ठो सव्वो वि निय-कलत्त-वुत्तंतो । ईसि हसिऊण तीए वुत्तं– केत्तियमेत्तमेयं ? । दावेसु निय-दइयाओ, जेण जाणामि तासिं सामत्थं । तव्वयणावलंबिय-साहसो धणदेवो वित्थिन्नमत्थजायं घेत्तूण सिरिमईए समं [38]समुद्दं लंघिऊण संपत्तो हसंतीए । दीणाणाहाण वियरंतो दाणं कुंजरो व्व पविट्ठो स-भवणं । तओ 'अहो ! तहाविहावत्थगओ वि समागओ !' त्ति सविम्हयाहिं अब्भुट्ठिओ भज्जाहिं । कय-मंगलोवयारो निविट्ठो आसणे । जेट्ठा-वयणेण पक्खालिया लहुईए धणदेव-चलणा । चलण-पक्खालण-जलं च जेट्ठाए गहिऊण तह कहं पि अच्छोडियं [39]धरणि-वट्ठे अचिंत-मंत-माहप्पेण [40]जह पवड्ढिउमाढत्तं । तओ धणदेवेणं भउब्भंत-लोयणेणं पलोइयं सिरिमईए मुहं । तीए वि वुत्तं– मा भाहि ।

सलिलं पि तं कमेणं पवड्ढियं तह कहं पि गेहम्मि ।
जह बुड्डा चलणा तयणु जाणुणो कडियडं तत्तो ॥१८९॥

तत्तो वि उरं तो कंठ-कंदलं तयणु नासिया बुड्डा ।
तो धणदेवेण विसाय-निब्भरं सिरिमइ भणिया ॥१९०॥

एत्तो परं तुमं किं पिए ! करिस्ससि ? कएण पज्जंतं ।
बुड्डाए नासिगाए किमुवरि बुड्डइ ण हत्थसयं ॥१९१॥

तो सिरिमईए तं सलिलमेक्क-घुंटीकयं तहा सव्वं ।
जह तक्खणेण खोणीयलम्मि दीसइ न बिंदू वि ॥१९२॥

ता पुव्व-भारियाओ लग्गाओ सिरिमईए चलणेसु ।
अम्हे जियाओ तुमए सत्तीए इमं भणंतीओ ॥१९३॥

सो धणदेवो अहमेव दुक्कलत्ताण संकडे पडिओ ।
चिट्ठामि किं करेमी हय-विहि-दुव्विलसिय-वसेण ॥१९४॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एवं सिणेह-सब्भाव-गब्भं परोप्परं पयंपमाणाण मयण-धणदेवाण तत्थ समागओ समग्ग-सग्गापवग्ग-मग्ग-देसओ दसविह-सामायारी-निरओ निरयंध-कूव-निवडंत-जंतु-[४१]संताण-ताणप्पयाण-हत्थावलंबो [४२]विमलबोहो नाम सूरी । वंदिऊण जय-गुरुं जुगाइदेवं निविट्ठो तत्थेव । मयण-धणदेवा वि निवडिया गुरुणो चलणेसु । निसन्ना तस्स पुरओ । भणिया य नाण-मुणिय-तच्चरिएण गुरुणा-

एवमकल्लाण-महल्ल-वल्लि-पल्लवण-सलिल-कुल्लाओ ।
निरयगइ-वत्तणीओ खणदंसिय-पेम-कोवाओ ॥१९५॥

कवड-कुडुंब-कुडीओ विवेय-मत्तंड-मेहलेहाओ ।
परिहरह बालवालुंकि-वालकुडिलाओ महिलाओ ॥१९६॥

[४३]आसु पसत्ता सत्ता विसयाऽऽमिस-लुद्ध-मुद्ध-मइपसरा ।
अगणिय-कज्जाकज्जा कुणंति पावाइं विविहाइं ॥१९७॥

तव्वसओ संसारे चउगइ-परियत्तणाइं कुणमाणा ।
माणस-सरीर-गुरु-दुक्खभागिणो हुंति चिरकालं ॥१९८॥

ता भो महाणुभावा ! विसय-सुह-विरत्त-माणसा होउं ।
सव्व-विरइं पव्वज्जिय समुज्जमह धम्म-कज्जम्मि ॥१९९॥

कुणह कसाय-विणिग्गहमिंदिय-दुद्दम-तुरंगमे दमह ।
सेवह गुरुकुल-वासं उवसग्ग-परीसहे सहह ॥२००॥

जेण भवजलहिमुल्लंघिऊण जर-जम्म-मरण-कल्लोलं ।
सयल-किलेस-विमुक्कं निव्वाण-सुहं लहुं लहह ॥२०१॥

एवं सोउं संविग्ग-माणसा दो वि मयण-धणदेवा ।
नमिऊणं मुणिनाहं जंपिउमेवं समाढत्ता ॥२०२॥

भयवं ! भवंधकूवम्मि नूणमम्हाण निवडमाणाण ।
दिक्खा-हत्थालंबण-दाणेण अणुग्गहं कुणसु ॥२०३॥

गुरुणा वि तओ दिन्ना दिक्खा ताणं पहिट्ठ-हिययाणं ।
तो सिक्खिय-मुणि-किरिया अहिज्जिया सेस-सुत्तऽत्था ॥२०४॥

कय-तिव्व-तवच्चरणा परोप्परं पणय-निब्भरा निच्चं ।
एक्क-गुरुवास-वसिया पज्जंते तह कयाणसणा ॥२०५॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मरिऊणं सोहम्मे एक्क-विमाणम्मि दो वि [44]उववन्ना ।
तत्थ वि पुव्व-सिणेहेण सयल-कज्जाइं कुणमाणा ॥२०६॥

पंच-पलिओवमाइं परमाउं पालिउं तदवसाणे ।
तत्तो चुया समाणा संजाया जत्थ तं सुणसु ॥२०७ ॥

तत्थ मयण-जीवो इहेव विजये विजयपुरे नयरे समरसेणस्स रन्नो महादेवीए जयावलीए[45] पुत्तो मणिप्पभो नाम संजाओ । अहिगय-कलाकलावो संपत्त-जोव्वणो कय-दार-परिग्गहो पलिय-पलोयण-पबुद्ध-जणय-समप्पिय-रज्जभारो उभय-लोगाविरुद्धं विसम-साहस-वसीकयासेस-सामंत-मउलि-मणि-मसणिय-पायवीढं रायलच्छि-मुवभुंजंतो कालं वोलेइ ।

तेणेगया गय-कंधराधिरूढेण रायवाडिया-निग्गएण गयणं व दिट्ठं दिप्पंत-तारागण-परिगयं पफुल्ल-कमलसंड-मंडियं महा-सरं । 'अहो ! अच्चंत[46]-चारुत्तणमिमस्स' त्ति चिंतयंतेण सुदूरं निज्झाइयं । पाइक्क-हत्थाओ आणाविऊण [47]गहियं कमलमेक्कं । तओ गओ अग्गओ राया । नियत्तो तेणेव मग्गेण । दिट्ठं उच्चिय-सयल-कमलं पमिलाण-पुव्व-सोहं तं सरं । तओ 'हा ! किमेयमेरिसं जायं ?' ति पुट्ठं रन्ना । भणियं परियणेण- देव ! एक्केक्कं कमलमवणिंतेण लोएण एवं कयं । रन्ना चिंतियं-

एयं सरोवरं जह कमल-विमुक्कं न पावए सोहं ।
पुरिसो वि रेहए तह न रज्ज-रिद्धीए परिचत्तो ॥२०८॥

रिद्धी असासय च्चिय सुविणय-माइंदयाल-सारिच्छा ।
किंपाक-तरु-फलं पिव परिणामाऽणत्थ-हेऊ य ॥२०९॥

इच्चाइ चिंतयंतो चित्ते जा वच्चए महीनाहो ।
ता दिट्ठो उज्जाणे नामेण जिणेसरो सूरी ॥२१०॥

धम्मकहं कुणमाणो पयमूले तस्स देसणं सोउं ।
सुय-संकामिय-रज्जो पडिवन्नो संजमं राया ॥२११ ॥

कमसो तिव्व-तवच्चरणवस-समुप्पन्न-गयण-गम-सत्ती ।
विमलोहिनाण-विन्नाय-सव्वभावो इमो सो हं ॥२१२॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सोहम्माओ चुओ पुण धणदेव-जिओ तुमं समुप्पन्नो ।
तुह बोहणत्थमिन्हिं समागओ हं खयरनाह ! ॥२१३॥

जं पुव्व-भवे समगं गहियवया एक्क-गुरुकुले दो वि ।
एक्क-विमाणे वसिया तुह मम य स एस संबंधो ॥२१४॥

एयमायन्निऊण ईहाऽपोह-पयट्ट-माणसो महिंदसीह-विज्जाहरराया जाय-जाईसरणो भणिउं पवत्तो- भयवं । सव्वमवितहमेयं, ता भयवं ! कओ तुमए महंतो ममाणुग्गहो, जं एवं अपार-संसार-महन्नव-निवडिओ समुद्धरिओ हं, संपयं रज्ज-सुत्थं काऊण तुम्ह पयमूले पव्वज्जं पडिवज्जिस्सं ।' ति भणिऊण समागओ निय-गेहं । तक्काल-पगुणीकय-कलहोय-कलस-मुह-विणिग्गय-सलिलेहिं अणिच्छंतो वि अहिसिंचिऊण निवेसिओ रज्जे रयणचूडो । पणिवइओ मंति-सामंत-पमुह-पहाण-परिगएण खयररन्ना भणिओ य- वच्छ !

तुह जइ वि असेस-गुणागरस्स सयमेव गहिय-सिक्खस्स ।
सिक्खवणिज्जं थेवं पि नत्थि तह वि हु भणामि इमं ॥२१५॥

थेवो वि एस विहवो विवेगवंतं पि तरलए पुरिसं ।
किं पुण मण-सम्मोहुप्पायण-पवणा नरिंद-सिरी ? ॥२१६॥

ता वच्छ ! जह इमीए छलिज्जसे नेव रज्जलच्छीए ।
जह खिप्पसि करण-तुरंगमेहिं विसमेहिं न कुमग्गे ॥२१७॥

विसएहिं वसीकिज्जसि न जहा जीयंत-करण-दच्छेहिं ।
तह वट्टेज्जसु चिर-पुरिस-मग्ग-लग्गो नय-समग्गो ॥२१८॥

भणिओ मणिचूडो वि हु अविवेयं किं न मुंचसे वच्छ ! ।
कीस अणायारपरो होउं लहुएसि अप्पाणं ? ॥२१९॥

न कलेसि कुलं न गणेसि गुरुयणं अवेक्खसे [य नो] सिक्खं ।
नाऽऽसंकसे अवजसं परलोय-भयं वहसि न मणे ॥२२०॥

पावेसु जं पयट्टसि अकित्ति-वल्ली-विसप्पण-जलेसु ।
परलोय-विरुद्धेसुं विसुद्ध-जण-गरहणिज्जेसु ॥२२१॥

सयल-गुण-रयण-रयणागरस्स अहिगय-कलाकलावस्स ।
ससिकर-विसुद्ध-कुल-संभवस्स भवओ न तं जुत्तं ॥२२२॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ता करण-निग्गहपरो परिचत्त-कुमित्त-वग्ग-संसग्गो ।
संपइ पसंत-चित्तो वट्टेज्जसु संत-मग्गम्मि ॥२२३॥

एवमणुसासिय-सुओ सुयण-वग्ग-सक्कार-पुरस्सरं जणिय-जिणिंद-मंदिर-महापूओ पवन्नो परम-विभूईए मणिप्पभ-मुणि-समीवे समण-दिक्खं [१८]खेयरेसरो ।

रयणचूडो वि साहिय-सयल-विज्जो विज्जाहर-नरिंद-संदोह-सेविज्जमाण-चरण-कमलो कालं वोलेइ ।

मणिचूड-कुमारो वि हु पिउणा अणुसासिओ वि तह सम्मं ।
विसय-पिवासा-वसगो नियय-सहावं अमुंचंतो ॥२२४॥

अगणिय-कज्जाकज्जो अणवेक्खिय-खत्तधम्म-कुलधम्मो ।
वियरइ जए जहिच्छं निरंकुसो मत्त-नागो व्व ॥२२५॥

अन्नया महु-समागम-समुप्पन्न-पमोएण व पणच्चमाणासु दाहिण-पवण-पहल्लिर-पल्लव-करेहिं वणलयासु वम्मह-महाराय-रज्ज-घोसणासु व सुणिज्जमाणासु पइ-तिग-चउक्क-चच्चरं चारु-चच्चरीसु, माणिणी-माण-मोयणोवएस-पएसु व पयट्टेसु पइ-वणं [१९]कोइल-कुलालावेसु, पयट्टे विसट्टंत-तरुणि-नट्टे मयण-महूसवे, पासाय[२०]-उवरिट्ठियाए दिट्ठो पगिट्ठ-रूव-जोव्वण-गुणाभिरामाए खयर-रामाए रायमग्गम्मि संचरमाणो मणिचूडो । [२१]पलोइओ सिणिद्ध-दिट्ठीए । कुमारो वि तव्वयण-पंकयाणुसारिणीए महुयरीए विव[२२] दिट्ठीए पुणो पुणो तं पलोयंतो पत्तो निय-भवणं ।

कयाइ एगंत-ठियस्स मणिचूडस्स समीवमागया [२३]संगमी नामा तीए वयंसिया निवडिऊण चलणेसु भणिउं पयत्ता[२४] - कुमार ! सुणसु विन्नत्तियं । मणिचूडेण भणियं – भणसु । तीए भणियं–

अत्थि एत्थेव वत्थव्वयस्स [२५]जयसेहर-विज्जाहरस्स धूया सयल-खेयरीचक्क-चूडा-माणिक्कभूया कणगपूराहिवइणा कणगकेउ-विज्जाहरेण परिणीया कणगावली नामं । तीए य पासाय-सिहरट्ठियाए रायमग्ग-मोगाढे गाढ-सोहग्ग-लच्छि-कुलमंदिरम्मि तुमम्मि निवडिया दिट्ठी ।

तुह दंसण-परवस-माणसा य मयरद्धएण बाणेहिं ।
भित्तूण मच्छरेण व तह कह वि कयत्थिया बाला ॥२२६॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दिट्ठिपहमइक्कंते तुमम्मि जह [5]मोहमुवगया बाढं ।
महिवट्ठम्मि निवडिया सहस त्ति निमीलियऽच्छिपुडा ॥२२७॥

तओ 'हा ! जयसेहर-धूए ! हा कणगकेउ-दइए ! किमकज्जमिणं ववसिया सि ?' त्ति भणंतीहिं 'जा न कोइ एयावत्थं इमं पेक्खइ ता उप्पाडिऊण अन्नत्थ नेमो' त्ति चिंतिऊण नीया सहीहिं गूढट्ठाणं । कय-सिसिरोवयारा य जाया विगय-मुच्छा । भणिया य तीए कयाइ रहसि अहं- 'सहि संगमिए ! जाणसि च्चेय तुमं मह मोह-कारणं, सरीरमित्त-भिन्नाए य तुब्भ पुरओ किं वा पच्छाएमि ? तो गंतूण तुमं तह कहवि तं पयंपेसु सोहग्गामय-मयरहरं मणिचूड-कुमारं जहा ममं पडिवज्जइ, तव्विरह-[6]वेयणा-पज्जाउल-मणा य न पारेमि पाणे वि धारिउं' त्ति भणिऊण पेसिया तुह पासमहं ।

ता सुहय ! तं मयच्छिं विरह-हुयासण-पलित्त-सव्वंगं ।
निव्ववसु संगमामयरसेण काऊण कारुन्नं ॥२२८॥

तहा गिन्हसु कुमार ! तीए समप्पियं[8] कप्पूर-पारी-परिगयं कक्कोल-फल-सणाहं तंबोलं, [9]एयं स-हत्थ-गुत्थं बउलमालं च त्ति भणंतीए उवणीयं तंबोलाइ । मणिचूडेणावि अविणयसीलयाए कुमारभावस्स, वियार-कारणयाए वम्महस्स, मोहबहुलयाए अविवेयस्स, दुज्जययाए इंदियवग्गस्स, पइमम्म(?)-मज्झत्थयाए विसयसेवणस्स, अगणिऊण जणाववायं, अणाकलिऊणं कुल-कलंकं, अपरियाणिऊण कज्ज-परिणामं, अविमरिसिऊण गुरुयणोवएसं, अविभाविऊणं उभयलोग-दुहावहत्तं पडिवन्नं तव्वयणं, गहियं तंबोलाइ । 'कुसुमसुंदरुज्जाणे तए तीए सह मे संगमो कायव्वो' त्ति भणंतेण स-कंठ-कंदलाओ उत्तारिऊण समप्पिओ तीए हत्थे हारो । सा वि 'महंतो पसाओ' त्ति भणिऊण गया कणगावली-समीवं । सव्वमावेइयं तीए । संतुट्ठा हियएणं सा । कय-पवर-सिंगारा य अत्थमिए कमलबंधवे, वियंभमाणासु भमरमाला-सामलासु तिमिर-लहरीसु गया संगमी-समेया कुसुमसुंदरुज्जाणं । मणिचूडो वि रयणीए निग्गओ खग्ग-सहाओ, पत्तो कुसुमसुंदरुज्जाण-मंडणं मयण-देउलं[10] । खणमेक्कं पलोइऊण तत्थ गीय-नट्टाइ जाव कुसुमसुंदरुज्जाणम्मि परिसक्कइ ताव सुणिऊण महिला-संलावं 'नूणं स च्चेय कणगावली सहीए सह किं पि मंतेइ, ता

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

किमेसा मंतेइ ? त्ति लयंतरिओ चेव सुणेमि'त्ति चिंतिऊण ठिओ तहेव तुण्हिक्को । तओ कणगावलीए भणियं – सहि संगमिए ! मयणसर-पसर-सल्लिय-मणा न सक्केमि काल-विलंबं खमिउं । संगमीए भणियं – सामिणि ! परिच्चयसु पज्जाउलत्तणं । कणगावलीए भणियं– सहि ! सुहिया[1] खु तुमं, महं पुण दंसिय-पाणावसाणं वसणं, सो य अज्ज वि न दीसइ सुहय-चूडामणी, ता गवेससु तं कहिंचि । तओ गवेसिउं पयत्ता[2] संगमी । कणगावली वि 'सुरसुंदरी-पत्थणिज्ज-दंसणस्स दंसणं मह मंदपुन्नाए दुल्लहं पिव संभाविज्जइ, ता दइयंग-संगम-मणहरेण हारेण चेव तुमं हियय-निव्वुइं वहसु त्ति भणंती पुणो पुणो हिययम्मि हारं निवेसेइ । मणिचूडेण चिंतियं– अहो ! निब्भराणुराय-रसिय-हियया एसा । [3]एत्थंतरम्मि समुग्गओ कुसुमाउह-महाराय-रज्जाभिसेय-कलसो व्व निसानाहो । तन्निग्गएण गयण-वित्थारिणा थोर-किरणपूरेण दिट्ठं [4]दुद्धोवहि-जलुप्पीलेण पलावियं पिव पविभाइ भुवणयलं । वियसिया कुमुइणी । मणिचूडेणावि सम्मं दट्ठूण कणगावलिं चिंतियं– अहो ! विरहदसा-दूसिया वि दंसणिज्जा पिययमा, किसा वि [5]निसायर-कला किं न लोय-लोयणाणंदमावहइ ? । कणगावली वि चंदमुद्दिसिय– 'पीऊसकिरण ! निक्करुण ! कीस जलण-कण-वरिसणेण तुमं पि ममं कयत्थेसि ?' त्ति जंपइ । मणिचूडो वि 'अओ परं न एसा उवेक्खिउं जुज्जइ' त्ति पत्तो तीए समीवं । सा वि तं दट्ठूण अमय-समुद्द-मग्गं व अमंदाणंद-सुंदरं देहमुव्वहंती भणिउं पवत्ता–

तइया दिट्ठो सि तुमं नयण-दुवारेण [6]पविसिऊण मणे ।
लूडिय-सुह-सव्वस्सो नीहरिओ पुण न दिट्ठो सि ॥२२९॥

मणिचूडेण भणियं–पिए ! मा किं पि खेयमुव्वहसु,

अणुराय-रूव-जोव्वण-गुणेहिं संदामिऊण मयणेण ।
सुंदरि ! निद्देसकरो आमरणमहं कओ तुज्झ[7] ॥२३०॥

इच्चाइ सुह-संकहाहिं गमिऊण केच्चिरं पि कालं घेत्तूण तं संपत्तो स-भवणं मणिचूडो, पवड्ढिओ परोप्परं पणओ । थोव-दिण-मज्झे य समुच्छलिओ 'अकज्जं कयं कुमारेण'त्ति जणाववाओ । जओ–

थोव-दिणेहिं अकज्जं गोविज्जंतं पि पायडं होइ ।
तिण-संछन्नो वन्ही पच्छन्नं केच्चिरं ठाइ ? ॥२३१॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अन्नया नाय--वुत्तंतेण वुत्तो सो रयणचूडेण रन्ना -- वच्छ ! विसुद्ध-बुद्धिणा पुरिसेण सया उभय-लोगाविरुद्धवित्तिणा होयव्वं, कायव्वो गुणब्भासो, पयट्टियव्वं उत्तम-निदंसणेण, न समप्पियव्वो अप्पा जोव्वण-मयरस्स, रक्खियव्वो विवेयंकुसेण कुसलमग्गमइक्कममाणो मण-करी, न लंघियव्वा गुरुयणोवएसा, न दायव्वो दोस-गणस्सावगासो, निरुंभियव्वो निरग्गलं वग्गंतो करण-वग्गो, मोत्तव्वा कुमित्त-संसग्गी, न परिहरियव्वो संत-मग्गो, जइअव्वं अणप्प-दप्प-कंदप्प-सप्प-विसप्प-सरप्पसमणे, मणागं पि वज्जेयव्वो जणाववाओ; सव्वहा तं किं पि कायव्वं जेण न विरुज्झए धम्मो, न संपज्जए परलोय-हाणी, न दूसिज्जए गुण-गणो, न मालिन्नमालंबए कित्ती, न विरज्जंति सज्जणा, नावगासं पावंति पिसुण-जणा; जं पुण पवड्ढणं कुल-कलंकस्स, अत्थ-पव्वओ पयाव-दिणयरस्स, "परोह-वसुहा विरोह-वीरुहाणं, दवानलो विमल-कित्ति-वल्लरीणं, संकेयट्ठाणं सयलाणत्थ-सत्थाणं, अत्थाणं दुन्नय-निवस्स, राहुमुहं सच्चरिय-चंदमंडलस्स, घणागमो गुणकलाव-कलहंसाणं, खेत्तं अखत्तऽधम्म-धन्नस्स, दुवारं दुग्ग-दुग्गइ-गेहस्स; तं सव्वहा परिच्चयसु पर-[69]महिलाहिलासं । न जुत्तमेयं विसुद्ध-वंसुब्भवस्स भवओ, न सरिसं सरयब्भ-सुब्भस्स तुह गुण-संदब्भस्स, अणुचियं चंद-किरणाणुगारिणो तुह विवेयस्स । मणिचूडेण भणियं-- बंधव ! एरिसो च्चेव चत्त-खत्तधम्मो, धम्माऽधम्म-वियार-रहिओ[70], उवएस-परम्मुहो, मुह-महुर-विसय-सुह-सेवणासत्तो, सत्तहीणो, हीण-जण-जोग्ग-वावार-निरओ, रयणिनाह-निम्मल-कुल-मालिन्न-मूल-कारणमहं विणिम्मिओ विहिणा; जो अविसओ विसुद्ध-वासणाए, अभायणं गुरुयणोवएसामयरसस्स, अट्ठाणं विसिट्ठ-चिट्ठाणं, अपत्तं पवित्त-चित्तवित्तीए, अजोग्गो सग्गाऽपवग्ग-सुह-संसग्गस्स । ता एयम्मि वइयरे न किंचि वत्तव्वं, अन्नं किं पि आणवेह तुब्भे जेण तं दुक्करं पि करेमि । जओ--

> कीरइ सुदुक्करं पि हु विसभक्खण-जलण-जल-पवेसाइं ।
> तीरइ निवारिउं न हु मणम्मि मयणो वियंभंतो ॥२३२॥
>
> जइ वि मणिचूड-कुमरो ससिणेहं रयणचूड-राएण ।
> [71]सिक्खविओ तह वि न सा मुक्का कणगावली तेण ॥२३३॥

जओ--

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ता लज्जा ता माणो ताव च्चिय तत्त-चिंतणा बुद्धी ।
जाव न कंदप्प-सरा पसरंति विवेय-जीयहरा ॥२३४॥

अनियत्तमणं मुणिउं मणिचूडं [54]वड्ढमाण-मण-खेओ ।
खेयरवई ठिओ तो काउं मोणं रयणचूडो ॥२३५॥

कयाइ कणगावलीए भणिओ मणिचूडो – पिययम ! एत्थट्ठियाणं [55]खलयणो अवन्नवायं कुणइ, ता अन्नत्थ गच्छामो । सो वि तन्नेह-मोहिय-मणो पडिवज्जिऊण तव्वयणं, मुत्तूण सिणिद्ध-बंधुवग्गं, अवगणिऊण गुण-रयण-खाणिभूयाओ खयरराय-धूयाओ समागओ एत्थ रन्ने । ठिओ विउव्विऊण पवर-पासायं । किं च–

तस्स कणगावलीए मुहकमल-पलोयणं कुणंतस्स ।
सुरलोयाओ अहियं सुन्नं रन्नं पि संपन्नं ॥२३६॥

सो य मणिचूडो अहं । अज्ज पुण पभाय-समए मम बाहिंगयस्स समागओ एक्को विज्जाहरो । दिट्ठो समागएण मए तीए सह संलवंतो । पुट्ठा य सा मए– पिए ! को एसो ? त्ति । तीए भणियं– मह जणणीए पेसिओ पउत्ति-निमित्तमेस मे बंधवो त्ति । सो वि खणमेक्कं ठाऊण कणगावलीए सह किं पि जंपिऊण गओ । खणंतरे य भणिओ हं तीए– पिययम ! आसन्नुज्जाणम्मि कीलासुक्खमणुभविउं गच्छामो त्ति । तओ गयाइं दो वि तत्थ, पयट्टाइं कीलिउं । पुणो वि [56]भणिओ कणगावलीए– पिययम ! संपयं मज्झण्ह-समओ, ता एयम्मि सरोवरे जलकीलं करेमो त्ति । तओ तव्वयणमणुल्लंघंतो गंतूण तत्थ मोत्तूण वारि-तीरि तरवारिं पयट्टो कीलिउमहं सह तीए । तओ तक्खणा [57]समुक्खाइय-खग्गो 'अरे खेयराहम ! कणगकेउणो मह महाविज्जा-साहणुज्जयस्स भज्जमवहरिय कहिं वच्चसि ?' त्ति भणंतो समागओ एक्को खयरो । अहं पि दट्ठूण तं पहाविओ खग्गाभिमुहं जाव न गिण्हामि खग्गं ता पहणिऊण खग्ग-पहारेहिं निवाडिओ महीवट्टे । तओ पहसियमुहीए भणियं कणगावलीए– पिययम ! सोहणं कयं जमेवमेस पहओ, दुरायारो खु एसो । बला अणिच्छमाणी गहियम्हि । ता पुणो वि आहओ खग्गेण, मओ त्ति मुत्तूण मं घेत्तूण कणगावलिं गओ सो । अओ परं तुमं पि जाणसि त्ति । [58]तो एयं मे एयाए अवत्थाए कारणं । एवं तक्केमि– तीए कणगावलीए पहाय-समए समागय-खयरेण समं मह विणासणत्थं संकेओ कओ । अहं च

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

खग्गहत्थो दुस्सज्झो त्ति कलिऊण उज्जाण-जलकीला-ववएसेण खग्गं मोयाविओ । ता सच्चमेयं-

न घेप्पइ सुसिणेहिं न विज्जहिं न य गुणिहिं,
न य लज्जाहिं न य माणिण न य[80] चाडुय-सइहिं ।
न य खर-कोमल-वयणि न विहवि न जोव्वणिण,
दुग्गेज्झं मणु महिलहं चिंतह आयरिण ॥२३७॥

तहा धिरत्थु मे अणज्जचरियस्स ।

लज्ज वज्जिय मुक्क मज्जाय अवगन्निय निय-सयण,
जीइ कज्जे चत्तउ कुलक्कमु ।
मइं न गणिउ भव-भमणु माणु मलिउं खंडिउं परक्कमु ।
तसु महिलह नेहतणू दिट्ठं पज्जवसाणु ।
हारिय कोडि कवड्डियह मइ वंचिउं अप्पाणु ॥२३८॥

हा ! कुंदिंदु-समुज्जलो कलुसिओ तायस्स वंसो मए,
बंधूणं मुह-पंकएसु य हहा दिन्नो मसी-कुच्चओ ।
हा ! तेलोक्कमकित्ति-पंसु-पसरेणुद्धूलियं सव्वओ,
हद्धी ! भीम-भवुब्भवाण भवणं दुक्खाण अप्पा कओ ॥२३९॥

जं विसय-परवस-माणसेण न कया गुरूणमुवएसा ।
तं मज्झ हियय-मज्झे सल्लइ विस-दिद्ध-सल्लं व ॥२४०॥

जं गुरुयण-वयण-वइक्कमेण [81]दुन्नय-पहे पयट्टोहं ।
तस्स फलं संपत्तं फुडमेयं संपयं पि मए ॥२४१॥

अहवा कित्तियमेत्तं अणज्जचरियस्स तस्स फलमेयं ।
अज्ज वि तितिक्खियव्वं नरए पत्तो अणंतगुणं ॥२४२॥

रन्ना भणियं- भद्द ! एरिसं चेव विरसावसाणं परदारा[82]-हरणं । परिहरणिज्जं सुपुरिसाणं । अचिंतणिज्जं सचेयणाणं । अणायरणिज्जं उभयलोय-हिएसीणं । महिलाओ वि नीसेस-दोस-भुयंग-करंडियाओ वसण-सय-[83]संपायण-पंडियाओ खण-रत्त-विरत्ताओ कस्स सयन्नस्स न निव्वेय-कारणं ? मणिचूडेण भणियं-

संपइ कहेह तुब्भे किं नयरं तुम्ह विरह-दुक्खेण ।
विहुरीहूयं कज्जेण केण वा एत्थ[84] आगमणं ?॥२४३॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तो रन्ना वागरियं अहं खु संखउर-नयर-वत्थव्वो ।
विवरीय-सिक्ख-तुरएण अवहडो एत्थ संपत्तो ॥२४४॥

भणियं मणिचूडेणं अणन्नसम-लक्खणेहिं लक्खेमि ।
सयल-जय-पयड-कित्ती नूण तुमं विजयसेण-निवो ॥२४५॥

ता वसणं पि हु एयं महूसवो मज्झ जेण संजाओ ।
तुमए सह संबंधो गुण-निहिणा पुरिस-रयणेण ॥२४६॥

एत्थंतरे संवुत्ता संझा, कय-तक्कालकिच्चा पसुत्ता दो वि रयण-पल्लंकेसु । पहाया रयणी, विरलीभूयमंधयारं, जायाइं विविह-विहंगकुल-कोलाहल-संकुलाइं दिसा-मंडलाइं ।

आसन्न-दिणेसर-दइय-संगमा अरुण-पयडियारुणिमा ।
कुंकुम-कयंगराय व्व रेहए पुव्वदिस-वहुया ॥२४७॥

चिर रुद्धं दिणवइ-दइय-दंसणूससिय-कमल-वयणाण ।
नीहरइ कमलिणीणं भमरउलं सोय-तिमिरं व ॥२४८॥

घण-तिमिर-पंक-खुत्तं समग्ग-भुवणं पलोईउं रविणो ।
सव्वत्थ वि वित्थरिया करा समुद्धरिउंकामस्स ॥२४९॥

पबुद्धो राया, कय-गोसकिच्चो भणिओ मणिचूडेण- 'संपयं महाराय ! देहि[42] ममाएसं, जेण दुल्लहं पि संपाडेमि' । तओ सुदंसणाए गवेसणं काउकामेण भणियं रन्ना- भद्द ! नाणाविह-देस-दंसणम्मि मे महंतं कोउगं । ता तह करेसु जहा तं संपज्जइ । तओ तक्खणा मणिचूडेण विउव्वियं विउल-मणि-तोरण-किरण-पुंज-पिंजरिय-गयणंगणं, अणेग-खंभ-सय-सन्निविट्ठ-रयण [43]सालभंजियाभिरामं रणंत-कणय-किंकिणी-जाल-मुहलं विमाणं । समारुहिऊण तम्मि चलिया दुवे वि ।

• • •

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पाठांतर :

१ सोगरसंभवो **रा.** ।। २. मयण कुल० **दे. पा.** ।। ३. दुज्झि **दे. पा.** ।। ४. ०वं । तओ **ल. रा.** ।। ५. तं च भूमिपत्तं **दे.** ।। ६. खद्धो **दे.** ।। ७. ०भयवित्तरिओ **दे.** ।। ८. सुकइसहस्सं दुरसइ **दे. पा.** ।। ९. ०गहवइणा । **दे. पा.** ।। १०. ०मेसं **दे.** ।। ११. ०सुवन्नपमुहेहिं ।। **दे. पा.** ।। १२. समं **ल. रा.** ।। १३. ०कल्लाणमालियं महह माणवा तुब्भे **दे. रा. पा.** ।। १४. वङ्ढिं ।। **दे.पा.**।। १५. महिमहेलाहा० **दे. पा.** ।। १६. ०चरणो **ल. रा.** ।। १७. भुत्तुमणो **दे. पा.** ।। १८. सा सच्चं हसंती० **दे. पा.** ।। १९. भणिउ० **ल. रा.** ।। २०. सफलं **ल. रा.** ।। २१. ०देवो वणिय० **दे. पा.**।। २२. ०किच्चलालसमणो **दे. पा.** ।। २३. ०मणो समणजणपयपज्जु० **दे. पा.** ।। २४. दुज्झि **दे. पा.** ।। २५. एक्कं **दे. पा.** ।। २६. अत्थंगओ **दे. पा.** ।। २७. ता जेट्ठाए **दे. पा.** ।। २८. पगुणीभूया **दे. पा.** ।। २९. साहारपा० **पा.** ।। ३०. ०नेवत्थस० **दे. पा.** ३१. पंचत्तं गओ **दे. पा.** ।। ३२. कुणंतीओ **दे. पा.** ।। ३३. एस **दे. पा.** ।। ३४. ०णियो धण० **ल. रा.** ।। ३५. जेणेणेत्थ **दे. पा.** ।। ३६. तो धणदेवेण पलत्तमेय० **ल. रा.** ।। ३७. हियए वक्कमंति **रा. ल.** ।। ३८. समुद्दमुल्लं० **दे. पा.** ।। ३९. धरिणी **दे.** ।। ४०. जलं **ल. रा.** ।। ४१. ०संताणप्पयाण० **रा.** ।। ४२. विमलवाहो सूरी **दे. पा.** ।। ४३. एय परसत्ता **दे. पा.** ।। ४४. उप्पन्ना **दे. पा.** ।। ४५. ०लीए मणिप्पभो नाम जाओ **ल. रा.** ।। ४६. ०तं चारु० **पा.** ।। ४७. गहियं पउममेक्कं **दे. पा.** ।। ४८. खयरेसरो **दे. पा.** ।। ४९. ०लकुलारावेसु **ल. रा.** ।। ५०. पासाओवरि० **दे. पा.** ।। ५१. पुलोइओ **दे. पा.** ।। ५२. ०यरीए व **ल. रा.** ।। ५३. संगमा तीए **दे. पा.** ।। ५४. पवत्ता **दे. पा.** ।। ५५. जयसेहररस वि० **दे. पा.** ।। ५६. मोहपरिगया **दे. पा.** ।। ५७. ०वेरग्गाए पज्जा० **रा.** ।। ५८. ०यं कुमारपारी० **ल. रा.** ।। ५९. एसा सहत्थगुत्था बउलमाला त्ति **ल. रा.** ।। ६०. ०देवउलं **दे. पा.** ।। ६१. सुहिया **ल. रा.** ।। ६२. पवत्ता **दे. पा.** ।। ६३. ०तरे समु० **दे. पा.** ।। ६४. दुद्धोवहि० **ल. रा.** ।। ६५. ससहरकला **दे. पा.** ।। ६६. पविसिय मणम्मि । **ल. रा.** ।। ६७. तुब्भ ।। **ल. रा.** ।। ६८. पारोह० **पा.** ।। ६९. ०महिलाहिलसणं. न **दे. पा.** ।। ७०. ०रहिओ, हिओवएस० **रा.** ।। ७१. सिक्खिविओ **ल. रा. पा.** ।। ७२. वद्धमाण० **ल. रा.** ।। ७३. रयलयगण

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ल. ।। ७४. अणियं **दे. पा.** ।। ७५. समुक्खइय० **दे. पा.** ।। ७६. तमेयमेयाए अव० **ल. रा.** ।। ७७. न इ चा० **पा. ल. रा.** ।। ७८. दुज्झइपहे **ल. रा.** ।। ७९. ०दारावहरण० **दे.** ।। ८०. ०संपाडण० **दे. पा.** ।। ८१. इत्थ **दे. पा.** ।। ८२. देह **ल. रा.** ।। ८३. ०सालिभं० **ल. पा.** ।।

• • •

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तइओ पत्थावो

इओ य सा सुदंसणा तओ रन्नप्पएसाओ तप्पएसवासिणीए खुद्दवंतरीए पुव्वभवावेस-वस-विसप्पमाण-मच्छराए उक्खित्ता पल्लंकाओ, पक्खित्ता समंतओ भमंत-मत्त-मायंग-मयजलासारसित्त-भूमिभागाए[1] रउद्द-सद्द-सद्दूल-दलिय-सारंग-मुक्क-विरसाराव-भीसणाए, सरल-साल-हिंताल-ताल-तमालप्पमुह-विडवि-संकडाए भीमाडवीए। तओ तरु-निगुंज-मज्झ-गया मुच्छा-निमीलिय-लोयणा गमिऊण किंत्तियं पि वेलं सिसिर-समीर-संसग्ग-समागय-चेयणा दिसामुहाइं पलोयमाणी सुन्नारन्न-गय-अप्पाणं पेच्छिऊण 'हा ताय ! हा माय ! किमेयमयंडे चिय[2] अतक्कियमसंभावणिज्जमावडियं' ति चिंतयंती थी-सहाव-सुलभ-भय-कंपंत-हियया रोविउं पवत्ता।

एत्थंतरे मयंको अत्थमइ पणट्ठ-तेय-पब्भारो।
कस्स वि न हुंति विहिणो वसेण वसणाइं जियलोए ? ॥२५०॥

वियलिय-तारय-थोरंसुएहिं परिल्हसिय-तिमिर-धम्मिल्ला।
रुयइ व रयणी दट्ठुं तयवत्थं पत्थिवंगरुहं ॥२५१॥

काउं असमत्था दुत्थियाए पत्थिव-सुयाए पडियारं।
लज्जाभरेण[3] नूणं तुरियं रयणी अवक्कंता ॥२५२॥

उदयगिरि-मत्थयत्थो कहइ व पसरिय-करो सहस्सकरो।
[4]मा कुणसु खेयमुदयं पाविहिसि तुमं पि तम-विगमे ॥२५३॥

तओ रायधूया उट्ठिऊण सुविणमिव मण्णमाणी अणवरयं पयट्ट-बाहप्पवाह- पज्जाउल-कवोला, कक्कस-कुसग्ग-संसग्ग-दूमिज्जंत-चलणतला, दिणयर-किरण-कलाव-किलंत-कोमल-तणू, पत्थिया पुव्वदिसाहुत्तं।

कत्थइ भुयंग-भीया कत्थइ सद्दूल-सद्द-संतट्ठा।
कत्थइ कुविय-कयंताउ व्व कुंजराउ पलायंती ॥२५४॥

विद्दाय-दीण-वयणा इओ तओ सुन्न-रन्न-परिब्भमिरी।
भय-कायर-तरलच्छं पिच्छंती सयल-[5]दिसिवलयं ॥२५५॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तो कह वि दिव्ववसओ पसंतमुत्तिं गिरिंद-थिरकायं ।
काउस्सग्गोवगयं पेच्छइ विउले सिलावट्टे ॥२५६॥

भुवणेक्कमल्ल-कंदप्प-दप्प-कप्परण-परम-माहप्पं ।
धम्मं व मुत्तिमंतं चारणसमणं महासत्तं ॥२५७॥

तो जाय-जीवियासा भत्तिवसुल्लसिय-बहल-रोमंचा ।
गंतुं समीवमेयं विणएण नमंसए बाला ॥२५८॥

मुणिणा वि निक्कारण-करुणारस-पारावारेण पारिऊण 'काउस्सग्गं सिलावट्टोवविट्ठेण धम्मलाभ-दाण-पुव्वं विणओणयमुही महुर-वयणेहिं संभासिया रायसुया—

'भद्दे ! मा संतप्पसु । एस एरिसो चेव सुविणिंदयाल-विब्भमो खण-दिट्ठ-नट्ठो सयल-जियलोओ । अप्पडिहय-प्पसरो सुरासुर-पहूणं पि पहुप्पइ पुव्व-कय-कम्म-परिणामो । अकय-सुकयाणं[9] संभवंति पाणिणं पए पए वसणाइं । अओ कुसलकामेण कायव्वो धम्मे समुज्जमो'।

इमं च सोच्चा भणियं सुदंसणाए— भयवं ! इमाए अवत्थाए उचिअ-धम्मोवएस-वियरणेण करेह मे[c] अणुग्गहं । मुणिणा भणियं— भद्दे ! संपयं विसेस-धम्मकिच्च-करणे असमत्था तुमं । ता [9]भयत्त-सत्त-संताण-ताणप्पयाण-पवणं पाव-पायव-पावयं पवज्जसु पंचपरमेट्ठि[10]-मंतं । एयप्पभावेण न संभवंति इह-भवे वि खुद्दोवद्दवा, संपज्जंति समीहियत्था, लंघिज्जंति विसमाओ वि आवयाओ, परभवे य समग्ग-सग्गापवग्ग-सुह-संसग्ग-भायणं भवंति जीवा[11] । तहा-

खुद्दोवद्दव-धंत-धंस-तरणी दोगच्च-सेलासणी,
धम्मज्झाण-हुयासणेक्क-अरणी कल्लाणमाला-खणी ।
निव्वाणावसहप्पवेस-सरणी तेलोक्क-चिंतामणी,
धन्नाणं परमेट्ठि-पंचग-नमोक्कारो चमक्कारओ ॥२५९॥

हरिसुप्फुल्ल-लोयणाए भणियं रायधूयाए— भयवं ! पयच्छसु तं परमिट्ठि-मंतं । दिन्नो मुणिणा । पणमिऊण गहिओ अणाए. भणियं च— केच्चिरं कालमेवं सुन्नारन्नगयाए मए वसणमेयमणुभवियव्वं ? मुणिणा भणियं— एयस्स पंचपरमेट्ठि-मंतस्स पइ-समय-सुमरणाणुभावेण थोव-दिणब्भंतरे चेव विसमं पि वसणमेयं लंघिऊण सयलमणिच्छिय-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कल्लाणभाइणी भविस्ससि त्ति । अहं पुण संपयं सुरसेल-सिहर-परिट्ठियाणं सासय-जिणपडिमाणं नमंसणत्थं वच्चिस्सामि त्ति भणंतो सो उप्पइओ तमाल-दल-सामलं गयणयलं । रायसुया वि चारणमुणि-विइन्न-धम्मोवएस-वसेण वसण-समुद्दाओ नित्थिन्नं व अप्पाणं मन्नमाणी पंचपरमेट्ठि-मंत-संभरणेण पडिहयासेस-दुट्ठ-सावय-भया कंदमूल-फल-जणिय-पाणवित्ती चलिया एग-दिसाए ।

अह तीए रायधूयाए[१२] पंचपरमेट्ठि-मंतमच्चंतं ।
एगग्ग-मणाए भत्ति-निब्भरं संभरंतीए ॥२६०॥

कोववस-सज्जिय-कमो वि कुडिल-दाढा-कडप्प-दुप्पिच्छो ।
पंचाणणो न सक्को समीव-देसं पि अक्कमिउं ॥२६१॥

मयगंध-लुद्ध-रोलंब-रोल-बहिरिय-समग्ग-दिसयक्कं ।
तड्डविय-करं कुद्धं पि करि-कुलं दूरमोसरइ ॥२६२॥

धूमज्झामलिय-दिसो महंत-जालालि-लिहिय-गयणग्गो ।
पासमपत्तो विज्झाइ वणदवो अकय-संतावो ॥२६३॥

विप्फारिय-फार-फणा-फुंकार-विमुक्क-विसकणुक्केरा ।
पसरंत-रोस-विवसा वि विसहरा पहरिउं न खमा ॥२६४॥

दिट्ठिप्पयाण-मेत्तेण पडिहयाणप्प-दप्प-माहप्पा ।
रक्खस-भूयप्पमुहा परम्मुहा ठंति दूरेण ॥२६५॥

पल्लव-सयणिज्ज-गया पंचनमोक्कार-चिंतणपरा सा ।
रयणिं पि अणेगावाय-संकुलं गमइ खेमेण ॥२६६॥

अह कइवय-दिणावसाणे तत्थ हत्थि-बंधत्थमुवागओ चक्कपुर-सामी सिंह-नरिंदो. दिट्ठा य तेण विम्हय-वसुप्फुल्ल-लोयणेण लावन्न-पुन्न-सव्वंगावयवा रायधूया । लक्खिया य आगारमेत्त-दंसणेण जमेसा अणणुभूय-पाणिग्गहण-वइयरा का वि कन्नग त्ति । तओ सो कुसुमचाव-चक्कलिय-कोदंड-मुक्क-कंडप्पहार-विहुरिय-चित्तो चिंतिउं पवत्तो--

मयणघरिणी नूणं दासीदसं पि न पावए,
तिणयण-पिया पत्ता लोए तणं व लहुत्तणं ।
सलिलनिहिणो धूया धूलीसमा वि न सोहए,
अमर-महिला हीलाठाणं इमीएँ पुरो भवे ॥२६७॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दुद्दंतिंदिय-वग्ग-निग्गहपरं देहाणवेक्खं मए,
झाणारूढ-मणेण दुक्करमणुट्ठाणं समासेविउं ।
नूणं पुव्व-भवम्मि किंपि सुकयं संपुन्नमावज्जियं,
[15]बाला जं सहस त्ति लोयण-सुहा वुट्टि व्व दिट्ठा इमा ॥२६८॥

तओ [16]तिहुयण-सिरि-समद्धासियं व अप्पाणं मन्नमाणो घेत्तूण तं समागओ स-नयरं । मुक्का य कयलि-कयंब-जंबु-जंबीरंब[17]-चुंबियंबरतलस्स कुसुमगंध-लुद्ध-मुद्ध-[18]फुल्लंधुयारावरुद्ध-दिसियक्कस्स भद्दसालाभिहाणस्स पमयवणस्स मज्झे देसालंकारभूए विमल-फलिह-सिला-संघाय-घडिय-भित्तिभागे कणय-खंभ-निम्मविय-वियड-सालभंजियाभिरामे मरगय-मणि-विणिम्मिय-कुट्टिमे तुंग-सिहरग्ग-भग्ग-रवि-रह-तुरंग-मग्गे [19]पसंडिपासाए । तओ अणुलोमवित्तीए तं उवयरिउमाढत्तो । तह वि सा वाम-करयल-पल्हत्थिय-वयण-कमला, दीहुन्न-नीसास-विसोसियाहरा, अणवरय-नयण-नीहरंतसुसलिला, दिणावसाण-समए समवयाहिं रायनिउत्त-महिलाहिं कह वि काराविया वियार-कारणाहार-परिहारेण किं पि भोयणं । संभासिया महुर-वयणेहिं रन्ना— 'देवि ! कहसु कस्स नरिंद-चूडामणिणो नहयलं व मयंकलेहाए [18]सयल-लोय-लोयणाणंद-संदोह-दाइणीए तुमए कुलमलंकियं नियय-जम्मेण ? केण वा निमित्तेण करि-कुरंग-केसरि-सरह-सूयर-तरच्छ-ऽच्छभल्ल-संकुलाए अडवीए निवडिया सि ?' ।

तओ 'अलं मह मंदभग्गाए जंपिएणं । समत्त-सत्त-संकप्प-कप्परण-परायणं दइवं पुच्छसु' त्ति भणंती अव्वत्त-सद्दं रोविउमारद्धा रायधूया । रन्ना वागरियं—'देवि ! किं इमाए अणिट्ठ-चिंताए ? आगार-मित्तेण वि विसाल-कुल-संभवा संभावीयसि तुमं । ता मए भिच्च-भावमुवगए[19] मणसा वि न को वि तुह अणिट्ठं काउं [20]तीरइ । तओ कीस संतावमुव्वहसि ? किं न परिहरसि संखोहं ? विमुंचसु दीण-वयणं[21], पलोएसु मं अमंदाणंद-संदोह-मंदिरेहिं इंदीवर-दल-दीहरेहिं निय-लोयणेहिं, करेसु करग्गहणेणाणुग्गहमिमस्स मयणसर-सल्लिय-मणस्स जणस्स '। तओ असुयपुव्वं सवण-दुस्सहमेयमायन्निऊण विजयसेण-महारायं मुत्तूण मह जलणो चेव सरणं ति कयनिच्छया विविह-चडु-कम्म-परायणं रायाणं तणं व अवगणंती अदिन्न-पडिवयणा मोणमवलंबिऊण

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ठिया रायधूया । तह वि गरुयाणुराय-निब्भरेण रन्ना सव्वहा मए एसा परिणेयव्व त्ति निच्छिऊण काराविया विवाह-सामग्गी । रायधूया वि पयट्टा पंचपरमेट्ठि-मंतमणवरयमणुसुमरिउं[22] ।

[23]अन्न-दिणे पडिहारी तीए पासे निवेण पट्ठविया ।
तीए वि हु पन्नविया सुदंसणा णेग-जुत्तीहिं ॥२६९॥

मुद्धे ! किं अवमन्नसि देवं देवं व सुंदरायारं ?
पडिवज्जिऊण एयं भुवणस्स वि सामिणी होसु ॥२७०॥

जइ वि मयच्छि[24] ! न इच्छसि तह वि हढेणावि परिणिऊण तुमं ।
मण-वंछियं करिस्सइ सीहो सीहो व्व दुव्वारो ॥२७१॥

जइ होइ हसंताणं रोयंताणं च सुयणु ! पाहुणओ ।
तत्तो वरं हसंताण किं न एयं सुयं तुमए ?॥२७२॥

तो जंपइ रायसुया मुणसि तुमं जुत्तिसंगयं वोत्तुं ।
किंतु अहं निय-पिउणा तारावीडेण नरवइणा ॥२७३॥

दाउं परिणयण-कए पट्ठविया विजयसेण-रायस्स ।
अणुरागेण मए वि हु तस्सेव समप्पिओ अप्पा ॥२७४॥

होऊण तस्स घरिणी परिणेमि अहं कहं परं पुरिसं ? ।
रविणा विणा कमलिणी विहसइ कं [25]पिक्खिउं अन्नं ?॥२७५॥

जं पुण हढेण मं परिणिऊण मणवंछियं इमो काही ।
तमजुत्तं जेणाहं तणं व पाणे परिहरिस्सं ॥२७६॥

तो पसरिही कलंको इमस्स लोए अहं पि न भविस्सं ।
ता भक्खिए वि काए [26]न य सो अजरामरो होही ॥२७७॥

इय सोउं पडिहारी सुदंसणा-वइयरं कहइ सव्वं ।
सीह-नरिंदस्स तहा कयंजली विन्नवइ एवं ॥२७८॥

देव ! देवस्स निय-बुद्धि-पगरिस-विमरिसियासेस-जुत्ताजुत्त-वियारस्स पुरओ किं सीसइ ?, सयं चेव मुणइ देवो, जं गुरुयण-अदिन्नाए अणिच्छंतीए य कन्नाए करग्गहणं कीरइ न एस संत-मग्गो । परकलत्तं खु एसा जा निय-पिउणा पेसिया सयं च [27]गरुयाणुराय-परवस-माणसा पयट्टा विजयसेणस्स रन्नो परिणयणत्थं । ता कहं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

करग्गहणं इमीए कुसला सलाहंति ? को वा इमीए पुरिसंतर-विद्देसिणीए उवरि देवस्स वामोहो ? जओ—

अन्नासत्ते पेम्मं खणं पि अकुलीण-लोय-संसग्गं ।
मा देज्ज दिव्व ! अम्हं जइ रुट्ठो होसि सय-वारं ।।२७९।।

ता काऊण पसायं परिहरियव्वो असग्गहो एस ।
जइ सोवन्निय-छुरिया हंतव्वो किं तओ अप्पा ? ।।२८०।।

तह वि नरिंदो कंदप्प-सप्प-विसवेग-छिन्न-चेयन्नो ।
अमुणिय-जुत्ताजुत्तो न मुयइ दूरं दुरभिसंधिं ।।२८१।।

जओ—

उद्दाम-काम-झामल-पविलुत्त-विवेय-चक्खुणो मणुया ।
खुप्पंति मग्ग-चुक्का[२८] अकिच्च-पंकम्मि किं चोज्जं ? ।।२८२।।

विसमाउह-बाण-पहार-जज्जरे माणुसस्स मण-कलसे ।
ठाइ कहं निक्खित्तं थेवं पि परोवएस-पयं ? ।।२८३।।

तो वज्जिऊण लज्जं सीह-नरिंदो पयंपए एवं ।
जाणामि सव्वमेयं सविसेसमहं परं किंतु ।।२८४।।

दुस्सह-मयण-हुयासण-जालावलि-कवलियंगमप्पाणं ।
बालाए इमीए विणा खणं पि सक्केमि न हु धरिउं ।।२८५।।

तत्तो मए इमीए पाणिग्गहणं अवस्स-कायव्वं ।
पच्छा जं रुच्चइ तं करेउ दइवो किमन्नेण ? ।।२८६।।

[२९]इओ य विजयसेण-महाराओ मणिचूडेण समं विमाणारूढो अणेग-नग-नगर-गामाऽऽगर-तरुसंड-सोहियं मही-मंडलं पलोयंतो पत्तो तं चेव चारु-मणि-खंड-मंडिय-पसंडि-पासाय-पंतिप्पहा-पहय-तिमिर-पूरं, धरणि-रमणी-मणि-कन्नपूरं, तिय-चउक्क-चंकम्ममाण-रमणिज्ज-रमणि-चक्कं चक्कपुरं । तं दट्ठूण कोऊहलऽक्खित्त-चित्तेण वुत्तो रन्ना मणिचूडो— 'इमं किं पि नयरं निय-रम्मत्तण-निव्वत्तिय-तियसपुर-पराभवं, ता पलोएमो' त्ति मोत्तूण विमाणं मणिचूडेण समं समोइन्नो महीए महीनाहो । दिट्ठं च तत्थ पारद्ध-महूसवं रायभवणं । तओ पुट्ठो रन्ना एक्को पुरिसो— 'भद्द ! किं महूसव-कारणं ?' ति । पुरिसेण वुत्तं 'सोम ! सुण, अत्थि एत्थ चक्कपुरे पच्चत्थि-पत्थिव-हत्थि-मत्थय-कयत्थण-सीहो

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रीहो नाम नरवई । तेणेगया गय-बंधणत्थं गएण दिट्ठा भीमाडवीए एगा कन्नगा । आणिया [10]एत्थ विवाहत्थमब्भत्थिया अणेगप्पगारेहिं । सा अणिच्छंती वि परिणेउमारद्धा तेण । अओ महूसवारंभो' । तओ रन्ना विजयसेणेण साहिलासं पुट्ठो इमो— 'भद्द ! सा कत्थ चिट्ठइ ?' पुरिसेण वुत्तं— 'भद्द ! भद्दसालाभिहाण-पमयवण-मंडणे पासाए राय-महिलाहिं परिणयणत्थं पण्णविज्जमाणा चिट्ठइ' ।

तओ गओ राया मणिचूडेण समं पमयवणे । तत्थ बहल-दलावली-विलुत्त-दिणयर-करप्पसरं सरस-कयलीहरयं जाव पेच्छए ताव पच्चासन्नं करग्गहण-लग्गं ति महंतं चित्त-संतावमुव्वहंती मरणं सरणं ति मन्नमाणा विवाह-कज्ज-पज्जाउलत्तणेण परियणस्स किंचि अंतरं लहिऊण निग्गया पासायाओ सुदंसणा, पविट्ठा पमयवणब्भंतरं । पत्ता असोग-पायवतलं । दिट्ठा लयंतरिएण रन्ना विम्हयवसुप्फुल्ल-लोयणेण, भणियमणेण— वणदेवया किमेसा परिसक्कइ निय-वणे स-इच्छाए ? किं नागकन्नगा काणणस्स दंसणकए पत्ता ? किं विज्जाहर-रामा समागया महियले गलिय-विज्जा ?, किं वा सकोव-वासव-सावब्भट्ठा तियस-रमणी ? । एवं पयंपमाणो राया जाव चिट्ठइ ताव तीए विमुक्क-दीह-नीसासं समुल्लवियं— 'हा ! मे मंदभग्गाए उदग्ग-सोहग्ग-भग्ग-सग्गीस-रूव-मडप्फरो फार-समुज्जल-जस-पसर-भरिय-भुवणब्भंतरो न ताव दिट्ठि-विसयं पि संपत्तो विजयसेण-महाराओ । तह वि तस्स समप्पिओ मए अप्पा । संपयं पुण एस दुरप्पा रीहो मज्जायमुज्झिऊण मं परिणेउमब्भुज्जओ । नत्थि अवरो कोइ उवाओ जेण इमाओ रक्खसाओ व्व रक्खेमि अत्ताणयं । तओ मरणं मे अभग्गसीलाए सलाहणिज्जं । जओ—

जीवंत च्चिय वुच्चंति सुद्धसीला मया वि जियलोए ।
जीवंता वि मय च्चिय जीवा सीलेण परिहीणा ॥२८७॥

सो च्चिय जयम्मि धन्नो तस्स च्चिय चंद-निम्मला कित्ती ।
अविभग्ग-निय-पइन्नेण जेण मरणं पि पडिवन्नं ॥२८८॥

ता इमस्स असोग-तरुणो साहाए उब्बंधेमि अप्पाणं ति ।

एत्थंतरे मणिचूडेण भणियं— 'नाह ! न एसा वणदेवयाइण मज्झे का वि, किंतु एसा तुहाणुराइणी रायकन्ना' । तओ सुदंसणाए कंठेण सह साहाए बद्धो पासओ । 'भो भो वणदेवयाओ ! मे असरणाए जम्मंतरे वि

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विजयसेण-राओ भत्ता भविज्ज' । त्ति भणंतीए मुक्को अप्पा । तओ मणिचूडेण भणियं -'एवं [31]विवज्जमाणा इमा वराई न उवेक्खिउं जुज्जइ त्ति । तओ रन्ना विज्जुक्खित्त-करणेण [32]उप्पइऊण वामभुयाए तं धरंतेण हियय-देसे दाहिण-कर-कलिय-करवालेण छिन्नो पासओ, तं उच्छंगे धरंतो निसन्नो सिलायले राया, संवाहियाइं तीए अंगाइं रन्ना, परामुट्ठं सेय-जल-बिंदु-दंतुरं भालवट्टं, वीइया कयलीदलेण, सत्थीहुया एसा भणिया य— 'सुयणु ! कहेहि को ते संतावमुप्पाएइ ? जेण तं निग्गहेमि ।' अह सुदंसणा अतक्कियमुवागयं तं पलोइऊण[33] संभमब्भंत-लोयणा चिंतिउं पवत्ता— को एस महप्पा सिणेह-सब्भाव-गब्भ-मुल्लवइ ? कीस वा एयस्स वयण-पंकय-हुत्तं पुणरुत्तं वलइ मे दिट्ठी ?, केण वा निमित्तेण एयस्स संलाव-[34]सवणमेत्तेण वि विहसियं मे हिययं ? किं वा इमस्स पाणि-पल्लव-फरिसमुवलब्भ पीऊस-रस-सित्ताइं पिव पमोय-पगरिसं पत्ताइं मह गत्ताइं ?, किमेस सो चेव मह हियय-वल्लहो अज्जउत्तो ? एवं चिंता-पवन्न-माणसा भणिया रन्ना— 'देवि ! कीस संसयाउल-मणा चिट्ठसि ? एसो सो हं तुह मण-कमल-वियासणेक्क-दिवसेणो विजयसेणो राया तुह पुन्न-पगरिसागरसिओ समागओ त्ति । तओ तव्वयणेण निय-हियय-संवाएण य विणिच्छिय-तयागमणा रायसुया 'पढमं दंसणं' ति ससज्झसा, 'सक्खा लक्खियं सव्वमणेणं' ति [35]सविलिया, 'अतक्कियागमणो' त्ति सविम्हया, 'विरह-जलण-जाला-पलित्त-गत्ताए चिराउ दिट्ठो' त्ति सउक्कंठा, 'परम-निव्वुइं पत्त' त्ति साणंदा, 'किमेयस्स एवंविह-विसम-दसंगया करेमि उचियं ?' ति सचिंता, 'सुकय-मित्त-सहाओ' त्ति सासंका— एवं अणेग-रस-संकिन्नं अणाइक्खणिज्जं अणणुभूयपुव्वं रसंतरमणुहवंती तक्कालुप्पन्न-पमोय-लज्जा-संरंभ-रुब्भंत-कंठक्खलंत-वयणा जंपिउं पवत्ता— 'सागयं अज्जउत्तस्स । हियएण नेह-भर-निब्भरेण गूढो सि [36]एत्तियं कालं, संपइ पसत्थ-[37]सुकय-उदएण नयणेहिं सच्चविओ विमल-गुण-रयण-निहिणो, करेमि संपइ किमज्जउत्तस्स एवंविह-विसम-दसं संपत्ता उचिय-करणिज्जं' ? रन्ना भणियं- 'देवि ! मा किं पि खेयमुव्वहसु' !

सव्वं कयं जमेवं सब्भाव-समप्पणं किमन्नेण ? ।
जो देइ सिरं सुंदरि ! सो किं मग्गिज्जए नयणं ? ॥२८९॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रायधूयाए भणियं- 'अज्जउत्त ! खग्गमित्त-सहाओ तुमं ति कंपइ मे हिययं'। रन्ना भणियं- 'मा भाहि, किं न सुयं तए एक्को वि केसरि-किसोरो मत्त-करि-घडा-विहडणं कुणइ ? त्ति । ता कहसु कहिं सो दुरप्पा नरिंदाहमो संपइ[३८] वट्टइ ? जेण तं निग्गहेमि' ।

एत्थंतरे तुरिय-तुरियं करग्गहण-करणूसुयमणो पासायतल-मुवागओ[३९] सिंह-नरिंदो । तम्मि रायधूयमपिच्छंतो कहिं गया मह पाणवल्लह ? त्ति संभंतचित्तो [४०]पत्तो पमयवणब्भंतरे गवेसेउं[४१] । समागओ तं पएसं । दिट्ठा य असोग-तरु-तले विजयसेण-राएण समं समुल्लवंती रायधूया ।

तत्तो तक्काल-वियंभमाण-कोवेण सीह-नरवइणा ।
उग्गीरिउग्ग-खग्गेण जंपियं -'को अरे ! एस ? ॥२१०॥

मह पिययमाए सद्धिं संलवइ ? वियालियं विसेणेस[४२] ।
को कुणइ दुरप्पा ? कस्स वा सुमरियं कयंतेण ? ॥२११॥

को वा सकोव-करिणाहितुंड-कंडूयणेण निस्संकं ।
अहिलसइ अयंडे मरणमप्पणो एस मूढमई ? ॥२१२॥

ईसि हसिऊण तत्तो पयंपियं विजयसेण-नरवइणा ।
[४३]पेच्छह दूरं दुस्सिक्खियाण धिट्ठत्तणं गरुयं ॥२१३॥

मज्जाय-वज्जिया जं अकज्ज-करणुज्जया वि होऊण ।
लज्जंति नो परेसिं दावंता अप्पणो वयणं ॥२१४॥

जंपंति दप्पवसया अज्ज वि असमंजसाइं वयणाइं ।
पेच्छंति[४४] नेव निययं दुच्चरियमहो ! महामोहो ॥२१५॥

निय-दुच्चरिएण हयाण ताण हणणं न जुज्जए जइ वि ।
तह वि भुयंग व्व न ते उवेक्खिया सुहयरा हुंति ॥२१६॥

एत्थंतरम्मि भणियं नग्गायरिएण केण वि स एस ।
सिरि-विजयसेण-राओ जयइ जए पायड-पयावो ॥२१७॥

सोऊण इमं किमणेण ? वीरभुज्जा धर त्ति जंपंतो ।
सुहड-समूह-समेओ सीह-निवो पहरिउं लग्गो ॥२१८॥

पडिपहरिउं पयट्टेण भिउडि-भीसण-निडालवट्टेण ।
सिरि-विजयसेण-रन्ना फुरंत-रोसारुणऽच्छेण ॥२१९॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कंठ-पहोलंत-पिसाय-दिन्न-वर-हार-गुरु-पभाव-वसा ।
पडिखलिय-सरीर-समुत्थरंत-खग्गाइघाएण ॥३००॥

को वि हओ करवालेण कुलिस-कढिणेण मुट्ठिणा को वि ।
को वि हु चंड-चवेडाए को वि पण्हि-प्पहारेणं ॥३०१॥

एक्केण वि नीसेसो सुहड-जणो गह-गणो व्व सूरेण ।
काउं हयप्पयावो दिसोदिसं नासिओ सहसा ॥३०२॥

एक्को च्चिय सिंह-निवो पुरो ठिओ निबिड-दप्प-दुप्पेच्छो ।
गलगज्जिं कुणमाणो खग्ग-पहारे विमुंचंतो ॥३०३॥

सो वि विजयसेणेणं पावसु दुन्नय-फलं ति बिंतेण ।
हणिऊणं खग्ग-दंडेण पाडिओ धरणिवट्ठम्मि ॥३०४॥

मुच्छा-मिलंत-नयणं सीह-निवं निवडियं निएऊण ।
गाढप्पहार-पह-नीहरंत-रुहिरारुणिय-वसुहं ॥३०५॥

सिरि-विजयसेण-रन्ना कारुन्नाउन्न-माणसेण तओ ।
आणत्तो मणिचूडो सिग्घं आणेसु सलिलं ति ॥३०६॥

तेणाऽवि नियड-कीलावावीओ विसाल-पउमिणी-पत्ते ।
सहसा तमाणिऊणं समप्पियं भूमिनाहस्स ॥३०७॥

रन्ना वि कंठ-कंदल-पलंबमाणं अचिंत-सामत्थं ।
वरहारं ओहलिउं सित्तो सलिलेण सव्वंगं ॥३०८॥

तस्सामत्थेण तओ सत्थ-सरीरो समुट्ठिओ सिंहो ।
सुत्तो व्व तक्खण-परूढ-गाढ-खग्ग-प्पहार-वणो ॥३०९॥

वुच्छिन्न-समरवंछो पाय-पणामं तओ कुणंतो सो ।
धरिउं करम्मि रणभंग-भीरुणा विजयसेणेण ॥३१०॥

भणिओ य सिंह नरवर ! पत्थुय-विग्घं किमेवमायरसि ? ।
तुह तुल्लो एत्थ जए न को वि दिट्ठो मए सुहडो ॥३११॥

तो मुत्तूण विसायं पिसायमिव दूरओ पुणो सज्जो ।
रण-कज्जे भवसु करे करिऊण कराल-करवालं ॥३१२॥

अहवा वज्जिय-खग्गाइ-पहरणा दो वि बाहुजुद्धेण ।
जुज्झामो जेण महं महई तुट्ठी तुह रणेण ॥३१३॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सीह-नरिंदेण तओ भणियं उवयार-कारएण तए ।
जणगेण व कह सद्धिं जुद्धं काउं महं जुत्तं ? ॥३१४॥

दीसंति जए पुरिसा उवयारपरं जणं उवयरंता ।
उवयरइ तुमं व कए वि अवगुणे को वि सप्पुरिसो ॥३१५॥

अवि य महासत्त ! परमोवयारी तुमं, जेण तुमए मुक्क-मज्जाओ वज्जिय-लोयलज्जो, अणवेक्खिय-खत्तधम्मो, अकज्ज-करणुज्जय-माणसोऽहमेवमणुसासिओ, एवं कुणंतेण रक्खिओ हं निरयंध-कूव-निवडणाओ, निवारिओ सरय-रयणीयर-किरण-कलाव-निम्मलं निय-कुलं कलुसयंतो कलंक-पंकेण, ठाविओ उभयलोय-सुहावहे संत-मग्गम्मि । किं बहुणा ? तिहुयणे वि तं नत्थि वत्थु जं तुह परमोवयारिणो दाऊण, मन्नामि कयत्थं अप्पाणं । तो विरम इमाओ रणज्झवसायाओ । पसायं काऊण गेण्हसु अणेग-करि-करह-रह-तुरंग-रंगंत-सोहं, कोस-कोट्ठागार-गरुय-रिद्धि-समुद्धुरं रज्जमेयं । विजयसेणेण वुत्तं— भद्द ! पालेसु निय-कुलक्कमागयं रज्जं । उत्तम-पुरिसो तुमं । किमित्तिएण[५५] वि संतावमुव्वहसि ? । गाढप्पहार-विहुरिय-सरीरस्स रणंगणावणि-निवडणं सुहडस्स भूसणं, न उण दूसणं । सीहेण भणियं— नाहं उत्तमो, किंतु अहमो जो एवंविह-वसण-समागमेण अकज्जायरणाओ नियत्तो म्हि । जओ—

सयमेव नियत्तंती उत्तम-पुरिसा अकज्ज-करणाओ ।
मज्झा परोवएसेण वसण-लाभेण पुण अहमा ॥३१६॥

एत्तिय-कालं कालुस्स-दूसिय-मइणो मयण-वसवत्तिणो तिण-तुल्लावगणिय-गुणिजणोवएसरस्स विसएसु चेव मे परमत्थ-बुद्धी आसि । संपयं पुण नियत्ता विस-विसम-विसय-वासंग-वासणा, विरत्तं भीम-भवचारयाओ चित्तं, अवगयं जहावट्ठिय-रमणि-सरीर-सरूव-निरूवण-[५६]निवारगं काम-झामलं ।

सरिसव-मेत्त[५७]-सुहकए कणयगिरीओ वि गुरुयरो अजसो ।
हा हा ! मए विढत्तो अकज्जमिणमायरंतेण ॥३१७॥

ता परलोय-सुहावहमुत्तमपुरिसाणुचिन्न-मग्गमहं ।
सेविस्सामि किमिमिणा अवजस-कलुसेण जीएण ? ॥३१८॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एवं पयंपमाणो सीह-नरिंदो पुराओ नीहरिउं[४८] ।
वारंतस्स वि लोयस्स तावसासममिमो पत्तो ॥३१९॥

तावस-वयं पवन्नो तत्तो सिरि-विजयसेण-राएण ।
महया विच्छड्डेणं तत्थेव य भद्दसाल-वणे ॥३२०॥

तम्मि य पासाय-तले विवाहिया सीह-पत्थिव-कयाए ।
तीए सामग्गीए सुदंसणा रायधूया सा ॥३२१॥

तओ—

महंत-मंति-सामंत-मंडलिय-लोय-परिगओ, गय-कंधराधिरूढो[४९], धरिय-धवलायवत्तो, धुव्वंत-चंद-चारु-चामरुप्पीलो, पए पए कीरंताणेग-मंगलो मागह-समूह-पढिज्जमाणो, मणिचूडेण सुदंसणा-देवीए य समं पविट्ठो रायभवणं । निसन्नो पसरंत-कंति-कडप्प-कप्पियाणप्प-सक्कचाव-चक्कवाले, अप्पमाण-माणिक्क-चक्क-चिंचईए कणय-सिंहासणे[५०], अहिसित्तो समत्त-मंति-सामंतेहिं । पणमिओ पहाण-रायलोएण । कयाइं मंगलाइं, पणच्चियाओ चारु-चामीयर-कडय-केऊर-थंभिय-भुयाओ पल्लविय-लोय-लोयणब्भुयाओ पणंगणा-चक्क-चूडामणीओ रमणीओ । रन्ना वि जोग्गयाणुसारेण सम्माणिओ महग्घ-वत्थालंकार-तंबोलप्पयाणाईहिं पणइ-लोओ । उचिय-समए य विसज्जिऊण मंति-सामंत-सिट्ठि-सेणावइ-पमुह[५१]-पहाण-पणइ-वग्गं, समुट्ठिऊण कयं देव-गुरु-पाय-पंकय-पूया-पुरस्सरं सरस-रसवईए भोयणं । तदवसाणे ठिओ राया रयण-पल्लंके, निसन्नो सन्निहि-निहित्त-कणयमयासणम्मि मणिचूडो, सुदंसणा-देवी वि पायंत-निसट्ठ-विसिट्ठ-विट्ठर-निविट्ठा पुट्ठा पहिट्ठ-परिपुट्ठ-कंठ-कोमल-गिराए रन्ना— 'देवि ! कहसु केण तुमं अवहरिया[५२] ? । कहं वा तुमए मइंद-मायंग-कुल-संकुला अडवी नित्थिन्ना ? त्ति । तओ—

केण वि अलक्खिएणं पक्खित्ता जह वणे समुक्खिविउं ।
जह तत्थ चारण-मुणी पलोइओ परिभमंतीए ॥३२२॥

धम्मोवएस-संगय-गिराहिं अणुसासिऊण जह तेण ।
पंचपरमेट्ठि-मंतस्स संसियं पवर-माहप्पं ॥३२३॥

सो वि परमेट्ठि-मंतो जह गहिओ तस्स सुमरण-वसेण ।
जह लंघिया लहुं चिय सीहाइ-उवद्दवा सव्वे ॥३२४॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जह सीह-नरिंदेणं आणीया नयरमेयमिच्चाइं ।
तह देवीए सव्वं सवित्थरं साहिअं रन्नो ॥३२५॥

रन्ना भणियं— 'अहो ! निक्कारण-करुणारस-परवसत्तणं तस्स चारण-मुणिस्स, जेण दिन्नो सग्गापवग्ग-मग्ग-देसओ समग्ग-दुग्गोवसग्ग-संसग्ग-[1]निग्गहणपच्चलो पंच-परमेट्ठि-मंतो*। जस्स सुमरणेण सयलोवद्दव-विद्दावणं संपत्ता तुमए, इहावि महल्ल-कल्लाण-परंपरा । तारिसा य साहुणो सयल-जियलोय-वच्छला, मोक्ख-पंथ-सत्थवाहकप्पा, कप्पद्दुम व्व दमगाण दुल्लहा अकय-सुकयाण पाणीणं । तत्तो

गुण-रयण-निहीणं मोक्ख-कज्जुज्जयाणं ।
जइ कह वि गुरूणं संगमो मज्झ होज्जा ।
चलण-कमल-मूले ताण सव्वन्नु-धम्मं ।
पयडिय-सिव-सम्मं ता पवज्जामि सम्मं ॥३२६॥

जओ—

परलोयाणुट्ठाणं समईए दुक्करं पि कीरंतं ।
सुगुरु-वयणं विणा होइ निप्फलं कास-कुसुमं व ॥३२७॥

धन्नाणं [2]गुणि-गुरुणो गुरुणो वियरंति सम्ममणुसट्ठिं ।
न कयावि रयण-वुट्ठी रोरस्स घरंगणे होइ ॥३२८॥

गुणसागराण सुगुरूण संगमं इह लहंति कयपुन्ना ।
किं चडइ करंबुरुहे चिंतारयणं अहन्नाणं ? ॥३२९॥

मणिचूडेण भणियं— 'पुव्वभवुब्भव-पुन्नपब्भार-पाउब्भवंत-मणवंछियत्थसत्थस्स देवस्स सुगुरु-संगमो अचिरेणं चेव संभाविज्जइ' । इच्चाइ-परोप्पर-संकहाक्खित्त-माणसो खणमेक्कमइक्कमिऊण राया रज्ज-कज्जाइं चिंतिउं पवत्तो । अह भणिओ मणिचूडो रन्ना— 'भद्द ! मह तुरंगावहार-संभाविय-वसणो सोय-सायर-निमग्गो संखउर-लोओ दुक्खेण वट्टइ त्ति संभावेमि । ता तग्गमणेण निव्वुइं करेमो तस्स' । तओ जुत्तमेयं ति भणमाणेण मणिचूडेण विउव्वियं फारफुरंत-कंति-कडप्प-दिप्पमाणं महप्पमाणं मणिमयं विमाणं । राया वि रज्जसुत्थं काऊण मणिचूड-सुदंसणादेवीहिं [3]सद्धिं समारूढो तम्मि, चलिओ चक्कपुराओ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संखपुराभिमुहं ।

अह संखपुरे तम्मि समयम्मि नरनाह-विरह-विहुरस्स लोयस्स महा-वसणं जं जायं तं निसामेह । तहाहि— तुरगावहरिए रायम्मि अणुमग्ग-लग्गं पहावियं पहाण-सामंत-सेणावइ-सुहड-संकिन्नं सेन्नं । पयट्टं रन्नो गवेसणाए सुन्नारन्नम्मि इओ तओ परिब्भमंतं भूवइणो पउत्तिमित्तं पि अपावमाणं मणम्मि महंत-संतावमुव्वहंतं तं पत्तं पउमसर-समीववत्ति-तमालतरु-निउंजं, तत्थ य दिट्ठि-"गोयरमुवगया एगा इत्थिगा करुण-सरेण रुयमाणी, पुट्ठा य— भद्दे ! का तुमं ? कीस वा सुन्नारन्नगया एवं रोयसि ?। तीए भणियं— वणदेवया हं, जं पुण रोइयव्व-कारणं तं सुणह—

'एत्थ अइक्कंत-दिवसे कत्तो वि समागओ मणहर-नेवच्छ-सच्छाय-कायच्छवी, अच्चंत-सुंदरागारो, गरुयसत्तो, रायलक्खणाणुगओ एगो पुरिसो । सो य एयम्मि सरोवरे जल-मज्जणं काऊण छुहा-किलंतो कंद-मूल-फल-पलोयणत्थं पयट्टो, "तो एयस्स पुरिसरयणस्स देव्व-दुव्वार-वावार-वसा विसम-दसंगयस्स करेमि उवयारं ति चिंतिऊण पत्ता [हं] कणयसेल-तल-परिट्ठिय-कप्पतरु-फलाणयण-निमित्तं । घेत्तूण ताणि जाव समागच्छामि ताव सो महाणुभावो कुडिल-दाढा-कडप्प-कप्परिय-काओ कयंतेणेव अमुणियागमेण पंचाणणेण पंचत्तमुवणीओ । तओ हं तम्मरण-दुक्ख-दूमिय-मणा हा ! मए मंदभग्गाए न कयमेयस्स किं पि उचियं, हा ! मह वणमुवागओ इमो मरणमणुप्पत्तो त्ति संतप्पमाणा एवं रोएमि' ।

इमं च सोच्चा"' अच्चंत-सोग-संरंभ-निब्भरं सेन्नं समागयं निय-नयरं । तओ विन्नाय-वुत्तंतो मिलिओ नयर-लोगो, बहुप्पयारं पलवमाणं मरणट्ठमुवट्ठियं अंतेउरं । उग्गीरिय-निक्किव-किवाणिणो अप्पाणं हणंता कट्ठेण निसिद्धा वेलावित्तया, सोगावेग-संगलंतंसु-जलाविल-लोयणो पायालं पविसिउकामो व्व हेट्ठामुहो ठिओ रायलोओ । परिचत्तं बालेहिं पि पाण-भोयणं । एवं असमंजसे पयट्टे समग्ग-नयरम्मि मइसागर-मंतिणा भणियं— 'भो भो ! किमेवमाउलत्तणं कीरइ ? जओ अज्ज मए पच्चूसे चेव सुविणम्मि समुत्तुंग-सेल-सिहर-समारूढो समहिय-तेयसा जलंतो दिट्ठो देवो, तओ सुविणाणुमाणेण एवं संभावेमि जहा- कुसलसालिणो

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

देवस्स विसेसऽब्भुदय-लाभेण होयव्वं, न य अतुलबल-परक्कमो केसरिमित्तेण धरिसिउं पारीयइ देवो । जं पुण अरन्नगयाए वंतरीए जंपियं तमन्नहा वि संभाविज्जइ । खुद्दपगइणो वंतरा किं न असमंजसमायरंति ? ता धीरत्तमवलंबिऊण पडिवालेह केत्तियं पि कालं ।

एत्थंतरम्मि पत्तो राया नयरं, जं च नरिंदागमणुप्पन्न-पमोएण पहसंतं व पासाय-परंपराणं सरयब्भ-संदब्भ-सुब्भ-कंतीहिं, पणच्चमाणं पिव पवणुद्धुय-[९]धयवडघाएहिं, मंगलुग्गार-मुहलं व धयग्ग-लग्ग-वग्गंत-कणय-किंकिणी-कलरवेणं, विम्हय-वसुप्फुल्ल-लोयणेण लोएण पलोइज्जमाणो विमाणाओ अवयरिऊण राया निसन्नो [१०]सीहासणे, मणिचूडो सुदंसणादेवी वि उचियासणेसु उवविट्ठा, पणमिओ परमप्पमोय-वस-[११]विसप्पमाण-माणसेण सेणावइ-सामंत-मंति-सेट्ठिप्पमुह-महायणेण, रन्ना वि संभासिओ जहोचियं सव्वलोओ ।

पायवडिएण तेणं वुत्तमिमं देव ! कत्थ तुब्भेहिं ।
एत्तिय-दिणाइं गमियाइं कहह अइकोउगं अम्ह ॥३३०॥

अम्हेहिं ताव तुम्हे अडवीए गवेसियाओ सव्वत्थ ।
दिट्ठा परं न कत्थ वि केवलमेक्का करुणसद्दं ॥३३१॥

रुयमाणी रमणी तत्थ दिट्ठिविसयं समागया अम्ह ।
पुट्ठा य सा किमेवं भद्दे ! रोयसि तुममरन्ने ? ॥३३२॥

तो [१२]तीए असंबद्धं भणियं तं जं न सोउमवि सक्कं ।
तत्तो सविसेसं सोय-परिगया आगया नयरं ॥३३३॥

नयरस्स समग्गस्स य जाओ सो कोइ चित्त-संतावो ।
जं सक्को वि न सक्कइ कहिउं किं पुण [१३]जणो सेसो ? ॥३३४॥

इच्चाइ-सव्वमावेइऊण भणियं पहाण-लोएण ।
संपइ निय-चरिय-कहा-कहणेण अणुग्गहं कुणह ॥३३५॥

अह अप्प-चरिय-कित्तण-लज्जोणय-कंधरे धरणिनाहे ।
मणिचूडेण असेसो सिट्ठो नरनाह-वुत्तंतो ॥३३६॥

तओ विम्हय-रसावहिय-हियएण पयंपियं पहाण-लोएण—अणन्न-सामन्न-पुन्नपब्भार-भायणं देवो निय-गुण-माहप्प-संपज्जमाण-मणवंछियत्थो सुविणे वि न वसणेहिं अक्कमिज्जइ । जओ—

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

"दिव्वस्स दुव्विलसिएण सठाण-भंसं,
पत्ता वि हुंति सुहिणो गुणिणो गुणेहिं ।
चंदो समुद्द-विरहे वि हरस्स सीसे,
कण्हस्स कोत्थुह-मणी वसई उरम्मि ॥३३७॥

एत्थंतरे पढियं काल-निवेयगेण—

गंतूण ठाणंतरमंसुमाली,
देवो व्व काऊण परोवयारं ।
पुणो वि संपत्त-"पभूयतेओ
समागओ रेहइ लोय-मज्झे ॥३३८॥

मज्झन्न-संझासमओ त्ति समुट्ठिओ राया, सुदंसणादेवी वि पवेसिया गरूय-विच्छड्डेण अंतेउरं । रन्नो पुन्न-पगरिस-गुणुक्कित्तणं कुणमाणा जहागयं पडिगया सामंताइणो । राया वि मणिचूडेण समं कय-तक्कालोचिय-कायव्वो, संभालिय-करि-तुरगाइ-रज्जंगो स-समय-समणुयत्तिय-पेच्छणगाइ-किच्चो पसुत्तो रयणीए । कमेण जाए पहाय-समए समुग्गए गयण-लच्छि-मणिकुंडले तरणि-मंडले, महिवट्ठ-निविट्ठ-मत्थएण पणमिऊण विन्नत्तं उज्जाणपालेण-देव ! कुसुमसुंदरुज्जाणम्मि समोसढो कुमय-कमल-मउलणिक्क-चंदो निक्कारण-करुणा-वल्लि-कंदो, कंदप्प-दावानल-पलित्त-भुवणवण-निव्ववण-कंदो, अमय-नीसंदो, जणिय-जण-मणाणंदो, विमलोहिनाण-नाय-सयल-वत्थु-परिप्फंदो, जीवाणंदो नाम सूरि । तओ राया पारितोसियं तस्स दाऊण पमोयभरापूरिज्जमाण-माणसो, मणिचूडेण सुदंसणादेवीए य समं समत्त-सामंत-मंति-परिगओ गय-कंधराधिरूढो पत्तो कुसुमसुंदरुज्जाणं । दिट्ठो तत्थ तियस-कय-कणय-कमल-निलीणो मुत्तिमंतो व्व समणधम्मो धम्मं वागरमाणो मुणीसरो । तिपयाहिणा-पयाणपुव्वं पणमिऊण भयवंतं सेस-साहुणो य निविट्ठो महिवट्ठे ।

तो वागरियं गुरुणा राहावेहोवमाए दुल्लंभं ।
लद्धूण कहं पि हु माणुसत्त-खेत्ताइ-सामग्गिं ॥३३९॥
पुरिसेणं बुद्धिमया धम्मम्मि समुज्जमो विहेयव्वो ।
नर-सुर-सिव-सोक्खाणं धम्मो च्चिय कारणं जेण ॥३४०॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घण-विरहे जह न जलं जल-विरहे जह न जायए सस्सं ।
तव्विरहे जह न पया धम्मेण विणा तहा न सुहं ॥३४१॥

मूलं महद्दुमस्स व पासायस्स व दढं पइट्ठाणं ।
धम्मस्स तस्स मूलं सम्मत्तं कित्तियं समए ॥३४२॥

अहरीकय-कप्पद्दुम-चिंतामणि-कामधेणु-माहप्पं ।
देव-गुरु-तत्त-सद्दहण-लक्खणं बिंति सम्मत्तं ॥३४३॥

जिय-राग-दोस-मोहो मयण-महामल्ल-[६६]पेल्लण-समत्थो ।
सव्व-[६७]जगज्जीव-हिओ अरहं देवो न उण अन्नो ॥३४४॥

जे चत्त-सव्व-संगा पंच-महव्वय-भरुव्वहण-धीरा ।
गय-[६८]रोसमणा समणा ते च्चिय गुरुणो न उण सेसा ॥३४५॥

पुव्वावराविरुद्धं पमाण-सुपइट्ठियं जिणुद्दिट्ठं ।
जीवाजीवाईयं तत्तं न उणो कुतित्थिमयं ॥३४६॥

अहवा निव्वाण-सुहाण साहणं किं पि जं अणुट्ठाणं ।
सुद्धं दाणाईयं तं तत्तं बिंति जगगुरुणो ॥३४७॥

जं दुक्खियं सयं चिय न होइ दुक्खं परस्स न करेइ ।
तं दाणमेत्थ सुद्धं न उणो गो-लोहमाईयं ॥३४८॥

सव्व-जग-पयडमेयं जं जीव-वहेण होइ अहम-गई ।
सो वि सुगइ-कामेणं कह कीरइ ? ही महा-मोहो ॥३४९॥

धम्मच्छलेण पावस्स कारणं जीव-घाय-संजणगं ।
नइ-जल-ण्हाणाई जं मोहस्स वियंभियं तं पि ॥३५०॥

[६९]धम्मो य दुहा भणिओ जिणेहिं जर-जम्म-मरण-मुक्केहिं ।
पढमो जईण धम्मो गिहत्थ-धम्मो भवे बीओ ॥३५१॥

खंताइ-दसपयारो जइ-धम्मो वन्निओ जिणिंदेहिं ।
साहसधणाण सुकरो सुदुक्करो कायराणमिमो ॥३५२॥

एसो महल्ल-कल्लाण-वल्लि-पल्लवण-अमयरस-सेओ ।
सग्गापवग्ग-पुर-पह-पत्थिय-जण-सत्थ-सत्थाहो ॥३५३॥

भीम-भवन्नव-निवडंत-जंतु-संताण-तारण-तरंडो ।
[७०]कम्मदुम-खंड-खंडण-पयंड-धारुक्कड-कुहाडो ॥३५४॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पंच य अणुव्वयाइं गुणव्वयाइं[९२] हवंति तिन्नेव ।
सिक्खावयाइं चउरो सावग-धम्मो दुवालसहा ॥३५५॥

संकप्पपुव्वयं जं तसाण जीवाण निरवराहाण ।
दुविह-तिविहेण रक्खणमणुव्वयं बिंति तं पढमं ॥३५६॥

जं गो-भू-कन्ना-कूडसक्खि-नासावहार-अलियस्स ।
दुविह-तिविहेण वज्जणमणुव्वयं बिंति तं बीयं ॥३५७॥

जं चोरंकारकरस्स खत्त-खणणाइणा पर-धणस्स ।
दुविह-तिविहेण वज्जणमणुव्वयं बिंति तं तइयं ॥३५८॥

जं निय-निय-भंगेहिं दिव्वाणं माणुसाण तिरियाणं ।
परदाराणं विरमणमणुव्वयं बेंति तं तुरियं ॥३५९॥

दुपय-चउप्पय-धण-धन्न-[९३]खेत्त-वत्थ-रुप्प-कणय-कुप्पाण ।
जं परिमाणं तं पुण अणुव्वयं पंचमं बेंति ॥३६०॥

दससु दिसासुं जं सयल-सत्त-संताण-ताण-कयमइणो ।
गमण-परिमाण-करणं गुणव्वयं बेंति तं पढमं ॥३६१॥

उवभोगाणं विलयाईयाण भोगाणं भोयणाईणं ।
जं परिमाण-विहाणं गुणव्वयं बिंति तं बीयं ॥३६२॥

अवझाण-हिंसदाणाऽसुहो वएसऽप्पसायरूवे जं ।
विरमणमणत्थदंडे गुणव्वयं बिंति तं तईयं ॥३६३॥

जं समणस्स व सावज्जजोग-वज्जणमरत्तदुट्ठस्स ।
तं समभाव-सरूवं पढमं सिक्खावयं बिंति ॥३६४॥

सव्व-वयाणं संखेव-विरयणं जं दिणे निसाए वा ।
देसावगसियं तं बीयं सिक्खावयं बिंति ॥३६५॥

वावारा-ऽऽहारा-ऽबंभ-देहसक्कार-चायरूवं जं ।
पव्वेसु पोसहं तं तइयं सिक्खावयं बिंति ॥३६६॥

भोयण-वत्थाइहिं साहूणं संविभागकरणं जं ।
तं अतिहिसंविभागं तुरियं सिक्खावयं बिंति ॥३६७॥

एत्थ य गिहत्थ-धम्मे वए वए पंच पंच अईयारा ।
मोक्खत्थमुज्झएणं परिहरियव्वा पयत्तेणं ॥३६८॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सव्वविरइस्स रूवस्स साहुधम्मस्स जं अवेक्खाए ।
देसेण एत्थ विरई अओ इमा देसविरइ त्ति ॥३६९॥

एसा य साहुधम्म-प्पासायारोहणाऽसमत्थेण ।
सेवेयव्वा सड्ढेण पढम-सोवाण-सारिच्छा ॥३७०॥

पुव्व-परिकम्मिया चित्तकम्म-जोग्गा जहा भवे वित्ती ।
एयाए कयब्भासो मुणिधम्म-खमो तहा होइ ॥३७१॥

भणियं च—

एसा य देसविरई सेविज्जइ सव्वविरइ-कज्जेण ।
पायमिमीए परिकम्मियाण ईयरा थिरा होइ ॥३७२॥

देसविरई-पवन्नेण विरय-विवसत्तमप्पणो मुणिउं ।
कायव्वो विबुहेणं बहुमाणो समणधम्मम्मि ॥३७३॥

धन्ना ते च्चिय मुणिणो बालत्ते वि हु पवन्न-सामन्ना ।
आजम्मं दुव्वहमुव्वहंति जे बंभचेरभरं ॥३७४॥

कइया संविग्गाणं गीयत्थाणं गुरूण पयमूले ।
कय-सव्व-संग-चाओ चारित्त-धुरं धरिस्सामि ॥३७५॥

वज्जिय-कुसमय-कुसुमो जिणमय-मयरंद-पाण-तल्लिच्छो ।
कइया गुरु-पयकमले छप्पय-लीलं विलंबिस्सं ॥३७६॥

पंचसमिओ तिगुत्तो जिइंदिओ जिय-परीसह-कसाओ ।
[१२]पवणो व्व अपडिबद्धो कइया सव्वत्थ विहरिस्सं ॥३७७॥

'कत्थाऽऽगओ सि ? अज्ज वि सिज्झइ रे मुंड ! वच्च घर-बाहिं ।
इय धिक्कारिज्जंतो कइया भिक्खं भमिस्सामि ॥३७८॥

कइया पडिम-पवन्नो थंभो व्व थिरो पलंब-भुयजुयलो ।
वसह-परिघट्टणं नयर-चच्चरे हं सहिस्सामि ॥३७९॥

इच्चाइ मणोरह-कुसुम-मालियालंकिओ गिहत्थो वि ।
सुहगो व्व कडक्खिज्जइ कमेण चारित्त-लच्छीए ॥३८०॥

इच्चाइ धम्म-कहं कुणमाणो मुणिंदो पुट्ठो नरिंदेण— भयवं ! सुदंसणादेवी केण सुन्नाऽरन्ने पक्खित्ता ? किं वा विरोह-कारणं तस्स ? । गुरुणा भणियं— सोम ! सुण ॥

Jain Education International 	For Private & Personal Use Only 	www.jainelibrary.org

पाठांतर :

१. भूभागाए **ल.** ॥ २. चेय **रा. दे.** ३ लज्जावसेण नूणं **दे. पा.** ॥ ४. चय सुयण ! खेय० **दे. पा.** ५. ०दिसवलयं **दे. पा.** ॥ ६. काउसग्गं **ल. रा.** ॥ ७. ०याण भवंति **ल. रा.** ॥ ८. मेऽणुग्गहं **दे. पा.** ॥ ९. भयत्तसंताण० **दे. पा.** ॥ १०. ०परमिट्ठि० **दे. पा.** ॥ ११. जीवा खुद्दो० **ल. रा.** ॥ १२. रायसुयाए **पा.** ॥ १३. जं बाला सहस **ल. रा.** ॥ १४. तिहुयणिसिरि समप्पियं व **दे. पा.** ॥ १५. ०रंबधुवियंवर० **दे. पा.** १६. ०फुल्लंधयाराव० **ल. रा.** ॥ १७. पिसंडि० **दे. पा.** ॥ १८. सयललोयणा० **दे. पा.** ॥ १९. ०मुवागए **दे. पा.** ॥ २०. तरइ **ल. रा.** ॥ २१. ०वयणयं, पलो० **दे. पा.** ॥ २२. ०मणसुमरिउं **ल. रा.** ॥ २३. अन्नदिणे पडिहारी तीए निवेयणट्ठ पट्ठविया । **ल. रा.** ॥ २४. मइच्छि **रा.** ॥ २५. पेक्खिउं **पा.** ॥ २६. न इमो अज० **दे. पा.** ॥ २७. गुरुयाणु० **दे. पा.** ॥ २८. भागचुक्का **दे. पा.** २९. इओ वि० **ल. रा.** ॥ ३०. इत्थ **ल. रा.** ॥ ३१. विज्जमाणा **ल.** ॥ ३२. उप्पाईऊण **ल.** ॥ ३३. पलोएऊण **ल. रा.** ॥ ३४. ०सवणमित्तेण **ल. रा.** ॥ ३५. सव्रीडिता **ल.** ॥ ३६. इत्तियं **ल. रा.** ॥ ३७. सुकओदएण **दे. पा. रा.** ॥ ३८. संपयं **ल.** ॥ ३९. ०तलमागओ **दे. पा.** ॥ ४०. पवत्तो **दे. पा.** ॥ ४१. गवेसिउं **दे. पा.** ॥ ४२. विसेण को **ल. रा.** ॥ ४३. पिच्छह **ल. रा.** ॥ ४४. पिच्छंति **दे. पा.** ॥ ४५. किमेत्तिएण **दे. पा.** ॥ ४६. ०निवारणं **ल. रा.** ॥ ४७. ०मित्त० **ल. रा.** ॥ ४८. नीहरिओ **ला.** ॥ ४९. ०रामारूढो **दे. पा.** ॥ ५०. ०सीहासणे **दे. पा.** ॥ ५१. ०महापहाणाइ **ल. रा.** ॥ ५२. अवहडा **ल. रा.** ॥ ५३. ०निहण० **ल. रा.** ॥ ५४. गुणगु० **ल. रा.** ॥ ५५. ०हिं समं समा० **दे. पा.** ॥ ५६. ०गोयर गया **दे. पा.** ॥ ५७. तओ ए० **दे. पा.** ॥ ५८. सुच्चा **दे. पा.** ॥ ५९. ०धयवडघाएहि **रा.** ॥ ६०. सिंहासणे **दे. पा.** ॥ ६१. ०विसप्पमाणररसेण से० **ल. रा.** ॥ ६२. तीइ **ल. रा.** ॥ ६३. जणा सेसा **दे. रा.** ॥ ६४. ०रस पुव्वलसिएण **ल. रा.** ॥ ६५. ०पहूयतेओ **दे. पा.** ॥ ६६. ० पेल्लण० **दे. पा.** ॥ ६७. ०जगजीवहिअओ **ल.** ॥ ६८. गयरागरोससमणा **रा. पा.** ॥ ६९. धम्मो खलु दुहा **ल.** । ७०. कम्मद्दुम-संड-विहंडणेक्क-धारुक्कड-कुठारो **ल. रा.** ॥ ७१. ०व्वयाइं च हुंति तिन्नेव । **ल. रा.** ॥ ७२. -खेत्त-घर-रुप्प- **ल. रा.** ॥ ७३. ०णो व्वडप्पडि० **रा.** ॥

• • •

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चउत्थो पत्थावो

इह जंबुदीव-भरहे मज्झिम-खंडम्मि कुसउरं नयरं ।
जत्थ रणो सद्दो च्चिय मयणो च्चिय वुच्चए मारो ॥३८१॥

तत्थ जिण-चलण-भत्तो वर-सत्तो साहु-सेवणासत्तो ।
नीसेस-दोस-चत्तो दत्तो नामेण आसि वणी ॥३८२॥

तस्स य भज्जा पउम त्ति बाल-वालुंकि-वाल-कुडिल-मणा ।
सो तीए सह विसए सेवंतो गमइ दियहाइं ॥३८३॥

तीए न अत्थि पुत्तो दुम्मइ हिययम्मि तेण सो दत्तो ।
तत्तो मायंदिपुरी-वत्थव्वय-माणिभद्दस्स ॥३८४॥

धूयं निरुवम-रूवेण तिलयभूयं समत्त-रमणीणं ।
जिण-धम्म-वासिय-मणं भद्दं नामेण परिणेइ ॥३८५॥

सा विसय-वासणा-संगया वि विसएसु न दढमणुरत्ता ।
परलोय-तत्ति-वज्जिय-मणा वि परलोय-तत्ति-परा ॥३८६॥

कालेण समुप्पन्नो भद्दाए सयल-गुण-जुओ पुत्तो ।
तह वि पउमाइ पणयं बहुययरं दंसए दत्तो ॥३८७॥

सा उण अतित्त-चित्ता भद्दाए उवरि मच्छरं वहइ ।
सित्ता वि हु दुद्धेणं कडुय च्चिय तुंबिणी जम्हा ॥३८८॥

सुभगो त्ति वहइ गव्वं एक्को च्चिय मच्छरो जए सयले ।
हिययाओ खणं पि न जो ओसरइ समग्ग-रमणीणं ॥३८९॥

चिंतेइ इमं पउमा संपइ मह देइ पिययमो माणं ।
सुय-जणणि त्ति पमाणं कमेण होही तह वि भद्दा ॥३९०॥

ता जह न होइ एसा पमाणभूया तहा करिस्सामि ।
तत्तो कवडपहाणा रहसि परिव्वाईया तीए ॥३९१॥

सम्माण-दाण-पुव्वं भणिया भयवई ! इमं उवाएण ।
मह 'हियय-सल्ल-तुल्लं घराओ निस्सारसु सवत्तिं ॥३९२॥

तीए वि हु पडिवन्नं तव्वयणं दव्व-लोह-विवसाए ।
अविवेक-विहुर-हियया किमकज्जं जं न कुव्वंति ? ॥३९३॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अह दत्तस्सुप्पन्नो दाहजरो पुव्व-कम्म-दोसेण ।
न नियत्तए कहं पि हु सयण-गणो आउलीहुओ ।।३९४।।

पव्वाइयाइ पासे पुच्छइ किं-संभवो इमस्स जरो ?।
कह वा नियत्तिही ? कहसु भयवइ ! अणुग्गहं काउं ।।३९५।।

सा वि हु पवंच-निउणा परमक्खर-सुमरणं च काऊण ।
जंपइ न रूसियव्वं सव्वमिणं देवया कहइ ।।३९६।।

एयस्स लहुय-भज्जा पर-पुरिस-पसंग-लालसा-लुद्धा ।
निद्धम्मा कवडपरा निक्करुणा चिंतए एवं ।।३९७।।

सच्छंदमणिच्छिय-सुक्ख-विग्घभूयं हणामि[२] दत्तमिणं ।
सुय-जणणि त्ति अहं चिय पच्छा घर-सामिणी होहं ।।३९८।।

निस्सारिउं सवत्तिं भुंजिस्सं हियय-वंछिए भोए ।
तत्तो कत्तो वि इमीइ सिक्खिऊणं कयं जंतं ।।३९९।।

तव्वसओ दुव्विसहा जाया एयस्स दाहजर-पीडा ।
जइ पत्तियह न एयं तत्तो दंसेमि पच्चक्खं ।।४००।।

[३]पव्वाइयाइ नीसेस-कवड-कुसलाइ[४] चुल्लि-पासम्मि ।
सयमेव पुव्व-निक्खयमुक्खणिउं दंसियं जंतं ।।४०१।।

सयणेहिं इमा भणिया भयवइ ! पउणं करेसु दत्तमिणं ।
पव्वाइयाए[१] वुत्तं जं तुब्भे भणह तं काहं ।।४०२।।

नवरं एसा भद्दा वसइ घरे जाव ताव न हु दत्तो ।
पउण-सरीरो होही ता निस्सारह इमं सिग्घं ।।४०३।।

तो पावे ! पइघाइणि ! मा दंससु नियय-वयणमुज्झ घरं ।
इय गरहिऊण बहुसो सयणेहिं घराओ निच्छूढा ।।४०४।।

पत्ता पुरस्स बाहिं बाह-जलाउलिय-लोयणा भद्दा ।
पइ-पुत्त-विरह-हुयवह-जालावलि-डज्झमाण-मणा ।।४०५।।

जीव ! तए इह-जम्मे तहाविहं किं पि दुक्कयं न कयं ।।
निक्कारणं च कस्सइ न को वि उप्पायए दुक्खं ।।४०६।।

ता पुव्व-भवारोविय-दुक्कम्म-दुमस्स फलमिणं नूणं ।
एवं विचिंतयंती जा चिट्ठइ चूय-तरु-मूले ।।४०७।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दिट्ठा [8]मायंदी-पत्थिएण धणधम्म-सत्थवाहेण ।
महुर-वयणेहिं पुट्ठा का सि तुमं कत्थ वा चलिया ? ॥४०८॥
रोयंतीए तीए वुत्तं पडिकूल-विहि-निओगेण ।
चलिया [9]वणिय-सुया हं [8]मायंदिपुरीइ पिउ-पासे ॥४०९॥
बहिणि त्ति तेण पडिवज्जिऊण भणिया तुमं पराणेमि ।
खेमेण तत्थ तत्तो तेण समं पत्थिया भद्दा ॥४१०॥
अह अडवीए मज्झे निसाइ आवासियस्स सत्थस्स ।
सुत्ता पयाण-समए गिलिया भद्दा [9]अयगरेण ॥४११॥
एयं अपिच्छमाणो सत्थवई आउलत्तणं पत्तो ।
जा सव्वत्थ गवेसइ [10]अयगर-मग्गं तओ नियइ ॥४१२॥
वच्चंतो तम्मग्गेण पेच्छए [11]अयगरं गरुय-कायं ।
आहणइ लेट्ठुणा तं सो भद्दं झत्ति उग्गिरइ ॥४१३॥
जीवंतिं तं [12]घेत्तुं मिलिओ सत्थस्स अग्गओ जाइ ।
बीय-रयणीए[13] सत्थे जणस्स निद्दा-पवन्नस्स ॥४१४॥
हण हण [14]हण त्ति भणिरा पडिया पहरण-भयंकरा चोरा ।
तेहि समं सत्थवई सपरियरो जुज्झिउं लग्गो ॥४१५॥
घाएहिं [15]पाडिओ सो बद्धो सत्थो य लूडिओ सव्वो ।
गहिया अणेहिं भद्दा नेऊण समप्पिया पहुणो ॥४१६॥
तं दट्ठुं सो तुट्ठो चिंतइ चित्तेण अणंग-विहुरंगो ।
रइ-रंभ-प्पमुहाओ वहंति दासित्तणमिमीए ॥४१७॥
भद्दाए मणहरणत्तणेण मयणस्स दुज्जयत्तणओ ।
अमुणिय-कज्ज-विवागेण चोर-नाहेण सा भणिया ॥४१८॥
सुंदरि ! पसीय पसयच्छि ! पेच्छ मं पेम्म-पुण्ण-नयणेहिं ।
पडिवज्जसु मं दईय-सुखं विलससु सुरवहु व्व ॥४१९॥
मह भूय-पंजर-गया सेवंती विसय-सुक्खमक्खंडं ।
मा बीह कयंताओ वि किं पुण सामन्न-मणुयाओ ? ॥४२०॥
चिंतइ मणम्मि भद्दा मुत्ताहल-थूल-बाह-बिंदूहिं ।
सोयानल-पज्जलियं निय-हिययं निव्ववंति व्व ॥४२१॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हा ! दिव्व दुट्ठ ! तुमए अलिय-कलंको सको वि मे दिन्नो ।
निव्वासिया घराओ जत्तो धिक्कार-पुव्वमहं ॥४२२॥

पत्ता पइ-पुत्ताणं विओगमडवीइ अयगरग्गसणं ।
धणधम्मस्स य पडिवन्न-भाउणो बंधणाइ दुहं ॥४२३॥

अज्ज वि तुमं न तित्तो मह दुसहं दुक्खमित्तियं दाउं ।
सील-रयणं पि अवहरिउमिच्छसे तं पुण न जुत्तं ॥४२४॥

अवहरसु वरं जीयं महंत-संताव-कुलहरं मज्झ ।
रक्खेसु सील-रयणं दोगच्च-विणासणं एक्कं ॥४२५॥ जओ—

आणं ताण कुणंति जोडिय-करा दास व्व सव्वे सुरा,
मायंगाऽहि-जलऽग्गि-सीह-पमुहा वट्टंति ताणं वसे ।
होज्जा ताण कुओ वि नो परिभवो सग्गाप[१८]वग्गस्सिरी,
ताणं पाणितलं [१९]उवेइ विमलं सीलं न लुंपंति जे ॥४२६॥

इय चिंतंती बाला विसन्न-चित्ता न देइ पडिवयणं ।
चोराहिवेण तत्तो समप्पिया नियय-जणणीए ॥४२७॥

भणिया अणेण जणणी पसाइयव्वा तहा इमा अंब ! ।
पडिवज्जए जहा मं दढाणुराएण हरिणच्छी ॥४२८॥

तीए वि इमा भणिया भद्दे ! पत्तासि भत्तुणा विरहं ।
एत्थंतरम्मि छीयं केण वि तो चिंतियमिमीए ॥४२९॥

नूणं न मज्झ विरहो पइणा होहि त्ति तो सउण-गंठी ।
वत्थंचलम्मि [१८]बद्धा भद्दाए विहिय-हरिसाए ॥४३०॥

ता संपइ पडिवज्जसु भत्तारं मज्झ नंदणं एयं ।
एयम्मि[१९] अणुकूले समग्ग-सुह-भायणं होसि ॥४३१॥

एयम्मि उ पडिकूले निरप्पणो पाण-संसओ तुज्झ ।
एवं पन्नविया वि हु न जाव पडिवज्जए किं पि ॥४३२॥

तावागओ करसमुप्पाडिऊण हंतुमुज्जओ चोरवई जाव करप्पहारं न देइ ताव अहासन्निहियाए गुण-पक्खवाइणीए देवयाए मुच्छा-निमीलियच्छो पाडिओ धस त्ति [२०]धरणियले । आउलीहूया तज्जणणी, विसन्नो परियणो, कया सिसिरोवयारा, न जाओ को वि विसेसो, ठिओ कट्ठं व निच्चिट्ठो सो, उट्ठिया गयणंगणे वाणी— जइ इमीए महासईए

चलण-पक्खालण-जलेण सिच्चइ इमो ता पवज्जए चेयन्नं, अन्नहा मरइ त्ति। तज्जणणीए पक्खालिया भद्दाए चलणा, सित्तो तेण जलेण नंदणो, उम्मीलिय-लोयणो पवन्नो चेयन्नं। जणणीए कहिय-वुत्तंतो भद्दाए चलणेसु लग्गिऊण जंपिउं पवत्तो—

खमसु महासइ ! एक्कं अवराहं मज्झ दीण-वयणस्स।
दिट्ठो तुज्झ पभावो पुणो वि एवं न काहामि ॥४३३॥

अओ परं मे तुमं भइणी ता कहसु किं करेमि ?। तीए वुत्तं— पडिवन्न-बंधुणो सत्थवाहस्स मं अप्पेसु। विगय-बंधणो आणिओ सत्थवाहो, भणिओ चोरवइणा— जहा इमा ते बहिणी तहा ममावि। कहिओ निय-वुत्तंतो। ता गिण्हह इमं महासइं निय-विहवं च। सम्माणिऊण विसज्जिओ सो, चलिओ भद्दा-समेओ।

इओ य जाओ पउण-सरीरो दत्तो। पुट्ठो अणेण परियणो— कहिं भद्द ? त्ति। पव्वाइया-वुत्तंत-कहण-पुव्वं कहियं तेण निव्वासिय त्ति। अणेण वुत्तं— अजुत्तं कयं। जओ—

अमयाओ वि होज्ज विसं जलण-कणे ससहरो वि मिल्हेज्ज[21]।
तीए महासईए दुच्चरियमिणं न संभवइ ॥४३४॥

एत्थंतरे डक्का उक्कड-विसेण सप्पेण पउमा मुक्का जीविएण। संजाय-पच्छायावाए पव्वाइयाए वुत्तो दत्तो—

"पावु अपावह माणुसह जो चिंतेइ दुरप्पु।
इह लोइ वि तं तसु पडइ जिंव तुह भज्जह सप्पु" ॥४३५॥

दत्तेण भणियं— कहमेयं ति ?। कहिओ तीए जहट्ठिओ सव्व-वुत्तंतो। 'भद्दं घेत्तूण गेहे पविसामि' त्ति कयपइन्नो निग्गओ दत्तो। मिलिओ धणधम्मस्स। तेणावि [22]अयगर-चोराहिव-वुत्तंत-कहण-पुव्वं महासइ त्ति परंसिऊण समप्पिया भद्दा। घेत्तूण तं पत्तो दत्तो कुसउरं, दोवि सविसेस-धम्मपराणि परिपालिऊण जीवियं पज्जंते समाहिणा कालं काऊण सोहम्म-देवलोए देवत्तं पत्ताणि।

तत्तो चूओ समाणो दत्त-जीवो महाराय ! तुमं समुप्पन्नो। भद्दा-जीवो पुण सुदंसणादेवी जाया। जा उण पउमा सा अट्टज्झाणोवगया मरिऊण समुप्पन्ना नाणाविहासु हीण-तिरिक्ख-जोणीसु। तत्थ वि

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तितिक्खिऊण तिक्ख-दुक्ख-लक्खाइं कह वि पत्ता सालूराभिहाणग्गामे दालिद्दोवद्दुयस्स दाणाभिहाणस्स कुडुंबिणो मंदिरे दोहग्ग-कलुसिय-मित्थीभावं, जोव्वणारूढा परिणीय-मित्ता चेव परिचत्ता भत्तुणा, [23]वेरग्गोवगया पवन्ना तावसी-वयं, काऊण कट्ठाणुट्ठाणं मया समाणी समुप्पन्ना खुद्दवंतरी, सरोवरासन्न-रन्न-प्पएसे सुदंसणं देविं दट्ठूण कीलमाणीं संजाओ तीए पुव्वभवब्भासवसेण मच्छरो । तओ उक्खिविऊण पक्खित्ता तीए भीमाडवीए देवी । महाराय ! तुमं पि तुरंगमेण अवहराविऊण नीओ पउमसरासन्नं रन्नं[24] । निरुवमंगचंगत्तण-गुणावलोयण-परव्वसाए विसय-सुह-सेवणत्थं च पत्थिओ तुमं, न पडिवन्नं तए तव्वयणं । ता महाराय ! धन्नो तुमं जस्सेरिसी परित्थि-पत्थणा परम्मुहा सेमुही ।

एएण कारणेणं भूय-पिसायाइ-वंतर-गणेण ।
खुद्देण वि विद्दविउं न सक्किओ तुममरन्नम्मि ॥४३६॥

किं च विसेस-महब्भुदय-लाभ-संजाय-चित्त-संतोसो ।
रज्ज-परिब्भट्ठो वि हु पुणो वि पत्तो सि रज्जसिरिं ॥४३७॥

देवी सुदंसणा वि हु सलाहणिज्जा न कस्स जियलोए ? ।
जीए तणं व गणिओ पत्थिंतो पत्थिवो सीहो ॥४३८॥

जं पालियमकलंकं सीलं सयलोवसग्ग-निग्गहणं ।
तेण इमीए जाया मणवंछिय-[25]सोक्ख-संपत्ती ॥४३९॥

इय एकस्स वि सीलव्वयस्स मुणिउं अणप्प-माहप्पं ।
सेस-वएसु वि जत्तो कायव्वो कुसल-कामेण ॥४४०॥

अह पुव्व-भवं सोउं दोहिं वि संजाय-जाइसरणेहिं ।
सिरि-विजयसेण-रन्ना देवीए सुदंसणाए य ॥४४१॥

भणियं भयवं ! तुब्भेहिं अक्खियं जं इमं तयं सच्चं ।
कर-कमल-कलिय-मुत्ताहलं व जायं पयडमम्हं ॥४४२॥

एत्थंतरम्मि भणियं संविग्गमणेण अवसरं लहिउं ।
मणिचूड-खेयरेणं भयवं ! न विरुद्ध-वित्तीए ॥४४३॥

वट्टियपुव्वा एसा पुव्व-भवम्मि वि सुदंसणादेवी ।
एइए वंतरीए तो से अनिमित्तओ कोवो ॥४४४॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तस्स वि इमो विवागो जे उण अम्हारिसा विसय-गिद्धा ।
विप्पिय-करणेण परस्स कोवमुप्पाययंति सया ॥४४५॥

ताण गई का होहि त्ति जइ परमिणं मुणंति मुणिनाहा ।
ता भीम-भव-समुब्भव-विडंबणा-वुन्न-हिययस्स ॥४४६॥

पहु ! तुम्ह चलण-जुयलं मुत्तुं अन्नं न अत्थि सरणं मे ।
तो अत्थि जोग्गया जइ भयवं ! ता देहि मह दिक्खं ॥४४७॥

तो दिक्खिओ गुरूहिं मणिचूडो भव-विरत्त-चित्तो सो ।
गरहंतो गुरु-सक्खं पुणो पुणो नियय-दुच्चरियं ॥४४८॥

अह विजयसेण-राएण जंपियं गुरुय-कम्मणो अम्हे ।
अज्ज वि संसार-महन्नवम्मि भमियव्वमम्हेहिं ॥४४९॥

गुरुणो तरंड-तुल्ले लद्धुं जाणंतया वि जिण-धम्मं ।
विसय-परव्वस-हियया न संजमं जे पवज्जामो ॥४५०॥

एसो उण मणिचूडो धन्नो कयउन्नओ महासत्तो ।
तुम्ह पयकमल-मूले पडिवन्ना जेण जिण-दिक्खा ॥४५१॥

भयवं ! अम्ह वि वियरसु सावग-धम्मं अणुग्गहं काउं ।
तो गुरुणा नरवइणो देवीए सुदंसणाए य ॥४५२॥

आरोवियं जिणागम-विहिणा सम्मत्तमुत्तमं पढमं ।
सावय-वयाइं बारस पच्छा दोण्हं पि दिन्नाइं ॥४५३॥

तो नमिऊण मुणिंदं राया संजाय-तिजय-रज्जो व्व ।
कयकिच्चं अप्पाणं मन्नंतो निय-गिहं पत्तो ॥४५४॥

ठाणे ठाणे जिण-मंदिराइं कंचणमयाइं कारंतो ।
तेसु ठवंतो मणि-निम्मियाओ सव्वन्नु-पडिमाओ ॥४५५॥

ताणं पुण कुणमाणो तिसंझमट्ठप्पयार-पूयाओ ।
सव्वत्थ वित्थरंतो जिण-रहजत्ताओ जत्तेण ॥४५६॥

सेवंतो मुणि-निवहं तयंतिए जिण-मयं निसामंतो ।
सामाइयमणुदियहं गेण्हंतो पोसहं पव्वे ॥४५७॥

इय जिण-धम्मं राया करेइ बाढं तमेव देवी वि ।
जम्हा कुलंगणाओ पइ-मग्गं चेव सेवंति ॥४५८॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एत्तो य समागओ [२६]सरय-कालो विरह-वेगु व्व जो भूरि सासावहो, रूववंतो व्व सोहंत-निम्मल-नहो, पुन्न-पुंजो व्व वड्ढंत-कमलोदओ, कमल-संडो व्व सव्वत्थ-सच्छप्पओ ।

जहिं पक्क निरंतर सालिखेत्ता, ढिक्कंति चउद्दिसि वसह दित्ता ।
सत्तच्छय-परिमल-वाउलाइं, वियरंति वणंतरि अलिउलाइं ॥४५९॥

गोवीयण दिंति [२७]पहिट्ठ रास, दीसंति दिसासु सहास कास ।
दीवूसव-इंदमहाइ पवर मह, महिइं हुंति कय-हरिस-पसर ॥४६०॥

नं चंडकिरण-किरणोह-तत्त सरवर धरंति सयवत्त-छत्त ।
धवलऽब्भ कहंति जणस्स एउ, निय-रिद्धिहिं दाणु विसुद्धि देउ ॥४६१॥

संपत्त-अहिय-जुण्हा-पवाहु, निव्ववइ महीयलु रयणिनाहु ।
जो अहव होइ विमलस्सहावु, सो कुणइ न नूण परोवयावु ॥४६२॥

मयमत्त वणंतरि तरुण दंति, भंजंत महद्दुम संचरंति ।
मलिणाहं रिद्धि अहवा अवस्सु, संपज्जइ दुह-कारणु परस्सु ॥४६३॥

लद्धुं गुरु-वित्थारं पत्ताओ तणुत्तणं गिरिनईओ ।
महिहर-समुब्भवाणं रिद्धीण कहंति अथिरत्तं ॥४६४॥

कलुसं ति जं न पीयं पच्छा सच्छं जणेण पिज्जंतं ।
तं पि जलं कहइ इमं सव्वो सच्छो पिओ होइ ॥४६५॥

वासासु आसि हरिसो सिहीण हंसाण संपयं जाओ ।
सासूए के वि दिणा के वि वहूए इमं सच्चं ॥४६६॥

तडिगुण-तंती-परिगय-सुरिंदधणु-पिंजणेण नह-भवणे ।
धवलब्भ-रूय-पडलं सरय-सिरी पिंजइ व्व दढं ॥४६७॥

तम्मि सरय-काले आगंतूण अत्थाण-मंडवे निसन्नो विन्नत्तो विजयसेण-राओ [२८]उज्जाणपालेण । जहा—

वर-सरि-पुलिण-नियंब-बिंब पंकय-वयण,
सारस-मिहुण वणथलि हंसावलि-दसण ।
सरय-सिरी तुह नरवर ! दंसणमभिलसइ,
पइ अनियंत-समीरिण दीहं नीससइ ॥४६८॥

ता गंतु उज्जाणे एसा निय-दंसणामयरसेण ।
[२९]आसासियउ वराई जा अज्ज वि नो अइक्कमइ ॥४६९॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एयं सोऊण रन्ना नायं, जहा— संपयं पयट्टो सरय-समओ त्ति। तओ आणत्तो नयरलोओ जहा— उज्जाणजत्ता कायव्व त्ति। सयं च संचलिओ गुरु-[30]विभूईए। तं जहा—

सुरवहु-समाण-कामिणि-कर-चालिय-चारु-चामर-समूहो।
धरिय-धवलायवत्तो मयंध-गंधगय-खंधगओ ॥४७०॥

कणयमय-चलिय-रहचक्क-घणघणाराव-रुद्ध-दिसियक्को।
वियरंत-मत्त-मयगल-मयजल-संसित्त-महिवीढो ॥४७१॥

नाणाविह-सत्थ-विहत्थ-हत्थ-पाइक्क-चक्क-परियरिओ।
हय-लक्ख-खुरुक्खय-खोणि-रेणु-नियरेण रुद्ध-नहो ॥४७२॥

इय चउरंग-बलेणं अवरोहेणं च परिगओ राया।
सविलासं वच्चंतो पत्तो कुसुमागरुज्जाणं ॥४७३॥

जत्थ—

गायंति व्व तरुवरा राय-समागमण-जाय-गुरु-तोसा।
मयरंद-पाण-परवस-भमंत-भमरावलि-रवेण ॥४७४॥

नच्चंति व्व समीरण-हल्लंत-महल्ल-पल्लव-करेहिं।
पहसंति व्व विसट्टंत-धवल-केयइ-तरु-दलेहिं ॥४७५॥

जंबीरंब-कयंब-जंबु-कयली-कप्पूर-पूगीफला,
खज्जूरऽज्जुण-सज्ज-मल्लइ-समी-नग्गोह-सोहंजणा।
कक्कोली-कुवली-लवंग-लवली-नोमालिया-मालई-
सग्गाऽसोय-तमाल-ताल-तिलया रेहंति निद्धा दुमा ॥४७६॥

तत्थ एवंविहम्मि उज्जाणे सन्निहियाए सुदंसणादेवीए [31]विजयसेणो गओ अणिमिसाए दिट्ठीए पिच्छमाणो वणलच्छिं कोउगऽक्खित्त-परियण-देसिज्जमाण-मग्गो सायरं— पसीय देव! पिच्छ, इओ विरायंति पफुल्ल-कमलसंड-मंडियाइं सच्छ-सलिल-संपुन्नाइं महासरोवराइं, इओ कीलंति सहरिस-सहयरी-समप्पिज्जमाण-मुणालदलाइं हंस-जुयलाइं, इओ संचरंति कुरुल-सद्द-संदीविज्जमाण-माणिणी-मयण-पसराइं सारस-मिहुणाइं, इओ सेविज्जंति कुसुमगंध-लुद्ध-फुल्लंधय-धोरणीहिं सत्तच्छय-वणाइं, इओ कवलिज्जंति कीर-उलेण विउल-नियंब-भर-मंथरंगीणं तुंग-थोर-थणमंडलामिलंत-करतल-तालाणं तरलतरच्छं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पेच्छिरीणं पि पामरीणं सालिमंजरीओ, इओ गिज्जंति सालिखेत्त-संरक्खणुज्जय-गोवीजणेण निच्च-निच्चलासन्न-कुरंगकुल-सुव्वमाणाइं महाराय-चरियाइं । एवं कंचुइणा निदंसिज्जमाण-सरयलच्छि-विच्छड्डो विविह-काणणंतरेसु वियरइ सहरिसं राया ताव सुदंसणादेवीए दिट्ठा विसिट्ठ-नेवच्छ-विच्छाईकया सेस-रमणी-गणा रमणीयत्तण-तिणीकयाऽणंगघरणि-रूवाहिं समवयाहिं भिन्न-भिन्न-नरविमाणारूढाहिं अणुगम्ममाणा रायहंसि व्व कलहंसियाहिं, चंदलेह व्व ताराहिं, कप्पलय व्व चंपय-लयाहिं, नरविमाणगया महया रिद्धि-समुदएण पवर-महिला । विम्हयवसुप्फुल्ल-लोयणाए अणाए पुट्ठो कंचुई— भद्द ! का एसा सीय व्व महानईणं, चिंतामणि व्व मणीणं, सद्दविज्ज व्व सेस-विज्जाणं, [32]सहयार-मंजरि व्व सेस-तरु-मंजरीणं, मालइ व्व कुसुमजाईणं, धम्मकह व्व कहाणं, अब्भमु व्व करिणीणं, अवर-रमणीणं रूव-सोहग्ग-सोहा[33] -गव्वमवहरंती पुरओ परिसक्कइ ? । काओ वा इमाओ निरग्गल-निसग्ग-सोहग्गाओ इमीए अणुमग्ग-लग्गाओ वियरंति ? ति ।

तेण वुत्तं— 'देवि ! अत्थि एत्थ-वत्थव्वओ परमत्थ-संपायण[34]-समारद्ध-रित्थव्वओ, बंधव-कमल-दिवायरो, गरुय-गुण-रयण-सायरो, समग्ग-मग्गण-सिहंडि-मंडल-मणुल्लास-वारिवाहो नंदिसेणो नाम सत्थवाहो । तस्सेसा विणिद्दारविंद-सुंदर-वयणा, लीलुप्पल-दल-नयणा, निय-दंसणामय-समुज्जीविय-मयणा, महग्घ-रयणालंकार-किरण-करंबिय-गयणा, इयर-विलया-विलक्खणा सलक्खणा पणइणी । तीए य सिणेह-सब्भाव-गब्भं भत्तुणा समं विसयसुहं सेवमाणीए सुरकुमाराणुगारिणो, सयल-कलाकलाव-कोसल्लधारिणो जाया दुवे जण-मणाणंदणा नंदणा । तेहिं च परिणीयाओ चत्तारि चत्तारि समाण-कुल-सीलसालिणीओ, गुरुयण-चलण-तामरसालिणीओ, सयल-जियलोय-लोयणच्छरियभूयाओ वणिय-धूयाओ ।'

इय कंचुइणा कहियं सोऊण इमं सुदंसणा देवी ।
वाहजल-भरिय-नयणा ससोग-वयणा विसन्न-मणा ॥४७७॥

अइ-गुरु-निरवच्चत्तण-कलंक-दुसिय-तणू तणप्पायं ।
अप्पाणं गिच्छंती[35] जंपिउमेवं समाढत्ता ॥४७८॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

धन्नाओ कयत्थाओ महिलाओ ताओ जीवलोयम्मि ।
ताणं चेय[36] सुलद्धं नूणं माणुस्सयं जम्मं ॥४७९॥

निय-कुच्छि-पसूयाइं समम्मणुल्लावगाइं डिंभाइं ।
थण-दुद्ध-लुद्धयाइं लुलंति वच्छत्थले जाण ॥४८०॥

नव-कमल-कोमलेहिं करेहिं घेत्तूण ताणि धन्नाओ ।
ठविऊण निय-उच्छंगे चुंबंति मुहं अवच्चाणं ॥४८१॥

एक्का अहं अहन्ना विलक्खणा निग्गुणा अकयपुन्ना ।
एगस्स[37] वि नो जीए जायस्स पलोइयं वयणं ॥४८२॥ जओ—

लोयम्मि लहइ सोहं पुत्तवई जारिसं कुरूवा वि ।
लक्खंसेण वि कत्तो निरवच्चा तं सुरूवा वि ॥४८३॥

सोहग्गमुदग्गं रूवमणुवमं सुंदरो य सिंगारो ।
सुय-वज्जियाण सव्वं पि निप्फलं कास-कुसुमं व ॥४८४॥

विविह-मणि-कणय-भूसण-जुया वि जुवई विणा अवच्चेण ।
न विरायइ वल्लिर-पल्लवा वि वल्लि व्व फलहीणा ॥४८५॥

विसयाण विसदुम-सन्निहाण अमओवमं फलं [38]इक्कं ।
जं गुण-रयण-निहाणस्स होइ तणयस्स संपत्ती ॥४८६॥

एवं अवच्च-विसयं खेयं काउं सुदंसणादेवी ।
[39]सयमवि विवेय-मग्गे संठविउं कहवि निय-चित्तं ॥४८७॥

भणिउं पुणो पयट्टा धिद्धी मे मंतियं इमं सव्वं ।
पेच्छह मह केरिसयं भवाभिनंदित्तणं जायं ॥४८८॥

जाणिय-जिण-वयणाए विही-महामोह-विलसियं मज्झ ।
अहह अविवेयवसओ पम्हुट्ठमिणं मए सव्वं ॥४८९॥ जहा—

परलोए जीवाणं पुत्तेहिं न होइ कोइ साहारो ।
निय-सुकय-दुक्कयाइं जम्हा भुंजंति तत्थ गया ॥४९०॥

दोगच्च-[40]गत्त-पडिओ [41]सयंकय-कुकम्म-पेल्लिओ संतो ।
नित्थारिज्जइ जीवो न कोइ पुत्तेहिं परलोए ॥४९१॥

इह-लोए वि सुएहिं न तारिसो को वि होइ पडियारो ।
संतेहिं सुएहिं जओ कम्मवसा दुत्थिया के वि ॥४९२॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

के वि पुणो पुन्नवसा अवच्च-विरहे वि सुत्थिया हुंति ।
कूडाभिमाण-नडिओ सुय-कज्जे खिज्जए मूढो ॥४९३॥

सोऊण सव्वमेयं विचिंतियं विजयसेण-राएण ॥
उचियमिणं देवीए अवच्च-विसयम्मि जं खेओ ॥४९४॥

जओ—

निक्कवड-विक्कमे पुव्व-पुरिस-वंसप्परोह-[४३]मूलसमे ।
वेरि-कुल-कमल-मउलण-चंदे गुण-गण-कयाणंदे ॥४९५॥

पुत्तम्मि समारोविय-रज्जभरा धम्म-मग्ग-पडिवन्ना ।
इह परभवे य पावंती निव्वुइं के वि कयपुन्ना ॥४९६॥

इमं च दुल्लहं जओ, मम एत्तिय-काले वि पउरासु वि पणइणीसु न एक्कस्स वि कुलालंकरणस्स पुत्तस्स संपत्ती जाया । ता अच्छउ सेसं । [४४]एवं चिट्ठिए किं करेमि ? कं समाराहेमि ? कत्थ वच्चामि ? कस्स साहेमि ? को वा उवाओ ? त्ति खणं किंकायव्वयावमूढ-माणसो होऊण तक्कालमेव अंगीकय-सत्तभावो परिभाविउं [४५]पवत्तो—

परलोय-पवन्नाणं जइ वि सुएहिं न होइ साहारो ।
जम्हा मयाण उवरिं गओ वि न गओ दुहं कुणइ ॥४९७॥

[४६]तहवि हु पुव्व-नराहिव-संताणुच्छेय-दुक्खमक्खिवइ ।
मज्झ मणो पुव्व-नरिंद-रक्खियं खोणि-वलयं व ॥४९८॥

एत्थंतरे तरणि-मंडलमत्थगिरि-मत्थयत्थमालोईऊण समागओ स-भवणं राया । अणप्पसुओवाय-वियप्प-कप्पणा-परिगय-मणस्स रन्नो वोलीणा रयणी, जायाइं सिहंडि-कारंडव-चउर-चक्क-कीर-कुल-कोलाहलाउलाइं दिसामुहाइं, वियलंत-पहापसरो विच्छाईभूओ तारया-नियरो, पसरिया सिंदूर-पूर-सच्छहा सूर-सारहि-पहा, पहयाइं माणिणी-माण-[४८]निम्महणसूराइं पहाय-मंगलतूराइं । समुग्गओ कमेण कमलवण-निद्दलण-पब्बल-पहा-पसरो दिणयरो ।

[४७]तो उट्ठिऊण राया रयण-विणिम्मविय-वासभवणाओ[४८] ।
कय-पाभाइय-किच्चो, पहाण-परियण-परिक्खित्तो ॥४९९॥

अत्थाण-मंडव-तलं गंतूण अणेग-मणिगणाइन्ने ।
सूरो व्व पुव्व-पव्वय-सिहरे सिंहासणम्मि ठिओ ॥५००॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तत्तो ठियाओ चामरकराओ तरुणीओ उभय-पासेसु ।
सामंत-मंति-सुहडा निय-निय-ठाणेसु उवविट्ठा ॥५०१॥

तो विउल-पाहुडाइं पडिच्छमाणो पहाण-राईणं ।
कय-रज्ज-कज्ज-चिंतो राया ठाऊण खणमेक्कं ॥५०२॥

तत्तो विसज्जियाखिल-सेणावइ-सत्थवाह-सामन्तो ।
कइवय-पहाणलोएण परिवुडो रहसि विणिविट्ठो ॥५०३॥

पुव्वुत्तं वुत्तंतं मइसायर-पमुह-मंति-वग्गस्स ।
सव्वं पि संसिऊणं पुच्छिउमेवं समारद्धो ॥५०४॥

भो मंतिणो ! सया वि हु तुब्भे निसुणेह समत्त-सत्थाइं ।
सेवह विज्जा-सिद्धे [४९]मुणह तहा मंत-तंताइं ॥५०५॥

सुविसुद्ध-बुद्धिविहवा वि वेयह सयं पि गुविल-कज्जाइं ।
ता कहह कहं सुय-लाभ-चिंता-जलहिस्स पारम्मि ॥५०६॥

वच्चिस्सामि त्ति तओ खणंतरं चिंतिऊण मंतीहिं ।
संलत्तं देव इमो समुज्जमो सुट्ठु सुट्ठाणे ॥५०७॥

देवस्स पुरा वि वयं इणमट्ठं आसि विन्नविउकामा ।
संपइ देवेण सयं पि साहिए सोहणं जायं ॥५०८॥ किंतु—

अम्ह देवो उवायं पुच्छइ । एस अत्थो दिव्वनाण-नयणाणं दंसण-गोयरो, ता कमुवायं एत्थ साहेमो ? किं वा पच्चुत्तरं देमो ? आयारिंगिय-गइ-भणिइ-गोयरमत्थं मुणंति अम्हारिसा । इमम्मि पुण दिव्वनाण-गम्मे न कमंति अम्हाण मईओ । एत्तियं तु जाणेमो जं उवाय-विरहे वि जीवा सकय-कम्माणुरूव-ठाणेसु पुत्तत्तेणुववज्जंति । तओ रन्ना हसिऊण भणियं—'जइ एवं ता किं न गयणंगणाओ पइक्खणमुव-वज्जंति ? त्ति ।

कम्म-पहाणत्तणओ ता मा एगंत-पक्खमणुसरह ।
जं दव्व-खेत्त-काला वि कारणं कज्जसिद्धिम्मि ॥५०९॥

तत्तो भालयल-मिलंत-पाणिकमलं जमाणवेइ देवो ।
तं अवितहं ति मंतीहिं झत्ति बहुमन्नियं सव्वं ॥५१०॥

अह संलत्तं अविवेय-मंतिणा देव ! अत्थि तुम्हाणं ।
कुलदेवय त्ति पयडो जक्खो सिरि-[५०]माणिभद्दो त्ति ॥५११॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वरगंध-धूव-नेवेज्ज-कुसुम-निवहेहिं पूईओ संतो ।
संतुट्ठ-माणसो सो करेइ पुत्ते अपुत्ताणं ॥५१२॥

देइ धणत्थीण धणं आरोग्गं कुणइ वाहि-विहुराणं ।
करि-तुरय-रह-समिद्धं रज्जत्थीणं जणइ रज्जं ॥५१३॥

किं बहुणा भणिएणं ? जयम्मि जं जस्स वंछियं किं पि ।
पूयाए तोसिओ सो संपाडइ तस्स तं सव्वं ॥५१४॥

तो देव ! तस्स पूयं काउं कुसुमाइएहिं पवरेहिं ।
इच्छि(अच्चि)ज्जउ महिस-सयं तुट्ठो सो देइ जेण सुयं ॥५१५॥

पिहिउं करेहि कन्ने संतं पावं ति वाहरंतेण ।
रन्ना भणियं [1]मा भण अम्ह पुरो एरिसं वयणं ॥५१६॥

जिय-राग-दोस-मोहं सव्वन्नुं जिणवरं विमुत्तूण ।
न करेमि परस्स अहं [2]पणयं पि हु किं पुणो पूयं ? ॥५१७॥

जं पुण जीव-वहेणं हविज्ज मण-वंछियत्थ-संपत्ती ।
संसार-दुक्खभर-कारिणीए तीए अलं मज्झ ॥५१८॥

तो मइसायर-मंती वागरइ जिणिंद-धम्म-निहिअ-मणो ।
देवेण अहो ! एयं पयंपियं उभय-लोय-हियं ॥५१९॥

देवस्स वि सुद्धो बुद्धि-पगरिसो असरिसो विवेग-रसो ।
निक्कारणा य करुणा चरियं कइजण-महच्छरियं ॥५२०॥

सव्वुत्तमो अ धम्मे समुज्जमो निम्मला मणोवित्ती ।
जुत्ताजुत्त-विमरिसं काउमलं को विणा देवं ? ॥५२१॥ जओ—

जीवाण जायइ फुडं पुन्नेहिं मणिच्छियत्थ-संपत्ती ।
अन्नह सव्वं सव्वस्स होज्ज अणिवारियप्पसरं ॥५२२॥

[3]सव्व-जग-जीव-हिअओ सव्वन्नू राग-दोस-मय-मुक्को ।
जो देवो तस्स नमंसणेण संभवइ तं पुन्नं ॥५२३॥

जे निग्गुणा सयं चिय निक्करुणा राग-दोस-पडिबद्धा ।
कह ताण वंतराईण पूयणे जायए पुन्नं ? ॥५२४॥

जीवाण अहम्मेणं विहम्मए[4] इच्छिअत्थ-संपत्ती ।
जीव-वहे कीरंते सो य अहम्मो दढं होइ ॥५२५॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तत्तो मणवंछिय-वत्थु-सत्थ-सिद्धिं समीहमाणेणं ।
तह कह वि वट्टियव्वं जह पुन्नं पावए वुड्ढिं ॥५२६॥

ता देव ! कीरंतु जिणिंद-मंदिरेसु महा-पबंधेण महिमाओ, ण्हविज्जंतु जिण-पडिमाओ घण-घुसिण-घणसार-सिरिखंड-रस-मिस्स-सलिलेहिं, पूइज्जंतु पप्फुल्ल-मल्लिआ-कमल-मालई-पमुह-कुसुमेहिं, परिहाविज्जंतु विचित्त-चिणंसुय-पट्टंसुएहिं, भूसिज्जंतु विविह-सुवन्न-रयणालंकारेहिं, ढोइज्जंतु ताण पुरओ परिपक्क-फल-सणाहाइं अणवज्ज-खज्ज-भोज्ज-पुन्नाइं विसाल-थालाइं, निम्मविज्जंतु जंतुगण-मणोहराइं महुर-गीयाणुगयाइं नच्चंत-चारु-[55]तरुणि-चंगाइं पेच्छणगाइं, पयट्टिज्जंतु सव्वत्थ-वित्थरेण जिण-रहजत्ताओ, सम्माणिज्जंतु समण-संघा, सक्कारिज्जंतु साहम्मिय-समूहा, वियरिज्जंतु[56] ठाणे ठाणे अनिवारियप्पसराइं महादाणाइं, निवारिज्जंतु सव्वायरेण सव्व-जीव-हिंसाओ ।

सुह-कम्मोवचएणं पुव्व-कय-कुकम्म-ववगमेणं च ।
एवं कए भविस्सइ मणिच्छियं निच्छियं [57]तुम्ह ॥५२७॥

अह कह वि असुह-तिव्वयर-कम्मवसओ न वंछियं होइ ।
तह वि परलोय-मग्गो नूणं आराहिओ होइ ॥५२८॥

तो रन्ना आणत्तो मंती सव्वं पि कारवेसु इमं ।
आएसो त्ति भणित्ता तहेव तेण वि कयं सव्वं ॥५२९॥

राया सयं पुण ठिओ काउं आहार-चायमट्ठदिणे ।
पडिवन्न-बंभचेरो परिहरिय-सरीर-सक्कारो ॥५३०॥

दियहे जिणिंद-पूयं मुत्तुं परिमुक्क-सेस-वावारो ।
पडिवन्न-पोसहवओ निसाए सज्झाय-झाण-रओ ॥५३१॥

देवी सुदंसणा वि य तहेव सव्वं पि काउमारद्धा ।
अट्ठम-दिवस-निसाए रन्नो सज्झाण-निरयस्स ॥५३२॥

सो माणिभद्द-जक्खो करालरूवं पयासिउं गयणे ।
तिक्खग्ग-खग्ग-पाणी पयंपिउं एवमाढत्तो ॥५३३॥

नरनाह ! तुज्झ रज्जस्स चिंतगो माणिभद्द-जक्खो हं ।
पुव्व-निवपुंगवेहिं तुम्ह कुले अच्चिओ निच्चं ॥५३४॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संपइ तुमं न कुणसि मज्झ पणामं पि तेण तुह कत्तो ।
मणवंच्छियत्थ-लाभो होही चिंतसु इमं सव्वं ॥५३५॥

जइ महिस-सएण ममं पूयसि तह वंदणं कुणसि निच्चं ।
तत्तो थेव-दिणब्भंतरम्मि तुह वंछियं देमि ॥५३६॥

अह ईसि विहसिऊणं नरवइणा सो पयंपिओ जक्खो ।
जं लब्भइ जीव-वहेण तेण मह वंछिएण अलं ॥५३७॥

न य नमइ मज्झ सीसं जिणं विणा राग-दोस-मय-मुक्कं ।
पंच-महव्वय-जुत्ते गुत्ते साहू य अन्नस्स ॥५३८॥

एवं पयंपिए पत्थिवेण विप्फुरिय-कोव-दुप्पिच्छो ।
जंपइ जक्खो जइ एस निच्छओ "तुज्झ रे दुट्ठ ! ॥५३९॥

ता लंघिय-पुव्व-कुलक्कमस्स तुह कूडधम्म-निरयस्स ।
दंसेमि दुन्नय-फलं इमिणा तिक्खग्ग-खग्गेण ॥५४०॥

जप्पभिइं परिणीया सुदंसणा विगयलक्खणा एसा ।
तप्पभिइं परिचत्तं तुमए मह पूयणाईयं ॥५४१॥

तत्तो पढमं तीए दुट्ठ-महेलाइ छिंदिउं सीसं ।
पच्छा तुमं पि पत्थिव ! कयंतभवणातिहिं काहं ॥५४२॥

इय भणिउं उप्पइओ जक्खो गयणंगणम्मि वग्गंतो ।
घोरट्टहास-पूरिय-दियंतरो खग्ग-वग्ग-करो ॥५४३॥

वाम-कर-गहिय-केसं सुदंसणं दंसिउं निवं भणइ ।
जइ अप्पणो इमीए य जीवियं रे ! तुमं महसि ॥५४४॥

ता कुणसु मज्झ पूयं जहुत्त-विहिणा तओ भणइ राया ।
जइ जीवियं न तुट्टं ता न हणिज्जइ तए को वि ॥५४५॥

अह तं कहमवि तुट्टं ता जाए अन्नहा वि मरियव्वे ।
को मइलइ जिण-धम्मं पत्तमणंताओ कालाओ ॥५४६॥

तो अमरिसेण जक्खो देवीइ सरीरगं निवस्स पुरो ।
खग्ग-निवाडिय-सीसं विउव्विऊणं पयासेइ ॥५४७॥ ततः—

अप्रार्थितानि दुःखानि यथैवाऽऽयान्ति देहिनाम् ।
सुखान्यपि तथैवेह दैन्यमत्रातिरिच्यते ॥५४८॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एवं विचिंतयंतो तह ⁵⁹वि हु राया अखुद्द-मइपसरो ।
जिण-धम्म-निच्चल-मणो निय-नियम-धुरं न लंघेइ ॥५४९॥

देवी वि तज्जिया तेहिं तेहिं वयणेहिं तेण जक्खेण ।
थेवं पि दढपइन्ना तह वि न चलिया ⁶⁰सधम्माओ ॥५५०॥

तो सविसेसं कुविएण तेण जक्खेण सयल-नयरस्स ।
उवरि सिला महई विउव्विया चूरणट्ठाए ॥५५१॥

भणिओ य निवो इण्हिं नयर-समेओ तुमं विणस्सिहसि ।
जइ पुण मह वयणं कुणसि देमि तो वंछियं तुज्झ ॥५५२॥

तो रन्ना वज्जरियं पर-जीव-वहेण अप्पणो रक्खं ।
नाहं कयावि काहं जं रुच्चइ तं तुमं कुणसु ॥५५३॥

जक्खेण तओ भणियं जइ जीव-विणास-पावभीरु-मणो ।
न कुणसि महिस-सएणं मह पूयं मा कुणसु तत्तो ॥५५४॥

तह वि हु पणाम-मित्तं मह निच्चं कुणसु जेण तुह रज्जे ।
⁶¹सव्वं करेमि सुत्थं पुत्तं च मणोरमं देमि ॥५५५॥

विणएण तोसिओ हं हणेमि विग्घं करेमि कल्लाणं ।
मणवंछियं पयत्थं झत्ति पयाणं पयच्छेमि ॥५५६॥

तम्हा मुत्तूण ममं को अन्नो तिहुयणे वि किर देवो ।
जस्स कए अप्पाणं भुल्लो एवं विडंबेसि ? ॥५५७॥

तो पत्थिवेण वुत्तं दयापरोऽहं न देमि तुह महिसे ।
सा उण जीवदया जेण मज्झ देवेण उवइट्ठा ॥५५८॥

देवस्स तस्स विरएमि पूयमहमेस किंकरो तस्स ।
जो उण तुमं सयं चिय महिसे पत्थेसि वह-हेउं ॥५५९॥

सो सयमपुन्नवंछो परस्स पूरेसि वंछियं कत्तो ।
न हि अप्पणो दरिद्दो अन्नस्स दलेइ दालिद्दं ॥५६०॥

अन्नं च वंछियत्थो जणस्स सुकयाणुभावओ होइ ।
सुकयं च वीयरायस्स पूयणे न उ सरायस्स ॥५६१॥

जइ रागदोस-वसगाण पूयणे होज्ज सुकयलेसो वि ।
पूइज्ज को न सुलहे ता कामुयमच्छवहगाई ॥५६२॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

राग़ी य तुमं जो निग्गुणं पि मन्नसि गुणड्ढमप्पाणं ।
पणएसु पक्खवायं वहसि तहा रागचिंधमिणं ॥५६३॥

अम्हारिसेसु कुप्पसि ससंक-विमले जिणिंद-धम्मे य ।
उव्वहसि जो पउसं सो कह दोसी न होसि तुमं ? ॥५६४॥

गय-राग-दोस-मोहं नमिऊण जिणं नमेइ को अन्नं ।
लद्धुं कप्पदुमं को साहोडतरुं समल्लियइ ? ॥५६५॥

मज्झ पुरओ पसंससि अप्पाणं गरुय अंतरे चुल्लो ।
न हि सुद्ध-दुद्ध-सद्धा नियत्तए कंजियाईहिं ॥५६६॥

[62]जइ सि तुमं चिय देवो जइ वा विज्जंति तुज्झ देव-गुणा ।
ता कीस अप्पणा मं हढेण पाएसु पाडेसि ॥५६७॥

तेसिं चियच्छेओ जे नमंति न तुमं समीहियत्थकरं ।
कप्पतरुणो न नस्सइ किंचि जणा जं न सेवंति ॥५६८॥

इय जुत्ति-हेउ-संगय-वयणेहिं निरुत्तरीकओ रन्ना ।
फुरिय-विवेगो संहरिय-डंबरो जंपए जक्खो ॥५६९॥

धन्नो तुमं सुलद्धं तुह जम्मं तुज्झ जीवियं सहलं ।
जस्सेवं निवपुंगव ! जिण-धम्मे निच्चलं चित्तं ॥५७०॥

संपइ असंसयं वीयराय-देवो मए वि पडिवन्नो ।
तव्वुत्तागमसरणा य साहुणो हुंतु गुरुणो मे ॥५७१॥

जीवदया-रम्मे च्चिय धम्मे मह माणसं समल्लीणं ।
साहम्मिओ महायस ! अज्जप्पभिई तुमं मज्झ ॥५७२॥

किं च तुह सीह-सिविणय-सूईय-गुणविस्सुओ सुओ होही ।
जिण-धम्म-पभावेणं विहुणिय-नीसेस-विग्घस्स ॥५७३॥

इय जंपिऊण जक्खो तिरोहिओ दिणयरोदए जाए ।
राया वि पोसहवयं पारइ परिओसमावन्नो ॥५७४॥

पत्तो सुदंसणाए पासे तं कुसलसालिणिं दट्ठुं ।
पारियपोसहमालवइ नरवई महुर-वयणेहिं ॥५७५॥

कहिउं निसि-वुत्तंतं वद्धावइ इच्छियत्थ-लाभेण ।
[63]देवी वि भणइ धम्मेण इच्छियं निच्छियं होइ ॥५७६॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

समए सुरलोगाओ चविऊण सुरो महिड्ढिओ को वि ।
हंसो व्व माणससरे गब्भे देवीए उप्पन्नो ॥५७७॥

रयणीए सुहपसुत्ता [९७]सीहं सिविणम्मि पिच्छए देवी ।
पडिबुद्धा गरुय-पमोय-निब्भरा कहइ तं रन्नो ॥५७८॥

सो भणइ जक्ख-अक्खिय-सीहसिविण-पच्चएण तुह पुत्तो ।
सीहो व्व सत्तु-मयगल-मय-खंडण-पच्चलो होही ॥५७९॥

देव-गुरूणं पय-पंकयाणुभावेण होउ एवमिणं ।
इय जंपइ पइ-पुरओ सुहेण अह गब्भमुव्वहइ ॥५८०॥

जिण-वंदण-पूयण-साहुदाण-जीवाभयप्पयाणेहिं ।
पडिपुन्न-दोहला सा पसवइ समए पवर-पुत्तं ॥५८१॥

पसरंत-देह-किरणुक्करेण दस-दिसमुहाइं पयडंतं ।
विच्छाइय-दीवसिहं तं दट्ठुं हरिसिया चेडी ॥५८२॥

नामेण पियंवइया गंतुं वद्धावए महीनाहं ।
सो वि निययंग-लग्गं वियरइ आहरणमेईए ॥५८३॥

आणवइ निउत्त-नरे करेह नयरे महा-विभूईए ।
वद्धावणयं तेहिं वि तहेव तं झत्ति पारद्धं ॥५८४॥

[९८]तहा हि—

अक्खवत्तेहिं पूरिज्जमाणंगणं,
 ठाणाठाणेसु नच्चंत-वारंगणं ।
पुलइय-कंचुई वग्गंत-कंचुइगणं,
 भूरि-धण-दाण-तोसविय-बहु-मग्गणं ॥५८५॥

घुसिण-सिरिखंड-रस-सित्त-नरवइ-पहं,
 सयल-पुर-ठविय-वर-केउ-पूरिय-नहं ।
सव्व-जिणभवण-निम्मविय-पूयामहं,
 खुज्ज-वामणय-कय-नट्टहासावहं ॥५८६॥

घरघरुत्तंभिउत्तुंग-घण-तोरणं,
 गंधगय-खंधगय-भमिर-आधोरणं ॥
वज्जिराउज्ज-निग्घोस-भरियंबरं,
 लोय-दिज्जंत-तंबोल-पवरं वरं ॥५८७॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अवि य—

नाएण पालयंतस्स तस्स रज्जं न को वि अवराहं ।
काउं पत्तो बंधं जो मुच्चइ गुत्तिगेहाओ ॥५८८॥

मासम्मि गए सिविणाणुसारओ तस्स पुरिससीहो त्ति ।
नामं ठवइ नरिंदो आणंदिय-सयल-जियलोयं ॥५८९॥

अह वड्ढिउं पवत्तो लोय-मणोरह-सएहिं सह कुमरो ।
निरुवद्दवं कणयसेल-काणणे कप्परुक्खो व्व ॥५९०॥

समए कला-कलावं गहाविओ तह कमेण संपत्तो ।
तारुन्नमुन्नय-थणत्थलीण रमणीण मणहरणं ॥५९१॥

सा का वि अंगसोहा वियंभिया जोव्वणे कुमारस्स ।
जं दट्ठुं लज्जाइ व वहइ अणंगत्तणं मयणो ॥५९२॥

तद्दंसण-रहस-पहाविरीण तरुणीण तुट्ट-हारेहिं ।
"रेहंति तिय-चउक्काइं दिन्न-मुत्तिय-चउक्काइं ॥५९३॥

तं चिय झायइ गायइ पुणरुत्तं चित्तपट्टए लिहइ ।
पेच्छइ दिसासु वम्मह-विहुर-मणो रमणि-संघाओ ॥५९४॥

कयाइ कुमारो मारणत्थं निज्जमाणं रासहारूढं सिरोवरि-धरिय-छित्तरं रत्तकणवीर-कुसुम-कय-मुंडमालं गलोलंबिय-लोइं विरस-डिंडिमाराव-मिलिय-निव्विवेय-लोयं, रायपुरिस-परिक्खित्तं इओ तओ पक्खित्त-विसन्न-सुन्न-नयणं नयर-मग्गे तक्करमेक्कमवलोइऊण करुणारसाऊरिज्जमाण-माणसो मिल्लावेइ । इमं च वइयरं सोच्चा नीइ-मग्ग-बहुमाणिणा जणाणुराइणा राईणा अत्थाण-सहा-सुहासीणो भणिओ कुमारो— वच्छ ! न जुत्तमायरियं जं सो तक्करो तए मोइओ । यतः—

दुष्टस्य दण्डः सुजनस्य रक्षा, न्यायेन कोशस्य च संप्रवृद्धिः ।
अपक्षपातो निज-राष्ट्र-रक्षा, पंचैव यज्ञा नृप-पुङ्गवानाम् ॥५९५॥

ता पुणो न तए एवं कायव्वं । रायत्तणओ अभिमाणधणत्तणओ इत्तियं पि पराभवं मन्नमाणो जणणि-जणयाणं पि अकहिऊण निग्गओ नयराओ ।

परिब्भमंतो य पत्तो धरणि-रमणी-मणिनेउरं तरुणिअण-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रूवोहामिअ-मयणंतेउरं सिरिउरं नाम नयरं । तत्थ पबल-परबल-जलहि-निम्महण-मंदरो नट्ठ-पडिवक्ख-कामिणि-कुडुंब-संकडीकय-सयल-सेल-कंदरो पुरंदरो नाम राया । तस्स निरुवम-रूव-निरुंभिय-रंभा, संरंभाउर-सोहग्ग-विजिय-रंभा रंभा नाम गुण-संभार-भरिया भारिया । ताणं च लायन्न-पुन्न-देहा लोय-लोयण-चउर-चंदलेहा चंदलेहा नाम धरणितल-तिलयभूया धूया ।

पुरिसं अपिच्छमाणा रूवाइ-गुणेहिं अत्तणो सरिसं ।
न खिवइ पुरिसे दिट्ठिं न सहइ नामं पि पुरिसस्स ॥५१६॥

परिणयणं पि न मन्नइ केणावि समं नरिंदपुत्तेण ।
तो जणइ पुरिसविद्देसिणि त्ति जणयाण सा चिंतं ॥५१७॥

तीए नर-विमाणारूढाए नयरुज्जाणाओ नियत्तमाणीए सो पुरिससीह-कुमारो रायमग्गे परिब्भमंतो पलोइओ पुणो पुणो सिणिद्ध-दिट्ठीए, लक्खिओ से भावो धावीए, तओ विसिट्ठो को वि पुरिसो एस इमाए अणन्नसरिसाए आगिईए लक्खिज्जइ, अओ चेव रायपुत्तीए पुणो पुणो पलोइओ । कमलायरं विणा अण्णत्थ न रमइ रायहंसि त्ति चिंतिऊण को कहिं वा एस ठिओ त्ति वियाणणत्थं पट्ठविया निय-धूया इमीए । गया ""सा तुरियं । ठिओ एस देवउल-गवक्खगे । कओ अणेण आसण-परिग्गहो, आढत्तो सिलोगं लिहिउं—

अनीहमानो पि बलाद्देशज्ञो पि मानवः ।
तत्र स्वकर्म-वातेन नीयते यत्र तत्फलं ॥५१८॥

अद्धलिहिए य सिलोए पडियं से खडिया-खंडं । पसारिओ अणेण हत्थो । पणामियं तं से चित्त-पुत्तलियाए । इमं च दट्ठुं विम्हिया धावि-धूया । कहियं तमच्चब्भुयं तीए धावीए । तीए वि रायधूयाए । पुच्छिया य एसा— किमेयं ? ति । तीए भणियं— रायपुत्तो खु एसो आसन्न-रज्जो य । न अन्नस्स एरिसी सहावओ विणयपरिणया । धावीए भणियं— न एत्थ संदेहो जेण तए वि सो पलोईओ रायलच्छीए । रायधूयाए भणियं— किं तेण लिहियं ? ति । गवेसिऊण धावीए संवाईयं । रायधूयाए भणियं— आसन्नं च से फलंतरं इमिणा एवंविह-लिहणेण । धावीए भणियं— तक्केमि तुमं परिणइस्सइ त्ति । किमन्नं फलंतरं" ? । तत्तो सा लज्जिया रायधूया ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एत्थंतरे वियरिओ रायहत्थी, कयमसमंजसमणेण, अद्धभग्गो कन्नंतेउरावासो । आउलीहूओ राया । भणियमणेण— अरे ! जो सक्कइ एयं सो गिण्हउ त्ति । एयमायन्निय आगओ पुरिससीहो । सो वि विज्जुक्खित्त-करणेण" चडिओ रायहत्थिम्मि, बद्धमासणं, गहिओ य अंकुसो, वसीकओ हत्थी, नग्गायरिएण पच्चभिजाणिऊण उग्घुट्ठं पुरसिसीह-नामं, पलोईओ रायधूयाए साहिलासं । परितुट्ठो राया । कओ उचिओवयारो । भणाविया रायधूया— पुत्ति ! तुह एस उचिओ त्ति । तुण्हिक्का ठिया रायधूया । 'अप्पडिसिद्धमणुमयं' ति चिंतिऊण रन्ना दिन्ना पुरिससीहो त्ति । वत्तो[80] विवाहो विभूईए । जाया परोप्परं पीई ।

अन्नया अकहिऊण निग्गओ पुरिससीहो पेच्छंतो य नग-नगर-सर-सरिया-सय-संकुलं महीयलं पत्तो जुन्न-देवकुलालंकियं एगं वण-निगुंजं । एत्थंतरे अत्थगिरि-सिहरमल्लीणो रवी । पसरिया तमाल-दल-सामला तिमिर-रिंछोली । पसुत्तो रायपुत्तो देवउले । मज्झरत्त-समए य सुओ रायपुत्तेण रुयमाणीए रमणीए करुण-सद्दो । तओ संजाय-करुणेण उवसप्पिऊण सम्मं निरूवियं जाव दिट्ठं रत्त-कणवीर-कुसुमच्चियं चउद्दिसिं पक्खित्त-मंस-सोणिउवहारं, पेरंत-पज्जलंत-दीवयं मज्झट्ठिय-तिकोण-कुंड-दिप्पंत-हुयासणं मंडलं । तत्थ कयासण-परिग्गहो, नासग्ग-निम्मिय-दिट्ठी, समीव-निहिय-कराल-करवालो दिट्ठो दुट्ठ-विज्जासाहगो । तस्स य पुरओ निविट्ठा दिट्ठा तत्थ हरिणी-विलोल-लोयणा, अच्चंत-मणोहरागारा, गरूय-भय-कंपंत-समत्त-गत्ता एगा जुवई । सा य उग्गीरिय-खग्गेण भणिया विज्जासाहगेण— 'सुदिट्ठं कुण जीवलोयं । जीवियं मोत्तूण पत्थेसु किं पि पत्थणिज्जं । एय पज्जवसाणो जीवलोओ ।

तओ 'हा ! पुरिससीह रायपुत्त ! परित्तायसु ममं असरणं' ति [भणमाणी] न किं पि पत्थेइ ।

एत्थंतरे पुरओ होऊण

'विज्जासाहग ! रे नराहम ! भउब्भंतच्छियंकेरुहं,
सुन्नारन्नगयं वरायमबलं बालं वहंतो इमं ।
अंगे जाणि वसंति पंच भवओ भूयाणि नो लज्जसे ?
किं ताणं पि अणत्थ-सत्थ-भवणं हा दुट्ठ ! भे चिट्ठियं ! ॥७११॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गयसुचरियपाणे पाव-कम्मप्पहाणे,
जइ वि हु पहरंतो तुज्झ एयम्मि अंगे ।
करडिदलण-सज्जो लज्जए मे किवाणो,
तह वि जुवइ-रक्खं काउमेवं पयट्टो ॥६००॥

एवं भणंतेण हक्किओ कुमारेण विज्जासाहगो । तेणावि पउत्ता थंभणि-विज्जा । पबल-पुन्नत्तणेण न पभवइ सा पुरिससीहस्स, [७१]विलक्खीभूओ विज्जासाहगो निवडिओ चलणेसु । पुट्ठो कुमारेण— भद्द ! किमेयं उभयलोग-विरुद्धमायरणं ? तेण भणियं— एईए सव्व-लक्खणालंकियाए रायकन्नाए हुणणेण सुर-सिद्ध-विज्जाहर-नरिंद-रमणी-वसियरण-मंत-सिद्धी । कुमारेण वुत्तं—

किं मंतसिद्धीए विसुद्ध-धम्म-पंचत्थिभूयाए इमाए ? भद्द ! ।
समग्ग-लोगागम-निंदणिज्जो इत्थीवहो कीरइ जत्थ एवं ॥६०१॥

केणावि तुमं तह कूडबुद्धिणा मुद्ध ! विप्पलुद्धो सि ।
जं पत्थरिस इत्थि-वहेण सयल-इत्थीण वसियरणं ॥६०२॥

इत्थीओ वि एत्थ अणत्थ-सत्थ-पायव-परोहभूमिओ ।
नरय-गरुय-वत्तिणीओ विउसाण वि वज्जणिज्जाओ ॥६०३॥

ता उभयलोय-दुह-कारणाओ संजणिय-पाव-पसराओ ।
विरम दुरज्झवसायाओ भद्द ! एयाओ तुममिण्हिं ॥६०४॥

विज्जासाहगेण भणियं— महापुरिस ! परमोवयारी तुमं, जेण नियत्तिओ हं अकज्जायरणाओ । सव्वहा परिचत्तमेयं मए । परं पत्थेमि किं पि, अत्थि मे पढियसिद्धं गारुडं थंभणिविज्जा य, ता अणुग्गहं काऊण गिण्हसु दुवे वि इमे । इमेहिं पि परोवयारं करिस्ससि तुमं । कुमारेणावि पत्थणा-भंग-भीरुणा गहिओ गारुड-मंतो थंभणि-विज्जा य । पणमिऊण गओ विज्जासाहगो । कुमारेणावि आसासिया रायसुया महुर-वयणेहिं पुच्छिया य— का तुमं ? केण वा पयारेण इहाणीया ? को वा पुरिससीहो जो तए सरणं ति वज्जरिओ ? । तीए य एय-वयणा-मयरसेण सित्ताइं ऊससंति मे गत्ताइं, एय-वयण-पंकए पुणो पुणो चलइ मे दिट्ठी, ता नूणं सो चेव पुरिस-चूडामणी एसो पुरिससीहो त्ति चिंतयंतीए भणियं—

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अत्थि सीहपुरं नयरं । तत्थ सीहविक्कमो राया । तस्स जयावली देवी । ताणं सुया हं मयणलेहा । कयाइ जोव्वणे वट्टमाणी गया पिउ-पाय-पणमणत्थं अत्थाण-मंडवे, तत्थ [९२]मागहगणेहिं कित्तिज्जमाणं सुयं मए विजयसेण-महाराय-सुयस्स पुरिससीह-कुमारस्स [९३]गुणुक्कित्तणं । तओ हं तप्पभिइ तम्मि परोक्खाणुराय-परवसा जाया । इमं च नाऊण पुरिससीहस्स चेव तुमं दायव्व त्ति पडिवन्नं जणणि-जणएहिं । अज्ज संझाए पुण अणेण विज्जासाहगेण पासाय-तलोवरि कीलंती विज्जाबलेण इहाणीया । तहा,

जइ वि हु तुमं पि मुणिओ मणेण सो चेव पुरिससीहो त्ति ।
तह वि हु तुह वयणेणं एस जणो जाणिउं महइ ॥६०५॥

तो कुमरेणं भणियं सच्चं तं तुह मणेण जं नायं ।
जम्हा संदेहपए [९४]गुरुयाण मणं चिय पमाणं ॥६०६॥

एत्थंतरे पहाया रयणी अह बहल-संझराएण ।
रेहइ पुव्वदिसा नववहु व्व कोसुंभ-वत्थ-जुया ॥६०७॥

कयावराहो व्व पणट्ठो तिमिरभरो, परोवयारपरो व्व उदयं गओ सूरो । परगुण-दंसणे सुयण-मुहाइं व वियसियाइं कमल-संडाइं । इओ य तम्मि समए समागया तमुद्देसं धावी सपरियणा । दिट्ठा तीए कुमारी । अंसुजल-भरिय-लोयणाए अणाए गाढमालिंगिऊण निवेसिया उच्छंगे, भणिया य— वच्छे ! तुह अवहरणाणंतरमेव उच्छलिओ कन्नंतेउरे अक्कंद-सद्दो । विसन्नो देवो । पयट्टो तुह सव्वत्थ-गवेसणत्थं रायलोओ । अहं पि विसन्न-मणा भमिऊण सयल-रयणिं अणुकूल-विहि-निओगेण इहागय म्हि । ता कहसु तुमए किमणुभूयं ? ति । रायधूयाए कहियं— एगेण [९५]विज्जाहराहमेण अवहरिय गुरुय-सिद्धि-निमित्तं इह मंडलग्गे मारिज्जमाणी मह भागधेयाऽऽगरिसिएण इमिणा महापुरिसेण रक्खिय म्हि । धावीए पुट्ठं— [९६]को एसो महप्पा ? । रायधूयाए भणियं—

जस्स मए पुव्वं पि अणुरायपराए अप्पिओ अप्पा ।
सो एस पुरिससीहो पुत्तो सिरि-विजयसेणस्स ॥६०८॥

धावीए तओ भणियं- जं सयमवि संगओ तए एसो ।
तं नूण मम य वुड्ढी अब्भेहिं विणा इमा जाया ॥६०९॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एत्तो य कह वि विन्नाय-रायकन्नोवलंभ-वुत्तंतो ।
परिओस-वियसिय-मुहो राया वि समागओ तत्थ ।।६१०।।

रन्ना [66]मुणिओ धावी-मुहेण सयलो वि रयणि-वुत्तंतो ।
तो करि-कंधारूढो कुमरो नीओ नियं नयरं ।।६११।।

परिणाविओ य धूयं वसिओ सोक्खेण तत्थ कइ वि दिणे ।
अण्ण-दिणे कस्स वि अकहिऊण नयराउ निक्खंतो ।।६१२।।

पत्तु पारद्ध-गुरुदेव-चलणच्चणं,
पवण-संजणिय-जिणभवण-धय-नच्चणं ।
सयल-जण-दूरपरिहरिय-परवंचणं,
दीण-बंदियण-दिज्जंत-धण-कंचणं ।।६१३।।

कंचणपुरं[68] नयरं । तत्थ वेरि-करि-घडा-विहडणेक्क-सीहो [69]वइरिसीहो राया । तस्स कमल-दल-दीह-नयणा नयणावली देवी । ताणं च केण वि अकखंडिय-पणया गुरुयण-पाय-पणया, निय-काय-कंति-विणिज्जिय-कणया कणयावली तणया । सो य राया रयणीए सुहपसुत्तो कह वि डक्को सप्पेण । वाहरिया गारुडिया । न संजाओ को वि गुणो । विसन्नो नयर-लोओ ।

दट्ठूण तं कुमारो नयरं पडिसिद्ध-तूर-गीय-रवं ।
कय-विक्कय-रहियं सोय-सलिल-संपुन्न-जण-नयणं ।।६१४।।

पुच्छइ तहाविहं कं पि पुरिसं किं इमं पुरमसेरं ? ।
सो कहइ रुयंतो सप्प-दट्ठ-निव-वईयरं सव्वं ।।६१५।।

तओ सो च्चिय सलाहणिज्जो तेण सुलद्धो इमो मणुय-जम्मो ।
जस्सोभयलोग-हिए परोवयारम्मि रमइ मई ।।६१६।।

इय चिंतिय कुमरेणं भणिओ सो अत्थि गारुडो मंतो ।
तं विन्नासेमि अहं जाणावसु मंति-पमुहाणं ।।६१७।।

तेण वि तह त्ति विहिए गंतूणं पुरिससीह-कुमरेणं ।
जीवाविओ नरिंदो गारुड-मंत-प्पभावेण ।।६१८।।

आणंदियं समग्गं नयरं राया वि गरुय-हरिसेण ।
परिणावइ कुमरं तं दाउं कणगावलिं धूयं ।।६१९।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विसय-सुहमणुहवंतो तीए "सहा जाव चिट्ठइ कुमारो ।
ता एक्केण नरेणं आगंतुं रहसि विन्नत्तो ॥६२०॥

देव ! सुण अत्थि नयरं विजयपुरं नाम तत्थ अरिदमणो ।
राया तस्संतेउर-तिलयसमा जयसिरी देवी ॥६२१॥

तीए गब्भपसूया धूया रमणी-सिरोरयणभूया ।
पिय-वयणा ससि-सुंदर-वयणा रयणावली नाम ॥६२२॥

सो वि हु दिव्ववसा विजयकेउणा गोत्तिएण पबलेण ।
समर-भरे जिणिऊणं पुराओ निव्वासिओ सहसा ॥६२३॥

पव्वय-पच्चासन्नं पल्लिं सो वि हु अहिट्ठिऊण ठिओ ।
निय-परिवार-समग्गो वहमाणो अमरिसं गरूयं ॥६२४॥

अन्नया पुट्ठो तेण एगो नेमित्तिओ— किं पुणो अम्ह निय-रज्ज-संपत्ती भविस्सइ ? त्ति । तेण सम्मं निरूविऊण भणियं — भविस्सइ । रन्ना भणियं— कहं ? तेण वुत्तं— एयं रयणावलिं जो परिणिस्सइ सो तुमं पुणो वि रज्जे ठविस्सइ त्ति । रन्ना भणियं— सो कहं नायव्वो ? । तेण वुत्तं— जो सप्प-दट्ठं वेरिसीह-रायं जीवाविस्सइ त्ति । ता देव ! तुह कित्तिं सोऊण पेसिओ हं निय-"पइणा । ता तत्थागमणेण पसाओ कीरउ त्ति । कुमारो वि कस्सइ अकहिऊण परोवयार-करणुज्जयत्तणेण तेणेव समं पत्तो पल्लीए । बहुमन्निओ निवइणा, परिणाविओ निय-धूयं रयणावलिं । तओ कुमारेण वुत्तो राया— चलसु निय-रज्जग्गहणत्थं । चलिओ सो समग्ग-सामग्गीए । पत्तो निय-नयरासन्नं । जाणिओ विजयकेउणा, निग्गओ चउरंग-बल-समेओ संमुहं ।

मिलियाइं जाव दोन्नि वि बलाइं अवरोप्पर-पहरण-पब्बलाइं ।
कायर-नर-भय-करणेक्क-सूर अप्फालिय-गहिर-निनाय-तूर ।

रण-करणुच्छाह-रसुब्भडेहिं, अब्भिडिय सुहड सहुं परभडेहिं ।
रवि-रह-तुरंगम-समविब्भमेहिं, अब्भिट्ट तुरंग तुरंगमेहिं ।

विलसंत-विविह-पहरण-भरेहिं, संजोईय रहवर रहवरेहिं ।
पर-पक्ख-पराजय-कारणेहिं, सहुं लग्गा वारण वारणेहिं ।

रण-कोड्ड-पलोयण-तप्परेहिं, संरुद्धु गयणु सुर-खेयरेहिं ।
उच्छलिय तिरोहिय चंद-सूर, हय-घट्ट-खुरुक्खय-रेणु-पूर ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

|घत्ता|

इय दोण्ह वि सेन्नह, कोव-पवन्नह, झत्ति पयट्टइ समर-भरि ।
अरिदमण-नरिंदिण, गरुयाणंदिण, कुमरह "मुहु जोइउ नवरि ॥625॥

तओ कुमारेण थंभियं सयलं पि पर-सेन्नं थंभणि-विज्जाए, चित्त-लिहियं व ठियं निच्चलं । 'जयइ महप्पभावो पुरिससीह-कुमारो' त्ति उच्छलिओ गयणंगणे साहुवाओ । चिंतियं विजयकेउणा— एयस्स "सुपुरिसस्स पभावो एस, न पुरिसयार-मित्तेण" लंघिउं तीरइ । तओ एयस्स सरण-पवज्जणं चेव जुत्तं । संपयं पुण वोत्तुं पि न किंचि सक्केमि । ता किं करेमि त्ति दीण-वयणो "उत्थंभिओ कुमारेण, लग्गो आगंतूण चलणेसु, विन्नत्तं अणेण— गिण्ह तुमं इमं रज्जं । अहं पुण परलोय-मग्गं साहिस्सं ति भणिऊण निग्गओ । गओ तवोवणं । अरिदमणो वि कुमारेण समं पविट्ठो निय-नयरं, अहिट्ठियं रज्जं । कुमारो वि रयणावलीए सह विसय-सुहं भुंजंतो चिट्ठइ । अन्नया कीला-निमित्तं गओ पमदुज्जाणं । दिट्ठा तत्थ असोय-रुक्ख-साहाए विहिय-उब्बंधणा मज्झिम-वए वट्टमाणी 'हा सप्पुरिस ! रक्ख ममं' ति पलवंती एगा इत्थिगा कुमारेण । तओ करुणारस-पूरिज्जमाण-माणसेण विज्जुक्खित्त-करणेण उप्पईऊण गयणंगणे गहिऊण तं वामभुयाए दाहिण-करेण छुरियाए छिन्नो पासओ । इत्थिगाए वि गाढमालिंगिऊण अवहरिओ रायपुत्तो । नीओ एक्कम्मि वण-निगुंजे, विविह-वर-रयण-निम्मविय-कुट्टिम-तले, फलिह-मणि-घडिय-चउभित्ति-भागुज्जले, कणयमय-थंभ-संभावियाडंबरे, पवण-धुय-धयवडावरुद्धांबरे ।

एवंविहम्मि मुक्को पासाए सत्त-भूमियतलम्मि ।
रयणमए पल्लंके निसाए सुत्तो सुहं कुमरो ॥626॥

कयमणाए कुमारस्स चलण-सोयं । संवाहियाइं नवकमल-कोमलेहिं करयलेहिं अंगाइं । पलोट्टमाणीए चेव तीए गमिया रयणी । उग्गओ अंसुमाली, विउद्धो कुमारो । भणियं च तीए—

जं तुमए निच्च-परोवयारिणा पबल-सत्तु-गहियं पि ।
अरिदमणस्स पुणो रज्जमप्पियं तेण पत्थेमि ॥627॥

अत्थि इओ नाइदूर-देसे संकेयट्ठाणं सयलाण वि उउसिरीणं, कीलाभूमी सिद्ध-गंधव्व-विज्जाहर-जक्ख-किन्नर-मिहुणाणं, निवासो

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मय-मयाहिव-पमुह-सावय-गणाणं, आलओ सयल-नारंगाइ-फलाणं, महि-महिलाए सेहरो, अणवरय-ज्झरंत-निज्झरण-ज्झंकार-मणहरो गयणग्ग-लग्ग-सिहरो रयणकूडो नाम महीहरो । तस्स अहिट्ठायगो गीयरइ नाम वणयर-देवो । देवी य तस्साहं गंधव्वमाला नाम । निय-परियण-परिवुडाइं जहासुहं एत्थेव चिट्ठामो । अत्थि य एयस्स गिरिस्स गब्भे अहोगयं गूढ-दुवार-देसं तियसाण वि अगम्मं, अच्चंत-रम्मं, रमणीय-मंणि-विणिम्मियं, विविह-कीलापएस-सोहियं, सन्निहिय-सयल-भोगोवगरण-समुदयं, दिप्पंत-रयण-किरण-भासुरं, सुरभवण-प्पायं पायाल-भवणं ।

अन्नया मरण-पज्जवसाणयाए जीवलोगस्स पेच्छंतीए चेव वाय-विहुय-दीवओ व्व विज्झाओ मज्झ पिययमो । तओ हं पसरंत-सोयानला वि असारं संसार-सरुवं, अप्पडियारो मच्चू, नत्थि परलोयपत्तस्स वि पडिआगमणं ति संठविय हिययं निय-ठिइपरा संवुत्ता । कयाइ कीला-निमित्तं निग्गया पायालभवणाओ, कीलिऊण गिरि-कंदर-सर-सरिया-काणणेसु पुणो वि पायाल-भवणं पविसंती कह वि दिट्ठा अवहरिय-रायकन्ना-रयणेण केणावि विज्जाहरेण । अणुपयमेव पविट्ठो एसो दिव्वं पायाल-भवणं, चिंतियमणेण— अहो ! देवाण वि अगम्मं रम्मं च इमं । तओ अवलोइयं मम मुहं साहिलासाए दिट्ठीए, भणियं च—

कामस्स सव्व-सुर-मत्थय-वुब्भमाण-
आणस्स बाण-निवहेण हणिज्जमाणो ।
दुग्गं व देवि ! थणवट्टमिमं तुमाए,
तुंगं समारुहिउमिच्छइ एस लोओ ॥६२८॥

तो कय-दुप्पेच्छ-निडालवट्ट-भिउडीइ सो मए भणिओ ।
आ पाव ! दुट्ठचिट्ठिय ! निल्लज्ज ! इमं पि किं न सुयं ? ॥६२९॥

सीहह केसर सईहिं ऊरु सरणागओ य सुहडस्स ।
मणि मत्थइ आसीविसह नो घिप्पइ अमुयस्स ॥६३०॥

ता किं हयास तुममिह समागओ तुरियमेव निग्गच्छ ।
मम भवणाओ इमाओ तो रोसारुणिय-नयणेण ॥६३१॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

'फेडेमि सईवायं इमीए' इय जंपिऊण गहियम्हि ।
निक्करुणं तेण सहाव-कोमले कुंतल-कलावे ॥६३२॥

धरणीए पाडिऊणं पण्हि-पहारेहिं पहणिया बहुसो ।
अक्कोसंती पुण पुण पायालघराओ निच्छूढा ॥६३३॥

पायालघरमहिट्ठियमणेण अहयं तु तत्थ न पवेसं ।
पावेमि ता महायस ! उद्धरसु इमाओ वसणाओ ॥६३४॥

तो करुणामय-मयरायरेण कुमरेण जंपिया देवी ।
मह पाणेसु धरंतेसु को तुमं अंब ! परिभवइ ? ॥६३५॥

मुंच विसायं पडिवज्ज धीरयं मज्झ अंब ! अवलंबं ।
दंसेहि खेयरं तं तद्दप्पं जेण अवणेमि ॥६३६॥

इय जंपंतो कुमरो समुट्ठिओ देवयाइ तो भणिओ ।
सो सिद्ध-पबलविज्जो गुरु-विक्कम-दप्प-दुप्पिच्छो ॥६३७॥

ता तुममवि सन्नाहं कुणसु तओ जंपिया कुमारेण ।
ईसि हसिऊण देवी ! मुंच भयं अंब ! भव धीरा ॥६३८॥

करि-कुंभत्थल-दलणम्मि केसरी किं करेइ सन्नाहं ? ।
तिमिर-मुसुमूरणे दिणयरो वि किमवेक्खए किं पि ? ॥६३९॥

तओ अहो धीरया ! अहो महासत्तया ! अहो निरवेक्खया ! अहो गंभीरालावया ! सव्वहा सव्वमणुरूवमेयस्स" त्ति चिंतयंती पयट्टा वणदेवया । तयणुमग्गेण य कुमारो हक्कारिज्जंतो व्व पायवाणं पवण-पणोल्लिय-पल्लव-करेहिं, आलिंगिज्जंतो व्व कोमल-साहा-भुयाहिं, विइन्न-अग्घो व्व समीरणाहरिय-सुरहि-कुसुम-वरिसेण, विविह-उवायणो व्व ओणय-लया-पेरंत-फल-भरेणं, कय-सागय-संमाणो व्व कलयंठ-कुल-कलरवेणं पत्तो गिरिवरं कुमारो, वणदेवया-दंसिय-दुवारं पविट्ठो पायाल-भवणं ।

हा खत्तिय-कुल-नहयल-मयंक ! महा-पुरिससीह ! वर कुमर !
अलियं होही नेमित्तियस्स वयणं पि किं इण्हिं ? ॥६४०॥

इय विलवंती तम्मि उ दिट्ठा रमणी अणेण रमणिज्जा ।
तो विम्हिओ निविट्ठो गंतुं कणयासणे कुमरो ॥६४१॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दट्ठूण कुमारं सा वि संभमुब्भंत-लोयणा बाला ।
पुणरुत्त-थणोवरि-ठविय-उत्तरिज्जा ल्हसिय-नीवी ॥६४२॥

उक्खिविय-भुयलयाओ पुण पुण संजमिय-कुंतल-कलावा ।
कर-फुसिय-बाहसलिला कहमवि विरमेइ सयणाओ ॥६४३॥

भणिया य कुमारेण वणदेवया— पुच्छसु एयं बालियं का सि तुमं ? कत्तो वा कहं वा केण वा आणीया ? । कीस व रुयसि ? त्ति । पुट्ठा सा वणदेवयाए, सगग्गयक्खरं कहिउं पवत्ता—

अत्थि हत्थिणपुरं नाम नयरं । तत्थ नरसीहो नाम राया, विलासवई से देवी । तीए कुक्खि-संभूया लीलावई नाम धूया अहं, जोव्वणत्थं ममं दट्ठूण पुट्ठो ताएण नेमित्तिओ— कस्सेसा दिज्जउ ? त्ति । कहियं तेण— संखउराहिव-विजयसेण-रायपुत्तस्स पुरिससीहस्स पत्ती भविस्सइ त्ति । इमं सोऊण परोक्खाणुराय-परव्वसाए मए वि तस्स समप्पिओ अप्पा । अन्नया उज्जाणे कीलंती केणावि खयराहमेण इहाणीया । सो य ममं अणिच्छमाणिं पि परिणेउमिच्छंतो विवाहोवगरण-निमित्तं गओ । ता अहं मंदभग्गा अपडिपुन्न-मणोरहा नेमित्तिय-वयणं पि किमलीयं भविस्सइ त्ति सवियक्का रुयामि । तओ वणदेवयाए भणिया जहा—

भद्दे ! मुंच विसायं नेमित्तिय-वयणमवितहं होही ।
होहिंति तुह वि सहला मणोरहा संपयं चेव ॥६४४॥

जेणेस पुरिससीहो तुह हिययाणंदणो महासत्तो ।
तुह पुन्न-पेरियाइ व मए स-कज्जेण आणीओ ॥६४५॥

इओ य विवाहोवगरण-सणाह-हत्थाए कमलावइ-नामाए खयरीए समं समागओ खयरो । तओ भय-वस-वेविर-हियाए भणियं वण-देवयाए— 'कुमार ! एस एइ सो दुरायारो' । कुमारेण भणियं—

'अंब ! धीरा होहि, पेच्छ निय-तणयस्स विलसियं' ।

लीलावईए वि भउब्भंत-लोयणाए चिंतियं—

छलप्पहाणो खयरो दुरप्पा, इमो कुमारो उण उज्जुसीलो ।
हद्धी न याणीयइ किं पि होही ? ता मज्झ संतप्पइ माणसं ति ॥६४६॥

तओ कुमारो खयरेण दिट्ठो पासट्ठिया सा वणदेवया य ।
वियंभिउद्दाम-वियार-लीला लीलावई सा वर-कन्नया य ॥६४७॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लोउत्तर-फुरंत-तेओ को वि एसो ? त्ति चिंतयंतो खयरो खुहिओ वि हियएण अक्खुहिओ व्व जंपिउं पवत्तो— अरे रे ! को तुमं चोरो व्व सुन्न-परघरे पविट्ठो ? । किं दुरायार ! न मुणसि जं परधरे परित्थियाहिं समं संवासो विरुद्धो त्ति ? । ता सव्वहा चत्त-साहु-समायारो वि तुमं विमुक्को मए करुणारए[ण] । जीवियं घेत्तूण तुरियं पलायसु । सम्मुहो वा होसु । तओ ईसि हरिस-वस-विसप्पंत-दंत-पंति-कंतिणा कुमारेण वुत्तं— अरे ! कालपत्तस्स व ते चलिया धाउणो तेण पलोयसि सव्वं पि पीय-धत्तूरओ व्व विवरीयं[८] । तं मज्झ परघरमिणं तुह उण पिउ-संतियं एयं ?

एयाओ इत्थियाओ मह चेव परित्थियाओ नो तुज्झ ? ।
एयाहिं सह विरुद्धो वासो मह "चेव नो तुज्झ ? ॥६४८॥

गय-साहु-समायारोहमेव न तुमं ति केण सिक्खविओ ?।
वोत्तुमिमं पुव्वुत्तं ता न मुणसि दुट्ठ ! अप्पाणं ॥६४९॥

अहवा अहिट्ठिओ तुमं एयाहिं आलिय-सोंडीर-[९]मेत्त-गुण-मोहियाहिं, अपेच्छंतीहिं तुज्ज अणायारं विज्जादेवयाहिं तेण तुह एयं खमिज्जइ । पूयणिज्जाओ सव्वाओ वि मज्झ देवयाओ । ता अज्ज वि चेयसु अत्ताणयं ति । मुंचसु अणायारं ।

एत्थंतरि हरिस-विसट्ट-वयण, पसरंत-कंति-कंदलिय-गयण ।
वर-हार-विराईय-वच्छदेस, अलि-कज्जल-सामल-कुडिल-केस ।
नीलुप्पल-पत्त-सवत्त-नेत्त, सप्पुरिस-चरिय-रव्वंत-चित्त ।
मणि-कुंडल-लीढ-कवोल-फलय, भुय-वल्लि-पहल्लिर-कणय-वलय।
वियसंत-कुंद-दिप्पंत-दंत, मणि-नेउर-रव-मुहलिय-दियंत ।
रणझणिर-रयण-रसणा-कलाव, विलसंत-अणंत-महप्पभाव ।
इय विज्जादेवय दिव्वरूय सहस त्ति तिन्नि पच्चक्खहूय ।
करवाल-विज्ज बहुरूविणी य तइया गयणंगण-गामिणी य ॥६५०॥

भणियं चऽणाहिं— 'कुमार ! [१०]एत्तिय-कालं सोंडीर-मेत्त-गुण-मोहियाहिं अपेच्छंतीहिं-अणायारं अहिट्ठियमिमस्स सरीरं । संपयं पुण जाणियं अकज्जकारित्तणं । तओ एय विरत्त-चित्ताओ मुत्तूण इमं तुह लोउत्तर-चरिय-रंजियाओ तुमं चेव अल्लीणाओ अम्हे, अन्नस्स किलेसेण सिज्झामो । तुज्झ उण अचिंतणिज्ज-गुणावज्जिय-हिययाओ सयमेव

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सयंवर-विलयाओ व्व समागयाओ, ता पडिवज्जउ कुमारो अम्ह एयं पत्थणं' ति । कुमारेण भणियं— जं तुब्भे भणह तं कीरइ । तओ करग्गहण-मित्तेण समरंगणे समग्ग-रिउवग्ग-निग्गहकरं गेण्हाहि एयं ति भणंतीए समप्पियं खग्गदेवयाए खग्ग-रयणं, अहिट्ठियं कुमार-सरीरमियराहिं । इमं वइयरं पेच्छिऊण विम्हिया वणदेवया । हरिसिया लीलावई । कमलावई वि साहिलासं एयस्स चेव असरिस-गुण-गण-माहप्प-सिद्धविज्जस्स सच्चरिय-महानिहिणो घरिणी-सद्दं वहिस्समहं एवं चिंतिय सिणिद्धाए दिट्ठीए कुमार-वयण-कमलमवलोइउं पवत्ता । लक्खिया खेयरेण । सो य खेयरो विज्जादेवया-वज्जिओ लज्जिओ सव्वहा गलिय-पोरुसाभिमाणो दसणेहिं गहिऊण पंच वि करंगुलीओ पडिओ कुमार-चलणेसु, भणिउं पवत्तो— 'कुमार ! पवन्नो हं तुज्झ भिच्च-भावं, सरणागय-वच्छलो य तुमं, खमसु एयमवराहं, करेसु मह जीवियप्पयाणेण पसायं । कुमारेण भणियं— 'भद्द ! भद्दागिइ दीससे तुमं, ता न जुत्तमणायारकरणं' । खयरेण भणियं— 'एय-पज्जवसाणो मम अणायारो' । कुमारेण भणियं— 'विमुक्काणायाराणं अन्नाण वि निरुवहयमेव जीवियं, विसेसओ तुज्झ । किंतु सच्चपइन्ना खु महापुरिसा हवंति । ता न तए अन्नहा कायव्वं' ति ।

तओ खयरेण 'जं कुमारो आणवेइ' त्ति भणंतेण विन्नत्तं— 'अत्थि वेयड्ढ-पव्वए दाहिण-सेढीए मयणपुरं नाम नयरं । तत्थ विज्जुवेगो नाम विज्जाहर-राओ, विज्जुमालिआ से भारिया । ताणं पुत्तो अहं पवणवेगो । मह कणिट्ठभइणी एसा कमलावई नाम । ताएण य अणेग-विज्जाहर-कुमार-रूवाणि चित्त-पट्टिआसु लिहाविऊण आणावियाणि, दंसियाणि य इमीए, परं न कत्थ वि मणं वीसमियं । तओ ताओ को वरो इमीए भविस्सइ त्ति चिंताउरो जाओ । संपइ पुण तइ दिट्ठिगोयरं गए "गरुयाणुराय-रसिय व्व दीसइ इमा, ता इमिणा चेव विवाहोवगरणेण इमीए पाणिग्गहणेणं अणुग्गहं "कुणउ कुमारो, जेणाहं कयत्थमप्पाणयं मन्नेमि । ताओ य वर-चिंता-समुद्दाओ नित्थारिओ होइ ।

एत्थंतरे वणदेवयाए विन्नत्तं— कुमार ! मह ताव तए पायाल-भवण-समप्पणेण एक्कं पओयणं कयं, संपयं पुण बीयं पि कुणसु । कुमारेण भणियं— जं तुमं आणवेसि ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वणदेवयाए भणियं—

जइ एवं ता लीलावईए [13]गरुयाणुराय-कलियाए ।
झत्ति करग्गहणेणं कीरंतु मणोरहा सहला ॥६५१॥

कुमारेण भणियं— जं भे [14]रोयइ । तओ-

दोण्हं पि करग्गहणं नरिंद-विज्जाहरिंद-कन्नाणं ।
गंधव्व-विवाहेणं कयं कुमारेण सुमुहुत्ते ॥६५२॥

पवणवेग-विज्जाहरो वि पणमिऊण कुमार-चलणे भइणि-विवाहेण कयत्थमप्पाणयं मन्नंतो गओ सट्ठाणं । कुमारो गमणूसुयमणो वि वणदेवया-वयणेण ठिओ केत्तियं पि कालं, देवीए य संपाडिज्जमाण-मणिंदियाणुकूल-सयल-भोगोवभोगोवगरणो ताहिं समं विसय-सुहमणुहवइ ।

अह [15]केत्तियम्मि काले वोलीणे पुरिससीह-कुमरस्स ।
जाया मणम्मि चिंता किमेवमहमेत्थ[16] चिट्ठामि ? ॥६५३॥

जइ वि हु पायालधरं समग्ग-भोगोवभोग-रमणिज्जं ।
तह वि हु एयं पडिहाइ मज्झ गब्भासय-सरिच्छं ॥६५४॥

जओ—

जं विक्कमेण चाएण दीण-दुहिओवयार-करणेण ।
नर-जम्म-फलं जस-धम्म-अज्जणं वज्जरंति बुहा ॥६५५॥

तं नत्थि [17]एत्थ पायालमंदिरे मज्झ संवसंतस्स ।
अप्पंभरिणो निच्चं कायरस्स व विहल-जीयस्स ॥६५६॥

इय चिंतिऊण कुमरो कयाइ वणदेवयाइ विरहम्मि ।
लीलावइ-कमलावइ[18]-भज्जाणं सुहपसुत्ताणं ॥६५७॥

अमुणिय-[19]पय-संचारं पायालघराओ झत्ति निक्खंतो ।
तं लंघिऊण रन्नं गिरि-सरिया-तरुवर-रवण्णं ॥६५८॥

पुहइं परिब्भमंतो गामाऽऽगर-नगर-गोउलाइन्नं ।
कालेण कित्तिएणं पत्तो एगम्मि गामम्मि ॥६५९॥

उवविट्ठो देवउले, बंदिणमेक्कं पलोइउं पुरओ ।
पुच्छइ महायरस ! तुमं कत्तो कत्थ व पयट्टो सि ? ॥६६०॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भणियं अणेण हत्थिणपुराओ पोयणपुरम्मि चलिओ म्हि ।
कुमरेण तओ भणियं तत्थ तुमं केण कज्जेण ? ॥६६१॥

तो मागहेण वुत्तं तुमए पयडं पि किं न मुणियमिणं ? ।
कुमरो पयंपइ तओ किं तं ? अह बंदिणा भणियं ॥६६२॥

भद्द ! सुण एत्थ पोयणपुरम्मि पुरिसोत्तमस्स नरवइणो ।
सोहग्गसुंदरीए देवीए गब्भ-संभूया ॥६६३॥

सोहग्गमंजरी नाम कन्नया अंग-चंगिम-गुणेण ।
रइ-रंभ-रूव-पयरिस-संरंभ-निरुंभण-पवीणा ॥६६४॥

जीए निम्मल-मुह-कमल-कंति-कवलिय-समग्ग-सोहग्गो ।
सकलंको लज्जाइ व चंदो संचरइ रयणीए ॥६६५॥

जीए लोयण-[100]लावन्न-लच्छिमवलोइउं व अब्भहियं ।
लज्जावसेण नीलुप्पलाइं सलिले निलुक्काइं ॥६६६॥

तीए य कला-कलाव-कोसल्ल-समुल्लसंत-गत्ताए कया पइन्ना— 'जो मं वीणा-विणोएण जिणइ सो चेव मं परिणेइ' त्ति । तओ राइणा काराविओ सयंवरा-मंडवो, हक्कारिया सव्वे वि रायतणया । अहं पि कोउगवसेण तत्थेव पयट्टो । कुमारेण भणियं— जइ एवं ता अहं पि तुमए समं गंतूण पेच्छामि [101]अच्छेरयमिणं । तओ बंदिणा 'किमजुत्तं ?' ति भणंतेण भणियं— 'कुमार ! उवलक्खिओ मए संखउर-सामिणो महाराय-विजयसेणस्स नंदणो पुरिससीह- कुमारो तुमं' ति । कुमारेण य लज्जोणय-वयणेण दिन्नं कडय-जुयलं बंदिणो । तओ चलिया दो वि, पत्ता पोयणपुरं । जं च—

कंचण-घडिय-पायार, पुरिसत्थ-वित्थरणपर,
पुरिससत्थ-संचरण-मणहरु हरिणच्छि संकुलु,
विउल-वावि-कूव-आराम-सरवरु ।
जहिं सुरघर-गणु गरिम-गुण-रुंभिय-रवि-रह-मग्गु ।
फलिह-सिहर-किरणावलिहिं सहइ हसंतु व सग्गु ॥६६७॥

ते य दो वि हु तत्थ पेच्छंति—

नीसेस-दोसागयह रायसुयह बहु-रिद्धि-डंबर ।
आवास पइ पवर-पवण-विहुय-धय-चुंबियंबर ॥६६८॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तग्गुणकित्तणु तहिं सुणिहि बंदियणिहिं किज्जंतु ।
तह पडिरव-पूरिय-भुवणु तूर-निवहु वज्जंतु ॥६६९॥

इंत-जंतेण रायलोएण केणावि वर-हय-गय(ए?)ण केणवि मत्त-मयगल-निविट्ठेण, केणावि संदण-बिट्ठेण केण वि सुह-सुहासण-बइट्ठेण अग्गइ आसि जि रायपह सुह-संचर-वित्थिन्न ते तहिं समइ समग्ग हुय दुस्संचर-संकिन्नउ । तह वि वज्जिय-अवर-वावार कोऊहल-हरिय-मण रमणि-चंद्र-आबद्ध-मंडललावन्न-संपुन्न-तणु दिप्पमाण-मणि-कणय-कुंडल, काओ वि अट्टालय-चडिय, काओ वि हट्ट-पवन्न, काओ वि भवण-गवक्ख-गय, काओ वि मंच-निसन्न,

इय जा बहुप्पयारं जण-वावारं पुरम्मि पेच्छंता ।
वच्चंति ता सयंवर-मंडवमह ते पलोयंति ॥६७०॥

जो रयण-विणिम्मिय-तारिआहिं पसरंत-कंति-निवहाहिं ।
तारय-नियरं दिवसे वि दंसयंतो व्व पडिहाइ ॥६७१॥

मणि-सालभंजियाहिं कंचणमय-खंभ-सन्निविट्ठाहिं ।
कोउगवसागयाहिं जो छज्जइ अच्छराहिं व ॥६७२॥

मुत्तावचूल-कलिओ जो रेहइ सेअ-चमर-मालाहिं ।
निवडिर-धारा-निवहो बलाय-पंतीहिं मेहो व्व ॥६७३॥

तत्थ य महा-विछड्डेण पविसंतेसु रायकुमरेसु कुमारो बहुरूविणीए विज्जाए वामणग-रूवधारी तेण बंदिणा समं पविट्ठो । वामणग-रूवधारिणो वि दट्ठूण अउव्वं सोहा-समुदयं तस्स लोएहिं दिन्नो मग्गो रंग-मज्झे । दिट्ठो इमो पुरिसोत्तम-राएण । तओ मणहर-दंसणो को वि एसो त्ति संजाय-संभमेण रन्ना दाविआसणे उवविट्ठो कुमार, पिट्ठओ अ बंदी । दिट्ठो कुमारो पडिवण्ण-सरीरो व्व रइवल्लहो सोहग्गमंजरीए । चिंतियं च— अजुत्तं मए ववसिअं, जं पइन्ना कया

वीणा-विणोअ-विन्नाण-वज्जिओ वि हु इमो पुरिस-रयणं ।
परिणेयव्वो सोहग्ग-गुण-निही निच्छएण मए ॥६७४॥

तं चेव नियइ तं चेव चिंतए पत्थए य तं चेव ।
जाया खणमेत्तेणं सा कुमरी तम्मया तइया ॥६७५॥

तओ जहारिह-कय-संमाणेसु निसन्नेसु रायतणएसु मिलिए

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कोऊहलेण सयल-लोए उवरिट्ठिएसु सुर-सिद्ध-विज्जाहरेसु उट्ठिऊण एगेण विअड्ढ-कंचुइणा महया सद्देण भणियं—

भो भो नरिंद-तणया ! एआए एत्थ रायधूयाए ।
सुगुणाणुरागिणीए कया पइण्णा इमा पुव्वं ॥६७६॥ जहा—

सव्व-कलाणं पवरा वि लोभणिज्जा य सव्व-जीवाणं ।
विक्खाय-गुणा लोए एगा वीणा-विणोअ-कला ॥६७७॥

जो एआइ कलाए अहिओ मे को वि इह कुमाराणं ।
सो चेव मज्झ दइओ होउ न अत्थिऽत्थ संदेहो ॥६७८॥

ता पयडेह नियं खलु विन्नाणं एत्थ जस्स जावंतं ।
पावेह जेण एयं विजय-पडायं व कामस्स ॥६७९॥

एगेण अईव-कला-गव्विएण मग्गिया वीणा । अप्पिया य सोहग्गमंजरीए । आसारिया अणेण । धरिओ पच्चासन्ने मत्त-मयगलो । तओ मणहर-सरेण वाईऊण वीणं सोविओ मयगलो । जाओ साहुवाओ । पुणो वि चिंतियं सोहग्गमंजरीए 'हद्धी न याणीयइ किं पि भविस्सइ ? एए वि रायतणया अईव-कला-कुसला दीसंति । ता जइ अभग्ग-पइन्ना पावेमि हिअ-इच्छियं दईयं ता सोहणं हवेज्ज' त्ति । एत्थंतरम्मि गहिया अन्नेण वीणा, धराविओ पच्चासन्ने विरहो नाम तरू । तओ वाईऊण वीणं फुल्लाविओ विरहओ । अन्नेण गहिया वीणा । वाईऊण मणहरं दूर-देसट्ठिओ वि आगरिसिओ हरिण-जुवाणओ । तओ गहिया अन्नेण, दिन्नो गयवरस्स इट्ठ-कवलो । वाईऊण वीणं मोयाविओ सो अद्धभुत्तं कवलं । [१०२]एवमाइ अन्नाणि वि अणेगप्पयाराइं दंसियाइं अन्नेहिं वि कुमारेहिं कोऊहलाइं । जाओ सव्वेसिं पि साहुवाओ । तओ गहिया सोहग्गमंजरीए वीणा । वाईआ अणाए जाव पसुत्तो तक्खणा गयवरो, वमिओ चिरकाल-भुत्तो कवलो, दूराओ चलण-मूले पत्तो मुद्ध-कुरंगओ[१०३], आमूलाओ वि फुल्लिओ विरहओ । किं बहुणा ?

तह कहवि तीए वीणा तइया कुमरीए वाईआ तत्थ ।
समं चिय जायाइं कुमार-कय-कोउगाइं जहा ॥६८०॥

एयं पुण अब्भहियं जाओ सव्वो वि रंगजण-नियरो ।
जं वज्जिय-वावारो चित्तालिहिओ व्व खणमेक्कं ॥६८१॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तो विम्हिया कुमारा लज्जोणय-वयण-पंकया सव्वे ।
जाया मुक्कतयासा चिंतिउमेवं समारद्धा ॥६८२॥

अत्थि इमा रइरूवा निरुवम-सोक्खाण कारणं जइ वि ।
जरहर-तक्खय-चूडामणि व्व दुलहा तह वि नूणं ॥६८३॥

राया वि विसन्नमणो चिंतइ एवं कए वि जइ कह वि ।
लहइ न निव्वुइमेसा धूया ता देव्व ! किं कुणिमो ? ॥६८४॥

अह पेम्म-परवसाए सविलास-वलंत-तार-नयणाए ।
कुमरीए मणेण समं कुमरस्स समप्पिया वीणा ॥६८५॥

महुर-सरा गुण-पवरा कर-गेज्जा तुंबयत्थणी वीणा ।
कंठ-विणिवेस-जोग्गा गहिया कुमरि व्व कुमरेण ॥६८६॥

भणियं अणेण— 'सुंदरं रायसुयाए विन्नाणं, किंतु वीणा न सुंदर' त्ति । रन्ना भणियं— कहं चिय ? कुमारेण भणियं— जओ न सुद्धो सरो । रन्ना भणियं— केरिसो सुद्धो होइ ?। कुमारेण भणियं— दढं सुइ-सुहंकरो । रन्ना भणियं— एसो वि एरिसो चेव । कुमारेण भणियं— अओ वि सुंदरो होइ । रन्ना भणियं— को पुण इह पच्चओ ? कुमारेण भणियं— वीणाए चेव सोहियाए उवलब्भइ । रन्ना भणियं— को एईए दोसो ? कुमरेण भणियं— दंडो मज्झ-पविट्ठ-कक्करग-संबंधेण सकलंको, तंती वि गब्भिणी वुड्ढ-वालेण । निरूवावियं रन्ना । जाव तहेव संजायं, विम्हिओ राया । संठविऊण आसारिया कुमरेण वीणा । एत्थंतरे भणिया बीअ-हिअयभूयाए भद्दाभिहाणाए पिय-सहीए सोहग्गमंजरी जहा— पियसहि ! यासारो(?) चेव अउव्वो, उवलक्खिज्जमाण-पयड-भेयं सर-मंडलं, विचित्तो गाम-राग-प्पवेसो, हिअयहारिणो मुच्छणुब्भेआ । ता सव्वहा अहिओ एस एयाए कलाए तिहुयणस्स वि भविस्सइ त्ति लक्खीयइ । कओ य तए पइन्ना-विसेसो । कुसंठाणो एस वामणगो । ता किमित्थ कायव्वं ? । सोहग्गमंजरीए भणियं— असंबद्धपलाविणि ! न एस वामणगो किंतु तुमं [१०४]तिमिरंतरिय-नयणा एवं पेच्छसि, ता पडिक्खसु खणं, सुणसु ताव एयं सवणामयं ति ।

एत्थंतरम्मि लोओ निच्चल-नयणो विमुक्क-वावारो ।
वीणा-मणहर-झंकार-मोहिओ सुविउमाढत्तो[१०५] ॥६८७॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तओ तं सव्वं पि वीणा-रव-मोहियं सुन्न-मणं रंग-जणं निरूविऊण बहुरूविणीए विज्जाए कयाइं कुमरेण[१०६] बहूणि रूवाणि, तेहिं वि भमिऊण रंग-मज्झे गहियाओ सोहग्गमंजरीए करंगुलीहिंतो पंच वि मुद्दियाओ, [१०७]पुरिसोत्तम-पत्थिव-हत्थाओ कणय-कडगो, अन्नेसिं पि रायतणयाईण संतियं गहिअं असेसं पि कुंडलाईयं[१०८] आभरणं । न लक्खियं केणावि । कओ रंग-मज्झे आभरण-पुंजो ।

तओ खणंतरं वाईऊण ठिओ कुमारो । विउद्धो रंग-लोओ । दिट्ठो आभरण-रासी । विम्हिओ सव्वो वि जणो । उल्लसिओ साहुवाओ— अहो ! अच्छेरयं ति भणंतेहिं गयणट्ठिएहिं सुर-सिद्ध-विज्जाहरेहिं मुक्का कुसुमंजली उवरि कुमरस्स । केवलं वामणयरूवत्तणेण विसन्नो सव्वो वि रंग-जणो, भणिउं पवत्तो जहा— जइ एयस्स कला- कोसल्लाणुरूवं रूवं भवेज्ज ता को अग्घं करेज्ज त्ति । इमं च सुणंती विसण्णा सोहग्गमंजरी । चिंतेइ जहा— मए नायं 'एसा चेव सही मह भाव-वियाणणत्थं एयं वामणगरूवं वाहरइ । जाव न केवलं, एस सव्वो वि रंगजणो वामणगरूवं एयं साहेइ । अहं पुण अमरकुमारोवम-रूवं पेच्छामि। ता किमेयमिंदयालं[१०९] ?' ति सोयवस-पमिलाण-वयण-कमलमालोइऊण रायकन्नं कयं साहावियं रूवं कुमारेण, दिट्ठं सव्वेण वि रंगमंडव-जणेण, भणियं च— अहो ! कुमारस्स कला-कोसल्लं, अहो ! रूव-संपया, अहो ! सोहग्गं, अहो ! सव्व-गुणाणं पि पगरिसो त्ति । इमं च सव्व-रंगजणुल्लावमायन्निऊण तुट्ठा सोहग्गमंजरी । तओ वियसिय-मुहकमलाए सविलासमुट्ठिऊण ईसि [११०]सज्झसवस-वेविरंगीए गहिऊण कोमल-कर-पल्लवेहिं परिमल-मिलंत-मुहलालि-जाला वरमाला पक्खित्ता पुरिससीह-कंठे । जयजयावियं मागहेहिं । कुमर-मागहेण वि पढियं—

विजयसेण-वसुहाहिव-नंदणु,
सयल-भुवण-जण-नयणाणंदणु ।
पुरिससीहु महि-मंडल-मंडणु ,
जयइ कुमरु रिउ-राय-विहंडणु ॥६८८॥

'अहो ! सुचरियं' ति उग्घोसियं सयल-लोएण । महुर-गंभीर-सर-तूर-समकालं पणच्चियं पणंगणाहिं, पारद्धो अविहव-विलयाहिं धवल-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सद्दो, कीरंति कोउगाइं, आगच्छंति वद्धावया, पविसंति अक्खवत्ताइं, आयरिज्जंति लोयाण उचिओवयारा, सम्माणिज्जंति सम्माणणिज्जा, दिज्जंति महादाणाइं, पयट्टो नयरम्मि [111]महूसवो, कयाओ हट्ट-सोहाओ, पइघरं बद्धाइं तोरणाइं, सोहणे[112] मुहुत्ते सोहग्गमंजरीए पाणिं गाहिओ कुमारो । सम्माणिऊण विसज्जिया सव्वे वि सेसा नरिंद-तणया । पुरिससीह-कुमारो उण गंधसिंधुर-कंधराधिरूढो सन्निहिअ-करेणु-आरूढाए सोहग्गमंजरीए समं सम्माणिज्जंतो नयर-लोएणं, नच्चंतेणं विलासिणी-सत्थेणं, वाइज्जंतेणं मंगल-तूरेणं, पढंतेण बंदि-विंदेण, पए पए किज्जंत-मंगलोवयारो पत्तो रायभवणं । तओ महाराय(राएण) समप्पियं पवर-पासायं । तम्मि सम्माणिज्जंतो य राइणा नाणाविह-विणोएहिं कीलंतो कालं गमेइ ।

इओ य सो मागहो कुमार-कय-संमाणो पत्तो संखपुरं । तत्थ य तेण कुमार-जणणि-जणयाणं नायरगाणं च कुमार-विरह-जलण-जाला-पलित्ताइं वीणा-विणोअ-गुणावज्जिअ-पुरिसोत्तम-रायसुया-परिणयण-वुत्तंताऽमयरसेण निव्वावियाइं हिययाइं । विजयसेणेणावि कुमार-दंसणूसुय-मणेण सिक्खविऊण पेसिया पहाण-पुरिसा, पत्ता पोयणपुरं, दट्ठूण कुमारं पणया चलणेसु । तेणावि गाढमालिंगिऊण सुहासणत्था पुच्छिया जणयाण कुसल-वुत्तंतं ।

तेहिं वि सगग्गयक्खरमंसु-जलोहलिय-लोयणजुएहिं ।
भणियं कुमार ! विरहम्मि तुज्झ जणयाण किं कुसलं ? ॥६८९॥

जम्हा कुणमाणा वि हु जणोवरोहेण रज्ज-कज्जाइं ।
चिंताइं अणिमिसच्छो देवो देवो व्व पडिहाइ ॥६९०॥

देवीए रुयंतीए उरत्थले थूल-बाह-बिंदूहिं ।
निवडंतएहिं निच्चं विहिओ हारावलि-विलासो ॥६९१॥

किं बहुणा ? तुह विरहे नयर-जणो सोय-गलिर-नयण-जलो ।
धाराहर-धीउल्लिय-तुल्लो जाओ असेसो वि ॥६९२॥

संदिट्ठं च तेहिं—

आराहणेणं बहु-देवयाणं,
लद्धो तुमं भूरि-मणोरहेहिं ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अम्हेहिं रोरेहिं निहि व्व पुव्वं,
न दीससे दिव्ववसेण इण्हिं ॥६९३॥

कुमर ! तुह विओए सोय-वज्जप्पहार-
प्पडिहय-हिअयाणं जं दुहं जायमम्हं ।
तणुअ-तणुअ-मंतेणेव तेणग्गलेणं,
अहरगइ-गएणं दुक्खिया नारया वि ॥६९४॥

तुह विरह-मुग्गर-हयं हिअयं अम्हाण एत्तियं कालं ।
फुट्टं जं न तुह च्चिय गुणेहिं बद्धं ति तं नूणं ॥६९५॥

ता वच्छ ! दयं काउं एज्ज दुअं, जंपिएण किं बहुणा ? ।
जीवंता पेच्छामो जेणऽज्ज वि तुज्झ मुह-कमलं ॥६९६॥

तो पुरिससीह-कुमरो गुरु-नेह-समुल्लसंत-अणुतावो ।
बाहजल-भरिय-नयणो चिंतिउमेवं समाढत्तो ॥६९७॥

गुण-दोस-वियार-वियक्खणेण जइ गुरुजणेण तइया हं ।
सिक्खविओ ता किं एत्तिएण जाओ म्हि अन्नमणो ॥६९८॥
यत:—

धन्यस्योपरि निपतत्यहित-समाचरण-घर्म-निर्वापी ।
गुरु-वदन-मलय-निसृतो वचन-रसश्चन्दन-स्पर्श: ॥६९९॥

गुरुवयण-अंकुसो नत्थि वारओ जाण वारणाणं व ।
उम्मग्गगामिणो ते कुव्वंति अणत्थ-वित्थारं ॥७००॥

पेच्छंति सुणंति य सुद्ध-वण्ण-रयणुज्जलाइं वयणाइं ।
जणणि-जणयाण निच्चं धन्न च्चिय रयणि-विरमम्मि ॥७०१॥

इय चिंतिऊण कुमरेण जंपियं जं पियं पिउजणस्स ।
तं कायव्वमवस्सं मए किमन्नेण बहुएण ? ॥७०२॥

इय भणिउं सह तेहिं वि पत्तो पुरिसुत्तमस्स नरवइणो ।
अत्थाण-मंडवे जाव अप्पणो मोयण-निमित्तं ॥७०३॥

रायाणं विन्नवइ ता पुरिसोत्तम-निवो पणमिऊण ।
पडिहारेण उरत्थल-फुरंत-हारेण विन्नत्तो ॥७०४॥

देव ! देवदंसणूसुआ दुवारे दुवे तावस-कुमारया चिट्ठंति । रन्ना

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भणियं— सिग्घं पवेसेहि । 'आएसो' त्ति भणंतेण पवेसिया तेण । उचिय-पडिवत्ति-पुव्वं निवेसिया आसणेसु । पुट्ठा य रन्ना— 'अवि सपरिवारस्स कुसलं कुलवइणो ? निव्विग्घं निव्वहइ तवोकम्मं ?, तावसकुमार-कर-कय-सलिल-सेय-निच्च-सद्दला निरुवद्दवा आसमदुमा ?, वुड्ढ-तावस-समप्पियनीवारा अनिवारा भमंति मण-पमोअया तवोवण-हरिण-पोयया ? । केण वा कज्जेण निय-पय-पंकएहिं पवित्तियं ठाणमेयं ?' ति । तेहिं भणियं— 'चउरासम-गुरुणो महारायस्स पभावेण सव्वत्थ कुसलं, केवलं—

कत्तो वि आसमपए संपत्तो अत्थि करिवरो एगो ।
जो वित्थिन्न-समुन्नय-कुंभत्थल-तुलिय-गिरिसिहरो ।।७०५।।

सव्वंग-लक्खणधरो दीहकरो दसण-दलिय-दुमविसरो ।
दुव्वार-गइप्पसरो मयगंध-भमंत-भमरभरो ।।७०६।।

सो य महाराय-जोग्गं हत्थि-रयणं । अन्नं च— किंचि आसमदुमाणं विद्दवं करेइ त्ति पेसिया अम्हे कुलवइणा । रन्ना भणियं - 'महंतो अणुग्गहो कओ अम्हं' । ति सम्माणिऊण ते विसज्जिया । पत्थिओ य हत्थि-गहणत्थं पत्थिवो । एत्थंतरे विन्नत्तो पुरिससीह-कुमारेण— 'देह मह आएसं, जेणाहमेव गहिऊण समप्पेमि तं महारायस्स' । दिन्नो रन्ना आएसो । नियत्तो सयं राया । चलिओ तुरंगमारूढओ कइवय-पहाणजण-परिवारो कुमारो । पत्तो तमुद्देसं । दिट्ठो अणेण महिवलय-गयगंध-रायगंध-महमहंतो सग्गाओ समागओ सुरगओ व्व गयवरो । मोत्तूण तुरंगं अग्गओ होऊण हक्किओ सो कुमारेण, धाविओ तयभिमुहं । संवेल्लिऊण पुरओ पक्खित्तमुत्तरिज्जं अणेण, परिणओ तत्थ हत्थी । कुमारो वि दंत-मुसलेसु दाऊण चलणे चडिओ हत्थि-खंधे, बद्धमासणं अणेण, अप्फालिओ कुंभत्थले करी करयलेण । एत्थंतरे परियणस्स पेच्छंतस्स चेव उप्पईओ हरगल-गवल-सामले गयणंगणे, गओ य अगोयरं नयणाणं, पत्तो खणेण वेयड्ढ-पव्वयं । ठिओ तत्थ तरुण-तरुसंड-मंडिउज्जाण-मज्झभागे, सो य कुंजररूवं मोत्तूण जाओ फुरंत-मणिकुंडलो विज्जाहरो ।

नमिऊण तेण भणियं कुमार ! कंकेल्लि-तरुतले एत्थ ।
वीसमसु खणं एक्कं जाव अहं रयणपुर-पहुणो ।।७०७।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रयणप्पह-विज्जाहर-रायस्स कहेमि तुज्झ आगमणं ।
इय जंपिऊण पत्तो खयरो अह चिंतए कुमरो ॥७०८॥

हरिओ म्हि किमिमिणा खेयरेण ? किं वा इमीए चिंताए ? ।
दिव्वं चेय पमाणं जणाण सुह-दुक्ख-संजणणे ॥७०९॥

पेच्छामि ताव संपइ पगाम-रमणिज्जमेय-उज्जाणं ।
तो वियरंतो पत्तो तमाल-तरु-मंडवं कुमरो ॥७१०॥

सोऊण तत्थ इत्थी-संलावं पेच्छए लयंतरिओ ।
कुसुम-सयणिज्ज-संठियमेक्कं कन्नं सही-सहियं ॥७११॥

तो चिंतए कुमरो का वि इमा कमल-दल-विसालच्छी ।
विरह-दसाइ उदग्गं कस्स वि साहेइ सोहग्गं ॥७१२॥ जओ—

इमीए मुह-पंकयं कय-समत्त-नेत्तूसवं,
कलंक-परिवज्जिअं पुलइउं ससी लज्जिओ ।
विसेस-सिरीययं समुवलद्धुकामो धुवं,
नडाल-नयणानलं तिणयणस्स संसेवए ॥७१३॥

अह कन्नाए भणियं सहि चूयलए ! गिहं विमोत्तूण ।
उज्जाणमागया हं महु-समय-विसेस-सिसिरमिणं ॥७१४॥

कुसुमाउहेण सुलहेहिं कुसुम-बाणेहिं भिज्जमाणाए ।
मह उज्जाणं एयं पि पज्जलंतं व पडिहाइ ॥७१५॥ तहाहि-

जालाहिं पिव मंजरीहिं हिययं दूमंति चूयदुमा,
इंगाल व्व न दिंति लोयण-सुहं कंकिल्लिणो पल्लवा ।
संतावंति तणुं पलास-कुसुमुक्केरा फुलिंग व्व मे,
भिंगालीउ वि संहरंति हरिसं धूमावलीओ विव ॥७१६॥

कयं कयलि-वीयणं, कुसुम-सत्थरो सज्जिओ,
विणिम्मियमुरुत्थले, बहल-चंदणालेवणं ।
भुयासु वलयावली विरइया मुणाली तए,
तहा वि न नियत्तए सहि ! सरीर-दाहो महं ॥७१७॥ किं च,

पंचसरो वि हु मयणो सर-लक्खं मज्झ हियय-लक्खम्मि ।
जं मिल्लइ तेण मए लक्खिज्जइ एस लक्खसरो ॥७१८॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सुहयस्स दंसणं तस्स दुल्लहं मज्झ मंदभग्गाए ।
ता इण्हिं मज्झे हं मरणं चिय अप्पणो सरणं ॥७१९॥

सोऊण इमं कुमरो चिंतइ तस्सेव जीवियं सहलं ।
जम्मि अणुरत्त-चित्ता खिज्जइ एवं इमा बाला ॥७२०॥

कन्ना सहीहिं भणिया 'सहि ! मा उत्तम्म धरसु धीरत्तं ।
हरिणच्छि ! निच्छियं ते [११३]होहिंति मणोरहा सहला ॥७२१॥

पोयणपुरम्मि जम्हा पट्ठविओ पुरिससीह-कुमरस्स ।
आणयणत्थं ताएण अज्ज विज्जुप्पहो खयरो' ॥७२२॥

अह निय-नामं सोउं फुरंत-हरिसो विचिंतए कुमरो ।
नूणं इमीए बालाए कारणेणाहमाणीओ ॥७२३॥

एत्थंतरे उविंतं दट्ठुं विज्जाहराण संघायं ।
कुमरो नियत्तिऊणं पत्तो कंकेल्लि-तरु-मूले ॥७२४॥

उचिय-पडिवत्ति-पुव्वं पवेसिओ तेहिं रयणउर-नयरे ।
ठविओ विउलम्मि विमाण-मणहरे रयण-पासाए ॥७२५॥

भणिओ समए रयणप्पहेण खयराहिवेण सप्पणयं ।
'सुण रायपुत्त ! अवहार-कारणं अप्पणो एयं ॥७२६॥

अत्थि चउण्हं पुत्ताणमुवरि मे रयणमंजरी धूया ।
अहिगय-कलाकलावा संपत्ता जोव्वणं सा वि ॥७२७॥

मह पणमणत्थमत्थाण-मंडवे जणणि-पेसिया पत्ता ।
तीए रूवाइसयं दट्ठुं भणियं मए एवं ॥७२८॥

सो नत्थि नरो मज्झे इमीइ रूवेण जो वरो जुग्गो ।
तत्तो विज्जाहर-मागहेण इक्केण संलत्तं ॥७२९॥

सिरि-विजयसेण-रायस्स नंदणो रूव-तुलिय-कंदप्पो ।
नीसेस-कला-निलओ नामेणं पुरिससीहो त्ति ॥७३०॥

पोयणपुरम्मि चिट्ठइ संपइ पुरिसोत्तमस्स पासम्मि ।
सो रयणमंजरीए देव ! इमीए वरो उचिओ ॥७३१॥

इय सोऊणं तीए तहाणुराओ तुमम्मि संजाओ ।
जह विज्जाहर-कुमराण सहइ नामं पि कह वि न सा ॥७३२॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कत्थ वि रइमलहंती अपत्त-निद्दा-सुहा निसासुं पि ।
करयल-कलिय-कवोला चिट्ठइ तुह संकहक्खित्ता ॥७३३॥

एयं नाऊण मए कुमार ! आणाविओ तुमं एत्थ ।
ता रयणमंजरिं परिणिऊण मह कुणसु परिओसं' ॥७३४॥

कुमरो जंपइ 'जं आणवेसि सज्जो म्हि तत्थ किं बहुणा ? ।
न कुलीण-जणो जाणइ गुरूण पडिकूलमायरिउं' ॥७३५॥

ता रयणमंजरीए पाणिग्गहणं कराविओ कुमरो ।
गुरु-रिद्धि-पबंधेणं रयणप्पह-खेयरिंदेण ॥७३६॥

तह संजाया दोण्ह वि परोप्परं ताण निब्भरा पीई ।
ताणि जह विरह-दुक्खं न खमंति निमेसमेत्तं पि ॥७३७॥

अह रयणमंजरीए समं कुमारो मणोरमुज्जाणं ।
संपत्तो तत्थ वि तस्स निब्भरं कीलमाणस्स ॥७३८॥

केणावि खेयरेणं अवहरिया रयणमंजरी भज्जा ।
तव्विरहम्मि कुमारो विलविउमेवं समाढत्तो ॥७३९॥

'हा चंद-चारु-वयणे ! वयणं दंसेसु अत्तणो हसिरं ।
हा देवि ! दीह-नयणे ! सिणिद्ध-नयणेहिं मं नियसु ॥७४०॥

हा अमय-महुर-वयणे ! पडिवयणं देसु मज्झ दीणस्स ।
हा कुंद-धवल-दसणे ! धवलसु मं दसण-जुण्हाहिं ॥७४१॥

हा सरल-मिउ-भुयलए ! परिरंभसु भुय-लयाहिं मज्झ त्ति ।
हा कत्थ गयासि तुमं मुद्धे ? मुद्धं जणं मोत्तुं ॥७४२॥

इय विलवंतो कुमरो संठविओ ससुर-पमुह-खयरेहिं ।
पट्ठवइ खेयरे तीइ सुद्धि-कज्जेण सव्वत्थ ॥७४३॥

अन्न-दियहम्मि तेसिं मज्झाओ खेयरो सुवेगो त्ति ।
वेगेणाऽऽगंतूणं इमं कुमारस्स विन्नवइ ॥७४४॥

तुम्ह निओगेणाहं उत्तर-सेढीए[११७] खयर-नयरेसु ।
देविं गवेसमाणो संपत्तो सूरपुर-नयरं ॥७४५॥

दिट्ठं च तं सव्वमेव उव्विग्ग-जणं सव्वाययण-संपाइय-पूओवयारं दिसि दिसि खिप्पंत-बलि-सगड-सहस्स-संकुलं, चच्चर-समारद्ध-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संतिकम्मं । पुच्छिओ मए एगो विज्जाहरो— भद्द ! किमेयं ? तेण वुत्तं सखेयं— पहुणो दुन्नय-पायवस्स कुसुमुग्गमो त्ति । मए भणियं— कहं चिय ? तेण भणियं— सुण, अत्थि इत्थ वज्जवेगो विज्जाहर-राओ । तेण मयण-वसवत्तिणा कस्स वि सप्पुरिसस्स पिययमा अवहरिऊण इहाणीया । भणिओ इमो नयरदेवयाए 'भो भो ! अजुत्तं तुह एयं संपत्त-विज्जाहरनरिंद-सद्दस्स काउरिस-चरियं ।' तहा वि जाव न मिल्लए[११५] तयणुरागं ताव संजाओ भूमि-कंपो, निवडियाओ उक्काओ, समुब्भूओ निग्घाओ । तओ संजायासंकेहिं पारद्धं नायरएहिं संतिकम्मं । मए भणियं— कहिं पुण सा चिट्ठइ ? तेण भणियं— नरिंद-मंदिरुज्जाणे तिलय-तरुणो तले । तओ मए गंतूण गयणयल-गएण दिट्ठा सखेया खेयरी-वंद्र-मज्झ-गया देवी रयणमंजरी, भणिया य— 'देवि ! नाया तुमं । न तए खिज्जियव्वं । देवीए वज्जरियं— अज्जउत्त-[११६] घरणी-सद्दमुव्वहंतीए को मह खेओ ? । तओ तं पणमिऊण समागओ हं । विन्नाय-वुत्तंता मिलिया विज्जाहर-नरिंदा । कुमारेण भणियं— 'सामपुव्वगमेव जायणत्थं तस्स पेसेह कं पि दूयं' । मेहघोसेण भणियं— 'स-भज्जाणयणे वि दूय-पेसणं अउव्वो सामप्पओगो !' । संगामसीहेण वुत्तं— 'तस्स वि दूय-पेसणं महंतो मे अणक्खो !' घणघोसेण भासियं— 'न संपन्नमभिलसियं' । सुघोसेण जंपियं— 'देवो जाणइ' त्ति । विहसियं सीहरहेण, उत्ताडियं मणिप्पहेण[११७], पयंपियं घणरहेण, नीससियं सूरतेएण, न चलियं अनिलवेगेण । तओ '[११८]सुहडत्तणेण वीरिक्करसाणं असंमओ वि खेयराणं । एसा ठिइ त्ति पडिबोहिऊण ते पेसिओ सिक्खिविऊण विज्जुप्पभो दूओ । गओ सूरपुरं, पत्तो वज्जवेग-विज्जाहर-राय-समीवं । भणिओऽणेण सो जहा-आणत्तं पुरिससीह-कुमारेण—

जे हुंति उत्तम-नरा उत्तम-मग्गेण ते पयट्टंति ।
न हि कइया वि समुद्दा निय-मज्जायं विलंघंति ॥७४६॥

जेण भुवणे अकित्ती पसरइ लहुयत्तणं लहइ अप्पा ।
हिम-हय-कमलाइं पिव सुयण-मुहाइं मिलायंति ॥७४७॥

जेण पणस्सइ बुद्धी उवहासो तह वियंभए लोए ।
लहिऊण य अवगासं सत्तुगणो होइ तुट्ठमणो ॥७४८॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तमुभय-लोय-विरुद्धं सप्पुरिसा आयरंति न कयावि ।
परभज्जा-हरणं पुण विरुद्धमिणमुज्झ मा मुज्झ ।।७४९।।

ता झत्ति समप्पसु रयणमंजरिं पुरिससीह-कुमरस्स ।
तुह अन्नहा भविस्सइ संदेहो जीवियव्वे वि ।।७५०।।

एवं विज्जुप्पहेण भणिए [119]गुरुय-रोसावेग-विगय-हियाहिय-वियारो वज्जवेगो वुत्तुं पवत्तो— 'कहं धरणिगोयरो भविय मज्झ आणं पेसेइ ?, ता न पेसेमि रयममंजरिं । साहेसु जस्स साहियव्वं' ति ।

[120]निव्वूढो विज्जुप्पहो समागओ पुरिससीह-समीवे ।
पणमिऊण विन्नत्तोऽणेण पुव्वुत्त-वुत्तंतो ।।७५१।।

एयं सोऊण खुहिया खेयर-भडा वियंभमाणाऽमरिसवसेण । हुंकारियं मेहघोसेण, रण-रहसुच्छाह-समुच्छलिय-पुलएण अप्फालिओ भुओ संगामसीहेण, रोस-रज्जंत-नयणेण खग्गम्मि निवाडिया दिट्ठी सुघोसेण, रिउप्पहार-विसममुड्ढामियं वच्छत्थलं घणघोसेण, कोवानल-जलिएणं पि अंधारियं मुहं सीहरहेणं, उव्विल्लिउद्ध-भुयजुयं वियंभियं मणिप्पहेण, पयंपिय-पुव्वयं समाहयं धरणितलं घणरहेण, आसन्न-समर-परिओस-फुट्टवणमुहेण ऊससियं सूरतेएण, भरिय-नीसेस-गिरिगुहा-कंदरं हसियं अनिलवेगेण ।

तओ भणियं पुरिससीह-कुमारेण— आसन्न-विणिवाओ, पणट्ठ-बुद्धिविहवो य सो तवस्सी, तो अलं तम्मि संरंभेण । चिट्ठह तुब्भे, अहं पुण खग्गदुइओ इओ गंतूण दंसेमि से भूमिगोयर-परक्कमं । विज्जाहरेहिं भणियं— कुमार ! असमत्थो सो तुम्ह भिच्चस्स वि परक्कमं पेक्खिउं, किं पुण तुम्हाणं ? ति । एत्थंतरे मिलियं विज्जाहर-बलं, उवणीयं विमाणं, आरूढो तम्मि कुमारो, समाहयं मंगलतूरं, अणुकूल-पवण-पणच्चमाण-धवल-धयवडं चलियं विज्जाहर-बलं, समुच्छलिओ जयजया-रवो, निवडिया कुसुम-वुट्ठी, समुब्भूओ आणंदो ।

एवं च वच्चंतं पत्तं सूरपुरासन्नं सयलं पि सेन्नं । मुणियं वज्जवेगेण । अवन्नाए पेसिओ अणेण वीरसेणो सेणावइ, समागओ महया विज्जाहर-बलेण । आगयं पवर-बलं ति कुमारसेन्ने उच्छलिओ कलयलो । आहया समर-भेरी, पवत्ता सन्नहिउं विज्जाहरा, गहियं कुमारेण खग्ग-रयणं । एत्थंतरे समागओ दूओ, भणियं च तेण— 'भो भो विज्जाहरा !

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वज्जवेग-सामिणो सेणावइणा वीरसेणेण पेसिओ हं, आणत्तं च तेण जहा भूमिगोयरं पुरओ काऊण तुम्ह अप्पडिहयप्पयावेण देवेण वज्जवेगेण सह समरसद्धा, पयट्टा य तुब्भे देव-रायहाणिं, ता किं इमिणा किलेसेण ?, सज्जा होह । समाणेमि अहं देवस्स एग-भिच्चो तुम्ह विग्गहं' ति । एयं च सोऊण 'वज्जवेगो नागओ' त्ति विमुक्कं कुमारेण खग्ग-रयणं, सेणावइ आगओ त्ति मउलियं विज्जाहर-बलं, 'अहं पि इह सेणावइ' त्ति उट्ठिओ सीहरहो, धाविओ वीरसेणाभिमुहं, पवत्तमाओहणं । मेहजालेण विअ च्छन्नमंबरं सर-नियरेण, निग्घाया विअ परोप्परं पडंति खग्ग-प्पहारा । मिलिया सेणावइणो, लग्गं गया-जुज्झं, अवरोप्पर-कयप्पहारा रुहिरमुग्गिरंता पडिया दो वि धरणिवट्ठे, मुणिय-वुत्तंतेण वज्जवेगेण दवाविया समर-भेरी । आणत्तं च— रएह गरुड-वूहं । तओ सन्नहिउं पवत्तं वज्जवेग-बलं । कहं ?—

ढोइज्जंति भडाणं सन्नाहा जच्च-कणय-रयणमया ।
दिप्पंतोसहि-वलया, समंतओ सेलकूड व्व ॥७५२॥

भड-रुहिर-लालसाओ जम-जीहाओ व्व खग्ग-लट्ठीओ ।
दुज्जण-वाणीओ विव भल्लीओ भेय-जणणीओ ॥७५३॥

वेसाओ व धणुहीओ गुण-बद्धाओ वि पयइकुडिलाओ ।
पर-मम्म-घट्टणपरा पिसुण-पबंध व्व नाराया ॥७५४॥

तत्थ—

एवमुवणेज्जमाणे रणोवगरणम्मि केणइ भडेण ।
सन्नाहो न कओ च्चिय दइया-थण-फरिस-लुद्धेण ॥७५५॥

केणावि समरसद्धा-निबद्ध-गाढग्गहेण अवगणिया ।
थोरंसुय-सित्त-थणी निय-दईया रोयमाणी वि ॥७५६॥

अन्नेण सिढिल-वलया वियलिय-कंची गलंत-बाहजला ।
एसोऽहमागओ झत्ति एवमासासिया दइया ॥७५७॥

अन्नस्स अप्पियं पीयमाणमवि पाणवट्टयं भरियं ।
घोरंसुएहिं उवरिट्ठिया इहइ आइसुट्ठुयरं ॥७५८॥

मुच्छाए चेव अन्नस्स दंसिओ पिययमाए अणुराओ ।
दइयाइ कयं मंगलमवरस्स विलक्ख-हसिएण ॥७५९॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इय विविह-वियार-पिआ-पयडिय-पणएहिं खेयर-भडेहिं ।
सहिओ विणिग्गओ वज्जवेग-विज्जाहर-नरिंदो ॥७६०॥

कुमार-सेन्ने वि ताडिया कुविय-कयंत-हुंकार-सन्निभा वज्जप्पहार-फुट्टंत-गिरि-सद्द-भीसणा संगाम-भेरी, रण-रहसुब्भडाणं विज्जाहर-भडाणं उच्छलिओ कलयल-रवो । दिज्जंत-विलेवणं, विअरिज्जंत-कुसुममालं, पिज्जंत-पवरासवं, सम्माणिज्जंत-सुहडं, वन्निज्जंत-पडिवक्खं, उब्भिज्जंत-भडचिंधं, पलंबिज्जंत-चामरं, रइज्जंत-वूहं, मंडिज्जंत-छत्तं, संमाणिज्जंत-गमणमंगलं, उग्घोसिज्जंत-जयसद्दं, सुवंत-पुन्नाहघोसं, सन्नद्धं कुमार-सेन्नं । निवेसिया चक्कवूह-रयणा । ठिओ वूहस्स अग्गओ घणरहो, वामेण कणयप्पभो, दक्खिणेणं मणिप्पभो, पच्छिमेण मेहघोसो, मज्झे अनिलवेगो, सयं पि कुमारो विमाणारूढो रयणप्पहप्पमुह-विज्जाहर-परिगओ ठिओ गयण-मज्झे । आसन्नीहूयं वज्जवेग-बलं ।

पुच्छिओ कुमारेण परबल-राईणं नामाइं विज्जुपहो । भणियं च तेण— देव ! तुंडे ठिओ गरुडवूहस्स सुदाढो, वामपासे विज्जुमुहो, दाहिणपासे मेहमुहो, मज्झे अग्गिमुहो, पिट्ठओ वज्जवेगो । परबल-दंसण-पहिट्ठं चलियं कुमार-बलं । वज्जंत समर-तूराइं, वग्गंत-विज्जाहराइं, उग्घोसिज्जंत-पुव्वपुरिस-गोत्ताइं, विमुक्क-सीहनायाइं, कर-कड्डिय-करवालाइं, चंड-भुयदंड-कुंडलिय-कोयंडारोविय-कंडाइं, उग्गीरिय-गरुअ-मोग्गराइं, फुरंत-कराल-कुंतवग्ग-हत्थाइं, उप्पाडिय-सेल्ल-भल्ल-वावल्ल-पट्टिस-मुसंढि-भीसणाइं, अद्धचंद-छिन्न-छत्तचिंधाइं, कोउगेण खुरुप्प-कप्पिय[१२१]-विवक्ख-सीस-केसाइं, मिलियाइं दो वि बलाइं ।

तओ पुरिससीह-कुमारो किरणजाल-उज्जोइय-सयल-दिसिचक्कं देवया-विइन्नं खग्गरयणं करे काऊण परबलस्स पुरओ ठिओ । असि-रयण-पभावेण खयर-भडाणं झड त्ति पडियाइं सत्थाइं पायवाणं पवणेण व पक्क-पत्ताइं । [१२२]ता सुर-सिद्धेहिं नहंगणाओ मुक्काओ कुसुम-वुट्ठीओ तुट्ठेहिं कुमर-उवरिं । जय-जय-सद्दो य उग्घुट्ठो ।

अवि य—

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

निवडिय-पहरण-निवहा सव्वे खेयर-भडा गलियदप्पा ।
सुत्तं पिव मत्तं पिव मयं व मन्नंति अप्पाणं ॥७६१॥

[123]ता वज्जवेग-खयरो पभावमच्चब्भुयं कुमारस्स ।
दट्ठुं कंठ-निवेसिय-परसु य कंबलय-पावरणो ॥७६२॥

महि-निहिय-सिरो नमिऊण अग्गओ रयणमंजरिं काउं ।
विन्नवइ जोडिय-करो कुमार ! मह खमसु अवराहं ॥७६३॥

गिण्हसु निम्मल-गुण-गुंफ-संगयं रयणमंजरिं देविं ।
अमिलाण-सील-परिमल-मणोरमं कुसुम-मालं व ॥७६४॥

तह पडिवज्जसु रज्जं वच्चामि तवोवणं अहमियाणिं ।
इय जंपिऊण सव्वं तहाकयं वज्जवेगेण ॥७६५॥

कुमरो वि हु रयणसिहं रयणप्पह-जेट्ठ-नंदणं ठवइ ।
सयल-जण-सम्मएणं रज्जपए वज्जवेगस्स ॥७६६॥

तो रयणमंजरिं गिण्हिऊण परिओस-पसर-पडिपुन्नो ।
रयणपुरं संपत्तो विज्जाहर-नियर-परिअरिओ ॥७६७॥

ठिओ तत्थ कंचि कालं । तओ जणणि-जणय-संदेसयं सुमरंतो दिप्पंत-मणिमय-विमाणमाला-संछाइय-नहयलो रयणप्पह-रयणसिह-विज्जुप्पह-पमुह-महाविज्जाहर-वंद[124]- परिगओ रयणमंजरीए समं पत्तो पोयणपुरं । [125]पुरिसोत्तमस्स रन्नो धूयं रयण-कणयाहरण-विहिय-सोहं सोहग्गमंजरिं पिउ-पेसिय-पहाण-पुरिसे य विमाणमारोविऊण पत्तो रयणकूड-पव्वयासन्नं पायालभवणं । तयब्भंतरे पट्ठविय-विज्जाहर-वयण-विन्नाय-वुत्तंताए वणदेवयाए पवर-पाहुड-प्पयाण-पुव्वं समप्पियाओ दुवे लीलावइ-कमलावइ-पियाओ । घेत्तूण चलिओ पत्तो विजयपुरं । तत्थ अरिदमण-रायस्स धूयं नाणाविह-रयणाहरण-किरणुक्केर-कप्पिय-सक्कचाव-चक्कं रयणावलिं घेत्तूण पत्तो कंचणपुरं । तत्थ [126]वइरसीह-नरवइणो धूयं कणय-रयणालंकियं कणयावलिं घेत्तूण गओ सीहपुरं । तत्थ सीहविक्कमस्स रन्नो धूयं निरुवम-रूवरेहं मयणलेहं घेत्तूण पत्तो सिरिउरं । तत्थ पुरंदरस्स रन्नो धूयं मणहर-रयण-सुवन्नाहरण-चिंचइय-देहं चंदलेहं घेत्तूण पत्तो संखउरासन्नं ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गयणंगणाओ किं पबल-पवण-उप्पाडिओ पुणो पडइ ।
एसो असेस-रयणायराण रयणाण उप्पीलो ॥७६८॥ किं च—

निरालंबण-गयण-मग्ग-चंकमण-खेय-निव्विन्नं ।
एयं धरणीवलयम्मि सयलमोअरइ गहचक्कं ॥७६९॥

पुन्नफल-विसय-संदेह-विहुर-हिययाण धम्मिय-जणाणं ।
पच्चय-निमित्तमेसो किं वा सग्गो सयं एइ ? ॥७७०॥

एवं वियप्पमालाउलेहिं लोएहिं सच्चविज्जंती ।
पत्ता विमाण-पंती रयण-वियाणं व पुरमुवरिं ॥७७१॥

तओ विज्जाहरेहिं अग्गओ आगंतूण कुमारागमणेण वद्धाविओ विजयसेण-महाराओ । तेणावि परिओसवस-विसप्पंत-हियएण आणत्तो नयरे महूसवो ।

तो ठांवि ठांवि निम्मविय मंच, वित्थरिय विविह-रयणप्पवंच ।
नच्चंत-विलासिणि विजिय-रंभ, कय कयलियलंकिय कणय-खंभ ।
नीसेस-लोय-नयणाणुकूल, ओलंबिय मणि-मुत्तावचूल ।
पल्लविय गयण-पट्टंसुओह, सव्वत्थ पयट्टिय हट्ट-सोह ।
कुसुमोवहार पइ पइ विमुक्क, घरि घरि विइन्न मोत्तिय-चउक्क ।
पहि पहि निबद्ध तोरण-महंत, जणि जणि पिणद्ध आभरण-कंत ।
पडमंडव विरइय छत्तसूर, गंभीर-घोस वज्जंत तूर ।
उल्लासिय धय गयणग्ग-लग्ग, कुंकुम-रसि सिंचिय रायमग्ग ।

[घत्ता]

इय हरिस-समुब्भवि कयइ महूसवि पवरि पढंतइं बंदियणि ।
विप्फारिय-नयणिहिं दिट्ठउ रमणिहिं कुमरु पविट्ठउ निय-भवणि ॥७७२॥

निवडिओ जणणि-जणयाण पय-पंकए । तेहिं परिरंभिओ य चुंबिओ मत्थए । अट्ठ वहुयाओ पणयाओ । तयणंतरं धरणितल-लुलिअ-सिर-हरिस-भर-निब्भरं पिउ-गिराए निसन्नो सुवण्णासणे । दसए खयर-पणमंत-मणि-भूसणो,महुर-वयणेहि जणएहिं संभासिओ सव्व-वुत्तंतो कहइ सो हरिसिओ । तं सुणेऊण वियसंत-लोअण-जुआ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जणणि-जणया य संजाय-विम्हय-जुया भणहिं— ता वच्छ ! एयं पि जुत्तं कयं दंसियं जं चिराओ वि मुह-पंकयं ।

अम्ह पउराण तह तुज्झ विरहग्गिणा, डज्झमाणेण सव्वंग-संसग्गिणा,
उण्ह-सासेहिं जे सरवरा सोसिया, पुण वि नयणंसु-सलिलेण ते पोसिया ॥७७४॥

भणइ तो कुमरु जं तुम्ह दूरं गओ, वंचिओ तं अहं चेव निब्भग्गओ ।
चत्तु चिंतामणी जेण गुणगामणी, सो य वंचिज्जए न उण चिंतामणी ॥७७५॥

एवं पणय-निब्भर-परोप्परालावेहिं कंचि कालं ठिया जणय-तणया । रन्ना विसज्जिओ कुमारो गओ नियावासं । कुमारेणावि संमाणिऊण विसज्जिया विज्जाहर-नरिंदा, गया सट्ठाणं । कुमारो वि अट्ठहिं पणइणीहिं समं सुर-कुमारो व्व अच्छराहिं विसयसुहमणुहवइ । अन्नया मज्झण्ह-समए मणिमय-गवक्ख-गओ भणिओ भज्जाहिं— अज्जउत्त ! चिरं कीलियं सारिज्जएण, संपयं कुणसु पण्होत्तर-विणोयं । कुमारेण वुत्तं— 'किमजुत्तं ?'

तओ चंदलेहाए पढियं—

तुरयस्स कं पसंसंति ? साहुणो किं तवेण विहुणंति ? ।
किं वंछइ कामियणो ? तिन्नि वि भण एग-वयणेण ॥७७६॥

कुमारेण कहियं— **रयं** । वेगं, बज्झमाण-कम्मं, निहुवणं च । संपयं मम सुणसु—

कं चंदो ? कं हत्थी ? किं तुच्छो वहइ ? कं च मरुदेसो ?।
किं देइ पहू तुट्ठो ? पंच वि भण एग-वयणेण ॥७७७॥

चिंतिऊण भणियं चंदलेहाए— **मयं** । हरिणं, दाणं, अहंकारं, करहं, वंछियं च ।

[**द्वे एकालापके ।**]

मयणलेहाए पढियं—

कीदृशो दंदशूकः स्यात् ? कः संग्रामे भयंकरः ? ।
भर्तुर्वियोगमापन्ना कीदृशी दृश्यतेऽङ्गना ? ॥७७८॥

कुमारेण कहियं— **विषादंती** । विषा-विषवान्, दंती-हस्ती, विषादं कुर्वती च ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इण्हिं मम सुण—

को धातुः प्राप्त्यर्थो, वदन-पदं कीदृशं वनं ब्रूते ? ।
कं वीक्ष्य तुष्यति शिखी ? वृद्धत्वे स्यान्मुखं कीदृक् ? ॥७७९॥

मयणलेहाए कहियं— **नीरदं** । नीर्धातुः १, अदं=दकार-रहितं २, नीरदं मेघं ३, विगतदंतं च ४ । [**व्यस्तसमस्ते** ।]

कणगावलीए पढियं—

किं न विजेतुं शक्यं ? प्राणभृतः कं विना न जीवंति ?।
वन्नंति केरिसं वा तवस्सि-वग्गं ? कहसु कुमरु ॥७८०॥

कुमारेण कहियं— **खमाहारं** । खं-इंद्रियं, आहारं-भोजनं, खंति-भोयणं च ।

इण्हिं मज्झ सुण—

कीदृग् दृष्टापराधस्य भर्तुर्वक्त्रं प्रियां प्रति ?।
केरिसं बिंति संसारसिंधुं ? कणगावलीए कहियं— ॥७८१॥

अलसदुत्तरं । अस्फुरत्प्रतिवचनं । अलसेहिं = मंदेहिं, दुत्तरं = दुल्लंघं च । [**भाषाचित्रके** ॥]

रयणावलीए पढियं—

कीदृग् मुनिः सुहृदि वैरिणि वा ? ।
नृणां कः क्षेमंकरस्त्रिजगतोपि भयंकरः कः ? ।
स्वैरांगना निशि किमिच्छति कांतपार्श्वं
यांती ? परस्य न करोति कदर्थनां कः? ॥७८२॥

कुमारेण कहियं—

सदयतमः । **समः** = सदृशः । **दमः** = इन्द्रियजयः । **यमः** = कृतांतः । **तमः** = तिमिरं । अतिशय कृपालुश्च ।

संपयं मे सुण—

वहति करभः कं ? कं तुष्टो ददाति पतिः ? ।
नृणां द्रविणरहितं प्राहुः कं ? कं बिभर्त्ति भुजंगमः ?।
हिमगिरिसुता-कंठाश्लेषप्रियं प्रवदंति कं ?।
भजति सुमतिर्मत्वा कीदृग् जिनेन्द्रमतौषधं ? ॥७८३॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रयणावलीए कहियं—

भवरोगहरं । भरं = भारं । वरं = प्रसादं । रोरं =[127]दरिद्रं । गरं=विषं । हरं=शंकरं । कर्मव्याधि-विध्वंशकं च [मंजर्यों] ॥

[128]कमलावईए पढियं—

भवति किं सुकृताद् ? हरिराह कश्चरति खे ? किमु वाजि विभूषणं ?।

भरत-भाषित-गीत-कलाविदां स्फुरति चेतसि कः ?(कुमारेण [129]कहियं) - **स्वरविस्तरः** ॥७८४॥

'स्वः' = स्वर्गः । हे 'अ!'= विष्णो । 'विः' = पक्षी । 'तरः'= वेगः । षड्जादीनां स्वराणां विचारश्च । ममावि सुण—

कीदृग् चक्रं ? कति दर्शनानि? माताह कीदृशो धर्म्मः ?।

तं भजतः स्यात् कीदृशः ? ([130]कमलावईए भणियं)- **कलुषडंबरमणीयः** ॥७८५॥

कं=मस्तकं लुनाति **कलु** । **षट्** संख्यानि । हे **अंब** = जननि । **रमणीयः**= रम्यः । **कलुष डंबरं** = पापस्फूर्जितं. **अणीयः** अल्पतरं [**लिंगचित्रे**]

[131]लीलावईए पढियं—

क्षपायां विरहात्पक्षी को दुःखार्त्तो भवेदिति ।
प्रश्नं विदधदत्रैकः कीदृशं प्रापदुत्तरं ॥७८६॥

कुमारेण कहियं — **कोकः** । कोऽकः = सुखरहितः इति प्रश्ने उत्तरं । **कोकश्चक्रः** । ममावि सुण—

कामिनां का मनोज्ञेति प्रश्नो यः केनचित् कृतः ।
तस्मिन्नेवोत्तरं तेन लेभे कथय कीदृशं ? ॥७८७॥

[132]लीलावईए कहियं— **कामधुरा** । **का मधुरा** = मनोज्ञेति प्रश्ने उत्तरं **कामधुरा** = कामस्य स्मरस्य धुर्भरः । [**सदृशोत्तरे** ।]

सोहग्गमंजरीए पढियं—

कः स्थैर्यं नैति ? को वध्वाः पूर्वं कान्तेन गृह्यते ? ।
भारं वहति कः ? को वा स्त्रीणां गुरूपमां व्रजेत् ? ॥७८८॥

कुमारेण कहियं— **करभः** । **कौ** = वायुः । **करः** = पाणि ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

करभ = उष्ट्रः । **मणिबंध** = कनिष्ठिका मध्यं च । ममावि सुण—

किमभिलषति लोकः ? कीदृशं ब्रूत धातु—
विंहगमिह ? तुरंगस्याननने न्यस्यते किं ?
वदत सलिलशून्यां निम्नगां कीदृशीं ? कां
विदितसकलशास्त्रोप्यश्नुते नाल्पपुण्यः ? ॥७८९॥

सोहग्गमंजरीए [133]भणियं—

कविकलां । **कं** = सुखं । **कविं** । **कस्य** = ब्रह्मणो । **विं** = पक्षिणं । **कविकं** = तुरगमुखस्य लोहबंधनं । **क-विकलां** = केन = पयसा, विकलां = ऊनां । कवीनां कलां च ।

रयणमंजरीए पढियं—

ऋषभस्य कीदृशौ भरतबाहुबलिनौ ? प्रभुर्वदति केन ? ।
ज्वलति शिखी, कस्मैकेन किं वितीर्णं शिवाय स्यात् ? ॥७९०॥

कुमारेण कहियं—

नंदनौ विभवेधसा । **नंदनौ** = पुत्रौ । हे **विभो** = प्रभो । **एधसा** = इंधनेन । **साधवे** = मुनये । **भविना** = संसारिणा । **ओदनं** = भक्तं ॥

ममावि सुण—

तन्वङ्ग्यास्तनुजां तां वीक्ष्य कामी किं वक्ति तां प्रति ?।
ब्रूते दर्प्पवतां श्रेणिः का वैराग्यनिबंधनं प्रति ? ॥७९१॥

रयणमंजरीए कहियं—

राजते तनिमा तव । **राजते** = शोभते । **तनिमा** = कृशता । **तव** = भवत्याः । **बत** कोमलामन्त्रणे मानिनां । **तते** = पंक्तौ । **जरा** = वृद्धत्वं ।
[गत प्रत्यागते ।]

इत्यादिभिर्नानाविधैर्विनोदैर्निमेषानिव दिवसान्, दिवसानिव मासान्, मासानिव [134]संवत्सरान् निर्वाहयामास कुमारः ।

• • •

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पाठांतर :

१. हियइसल्ल **ल. रा.** ॥ २. हणेति **दे. पा.** ॥ ३. पव्वाइयाए **रा;** परिव्वाइयाए **ल.** ॥ ४ ०कुसलाए **ल.** ॥ ५. परिव्वाइयाइ **ल;** पव्वाइयाइ **रा.** ॥ ६,८. माइंदी **ल.रा.** ॥ ७. वणिसुया **ल. रा.** ॥ ९. अइगरेण **ल.** ॥ १०. अइगरमग्गं **ल.** ॥ ११. अइगरं **ल.** ॥ १२. घित्तुं **ल. रा.** ॥ १३. ०रयणीइ **दे. पा.** ॥ १४. हणिति **ल. रा.** ॥ १५. पाडिउं सो **दे. पा.** ॥ १६. ०पवग्गा तहा **दे.पा.** ॥ १७. उविंति वि० **दे. पा.** ॥ १८. बद्धो **रा.दे.** ॥ १९. एयस्सिं **रा. पा.** ॥ २०. धरणीयले **दे. पा.** ॥ २१. मिल्लेज्ज **दे. पा.** ॥ २२. अइगर-० **ल. रा.** ॥ २३. वेरग्ग संगया **दे. पा.** ॥ २४. ०सज्झरज्जं । **दे. पा.** ॥ २५. ०सुक्ख० **ल. रा.** ॥ २६. सरइकालो **ल. रा.** ॥ २७. पहट्ठ **ल. रा.** ॥ २८. उज्जाणवालेण **ल. रा.** ॥ २९. आसासिज्जउ **दे. पा.** ॥ ३०. ०विभूईओ **ल. रा.** ॥ ३१. ०सेणराओ अणि० **दे. पा.** ॥ ३२. साहारमं० **दे. पा.** ॥ ३३. सोहग्गव्व० **ल. रा.** ॥ ३४. ०संपाडण० **ल. रा.** ॥ ३५. पिच्छंती **ल. रा.** ॥ ३६. चेव **ल. रा.** ॥ ३७. एक्कस्स **दे. पा.** ॥ ३८. एक्कं **दे. पा.** ॥ ३९. सयमवि विवेयमग्गे ठवियं कहवि नियचित्तं ॥ **ल. रा.** ॥ ४०. ०गड्ड प० **ल. रा.** ॥ ४१. सयं कयकम्म० **ल. रा.** ॥ ४२. ०मूलगमे । **ल. रा.** ॥ ४३. एवं ठिए **दे.** ॥ ४४. पयत्तो **ल. रा.** ॥ ४५. तहवि य पुव्व० **ल. रा.** ॥ ४६. निम्महणसहाइं **ल. रा.** ॥ ४७. ता **ल. रा.** ॥ ४८. ०विणिम्मविअ भवणाओ **ल. रा.** ॥ ४९. सुणह **ल. रा.** ॥ ५०. माणभद्दो **ल. रा.** ॥ ५१. मा भणसु तुमे अम्ह पुरो **दे. पा.** ॥ ५२. पणइं **पा.** ॥ ५३. सव्वजगज्जीवहिओ **दे. पा. र.** ॥ ५४. ०म्मए वंछियत्थ० **दे. पा.** ॥ ५५. ०तरुणिवंदाइं पे० **दे. पा.** ॥ ५६. ०तु खणेखणे **ल. रा.** ॥ ५७. तुमए ॥ **ल. रा.** ॥ ५८. तुब्भ **ल.** ॥ ५९. ०वि अ राया **ल. रा.** ॥ ६०. ०या सुधम्माओ ॥ **ल. रा.** ॥ ६१. रज्जं **ल. रा.** ॥ ६२. जइ य तुमं **दे. पा.** ॥ ६३. देवी भणइ **दे. पा.** ॥ ६४. सीहं सुवि० **ल.** ॥ ६५. तथाहि **ल.** ॥ ६६. रेहिंति **दे. पा.** ॥ ६७. सा तुरियतुरियं ठिओ **रा.** ॥ ६८. ०तरं तो लज्जिया **रा;** ०तरं तो सा लज्जिया **दे. पा.** ॥ ६९. ०णेण चडिओ राय० **दे. पा.** ॥ ७०. त्ति । कओ विवाहो **ल. रा.** ॥ ७१. ०क्खीहूओ **दे.** ॥ ७२. मागहेण कित्तिज्ज० **दे. पा.** ॥ ७३. गुणकित्तणं **दे. पा.** ॥ ७४. गरुयाण **पा.** ॥ ७५. विज्जासाहगेण अवहरिऊण गरुय० **दे. पा.** ॥ ७६. को एस ?। धूयाए **ल. रा.** ॥ ७७. सुणिओ **दे.** ॥ ७८. ०पुर नयरं **रा.** ॥ ७९. वयरसीहो **दे. पा.** ॥ ८०. समं **ल. रा.** ॥ ८१. ०पहुणा **रा. पा.** ॥ ८२. मुह **दे. पा.** ॥ ८३. सप्पुरिसस्स **दे. पा.** ॥ ८४. ०मित्तेण **ल. रा.** ॥ ८५. उद्दंभिओ **ल.** ॥ ८६. ०रूयमेयस्स **ल. रा.** ॥ ८७. ०रीयं. तह मज्झ **दे.**

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पा. ॥ ८८.चेव नो तुज्झ ? **ल. रा.** ॥ ८९. ०मित्त० **ल. रा.** ॥ ९०. एत्तियं कालं **ल.** ॥ ९१, ९३. गुरुय्या० **ल. रा.** ॥ ९२.कुणसु कुमारो **ल.** ॥ ९४. रोएइ **रा.** ॥ ९५. केत्तिए **ल. रा.** ॥ ९६. ०मित्थ **ल. रा.** ॥ ९७. इत्थ **ल. रा.** ॥ ९८. ०वइ उभयाणं सुह- **ल. रा.** ॥ ९९. ०पइरसंचारं **ल. रा.** ॥ १००. ०लायन्नलच्छिंमविलोइउं **ल. रा.** ॥ १०१. अच्छरिय० **ल. रा.** ॥ १०२. कवलं । इच्चाइ अण्णाणि **दे. पा.** ॥ १०३. ०कुरंगो **दे. पा.** ॥ १०४. तिमिरभरियनयणा **ल. रा.** ॥ १०५. माढत्तो ॥ ६८७ ॥ तं सव्वं **ल. रा.** ॥ १०६. कुमारेण **दे. पा.** ॥ १०७. पुरिसुत्तम० **द. पा.** ॥ १०८. ०ईअ आभ० **दे. पा.** ॥ १०९. ०मिंदियालं **ल. रा.** ॥ ११०. ०सब्भमवस० **ल. रा.** ॥ १११. महोसवो **ल.** ॥ ११२. सोहणमु० **दे.** ॥ ११३. होहेंति **दे. पा.** ॥ ११४. ०सेढीइ **दे. पा.** ॥ ११५. मिल्हए **ल. रा.** ॥ ११६. ०घरणिसद्द० **दे. पा. रा.** ॥ ११७. ०प्पभेण **रा. पा.** ॥ ११८. सुहडभावेण **ल. रा.** ॥ ११९. गरुय० **पा.** ॥ १२०. णिच्छूढो **दे. पा. रा.** ॥ १२१. ०कप्परिअवि० **दे. पा.** ॥ १२२, १२३. तो **दे. पा.** ॥ १२४. ०वंद्रपरि० **दे. पा.** ॥ १२५. पुरिसुत्तमस्स **दे. पा.** ॥ १२६. वेरिसीह० **ल. रा.** ॥ १२७. दलिद्रं **दे. पा.** ॥ १२८, १३०. लीलावईए **दे. पा.** ॥ १२९. भणियं **दे. पा.** ॥ १३१, १३२. कमलावईए **दे. पा.** ॥ १३३. कहियं **दे. पा.** ॥ १३४. ०रान-तिवाहयामास **दे. पा.** ॥

• • •

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पंचमो पत्थावो

अन्यदा उद्यानपालकेन प्रणिपत्य विज्ञप्तो यथा— कुमार ! कुसुमाकरोद्याने स्वर्गापवर्ग-पुर-मार्गस्पन्दनश्चारुचारित्र-चमत्कृत-संक्रंदनः सकल-जगज्जय-जातदर्प्प-कंदर्प्प-निष्कन्दनः, शुभोपदेश-वचन-शैत्यगुणाऽवगणित-हरिचन्दनः पक्षिराज इव विनतानन्दनः श्री विनयनन्दन-सूरिराययौ । तं निशम्य गदितं मुदितोऽस्मै पारितोषिकमदत्त कुमारः । गन्ध-सिन्धुरमसावधिरूढस्तस्य वन्दन-निमित्तमगच्छत् । वीक्ष्य सूरिमवतीर्य करीन्द्रात् पर्वतादिव मृगेन्द्र-किशोरः, भूरि-भक्तिभर-निर्भर-चेताः स प्रणम्य निषसाद पुरस्तात् ।

सूरिरुग्रभवदावसमुत्थं विप्लवं प्रशमयंस्तनुभाजां ।
कर्त्तुमारभत मन्द्र-निनादो देशनाममृत-वृष्टिभिवाब्दः ॥७९२॥

आर्य देश-कुल-रूप-बलाऽऽयु-र्बुद्धि-सङ्गतमवाप्य नरत्वं ।
नात्मनोदितविधौ यतते यः पोतमुज्झति पयोधिगतः सः ॥७९३॥

आधि-व्याधि-विसर्प्पि-दंश-मशके मोहांधकारावृते,
राग-द्वेष-कपाट-संपुट-घने संसार-कारागृहे ।
आत्मा सैष कषाय-कुड्य-कलिते रुद्धो हठादष्टभिः,
कर्म्म-प्राहरिकैश्चतुर्गति-महाकोण-स्थितः पीड्यते ॥७९४॥

तत्राऽऽद्यः प्राहरिको ज्ञानावरण-नामा पञ्चभिर्मति-श्रुता-ऽवधि-मनःपर्याय-केवलावरण-स्वरूपै रूपैरुपेतः पीडयति सर्व्वजन्तून् १ । द्वितीयो दर्शनावरण-नामा नवभिर्निद्रा-निद्रानिद्रा-प्रचला-प्रचला-प्रचला-स्त्यानर्द्धि-चक्षुरचक्षुरवधि-केवलदर्शनावरण-लक्षणै रूपैः कदर्थयति देहिनः २ । तृतीयो वेदनीय-नामा द्वाभ्यां साताऽसात-स्वभावाभ्यां रूपाभ्यां विडम्बयति सत्वान् ३ । चतुर्थो मोहनीय-नामा, तत्र मिथ्यात्व-मिश्र-सम्यक्त्वैस्त्रिभेदो दर्शन-मोहः, क्रोध-मान-माया-लोभैः प्रत्येकमनन्तानुबन्ध्यप्रत्याख्यान-प्रत्याख्यानावरण-संज्वलन-रूपैः षोडशभिः कषायैः स्त्री-पुं-नपुंसकवेद-हास्य-रत्यरति-शोक-भय-जुगुप्सारूपैर्नवभिर्नोकषायैश्च पंचविंशति रूपश्चारित्र-मोह इत्यष्टाविंशत्या रूपैः संसार-कारागारान्निःसरन्तं निवारयत्ययमात्मानं ४।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पञ्चमः पुनरायुर्नामा सुर-नर-तिर्यग्-नारकायुष्क-प्रकारैः[1] रूपै-रुद्ध्वाधःकोण-चतुष्टये निक्षिपति प्राणिनः ५। षष्ठो नाम-नामा, तत्र-१ गति-२ जाति-३ शरीराङ्गोऽपाङ्ग-५ बन्धन-६ संघात-७ संहनन-८ संस्थान-९ वर्ण-१० गन्ध-११ रस-१२ स्पर्शा-१३ ऽऽनुपूर्व्वी-१४ विहायोगति-लक्षणाश्चतुर्दशपिण्डप्रकृतयः, त्रस-स्थावर- बादर-सूक्ष्म-पर्याप्ताऽपर्याप्त-प्रत्येक-साधारण-स्थिराऽस्थिर-शुभाऽशुभ-सुभग-दुर्भग-सुस्वर-दुःस्वरादेयाऽनादेय-यशःकीर्त्यशःकीर्ति-लक्षणा विंशतिः सेतराः प्रकृतयः, अगुरुलघूपघात-पराघाताऽऽतपोद्योतोच्छ्वास-तीर्थकर-निर्माण-रूपा अष्टौ प्रत्येक-प्रकृतयः सर्व्वा द्विचत्वारिंशत्। यदि वा सुर-नर-तिर्यग्-नारक-लक्षणाश्चतस्रो गतयः १। एक-द्वि-त्रि-चतुःपञ्चेन्द्रियलक्षणाः पञ्चजातयः २। औदारिक-वैक्रियाऽऽहारक-तैजस-कार्मणानि पञ्चशरीराणि ३। औदारिक-वैक्रियाहारक-रूपाणि त्रीण्यंगोपाङ्गानि ४। शरीराख्यानि पञ्च-बन्धनानि ५। पञ्च-संघातनानि च ६। वज्रर्षभनाराच-नाराचा-ऽर्द्धनाराच-कीलिका-छेदस्पृष्टानि षट् संहननानि ७। समचतुरस्र-न्यग्रोधमण्डल-सादि-वामन-कुब्ज-हुंडानि षट् संस्थानानि ८। सित-पीत-रक्त-नील-कृष्णाः पञ्च वर्णाः ९। सुरभिरसुरभिश्च द्वौ गन्धौ १०। कटु-तिक्त-कषायाऽम्ल-मधुराः पञ्च रसाः ११। शीतोष्ण-स्निग्ध-रूक्ष-गुरु-लघु-मृदु-कर्कशा अष्टौ स्पर्शाः १२। चतस्रः सुर-नर-तिर्यग्-नारकानुपूर्व्यः १३। शुभाऽशुभे द्वे विहायोगती १४। इत्येवं पिण्डप्रकृतीनां पञ्चषष्ट्या भेदैः पूर्वोक्ताः अष्टाविंशत्या च त्रिनवतिः। यदि वा बन्धन-संघातनानां शरीरग्रहणेन ग्रहणात् दशके। वर्ण-गन्ध-रस-स्पर्शानां विंशति भेदानां भेदत्यागेनैकैकग्रहणात् षोडशके चापनीते त्रिनवतेः सप्तषष्टिः। यदि वा बन्धनस्य पञ्चदशभेदत्वादधिक-दशवृद्ध्या त्रिनवतिस्त्र्युत्तरं शतं भवतीत्येवंरूपैरनेकसंख्यैरयं विडम्बनास्पदतया परिणामयति तनुमतः ६। सप्तमो गोत्रनामा उच्च-नीचाभ्यां द्वाभ्यां रूपाभ्यामुच्चैर्नीचैश्च स्थापयन् प्राणभाजो विजृम्भते ७। अष्टमः पुनरन्तराय-नामा दान-लाभ-भोगोपभोग-वीर्याणां विघ्नभूतैः पञ्चभिः शरीरैः प्रगल्भते ८।

इत्यष्टभिः प्राहरिकैः प्रचण्डैः कदर्थ्यमानं भवचारकेऽस्मिन्।
यः स्वं पुमान्मोचयितुं यतेत स एव पुंस्त्वं बिभृते न शेषः ॥७९५॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अत्रान्तरे संसृतिगुप्तिगेह-बिभ्यन्मना राजसुतो जगाद ।
आत्मैष तेभ्यो भगवन् विमोच्यः कथं ? ततः सूरिरिदं बभाषे ॥७९६॥

अस्ति क्षमायां प्रथित-प्रतिष्ठं श्रेयःपुरं जैनजनाभिरामम् ।
सदा सदाचार-विशालशालं, जिनेश्वराज्ञा-परिखा-परीतं ॥७९७॥

तत्रोऽस्ति विध्वस्त-विपक्षवर्गश्चारित्रधर्मो नृपतिर्महीयान् ।
तस्योद्भटाः सन्ति भटाः प्रबोध-संवेग-वैराग्य-विवेक-मुख्याः ॥७९८॥

चारित्रधर्मस्य नृपस्य सेवां चिकीर्षसि त्वं यदि राजसूनो ! ।
तदा प्रयुंक्ते स्वभटानऽयं तान् संसार-कारागृह-भञ्जनाय ॥७९९॥

निघ्नंति ते प्राहरिकान् जवात् त्वां चारित्रधर्मस्य नयंति पार्श्वं ।
दौर्गत्यविध्वंसकरं समर्प्य, रत्नत्रयं सोऽपि सुखीकरोति ॥८००॥

तओ 'भयवं ! जणणि-जणए आपुच्छिऊण तुम्ह चलण-कमले चारित्त-धम्मं सेविस्सामि ।' त्ति भणिऊण समागओ स-गिहं कुमारो, पणमिऊण विन्नत्ता अणेण जणणि-जणया—'अज्ज मए वंदिया गुरुणो, सुया धम्मदेसणा, विरत्तं मे भवचारयाओ चित्तं, ता पसायं काऊण अणुजाणह तुब्भे जेण गुरु-पायमूले चारित्त-धम्म-सेवाए माणुसत्तणं सहलीकरेमि ।' तेहिं भणियं— 'वच्छ ! मणोरह-सएहिं देवयाराहणेण लद्धो तुमं अच्चंत-पाणप्पिओ अम्हाणं, ता कहं अणुजाणेमो ?।' कुमारेण वुत्तं— 'जइ अहं तुम्ह पाणप्पिओ ता जम्म-जरा-मरण-रोग-सोगाइ-वसण-सय-संकुलाओ संसाराओ नीसरंतो सुट्ठुयरं अणुमन्नियव्वो, जओ विविह-कयत्थणा-पगाराओ [संसाराओ] निग्गच्छंतं, पज्जलंत-जलण-जालाकलाव-कवलिज्जंत-जंतु-संताणाओ पलीवणाओ पलायमाणं, फुरंत-फारफुंकार-भयंकर-विसहराओ विसमंध-कूव-कुहराओ नीहरंतं, अच्चंत-दुग्गमाओ अगाह-कद्दमाओ निक्खमंतं, समुल्लसंत-महल्ल-कल्लोल-माला-रउद्दाओ समुद्दाओ नित्थरंतं कहं पि पियजणं अप्पणा तव्वसण-लंघणासमत्थो को नाम सकन्नो निवारेइ ?'। जणएहिं भणियं— 'वच्छ ! जुत्तमिणं पव्वज्जा-गहणं, किंतु दुक्करं, जओ एत्थ वोढव्वो दुव्वहो पंच-महव्वयभरो, आयरियव्वं सरीरमत्ते वि निम्ममत्तं, परिहरियव्वं राइभोयणं, भोत्तव्वो बायालीस-दोस-विसुद्धो पिंडो, तपियव्वं तिव्व-तवच्चरणं, पालणिज्जाओ पंच-समिईओ, न मोत्तव्वाओ तिन्नि गुत्तीओ, कायव्वं अकिंचणत्तं, वहियव्वाओ मासाईयाओ पडिमाओ,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गहियव्वा दव्व-खित्त-काल-भावाभिग्गहा, वज्जणिज्जं जावज्जीव-मज्जणं, सईयव्वं भूमि-सयणेण, लुंचियव्वा ससोणिया केसा, करणेज्जं निप्पडिकम्मत्तणं, वसियव्वं गुरुकुल-वासे, सोढव्वा [1]छुहा-पिवासाईया परीसहोवसग्गा, वट्टियव्वं लद्धावलद्ध-वित्तीए, खणं पि न परिच्चइयव्वो अट्ठारससहस्स-सीलंग-भारो, तमिणमणुट्ठाणं लोहमय-चणय-चव्वणं व, निरस्साओ [2]वालुया-कण-कवलणं व, निसिय-करवाल-धारा-चंकमणं व, जलंत-जलणजाला-जालपाणं व, भुयाहिं अपार-पारावार-तरणं व, तुलाए तियसगिरि-तोलणं व, [4]सुरतरंगिणी-पडिसोय-संचरणं व, एगागिणा पबल-परबल-दलणं व, राहावेह-विहाणं व दुक्करं'। कुमारेण भणियं— 'दुक्करं कायराणं, न उण धीराणं। जओ—

पविसंति रणं लंघंति जलनिहिं गिरिवरं पि तोलिंति।
तं नत्थि जए वित्थिन्न-साहसा जं न कुव्वंति' ॥८०१॥

जणएहिं भणियं— 'कुमार ! तुह सुकुमारसरीरस्स मालईदामस्सेव मुसल-मुसमूरणमणुचियमिणमणुट्ठाणं।

नहि नीलुप्पल-दल-धाराए कट्ठ[स्स] कट्टणं कीरइ।
ता वच्छ ! दुक्ख-बहुला पव्वज्जा न तुह जोग्ग' त्ति ॥८०२॥

कुमारेण भणियं-- 'ताय !

नारय-तिरिय-नराऽमर-गइ-सरूव-संसार-समुब्भवाणं दुक्खाणं अणंत-भागे वि न पव्वज्जाए दुक्खं। तहा हि—

अच्छि-निमीलिय-मित्तं नत्थि सुहं दुक्खमेव अणुबद्धं।
[1]नरए नेरईयाणं अहोनिसं पच्चमाणाणं ॥८०३॥

तिरियाण वि जं दुक्खं अंकुस-कस-पहार-पमुहेहिं।
तं सयल-जयप्पयडं को वण्णइ एक्क-जीहाए ? ॥८०४॥

चारग-निरोह-वह-बंध-रोग-धणहरण-परिभवाईहिं।
पडिपुन्नाणं दुक्खेहिं माणुसाणं पि नत्थि सुहं ॥८०५॥

ईसा-विसाय-पियविप्पओग-पेसत्त-चवण-पमुहेहिं।
विनडिज्जंति सुरा वि हु विविहेहिं दुक्ख-लक्खेहिं ॥८०६॥

संसारिय-दुक्खाणं नत्थि इमाणं विमोक्खणोवाओ।
अन्नो जयम्मि मोत्तुं [2]इक्कं जिण-अक्खियं दिक्खं ॥८०७॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दिक्खाए दुहं जं पयंपिअं मोह-मोहिय-मणेहिं ।
तं पि सुहज्झाण-हेउत्तणेण दुक्खं चिय न होइ ॥८०८॥

जओ-

देवलोग-समाणो उ परियाओ महेसिणं ।
रयाणमरयाणं च महा-नरयसालिसो ॥८०९॥

तथा,

नैवास्ति राजराजस्य तत्सुखं नैव देवराजस्य ।
यत्सुखमिहैव साधोर्लोकव्यापाररहितस्य ॥८१०॥

इय कुमर-वयणमायन्निऊण जणएहिं जुत्तिजुत्तं ति ।
अणुमन्निओ कुमारो वय-गहणत्थं विणा वि मणं ॥८११॥

तओ पणमिऊण जणणि-जणए गओ [8]नियमंतेउरं, अब्भुट्ठिओ सहरिसं पिययमाहिं, निसन्नो सुवन्नासणे, जहारिहं निविट्ठाओ अट्ठ वि पणइणीओ । भणियाओ कुमारेण— 'अज्ज विणयनंदणसूरि-समीवे धम्मदेसणं सुणिऊण 'विरत्तं मे भवचारयाओ चित्तं, नियत्ता विसय-तण्हा, उल्लसियं जीव-वीरियं, समुब्भूओ चरण-परिणामो । तोडिऊण पासं व घरवास-वासंगं, उज्झिऊण जुन्न-रज्जुं व रज्जं, वज्जिऊण विसं व विसय-सोक्खं, पव्वज्जं पडिवज्जिस्सामि ।' एयं च असुयपुव्वं सवण-दुस्सहं सोऊण गरुय-दुक्ख-समुच्छलिय-मुच्छा-निमीलियच्छीओ धस त्ति धरणियले निवडियाओ सव्वाओ । हाहारव-गब्भिणं [9]अंगपरिचारिगाहिं कय-सिसिरोवयाराओ सत्थीभूयाओ इमाओ । भावि-वियोग-सोग-[10]संगलंत-बाहप्पवाहाउल-लोअणाओ सगग्गय-गिरं भणिउं पवत्ताओ—

'हो अज्जउत्त ! गरुयाणुराय-रसियाओ तह विणीयाओ ।
किं उज्झिऊण अम्हे समुज्जओ संजमं काउं ? ॥८१२॥

अम्हेहिं किमवरद्धं ? कहेसु काउं अणुग्गहं सुहय ! ।
तुमए विणा अणाहाण नाह ! अम्हाण को सरणं ? ॥८१३॥

एत्थंतरे भावि-पिय-विप्पओग-दुक्खंतरिय-लज्जाए संलत्तं समुल्लसंत-महंत-सिणेहाए चंदलेहाए—

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पुरिसेणं बुद्धिमया आरंभंतेण गरुय-कज्जाइं ।
मुत्तूण ऊसुयत्तं थिरत्तणं होइ कायव्वं ॥८१४॥

अथिरत्तणेण रहसग्गलेण कज्जाइं जाइं कीरंति ।
परिणामे विहडंताइं ताइं पच्छा दुहं दिंति ॥८१५॥ यतः—

अत्वरा सर्वकार्येषु त्वरा कार्यविनाशिनी ।
त्वरमाणेण मूर्खेण मयूरो वायसीकृतः ॥८१६॥

कुमारेण भणियं— 'को सो मुक्खो ?'।

तीए भणियं— सुण, खिइपइट्ठिए नयरे सागरो वाणियगो आसि । तस्स य सावगो त्ति कलिऊण समप्पियं सेस-सावगेहिं चेइय-दव्वं । भणिओ सो— 'चेइय-करणुज्जयाणं सुत्तहाराईणं तए दायव्वमेयं'। सो वि लोभ-दोसेण न तेसिं रोक्कदव्वं देइ । '[11]तम्मि दायव्वे एत्तिओ वि मे लाभो होउ ।' त्ति धन्न-गुल-घयाईणि तेसिं दाउं पवत्तो । एवं कुणंतेण तेण बद्धमबोहीबीय-लाभंतरायं कम्मं । तक्कम्मदोसेण मओ समाणो सागरो नाणाविह-वेअणाओ सहमाणो भमिऊण अणेगासु हीणजोणीसु तक्कम्मसेसयाए समुप्पन्नो वसंतउरे वसुदत्तस्स वसुमईए भारियाए गब्भम्मि [12]पुत्तत्ताए । तओ गब्भदीणाओ आरब्भ वसुदत्तस्स धणं खिज्जिउमाढत्तं । जाए य तम्मि जम्म-दियहे चेव मओ वसुदत्तो । तओ पुन्नहीणो त्ति खिंसिओ लोगेण, पच्छा तस्स पुन्नहीणो त्ति नामं पसिद्धिं गयं । अट्ठवारिसियस्स य मया माया । पच्छा परघरेसु दमग-वित्तिं कुणमाणो कालं गमेइ । अन्नया नीओ निय-घरं माउलगेण भणिओ य — वच्छ ! निच्चिंतो चिट्ठसु मह घरे त्ति । सो वि पुण्णहीणो विणयं कुणंतो वि, महुरं पयंपंतो वि, नीयं चंकम्मंतो वि पुव्वकम्म-दोसेण न सुहावहो लोयस्स । अण्णया तक्करेहिं मुट्ठं तस्स माउलगस्स घरसारं । पच्छा लोगो पुन्नहीणमुद्दिसिऊण भणिउं पवत्तो —

'वरु सयणासणु खाणु पाणु धणु परियणु घोडओ,
पुन्नवंतु जणु जाइ जत्थु तहिं जेट्ठो उडओ ।
पुन्नहीणु पुण जत्थ होइ तहिं सव्वु विघोडओ,
तक्खणि सुक्कइ तं जि डालु जहिं चडइ कवोडओ' ॥८१७॥

इच्चाइ दुव्वयणाइं जणाओ सोउमचयंतो निग्गओ तओ ठाणाओ परिब्भमंतो महाकिलेसेण पत्तो तामलित्तिं । तत्थ विणयंधर-[13]सेट्ठि-गिहे

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वुत्ताणत्तयं कुणंतो ठिओ । थोव-दिण-मज्झे य पलीवियं तस्स घरमग्गिणा । पुन्नहीणो त्ति सो निव्वासिओ परियणेण. चिंतिउं पवत्तो—

'[१४]हा जीव ! तए पुव्वं कीस न कम्मं सुहं कयं किं पि ।
जेणेरिसं [१५]जणाओ विडंबणं नेय पावंतो ॥ ८१८ ॥

बहुजण-धिक्कारहया पए पए [१६]भज्जमाण-मणवंछा ।
पुव्वकय-पावकम्मा पावंति पराभवं पुरिसा ॥ ८१९ ॥

[१७]ता किं करेमि ? कत्थ व वच्चामि ? मरामि संपयं किं वा ?।
मह पुव्वकम्म-दोसा न होइ सुकयं कयं किं पि ॥ ८२० ॥

जइ वि एवं तहावि नरेण ववसाओ न मोत्तव्वो । जओ -

'महुमहणस्स न वच्छे न चेय कमलायरे सिरी वसइ ।
ववसाय-सायरेसु पुरिसाण लच्छी फुडं वसइ' ॥ ८२१ ॥

इच्चाइ चिंतिऊणं पुण्णहीणो गओ समुद्दतीरं । तम्मि चेव दियहे चलिओ परतीरं पवहणेण धणावहो नाम नाइत्तगो मिलिओ तस्स, वुत्तो य तेण— 'आगच्छ मए समं ' ति । सुह-मुहुत्ते य पेल्लियं पवहणं, पत्तं परतीरि । उवज्जियं किं पि धणं पुण्णहीणेण, नियत्तमाणस्स य तस्स तेणेव नाइत्तगेण समं विवन्नमंतरा जाणवत्तं । पत्तं पुन्नहीणेण भवियव्वया-निओगेण फलह-खंडं, तम्मि विलग्गो उत्तिन्नो सत्त-रत्तेण समुद्दाओ, पत्तो य तीर-संठियं गाममेक्कं । ओलग्गिउं लग्गो गाम-ठक्कुरं । अन्नया अतक्किया चेव पडिया तम्मि सत्तु-धाडी, विणासिओ गाम-ठक्कुरो, बंधिऊण गहिओ पुन्नहीणो, नीओ निय-पल्लिं, वुत्तो य किं तस्स तुमं होसि ? त्ति । तेण भणियं— देसंतरागओ वणिय-पुत्तो हं धणत्थी ओलग्गो । पच्छा तेहिं मुक्को । परिब्भमंतो य पत्तो महाडविं, दिट्ठो य पुन्नहीणेण तत्थ बिभेलगो नाम जक्खो । तओ—

सो नत्थि धण-निमित्तं आढत्तो जो मए न ववसाओ ।
कास-कुसुमं व सव्वो संजाओ निप्फलो नवरं ॥८२२॥

तहा वि सपाडिहेर-जक्ख-पडिममाराहेमि ।' त्ति चिंतिऊण सम्मज्जिया भूमी, सित्ता सीयल-जलेण, पक्खालिया जक्ख-पडिमा, [१८]पूइया सुरहि-कल्हार-कुसुमेहिं, पडिऊण पाएसु विन्नविउं पवत्तो पुन्नहीणो—

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भमिऊण धणत्थी दुत्थिओ अहं पुहइमंडलं सयलं ।
अप्पत्त-वंछियत्थो संपइ तुह पासमल्लीणो ॥८२३॥

ता सामि ! मं पलोयसु करुणाभर-मंथराए दिट्ठीए ।
जेण समणंति इमाइं मज्झ दालिद्द-दुक्खाइं ॥८२४॥

तओ कारुन्न-रसाउन्न-हियएण भणियं जक्खेण— 'भद्द ! संझाए मह पुरो नट्ट-पयट्टस्स मोरस्स गलियमेक्केक्कं सुवन्न-[19]पिच्छं गहिज्जसु' त्ति । 'पसाओ' त्ति भणंतेण पडिवन्नं पुन्नहीणेण । समागया संझा, संपत्तो सिही, वित्थारिऊण कलावं पयट्टो नच्चिउं । नच्चंतस्स य गलियमेक्कं [20]पिच्छं । अदंसणीहूओ सिही । गहियं [21]पिच्छं पुन्नहीणेण । दुईय-तईय-दिवसेसु वि एवं । चउत्थ-दियहे— 'सुन्नारन्न-गएण[22] मए केत्तियं कालं ठायव्वं ? ता वरं एक्क-मुट्ठीए चेव गेण्हामि' त्ति चिंतिऊण ठिओ संझाए खंभंतरिओ पुन्नहीणो । नच्चंतस्स य सिहिणो सव्व-[23]पिच्छाणि एक्क-मुट्ठीए चेव गहिउं पवत्तो । सो वि सिही सिहि-रूवं मोत्तूण करकर-सद्द-कयत्थिय-कन्न-जुयलो वायसो संवुत्तो । पुव्वगहिय-[24]पिच्छाइं पि पणट्ठाइं । तओ विसन्नो पुन्नहीणो । किमूसुगत्तणं मए कयं ति पच्छायावमुव्वहंतो जाव चिट्ठइ ताव भणियं केणावि अदिट्ठेण—

'भणउ वयणु महुरक्खरु लुहडुक्खड करउ ।
तरउ जलणिहि, पहु सेवउ देवय तोसवउ ।

कस्स वि को वि सतंतु न दायगु अरि पहिय ।
मेल्लिवि भालि जि संठिय अक्खर विहि-लिहिय' ॥८२५॥१॥

'[25]तो सामि ! तुमं पि ऊसुगत्तणं काऊण मा पच्छायावमेवमुव्वहसु' त्ति ।

[26]कुमारेण संलत्तं—

'[27]लद्धूण दुल्लहमिणं कहं पि चिंतामणिं व मणुयत्तं ।
हारेमि कहं मूढो पमायओ वणिय-तणओ व्व' ॥८२६॥

चंदलेहाए भणियं—

नाह ! पसायं काऊण कहसु मे को इमो वणिय-[28]तणओ ? ।
पत्तो वि जेण चिंतामणी पमाएण हारविओ ॥८२७॥

कुमारेण वुत्तं— सुण,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

'अत्थि तुंग-मणिमय-अमर-मंदिर-पहापूर-पल्लविय-गयणाभोगं भोगपुरं नाम नयरं । तत्थ निय-कुल-समायार-परिपालण-पवणो विउलधणो धणावहो नाम सेट्ठी । तस्स विसिट्ठ-विणयाइ-गुणमंदिरं गुणमई भज्जा । दो वि पुव्वभवावज्जिय-पुन्नपगरिसाणुरूवं विसयसुहमणुहवंताणि कालं वोलिंति । अन्नया अणेगोवाइय-सएहिं समुप्पन्नो गुणमईए पुत्तो । आणंदिय-माणसेण य [९]सेट्ठिणा सद्दाविऊण पुच्छिओ नेमित्तिओ— भद्द ! कहेसु केरिसो एस सुओ होहिति ? । तेणावि परावत्तिऊण निमित्तसत्थं , आलोचिऊण जम्म-लग्ग-गह-नक्खत्त-होराइ-बलं, संवाइऊण सुयस्स सामुद्दिय-लक्खणाइं भणियं— 'भद्द ! जइ सच्चं वत्तव्वं ता सयल-कला-कलाव-कुलहरं समग्ग-गुण-संकेयट्ठाणं भविस्सइ ते सुओ । नवरं जोव्वणत्थो दालिद्द-दुक्ख-भायणं होहि' त्ति । तओ विसन्नो सेट्ठी । पूईऊण विसज्जिओ नेमित्तिओ । कयं उचिय-करणेज्जं । पइट्ठियं नामं बालयस्स पुन्नसारो त्ति । कमेण जाओ अट्ठवारिसिओ । समप्पिओ कलायरियस्स । गहियाओ तेण अकिलेसेण सयलाओ कलाओ । सरिऊण नेमित्तिय-वयणं विसेसओ सिक्खाविओ रयण-परिक्खं सेट्ठिणा[१०] । परिणाविओ पसत्थ-वासरे बंधुदत्त-धूयं बंधुमइं । सयल-कज्ज-समत्थो त्ति नाऊण निउत्तो सेट्ठिणा कुडुंब-चिंताए । सेट्ठी वि सयं ठिओ [१]परलोय-कज्ज-करणुज्जओ । अन्नया मरण-पज्जवसाणयाए जीवलोयस्स मओ सेट्ठी । पुन्नसारो काऊण पिउणो पेयकिच्चं पयट्टो कुडुंब-कज्जे । नवरं पुव्व-कय-कम्म-दोसेण थेव-दिणब्भंतरे च्चिय खीणधणो संवुत्तो । जओ—

एगत्थ वसइ सुइरं अखंड-पुन्न-गुण-नियलिया लच्छी ।
तुट्टम्मि तम्मि पुण मक्कडि व्व कत्थ वि थिरा न भवे ॥८२८॥

सो य पुन्नसारो निद्धणो त्ति न बहुमन्निज्जइ रायलोएण, न [११]सम्माणिज्जइ सयण-समूहेण, नाणुगम्मए मित्त-वग्गेण, किं बहुणा ? सव्व-जण-परिभव-भायणं संजाओ ।

गुण-वज्जिओ वि पुरिसो सो च्चिय संमाण-भायणं भुवणे ।
नयणेहि नेहभर-निब्भरेहिं जं पेच्छए लच्छी ॥८२९॥

अलियं पि जणो धणइत्तयस्स सयणत्तणं पयासेइ ।
आसन्न-बंधवेण वि लज्जिज्जइ झीण-विहवेण ॥८३०॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गुणवं पि निगुणो च्चिय गणिज्जए, मुच्चए परियणेण ।
पावइ दविण-विहीणो पए पए परिभवं पुरिसो ॥८३१॥

एवं च दालिद्द-दुक्खाभिभूओ चिंतिउं पवत्तो पुन्नसारो— 'हा ! किं मह मंदभग्गस्स धण-विरहियस्स स-परोवयार-करण-सुन्नस्स छगली-गलत्थणेण व निप्फलेण जीविएणं ति? ता केणावि उवाएण पुणो वि समज्जणेमि धणं, पुरेमि निय-मणोरहे, पूएमि गुरुजणं' ति । एत्थंतरे पत्थिओ तत्थेव वत्थव्वओ सुत्थिओ सत्थवाहो बोहित्थेणं परतीरं । मिलिओ गंतूण तस्स पुन्नसारो । भणिओ अणेण सुत्थिओ— अहं पि धणत्थी तुमए समं समुद्द-परतीरं दट्ठुमिच्छामि । सुत्थिएण भणियं— 'भद्द ! को दोसो ? आगच्छसु' त्ति ।

तओ पसत्थ-वासरे पेल्लियं पवहणं । अतुच्छ-मच्छ-पुच्छच्छडा-डोवुच्छलंत-महल्ल-कल्लोल-माला-भीसणं सायरं लंघिऊणं लग्गं रयण-दीवे । उत्तरिऊण लोगो लग्गो निय-निय-वावारेसु । पुण्णसारो वि आढत्तो रयणाणि खणिउं । किंचूणं छम्मासावसाणे नियत्तिउकामेण सुत्थिएण दवाविओ पडहो, उग्घोसावियं— 'इओ सत्तम-दिणे निय-देसाभिमुहं पवहणं पेल्लिज्जिस्सइ' त्ति । एयं सोऊण पुन्नसारो समागंतूण सुत्थियस्स पुरओ जंपिउं पवत्तो— 'सत्थवाह ! तुज्झ सन्निज्झेण आगओऽहमित्थ, ठिओ एत्तियं कालं, अज्ज वि एत्थेव चिट्ठिस्सामि । सुत्थिएण भणियं— 'कीस तुमं नागच्छसि ?'। पुन्नसारेण भणियं— 'अज्ज वि न मे वंछियत्थलाभो संजाओ'। सुत्थिएण भणियं— 'इयाइं [१२]पवर-रयणाइं गिण्हसु । तत्थगयस्स पंचवीसं सहस्सा दीणाराणं ते भविस्संति' । तेण भणियं— 'विउला मे मणोरहा' । सुत्थिएण वुत्तं— 'जहाजुत्तमणुचिट्ठसु'। पयट्टो सुत्थिओ निय-देसाभिमुहं, ठिओ पुन्नसारो रयणाणि खणंतो ।

कइवय-दिण-पज्जवसाणे य वुत्तो रयणदीव-देवयाए— 'भद्द ! कीस न अज्ज वि ते कुद्दाल-घाओ विरमइ ?'। तेण भणियं— 'न मे मणोरहा पुन्न'त्ति । देवयाए भणियं— 'केरिसा ते मणोरहा ?' तेण वुत्तं— 'चिंतारयण-लाभत्थी अहं' । देवयाए भणियं— 'न ते एत्तियाणि भागधेयाणि जेण चिंतारयण-संपत्ती हवइ' । तेण भणियं- 'तम्मि अलद्धे न विरमिस्सं' । तिरोहिया देवया । [१३]कइवय-दिणावसाणे पुणो वि

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वारिओ देवयाए । तहा वि न विरमइ । एवं तइय-वारं पि । ताहे देवयाए चिंतियं— निच्छओ खु एसो । [34]तओ अन्न-दिणे खणंतस्स दंसिओ चिंतामणि, दट्ठूण तं हरिसिओ पुन्नसारो । अवधारियाइं तस्स लक्खणाइं, संठाइयाइं रयण-परिक्खा-सत्थेण । सविसेस-आणंदिय-मणो गओ [35]नियावासं । पूइऊण जहाविहिं तम्मि दिणे ठिओ निराहारो । 'जइ सच्चं एसो चिंतामणी ता [36]सुवन्नस्स लक्खस्सोवरिं [37]हविज्ज' त्ति काऊण पणिहाणं पसुत्तो रयणीए, पभाए तहेव पिच्छिऊण हरिस-निब्भरो संवुत्तो । अन्न-दिणे निय-नयरं गंतुकामेण उब्भिओ भिन्न-पोयद्धओ ।

इओ य धणदेव-नाइत्तगेण समुद्द-मज्झे भोगपुरं गच्छंतेण दट्ठूण तं पेसिया निय-पुरिसा । भणिओ अ तेहिं— 'भद्द ! पेसिया अम्हे धणदेव-नाइत्तगेण, भणिया य –'को वि एस महासत्तो भिन्नपवहणो चिट्ठइ । ता एयं गेण्हिऊण आगच्छह' त्ति, ता तुमं समारुहसु बेडियं । तओ समारूढो पुन्नसारो, भणिओ य तेहिं— 'भद्द ! अत्थि ते किंचि ?' तेण भणियं – 'अत्थि इमो सुवन्न-लक्खो' । तओ पयट्टो गंतुं तेहिं समं, मिलिया धण-नाइत्तगस्स, वुत्तो अ पुन्नसारो अणेण— भद्द ! कत्थ गंतव्वं ? तेण भणियं— 'भोगपुरे' । नाइत्तगेण भणियं 'अम्हे वि तत्थ वच्चिस्सामो । सोहणं संवुत्तं जं तुमए सह संगमो, ता सुहं समागच्छसु । आगच्छंताण य समुद्द-मज्झे मज्झ-रत्त-समए सरय-पुन्निमाए पुन्नसारो सरीरचिंता-निमित्तं उट्ठिओ, ठिओ जाणवत्त-तड-गवक्खगे, [38]पासिऊण सयल-[39]दिसि-वहू-वयण-विब्भम-दप्पणं चंद-मंडलं हरिसवस-विसंथुल-चित्तो चिंतिउं पवत्तो— 'अहो रमणिज्जया चंद-मंडलस्स ! एयप्पहा-निउरंब-करंबिओ लवणम्बुरासी वि दुद्धोअहि व्व पडिहाइ । जारिसं एयं तारिसं किमन्नं पि किंचि अत्थि वत्थुं ति चिंतयंतस्स ठिओ से चित्ते चिंतामणी । उट्टियाए कड्ढिऊण तं निवेसिऊण करयले पलोइउं पवत्तो— 'अहो ! ससिणो चिंतामणिस्स य सव्वहा सरिसत्तणं' ति चिंतयंतस्स पयंड-पवण-पणोल्लिय-पवहणंदोलणेण गलिओ करयलाओ चिंतामणी । तओ हाहारव-गब्भिणं 'मुट्ठो मुट्ठो हं धरेह भो जाणवत्तं'ति पलविउं पवत्तो । तं सोऊण पज्जाउल-मणेण नाइत्तगेण निज्जामगेहिंतो धराविय़ं जाणवत्तं । [40]महा-किलेसेण ठिए तम्मि पुट्ठो नाइत्तगेण- 'भद्द ! किं पलवसि ?'। तेण वुत्तं सोगभर-गग्गय-गिरेण - 'करयलाओ मे गलिओ चिंतामणी एत्थ, ता तं निभालेह' । नाइत्तगेण भणियं— 'जत्थ पुव्वमक्कंदिअं तुमए

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तग्गयट्ठाणाओ अणेगाइं [41]'जोअण-सयाइं समागयं जाणवत्तं, अत्थाहं च सलिलं, ता कहं निभालिज्जउ ?' ति । तओ विलक्ख-वयणो संवुत्तो पुन्नसारो ॥२॥

ता 'भद्दे ! नाहमेरिसो जो सयल-चिंतियत्थ-संपायणं पाविऊण चिंतामणिं व माणुसत्तणं पमाय-परवसो हारेमि' ।

तओ भावि-दइय-दुस्सह-विरह-दुह-दूमिज्जमाण-देहाए भणियं मयणलेहाए—

'जं निउणमईए विआरिऊण कज्जं विहिज्जइ नरेण ।
परिणामो तस्स च्चिय सुहावहो होइ लोयम्मि ॥८३२॥

इहरा विसंवयंतम्मि तम्मि कज्जम्मि जायए गरुओ ।
पच्छायावो सहयार-छेयणे जह नरिंदस्स ॥८३३॥

कुमारेण भणियं— 'को सो सहयार-छेयगो नरिंदो ?'

मयणलेहाए भणियं— सुण,

[42]अत्थि परत्थ-समत्थण-कयत्थ-पुरिसोह-सोहियं नयरं ।
ललणाभरण-पहापडल-पाडलं पाडलउरं नयरं ॥८३४॥

तत्थ पुहइराओ राया

रिउरमणि-नयण-नीरप्पवाह-संबंध-लद्धमाहप्पो ।
रेहइ समुज्जलो जस्स जस-भरो रायहंसो व्व ॥८३५॥

तस्स सुतारा देवी

मयरद्धय-मयरायर-दूर-समुच्छलिय-लालसा जीए ।
नस्संति(?छिज्जंति)मच्छ-रिछोलि-सच्छहा अच्छि-विच्छोहा ॥८३६॥

तत्थ अवगय-सयल-कलासत्थ-वियारत्तणेण विन्नाय-नाय-सारो, नीसेस-देसभासा-वियक्खणत्तणेण विहिय-विविह-देसागय-वणिय-ववहारो रयणसारो सेट्ठी । तस्स विमल-सीलालंकार-सुंदर-सरीरुव्वूढ-लज्जा अणवज्ज-कज्ज-सज्जा रज्जा भज्जा ।

दीणेसु दिन्न-वित्तो तत्तत्थ-वियार-निहिय-निय-चित्तो ।
देव-गुरु-पाय-भत्तो, ताण सुओ अत्थि धणदत्तो ॥८३७॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अह सो कय-सिंगारो निय-बंधव-मित्तवग्ग-परियरिओ ।
वियरिय-समग्ग-मग्गण-धणनिवहो विवणि-मग्गम्मि ॥८३८॥

केण वि नरेण दट्ठुं पसंसिओ जह 'इमो च्चिय कयत्थो ।
एअस्स च्चिय सहलं जम्मं जीयं तहा विहवो' ॥८३९॥

अन्नेण तओ भणियं- 'न तुज्झ एसो पसंसिउं जुत्तो ।
जो विलसइ पुव्वनरोवज्जिय-दविणेण काउरिसो ॥८४०॥

जो विलसइ जियलोए निअय-भूओवज्जिएण दविणेण ।
सो च्चिय सलाहणिज्जो चंचापुरिसो व्व न हु सेसो' ॥८४१॥

इय सोउं धणदत्तो चिंतइ 'एएण जंपियं जुत्तं ।
ता देसंतर-गमणं करेमि दविणज्जण-निमित्तं' ॥८४२॥

कहिओ तेण मित्ताण निय-मणोरहो । 'सप्पुरिस-चरियमेयं'ति पसंसिओ सो तेहिं, गओ जणय-समीवं, निवडिऊण चलणेसु जंपए जहा— 'ताय ! विसज्जेहि मं जेण देसंतरेसु गंतूण विढवेमि धणं । अवहरिय-सव्वस्सेणेव विसण्ण-माणसेण भणियं सेट्ठिणा— 'पुत्त ! तुह अत्थि पुव्वपुरिसागओ सयल-भोगोवभोग-समत्थो अत्थो । तो तेण कुणसु विलासे, पूरेसु मग्गण-गण-मणोरहे' । धणदत्तेण भणियं— ताय !

पुरिसस्स भोग-जोग्गा सिसुत्तणे च्चिय कमागया लच्छी ।
जणणि व्व पालणिज्जा तारुन्नं पुण पवन्नस्स ॥८४३॥

ता मं विसज्ज सिग्घं एत्थत्थे मा करेह मे विग्घं ।
विढवेमि दव्वजायं गेण्हामि य जेण जसवायं ॥८४४॥

सेट्ठिणा वुत्तं— वच्छ ! कुणसु जं जुत्तं । पुत्तेण 'पसाओ'त्ति भणिऊण आढत्ता गमण-सामग्गी । तओ गणिज्जंति गणिमाइं, तोलिज्जंति धरिमाइं, मविज्जंति मेयाइं, [४१]परिच्छिज्जंति पारिच्छेज्जाइं, दिज्जंति सुक्काइं, पउणिज्जंति पाहेआइं, रइज्जंति गुरुदेवयाणं पूयाओ, किज्जइ पडहएण आघोसणा, जहा 'जो धणदत्तेण समं वच्चइ तस्स पूरेइ सव्वं जं मग्गियं धणदत्तो ।' तओ बहवे भट्टचट्टाइणो चलिया सत्थेण समं । निवेसिओ नयर-बाहिं सत्थो । सयं च दाऊण दाणं काऊण सयण-सम्माणं पहाण-लग्गे जणएण अणुगम्ममाणो बंधूहिं परिवारिओ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पवर-रहारूढो चलिओ धणदत्तो । नियत्तमाणस्स य पिउणो पडिओ चलणेसु । विहिय-करकमल-कोसो य अणुसासिओ पिउणा, जहा—'वच्छ ! सुहलालिओ तुमं, अच्चंत-सरलो य पयईए, दूरं देसंतरं, विसमा दिव्वगइ, दुग्गमा मग्गा, दुप्परिपालणीयं भंडजायं, निक्कारण-कुद्धा चोर-चरडा, वंचण-पवणा धुत्ता, मायाविणो वाणियगा, ता सव्वहा कयाइ पंडिएण, कयाइ मुरुक्खेण[४४], कयाइ दयालुएण, कयाइ निग्घिणेण, कयाइ सदयेण, कयाइ सुहडेण, कयाइ कायरेण, कयाइ चाइणा, कयाइ किवणेण[४५], किं बहुणा ? सायरेणेव परेहिं अलद्ध-मज्झ-हियएण होयव्वं'ति भणिऊण नियत्तो सेट्ठी । धणदत्तेण वि दिन्नं पयाणयं । एत्थंतरे सत्थियाणं पयट्टाया[४६] आलावा—

रे रे जोत्तसु सगडं लायसु मग्गेण मा चिरावेसु ।
महिसेसु तडंगाइं जल-पडिपुन्नाइं संठवसु ॥८४५॥

लद्देसु वर-बइल्ले कोक्कसु करहे, रहेसु खणमेक्कं ।
जाव चडावेमि अहं वक्खरमेयं असेसं पि ॥८४६॥

पउणीकरेसु खर-वेसरे य आरोविऊण गोणीओ ।
पल्लाणेसु तुरंगे निय-जव-निज्जिय-पवणवेगे ॥८४७॥

इय[४७] विविहालावयरं सत्थं संवाहिउं असेसं पि ।
धणदत्तो जाइ पहे [४८]पहूय-पाइक्क-परियरिओ ॥८४८॥

धरणी नाणाविह-भूरि-भंड-संभार-भार-अक्कंता ।
रसइ व्व सखेआ सगड-चक्क-चिक्कार-सद्देण ॥८४९॥

भूरि-भरक्कंता वि हु करहा मग्गम्मि संचरंता वि ।
विलिहंति तरूणं अग्ग-पल्लवे वालियग्गीवं ॥८५०॥

रेहंति रयवसालक्ख-चलणपाया समुच्छलंतीहिं ।
पास-दुग-ट्ठिअ-गोणीहिं वेसरा जाय-पक्ख व्व ॥८५१॥

कज्जलवन्ना जलभर-संपुन्न-तडंग-वाहिणो महिसा ।
छिंदंति तिरसं लोयाण पुन्न-आयट्ठिय व्व घणा ॥८५२॥

वच्चंतो य सत्थवाहो कमेण पत्तो सिरिउर-नयर-बाहिं, आवासिओ तत्थ । एत्थंतरे सासभराऊरिज्जमाण-वयणो, खलंत-वयणो, इओ तओ पडिक्खित्त-सुन्न-नयणो, तुरिय-पय-निक्खेवो, भय-कंपंत-सव्वंगो,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

'सरणागओ अहं तुज्झ'त्ति भणंतो पत्तो एगो पुरिसो सत्थवाह-पडकुडीए। तओ सत्थवाहेण 'मा बीहसु' त्ति भणंतेण दवावियमासणं, तयणुमग्गे लग्गा य उग्गीरिय-पहरणा कोदंड-समारोविय-सरा 'हण हण हण' त्ति भणंता पत्ता रायपुरिसा। भणिया य ते सत्थवाहेण— 'भो भो! किमवरद्धमणेण ?।' तेहिं भणियं— 'सत्थवाह! एसो खु रायचेडो चोरिऊण रायालंकारं जूयं रमंतो पाविओ अम्हेहिं, गहिऊण निवेइओ निवइस्स, तेणावि वज्झो समाणत्तो, मंतिणा विन्नत्तो राया जह— 'देव! अलंकारो लब्भइ ताव विलंबेउ देवो'। रन्ना भणियं— 'एवं करेह'। तओ पक्खित्तो गुत्तीए। अज्ज रयणीए पुण पच्छिमे जामे भंजिऊण निगडे, मारिऊणं आरक्खिए, निग्गओ काराहराओ, निग्गच्छंतो अ कहवि नाओ अम्हेहिं, धाविया य एय-पिट्ठओ अम्हे, पविट्ठो य सरोवरासन्ने वण-गहणे, बहलत्तणओ य तस्स भालविया अम्हे एत्तियं वेलं। इण्हिं तओ निग्गंतूण पविट्ठो तुम्ह सरणे। ता सप्पुरिस! समप्पेसु एयं राय-विरुद्धकारिणं।

सत्थवाहेण भणियं— 'अत्थि एवं, किंतु सरणागय-समप्पणं पि न जुत्तं'। तेहिं भणियं— 'जइ एवं तहावि अम्हे राय-सयासाओ न छुट्टामो'। सत्थवाहेण भणियं— 'किं इमिणा रायालंकारो समप्पिओ न वा ?'। तेहिं भणियं— 'समप्पिओ'। सत्थवाहेण भणियं— 'तो पडिक्खह खणं, खोणीवइं विन्नवेमि जाव अहं'। तेहिं वुत्तं— 'एवं होउ' त्ति। गओ राय-पासं सत्थवाहो पडिहार-निवेइओ पविट्ठो, समप्पिया-ऽणेण एगा महग्घा रयणावली राइणो। भणिओ सत्थवाहो राइणा— 'भद्द! कत्तो इहागओ सि ?'। सत्थवाहेणावि साहिओ सव्व-वुत्तंतो नियागमण-पओयणं च। रन्ना वुत्तं— 'जइ वि अवराहकारी तहावि तुह वयणेण विमुक्को एसो'। सत्थवाहो वि 'महापसाओ'त्ति भणंतो पहाण-रायदूय-समेओ गओ नियावासं। दुएणावि रायाएसं कहिऊण मोयाविओ तक्करो। सो य सत्थवाहेण अप्पणा सह भुंजाविऊण भणिओ जहा— 'भद्द! विरुद्धमेयं तुज्झागिईए। ता मा पुणो करेज्जासु' त्ति। तेण भणियं— 'सत्थवाह! नियत्तो हं एआओ असच्चरित्ताओ। करिस्सामि संपयं किंचि वय-विसेसं। एवं च कए तुज्झ वि मए पियं कयं होइ। अन्नं च, मह अत्थि सपच्चओ भूयाइ-निग्गहण[४१]-मंतो, ता तं तुमं गिण्हसु त्ति पत्थेमि'। सत्थवाहेण वि पत्थणा-भंग-भीरुणा गहिओ मंतो, गओ य

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सो समीहियत्थ-संपायणत्थं ।

दिन्नं पयाणयं धणदत्तेण, वच्चंतो य पत्तो कायंबरिं नाम अडविं । आवासिओ नई-तीरे । पेच्छए तत्थ भमर-वन्नं गुंजारुण-लोयणं धणुबाण-वावड-करं सारमेय-समेयं रोयंतमेगं वाह-जुवाणयं । 'किं रुयसि ?' त्ति पुट्ठो सो सत्थवाहेण । तेणावि कहियं— 'सुण, अत्थि इह पव्वए दुग्गापल्ली, तत्थ सीहचंडो पल्लीवइ । सीहिणी से भारिया पाणप्पिया य । सा गहिया कह वि भूयदोसेण । वट्टए जीय-संदेहेण, तव्विणा न जीवइ पल्लिनाहो त्ति रोयामि ।' तं च सोऊण भणियं सत्थवाहेण— 'अत्थि मह भूय-निग्गह-मंतो' त्ति सुणिय पहिट्ठेण तेण साहियं पल्लिवइणो, सो वि निय-पिययमं घेत्तूण आगओ तत्थ । सत्थवाहेणावि सकलीकरण-पुव्वं सुमरिओ मंतो । तप्पभावेण मुक्का भूएण एसा । 'अहो ! परोवयारी सत्थवाहो' त्ति चिंतयंतो गओ सट्ठाणं पल्लिवइ । धणदत्तो वि पत्तो गंभीरपट्टणं । ववहरियं तत्थ । 'न जाओ तहाविहो लाभो' त्ति चिंतिऊण चडिओ पवहणे । तं च अणुकूल-पवण-पेल्लियं पत्तं पर-तीरे । संजाय-मणिच्छिय-लाभो अ नियत्तो सत्थवाहो । आगच्छंतेण य दिट्ठो सत्थवाहेण चंचुपुड-गहिय-अंबफल-दुगो, परिस्समवसेण खलंत-पक्खजुयलो, पवहणासन्ने जलोवरिं निवडंतो एगो रायकीरो । 'अरे ! रक्खह रक्खह एयं' ति भणिए सत्थवाहेण उत्तरिऊण पवहणाओ करेण गहिओ एगेण निज्जामगेण, अप्पिओ सत्थवाहस्स । सत्थीकओ पवण-दाणाइणा । मुत्तूण चंचुपुडाओ चूयफल-दुगं जंपिउं पवत्तो कीरो— 'सत्थवाह ! कओ तए महंतो उवयारो न केवलं मम जीवियप्पयाणेण, मए आणीयं चूणिमित्त-धरिय-जीवियाणं अंधलयाण अम्मा-पिऊणं दिन्नं जीवियं । न य जीवियप्पयाणाओ अन्नमत्थि [१०]गरुय-दाणं । रज्जदाणं पि निरत्थयं जीवियावहार-समए । तो किं करेमि ते पच्चुवयारं तिरियजाईओ हं ?, तहावि गेण्हाहि एय-मज्झाओ एगमंबयं । सत्थवाहेण भणियं— किं मज्झ एगेण अंबएणं ? तुमं भक्खेसु इमं अन्नं पि भत्तं । कीरेण भणियं— सत्थवाह ! एगस्स वि एयस्स महंतो पभावो । सुण—

'अत्थि मयजल-बहल-परिमल-लोल-रोलंब-रोल-कुप्पंत-करिकुल-दलिज्जंत-कप्पूरतरु-पसरियामोय-मणहरो विंझो महिहरो ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तस्स पच्चासन्न-रन्ने एगम्मि पायवे सुय-जुयलमत्थि । तस्स पच्छिम-वए जाओ अहं सुओ । तं च वुड्ढत्तणओ अंधलयंति । अहमेव आणेऊण तस्स देमि चूणिं । कयाइ चूणियाणयणत्थं गहण-तावसासमे कुलवइणा तावसाणं वक्खाणिज्जंतं सुयं मए जहा— 'अत्थि समुद्द-मज्झे एगसिंग-पव्वयस्स पाए पुव्व-दिसाभाए अमर-निम्मिया"ऽमयरसाहारो सहयारो । सो य सयाफलो । तस्स एगं पि फलं जो भक्खइ"[२] तस्स नासंति सव्व-वाहिणो न जायए जरा य मच्चू य । तं च सोच्चा चिंतियं मए-'चूयफलमेगं आणेऊण देमि जणणि-जणयाण जेण पुणण्णव-सरीराइं जायंति' । गओ हं तत्थ , दिट्ठो चूयदुमो, गहियं अंबय-दुगं, आगच्छंतो परिस्संत-गत्तो पडिओ एत्थ नीरे । जीवाविओ य तुमए निक्कारण-वच्छलेण । अओ गिण्हसु एगमंबयं । बीयं पुण उवणइस्सं जणणि-जणयाणं ति । सत्थवाहेण वि विम्हओप्फुल्ल-लोयणेण गहियं एगमंबगं । आपुच्छिऊण गओ सुओ स-ट्ठाणं । चिंतियं सत्थवाहेण जहा—

'ते च्चिय जयम्मि धन्ना तेसिं चिय भमइ तिहुयणे कित्ती ।
अवमन्निय-निय-कज्जा पर-कज्जे जे पयट्टंति ॥८५३॥

ता एयमंबयं निय-नरवइणो दाऊण बहुजणस्स य उवयारं करेमि'त्ति धरियं पयत्तेण । उत्तिन्नो गंभीरयपट्टणे । पुणो वि काऊण सत्थ-सामग्गिं चलिओ निय-पुराभिमुहं । पत्तो कायंबरिं अडविं । आवासिओ तत्थ सत्थो, आगया भिल्ल-धाडी । पवर-पाइक्कचक्क-परिगओ [सत्थवाहो वि] सम्मुहमुवट्ठिओ । एत्थंतरे पढियं मागहेण—

'जो गुरु-देव-चलण-सरसीरुह-सेवा-चंचरीयउ,
पर-उवयार-करण-वावार-पवित्तिय-नियय-जीयउ ।
पिक्खिवि सबर-सेन्नु सन्नद्धउ अचलिय-सत्त-संगउ ।
सो वर-सत्थवाहु धणदत्तु जि नंदउवायचंगउ ॥८५४॥

एयं सोऊण भणियं भिल्लवइणा - 'रे रे ! मह सरीर-देहेण साविया तुब्भे मा पहरह' । ठिया चित्त-लिहिय व्व भिल्ला । पेसिओ भिल्लवइणा दुओ जहा— 'भद्द ! जाणाहि को एस धणदत्तो ? किं सो इमो परोवयार-संपायगो, मह दइया-जीविय-दायगो ?' त्ति । दूएण जाणिऊण कहियं भिल्लवइणो— 'सो चेव एसो त्ति ।' 'हा "[३]अकज्जं अकज्जं' भणंतेण विमुक्काउहेण पणमिओ सत्थवाहो पल्लिनाहेण ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पच्चभिजाणिओ सत्थवाहेण । निविट्ठा दो वि [14]पडउडी-मंडवे कणयासणेसु । लज्जोणय-वणिओ(वयणो) भणिओ पल्लीवई सत्थवाहेण— 'भद्द ! कुसलं ते ?'। तेण भणियं— 'कहं मह कुसलं जो हं कयग्घसेहरो तुज्झ वि परोवयारिणो अकुसलं चिंतेमि ? ता सत्थवाह! निय-चलण-अक्कमणेण मह पल्लिं पवित्तीकरेसु, जेण मह तोसो हवइ ।' सत्थवाहो वि 'अहो ! महाणुभावया एयस्स'त्ति मन्नंतो गओ पल्लिं । तं च निरंतर-निहय-गय-दंत-रइय-पायारं, करि-कुंभत्थल-गलिय-मुत्ताहलुक्कुरुड-मणहरायारं, अतुच्छ-चमरी-पुच्छ-संछन्नं, विचित्त-चित्तय-चमरवन्नं, रिंछ-बाल-कय-मंडवं, पवण-पहय-घर-सिर-निवेसिय-मोरपिच्छ-पारद्ध-तंडवं पेच्छंतो पत्तो सत्थवाहो पल्लिनाह-भवणं । समप्पियं तस्स पल्लिवइणा मुत्ताहल-गयदंत-चित्तयखल्लाइयं महरिहं पाहुडं । तं च तदुवरोहेण घेत्तूण समागओ निय-सत्थं । कमेण पत्तो निय-नयरं, पविट्ठो महाविभूईए । महग्घ-रयण-भरिय-थालस्सोवरि [15]अमयमंबयं ठाविऊण गओ राय-दंसणत्थं । पडिहार-निवेइओ पत्तो राय-सयासं । समप्पिय-पाहुडो पणमिऊण निविट्ठो सत्थवाहो । पुट्ठो कुसल-वत्तं रण्णा, विम्हय-वसुप्फुल्ल-लोयणेण य भणियं— 'सत्थवाह ! अच्छेरयमिणं जं सव्व-रयणाणं उवरि निवेसियं एयमंबयं । ता कहेह एत्थ परमत्थो ।' सत्थवाहेण कहिओ सव्वो वि वइयरो । रन्ना तुट्ठेण मुक्कं सुंकं । 'महापसाओ' त्ति भणंतो गओ सत्थवाहो निय-घरं ।

अह पुहइराय-राओ घेत्तूण तमंबयं निय-करम्मि ।
चिंतेइ किमेएणं एक्क-सरीरोवउत्तेणं ? ॥८५५॥

तम्हा निययारामे एयं वावेमि जेण बहुयाइं ।
जायंति अंबयाइं बहूण तो होइ उवयारो ॥८५६॥

अवमच्चु-रोग-जर-हरणमंबयं भक्खिऊण एक्केक्कं ।
हुंति अमर व्व मणुया अहं पि अमरेसरो होमि ॥८५७॥

तो आणवइ नरिंदो पुरिसे - 'वावेह जत्तओ एगं' ।
ते वि कुणंति तह च्चिय कयावहाणा य रक्खंति ॥८५८॥

अंकूर-समुब्भेए तहा दु-चउ-पत्त-संभवे सहसा ।
वद्धावंति नरिंदं पाविंति य वंछिय-फलाइं ॥८५९॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कंदलिओ अज्ज इमो अज्ज इमो जाय-निबिड-थुडबंधो ।
अज्ज इमो साहालो अज्ज इमो मंजरि-सणाहो ॥८६०॥

इय पइ-दियहं आरामिएहिं वद्धाविओ नरवरिंदो ।
वियरइ दाणं वद्धावयाण भसलाण व गइंदो ॥८६१॥

फल-पारंभं राया सुणिऊणं हरिस-पुलइय-सरीरो ।
भणइ इमे जत्तेणं रक्खेज्जह संपइ फलाइं ॥८६२॥

एवं "जोयंताणं ताणं अह पढमंबयं एक्कं ।
दिव्ववसेणं कहमवि पडियं रयणीए" सुत्ताण ॥८६३॥

दट्ठूण तयं पडियं अच्चत्थं हरिसिएहिं तो तेहिं ।
गहिऊण पभायम्मि समप्पियं पुहइरायस्स ॥८६४॥

तत्तो चिंतइ राया जह - 'देमि इमं विसिट्ठपत्तस्स ।
वर-दक्खिणा-समेयं भक्खिस्सं अप्पणा अन्नं' ॥८६५॥

तओ वाहरिओ देवसम्मो विप्पो, संमाणिऊण भणिओ— 'पढमं ति तुह दिन्नं एय ममयंबयं' । सो वि घेत्तूण तं गओ घरं । काऊण देवयाइ-पूयं जा देइ मुहे ता गया तस्स पाणा । केणावि विन्नत्तमेयं महीवइणो । तेण जंपियं— 'अहह ! अकज्जं जं सो गुणनिही विवन्नो । नूणं विसंबो एसो । केणावि वेरिणा मह पाण-विणासणत्थं पेसिओ । ता कट्टेह लहुं' ।

सोऊण इमं वयणं, गंतुं पुरिसेहिं परसुहत्थेहिं ।
मूलाओ छिंदिऊणं महिवट्ठे पाडिओ सहसा ॥८६६॥

सुणिऊण इमं पच्छा मरणत्थं जीवियव्व-निव्विन्ना ।
वेरग्गिणो मणुस्सा गलंतकुट्ठोवहय-देहा ॥८६७॥

नूणमिमो सो मच्चु त्ति कलियं भक्खेइ को वि हु अपक्कं ।
को वि पुण अद्धपक्कं अंबफलं कसरयं को वि ॥८६८॥

तो भक्खिएसु तेसुं जाया ते अमरकुमर-सारिच्छा ।
ते पेच्छिऊण राया विम्हइओ चिंतइ एवं ॥८६९॥

'किं एए नीरोगा जाया मयरद्धय व्व पच्चक्खा ? ।
किं वा वि मओ विप्पो ? एयं अच्चब्भुयं किं पि ॥८७०॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वाहरिउं पाहरिए पुच्छइ - 'किं तोडियं सहत्थेणं ।
तं अंबफलं ? अहवा पडियं भूमीए संगहियं ? ॥८७१॥

तेहिं भणियं - 'पडंतं तमंबयं सामि ! निद्द-विवसेहिं ।
अम्हेहिं न नायं तो पडियं धरणीयले गहियं ॥८७२॥

अह भणइ निवो - 'नूणं विसहर-गरलावगुंठियं बाहिं ।
तं अंबं कहमिहरा मरणं विप्पस्स संजायं ? ॥८७३॥

धिद्धी अहो ! अकज्जं अवियारियकारिणा मए विहियं ।
छिंदाविओ जमेसो अमयंबो परसु-घाएहिं ॥८७४॥

जम्हा विसरुक्खो वि हु सयमेवारोविऊण न हु जुत्तो ।
गरुयाण छिंदिओ किर किं पुण एवंविहं रयणं ॥८७५॥

नत्थि मह को वि सरिसो अवियारियकारओ जए पुरिसो ।
जेणेरिसो अणत्थो विहिओ आजम्म-तावकरो ॥८७६॥

एवं तुमं पि अवियारिऊण नीसेस-सोक्खनिहि-भूए ।
विसए परिच्चयंतो मा पच्छायावमुव्वहसु ॥८७७॥३॥

कुमारेण भणियं—

जे मज्जं व हियाहियत्थकलणा विन्नाण-विच्छेइणो,
जे किंपागफलं व पुव्वमहुरा पज्जंत-दुक्खावहा ।
जे मिद्द व्व दुरंत-मोह-लहरी-उल्लास-संपाइणो,
किं ते हं विसए विसं व विसमे सेवेमि जाणंतओ ? ॥८७८॥

जे संसार-महीरुहस्स सलिलुप्पील व्व संवट्टया,
जे मेह व्व विवेय-वोमरयणा लोयाऽवहारक्खमा ।
नीहार व्व विसुद्ध-बुद्धि-नलिणी-विच्छेयछेया य जे,
को ताणं विसयाण सेवणकए कुज्जा बुहो उज्जमं ? ॥८७९॥

अवि य—

विसएसु सोक्खं सरिसव-तुच्छं दुहं तु गिरि-गरुयं ।
महुबिंदु-पमुद्धो कूवगय-नरो एत्थ दिट्ठंतो ॥८८०॥

मयणलेहाए भणियं- 'सामि ! को एसो कूवगय-नरो ?'।

कुमारेण भणियं—

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

'अत्थि बहु-सरह-सद्दुल-सीहाइ-भीसणा, अलद्ध-पेरंता, मत्त-करि-कलह-भय-पलायंत-सत्त-संकुला एगा महाडवी । तीए य अत्थि हियाहिय-वियार-विरहियत्तणेण ववहार- वज्जिय-पसुत्तपाय-पामर-समूह-समहिट्ठियासंख-भवणालंकिएहिं असंख-पाडएहिं अभिरामो गामो । तत्थ निव्विवेय-सिरोमणी निय-पिययमा-वयण-विणिग्गय-वयणमेत्त-करण-तच्छिलो अत्थि एगो कुलपुत्तओ । सो य सयल-कला-वज्जिओ धरिओ चिरकालं तत्थ भज्जाए । कयाइ संजायाणुकूलभावाए तीए भणिओ सो— 'अज्जउत्त ! एत्तिय-कालं तुमं ववहार-विरहिओ ठिओ, तं च अजुत्तं । जओ—

ववहार-विरहिओ खलु पुरिसो लहुयत्तणं लहइ लोए ।
गुरुदेवाऽतिहिपूया-कुडुंबभरणेसु असमत्थो ॥८८१॥

ता इओ निग्गंतूण गामंतरं वच्चामो । तत्थ वत्थव्वय-जणस्स ववहारो [सुट्ठु] सुव्वइ'। तव्वयणेण गओ कुलपुत्तओ तं गामं, ठिओ तत्थ चिरकालं कलत्त-मुहकमल-पलोयण-सयण्हो । अन्नया पुणो वि भणिओ— 'पिययम ! एत्थ वि न तहाविहो को वि ववहारो । ता अन्नत्थ वच्चामो ।' कुलपुत्तएण भणियं - 'सुयणु ! जं तुमं आणवेसि । तुमं विणा अन्नो न चक्खुभूओ कोइ, तुमं चेव मह मई गई सरणं'ति । तओ 'सो निद्देसकारि'त्ति संतुट्ठमणाए अणाए वसाविओ उत्तरोत्तर-गुण-विसिट्ठेसु "बहुय-गामेसु, तेसु वि असंपज्जमाण-मणवंछियत्थ-सत्थो कट्ठेण कालं वोलेइ ।

अन्नया भणिओ भज्जाए - 'दईय ! जइ मह वयणं करेसि ता तुमं अच्चंत-सुहियं करेमि ।' कुलपुत्तएण भणियं— 'पिए ! किमेवं भन्नइ ?। जइ तुमं भणसि ता निसियग्ग-खग्ग-वावड-करो करेमि परिहरियावरवक्खेवं रायसेवं, तुट्टंत-सास-पसरो धूली-धूसरो धावेमि तस्स पुरओ, पविसामि सामि-कय-पसाय-निक्कय-निमित्तं मत्त-करि-कडा-घडिय-डमरं समरं, विहेमि अगणिय-वयणिज्जं वाणिज्जं, वच्चेमि चोर-चरड-कओवद्दव-निरंतरं देसंतरं, तरेमि उल्लसंत-अब्भंलिह-लहरि-वार-दुव्वारं पारावारं, खणेमि नाणारयण-सोहणं रोहणं, सेवेमि अलियवाइणो धाउवाइणो, विरएमि दंसिय-किलेसं विवर-पवेसं, आणेमि देसंतराओ मयगंध-लुद्ध-भमर-दिन्न-कन्नताल-चवेडाओ "हत्थि-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दड्ढाओ, पारेमि सव्व-लक्खण-पवरंगे तुरंगे, रक्खेमि महाभरुव्वहण-सहे वसहे, पालेमि विउल-भरवहे करहे, धरेमि गुरु-वेगप्पसरे वेसरे, बंधेमि समुद्धरिय-वक्खरे खच्चरे, संपाडेमि सयल-सुह-धरिसणं करिसणं, गच्छामि तत्थ जत्थ तुमं आणवेसि त्ति । अवि य—

नच्चेमि धणड्ढाणं पुरओ पायडिय-बहुविहुवयारो ।
गाएमि गुणोहं ताणमेव वाएमि तूराइं ॥८८२॥

भंडत्तणं पयासेमि विविह-विन्नाण-जणिय-जणहासो ।
परगुण-पढण-पयट्टो जइ वा पयडेमि भट्टत्तं ॥८८३॥

विरएमि बहु-वियप्पं सिग्घं घड-लोह-चित्तकरणाई ।
अन्नं पि दुक्करं तुह वयणाओ आयरामि पिए ! ॥८८४॥

तो भज्जाए भणियं पहिट्ठ-मुहपंकयाए- सच्चमिणं ।
जं दईय ! तए वुत्तं ताऽहं तुह देमि उवएसं ॥८८५॥

तुह नत्थि धणोवाओ गामेसु इमेसु जं वसंतस्स ।
ता कुणसु दईय ! देसंतरेसु गमणुज्जमं इण्हिं ॥८८६॥

एवं भणिओ निय-पिययमाए कुलपुत्तओ तओ चलिओ ।
तीए च्चिय अडवीए गएण कुद्धेण सो दिट्ठो ॥८८७॥

तं पिट्ठओ विलग्गं उप्पाडिय-"गरुय-घोर-कर-दंडं ।
आगच्छंतं दट्ठुं कुविय-कयंतं व दुप्पेच्छं ॥८८८॥

कंपंत-सव्व-गत्तो इओ तओ खित्त-तरल-नयणजुओ ।
आढत्तो कुलपुत्तो पलाइउं मरण-भय-भीओ ॥८८९॥

सो जाव तं गइंदो करेण न च्छिवइ ताव तेणावि ।
दिट्ठो तण-संछन्नो कूवो अच्चंत-गंभीरो ॥८९०॥

कूवस्स तस्स तीरि चिट्ठइ वड-पायवो अइ-महंतो ।
वड-पायवाओ एक्को पारोहो कूवमोयरिओ ॥८९१॥

कुलपुत्तएण कूवे पडंतएणं भयाभिभूएण ।
पत्तो पारोहो सो तमेव अवलंबिऊण ठिओ ॥८९२॥

जा अवलोयइ कूवस्स अंतरे ताव पेच्छए तत्थ ।
गुरुय-वियारिय-वयणं अयगरमेक्कं महाकायं ॥८९३॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सो गसिउमणो पेच्छइ कुलउत्तं कोव-कलिय-नयणेहिं ।
चउसु वि दिसासु चत्तारि विसहरा हरगल-सवन्ना ॥८९४॥

गुरुतर-ललंत-जीहा फुक्कार-विमुक्क-विसकणुक्केरा ।
चिट्ठंति गसिउकामा तं चिय कुलपुत्तयं दीणं ॥८९५॥

छिंदंति मूसया तं पारोहं कसिण-सुक्किला दो वि ।
हत्थी य करग्गेणं केसग्गं तस्स परिमुसइ ॥८९६॥

रोसावेसवसेणं पुणो पुणो आहणेइ वडविडविं ।
महुयाल-मच्छियाओ उड्डीणाओ तओ तुरियं ॥८९७॥

कुलउत्तयं समंता ताओ खायंति रोस-विवसाओ ।
तत्तो महुकोसाओ चलियाओ कह वि महुबिंदू ॥८९८॥

कुलपुत्तयस्स पडिओ नडाल-वट्टम्मि सो य पगलंतो ।
वयण-पएसं पत्तो जीहाए तं च कुलउत्तो ॥८९९॥

आसाइउमाढत्तो सुहं च मन्नइ नियम्मि चित्तम्मि ।
वीसरिऊण समग्गं अवरं दुह-कारणं तत्थ ॥९००॥

एस दिट्ठंतो, अवणओ पुण इमो— 'जहा विविह-सावय-संकुला अडवी तहा जम्म-जरा-मरण-रोग-सोगाइ-संकुलो संसारो, जहा ववहार-वज्जिओ गामो तहा असंववहाररासी, जहा असंख-पाडया तहा असंख-भवणा, जहा असंख-गोलया तहा असंख-निगोआ, जहा पामरा तहा निगोय-जीवा, जहा कुलपुत्तओ तहा संसारि-जीवो, जहा तस्स पिययमा तहा तस्स भवियव्वया, जहा तव्वयणेण गामंतर-गमणं तहा भवियव्वया-निओगेण असंववहार-रासि-मज्झाओ संववहार-रासि-गमणं, जहा तत्तो वि अवरावर-गाम-परिब्भमणं तहा विगलिंदिय-पंचिंदिएसु उप्पत्ती, जहा भज्जा-वयणेण सेवा-वणिज्जाइ-करणं कुलपुत्तस्स तहा संसारि-जीवस्स भवियव्वया-पेरियस्स सयल-तहाविह-वावार-करणं, जहा सो वणहत्थी तहा मच्चु, जहा कूवो तहा माणुस-भवो, जहा अयगरो तहा नरगो, जहा चत्तारि सप्पा तहा कोह-माण-माया-लोभा, जहा वडपायव-पारोहो तहा आउयं, जहा ते मूसया तहा कसिण-सुक्किला दो पक्खा, जहा ते मूसया वडपारोहं छिंदंति, तहा कसिण-सुक्किला दो पक्खा आउयं छिंदंति, जहा ताओ महुमच्छियाओ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तहा विविहाओ वाहीओ, जहा सो महुबिंदू तहा विसयसुहं । अओ भणामि सरिसव-तुच्छं विसय-सुहं, गिरि-"गरुयं च दुक्खं । ता भद्दे ! जइ को वि विज्जाहरो तं तु उत्तारिज्ज तो सो इच्छेज्ज न व ? त्ति । तीए भणियं— 'बाढं इच्छेज्ज' । कुमारेण भणियं— 'जइ एवं ता ममं पि गुरुणा कयप्पसायं भवंधकूवाओ निग्गंतुकामं किं निवारेह ?' ॥४॥

एत्थंतरम्मि कणगावलीए संभाविअ-पियविओयाए ।
भणियं - 'पिययम ! एक्कं ममावि निसुणेसु हिय-वयणं ॥१०१॥

सगुणं वा निगुणं वा कज्जं जं किंचि काउमभिरुइयं ।
नूणं विभावियव्वो परिणामो तस्स पुरिसेण ॥१०२॥

अविभाविऊण सम्मं जे उण कज्जं कुणंति मूढमणा ।
ते सोयंति अवस्सं मित्तवईए जहा ससुरो ॥'१०३॥

कुमारेण भणियं— 'भद्दे ! को सो मित्तवईए ससुरो ?

तीए भणियं— 'सुण,

अत्थि अवंती-जणवए उज्जेणी नयरी । कणयमय-तुंग-पासायपंति-"सिहरुद्धिओ गयणलग्गो किरण-समूहो लोयाण मेरु-संकं कुणइ जत्थ । तीए अवंतिदत्तो सेट्ठी, भज्जा से जसोहरा, ताणं धूया मित्तवई, सा परिणीया तन्नयरि-वत्थव्वगेण विण्हुदत्त-पुत्तेण सामदेवेण । अइक्कंतो कोइ कालो ।

बालत्तणम्मि रेहइ नराण एयं दुगं न तारुन्ने ।
माइथण-दुद्धपाणं पिउलच्छीए य परिभोगो ॥१०४॥

ता देसंतर-गमणं काउं सभुयाहि विढविऊण धणं ।
पूरिय-समग्ग-मग्गण-मणोरहो कित्तिमज्जेमि ॥१०५॥

इय चिंतिऊण एसो पसत्थ-दियहम्मि कुणइ पत्थाणं ।
अत्थोवज्जण-हेउं पिउणा बहुमन्निओ संतो ॥१०६॥

पुट्ठो मए न दइय त्ति चिंतिउं खेयमुव्वहंतो सो ।
पास-परिवत्तिणा माहणेण मुणिऊण वज्जरिओ ॥१०७॥

मित्त ! तुह पिययमाए उज्जाणे संगमं कराविस्सं ।
तेण य मित्तवईए वयंसिया माहवी भणिया ॥१०८॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आणेज्जसु मित्तवइं उज्जाणे सामदेवमवि अहयं ।
आणिस्सं ताण तओ दोण्हं पि हु संगमो होही ॥१०९॥

इय विहिए संकेए जाओ दोण्हं पि संगमो तत्थ ।
वज्जरियं सुह-दुक्खं इमेहिं वुत्तो य संभोगो ॥११०॥

पुप्फवइ-संजोएण जाया आवन्नसत्ता मित्तवई । वच्चंतेण सामदेवेण हिययासासण-निमित्तं समप्पियं मुद्दा-रयणं । गहिओ य तीए कंठ-कंदलाओ पउमरायंको हारो । गओ देसंतरं सामदेवो । अइक्कंता कइवि दियहा । पयडीहूयं मित्तवईए पोट्टं । तं च पेच्छिऊण अणाकलिऊण कुलप्पसूयत्तणं, तीए अगणिऊण गुण-पक्खवायं, अविभाविऊण कज्ज-परमत्थं, अणालोइऊण तप्परिणामं, अणवेक्खिऊण सयण-सिणेहं, अविचिंतिऊण नियकुल-वयणेज्जयं, समुप्पन्न-कोवेहिं सासू-ससुरेहिं मंतियं—

आ ! पावाए इमीए अणवेक्खिय-उभयकुल-कलंकाए ।
इह-परलोय-विरुद्धं पेच्छ कयं केरिसमकज्जं ॥१११॥

तम्हा विणट्ठसीला सयल-जणाणं इमा गरहणिज्जा ।
अम्हाणमदट्ठव्वा कयवयणिज्जा[63] अवयणिज्जा[64] ॥११२॥

तओ मग्गिया आहरणा । हारवज्जं समप्पियमिमीए । जाया एएसिं आसंका, परं कोवाइसएण न [65]पुच्छियं हार-वुत्तंतं, निद्धाडिया गेहाओ, गया जणय-घरं । तत्थ वि तहेव निव्वासिया । तीए(तओ) माहवी-समेया निग्गया नयरीओ । लज्जाए कस्स वि मुहं दंसिउमचयंती [66]तद्दियहमेव कोसंबिगामिणा पयट्टा सह सत्थेण, गच्छंताणं च अडवि-[67]मज्झं कट्ठाइ-निमित्तं गया हरिया भिल्लेहिं माहवी । तओ एगागिणी मित्तवई कहाणयवसेण पत्ता कोसंबिं । पविट्ठो य सत्थो नयरीए । सा पुण ठिया देवउले ।

एत्थंतरम्मि वेलामासो त्ति पसूया महा-किलेसेण, जाओ से दारगो, गहिया हरिस-विसाएहिं ।

आवइ-गयं पि दुक्ख-हियय पि दोगच्च-दूमियमणं पि ।
जीवावेइ अवस्सं अवच्च-संजीविणी जीवं ॥११३॥

अइक्कंता काइ वेला । तओ अद्धपहायाए रयणीए आसन्ना नई त्ति

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मुद्दासणाहुत्तरिज्ज-वेढियं काऊण दारयं अंगाइं पक्खालण-निमित्तमुत्तिन्ना नईए। जाव तहिं अंगाइं पक्खालेइ ताव सुणएण हरिओ दारओ, मुक्को आयमणोवविट्ठस्स जउण-सिट्ठिणो पुरओ। गहिओ सहरिसेण, दिट्ठं मुद्दा-रयणं। सामदेव-सुओ त्ति नीओ अणेण गेहं, समप्पिओ मरंत-वियाइणीए सित्ता-नामाए निय-घरिणीए। कम्म-धम्म-संजोएण तक्खणमेव "पसूया एसा, मओ चेव निग्गओ गब्भो। उज्झिओ एसो। अइक्कंते मासे कयं वद्धावणयं, नामं च दारगस्स जक्खदिन्नो त्ति। तओ एस सुहेण वड्ढइ"। जओ—

संगामे गय-दुग्गमे, हुयवहे जालावली-संकुले,
कंतारे करि-वग्घ-सीह-विसमे, सेले बहूवद्दवे।
अंभोहिम्मि समुल्लसंत-लहरी-लंघिज्जमाणंबरे,
सव्वो पुव्वभवज्जिएहिं पुरिसो पुन्नेहिं रक्खिज्जए ॥११४॥

इओ मित्तवई नईए उत्तरिऊण दारगं अपेच्छंती अन्नेसिउं पवत्ता। न दिट्ठो तीए दारगो, तओ एगत्थ उवविसिय रोविउमाढत्ता—

हा देव्व! तिव्व-दुक्खाण भायणं निम्मिया अहं चेव।
अन्नो न को वि लद्धो इमाण भंडारिओ तुमए ॥११५॥

रे दिव्व[80]! दइय-विरहानलेण डज्झंत-सव्व-गत्ताए।
उप्पाइओ कलंको मह दुसहो फोडओ व तए ॥११६॥

[81]निच्छूढा गेहाओ सासु-ससुरेहिं जणणि-जणएहिं।
[82]अवहरिउं मह तणयं खयम्मि खारो तए क्खित्तो ॥११७॥

एवं रुयंती[83] आसासिया गोउलिणीहिं। 'अदेसयन्नुय'त्ति मयहरीए नीया गोउलं, पडिवन्ना धूयं। जाव तत्थ कयवइ(कइवय)-दियहे अच्छइ ताव दिट्ठा थी-लोल-वसंत-ठक्कुर-पाइक्केण, निवेइया सामिणो, जाइओ तेण गोउलिओ। तेण भणियं- न एस धम्मो संताणं। तओ सा अणेण हराविया, नियमिताए तीए कहं पि [84]मओ वसंतो। 'अहो महासइ'त्ति पूईया तम्माणुसेहिं। मुक्का य एसा। पयट्टा गोउलं। नग्गोह-हेट्ठओ डक्का सप्पेण, विहलंघला जीवाविया वुड्ढ-सबरेण। पत्ता गोउलं। पुव्व-ठिईए गोउलिणीण मज्झे चिट्ठमाणीए अइक्कंतो कोइ कालो। इओ य जक्खदिन्नो कालक्कमेण वड्ढिओ देहोवचएणं कलाकलावेण य, तप्पभावेण

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जाया थिरगब्भा सित्ता। उप्पन्नं अन्नं पि पुत्त-दुगं। जक्खदिन्नो सयल-कलाकलाव-कलिओ गुणेहिं गरूय त्ति जाया सित्ताए उवेक्खा। चिंतियमिमीए— 'वावाएमि जक्खदिन्नं, न अन्नहा मे पुत्ता संपयं पावंति'।

अन्नया भंडसालाए ठियाणं पुत्ताणं पेसिया लड्डुगा। तत्थ मयहरे पक्खित्तं विसं। भणिओ य परिवेसगो- 'एयं जक्खदिन्नस्स दिज्जाहि'। गओ सो। जाव जक्खदिन्नो ववहार-करणेण आउलो न भुत्तमणेण, भुत्तं लहुय-पुत्तेहिं। अइक्कंता काइ वेला। तओ ते भायरो भणंति— 'जक्खदिन्न! एहि गेहं, भुंजामो'। सो य ववहार-आउलो न तम्मि असमत्ते गिहं गंतुमिच्छइ, ते रोविउं पवत्ता। 'अम्हे भुक्खिय'त्ति। जक्खदिन्नेण भणियं— 'एयं चेव लड्डुगं खाएह'। खद्धो तेहिं विस-लड्डुगो। थेववेलाए उग्गया विसस्स घारिया, मया य। नायमिणं जउणेण, पुणो वि एयं वावाइस्सइ[११]। तओ साहिऊण सब्भावं, समप्पिऊण मुद्दारयणं, पेसिओ ववहार-निमित्तं तामलित्तिं नयरिं। 'कहं मए अम्मा-पियरो नायव्व'त्ति गओ य एसो। ससोगो चिट्ठइ तहिं अम्मा-पिइ-मिलण-निमित्तं देवयाराहणपरो, उद्दरिसियं देवयाए— 'होही तुह मासमित्तेण माया-पिऊहिं संजोगो। तुज्झ माया मित्तवई, पिया सामदेवो। एयाणि मास-पज्जंते पियमेलगे उज्जाणे समागयाणि पेच्छिहिसि। तत्थ तुमं दट्ठूण मित्तवईए पण्हविस्संति थणगा। सामदेवं दट्ठूण सुसारिक्खत्तणओ भणिस्सइ जणो— 'इह जक्खदिन्न! पिया ते आगओ'त्ति। एवं उद्दरिसिए तुट्ठो जक्खदिन्नो। इओ य सा मित्तवई अणुचियाहारदोसेण गहिया कुट्ठवाहिणा, न पन्नप्पए गामोसहेहिं। पबलीहूओ वाही। आणिओ गोउलिएण वेज्जो। सामग्गी-अभावओ पच्चक्खाया वेज्जेण। तीए निव्विन्नाए खामिऊण गोउलजणं महापूर-भरियाए पवाहिओ अप्पा जउणा-सरियाए। कंठगयपाणा लग्गा अरुलुग-रुक्खे, तत्थट्ठिया वूढा सत्त-दिवसाणि, अट्ठम-दिणे अच्चंत-भुक्खियाए खद्धो अरडुग-कोडर-संभूओ वज्जकंदो, घारिया, तव्वीरिएणाऽऽलग्गा नई-तीरि ओहट्टमिमीए जलं, उद्धट्ठावणएण ठिया सत्त-दियहे, लद्धा अट्ठम-दिणे चेयणा, उट्ठिया किच्छेण, सीयवाय-पीडिया गया मसाण-जलणे, खद्धाणि मसाण-बीजपूरगाणि। पच्चूसे दिट्ठा तलवरेणं, नीया गेहं। पडियरिया इंदवारुणि-भक्खिगच्छेली-खीराइणा जाया पुणन्नवा गंगावाडे चिट्ठइ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एत्तो य सामदेवो कालेण विढत्त-विहव-संभारो ।
संपत्तो निय-गेहं अपेच्छिउं तत्थ मित्तवई ॥११८॥

पुच्छइ गुरूण पासे जहट्ठियं ते कहिंति वुत्तंतं ।
सोऊण सामदेवो सोग-समुल्लसिय-संतावो ॥११९॥

पडिओ धरणीवट्टे धस त्ति मुच्छा-निमीलियच्छिपुडो ।
सिसिरोवयार-उवलद्ध-चेयणो विलवए एवं ॥१२०॥

हा चंद-चारु-वयणे ! वियसंत-कंदोट्ट-दल-सरिस-नयणे ! ।
नयणेहिं इमेहिं मए कत्थ तुमं पुण वि दट्ठव्वा ? ॥१२१॥

आजम्मं चिय तुह निक्कलंकसीलाए धम्मसीलाए ।
उप्पाईओ कलंको पावेण मए च्चिय मइच्छि ! ॥१२२॥

अह माहणेण कहिओ गुरूण सव्वो वि पुव्व-वुत्तंतो ।
पच्चय-हेउं हारो य दंसिओ पउमरायंको ॥१२३॥

तो विण्हुदत्त-सेट्ठी संखुद्धो निय-मणम्मि चिंतेइ ।
अहह ! अकज्जं अवियारिऊण विहियं मए एयं ॥१२४॥

कुनरिंदेण व नीई पुराओ निव्वासिया निय-घराओ ।
जं एसा मित्तवई मए जणाणंद-संजणणी ॥१२५॥

न कुलं इमीए उत्तममवेक्खियं नेय निम्मलं सीलं ।
सयण-सिणेहो निहिओ हिययम्मि न थेवमित्तो वि ॥१२६॥

परलोय-विरुद्धमिणं पावं पि न निब्भएण संभरियं ।
आजम्मसीलिया वि हु करुणा दूरेण परिचत्ता ॥१२७॥

धिद्धी ! मूढेण मए चंदस्स व निम्मलस्स हय-विहिणा ।
नियय-कुलस्स कलंको आकालं निम्मिओ एसो ॥१२८॥

एत्तो य सामदेवो कुणइ पइण्णं जहा- 'अलद्धाए ।
तीए मित्तवईए नाहं पविसामि गेहम्मि' ॥१२९॥

निग्गंतुं गेहाओ गवेसियाऽणेण उचिय-ठाणेसु ।
दिट्ठा न कत्थ वि तओ चडिऊण वडम्मि अत्ताणं ॥१३०॥

उब्बंधिउमारद्धो धरिओ नेमित्तिएण केणावि ।
'मा एवं कुण होही तुह जायाए धुवं जोगो ॥१३१॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गच्छसु गंगावाडं जाया तत्थऽत्थि तुह अहय-सीला ।
एसो य पच्चओ तुह मिलिही अज्जेव तीए सही' ॥१३२॥

पडिसुयमणेण दिट्ठा य झिल्लनट्ठा पहम्मि माहविया ।
सा रोविउं पवत्ता तेण समासासिया कह वि ॥१३३॥

तीए निय-वुत्तंतो कहिओ सव्वो वि सामदेवस्स ।
तेणावि तीए दो वि हु गंगावाडम्मि चलियाइं ॥१३४॥

पत्ताणि ताणि, दिट्ठा तलवर-गेहम्मि कह वि मित्तवई ।
ता रोविउमाढत्ता तेहिं समासासिया एसा ॥१३५॥

अवरोप्परं इमेहिं निय-वुत्तंतो निवेईओ सव्वो ।
तं तलवरेण सोउं समप्पिया सा सबहुमाणं ॥१३६॥

सो तं गहाय चलिओ पासम्मि समुद्ददेव-मित्तस्स ।
पत्तो य तामलित्तिं मिलिओ सुय-जक्खदिन्नस्स ॥१३७॥

सारिक्खयाए पिउणो मुद्दारयणस्स दंसणेणं च ।
निय-नंदणो त्ति नाउं तुट्ठाणि ठियाणि ताणि तहिं ॥१३८॥

इह विण्हुदत्त-सेट्ठी अवियारिय-कज्जकारओ वुत्तो ।
निय-नंदण-वहुया-नत्तुएहिं अजसं च संपत्तो ॥१३९॥

तह पच्छायावहओ आजम्मं दुक्खभायणं जाओ ।
'इय मा तुमं पि पिययम ! कज्जं अवियारियं कुणसु' ॥ १४० ॥ ॥ ५ ॥

सरहस-नमंत-सामंत-मउड-मणि-किरण-लीढ-पयवीढं ।
रंगंत-तुरंगम-थट्ट-हेसिउत्तासियाणत्थं ॥१४१॥

करि-कुंभत्थल-सिंदूर-पूर-पयडीकयासमय-संझं ।
रह-सिहर-समीराहय-धय-भुय-नच्चंत-जयलच्छिं ॥१४२॥

संपज्जमाण-मणवंछियत्थ-सत्थं कमागयं एयं ।
अणुरत्त-पयइ-वग्गं पालसु रज्जं नएण चिरं ॥१४३॥

कुमारेण भणियं— 'मुद्धे ! रज्जं खु नाम रवि-ससि-मणि-पईव-पहा-पूराभिंदणिज्जं अणवसरं तिमिरं, अंजणाणुच्छेयणिज्जं अपडलमंधत्तणं, ओसहासज्झो अहेउओ सन्निवाओ, अनिसावसाण-पवाहा अनिमीलिय-लोयणा निद्दा, अपरिणामो वसमो अणासवो मओ, तहा

अनियला गुत्ती, अपित्तोदओ दाहज्जरो, अणिंधणो जलणो, अविसो मुच्छागमो, अभोयणा विसूइया । एयप्पसत्ता न याणंति कज्जाकज्जं, न बुज्झंति हियाहियं, न वियारिंति जुत्ताजुत्तं, न मुणंति धम्माधम्मं, न गणंति गम्मागम्मं । तं एयं सलिलं तण्हा-विसवल्लरीणं, गोरिंगीयं करण-हरिणाणं, धूम-पडलं सच्चरित्त-चित्तवित्तीणं, मसाणं पमाय-पिसायाणं, विंज्झारन्नं धण-मय-मयगलाणं, दिणावसाणं सव्वाऽविणय-अंधयाराणं, वम्मिय-बिलं कोहावेग-विसहराणं, आवालयं विसयमत्त-वालयाणं, रंगंगणं इस्सरिय-वियारनडाणं, समुद्दमज्झं दोसग्गाहाणं, घणमंडलं गुण-कलहंसाणं, आमुहं कवड-नाडयाणं, पवण-परिफुरणं लोयाववाय-जलणाणं, आलाणं काम-करिणो, राहु-मुहं धम्म-ससिणो, वज्झट्ठाणं साहुवायस्स । तहा—

पक्खालिज्जइ रज्जे अभिसेय-दिणम्मि चेव दक्खिन्नं ।
मंगलकलस-पलोट्टंत-सलिल-पूरेण व नरस्स ॥१४४॥

अवणिज्जए पुरोहिय-कुसग्ग-संमज्जणीहिं व प्पसमो ।
मलिणेज्जइ तक्कय-अग्गि-कम्म-धूमेण व मणंसो ॥१४५॥

सिर-कणय-पट्टबंधेण वावरिज्जइ जरागमण-सरणे ।
वारिज्जइ छत्तेण व दंसणं मोक्ख-मग्गस्स ॥१४६॥

चामर-समीरणेण व सच्चत्तणमवहरिज्जइ असेसं ।
ओसारिज्जइ पडिहार-चित्तदंडेण व गुणोहो ॥१४७॥

लोयम्मि साहुवाओ लुप्पइ जयसद्द-कलयलेणं व ।
पुन्नं परामुसिज्जइ चल-धयवड-पल्लवेहिं व ॥१४८॥

एक्कामिसलुद्धाणं सुणयाण व जत्थ बंधवाणं पि ।
दीसइ कलहो को तम्मि आयरं कुणइ रज्जम्मि ? ॥१४९॥

रज्जपसत्तो सत्तो जीववह-प्पमुह-पउर-पावाइं ।
काऊण जाइ नरयं निस्सरणो सूरसेणो व्व ॥१५०॥ [तथाहि -]

"आसि जंबुद्दीवे भारहे खेत्ते नंदिग्गामे गोविंदो माहणो । तस्स लच्छीए भारियाए कुच्छि-संभूया रुद्द-खंद-नामया दुवे पुत्ता परोप्पर-सिणेहपरा । कयाइ करिसण-अन्नेसणत्थं गया खेत्तं । दिट्ठो अणेहिं खेत्तासन्ने संचरंतो चंडाल-दारओ । जाइमयावलित्तेहिं तेहिं- 'अरे दुट्ठ !

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दुरायार ! अम्ह खेत्ते विट्टालं करेसि ! न याणेसि अत्तणो जाइ ?, न संचरसि दूरेणं ?' ति भणंतेहिं तहा पहओ लेट्ठुप्पहाराइहिं जहा मुक्को जीविएणं । सो य अट्टज्झाण-दोसओ समुप्पन्नो तत्थेव खेत्ते पन्नगो । अन्नया रक्खणत्थं खेत्ते पसुत्ता रयणीए रुद्द-खंदा, कह वि भमंतेण पन्नगेण [दिट्ठा], दट्ठूण पुव्व-भव-वेराणुबंधवसा पन्नगेण दट्ठो एगो । 'दट्ठो' 'दट्ठो'त्ति पुक्करियमणेण । 'किं' 'किं' ति भणंतो उट्ठिऊण गवेसंतो बीओ वि डक्को तेण । अकयप्पडियारा मया दो वि, उप्पन्ना तत्थेव खेत्ते कोल्हुया । इओ य समुप्पन्नोहिनाणो नाणसुरो नाम समागओ तत्थ मुणिवरो । सुर-विरइए निसन्नो सुवन्नकमले । समागओ गामलोओ वंदणत्थं । पवत्तो धम्ममाइक्खिउं भयवं । समये सुय-खेयमुव्वहंतेण पुट्ठो गोविंद-माहणेण— 'भयवं ! मह सुया कत्थ उप्पन्ना ?'। मुणिणा भणियं— 'भद्द ! जाइमयावलित्तत्तणओ पुव्व-विणासिय-चंडाल-दारय-जीव-सप्पेण डक्का समाणा समुप्पन्ना इहेव खेत्ते कोल्हुया । पत्ता पोढभावं । अज्ज पुण संझाए तुह करिसगेहिं खेत्त-विमुक्काइं रयणि-वुट्ठ-जलहर-सलिल-सित्ताइं नाड(डि)याइं गड्डीए अच्चत्थं भक्खिऊण उप्पन्न-सूलवेयणा मया दो वि खेत्त-पज्जंते पडिया चिट्ठंति । एयं सोऊण पलोइया गंतूण गोविंदेण लोएण य । दट्ठूण तहाविहे ते, 'अहो ! नाणाइसओ भयवओ, अहो ! थेवस्स वि कम्मुणो दारुणो विवागो'त्ति भणंतो गोविंदो सेस-लोओ य वेरग्गमुवगओ पवन्नो जिणप्पणीयं धम्मं ।

एत्तो य ते मया समाणा कोल्हुया इहेव भारहे वासे पइट्ठाणे नयरे उत्सदिन्न-रयगस्स घर-रासभीए गब्भम्मि एगो य रासहो, अवरो य घर-सुणिगाए कुच्छिम्मि सुणओ, जाया दो वि । परोप्पर-सिणेहेण ललमाणा पत्ता पोढभावं । अन्नया आहेडय-प्पिउगो बालो राया तेणंतेणं वोलइ जाव दाहिण-दिसिट्ठिएण रसियं रासहेण, तस्स सद्दं सोऊण तन्नेह-मोहिओ गओ वामभागाओ दाहिण-दिसं सुणओ, 'अवसउणो'त्ति काउं आहया दो वि एक्क-सेल्लेणं, मया समाणा विचित्तयाए कम्मणो तहाविह-भद्दग-भावित्तणेण तम्मि चेव नयरे आणंद-सिट्ठिणो सुनंदाए भारियाए चंदण-नंदणा नाम उप्पन्ना जुयलत्तणेण दो वि पुत्ता । वड्ढिया देहोवचएणं कलाकलावेण य । परिणाविया कुल-सील-जाईओ कन्नयाओ । "सुविणिंदयाल-सरिसत्तणओ जीवलोयस्स उवरओ आणंद-सेट्ठी । दो वि जाया निराणंदा ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वच्चइ जह किरण-गणो अत्थमयंतेण चेव सह रविणा ।
तह आणंदेण समं अत्थो अत्थं गओ ताणं ॥१५१॥

तो माणधणत्तणओ लज्जाए तत्थ ठाउमचयंता ।
निग्गंतूण पुराओ पत्ता देसंतरं दो वि ॥१५२॥

तत्थ कुसवद्धणे नयरे धणवद्धणस्स सेट्ठिणो ठिया वाणिउत्तत्तणेण, विसिट्ठ-लाभं च अपेच्छंता चडिया पवहणे, समुद्दमुल्लंघिऊण गया परतीरं । आढत्ता ववहरिउं । 'उदर-भरणाओ अहियं न किंचि संपज्जइ'त्ति गया रोहणायलं, खणिउं पवत्ता । जाव काण-कवड्डगं पि न पावंति, ताव तं मोत्तूण परिवायग-विप्पयारिया पविट्ठा विवरं । खुद्ददेवयाए अवहारिया पडिया कुसवद्धण-नयरुज्जाणे । दिट्ठा कहं पि तत्थागएण धणवद्धण-[६६]सेट्ठिणा, नीया स-गिहं, भणिया य— 'भद्दा ! अजुत्तं कयं तुब्भेहिं जं ममं अणापुच्छिऊण इओ गया, ता संपयं तहा जइस्सं अहं जहा तुम्हाणं संपया होइ ।'त्ति अणुसासिऊण समप्पियं ववहरणत्थं सहस्समेगं दीणाराणं । ववहरिउमाढत्ता । जाव कम्म-धम्म-संजोएण दुगुणीहुयं दव्वं । तओ 'सदेसं वच्चामो'त्ति चिंतिऊण अप्पियं दव्वं [६७]सेट्ठिणो । सेट्ठिणा वि उदारत्तणेण सव्वं समप्पियं तेसिं । तो दो वि दीणार-सहस्से घेत्तूण चलिया निय-देसं, पत्ता निय-नयरासन्नं । एत्थंतरे अतक्कियागएहिं तक्करेहिं गाढं पहणिऊण पाडिया ते महीए । गहिऊण धणं गया तक्करा । ते वि कंठगय-पाणा जाव चिट्ठंति ताव दिट्ठा एगेण मुणिणा करुणा-पवन्न-माणसेण ठाऊण कन्न-मूले अणुसासिया जहा—

पुव्वकय-सुकय-दुक्कय-फलमुवभुंजंति जंतुणो जेण ।
तेण न कुणंति धीरा परम्मि तोसं व रोसं वा ॥१५३॥

तुब्भेहिं वि पुव्व-भवे कस्सइ अन्नस्स विरइया पीडा ।
तो तुम्हाण वि एवं उवट्ठिया संपयं एसा ॥१५४॥

अकयं को अणुभुंजइ ? स-कयं नासेज्ज कस्स किर कम्मं ? ।
स-कयमणुभुंजमाणो कीस जणो दुम्मणो होइ ॥१५५॥

ता मा कुणह विसायं, धरेह हिययम्मि सयल-दुहहरणं ।
पंचपरमेट्ठि-मंतं एयं कल्लाण-संजणणं ॥१५६॥

एवमणुसासिऊण दिन्नो मुणिणा पंचपरमेट्ठि-नमोक्कारो ।
ओहेण अमयं व परिणओ इमेसिं पयइभद्दत्तणेण ॥१५७॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अकय-तहाविह-पावा मरिऊण पंचपरमेट्ठि-नमोक्कार-प्पभावेण समुप्पन्ना इहेव जंबुद्दीवे भारहे वासे चंपाए नयरीए चंदसेणस्स रन्नो चंदकंताए कंताए कुक्खिम्मि, जुयलत्तणेण पुत्ता जाया। कालक्कमेण कयं वद्धावणयं महाविभूईए। पयट्टियाइं नामाइं एगस्स वीरसेणो अवरस्स सूरसेणो त्ति। गहिय-कलाकलावा पत्ता जोव्वणं, परिणाविया सरीर-[10]सुंदेरिम-लहुईकय-लच्छि-लावन्नाओ रायकन्नाओ। ताहिं समं सयलिंदियाणुकूलं विसयसुहमणुहवंताणं अइक्कंतो कोइ कालो। कयाइ कय-तरुण-जण-मणप्पमओ समागओ वसंत-समओ।

नच्चंत-रमणि-कंकण-कलाव,-कलसद्द-पबोहिय-कुसुमचाव ॥९५८॥
अच्छेरय-रंजिय-तरुण-सत्थ,-सुर-घरहि हुंति रहजत्त जत्थ ॥९५९॥
जहि कुसुमगंध-लुद्धालिजाल,-रव-भरिय सयल दिस-चक्कवाल ॥९६०॥
नीसेस-जगत्तय-विजय-सज्ज, जंपंति व मयण-नरिंद रज्ज ॥९६१॥
जहिं वणसिरीण किंसुय सहंति, महु दिन्न नाइ नहवयई पंति ॥९६२॥
सहयारह रेहहि मंजरीओ, नं मयण-जलण-जालावलीओ ॥९६३॥
जहिं मलय-समीरण-हल्लिरेहिं, नच्चंति वलय पल्लव-करेहिं ॥९६४॥
परहुय-रवु पसरइ काणणेसु, नं माणिणि-मय-चाओवएसु ॥९६५॥
इय मयण-महामहिं, लोयसुहावहिं, तत्थ पयट्टइ महु-समइ।
कयराय-कुमारिहि, बहुगुणसारिहिं, [11]कीलणत्थु वण-गमण-मइ ॥९६६॥

[घत्ता]

तत्तो दो वि कुमारा विहिय-जणाणंदयारि-सिंगारा।
कंठ-विलुलंत-हारा वणम्मि पत्ता सपरिवारा ॥९६७॥

कीलिऊण सुइरं जाव वीसमंता चिट्ठंति ताव निसुओ सजलहर-गज्जि-गंभीरो सद्दो। विम्हयवसेण सद्दाणुसारओ पयट्टेहिं तेहिं दिट्ठो सुरकय-कणय-कमलोवविट्ठो, विसिट्ठोहिनाण-मुणिय-सयलभावो भावदेवो नाम परिसाए धम्मं वागरमाणो मुणिवरो। गया दो वि तस्स समीवं, आणंद-संदोहमुव्वहंतेहि पणमिओ गुरू। दिन्नो गुरुणा सयल-कल्लाण-वल्लि-पल्लवण-वारिवाहो धम्मलाभो। निसन्ना उचियासणेसु कुमारा। कया मुणिणा धम्मदेसणा। पत्थावं लहिऊण भणियमणेहिं—

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जो न हवेज्ज पमोओ तिलोयसामित्तणम्मि पत्ते वि ।
सो तुम्ह दंसणे अज्ज नाह ! अम्हाण संजाओ ॥१६८॥

तुम्ह मुहचंदमवलोईऊण पय-पंकयं च नमिऊण ।
अमय-समुद्द-निमग्गं व मन्निमो नाह ! अप्पाणं ॥१६९॥

ता किमिह कारणं कहसु अम्ह भयवं ! अणुग्गहं काउं ।
तो गुरुणा वागरियं - 'अवहिय-हियया निसामेह ॥१७०॥

जाइमउम्मत्त-मणा तुब्भे दिय-दारया सियाला य ।
रासह-सुणहा जाया वाणिय-पुत्ता य चोर-हया ॥१७१॥

कंठगय-जीवियव्वा मए विइन्नमणुसासणा पुव्वं ।
पंचपरमेट्ठि-मंतं सोउं संपन्न-परिओसा ॥१७२॥

जाया रायकुमारा एएणं कारणेण मं दट्ठुं ।
संपइ दुवे वि तुब्भे भद्दा ! आणंदमुव्वहह ॥१७३॥

तो जाय-जाइसरणा चलणेसु विलग्गिऊण ते दो वि ।
जंपंति जं परूवियमेयं तुब्भेहिं तं सच्चं ॥१७४॥

तो गुरुणा वागरियं- पुव्वं पावस्स विलसियं दिट्ठं ।
तुब्भेहिं संपयं पुण पंचनमोक्कार-जणियस्स ॥१७५॥

पुन्नस्स य फलमउलं पच्चक्खं अणुहविज्जए एयं ।
ता पुन्नवुड्ढि-हेउं पमायरहिएहिं जईयव्वं ॥१७६॥

''[२]पुन्नवुड्ढीए उण उवाओ जीववह-पमुह-पावासव-परिच्चाएण, कोहाइ-कसाय-निग्गहेण, सद्दाइ-विसय-परिहारेण, असुह-मण-वयण-काय-निरोहेण, दुद्दमिंदिय-दमणेण, सव्वहा अविरइ-वज्जणेण, चारित्त-पवज्जणेणं ति । तओ वीरसेणस्स विप्फुरियं वीरियं, उल्लसिया विसुद्ध-वासणा, नियत्ता विसय-तण्हा, आविब्भूओ चरण-परिणामो । भणियं अणेण— 'भयवं ! आपुच्छिऊण जणणि-जणए तुम्ह पायमूले पव्वज्जा-पडिवज्जणेण जाणवत्तेणेव समुद्दं नित्थरिउमिच्छामि संसारं' । मुणिणा भणियं— 'देवाणुप्पिय ! मा पडिबंधं ''[३]करेह' त्ति । तओ वंदिऊण गुरुं चलिओ वीरसेणो, इयरो य असंजाय-कुसल-परिणामो । पत्ता दो वि गिहं । भणिओ वीरसेणेण सूरसेणो— 'वच्छ ! तुमए वि पीयं भयवओ वयणामयं, अवगयं संसार-सरूवं, जाणिओ सुहाऽसुह-विवागो, पुव्व-

भवेसु वि समगं चेव आहिंडिय त्ति । समगं चेव गुरु-चलणमूले चरणं पवज्जामो' । सूरसेणेण भणियं— 'भाय ! जं तुमए आणत्तं तं सच्चमत्थि, "परं पुव्व-भवेसु किलेस-जालमणुहविऊण पत्तं रज्ज-सुक्खमेयं, ता समगं चेव अणुभुंजामो । जओ— पुन्नफलं रज्जं, इट्ठ-कामिणीओ, विसय-सुहं, सज्जण-समागमो, चिंतियत्थ-संपत्ती य । एय-विवरीयं तु पावफलं । अवि य—

करि-तुरय-रह-समेयं नमंत-सामंत-मंति-परिकलियं ।
अक्खय-कोस-समिद्धं लब्भइ पुन्नेहिं रज्जमिणं ॥१७७॥

लायन्न-रूव-जोव्वण-"मयभिब्भल-विहसिरीओ लडहाओ ।
अद्धच्छि-पिच्छिरीओ पुन्नेहिं हवंति रमणीओ ॥१७८॥

सयलिंदियाणुकूलं संसार-विसदुमस्स अमय-फलं ।
पाविज्जइ विसय-सुहं पुन्नेहिं विणा न लोयम्मि ॥१७९॥

संपत्ते अवराइं जम्मि समप्पंति सयल-सुक्खाइं ।
सज्जण-समागम-सुहं तं लब्भइ पवर-पुन्नेहिं ॥१८०॥

ता भुंजामो रज्जं, माणेमो कामिणीओ पवराओ ।
विसय-सुहमणुहवामो, विलसामो सज्जणेहिं समं ॥१८१॥

संपज्जमाण-चिंतिय-मणोरहा दो वि भुत्त-पुन्नफला ।
समगं चिय जं उचियं तं पच्छा आयरिस्सामो ॥१८२॥

वीरसेणेण भणियं— 'वच्छ ! सुविणिंदयाल-विब्भमो जीवलोओ, नरयंतं रज्जं, परिणाम-विरसा विसया, खणभंगुरं जोव्वणं, दुग्गइ-गमण-सरणीओ रमणीओ, संझा-समय-मिलिय-सउणेग-रुक्खवास-समो सयण-समागमो, अयंड-मणोरह-भंग-संपायणपरो अनिवारियप्पसरो पहवइ मच्चू, थेवस्स वि दुक्कयस्स दारुणो विवागो । ता मुत्तूण मोहं, अवलंबिऊण सत्तं, होसु उज्जमप्पहाणो जेण समगं चेव चरामो चरणं, समगं चेव काऊण कम्मक्खयं वच्चामो परम-पयं ।

सूरसेणेय भणियं—

छुहिएण व परमन्नं तिसिएण व मरुथलीए सिसिर-जलं ।
चिरकालाओ लद्धं चइउं न चएमि रज्जमिणं ॥१८३॥

तुमं पुण जहाजुत्तमायरसु । तओ 'गुरुकम्मो इमो भवण्णव-तरंड-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तुल्लं लद्धूण वि गुरुं जाणंतो वि पुन्न-पाव-विलसियं जो न पडिवज्जए चरणं'ति चिंतयंतो गओ वीरसेणो जणय- सयासं, कहिओ निय-मणोरहो । जणएण भणियं— 'वच्छ ! धन्नो तुमं । तुमए समं अहं पि करिस्सं चरण-पडिवत्तिं' ति भणिउं निवेसिओ सूरसेणो रज्जे । कया जिणाययणेसु पूया । दिन्नं दीणाईण दाणं । मुक्काओ गुत्तीओ । सम्माणिओ सयण-वग्गो । सूरसेणेण कय-निक्खमण-महुसवा भावदेव-गुरु-समीवे पवन्ना पवज्जं चंदसेण-वीरसेणा ।

तत्थ चंदसेणो काऊण तिव्वं तवच्चरणं खविऊण कम्मरासिं गओ मोक्खं । वीरसेणो पुण निरइयारं चारित्तं चरिऊण गओ बंभलोयं । सूरसेणो य मुच्छिओ रज्जे, गिद्धो सयलिंदिएसु, पयट्टो महारंभेसु, निरओ महा-परिग्गहेसु, अनियत्तो कुणिमाहारे, पसत्तो मज्जपाणे, लुद्धो परदारेसु, जीववहाइ-सव्वाऽऽसवाऽविरओ मरिऊण गओ तईय-नरयपुढवीए । तस्स पडिबोहणत्थं वीरसेण-देवो अणुकंपाए तइय-पुढविं अणुपविसिऊण भणिउमाढत्तो— 'भद्द ! जाणसि ममं ?' । दुक्खभर-पीडिएण भणियं सूरसेण-नारएण— 'नाह ! निय-देह-प्पहा-पहय-तिमिर-पूरं रयण-कन्नपूरं को तुमं न याणइ देवं ?' । तओ देवेण 'अलं अलं उवयार-वयणेहिं'ति भणंतेण दंसियं पुव्वभव-सरीरं । विभंग-नाणेण मुणिऊण पुव्व-वुत्तंतं वुत्तं नारएण-'भद्द ! पुव्वभव-भाया तुमं वीरसेणो'। देवेण भणियं—

जं तुमए पुव्व-भवे रज्जं मुत्तूण संजमो न कओ ।
तं अणुहवसि तुममिमं नरयानल-संभवं दुक्खं ॥१८४॥

जं पुण मए विमोत्तुं विसए गुरु-वयणओ वयं विहियं ।
तं पंचमकप्प-सुरो जाओ हं दिव्व-रिद्धि-जुओ ॥१८५॥

तओ नारएण भणियं—

'हा भाय ! मए गुरुणो तुमं च हिय-वयणमुग्गिरंता वि ।
मूढेण जं न गणिया तं डज्झइ मज्झ मणमिण्हिं ॥१८६॥

जं जीववहो विहिओ तेणासिवणस्स पत्त-निचएहिं ।
पवणुद्धुएहिं छिज्जामि छिन्न-कन्नोट्ठ-नासउडो ॥१८७॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जं मंसं उवभुत्तं मए स-मंसाइं तेण खाएमि ।
परमाहम्मिय-संडासएहिं छित्तूण दिन्नाइं ॥१८८॥

जं वारिज्जंतेण वि मज्जरसासायणं मए विहियं ।
तं वेयरणि-नईए पिबामि तत्ताइं तउआइं ॥१८९॥

जं परदार-पसंगो मए अणुचिओ वि अणुचिन्नो ।
तंब-नियंबिणिमालिंगयामि तं जलण-पज्जलियं ॥१९०॥

चउरंग-बल-जुएण वि रज्जेण न रक्खिओ म्हि इह नरए ।
निवडंतो ता बंधव ! संपइ रज्जे पडउ वज्जं ॥१९१॥

न चएमि वेयणाओ सहिउं तो मं इमाओ नरयाओ ।
कड्ढसु दुह-सय-दड्ढं करुणं काऊण एत्ताहे ॥१९२॥

देवेण नारओ सो कड्ढिज्जंतो वि पारय-रसो व्व ।
गलइ कर-संपुडाओ पावइ दुक्खं च अहिययरं ॥१९३॥

तो नारओ पयंपइ विलवंतो – 'भाय ! मुंच ममं ।
जं "दुक्खमणंतगुणं कड्ढिज्जंतस्स मे होइ ॥'१९४॥

तत्तो मुत्तूण सुरो तं उवइसिऊण तस्स सम्मत्तं ।
दाऊण य अणुसट्ठिं संपत्तो बंभलोयम्मि ॥१९५॥

ता भद्दे ! नाहं सूरसेण-सारिच्छो जो रज्ज-लुद्धो होऊण नरए निवडामि ॥ ६ ॥

एत्थंतरे रयणावलीए भणियं—

अवियारिय-कज्जकरो पच्छायावं महंतमुव्वहइ ।
लोएण लहइ खिंसं वरदत्तो एत्थ दिट्ठंतो ॥१९६॥

कुमारेण भणियं— 'को सो वरदत्तो ?' ।

रयणावलीए भणियं— 'अत्थि गयणग्ग-सुरभवण-विणिम्मियाणेय-हिमालय-संकं संकेयट्ठाणं सयल-संपयाणं आणंदजणणं आणंदपुरं नयरं । तत्थ निसिय-करवाल-धारा-सलिल-धोय-रिउ-रमणि-नयणंजणो जणद्दणो नाम राया । तस्स सयल-कज्जेसु आपुच्छणिज्जो महायणप्पहाणो परोवयार-वावार-परवसो वसुमित्तो नाम सेट्ठी । तस्स निम्मल-गुणालंकिया जसमई भज्जा । ताणं च संपज्जंत-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सयल-मणोरहाणं वच्चए कालो, केवलं निरवच्चत्तण-दुक्खं दूमेइ मणं। तओ आराहिया अणेहिं कुलदेवया। तीए वि दिन्नो वरो। तप्पभावेण जाओ पुत्तो, वद्धावणय-पुव्वं कयं वरदत्तो त्ति से नामं। वड्डिओ देहोवचएणं कलाकलावेण य पत्तो जोव्वणं। बालभावओ चेव निय-हियय-निव्विसेसो इमस्स उज्जुयस्स वि अणुज्जुओ सागरो नाम मित्तो। कयाइ नियय-पासाय-कुट्टिम-तले सही-समेया कंदुय-कीलाए वट्टंती दिट्ठा वरदत्तेण एगा कन्नया। भणियमणेण— 'मित्त ! पेच्छ पेच्छ अच्छेरयं।

वलईकएण चेलंचलेण हारेण वेणिदंडेण।
छत्ततयं व विरयइ भमिब्भमंती इमा बाला ॥१९७॥

अहो ! इमीए निरुवमं रूवं, असामण्णं लावण्णं। एसा खु जंतप्पओग-चंचल-मणि-सालभंजिया-लीलमवलंबए। पयावइ त्ति पत्त-कलंकेणावि कमलासणेण जं न अंगीकया नूणं। इमीए तेय-तिरोहिय-नयणप्पसरेण न सम्ममुवलद्धा। ता कहसु कस्स इमा सुय ?' त्ति। मित्तेण भणियं— वयंस ! इहेव वत्थव्वगस्स निय-कुल-कमल-कमलबंधुणो बंधुदत्त-सिट्ठिणो बंधुमईए भारियाए गब्भ-संभवा जिणमई नाम धूया। तीए वि उदग्ग-सोहग्ग-सागर-तरंग-सरिच्छेहिं तिरिच्छऽच्छि-विच्छोहेहिं पेच्छिओ वरदत्तो। मुणिय-तब्भावेण नीओ गिहं सागरएणं। तं चेव मुद्धडमुहिं चिंतयंतो परिचत्तो घर-वावारो, पसुत्तो सयणिज्जे, तत्त-सिलायल-पक्खित्तो व्व मीणो तल्लुविल्लिं कुणंतो दीहं नीससंतो अच्छिउं पवत्तो। तं च तहाविहं जाणिऊण जणएण पुट्ठो सागरओ- 'वच्छ ! मुणसि वरदत्तस्स असत्थावत्थाए कारणं ?'। तेण कहियं सव्वं। तओ वसुमित्तेण मग्गिओ बंधुदत्तो - 'मह सुयस्स देसु निय-धूयं'ति। तेण वुत्तं- 'जुत्तमेयं, को अन्नो तुमाहिंतो वि उत्तमो ? परं मम अत्थि नियमो सो सावगस्स चेव निय-धूया दायव्व त्ति'। नियत्तो वसुमित्तो। तेण कहियमेयं पुत्तस्स। तेणावि तयत्थिणा पडिवण्णं मुणि-सयासे सावगत्तणं। परिणयं भावओ। मुणियमिणं बंधुदत्तेण। दिन्ना जिणमई। वत्तो वीवाहो। जाओ परोप्परं वीसंभो। विसयसुहमणुहवंताणं ताणं वच्चए कालो।

कयाइ वरदत्ते बाहिं पत्ते समागओ गिहं सागरओ। भणिया तेण

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जिणमई- 'रुद्ददेव-सेट्ठिणो वहुयाए सह तुह भत्ता जं रहसि मंतेइ तत्थ जाणसि तुमं किंपि कज्जं ? । सरल-सहावाए भणियमणाए- 'जाणइ तुह वयंसो इमं, बीयहियंगभूओ" तुमं वा जाणासि । सागरएण भणियं- 'अहं जाणेमि मंतण-कज्जं, परं तं अपुच्छिओ कहं कहेमि ?' । जिणमईए वुत्तं- 'अहं पुच्छामि किं तयं ?'ति । सागरएण वुत्तं - 'सुयणु ! जं मज्झ तए कज्जं तं तीए वि तस्स' । अविन्नायभावाए भणियं अणाए- 'किं मए तुज्झ कज्जं ?' । तेण भणियं- 'तं एक्कं, तुह पइं मोत्तूण कस्स पुरिसस्स रसंतरवेइणो वियड्ढस्स तुमए न कज्जं ?' । तं च दुरहिलास-पिसुणं सुणिऊण सवण-दुस्सहं तव्वयणं समुप्पन्न-कोवाए ओणयमुहीए साहिक्खेवं भणियमणाए-

'रे निल्लज्ज ! अणज्ज ! चिंतियमिणं पावं कहं चिंतिअं,
चित्ते वा तुमए कहं पुण तयं वायाएँ उच्चारियं ? ।
धिद्धी तुज्झ अचेयणस्स चरियं, किं मन्नसे अत्तणो,
तुल्लं मज्झ पइं पि, मित्तमिसओ हालाहलं हा तुमं ॥९९८॥

ता गच्छ पाव !, पउरं पावं पावस्स दंसणेणावि ।'
इय धिक्कारिओ सो तक्करो व्व तत्तो वि निक्खंतो ॥९९९॥

दिट्ठो वरदत्तेणं गोहच्चाकारओ व्व मलिणमुहो ।
भणिओ- 'उव्विग्गो विव लक्खिज्जसि हेउणा केण ?' ॥१०००॥

सो जंपइ नीससिउं, जडिम-निमित्तं व हिमगिरि-समीवे ।
'उव्वेय-कारणं किं पुच्छसि जीवाण संसारे ? ॥१००१॥

न य कहिउं सक्किज्जइ पयासिउं नेय तीरए जं च ।
तं अट्ठाणवणं पिव इह किंपि नरस्स आवडइ ॥'१००२॥

इय भणिय कवड-पयडिय-अंसुजलोहलिय-लोयणे तम्मि ।
विरए वरदत्तो वि हु चिंतिउमेयं समाढत्तो ॥१००३॥

'एयस्स धीरिमाए अकहंतस्सावि अंसुपूरेण ।
धूमेणं मुणिज्जइ हुयवहो व्व गरुओ" मणुव्वेओ ॥'१००४॥

अह भणइ - 'कहसु उव्वेय-कारणं जइ न तं अवत्तव्वं ।
मह संविहत्त-दुक्खो लहुईय-दुक्खो तुमं होसु ॥'१००५॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अह साहइ सागरओ- 'तुमम्मि जीवियसमे अवत्तव्वं ।
अन्नं पि मह न किंचि वि, विसेसओ एस वुत्तंतो ॥१००६॥

जाणइ इमं वयंसो जं महिला कारणं अणत्थाणं ।
हिंस व्व सव्व-दुक्खाण अंधयाराण रयणि व्व ॥'१००७॥

अह जंपइ वरदत्तो -'किं कुडिलगईए वियडभोगाए ।
महिलाए भुयंगीइ व कीए वि हु संकडे पडिओ ? ॥'१००८॥

तो जंपइ सागरओ कारिमलज्जो अहं जिणमईए ।
पयडिय-मयण-वियारं सुइरं असमंजसं भणिओ ॥१००९॥

सयमेव लज्जिऊणं कयाइ विरमिस्सई इमा मूढा ।
इय चिंतंतेण मए उवेक्खिया एत्तियं कालं ॥१०१०॥

नवरं दियहे दियहे असइत्तण-समुचिएहिं वयणेहिं ।
भणइ ममं, न य विरमइ असग्गहो अहह महिलाणं ॥१०११॥

अज्ज तुह दंसणत्थं गओ गिहं मित्त ! रक्खसीए व्व ।
रूद्धो अहं छलन्नेसिणीए सहसा जिणमईए ॥१०१२॥

हरिणो व्व वागुराओ "गरुयाओ तग्गहाओ अप्पाणं ।
कहमवि विमोईऊणं भीयमणो एत्थ पत्तो हं ॥१०१३॥

तो चिंतिउं पवत्तो नणु जीवंतस्स नत्थि मे मोक्खो[१०] ।
एईए सयासाओ ता अत्ताणं हणेमि अहं ॥१०१४॥

एयं पि न जुत्तं जं एसा मित्तस्स अन्नहा कहिही ।
मित्तो य मह परुक्खे तह त्ति तं मन्निही सव्वं ॥१०१५॥

अहवा कहेमि सव्वं मित्तस्स जहट्ठियं इमं जेण ।
न लहेइ सो अवायं एईए अकयवीसासो ॥१०१६॥

एयं पि न जुत्तं चिय जं एईए अपूरियासाए ।
दुस्सीलत्तण-कहणं खयम्मि सो क्खार-निक्खेवो ॥१०१७॥

एवं विचित्त-चिंता-पवन्न-चित्तो तए अहं दिट्ठो ।
उव्वेय-कारणमिणं मुणसु तुमं मह महासत्त ! ॥१०१८॥

अह तस्स पावमित्तस्स वयणओ उल्लसंत-रोसभरो ।
सो असमिक्खियकारी वरदत्तो निय-गिहं पत्तो ॥१०१९॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पय-पक्खालण-हेउं उवट्ठियाए पुरो जिणमईए ।
नासं व वंचगजणो छुरियाए छिंदए नासं ॥१०२०॥

तओ उच्छलिओ हाहारवो, मिलिओ सयण-वग्गो । भणिओ अणेहिं वरदत्तो- 'आ पाव ! निक्करुण ! अणाकलिऊण कुलकलंकं, अगणिऊण सयण-सिणेहं, अविभाविऊण उभय-लोय-दुहावहत्तणं किं तए ववसियमेयं ? । नत्थि ताव इमीए सयल-गुणमईए जिणमईए तणुम्मि तिल-तुस-तिभाय-मित्तो वि दोसो । जओ एईए अकलंकं कुलं, उत्तमा जाई, मणोहरं रूवं, महुरालाविणी वाणी, विणय-कुलहरं आयरणं, परपुरिस-पलोयण-परम्मुहा दिट्ठी, आवज्जिय-सज्जणा लज्जा, सरय-ससहर-निम्मलं सीलं ।'

इओ य मुणिय-वुत्तंतेहिं रायपुरिसेहिं आयड्ढिऊण नीओ वरदत्तो रायपासं । भणिओ रन्ना - 'भद्द ! किं इमीए तुह भज्जाए अवरद्धं ? जेण तए अकहिऊण रायकुले सयं चेव निग्गहो कओ ? ।' वरदत्तेण वुत्तं- 'देव ! मम अत्थि सागरओ मित्तो । सो जाणाइ इमीए अवराहं ।' रन्ना वुत्तं- 'तो तं चेव आणेह ।' आरक्खिएहिं गवेसंतेहिं कहिं पि वणनिगुंजे नासंतो पत्तो सागरओ बंधिऊण आणिओ रायपासं । वुत्तो रन्ना- 'अरे दुरायार ! किमवरद्धं इमीए महासईए ?' । सो अ सज्झसवस-कंपंत-गत्तो जाव न किंपि जंपइ ताव प्पहओ कसप्पहारेहिं । कहिओ अणेण जहट्ठिओ वुत्तंतो । कुद्धेण रन्ना 'दो वि दोसकारिणो'त्ति खित्ता गुत्तीए ।

एत्तो य जिणमई सा तमवत्थं पाविया वि निय-पइणा ।
तं पइ पओसलेसं पि नेव हियए समुव्वहइ ॥१०२१॥
कलुसाओ कुलवहुओ न हुंति दइएहिं दुमियाओ वि ।
पीडिज्जंतीओ वि हु महुर च्चिय उच्छुलट्ठीओ ॥१०२२॥ अवि य-
जिण-पवयण-वयणामय-भाविय-चित्ता पयंपए एवं ।
'मह चेव भवंतर-निम्मियस्स कम्मस्स फलमेयं ॥१०२३॥ जओ-
सव्वो पुव्वकयाणं कम्माणं पावए फल-विवागं ।
अवराहेसु गुणेसु य निमित्त-मित्तं परो होइ ॥१०२४॥ किं च -
निय-नासिया-छेयणे वि मह नत्थि निब्भरं दुक्खं ।
काओ विडंबणाओ जीवा न लहंति कम्मवसा ? ॥१०२५॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

किंतु मह कुसीलत्तण-कलंक-संभावणेण संभवए ।
जं निम्मल-जिणधम्मस्स लाघवं तं महादुक्खं' ॥१०२६॥

एवं पयंपमाणा घर-देवालय-जिणिंद-पडिमाए ।
पुरओ काउस्सग्गं एगग्गमणा कुणइ एसा ॥१०२७॥

अह सासणदेवीए जिणमइ-सीलेण रंजिय-मणाए ।
आसज्ज विणिम्मविया तीए नासा सरल-रूवा ॥१०२८॥

गयणाओ कुसुमवुट्ठी मुक्का सुरदुंदुहीओ पहयाओ ।
'जयइ जिणसासणं जिणमई सई एरिसी जत्थ ॥'१०२९॥

इय जिणमई-सईए तारिसमच्चब्भुयं निसुणिऊण ।
आगंतूण सयं चिय सलाहए तं महीनाहो ॥१०३०॥

'तं धन्ना कयपुन्ना तुज्झ सुलद्धं च माणुसं जम्मं ।
एयारिसो पभावो जीए वर-सीलरयणस्स ॥'१०३१॥

अह जिणमईए भणिओ जोडिय-करसंपुडो नरविंदो ।
'मुंचसु पइं मह तहा तम्मित्तं' तेण ते मुक्का ॥१०३२॥

पासं व गेहवासं विवज्जिउं जिणमई विसय-विमुही ।
गेण्हइ[11] दिक्खं काउं तिव्व-तवं वच्चए सुगइं ॥१०३३॥

निंदिज्जंतो लोए कस्स वि वयणं पि दंसिउमसक्को ।
गमइ दिणे वरदत्तो पच्छायावेण डज्झंतो ॥१०३४॥

एवं तुमं पि पिययम ! अम्हे [12]गरुयाणुराय-रसियाओ ।
सहसा परिच्चयंतो मा पच्छायावमुव्वहसु ॥१०३५॥ ॥७॥

कुमारेण वुत्तं—

'इत्थीओ एयाओ विवेय-कलहंस-मेहमालाओ ।
धम्म-धण-तक्करीओ दोस-भुयंगम-करंडीओ ॥१०३६॥

मोहंधयार-रयणीओ कुग्गहग्गाह-जलहिवेलाओ ।
मोक्ख-नगर[13] ऽग्गलाओ दुग्गइ-पुर-सरल-सरणीओ ॥१०३७॥

इत्थीणं पुण चरियं गहणं न वियाणए सुरगुरू वि ।
जयवम्मो व्व बुहो तं दट्ठुं सोउं च सद्दहइ ॥१०३८॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रयणावलीए भणियं - 'नाह ! को सो जयवम्मो ? '

कुमारेण वुत्तं—

'धायईसंड-दीवस्स भारहे नयरमत्थि लच्छिपुरं ।
जं गयण-मग्ग-संलग्ग-फलिहसालं विसालं पि ।।१०३९।।

तत्थ निवो जयवम्मो जस्स करे संगरे गवलकंती ।
करवालो छज्जइ विजयलच्छि-मयनाहि-तिलओ व्व ।।१०४०।।

कयाइ सुहोवविट्ठस्स तस्स समागया पसत्थ-सत्थ-परिकम्मिय-मइणो विउसा । पारद्धा तेहिं समं गुट्ठी । भणियं रन्ना- 'किं गहणं ?'। तेहिं भणियं— 'इत्थी-चरियं । जओ—

सायरजल-परिमाणं सुरगिरि-माणं तिलोय-संठाणं ।
जाणंति बुद्धिमंता महिला-चरियं न याणंति ।।१०४१।।

रन्ना चिंतियं- 'किं सत्तं, को ववसाओ, किं वा साहसं तासिं ? जं इमे एवमुल्लवंति । ता मए अज्ज कीए महिलाए चरियं पेच्छियव्वं'ति विम्हिय-मणो रयणीए पावरिऊण अंधयार-पडं, वंचिऊण पाहरिए निग्गओ गेहाओ । गओ अग्गिसम्म-भट्टस्स गेहं । कुणइ [१५]वेओग्गारं । भणिओ भट्टेण- 'भद्द ! किं मग्गसि ?' । रन्ना भणियं— 'मह देसंतरागय-बंभणस्स देहि वासं ।' भट्टेण वुत्तं- 'नत्थित्थ वासओ ।' रन्ना वुत्तं- उत्तमं तुमं बंभणं भ(जा)णिय अहं बंभणो समागओ । न य सुद्दगिहेसु वसंति बंभणा ।' भट्टेण वुत्तं- 'जइ एवं ता कुडीरए वससु ।' ठिओ राया । एत्थंतरे भणिओ भज्जाए भट्टो- 'गिण्ह पुत्तं । तुह भायगेहे अज्ज छट्ठी । तत्थ अक्खवत्तं दाऊण जाव आगच्छामि ।' भट्टेण भणियं— 'न तुमं आगमिस्ससि सिग्घं । पुत्तो पुण रुयंतो ममं कयत्थिस्सइ । ता पुत्तं घेत्तूण वच्च ।' भट्टिणीए भणियं- 'तत्थाहं किं करिस्सं ? । उज्झिऊण सुयं सिग्घमागमिस्सं ।' पुत्तं भट्टस्स अप्पिऊण निग्गया भट्टिणी ।

राया वि 'तत्थ पेच्छामि बहु-जुवइ-चरियं'ति चिंतयंतो लग्गो तीए पिट्ठओ । पत्ता भट्टिणी हट्टमग्गे । मिलिओ तीए कय-संकेओ कोइ जुवाणओ । तेण भणियं— 'विहिय-सिंगारा कत्थ पत्थिया सि ? ।' तीए भणियं— 'वद्धावणय-कज्जेण देवर-गिहे । सिग्घं आगमिस्सामि ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तुमं एत्थेव पडिक्खसु ।' रन्ना चिंतियं— 'इमीए चरियं ताव पेच्छामि'त्ति ठिओ तत्थेव । जुवाणो वि जाव पडिक्खंतो चिट्ठइ ताव समागया सा । तेण भणियं- 'रइसोक्खं कत्थ माणियव्वं ?' । तीए वुत्तं- 'मह गिहे गंतुं मग्गसु वासयं, जेण तहिं रइसोक्खं निव्विग्घं माणेमो ।' पयट्टो जुवाणओ । वेस-परावत्तं काऊण लग्गा तस्स पिट्ठओ भट्टिणी । राया वि कोऊहल-खित्त-चित्तो तदणुमग्गेण चलिओ । जुवाणएण वेयज्झयणं काऊण भणिओ भट्टो- 'उसभपुराओ एसा मह घरिणी मए किंचि सिक्खविया रूट्ठा समाणी पुत्तं मोत्तूण इहागया । अहं च कुट्टिओ पिट्ठओ लग्गो समागओ । उस्सूरं च जायं आगच्छंताणं । ता मे देहि वासं । भट्टोऽहं तुमं च भट्टो, अओ जुत्तमेयं । जामदुगं च वसिऊण गमिस्सामो निय-नयरं ।' एवं भणिए 'रंधणए वससु तुमं'ति भणियं भट्टेण । पविट्ठाइं दो वि तत्थ । दारओ वि मज्झ-रत्ते रोइउं पवत्तो । भणियं जुवाणएण- 'भट्ट ! किं इमो रोयइ दारओ?।' भट्टेण भणियं- 'इमस्स माया देवर-गिहे गया । मए वारिया वि न ट्ठिया, एसो खु भुक्खिओ रूयंतो न थक्कइ । सा वि न आगया । ता किं करेमि ? ।' जुवाणएण वुत्तं- 'मह बंभणीए पुत्तो गिहे मुक्को । ता अप्पसु निय-पुत्तयं जेण थणाविओ सुहं सुयइ ।' अप्पिओ भट्टेण पुत्तो । थणाविओ, पुणो वि समप्पिओ भट्टस्स। पसुत्तो पुत्तो भट्टो य । इयराणि वि कीलिऊण पभाए 'भट्ट ! वच्चामो अम्हे, उसभपुरे पाहुणओ एज्ज ।' एवं कहिऊण गयाणि दुवार-देसं । गओ जुवाणओ ।

भट्टिणी वि काऊण पुव्व-नेवच्छं पयडिऊण तंबोल-सणाहं थालं पत्ता गिहं । भट्टो वि सविउं पवत्तो- 'रंडे रंडे ! किं नागया सि निसाए ?, संताविओ हं तुह सुएण ।' तीए वि वुत्तं- 'अज्ज तए आणिया का वि रंडा !, जओ इह दीसइ आवीलो मलियं मल्लं । सिक्कडो य पडिओ । जा अहं गेहाओ निग्गया ता जाओ तुमं भुयंगो । साहेमि महेसराणं तुह चरियं । कहं गिण्हसि निव्वावए दक्खिणाओ य ?।' एवं अक्कोसंतीए तीए निग्गओ भट्टो । गओ निवाणं । राया वि पत्तो भट्टिणीए पासं । भणिया सा- 'भट्टिणि ! जाणसि जयवम्मं रायाणं ?। तीए भणियं- 'जस्स पुरीए वसामि तं कहं सयल-जगप्पयडं जयवम्मं रायाणं न याणामि ?।' रन्ना भणियं- 'ता सोऽहं ।' तीए भणियं- 'किं तए एरिसो वेसो कओ ?। रन्ना भणियं- 'इत्थी-चरियस्स जाणणत्थं ।' तीए भणियं- 'केरिसं चरियं ?।' रन्ना भणियं- 'जारिसं तुह।'

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तओ कहिओ सव्वो वि सपच्चओ निसा-वुत्तंतो"। तो लज्जाए भएण य विम्हला ठाऊण खणमेक्कं काऊणऽट्टहासं" भणिओ राया- 'सामि ! केरिसं मज्झ चरियं ?, तुम्ह नयरे वसंति ताओ महिलाओ जासिं पायबद्धा वि नाहं सोहामि !' रन्ना वुत्तं- 'एक्कं ताव मे कहसु ।' ता सा कहिउं पवत्ता-

'अत्थि अत्थिजण-पूरिय-मणोरहो मणोरहो सेट्ठी । तस्स कमलदल-विसालच्छी लच्छी भज्जा । ताणं चउण्हं पुत्ताणं उवरि मणोरह-सएहिं जाया निय-रूव-रेहोहामिय-सुरसुंदरी सुंदरी धूया । तीए परिणीय-मेत्ताए चेव उवरओ भत्ता । सिट्ठिणा वुत्तं -'वच्छे ! "ईइसो चेव संसारो । सुरासुराणं पि अनिवारियप्पसरो पहवइ मच्चू । ता न तए खिज्जियव्वं । मह घरोवरि ठिया चेव चिट्ठसु किं पि कम्मं अकुणमाणी'। पडिवन्नमेयं अणाए । कयाइ तीए मत्तवारण-ट्ठियाए दिट्ठो विसिट्ठ-रूव-नेवच्छो विसाल-वच्छो रायमग्गमोगाढो देसंतरागओ कामपालो राय-पुत्तो । तं पइ पच्चक्ख-कामएव-ब्भमेण मुक्काओ कुसुमदामुब्भडाओ कडक्ख-च्छडाओ । एत्थंतरे पढियं बंदिणा-

जयइ विजय-लच्छी-संगओ बंगदेसा-
हिवइ भुवणपालस्संगओ कामपालो ।
अइसय-रमणिज्जं पिच्छिउं जस्स रूवं,
धुवममरवहुओ मच्चलोयं महंति ॥१०४२॥

सुयमिणं सिट्ठि-धूयाए, नायं च जहा- 'बंगदेसाहिव-सुओ कामपालो इमो' त्ति । रायपुत्तेणावि पलोईया सा साणुरायाए दिट्ठीए । तं चेव चिंतयंतो गओ नियावासं । गहिओ कामज्जरेण । सेट्ठिधूया वि काम-परवसत्तणओ दढमस्सत्थ-सरीरा जाया । विसन्नो सिट्ठी जाव चिट्ठइ ताव आगया भिक्खट्ठं परिव्वाइगा । भणिया य सेट्ठिणा- 'भद्दे ! अस्सत्थं पउणीकरेसु मह धूयं ।' तीए भणियं- ' पेच्छामि ।' ताव गया तीए पासं । दट्ठूण तं मुणिय-मयण-वियाराए भणिया अणाए- 'भद्दे ! लक्खियं तुह सरीरस्स असत्थया-कारणं । ता कहेसु सब्भावं जेण तमहं संपाडेमि ।' तीए वि 'न अन्ना गइ' त्ति चिंतिऊण कहिओ सब्भावो । भणियमणाए- 'न तए खिज्जियव्वं । आइच्चवारे आइच्चहरे आइच्च-पूजा-ववएसेण तेण सह संगमं काराविस्सं' त्ति भणिय उट्ठिया परिव्वाइगा । कहियं सिट्ठिणो- 'मए नियत्तिओ किंचि दोसो । सव्वहा

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पुण आइच्च-पूयाए नियत्तिस्सइ ।' गया रायउत्तावासं, भणिया तस्स भिच्चेहिं- 'भगवई ! "जाणासि किं चि ?।' तीए भणियं- 'सव्वं जाणामि । भणह कज्जं ।' तेहिं भणियं- 'अम्ह सामी रायपुत्तो दढमसत्थो वट्टइ । ता तं पउणीकरेसु ।' 'करेमि' त्ति भणंती नीया रायउत्त-सयासं । भणियं तीए एगंते- 'रायउत्त ! सिट्ठिधूया-पलोयण-खित्त-चित्तो त्ति छलन्नेसिणा छलिओ तुमं मयणेण । तेण असत्थ-सरीरो सि ।' ईसि हसिऊण वुत्तं रायउत्तेण- 'भयवइ ! कहं मुणियमिणं ?। अहवा दिव्वनाण-नयणो चेव तवस्सि-जणो होइ । ता तुमं चेव चिंतेहि सत्थत्तणोवायं ।' तीए भणियं- 'चिंतिओ चेव मए उवाओ । वच्च आइच्चहरे । तत्थ तीए सह दंसणं भविस्सइ ।' अह सिट्ठिधूया सयण-परिगया गया आइच्चहरे । पूईऊण आइच्चं निग्गच्छंती तत्थागएण गहिया भुयाए रायउत्तेण । पुक्करियमणाए । 'छिक्काहं परपुरिसेण । न मे अग्गिं विणा सुद्धि'त्ति कहेह कहाइं । कह वि नियत्तिया जणएण । आगया निय-गेहं । तीए चेव रयणीए रायउत्तं घेत्तूण समागया परिव्वाइगा । जाओ दोण्हं पि संगमो । 'षट्कर्णो भिद्यते मन्त्रः'इति चिंतिऊण पसुत्तं परिव्वायगं जीरण-वत्थाईएहिं पिहिऊण पलीवियं घरं । निग्गयाइं दो वि । गयाइं रायउत्त-आवासं । सेट्ठी वि दड्ढं परिव्वाइयं धूय त्ति मन्नंतो विलवितं पवत्तो—

'हा पुत्ति ! तए परपुरिस-फरिस-विहुराइ मग्गिओ अग्गी ।
दिन्नो न मए सयमेव साहिओ तह वि सो तुमए ॥'१०४३॥

काऊण तीए मय-किच्चाइं पेसियाणि अट्ठीणि तित्थे । रायपुत्तस्स वि कइवय-दिणेहिं तुट्टं धणं । भणिया सा- 'भद्दे ! स-देसं वच्चामो ।' तीए भणियं- 'किं तत्थ गमणेण ?। एत्थेव सव्वं पूरिस्सइ सेट्ठी । वच्च सेट्ठि-हट्टे । मग्गसु दव्वेण महग्घं पट्टसाडीयं ।' गओ सो तत्थ । तहेव कयं । पेसिया पट्टसाडिया भज्जाए । तीए वि 'न पडिहासइ'त्ति न गहिया । एवं दो-तिन्नि-वेलाओ कयं । सेट्ठिणा भणियं- 'सा चेव भज्जा इहागच्छउ । किं पाय-घसणेण ?।' समागया सा । तं दट्ठूण सेट्ठिया भणियं- 'रायउत्त ! मह धूया तए जया फरिसिया तया मह महंतो कोवो जाओ । रायपुत्तो तुमं ति न किं पि वुत्तं ।' रायपुत्तेण भणियं- 'मए एसा निय-भज्जा फरिसिया, न तुह धूया ।' सेट्ठिणा वुत्तं- 'एसा मह धूया किं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

न होइ ?।' रायपुत्तेण भणियं- 'सेट्ठि ! नेह-गहिलो सि । किं न सुमरेसि नियं-धूयं अग्गि-दड्ढं ? ।' सेट्ठिणा भणियं- 'सच्चं, सरिसत्तणेण मूढो म्हि । तह वि धूया-सरिस त्ति पडिवन्ना इमा मए धूया । ता तए जं न पुज्जइ तं मह हट्टाओ घेत्तव्वं ।'

इय भट्टिणीए चरियं दट्ठुं सोउं च सेट्ठि-धूयाए ।
सद्दहइ 'इत्थि-चरियं गहणं' ति मणम्मि जयवम्मो ॥१०४४॥

एसो अवीससंतो महिलासु समुल्लसंत-वेरग्गो ।
सीलंधर-गुरु-पासे गहिय-वओ साहइ स-कज्जं ॥१०४५॥

ता भद्दे ! 'इत्थी-चरियं गहणं' मुणंतो अहं पि कहं इत्थीसु रइं करेमि ? त्ति ॥८॥

एत्थंतरे लीलावईए भणियं- 'नाह ! वय-गहणं ताव करेसि पुन्नोवज्जणकए पुन्नं व अज्जेसि सयल-मणहर-पयत्थ-संपत्ति-निमित्तं । सा य अत्थि चेव तुह तहाहि - चिंतियमेत्त- संपज्जमाण-मणवंछियत्थसत्थे पसत्थे पत्थिव-कुले जम्मो, आरोग्गं मणहरं, सयल-कलाकलाव-कुलहरं अहरिय-रइरमण-रूवरेहं देहं, तरुणि-लोयण-लिहिज्जंत-लायन्नमयपुन्नं तारुन्नं, अणुकूलमणो गुरुयणो, १००गरुय-रायकूलुप्पण्णाओ गाढाणुराय-संपुण्णाओ विणाय-सज्जाओ भज्जाओ-

इय पुण्ण-पावणिज्जे पयत्थ-सत्थम्मि तुज्झ संपन्ने ।
पुन्नस्स अज्जणं जं अज्ज वि पिसुणेइ तं लोहं ॥१०४६॥

लोहो य वज्जणिज्जो विउसेण अणत्थ-सत्थ-मूलम्मि ।
अभिभूओ तेण नरो लहइ खयं कज्ज-सिद्धि व्व ॥'१०४७॥

कुमारेण भणियं- 'को सो कज्ज-सिद्धी ?'

लीलावईए भणियं—

'अत्थि वित्थिन्न-वावी-कूव-सरोवराराम-रमणिज्जं रायपुरं नयरं । तत्थ अत्थोवज्जण-सज्जो पयईए चेव कय-परकज्जो कज्जो सेट्ठी । तस्स सहावओ विलसंत-लज्जा अणवज्जा वज्जा भज्जा । ताणं च विसयसुहमणुहवंताण जाया मोहण-सोहण-मल्हण-पल्हणाभिहाणा चत्तारि पुत्ता । गहिय-कलाकलावा पत्ता जोव्वणं । परिणावियाओ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विउल-कुलुब्भवाओ लच्छि-गोरि-रइ-रंभाओ वणिय-कन्नाओ । तस्स य सेट्ठिणो घरे थावरओ कम्मयरो वुत्ताणत्तयं करेइ ।

अन्नया सेट्ठिणा पेसिओ कम्मि वि पओयणे । आगच्छंतस्स लग्गा महई वेला, पत्तो किंचूण मज्झरत्त-समए, कया अणेण दुवार-उग्घाडावणत्थं घरमाणुसाणं सद्दा । जाव निद्दा-परवसत्तणेण न उग्घाडियं केणावि दुवारं । पसुत्तो दुवारप्पएस-संठियस्स महप्पमाण-कुट्टरस्स कट्ठवट्टस्स मज्झ-भाए । जाव निद्दा नागच्छइ ताव सुओ अणेण परोप्परं संलवंतीण इत्थीण सद्दो । तओ किं इमाओ पायालवासुव्विग्गाओ नागकन्नयाओ ? जइ वा गलिय-गयण-गमण-विज्जाओ विज्जाहरीओ निवडियाओ ?, किं वा कुविय-सुरवइ-साव-परिब्भट्ठाओ सुरंगणाओ पत्ताओ ?'त्ति विम्हिय-माणसो जाव सम्मं निरूवइ ताव रयणालंकार-किरण-हणिय- तिमिर-निउरंबाओ बहल-मयणाहि-पंकोवलित्त-गत्ताओ कप्पूर-पारी-परिगय-तंबोल-परिमल-वासिय-दियंताओ कणंत-कणय-कंकण-कलावाओ रणंत-किंकिणी-मुहल-रसणाओ मंजु-सिंजंत-मंजीराओ दिट्ठाओ चत्तारि वि सिट्ठि-सुण्हाओ । लच्छीए भणियं-'हला गउरि ! अज्ज तुमं उप्पाडेसु वट्टं ।' अवराओ तिन्नि निसन्नाओ वट्टस्स उवरि । उप्पाडियं गउरीए वट्टं, पयट्टं गयणे गंतुं । पत्तं समुद्दस्स उवरिं । समुद्दो वि तारिसं रूव-लुद्ध-मणो पसारिय-भूओ व्व रेहइ, अब्भंलिह-लहरीहिं पिच्छंतो[१०१] व्व छज्जइ, समुच्छलंत-मच्छ-रिंछोलि-कडक्ख-च्छडाहिं हसंतो व्व सहइ, फुरंत-फार-फेण-नियरेण कयग्घट्टाणो व्व सोहइ, समुल्लसंत-मुत्ताहलुप्पीलेण ममं उल्लंघिऊण इमाओ वच्चंति त्ति विलक्खो रसंतो व्व तज्जए [१०२]गरुय-निग्घोसेणं ।

ताओ वि पत्ताओ सुवन्नदीवं लच्छीए कणय-कंकणं व कणयपुरं नयरं । मुत्तूण तस्स बाहिं वट्टं गयाओ ताओ नयरब्भंतरं । थावरओ ठिओ तत्थेव वट्टे निलुक्को, पिच्छए कणयमय-पायार-पच्चासन्न-कणय-इट्टाल-खंडाइं, बीहंतो य न सक्कए ताणि घेत्तुं । ताओ वि सइच्छाए कीलिऊण निग्गयाओ गयाओ वट्टं । गमणक्कमेणेव नियत्ताओ पत्ताओ निय-नयरं । वट्टं मुत्तूण सट्ठाणे पविट्ठाओ सगेहं । थावरओ वि तं तारिसं अच्चब्भुयं चित्ते [१०३]धरिउमचयंतो तारिसं च भएण कहिउमपारयंतो ठिओ कट्ठेण कइ वि दिणाइं ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अन्नया साहसमवलंबिऊण जहादिट्ठं सव्वं सेट्ठिणो रहसि साहेइ । सेट्ठिणा[104] भणियं- 'अरे थावरय ! तत्थ-गएण ताणि कणय-इट्टालाणि किं न तए आणीयाणि ?।' तेण वुत्तं- 'भएण वहुयाणं न सक्किओ अहं नीहरिउं वट्टाओ ।' सेट्ठिणा वुत्तं- 'अरे अकम्मणो काउरिस-सिरोमणी ! तुमं पेच्छ, अहं तत्थ गंतूण ताणि आणिस्सं, परं तुमए तुण्हिक्केण ठायव्वं ।' अन्न-दिणे भणिया सिट्ठिणा घरिणी- 'अहं गामे गमिस्सं, अओ मम जोग्गं करेह संबलं ।' तीए वि काऊण समप्पियं तं । निग्गओ गिहाओ सेट्ठी । गमिऊण बाहिं दियहं रयणीए अलक्खिओ पविट्ठो वट्टब्भंतरं । वहुयाओ वि कयसिंगाराओ समागयाओ वट्टे । भणियं लच्छीए- 'हले रंभे ! अज्ज तुज्ज वारओ, ता तुमए उप्पाडियव्वं वट्टं ।' चडियाओ तिन्नि इयरीओ । पुव्वक्कमेण पत्तं कणयपुरे वट्टं, मुक्कं बाहिं, पत्ताओ ताओ पुरब्भंतरं ।

[105]सिट्ठी वि हु नीहरिउं तत्तो सोवन्न-इट्ट-खंडेहिं ।
पूरइ समंतओ तं वट्टं [106]वट्टंत-लोहभरो ॥१०४८॥

ताओ वि कीलिउं तं पत्ताओ तहेव संनियत्ताओ ।
तत्तो भणियं निब्भर-भारक्कंताइ रंभाए ॥१०४९॥

अज्ज हला ! अहं केणावि हेउणा वट्टमक्खमा वोढुं ।
ता गच्छह गयणयले खिवामि वट्टं जलहि-मज्झे ॥१०५०॥

तो सिट्ठिणा पलत्तं- 'वहुयाओ ! मा करेह पावमिणं ।
जम्हा तुम्ह ससुरओ एत्थ विवज्जामि कज्जो हं ॥'१०५१॥

इय पत्थणापरो वि हु ससुरो दीणं पयंपमाणो वि ।
'विन्नायमम्ह चरियं'ति ताहिं जलहिम्मि जं खित्तो ॥१०५२॥

'मा डहसु गहिल ! गामं'ति जंपिए संभराविय सुट्ठु ।
इय अक्खाणयमेयं जयम्मि तं पायडं जायं ॥१०५३॥

वहुयाओ आगयाओ स-गिहं तत्तो पभाय-समयम्मि ।
कज्जं सेट्ठिं दट्ठुं निय-निय-कज्जेण इंति जणा ॥१०५४॥

कज्जं अपेच्छमाणा 'जा कज्जो एइ ता पडिक्खामो ।
एयम्मि य उवविसिउं'ति चिंतिउं जंति वट्टम्मि ॥१०५५॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वट्टं पि अपेच्छंता तत्तो ते बिंति अहह पेच्छामो ।
केणावि कारणेणं अज्ज न कज्जं न वट्टं च ॥१०५६॥

तो जइ सेट्ठी कज्जो संते भवणम्मि भूरि विभवभरे ।
न कुणंतो अइलोभं ता निहणं नेय वच्चंतो ॥१०५७॥

एवं तुमं पि पिय ! लोभ-परवसो मा करेसु वय-गहणं ।
जं सज्झं वय-गहणेण तुज्झ तं किं अपरिपुण्णं ? ॥१०५८॥

अवि य-

पुरिसस्स वयं इणमेव सयणवग्गस्स जं समुद्धारो ।
सिर-तुंड-मुंडणं पुण काउरिस च्चिय कुणंति वयं ॥१०५९॥

सयणेहिं देवयाराहणाइं काउं मणोरह-सएहिं ।
लद्धो सि तेण तेसिं मणोरहे किं न पूरेसि ?॥१०६०॥ ॥९॥

कुमारेण भणियं—

'चिरमुवयरिया चिर-पुप्फवासिया पालिया य जइ वि चिरं ।
तह वि हु सयणा मरणाओ रक्खिउं न खमंति नरं ॥१०६१॥

एक्को च्चिय मच्चु-मुहं वच्चइ अच्चंत-कय-करुण-सद्दो ।
वीसरिय-सयल-तक्कय-सुकया चिट्ठंति इह सयणा ॥१०६२॥

सयणाण कए मणुओ पावाइं करेइ बहु-पयाराइं ।
एक्को च्चिय सहइ पुणो पाव-फलं नरय-कुहरम्मि ॥१०६३॥

चुलसीइ-जोणि-लक्खेसु संसरंताण एत्थ जीवाणं ।
परमत्थेणं सव्वे सव्वेसिं बंधवा हुंति ॥१०६४॥

जे के वि हु जीवाणं परोप्परं संभवंति संबंधा ।
एक्केक्केणं एक्केक्कयस्स तेऽणंतसो पत्ता ॥१०६५॥

जीवाण बहुय-जम्मेसु बहुविहा जं हवंति संबंधा ।
तं न हु चोज्जं चोज्जं जं पुण ते एक्क-जम्मम्मि ॥१०६६॥

एत्थ य कुबेरसेणा कुबेरदत्तो कुबेरदत्ता य ।
जिणपुंगवेहिं दिट्ठा बहु-संबंधेसु दिट्ठंता ॥'१०६७॥

लीलावईए भणियं - 'नाह ! का कुबेरसेणा ? को वा कुबेरदत्त ? त्ति ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कुमारेण भणियं—

'उद्दाम-काम-कमणीय-कामिणी-चक्क-चंकमण-महुरा ।
विगय-परचक्क-विहुरा महुरा नामेण अत्थि पुरी ॥१०६८॥

एक्का वि सयल-तइलोक्क-विजय-कज्जे अणंग-नरवइणो ।
तत्थ य कुबेरसेणा सेण व्व विलासिणी अत्थि ॥१०६९॥

सा य पढम-गब्भेण खेईया जणणीए विज्जस्स दंसिया । तेण भणियं— 'जमल-गब्भ-दोसेण एईए बाहा, न उण कोइ वाहि-दोसो' । एवं नाऊण जणणीए भणिया— 'पुत्ति ! मा पसव-काले [107]सरीर-पीडाओ होउ त्ति गालेमि ते गब्भं ।' तीए न इच्छियं । जाओ दारओ दारिया य । जणणीए भणिया— 'उज्झिज्जंतु दुक्खकारयाणि एयाणि ।' तीए भणियं— 'जइ ते निब्बंधो ता दस-रत्तं पोसिज्जंतु ।'करावियाओ तीए दुवे कुबेरदत्त-कुबेरदत्ता-नामंकियाओ मुद्दाओ । पुन्ने दस-रत्ते मंजूसाए रयणपूरियाए छोढूण जउणा-नईए [108]पवाहियाइं दो वि । भवियव्वयाए सोरियपुरे पच्चूसे दोहिं इब्भदारएहिं दिट्ठा मंजूसा । गहिया तेहिं । दिट्ठाणि ताणि । एक्केण कुबेरदत्तो गहिओ, बीएण कुबेरदत्ता । कमेण संवड्ढियाणि । पत्ताणि कामकरि-कीलावणं जोव्वणं । कओ तेसिं परोप्परं वीवाहो । वित्ते वीवाहे वहू-वरेहिं जूयकीला काउमारद्धा । सहीहिं कुबेरदत्त-हत्थाओ मुद्दा गहिऊण कुबेरदत्ताए हत्थे दिन्ना । पलोइया तीए। जाव सरिस-घडणाओ दो वि मुद्दाओ चिरंतणीओ त्ति कलिऊण चिंतियं तीए- 'केण कारणेण मन्ने एवमेयं ति नूणं अम्हे भाय-भंडाइं[109] । न य मे कुबेरदत्ते भत्तार-बुद्धी, नयावि कुबेरदत्तस्स मइ भज्जा-बुद्धी । ताव भवियव्वं एत्थ कारणेणं' ति चिंतिऊण दो वि मुद्दाओ वरस्स हत्थे ठवियाओ । तस्स वि पेच्छंतस्स तहेव चिंता समुप्पन्ना । सो वि वहूए मुद्दं अप्पिऊण गओ माउ-समीवं । सवहे दाऊण पुच्छिया माया । तीए [110]गरुय-निब्बधं नाऊण जहट्ठियं सिट्ठं । तेण भणियं- 'अम्मे ! तुब्भेहिं जाणमाणेहिं अजुत्तं कयं ।'तीए भणियं- 'सरिस-रूव-दंसणाओ तुम्हाणं अणुरूवो जोगो'त्ति मोहिया अम्हे । ता होउ, पुत्तय ! हत्थग्गह-मेत्तेण दूसियाइं तुब्भे, न उण पावं समायरियं । अहं विसज्जेहामि दारियं स-गिहं । तुमं पुण दिसायत्ताए पत्थिओ सि । तओ नियत्तस्स अन्नाए सह संबंधं कारविस्सामि ।' 'एवं होउ'त्ति

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कुबेरदत्तेण कुबेरदत्ता पेसिया स-गिहं । तीए वि तहेव पुच्छिया जणणी । जणणीए[111] वि जहावत्तं कहियं । कुबेरदत्ता तेण निव्वेएण पव्वइया । पवत्तिणीए सह विहरइ । मुद्दा अणाए संगोविऊण अप्पणो पासे धरिया । पवत्तिणीए वयणेण तिव्व-तवच्चरण-पसत्ताए कुबेरदत्ताए ओहिनाणं समुप्पन्नं । आभोइओ अणाए कुबेरदत्तो कुबेरसेणा-गिहे वट्टमाणो, पुत्तो य तेण से जाओ । चिंतियं अणाए- 'अहो अन्नाण-वसगाणं अकज्जकारित्तणं'ति । तेसिं संबोहणत्थं अज्जाहिं समं विहरमाणी महुरं गया कुबेरदत्ता, कुबेरसेणाए गिहे वसहिं मग्गइ । तीए वि वंदिऊण भणियं- 'अज्जा ! अहं नाममित्तेण गणिया कुलवहु-वेसेण चिट्ठामि । ता तुम्हे गिहेगदेसे विवित्ते वसह'त्ति अणुमए ठिया तत्थ कुबेरदत्ता । कुबेरसेणा वि दारयं साहुणीण पासे निक्खिवइ । कुबेरदत्ता तेसिं पडिबोहणत्थं दारयं जंपेइ - 'बालय ! भाया सि मे १, भत्तिज्जो सि मे २, देवरो सि मे ३, पुत्तो सि मे ४ । जस्स तुमं पुत्तो सो मे भाया १, पिया २, पुत्तो ३, भत्ता ४, ससुरो य ५ । जीसे गब्भाओ जाओ सि सा वि मे माया १, सासू २, सवत्ती ३ , भाउज्जाया य ४ । तं तहा-संलावं सोऊण कुबेरदत्तं साहुणिं वंदिऊण कुबेरदत्तो पुच्छेइ- 'अज्जे! कह इमं इक्केक्क-विरुद्धं असंबद्धं कित्तणं करेसि ?।' अज्जा भणइ- 'सावय ! सच्चं एयं । ओहिनाणेण उवलद्धं मए ।' कुबेरदत्तेण भणियं- 'कहं चिय ?' सा भणइ-'बालओ भाया मे, जेण दोण्हं पि एक्का माया १ । भत्तिज्जओ वि, जेण मे भाउणो पुत्तो २ । देवरो य मे, जेणं भत्तार-भाया ३ । पुत्तो य, जेण मे भत्तार-सुओ ४ । बालगस्स वि जो पिया तुमं सो मे भाया, जेण दोण्हं पि एक्का माया १ । पिया य, जेण मे मायाए भत्ता २ । पुत्तो य, जेण मे सवत्तीए पुत्तो ३ । भत्ता य, जेणाहं तए परिणीया ४ । ससुरो य, जेण मह सासूए कुबेरसेणाए तुमं दईओ ५ । जीए गब्भाओ जाओ त्ति सा वि मे माया, जेणाहं तीए गब्भे उप्पन्ना १ । सासु य, जेण मे भत्तुणो कुबेरदत्तस्स माया २ । सवत्ती य, जेण मे भत्तुणो कुबेरदत्तस्स भज्जा ३ । भाउज्जाया य, जेण मे भाउणो कुबेरदत्तस्स भज्जा ४ ।' तओ अज्जाए मुद्दा दंसिया । कुबेरदत्तो तं तारिसं जाणिऊण जाय-तिव्व-संवेगो 'अहो ! अन्नाणेण एवमहं कारिओ त्ति पव्वइओ गुरु-समीवे । गरुयं[112] तवच्चरणं च काऊण देवलोगं गओ । कुबेरसेणा वि गहिय-गिहत्थव्वया जाया अज्जा वि, पवत्तिणी समीवे गया ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एवं ता जीवाणं अणियय-भावेण सयण-भावस्स ।
भद्दे ! भवत्थ-जीवा सव्वे परमत्थओ सयणा ॥१०७०॥

सव्वेसिं उवयारं सव्व-सावज्ज-विरइरूवाए ।
जिण-पव्वज्जाइ विणा सक्को वि न सक्कए काउं ॥१०७१॥

ता सव्व-जीव-लक्खण-सयणाणं पालणुज्जय-मणेण ।
पुरिसेणं निरवज्जा पव्वज्जा चेव कायव्वा ॥१०७२॥ ॥१०॥

एत्थंतरम्मि कमलावईइ विरहाउराइ संलत्तं ।
'पियम ! अहं पि संपइ हिय-वयणं किं पि जंपेमि ॥१०७३॥

अइ-लोह-गहग्गहिया जीवा पावंति आवइं [113]गरुयं ।
उट्टित्तणं पवन्ना दिट्ठंतो कुट्टिणी एत्थ' ॥१०७४॥

कुमारेण वुत्तं- ' का सा कुट्टिणी ?' ।

कमलावईए भणियं- 'सुण,

'अत्थि पुरं कुसुमपुरं पुरीण कुसुमावयंस-सारिच्छं ।
सर-वावी-कूव-पवाए पवड्ढियाणंद-संदोहं ॥१०७५॥

तुगं-सुरभवण-कंचण-कलस-समूहो नहंगण-दुमस्स ।
परिपाग-पिंगफल-निवह-लीलमवलंबए जत्थ ॥१०७६॥

तत्थ रिउ-रमणि-नीसास-पवण-सिंधुक्किय-प्पयावग्गी ।
वग्गंत-तुरयवग्गो राया रिउमद्दणो नाम ॥१०७७॥

तस्स निय-जणयावमाण-विणिग्गओ गयण-विउलासओ सयल-कलाकलाव-कुसलो सलोण-सव्वंगोवंगो बंगाहिव-नंदणो नंदणो रायपुत्तो ओलग्गइ, लग्गई य सो निय-गुण-गणेण मणम्मि नरवइणो । वियरेइ राया तस्स विउलं वित्तिं । सो उदारयाए विच्चइ [114]नड-विड-वेसा-भट्ट-चट्ट-कज्जेसु । कयाइ परिब्भमंतो दिट्ठो ललिय-लावण्णावगब्भिय-ललियाए ललिया-नामाए गणियाए । ससिणेहं निज्झाइओ चिरं । पेसिया [115]दासी । गंतूण तीए भणिओ- 'देव ! अम्ह सामिणी ललिया विन्नवेइ- एत्थ आगमणेण पसायं कुणह ।' आगओ नंदणो । आढत्तो वीणाइ-विणोओ । अक्खित्ता सा । भणियमणाए- नियं चेव तुह एयं गिहं, ता एत्थेव वसियव्वं ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चिंतियं नंदणेण-

'अब्भत्थिया वि वंका थण-पडिलग्गा वि तक्खण-विराया ।
तियसिंद-चावलट्ठि व्व होइ वेसा सुदुग्गेज्झा ॥१०७८॥

रज्जंति धणेसु पणंगणाओ न गुणेसु कुंद-धवलेसु ।
रज्जंति चिलीणे मक्खियाओ घण-चंदणं मोत्तुं ॥१०७९॥

थोर-थणथलीण वि पंकय-दल-दीह-लोयणाणं पि ।
वेसाण हरिद्दा-राय-सरिस-पेम्मत्तणं दोसा ॥१०८०॥

जाणामि जइ वि एवं इमीए रुवाइ-गुणगणो तह वि ।
आयड्ढइ मह हिययं बला वि लोहं व अक्कंतो ॥१०८१॥

एवं चिंतिऊण ठिओ तत्थ । जाया परोप्परमिमाण पीई । नवरं कुट्टणी धणलुद्धा न तूसइ तेत्तिय-धणेण । अओ न बहुमन्नइ नंदणं । भणेइ निय-धूयं- 'वच्छे ! तुच्छ-दविण-दाया एस । एत्थ नयरे ते के वि चिट्ठंति भोइणो अवरे, जेसिं पुरओ धणओ वि किविणो, ता किं तुमं इमं न चएसि ?। तीए भणियं- 'न चएमि मुत्तुमेयं । धणलुद्धा तुमं । अहं पुण गुणाणुरागिणी । गुणा य जारिसा एयस्स न तारिसा अन्नस्स ।' एवं सोऊण कुविया कुट्टणी[१११] । भणिओ अणाए परियणो- 'अवमाणिऊण नंदणं निस्सारेह मे गिहाओ' । तेण तहेव कयं । निग्गओ नंदणो । परिब्भमंतो य भूमंडलं साकेयनयरंतस्स परिसरुज्जाणे पत्तो सक्कावयार-चेईयं । जस्सिं कंदलिय व्व कंचणमय-वखंभावलीहिं इमा, निच्चं पल्लविय व्व दिव्व-सिव-उल्लोएहिं, सव्वत्थ वि दिप्पंतेहिं चिय राय-कुसुमियव्वुद्दाम-मुत्ताहलोऊलेहिं, फलिय व्व हेमकलसुप्पीलेहिं लच्छी लया तत्थ दिट्ठा जुगाइ-जिणिंदस्सेय पडिमा । तं दट्ठूण हरिसुप्फुल्ल-लोअणो थोउमाढत्तो-

'जं वज्जेसि नियंबिणी-थणहरुच्छंगाभिसंगं तुमं,
कोदंडासि-तिसूल-चक्क-पमुहं छत्तं न धारेसि जं ।
तं मन्ने गय-राग-दोस-पसरो देवाहिदेवो तुमं,
कज्जं कारणमंतरेण न भवे जम्हा इमं पायडं ॥१०८२॥

लद्धं अज्ज मए तिलोय-कमला-वच्छत्थलालिंगणं ।
खीणं मज्झ खणेण पाव-पडलं नीसेस जम्मऽज्जियं ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संपत्तो भवसायरस्स विसमुत्तारस्स तीरे अहं ।
जं दिट्ठो सि जिणिंद लोयण-सुहा-नीसंद-तुल्लो तुमं ॥१०८३॥

महि-निहिय-निडालवट्ठो पणमिऊण जिणं जिणभवण-दुवार-देसट्ठियाए चक्केसरीए देवयाए पुरओ रयणीए पसुत्तो सो मणिपीढियाए । मज्झरत्त-समए समागया तत्थ तक्करा । गहिउं पवत्ता सुवन्न-रयणाहरणाइयं जिणहराओ । हक्किया नंदणेण- 'अरे दुरायारा ! किमेयमारद्धं उभय-लोग-विरुद्धं ?!' तेहिं वुत्तं- 'जं पडिहाइ अप्पणो ।' तेण वुत्तं- 'न लब्भए काउमेयं ।' तेहिं वुत्तं- 'को निवारगो ?!' तेण वुत्तं- 'एस मे खग्गो' । तेहिं वुत्तं- 'जइ एवं ता सम्मुहो होसु ।' खग्गं गहिऊण ठिओ सम्मुहो नंदणो । तक्करा वि पवत्ता पहरिउं । उक्कडयाए सत्तस्स निरवेक्खयाए जीवियव्वस्स धुणिऊण केसरविसरं व अंगलग्गं सर-समूहं एक्केण वि करिणो व्व केसरिणा विद्दविया तक्कर-भडा नंदणेण, नट्ठा दिसोदिसं ।

दट्ठूण तस्स सत्तं पहट्ठ-मुहपंकया पसंसंती ।
तं रणरहसुट्ठिय-सेय-बिंदु-संदोह-दंतुरियं ॥१०८४॥

तिमिर-घण-पडल-मज्झे सुवण्णवण्णाहि काय-कंतीहिं ।
विज्जु व्व पज्जलंती पत्ता चक्केसरी देवी ॥१०८५॥

अकय-सुकयाण दुलहं दाऊणं नियय-दंसणं तीए ।
अट्ठहिं करेहिं जुगवं पि अमयधाराहिं सो सित्तो ॥१०८६॥

तो नंदणस्स देहं सहस च्चिय रूढ-पहरण-वणोहं ।
चक्केसरिणा(रीए) विहियं विविहालंकार-रमणिज्जं[११७] ॥१०८७॥

अह वच्छत्थल-विलुलंत-तार-हारावलीए नेहेण ।
अप्पडिचक्काए इमो भणिओ पण्हुय-थणीओ व्व ॥१०८८॥

'हे वच्छ! तुज्झ साहस-गुणेण तुट्ठ म्हि विम्हि(म्ह)यकरेण ।
ता चिंतारयणमिणं गेण्हसु अक्खय-निहाणं व ॥१०८९॥

विणय-पणउत्तमंगेण नंदणेणं तओ इमं भणिया ।
'देवि ! तुह दंसणं चिय चिंतारयणाओ अब्भहियं ॥१०९०॥

किंतु अइवच्छलाए जणणीए पणयपुव्वमाएसं ।
जइ न करेमि तओ हं न नंदणत्तं तुह वहामि ॥१०९१॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एवं भणंतेण तेण पडिच्छिओ चिंतामणी । अक्खिओ अ देवीए पंचपरमिट्ठि-मंतो, भणियं च-'पूईऊण कुसुमाइहिं इमिणा मंतेण सत्तवारे अहिवासिओ एस चिंतामणी मणवंछियं पयच्छइ । तहा इमस्स मंतस्स माहप्पेण न पभवंति भूय-पेय-पिसाय-रक्खसाइ, न कमंति पहरणाइं ।' 'पसाओ'त्ति भणंतो पडिओ पाएसु नंदणो देवीए । देवी वि तिरोहिया । तमेव मंतं सुमरंतेण गमियं निसासेसं पभाए जहुत्त-विहिणा पूईऊण चिंतामणी पत्थिओ सरीरठिइ-सामग्गिं । अचिंत-सामत्थओ तस्स तक्खणा चेव तत्थ संजाओ रयणमओ पासाओ । आरूढो तत्थ नंदणो, आगया अंगमद्दया, सविणयं अब्भंगिऊण कयं अणेहिं अंगमद्दणं । तओ समागयाओ सुगंधुव्वट्टण-सणाह-पाणिपल्लवाओ तरुणीओ, उव्वट्टियाओ ताहिं नीओ विविह-मणि-किरण-रइअ-सक्कचाव-चक्कवाले विसाले पवण-विहुव्वंत-मुत्तावचूल-कय-तंडवे मज्जण-मंडवे, निवेसिओ रयणपट्टे । सुरहि-नीर-भरिय-भूरि-भिंगारेहिं मणहर-गीयाउज्ज-नट्ट-पुव्वं ण्हविओ दिव्वंगणा-गणेणं, परिहाविओ दिव्व-देवंग-वत्थाइं । कय-पुप्फ-विलेवणोवयारो पत्तो दिव्व-नारी-निअर-पक्खित्तो सक्कावयार-चेइयं । पूइऊण कुसुमगंध-पडिपट्टंसुएहिं पणमिओ भत्तिपुव्वं भगवं जुगाइदेवो । कराविय नच्चंत-चारु-विलयं तुट्टंत-हारलयं सलयं जिण-पुजा-कज्जागय-सागेअ-जणक्खेव-जणयं पेक्खणयं । कया चक्केसरीए पूया । गओ सव्व-रसोवेय-विविह-खज्ज-पेज्जाइ-संपुन्न-सुवन्न-थालं भोयणसालं जिमिओ नरिंद-लीलाए । गहिए अ तंबोले इंदयालं व तिरोहियं सव्वं पासायप्पमुहं । चलिओ नंदणो कुसुमपुराभिमुहं, पत्तो य तत्थ । इओ य सा ललिया नंदणमपेच्छंती परिचत्त-भत्ता ठिया ति-रत्तं । विचित्त-जुत्ति-पडिवत्ति-पुव्वं पन्नविया कुट्टणीए[११८], भणियमणाए-

'अवियालिंगइ अंगे भयवं धूमद्धओ धुवं मज्झ ।
न उ नंदणाओ अन्नो मणुओ मयरद्धय-समो वि ॥१०९२॥

इमं च तीए निच्छयं तह त्ति पडिवज्जिऊण कराविया कुट्टणीए[११९] पाणवित्तिं, अप्पणा वि पयट्टा तं गवेसिउं । अन्नया दिट्ठो कयसिंगारो घरासन्न-रच्छाए[१२०] वोलंतो नंदणो । तीए तुरियं गंतूण सविणयमाणिओ घरं, काऊण महंत-पडिवत्तिं भणिओ- 'पुत्त ! जोत्तं किं तहा पवसणं?। तओ-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जलपाणत्थ निविट्ठो उट्ठंतो पत्थिओ कहइ वत्तं ।
तं पुण पयडिय-नेहो वि अकहिउं कह पउत्थो सि ? ॥१०९३॥

किर कत्थ कत्थ न मए पुत्त ! गविट्ठो सि एत्तियं कालं ।
न य निय-दंसण-दाणेण कओ पसाओ तए मज्झं ॥१०९४॥

एसा य मज्झ दुहिया दुहिया पत्ता य पाण-संदेहं ।
न य निन्नेहा जाया मुक्का अवराह-विरहे वि' ॥१०९५॥

नंदणेण वुत्तं- 'अहं खु उत्ताल-पओयणेण देसंतरं गओ, अज्जेवाऽऽगओ, ववखेवाओ य नेह पत्तो । ता न अन्नहा तए संभावियव्वं' ति । ठिओ तग्गेहे । कुणइ विलासे । मग्गिओ कुट्टणीए[121] धणं । तओ 'भारतुल व्व लोहमई[122] इमा, न थोव-दाणेण तत्तिहि'त्ति कलिऊण तेण चिंतामणि-माहप्पेण दिण्णं मग्गियाइरित्तं वित्तं । तुट्ठा कुट्टिणी । तह वि लोह-दोसेण पुणो पुणो मग्गेइ । नंदणो वि पयच्छइ । अन्नया विम्हियाए चिंतियं अणाए- 'नूणं अत्थि एयस्स चिंतामणी परिग्गहे, कहं अन्नहा एरिसी दाण-सत्ती ?। ता तं गेण्हामि ।' तओ ण्हाणोवविट्ठस्स तस्स कुप्पास-खल्लयाओ गहिओ तीए मणी । पुणो किंपि जाइएण निहालियं अणेण खल्लयं तं । अपेच्छंतेण पारद्धा गवेसणा । भणिओ कुट्टणीए[123] - 'पज्जत्तं तुह दाणेण । मा मे परियणं अब्भक्खाणेण दूमिहि ।' तओ नूणं अणाए गहिओ चिंतामणी, कहं अन्नहा सिद्ध-कज्ज व्व निद्दक्खिन्नमुल्लवइ एस त्ति संभाविऊण सामरिसो निग्गओ नंदणो, लज्जाए रायाणं पि अविन्नविऊण पत्थिओ देसंतरं । चिंतइ य-

न हु अच्छरियं हय-कुट्टणीए[124] लोहज्जराभिभूयाए ।
जं मग्गिए वि अधिए दिन्ने न नियत्तए तण्हा ॥१०९६॥

असमिक्खिय-तत्ताए वीसत्थद्दोह-दिन्न-चित्ताए ।
नो केवलं अहं चिय अप्पा वि हु वंचिओ तीए ॥१०९७॥ [125]जओ-

अमुणिय-विहि-मंताए तीए चिंतामणी मणोभिमयं ।
थेवं पि न वियरिस्सइ नूणं पाहाण-खंडं व ॥१०९८॥

को हुज्ज सो पयारो जेणाहं तीए विप्पियं काउं ।
दंसिय-निय-माहप्पो चिंतारयणं गहिस्सामि ? ॥१०९९॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उवयारं उवयारीण वेरं निज्जायणं च वेरीण ।
काउं जो न समत्थो धिरत्थु पुरिसत्तणं तस्स ॥११००॥

इय चिंतापरो परिब्भमंतो पत्तो एगं नयरं रमणीयं अजणसंचारं, चित्ते सविम्हओ पविट्ठो तयब्भंतरं । पेच्छंतो किलकिलंत-कइकुल-संकुलाइं देवकुलाइं, घुरुहुरंत-घोर-वग्घाइं, घरोयराइं लंबंत-भुयंग-कंचुयाइं तोरणाइं । गओ रायभवणं । आरूढो सत्तमं भूमियं । पेच्छइ तत्थ कुंकुम-कयंगरायं सुरहि-कुसुम-मालुम्मालिय-ग्गीवं करहिमिणं । 'कहं सुन्न-नयरे करही ?। कहं वा एत्थारूढा सोवभोगसरीरा य ?।' त्ति वियक्कंतो पेच्छइ गवक्ख-गयं समुग्गय-दुगं । तत्थ एगत्थ धवलमंजणं, अन्नत्थ कसिणं । सलागा-दंसणाओ जेणंजणमिणं ति कय-निच्छओ नियच्छइ धवल-पम्हाइं करही-लोयणाइं । तो 'नूणं माणुसी एसा धवलंजणेण करहीकया संभवइ । कयाइ कसिणंजणेण पयइ-भावो इमीए' त्ति चिंतिऊण अंजियाइं कसिणंजणेण तयच्छीणि नंदणेण । जाया पयइरूवा तरुणी । 'कुसलं तुह ?' त्ति ससिणेहमालत्ताए भणियमणाए- 'संपइ तुम्हाणुभावेण संभवइ कुसलं ।' नंदणेण वुत्तं- 'को एस वुत्तंतो ?।' तओ सा साहिउं पवत्ता- 'अत्थि इओ उत्तरओ गंगाकूले कुसत्थले नयरे गंगाहरो त्ति सेट्ठी । तब्भज्जा गंगिला नाम । ताणं चउण्ह पुत्ताणमुवरि जाया मणोरह-सएहिं तणया नामेण सुंदरी अहं जोव्वणं पत्ता ।

अह गंगासन्न-वणे विज्जाविज्जय-निमित्त-निउणमई ।
नामेण रुद्दसम्मो आसि परिव्वायगो तरुणो ॥११०१॥

अह सो मह जणएणं सगोरवं भोयणत्थमाहूओ ।
विहिय-चलणाइ-सोओ ठविओ पवरासणे विहिणा ॥११०२॥

तो सालि-दालि-घय-खज्ज-पेज्ज-परिवेसणम्मि पारद्धे ।
ताय-गिरा-[१२६]गहियं वीयणं मए पवण-दाण-कए ॥११०३॥

मह रूवं पेच्छंतो अजुत्तकारि त्ति सो वि मयणेण ।
कुविएण व बाणेहिं पहओ तो चिंतए एवं ॥११०४॥

डज्झउ वयं, विवज्जउ विज्जा, झाणग्गहे पडउ वज्जं ।
सग्गेण न मे कज्जं रमेमि रमणिं जइ न एयं ॥११०५॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जइ अच्छराहिं बंभो, गंगा-गोरीहिं खोहिओ य हरो ।
गोवालियाहिं कन्हो, वय-बहुमाणो तओ को मे ? ॥११०६॥

इय कय-विविह-वियप्पो झायंतो किं पि भोयणं मोत्तुं ।
भणिओ सो मह पिउणा- 'भुंजह चिंताइ किं इण्हिं ?॥११०७॥

पुण पुण भणिज्जमाणेण तेण 'किं एरिसेण दुक्खेण ?।
विहुराण भोयणेणं ?' ति भणिउं गहिया कइ वि कवला ॥११०८॥

भुत्तुत्तरं च पुट्ठो पिउणा किं दुक्खिओ तुमं भयवं ।
निब्बंधे वज्जरियं अणेण जह-'मज्झ मुणिणो वि ॥११०९॥

तुम्हारिस-जण-संगो दुह-हेऊ जेण तुम्ह न तरामो ।
सोढुमऽकुसलं कहिउं च इत्तियं चिय तरामो ॥'१११०॥

तो सो गओ स-ठाणं 'हंत किमेयं'ति आउलमणेण ।
तत्थ वि गंतुं पिउणा एगंते सायरं पुट्ठो ॥११११॥

भणियमणेण -'इमो सो जाओ मे वग्घ-दुत्तडी-नाओ ।
जं तुममलंघणिज्जो इमं च कज्जं अवत्तव्वं ॥१११२॥

तह वि हु गोरवठाणं तुमं ति साहेमि इत्थ परमत्थं ।
भोयण-समए दिट्ठाइं तुह सुया-लक्खणाइं मए ॥१११३॥

पिउपक्ख-क्खयकर त्ति लक्खिया सा अणेण दुक्खेण ।
चत्तं भोयणमुवरोहओ य तुह किंचि भुत्तं च' ॥१११४॥

'नाणी अवितह-वयणो य निच्चमेसो' त्ति भीरुणा पिउणा ।
भणियं -'भयवं ! किं को वि अत्थि अत्थे इह उवाओ ?'॥१११५॥

'अत्थि' त्ति तेण वुत्तं, 'नवरं सो दुक्करो जओ भद्द ! ।
परिचत्तं चिय पीडं न कुणइ अवलक्खणं वत्थुं ॥१११६॥

पाणपिया य सुया ते जइ पुण एसा कुमारिगा संती ।
सव्वालंकारजुया खिविउं मंजूस-मज्झम्मि ॥१११७॥

गंगाए पवाहिज्जइ किज्जइ संती तओ हवइ सुत्थं' ।
तो कुल-रक्खा-कज्जे ताएण तहा कयं सव्वं ॥१११८॥

परिव्वायगेणावि भणिया निय-सीसा जहा-'अज्ज गंगाए हिमवंताओ मम मंतसिद्धि-निमित्तं पूयोवगरण-पुन्ना मंजूसा आणीया ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ता गंतूण तं हिट्ठिम-तित्थे पडिच्छह, अणुग्घाडियं आणेह, जेण मंत-विग्घो न होइ' त्ति । ते वि गया तत्थ । सा य मंजूसा इमस्स नयरस्स सामिणा भीमेण नइ-जले कीलंतेण दिट्ठा, कोउगेण गहिया, उग्घाडिया य । तओ दिट्ठा अहं, विम्हिओ इमो, मयण-वसगेण गहिया अहं । खित्ता तत्थ मक्कडी । तहेव ठइऊण पवाहिया मंजूसा । भीमो वि विढत्त-रज्जंतरो व्व तुट्ठमणो पत्तो इमं नयरं ।

परिव्वायग-सीसेहिं वि गहिऊण मंजूसा अप्पिया गुरुस्स । तओ तस्स विवेओ व्व रवी अत्थमिओ, पसरिओऽणुराओ व्व संझा-राओ, कुमइ व्व तिमिर-माला समुल्लसिया । भणिया तेण सीसा- 'अज्ज निसाए मंतसिद्धिं करिस्सं । अओ सूरे उग्गए तुब्भेहिं आगंतव्वं'ति भणिऊण पिहियं मढ-दुवारं, दवावियं तालयं । तओ 'सुंदरि ! सुट्ठु तुट्ठा ते गंगादेवी । तीए दिन्नो अहं ते भत्ता । ता न मे पणयभंगो कायव्वो' त्ति भणंतेण तेण उग्घाडिऊण मंजूसं छूढा तग्गहणत्थं दो वि हत्था । तओ निरोह-कुवियाए मक्कडीए सो दंतग्गेहिं गहिओ अहरे, पच्छा कवोलेसु, तओ नासग्गे । तो मयण-मूढ-मणेण भणियमणेण- 'पिए ! मुंच नासग्गं, पेम्मं खु नाइरित्तं जुत्तं' ति भणंतस्स तोडियं नासग्गं । फाडियं सव्वमंगं नहरेहिं । तओ 'न एसा सा सुंदरि' त्ति कयनिच्छओ कयत्थिओ तीए ।

नंदणेण भणियं-

'भद्दे ! भल्लं भल्ला परिणमइ, लावं लावा संपज्जइ ।
सा सुंदरी राणाह घरि छज्जइ, मढि पव्वइओ मक्कडि खज्जइ ।।१११९।।

सुंदरीए वुत्तं-

'तो सो समग्ग-रयणिं चडप्फडंतो पुणो पुणो तीए ।
निब्भिन्न-कुच्छि-वच्छो मुक्को पाणेहिं पावो व्व ।।११२०।।

भवियव्वया-निओएण जाओ सो रक्खसो । नाणाओ नाऊण पुव्व-जम्मं कुद्धो भीमस्स पत्तो इमम्मि नयरे । निहओ भीमो । उव्वासियं नयरं एक्कं ममं मुत्तूण । एसो य वुत्तंतो सिणेहं पयडंतेण तेण कहिओ मे । रूव-परावत्तिकारयं अंजण-दुगं पि संजोइयं, तं च तए सयं चेव लक्खियं । ता महासत्त ! मोएहि इमाओ रक्खसाओ । सुहय ! सहलीकरेसु मे जोव्वणं ।' एवं सोऊण कारुण्ण-रसाउत्त-मणेण भणियमणेण-'पिए !

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परिच्चय भयं'। गहिऊण अंजण-दुगं रयण-संचयं च उत्तिन्नो तीए समं पासायाओ। सा वि कया करही। आरोविओ तत्थ रयण-संचओ। चलिओ कुसुमपुराभिमुहं। अणुमग्गओ धाविओ रक्खसो कय-करालरूवो घोरट्टहास-पूरिय-दियंतरो, जमजीहा-सवत्त-कत्तिया-करो 'अरे दुरायार! अज्ज नट्ठो सि' त्ति भणंतो थंभिओ [१२७]पंचपरमेट्ठि-मंतं [१२८]समरंतेण नंदणेण। विन्नाय-तम्माहप्पेण भणियं रक्खसेण- 'अज्ज सच्चविओ तए- हुंति रक्खसाणं पि भेक्खस- त्ति जणप्पवाओ, ता मुंच संपयं। जं आणवेसि तं करिस्सं।' नंदणेण भणियं- 'पुव्वं व वसउ तं पुरं।' 'एवं' ति पडिवन्ने उत्थंभिओ नंदणेण रक्खसो। गओ स-ट्ठाणं। नंदणो वि पत्तो कुसुमपुरं। कय-पहाण-गिह-परिग्गहो सुंदरीए समं अभिरमइ।

इओ य निग्गए नंदणे ललियाए भणिया सकोवं कुट्टणी-

'जलणो वि इंधणेहिं तिप्पइ मयरो वि नीरपूरेहिं।
न तुमं तिप्पसि पावे! पत्तेहि वि बहुय-दविणेहिं ॥११२१॥

ता न तए मह कज्जं' ति भणंती गया राय-पासं, विन्नत्तो राया- 'देव! धणलुद्धाए अक्काए हरिऊण चिंतारयणं तम्माहप्पेण मणिच्छियं लच्छिं दिंतो वि निव्वासिओ मे मणाणंदणो नंदणो। चिंतारयणाओ य काण-कवड्डियं पि न पावए पावा, तओ-

नंदणु गओ रयणु वि न तसु देइ वराडिय-मेत्तु।
तं आहाणं सच्चविओ नं धणु हुया न मित्तु ॥११२२॥

रन्ना वुत्तं-'अहो! नंदणो अम्ह पहाण-सेवगो इमीए देसंतरं गमिओ?, ता जया तं आणेइ एसा तया तए इमीए गिहे पवेसो दायव्वो'[त्ति]सम्माणिऊण विसज्जिया ललिया गया स-गिहं। निद्धाडिया अणाए कुट्टणी, सयं च पडिवण्णं पइव्वया-वयं, कओ वेणी-बंधो, धरियं मंगलाहरणं, परिचत्तं पल्लंकाइ। इमं च वुत्तंतं सोऊण गओ ललियाए गिहं नंदणो। तं च दट्ठूण चंदं व कुमुइणी विहसिया ललिया। पुव्वं व इमीए सह भुंजए भोए। 'न अन्नो चिंतामणि- लाहोवाओ' त्ति चिंतिऊण आणाविया कुट्टणी। पम्हुट्ठ-विलइओ इमो त्ति तुट्ठा सा। 'तहाविव प्फलिया भविस्सामि' त्ति न समप्पए चिंतामणिं।

अन्नया पुट्ठो इमीए नंदणो- 'कुओ ते दव्वं?' ति। तेण वुत्तं-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

'अंजणसिद्ध-सयासाओ लद्धमंजणं. जेण अंजणेण अंजिएहिं लोयणेहिं सयल-महीयल-निहाणाइं हत्थगयाइं व पेच्छामि, अओ मे दव्वं' ति । ता तीए दव्व-लोभेण भणियं- 'ममावि लोयणे अंजेसु । जेण अहं पि ताइं पेच्छामि' । तओ धवलंजणेण अंजियाइं लोयणाइं तीसे । जाया कुट्टणी[129] करही । आरूढो तत्थ नंदणो । भमइ नयर-मज्झे । नाय-वुत्तंतेण विम्हय-वसेण हक्कारिओ रन्ना । भणिओ य -'भद्द ! किमेयं ?' ति । कहिओ तेण अंजणप्पओगो । रन्ना वुत्तं-'अत्थि किं बीओ वि प्पओगो जेण पुणो माणुसी होइ ?'। तेण वुत्तं -'अत्थि' । रन्ना वुत्तं -'जइ एवं ता तं पउंजसु ।' तओ तेण कसणंजणेण कया सा माणुसी । रन्ना वुत्तं- 'अहो ! तुमं अच्छरिय-निही । ता तुमए अम्ह पासे चेव ठाइयव्वं ।'

भणिया य कुट्टणी सा 'चिंतारयणं समप्पसु इमस्स ।
अन्नह पुणो वि पावे ! पाविहिसि विडंबणं एवं' ॥११२३॥

तमप्पियं तीइ वि नंदणस्स ।

तस्सप्पभावेण इमो वि जाओ संपन्न-नीसेस-समीहियत्थो । काऊण धम्मं सुगइं गओ य ॥११॥

'एवं सामि ! तुमं पि हु संपत्त-समीहियत्थ-वित्थारो ।
मा लोभग्गह-गहिओ होऊण विडंबणं लहसु ॥११२४॥

अह कह वि वय-ग्गहणे [130]गरुओ तुह माणसम्मि निब्बंधो ।
ता पुत्त-वयण-कमलं पलोइउं कुणसु अहिलसियं ॥११२५॥

जो पालिऊण सुचिरं पुव्व-नरिंदेहिं पाविओ वुड्ढिं ।
वंसस्स तस्स जायइ पुत्तेण विणा समुच्छेओ ॥११२६॥

कित्तिं तह धम्मं जीवियस्स विउसा फलं पयंपंति ।
पुत्त-विहूणाण इमे दो वि पणस्संति पुरिसाणं ॥११२७॥

एयस्स पिया वाई भोई दक्खो दयावरो सरलो ।
इय कित्तिं बंदिगणा थुणंति सुय-विहिय-उवयारा ॥११२८॥

धम्मट्ठाणाइं जए सचक्क-परचक्क-भज्जमाणाइं ।
विविहाइं तक्कयाइं को रक्खइ जस्स नत्थि सुओ ॥११२९॥ तहा-

पुत्तस्स समुप्पत्ती पिऊण उवगारिणी अ सुइ-वयणं ।
जं पुत्त-दत्त-भत्ताइएहिं तेसिं हवइ तित्ती ॥११३०॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पुत्तम्मि समारोविय-समग्ग-भारो भवे नरो विरिणो ।
लीलाय च्चिय सग्ग-मग्गमोगाहए पच्छा ॥११३१॥ उक्तं च-

अपुत्रस्य गतिर्नास्ति स्वर्गो नैव च नैव च ।
तस्मात्पुत्रमुखं दृष्ट्वा पश्चात्स्वर्गं गमिष्यति' ॥११३२॥

कुमारेण भणियं-

'जइ वंस-समुच्छेओ होइ तओ किं विणस्सइ नरस्स ?।
निय-सुकय-दुक्कयाइं सुह-दुक्ख-निबंधणं ज़म्हा ॥११३३॥

जइ होज्ज कयं सुकयं तो सुरलोयाइ-संपयं पत्तो ।
पुरिसो अच्छिन्न-सुहं भुंजइ उच्छिन्न-वंसो वि ॥११३४॥

अह हुज्ज दुक्कयं पुव्व-निम्मियं तेण दुग्गइ-गमिओ ।
दुक्खं चिय अणुभुंजइ पवड्ढमाणे वि वंसम्मि ॥११३५॥

जा अप्पणा कएहिं वि ठविज्जए सुचरिएहिं पुरिसेण ।
कुसलेहिं सलहिज्जइ स च्चिय कित्ती न उण सेसा ॥११३६॥

न य कित्ती सुगइ-निब्बंधणं जओ दुक्कयाइं काऊण ।
गिज्जंत-कित्तिणो वि हु अहर-गइं जंतुणो जंति ॥११३७॥

धम्मट्ठाणाणि सयं कारविउं विढविऊण पुन्नभरं ।
सुगइं गच्छंति नरा तत्थ य सुक्खाइं भुंजंति ॥११३८॥

जे उण पावा भंजंति अवर-विहियाइं धम्मट्ठाणाइं ।
ते पावभरक्कंता कुगइं वच्चंति दुह-बहुलं ॥११३९॥

न य दुज्जण-भज्जंतेहिं धम्मट्ठाणेहिं सुगइ-ठाणाओ ।
पावंति परिब्भंसं जीवा तक्कारिणो कह वि ॥११४०॥

जं सयमेव विइन्नं तं चिय उवभुज्जए पर-भवम्मि ।
जं पुत्त-दत्त-भत्तेण होइ तित्ति त्ति तं मिच्छा ॥११४१॥

दूरत्थो जीवंतो वि अन्न-दिन्नं न पावए अन्नो ।
जं पुण मयस्स तित्ती पुत्त-विइन्नेण तं कह णु ॥११४२॥

पुत्तारोविय-भारो वि अकय-सुकओ कहं लहइ सग्गं ।
अट्ठ-पयारं कम्मं रिणं वहंतो कहं विरिणो ? ॥११४३॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पुत्त-मुह-दंसणे जइ सुकए अकए वि लब्भए सग्गो ।
ता बहुपुत्ताणं भुंडि-सुणहि-पमुहाण सो सुलहो ॥११४४॥

सग्गो न होइ पुत्तेण अवि य पुत्तो हणेइ निय-पियरं ।
सत्तू वि होइ पुत्तो नायमिह समुद्ददत्त-कहा ॥११४५॥

कमलावईए भणियं-'का सा समुद्ददत्त-कहा ?।'

कुमारेण भणियं-

'अत्थि इह तामलित्ती नयरी निय-रिद्धि-लद्ध-वर-कित्ती ।
पासाय-रयण-दित्ती-पयासियासेस-''दिस-भित्ती ॥११४६॥

वत्थं चिय वसणं जत्थ अविहवो कामिणी-जणो चेव ।
गोवाल-बालय च्चिय पर-दोहपरा न सेस-जणो ॥११४७॥

तीए समुद्ददत्तो वणिओ अविवेय-कुलहरं रिद्धो ।
तस्स य मायाबहुला बहुला नामेण वर-भज्जा ॥११४८॥

ताण महेसरदत्तो पुत्तो दक्खिण्ण-दाण-संजुत्तो ।
तस्स य लायन्नामय-तरंगिया गंगिला भज्जा ॥११४९॥

सो वि हु समुद्ददत्तो लोहवसावेस-विगय-चेयन्नो ।
माया-पवंच-बहुलो परलोय-परम्मुहो संतो ॥११५०॥

संतोस-वज्जिओ कुणइ बहुविहे दविण-अज्जणोवाए ।
रक्खइ धणं न कस्स वि वियरइ न य भक्खइ सयं पि ॥११५१॥

मग्गिज्जंतस्स परेण तस्स सत्तहिं मुहेहिं एइ जरो ।
दिंतं परं पि पिच्छंतयस्स सिर-वेयणा होइ ॥११५२॥

अह अन्नया कयाइ पुरिसेणेक्केण दीण-वयणेण ।
भवणंगणे निसन्नो समुद्ददत्तो इमं भणिओ ॥११५३॥

भद्द ! अहं भद्दिलपुर-वासी वाणिय-सुओ निय-घराओ ।
निक्खंतो देसंतर-दंसण-कोऊहल-वसेण ॥११५४॥

अच्छरिय-सयाइन्नं सर-सरि-नग-नगर-गाम-रमणिज्जं ।
पुहविं परिब्भमंतो पत्तो इह दिव्व-जोगेण ॥११५५॥

एत्तो य रायपुरिसा रोसंधा जम-भड व्व निक्करुणा ।
तक्करमेक्कं गाढं कयत्थमाणा मए दिट्ठा ॥११५६॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तो करुणाए वुत्ता-'भो भो ! मेल्लह जइ वरायमिमं ।
ताहं दीणार-सयं तुम्ह पयच्छामि अवियप्पं ॥११५७॥

सोऊण इमं वयणं तेहिं तओ 'एस एय-संबंधी ।'
इय जंपंतेहिं अहं गुत्तीए बंधिउं खित्तो ॥११५८॥

जं किंचि मज्झ पासे आसि धणं गिण्हिऊण तं सव्वं ।
धरिओ भोयण-रहिओ मासाओ अज्ज मुक्को म्हि ॥११५९॥

[133]गरुयं च तुमं दट्ठूण भुक्खिओ सत्थवाह ! पत्थेमि ।
करुणाए भोयणत्थं एक्कं मह देसु दीणारं ॥११६०॥

सोऊण वयणमेयं समुद्दत्तो वि [133]किविण-भावेण ।
सामल-वयणो काउं नडालवट्ठे भिउडि-भंगं ॥११६१॥

दुव्वयणाइं पयंपिउमाढत्तो-'रे लहुं महामूढ ! ।
निग्गच्छ मह घराओ दीणारो नत्थि तुह जोग्गो ॥११६२॥

काऊण बहु किलेसे दविणं विढवेमि तं तु दाऊण ।
तुम्हारिसाण किं निट्ठवेमि जेणाधणो होमि ? ॥११६३॥

एयं तु पिच्छिउं पासवत्तिणा उल्लसंत-करुणेण ।
तस्स महेसरदत्तेण वियरिया दोन्नि दीणारा ॥११६४॥

तत्तो समुद्दत्तेण जंपियं -रे कुपुत्त ! किं एयं ।
तुमए कयं ? न याणसि नूणं दविणज्जण-किलेसं ?॥'११६५॥

तो नंदणेण वुत्तं- 'ताय ! बहुव्वत्त-धय-विलोलाए ।
लच्छीए इमाए फलं दाणं भोगो य न हु अन्नं ॥'११६६॥

तत्तो समुद्दत्तेण चिंतियं- 'हा ! कहं विभिन्न-मणो ।
एसो मह पुत्तो ? तेण खिज्जिही निच्छियं लच्छी ॥११६७॥

एवं वियप्पमालाउलस्स हिययम्मि तस्स संघट्टो ।
सो को वि पयट्टो जेण झत्ति पाणा वि निक्खंता ॥११६८॥

ता अट्टझाण-वसओ मरिऊणं तम्मि चेव विसयम्मि ।
सो महिसो संजाओ कमेण पोढत्तणं पत्तो ॥११६९॥

बहुला वि नियडि-बहुलत्तणेण पर-वंचण-प्पहाण-मणा ।
पइ-मरणेणं रणरण-परव्वसा अट्टझाण-गया ॥११७०॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मरिउं मुच्छा-दोसेण सुणहिया निय-घरे समुप्पन्ना ।
सा गंगिला महेसरदत्तस्स निरग्गला गिहिणी ॥११७१॥

सच्छंदा अच्छंती गुरुजण-रहियम्मि नियय-गेहम्मि ।
अन्नेण नरेण समं संघडिया [१३५]पेच्छए तं च ॥११७२॥

कह वि महेसरदत्तो कीलंतिं तेण सह तओ कुविओ ।
को वा कोवं न कुणइ निय-घरिणी-परभवं दट्ठुं ? ॥११७३॥

सो य महेसरदत्तेण अद्धपहओ कओ तओ नट्ठो ।
गंतूण नाइ-दूरम्मि निवडिओ चिंतए एवं ॥११७४॥

अहह ! मए पावेणं कयं अकज्जं इमं ति संविग्गो ।
निंदंतो अप्पाणं विचित्तयाए य कम्मस्स ॥११७५॥

उवसंत-मणो मरिउं तीए च्चिय गंगिलाए गब्भम्मि ।
निय-बीएणं तक्खण-भुत्त-विमुक्काए उप्पन्नो ॥११७६॥

कालक्कमेण जाओ पुत्तो अइ-वल्लहो त्ति काऊण ।
वहइ महेसरदत्तो उच्छंगेणं पहिट्ठ-मणो ॥११७७॥

अह अन्नया महेसरदत्तेणं जणय-किच्चमारद्धं ।
सो जणय-जीव-महिसो किणिऊण विणासिओ तत्थ ॥११७८॥

विप्पाण बंधवाण य दिंन्नाइं महिस-मंसखंडाइं ।
पिउणो तित्ति-निमित्तं पिया वि खज्जइ अहो मोहो ॥११७९॥

अह पुत्तं उच्छंगे काउं आसायए सयं मंसं ।
माउ-सुणियाइ पुरओ ठियाइ अट्ठीणि पक्खिवइ ॥११८०॥

भक्खेइ सा वि तुट्ठा अह मासक्खमण-पारणय-हेउं ॥
साहू अइसय-नाणी कह वि पविट्ठो गिहं तस्स ॥११८१॥

नियइ महेसरदत्तं एक्कमणो चिंतइ य निय-चित्ते ।
अन्नाणमहह ! एसो जं सत्तुं वहइ उच्छंगे ॥११८२॥

भक्खइ पिउणो मंसं, सुणियाए देइ जणय-अट्ठीणि ।
सा वि निय-भत्तुणो अट्ठियाइं भक्खेइ तुट्ठ-मणा ॥११८३॥

इय चिंतिऊण साहू विणिग्गओ तयणुमग्गओ गंतुं ।
भणइ महेसरदत्तो- 'भयवं ! भिक्खा न किं गहिया ? ॥'११८४॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मुणिणा वुत्तं- 'मंसाइ-भक्खणे वाउलाइं तुम्हे'त्ति ।
न पडिक्खिओ मए, मह जाओ अहिओ य संवेगो ।।'११८५।।

भणइ महेसरदत्तो- 'संवेगो केण हेउणा तुज्झ ।
अहिओ जाओ ?' मुणिणा वि साहिओ सव्व-वुत्तंतो ।।११८६।।

तं सोऊण महेसरदत्तो संजाय-परम-संवेगो ।
पव्वज्जं पडिवन्नो तस्सेव मुणिस्स पासम्मि ।।११८७।।

इय पुत्तो वि न रक्खइ नरं कुकम्मेहिं दुग्गइं जंतं ।
न य पुत्त-विइन्नेणं तित्ती पियराण संभवइ ।।११८८।।

सत्तू वि होइ पुत्तो भवम्मि पुत्तो वि हणइ निय-पियरं ।
ता धम्मो च्चिय पुत्तो इह-पर-लोए वि सुह-हेऊ ।।११८९।।१२।।

एत्थंतरे सोहग्गमंजरीए भणियं-

'जं संपन्न-समीहिय-सयलत्थो उज्जओ वयं काउं ।
तं लोह-तरलिओ जंबुगो व्व सोच्चिहिसि सामि ! तुमं ।।'११९०।।

कुमारेण भणियं -'को सो जंबुगो ?।'

सोहग्गमंजरीए भणियं-

'अत्थेत्थ पुव्वदेसे अंगा नामेण जणवओ विउलो ।
रिउचक्क-अकयकंपा चंपा नामेण अत्थि पुरी ।।११९१।।

उत्तुंग-जिण-निकेयण-सिरि-विलसिर-कणय-केयण-भुयाहिं ।
नच्चइ व जम्मि लच्छी सुहाण निवेस-हरिस-वसा ।।११९२।।

तीए निरुवम-रूवोहामिय-मयरद्धओ कणयद्धओ राया । निहिसारो सेट्ठी, रयणसारो पुत्तो । रिद्धिमई तस्स भज्जा । सा रूववई । नईए य ण्हायंती दिट्ठा तयट्ठ(तडट्ठ)-रायपुत्तेण । अणुरत्तो इमो । पेसिया दिट्ठि-दूई । बहुमन्निया इमीए । अणुगमणेण नायं तीए घरं । संकेयाइं जाणणत्थं पेसिया परिव्वायगा । कया अणाए ठाणा । तस्साणुरागो त्ति इच्चाइ बोल्ला । एवमवधारिऊण निय-भावं निगूहंतीए निब्भच्छिया एसा । दिन्नो से मसिलित्त-हत्थेण पट्ठीए पंचंगुली-घाओ, निच्छूढा असोगवणिया-पच्छिम-दुवारेण, भणिया य एसा- 'जइ पुणो एहिसि निय-माणुसाण कहिस्सं' । गया सा । साहियमेयस्स सव्वं । तुट्ठेण चिंतियं तेण- अहो !

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वियद्दा सा । तीए एसा वि परिव्वाइया वंचिया । कओ मे किण्ह-पक्ख-पंचमीए असोगवणिया-पच्छिम-दुवारेणं आगंतव्वं ति संकेओ । भणियायऽणेण-'परिव्वाइगा ! अलं तीए अ[ण]णुरत्ताए ।' गओ सो पंचमीए असोग-तरु-हेट्ठे । जाओ संभोगो । पवड्ढमाण-सिणेहाण वोलिया कइ वि दियहा । इहुल-तेल्ल-मइल-वट्टि-रइहर-दीवण-दंसणेण जाया निहिसारस्स आसंका - 'किमेयं ?' ति । निरक्खिया रयणीए, दिट्ठा समं तेण पसुत्ताए । ओयारियं दाहिण-पायाओ नेउरं अणेण । वेइयं इमीए । उट्ठाविओ सो । कहियं तस्स 'समए साहेज्जं कायव्वं' ति । गओ सो । इयरी वि गया पइ-समीवं । उट्ठविऊण भणिओ एसो- 'इह घम्मो त्ति असोगवणियं वच्चामो' । 'एवं'ति पडिवन्नमणेण । गयाइं । तत्थ सुत्ताणि मुहुत्तं । उट्ठविऊण भणिओ भत्ता- 'किं तुम्ह कुले जुत्तमेयं जं ससुरो भत्तारेण सह पसुत्ताए नेऊरं हरइ ?' तेण भणियं- 'पभाए लब्भिही ।' परुइया एसा । वारिया रयणसारेण । तीए भणियं- 'किं वारेसि ?। पत्ता कलंकं इमिणा वईयरेण ।' तेण भणियं- 'मए समक्खम्मि एत्थ को कलंको ?। अलमिमिणा चिंतिएणं ।' उग्गए सूरे मग्गिओ रयणसारेण पिया नेऊरं, भणिओ य- 'किं तुमं अनिरूविऊण जं किंचि करेसि ?।' पिउणा वुत्तं- 'पुत्त ! न अनिरूवियं कयं । एसा खु मए पर-पुरिसेण समं दिट्ठा ।' रयणसारेण भणियं- 'ताय ! तिमिरेण अंतरिओ सि । अहं चेव बाहिं पसुत्तो, साहियं च मे एयाए तव्वेलमेव इमं'। सुण्हाए भणियं- 'अहं सुज्झामि । अत्थित्थ जक्खो । तस्स जो सुद्धो सो जंघाणं अंतरेण जाइ । असुद्धं सो धरेइ'त्ति । पडिवण्णं तेहिं । सुण्हा ण्हाया धूव-बलि-पुप्फ-फल-हत्था पयट्टा जक्खालयं । समओ त्ति गहिलरूवधारिणा विडेण वच्चंती आलिंगिया । गहिल्लओ त्ति निद्धाडिओ लोएण । ण्हाविया पुणो वि एसा । चडिया जक्खालए । अच्चिऊण जक्खं विन्नवेइ जहा- 'भयवं जक्ख ! मए न कयाइ भत्तारं मुत्तूण अन्नो पुरिसो अन्नेण भावेण छिन्नो । गहिल्ल-वुत्तंतो पुण तुज्झ गुरुअणस्स य पच्चक्खो चेव । किमेत्थ वुच्चइ ?।' एवं भणिऊण चिंतावन्नस्स जक्खस्स जंघंतराओ णिग्गया । 'सुद्धा सुद्ध'त्ति बंधवेहिं कओ कलयलो । वज्जंतेण य तूरेण घरं गया । ससुरस्स य चिंताए निद्दा नट्ठा । जाणियं राइणा । इमं चिंतियं च- 'सोहणो एस अंतेउर-रक्खवालो होहि ।' त्ति हक्कारिओ रन्ना । अब्भत्थिऊण निसाए

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

निरूविउं(ओ) अंतेउरे । पडिवण्णमणेण । अइक्कंतो कोइ कालो ।

अन्नया एक्का रायपत्ती तं रक्खपालं पलोयंती उट्ठेइ निवज्जइ य । दिट्ठा तेण । 'किं पुण इमा एवं करेइ ?'त्ति कवड-निद्दाए पसुत्तो । तीए चिंतियं 'सुत्तो सो'त्ति गवक्खंतेण पयट्टा । तस्स य गवक्खस्स हेट्ठे रन्नो इट्ठो गयवरो बज्झइ । तस्स जो मिंठो तेण सह सा अच्छइ त्ति पत्ता गवक्खं पडिच्छिया हत्थिणा सुंडाए । मुक्का भूमीए । मिंठेण वि 'चिराओ आगय'त्ति ताडिया इमा संकलाए । तीए भणियं- 'नाह ! मा पहणसु, जओ अज्ज कोवि अंतेउर-रक्खगो रन्ना कओ जो न सुयइ चेव ।' रमिऊण ११८मुक्का तेण पच्छिम-राईए । हत्थिणा सुंडाए चेव चडाविया गवक्खं । गया वासहरं । एवं च सव्वं निहिसारेण दिट्ठं, चिंतियं च- 'अहो ! महिलियाण विसमं चरियं' ति । एवं पि उवरि-भूमीए रक्खिज्जंती एसा एरिसमायरइ, ता सोहणाओ अम्ह वहुओ, जाओ पाणियाइ-कज्जेसु निग्गयाओ पुणो वि गेहं इंति' त्ति अमरिस-चिंता-विमुक्को सुत्तो सो, उग्गए वि सूरे न उट्ठेइ । कहियं चेडीहिं रन्नो- 'अज्ज वि सो थेरो सुयइ ।' रन्ना चिंतियं- 'कारणेण एत्थ होयव्वं, ता न उट्ठवेयव्वो सो । निद्दाखय-पडिबुद्धं मम समीवं आणेज्जह ।' सत्त-रत्त-पज्जंते निद्दा-खए आणीओ निहिसारो । वुत्तो रण्णा- 'किं निमित्तं तुह एरिसी निद्दा आगया ?' तेण भणियं- 'अभयं देह ।' रन्ना भणियं- 'अभयं तुह ।'तओ तेण सव्वं कहियं । 'का सा देवि त्ति जाणसि?' तेण भणियं- 'न याणामि, परं संकला-घाएण नज्जिहि ।'त्ति । कयं रन्ना माइट्ठाणं । काराविओ किलिंज-हत्थी । सद्दावियाओ देवीओ भणियाओ- 'दिट्ठो मए दुस्सुविणो । तप्पडिघायणत्थं आरुहिय सुंडाए हत्थिं ओयरह पुच्छ-भाएण' त्ति । पडिवन्नमेयं एयाहिं । सा एक्का मायाविणी भणइ- 'बीहेमि अहं हत्थिस्स ।' रन्ना उप्पल-नालेण आहया । कवडेण मुच्छिया, निवडिया धरणिवट्ठे । चिंतियं रन्ना- 'एसा सा दुरायारा' । निरूविया से पट्ठी । दिट्ठा संकला-घाया । हसिऊण भणियं-

'खेल्लसि सुंदरि ! मत्त-कुंजरे तह बीहेसि किलिंज-कुंजरे ।
तत्थ न मुच्छिय संकलाहया एत्थ य मुच्छिय उप्पलाहया ।।'११९३।।

कुविएण रन्ना सद्दाविओ मिंठो । आणाविओ करिवरो । तत्थारोविया दो वि । आइट्ठा निउत्त-पुरिसा- 'गिरिं समारोविऊण टंक-छिन्न-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्पएसाओ पाडेह एयाइं ।'आरोविओ तं पएसं मिंठेण हत्थी । एक्को पाओ आगासे, तिन्नि पाया गिरि-सिहरे चिट्ठंति । लोएण वुत्तं-'न जुत्तं हत्थिस्स मारणं ।' रन्ना वुत्तं- 'पाडेह सिग्घं हत्थिं ।' पुणो वि मिंठेण आगासे दो हत्थि-पाया कया, दो य सिहरे । पुणो वि लोएण भणियं- 'अहो ! न जुत्तं एयं पसुं मारियं ।' तह वि राया तुण्हिक्को ठिओ । मिंठेण तिन्नि हत्थि-पाया आगासे कया, एगो सिहरे । सयल-लोएण हाहारवं काऊण भणियं- 'भो महाराय ! न जुत्तं एरिसं हत्थि-रयणं विणासिउं । पसु त्ति न एस कज्जाकज्जं वियाणइ, ता कुणसु पसायं । मुयसु एयं' ति । ताहे रन्ना संलत्तं -'भणह एयं मिंठं नियत्तेहि हत्थिं ।' भणिओ अणेहिं मिंठो- 'किं समत्थो सि पच्छाहुत्तं नियत्तिउं हत्थिं ?' मिंठेण भणियं- 'जइ दोण्हं पि अम्ह अभयं देहि तो परावत्तेमि हत्थिं ।' कहियमिणं रन्नो, भणियं च तेण- 'एवं होउ'त्ति । ताहे मिंठेण परावत्तिओ हत्थी । ओइण्णाइं दो वि । रन्ना निव्विसयाणि आणत्ताणि । सालंकाराइं च सिग्घं पलाइउमारद्धाइं । गयाइं एक्कम्मि नयरे । संझाए पसुत्ताणि देवउले ।

इओ य अद्ध-रत्त-समए चोरो नयराओ पुरिसेहिं पेल्लिओ तमेव देवउलं पविट्ठो । वेढियं दंडवासिएहिं देवउलं 'पभाए गण्हिस्सामो'त्ति । सो य चोरो जत्थ ताइं तत्थ गओ । मिंठो सुपरिस्संतो पसुत्तो । तीए वि कत्थूरियाइ-परिमलेण लक्खिओ चोरो । गया सा तस्स पासं । लक्खिया चोरेण । आढत्तो विडयणाणुरूवो ववहारो । 'उत्तम'त्ति वियाणिया फास-विसेसेण । भणियमणाए- 'को तुमं ?' तेण भणियं- 'चोरोऽहं'। तीए भणियं- 'सच्चं चिय चोरो तुमं, जेण मे हिययं पि हरियं । ता किमेत्थमिहागओ सि ?।' तेण भणियं- 'दंडवासिएहिं पेल्लिओ मरण-भएण इहागओ ।' तीए भणियं- 'अहं रक्खामि ते जीवियं जइ मं इच्छसि ।' तेण भणियं- 'एक्कं सुवन्नं अन्नं च सुरहिं, को न इच्छइ ?, किंतु कहं मे जीवियं रक्खसि ?।' तीए भणियं- 'अहं तुमं भत्तारं भणिस्सं ।' चोरेण भणियं- 'एवं होउ' त्ति । पहाए गहियाइं ताइं दंडवासएहिं । मिंठेण वुत्तं- 'अहं न चोरो, किंतु पहिओ । एसा इत्थी मे पत्ती ।' पुच्छिया सा । तीए वुत्तं [चोरं पइ]-'एस मे भत्ता । [मिंठं पइ] एयं पुण नोवलक्खामि'त्ति । गहिओ मिंठो दंडवासिएहिं । रन्नो साहिऊण भिन्नो सूलाए । ताहे तण्हाए सो अभिभूओ जं जं पुरिसं पासइ तं तं सलिलं विमग्गइ । रायकुल-संकाए न को वि देइ । ताहे जिणदासो

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सावगो तेण पएसेण आगच्छइ । सो तेण सलिलं मग्गिओ । सावएण भणियं- 'देमि अहं जइ अरहंत-नमोक्कारं कुणमाणो अच्छसि, जाव अहं सलिलं आणेमि ।' तेण 'तह'त्ति पडिवन्नं । आणियं रायपुरिसाणुन्नाएण सावएण सलिलं । दट्ठूण सावयं सुट्ठुयरं 'नमो अरहंताणं' ति पढंतो मओ । ताहे नमोक्कार-पभावेण अकाम-निज्जराए य निस्सीलो वि वाणमंतरो देवो जाओ । सा वि महिला तेण चोरेण सह संपत्थिया । ताणं च अंतरे नई समावडिया । तत्थ सो चोरो महिलं आलवइ- 'एसा नई सिग्घवेगा, ता तुमं वत्थाइयं च न जुगवं उत्तारियं सक्केमि, अओ तुमं इमम्मि कूले सरत्थंबावरिय-सरीरा इमं अंग-लग्गं वत्थाभरणजायं अप्पिऊण ताव अच्छ जावाऽहं परिवाडीए उत्तारेमि ।'तीए भणियं- 'एवं होउ ।' तेण सव्वं उतारिऊण चिंतियं- 'जा एसा निययं भत्तारं मारावेइ सा मे कहं पिया भविस्सइ ?'त्ति पत्थिओ । तीए वुत्तो- 'कीस मं उज्झिउं जासि ?' 'बीहेमि ते'भणंतो गओ अंदसणं । सा वि जहाजाय-सरीरा सरत्थंबे पवेसिऊण ठिया । इयरो वाणमंतरो ओहिं पउंजित्ता पलोएइ जाव तं पेच्छइ एयावत्थं, तओ जायाणुकंपेण तेण संबोहणत्थं जंबुओ विणिम्मिओ । तेण मंसपेसी मुहे गहिया । इओ य मच्छो जल-मज्झाओ उच्छलिऊण नइ-तीरे ठिओ । जंबुओ वि 'मंसं मुहाओ मोत्तूण मच्छं गिण्हामि' त्ति पहाविओ । सो य मच्छो जले पविट्ठो, मंसपेसी वि गयणाओ ओयरिऊण विउव्वियाए सउलियाए गहिया । ताहे सो जंबुगो उभय-भट्ठो अच्छइ । तीए महिलाए भणियं-

'मंसपेसीं चइत्ताणं मीणं पत्थेसि दुम्मई ।
चुक्को मीणस्स मंसस्स कलुणं झायसि जंबुगा ! ॥११९४॥

जंबुगेण भणियं-

'कामारयं पइं मुत्तुं जारं पत्थेसि बंधकी ! ।
चुक्का पइस्स जारस्स कलुणं झायसि संपयं ॥११९५॥

सा सुट्ठुयरं भीया 'किमेयं ?'ति । ताहे वाणमंतरो अप्पणो रूवाइसय-विभूइं दंसिऊण निय-वुत्तंतं कहेइ । भणइ य -'पावे ! तं तहा पावमायरियं । तं पि मे नमोक्कार-प्पभावेण गुणाय परिणयं, ता इण्हिं पि जिणसासणं पवन्ना धम्मं कुणसु' । तीए 'तह' त्ति पडिवन्नं । तेण य साहुणि-समीवं नेऊण पव्वाविय त्ति ॥१३॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

'एवं तुमं पियचम ! एयं लद्धं सुहं परिहरंतो ।
अणलद्धं पत्थंतो मन्ने दोण्हं पि चुक्किहिसि ॥११९६॥

ताव य विसयमसग्गहमेयं मोत्तूण निय-सरीरमिणं ।
पालेसु सयल-इंदिय-मणाणुकूलेहिं विसएहिं ॥११९७॥

जं पुण दुक्कर-तव-चरण-लोय-भूसयणं-बंभचेरेहिं ।
विनडेउ मिच्छ देहं तं किं तुह वेरियं एयं ? ॥११९८॥

कुमारेण भणियं-

'बहुविह-भक्ख-जुएहिं बहु-वंजण-जणिय-मण-पमोएहिं ।
कलमोयण-पमुहेहिं महुराहारेहिं निद्धेहिं ॥११९९॥

नालियर-कयल-खज्जूर-दक्ख-नारंग-दाडिमाइहिं ।
विविह-फलेहिं य निच्चं जइ वि हु पीणिज्जए एयं ॥१२००॥

अब्भंगिऊण जइ वि हु सयपाग-सहस्सपाग-तेल्लेहिं ।
उव्वट्टिऊण य इमं ण्हाविज्जइ पवर-सलिलेहिं ॥१२०१॥

घुसिण-घणसार-सिरिखंड-अगुरु-मयणाहि-पमुह-दव्वेहिं ।
परिमल-मणोहरेहिं जइ वि लिंपिज्जए एयं ॥१२०२॥

चीणंसुय-पट्टंसुय-देवंग-पुरस्सराणि वत्थाइं ।
घण-मसिण-कोमलाइं परिहाविज्जइ जइ वि एयं ॥१२०३॥

कंचण-रयणमएहिं फुरंत-किरणोह-दलिय-तिमिरेहिं ।
विविहालंकारेहिं जइ वि विभूसिज्जए एयं ॥१२०४॥

कप्पूर-पारिकलियं लवंग-कक्कोल-कोलफल-जुत्तं ।
तंबोलानच्चमिणं सम्माणाविज्जह जइ वि ॥१२०५॥

वर-हंसतूलि-ललिए उज्जल-देवंग-वत्थ-संछन्ने ।
रयणमए पल्लंके जइ वि हु सोविज्जए एयं ॥१२०६॥

विलसंत-बहल-परिमल-मिलंत-मत्तालि-जाल-मुहलाहिं ।
निच्चं अलंकरिज्जइ जइ वि इमं कुसुममालाहिं ॥१२०७॥

वग्गंत-थोर-थणमंडलाण महिलाण थणमरट्टस्स ।
नट्टस्स दंसणेणं जइ वि पसाइज्जए एयं ॥१२०८॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पयडिय असेस-सर-गाम-मुच्छणं वेणु-वीण-रव-रम्मं ।
तालाणुगयं गेयं जइ वि सुणाविज्जइ एयं ॥१२०९॥

तह वि हु परभव-गमणे वीसरिऊणं खलो व्व उवयारं ।
वच्चइ एक्कं पि पयं जीवेण समं न देहमिणं ॥१२१०॥

चिर-पालियं पि एयं अनओवज्जिय-धणं व पज्जंते ।
विहडइ जीवस्स धुवं मित्ततिगं एत्थ दिट्ठंतो ॥१२११॥

सोहग्गमंजरीए भणियं-'किं तयं ?' ति ।

कुमारेण भणियं-

"[११७]अत्थेत्थ खिइपइट्ठियमणंत-वुत्तंत-संकुलं नयरं ।
तत्थ निवो जियसत्तू न नामनामेण गुणओ वि ॥१२१२॥

तस्स सुबुद्धी मंती समग्ग-अहिगार-फुरिय-माहप्पो ।
तेणावि तिन्नि मित्ता विहिया विहुरुद्धरण-हेउं ॥१२१३॥

ताणं एक्को सह-पंसुकीलिओ सह-उवागओ वुड्ढिं ।
सह-विहिय-खाणपाणो सह-विरइय-ठाण-चंकमणो ॥१२१४॥

बीओ पुण पव्वेसुं मिलइ तओ तस्स तेसु उवयारो ।
कीरइ ण्हाण-विलेवण-भोयण-सयणासणाइओ ॥१२१५॥

तईओ पुण दंसण-नमण-महुर-संभास-मित्त-संतुट्ठो ।
इय निच्च-पव्व-जोहार-मित्त-जुत्तो वसइ मंती ॥१२१६॥

अह दुज्जणेण केणावि अवसरं पाविउं असंता वि ।
मंतिस्स तस्स दोसा पुरओ रायस्स पायडिया ॥१२१७॥

तं नत्थि घरं तं नत्थि राउलं देउलं पि तं नत्थि ।
जत्थ अकारण-कुविया दो तिन्नि खला न दीसंति ॥१२१८॥

तत्तो राया मंतिस्स उवरि कोवं खणेण संपत्तो ।
अहवा राया मित्तं दिट्ठं व सुयं व केण जए ? ॥१२१९॥ उक्तं च-

'काके शौचं द्यूतकारे च सत्यं,
सर्प्पे क्षान्तिः स्त्रीषु कामोपशान्तिः ।
क्लीबे धैर्यं मद्यपे तत्त्वचिंता,
राजा मित्रं केन दृष्टं श्रुतं वा ?॥'१२२०॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अह मंती रायकुले गंतुं पणमेइ नरवरं जाव ।
ता कोवारुण-नयणो अन्नाभिमुहो इमो जाओ ॥१२२१॥

तो जाणिऊण कुवियं निवइं तत्तो विणिग्गओ मंती ।
किंपि मिसं काऊणं गओ घरं निच्चमित्तस्स ॥१२२२॥

सो तं इंतं दट्ठुं विसन्न-वयणं विचिंतए एवं ।
'नूणं इमस्स कुविओ राया तेणिक्कओ एइ ॥'१२२३॥

तो नासिउं पवत्तो घरस्स मज्झम्मि मंतिणा दिट्ठो ।
भणिओ य- 'मित्त ! राया मह कुविओ कुणसु साहिज्जं ॥१२२४॥

वच्चामो देसंतरमहं तुमं दो वि लंघिमो वसणं ।'
सो भणइ सुट्ठु भीओ- 'नीहरसु तुमं मम गिहाओ ॥१२२५॥

मा तुज्झ कए सुंदर-कुडुंब-सहिओ अहं पि विणसिस्सं ।'
इय निच्चमित्त-वयणेहिं दूमिओ निग्गओ मंती ॥१२२६॥

पत्तो य पव्वमित्तस्स मंदिरं सो वि पेच्छिउं मंतिं ।
दंसइ किंचि सिणेहं, कहइ सो तस्स निव-कोवं ॥१२२७॥

तो भणइ पव्वमित्तो- 'इह जाया पसरिया य सयणेहिं ।
न तरामो तुमए सह अम्हे देसंतरं गंतुं ॥१२२८॥

किंतु निय-नयर-सीमं वोलावेमो' त्ति जंपिउं चलिओ ।
सचिवेण समं सचिवो वि चिंतए तो विसन्न-मणो ॥१२२९॥

'चिरमुवयरिएहिं पि य इमेहिं मित्तेहिं ताव उवयारो ।
मज्झ न को वि हु विहिओ हा ! सुकयं पम्हुसंति खला ॥१२३०॥

तईओ वि अत्थि मित्तो तस्स गिहं जामि तं पि पिच्छामि ।
जइ पुण सो साहिज्जं करेज्ज मह वसणवडियस्स ॥'१२३१॥

इय चिंतिऊण जोहारमित्त-गेहम्मि जाव संपत्तो ।
ता दट्ठूण दूराओ झत्ति अब्भुट्ठिओ तेण ॥१२३२॥

पडिवत्तिं काऊणं भणियं- 'आगमण-कारणं किं ते ?।'
तो मंतिणा वि कहिओ सव्वे वि हु तस्स वुत्तंतो ॥१२३३॥

तेणावि भणियमेयं- 'भयं नरिंदस्स कुणसु मा मित्त ! ।'
जं तुज्झ मइ सहाए पवणो वि न वच्चए उवरिं ॥१२३४॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नेमि तुमं देसंतरमिमाओ रन्नो न जत्थ भयमत्थि ।
होहिसि मज्झ पभावेण तत्थ निच्चं तुमं सुहिओ ।।'१२३५।।

इय जंपिऊण सो बद्ध-परियरो मंतिणा समं चलिओ ।
वसण-समुद्धरणं चिय कसवट्टो मित्त-भावस्स ।।१२३६।।

तेण सह पव्वमित्तो गंतुं पुर-परिसराओ विणियत्तो ।
जोहारमित्त-जुत्तो मंती वंछिय-पुरं पत्तो ।।१२३७।।

जोहारमित्त-माहप्पओ य वंछियपुरस्स नरवइणो ।
सम्माणिऊण ठविओ मंति-पए सो सुहं वसइ ।।१२३८।।

एस दिट्ठंतो, उवणओ पुण- 'जहा खिइपइट्ठियं नयरं तहा संसारो । तत्थ जो जियसत्तू-राया सो सच्छंद-विलसणसीलो मच्चू । जो सुबुद्धी अमच्चो सो विवेयवंतो भव्वजीवो । जो सहखाणपाणो निच्चमित्तो सो सरीरं, रुट्ठम्मि मच्चु-नरिंदे जीवेण समं पयं पि न चलइ । जो पव्वमित्तो सो सयणगणो सुमरंतो तस्स उवयारं नयर-सीमंतमणुव्वयइ । जो जोहारमित्तो सो धम्मो, सो य सहाओ होऊण वंछियपुरं सग्गापवग्गपरं पराणेइ, तप्पभावेण च निच्चं सुही होइ जीवो त्ति ।'

'सुहलालियं पि सुहपालियं पि सुहवड्ढियं पि देहमिणं ।
विहडइ परलोय-पहे ता पालिज्जउ कहं भद्दे ?।।'१२३९।।१४।।

एत्थंतरे रयणमंजरीए भणियं-

'पत्ते वि इमे भोए मोत्तूण अणागए वि मग्गंतो ।
अइ-लोभ-परवसो कुट्टणि व्व नूणं किलिसिहिसि ।।'१२४०।।

कुमारेण भणियं- 'का सा कुट्टिणी ?'

रयणमंजरीए भणियं-

'अत्थि इह भरहवासे उसहपुर-वरपुरं सुरपुरं पि ।
हसमाणं पिव जं सहइ धवल-पासाय-कंतीहिं ।।१२४१।।

अभयंकरो त्ति सेट्ठी अत्थि तहिं जस्स विहव-वित्थारं ।
अवलोइऊण लोया मुणंति समणं व वेसमणं ।।१२४२।।

तस्स कुसलमई भज्जा । ताण घरे दुवे कम्मयरा । ते जिणपूया-मुणिदाणाइ-धम्म-निरयं दट्ठूण सिट्ठिं चिंतंति- 'धन्नो इमो, जो एवं धम्मं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

करेइ । अम्हे पुण अपुन्ना किं करेमो ?'त्ति । अन्नया चाउम्मासय-दिणे नियसिट्ठिणा जिणभवणं अप्पियाइं कुसुमाइं जिण-पडिम-पूयणत्थं । न गहियाइं तेहिं, भणियं च- 'जस्स कुसुमेहिं पूया धम्मो वि तस्सेव, चेट्ठिय च्चिय अम्हाण केवलं' त्ति । पन्नविया सेट्ठिणा । जाव न पन्नप्पंति ताव नीया गुरु-समीवे । भणिया गुरुणा- 'किं न कुसुमेहिं पूयह जिणं ?' तेहिं वुत्तं- 'निय-धणेहिं चेव पूएमो, तं च अम्ह नत्थि' । एक्केण वुत्तं- 'अत्थि मज्झ वराडयाणं पंच-वुड्डियाओ । थोवमेयं ति न पयट्टए मणं ।' गुरुणा वुत्तं- 'सत्तीए थेवं पि दिंतो विउलं फलं लहइ । सुद्धो भावो चेव धम्मे पमाणं ।' तओ तेण कवड्डएहिं किणिऊण कुसुमाइं कया जिणपूया । इयरेण चिंतियं- 'एयस्स ताव एत्तियं पि धणं जायं । मह पुण इमं पि नत्थि । ता किं करेमि ?'त्ति चिंतंतो पेक्खए पच्चक्खाणं कुणंतं सावय-जणं । भणइ गुरुं- 'भयवं ! किमेवं पि कए होइ धम्मो ?' गुरुणा वुत्तं- 'बाढं ।' कओ तेण उववासो । गओ गिहं । चिंतिउं पवत्तो- 'जइ अज्ज साहुणो इंति ता अहं निय-भोयणं तेसिं देमि, जओ तं निय-भूओवज्जियं दिन्नं बहु-फलं होइ ।' त्ति चिंतयंतस्स गुरु-गिलाणाइ-वेयावच्च-कज्जेण जेहिं उववासो न कओ समागया ते साहुणो । ताणं च पवड्ढमाण-परिणामेण मग्गिऊण दिन्नं निय-भोयणं । बद्धं सुह-फलं पर-भवाउयं ।

इओ य कलिंगवई सूरसेणो राया गोत्तिएहिं हरिय-रज्जो कुरुदेसे गयपुराहिव-निवं ओलग्गइ । लद्धा तेण चत्तारि गामा । तत्थ सालिसीसे गामे वसंतस्स विजयाए देवीए कुक्खिम्मि साहु-दाण-दाया मरिऊण पढमं उप्पन्नो पुत्तो, [134]जिणपूयओ बिईओ पुत्तो । जेट्ठो अमरसेणो, कणिट्ठो [135]वरसेणो त्ति कयनामा । पुव्व-सुकयाणुभावओ रूव-लावण्ण-गुणोववेया जाया, गहिय-कलाकलावा य पत्ता जोव्वणं । विविह-कीलाहिं कीलंता ईओ तओ परिब्भमंति विभूईए । सवत्ति-माया ईसाए कोवहरयं पविट्ठा । ओलग्गाए आगएण भत्तारेण पुट्ठा, निबंधे य सिट्ठमणाए जहा- 'जद्दिणाओ तुमं ओलग्गिउं गओ तद्दिणाओ चेव संभोग-निमित्तं उवसग्गिया हं तुह सुएहिं । निय-दढत्तणेण गमियाइं एत्तियाइं दिणाइं । संपयं जं तुह जोत्तं तं करेसु'त्ति सुणिऊण कुविएण रन्ना हक्कारिऊण भणिओ मायंगो- 'अरे ! गाम-सीमाए तुरए वाहंता कुमारा चिट्ठंति, ता तेसिं सीसे निय-मायंगेहिं समं गंतूण गिण्हाहि ।' त्ति ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चिंतियं मायंगेण- 'किं एसो गहगहिओ जं एवं आणवेइ ?, अहवा सुंदरमिणं जं अहं आणत्तो ।' 'आएसो ।'त्ति भणिऊण गओ ताण पासं । कहियं रुयंतेण तेण कुमाराणं । भणियं तेहिं- 'करेहि ताय-वयणं । नूणं अम्हेहिं कओ कोइ अवराहो, अन्नहा कहं ताओ एवमाणवेइ ?।' चंडालेण भणियं- 'मह पत्थणाए करेह तुब्भे देसंतरं ।' कुमारेहिं वुत्तं- 'एवं कए तुह सकुडुंबस्स ताओ निग्गहं करिस्सइ ।' चंडालेण भणियं- 'तुम्हाणुभावेण रक्खिरस्समप्पाणं ।' निग्गया कुमारा । चंडालो वि घेत्तूण तुरए काराविऊण चित्तयर-सयासाओ कुमार-सिर-सरिसाइं सिराइं गओ रायपासं पओसे, अप्पेइ तुरए, दंसेइ सीसाइं । भणियं रन्ना- 'तहा गोवेहि एयाइं जहा न को वि [140]पेच्छइ ।' चंडालेण वि तहा कयं । हरिसिया सवक्कि-माया । कुमारा वि वच्चंता पत्ता अडविं ।

जा दंसिय-सरियाहारहारि गिरिसिहर-तुंग-थणवट्टा ।
पयडिय-भमर-निरंतर-तरु-कुसुम-कडक्ख-विक्खेवा ॥१२४३॥

गायंती मारुयपुत्त-रंध-कीयग-रवेण-गीयं व ।
उल्लसिय-चमरपुंछेहिं[141] वीजयंति व्व चमरेहिं ॥१२४४॥

पवण-पणोल्लिय-पल्लव-करेहिं कुमाराण पह-किलंताण ।
सेयजल-बिंदु-निवहं हरेइ अणुरत्त-तरुणि व्व ॥१२४५॥

बहल-तरुसंड-बद्धंधयार-मज्झम्मि जीए भत्तीए ।
परिविरला रवि-किरणा दिन्ना दिव्व व्व दिप्पंति ॥१२४६॥

अह तत्थ कुमाराणं पयाव-पसरं व सहिउमचयंतो ।
अत्थगिरि-सिहर-काणण-कुहरम्मि तिरोहिओ तरणी ॥१२४७॥

दट्ठूण तत्थ एक्कं तलाईयं जा ठिया इमे तीरे ।
ता तीए तरंग-करेहिं ताण पक्खालिया चलणा ॥१२४८॥

सहयार-तरु-तले मणि-सिलायले तरुण-पल्लवत्थरिए ।
उवविट्ठा दो वि तए [142]वरसेणो जंपए जेट्ठं ॥१२४९॥

'जाणासि किं पि कारणं जेण अम्ह रुट्ठो ताओ ?।'

जेट्ठेण भणियं- 'वच्छ ! न याणामि किंपि सम्मं किंतु ईसाए [143]सवक्किया माया अम्ह [144]पउद्धा आसि, मए इंगिएहिं नाया । ता तव्विलसियं किंपि संभावेमि'त्ति । [145]वरसेणेण भणियं- 'किं ताओ वि

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अलीए पत्तिज्जइ ?। जेट्ठेण भणियं- 'वच्छ !'

कवड-कुडंब-कुडीओ महिलाओ जंपियं मुणंति तहा ।
रागंधबुद्धिणो जह तह त्ति सव्वं पवज्जंति ॥१२५०॥

अहवा किं इमिणा ?। सच्चेव परमोवयारिणी अम्ह, जीए दंसिया सयल-पुहवी । एवमुल्लवंतो परसुत्तो जेट्ठो । इयरो उण ठिओ पहरए । एत्थंतरे चूयतरु-ट्ठिएण भणिया कीरी कीरेण- 'सागय-किरियारिहा इमे कुमारा, परं अम्ह नत्थि किंपि जं एएसिं कीरइ[१४६] ।' कीरीए भणियं- 'किं न सुमरसि जं अम्ह पेच्छंताणं सुकूडसेले विज्जाहरेहिं विज्जाभिसित्त-बीया ववियो दो अंबगा ? परोप्परं च कहियं तम्माहप्पं जहा-एक्कस्स[१४७] लहुयं फलं । तं गिलियं जा उयरे चिट्ठइ ताव पइदिणं सूरोदए दम्म-पंचसयाइं मुहाओ पडंति । बीयस्स गरुयं[१४८] फलं, तं च जो भक्खइ सो सत्तम-दिणे राया होइ । ता तेसिं फले आणेऊण एक्केक्कं देमो इमाणं' ति । तहेव कयं । दिट्ठं पुरो [१४९]वरसेणेण पडियं अंबग-दुगं । बद्धं वत्थंचले, चिंतियं च- 'किं सच्चमेयं जं कीरीए वुत्तं ?। अहवा अचिंतणिज्जो विज्जाइ प्पभावो' त्ति । उट्ठिओ जेट्ठो । परसुत्तो बीओ । पभाए दो वि पत्थिया । अकहेऊण[१५०] तत्तं दिन्नं जेट्ठस्स जेट्ठ-फलं, लहुयं पुण अप्पणा गिलियं । एगागी होऊण गओ सरोवरे । कया मुह-सुद्धी । मुहाओ पडिया पंच-दम्मसया । सो य [१५१]जेट्ठबंधुणा समं भोयण-वत्थाइहिं विलसए दव्वं । पुट्ठो जेट्ठेण- 'कत्तो तुह दव्वं ति ?।' भणियं कणिट्ठेण- 'कुडुंबीएहिं दाणि सुवन्नं जं मह पेसवियं तं मए भंडागारे न समप्पियं आसि ।' त्ति । वच्चंता पत्ता कंचणउरं । सुत्तो अमरसेणो चूयतरु-तले । इयरो पुण गओ भोयणाइ-सामग्गीकए पुर-मज्झे । इओ य तत्थ मओ अपुत्तो राया, अहिसित्ताणि पंच-दिव्वाणि, आगयाणि तत्थ जत्थ अमरसेणो । आरोविओ गइंदेण खंधे । नमिओ सामंताइएहिं । सिर-धरिय-धवलायवत्तो वीईज्जंतो चमरेहिं पविट्ठो पुरे । वरसेणो[१५२] वि विन्नाय-वुत्तंतो चिंतिउं पवत्तो-

'अवहत्थिज्जउ तं दिवसु निसि अच्छउ म विहाउ ।
जहिं जोइज्जइ परह मुहु मिल्लिवि निय-ववसाउ ॥१२५१॥

इय चिंतिऊण गओ मगहा-गणिया-घरं । कुणइ विविह-विलासे । रन्ना वि गवेसिओ घणं कणिट्ठो । न दिट्ठो कत्थइ । अक्खित्तो रज्ज-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चिंताए गमेइ दिणाइं ।

अन्नया कुट्टणी-वयणओ पुट्ठो मगहाए वरसेणो[153]- 'ववसायं विणा कहं तुह दव्वं ?'ति । अइ-निब्बंधे कए कहियं सरल-सहावत्तणेण सव्वं सच्चं संजोइयं । सरय-पाणेण कारिओ कुट्टणीए वमणं । पडिच्छियं थाले चूय-फलं । तं गहिऊण निस्सारिओ घराओ वरसेणो[154], चिंताउरो य परिब्भमंतो पत्तो मज्झिम-रयणीए पुर-बाहिर-सुन्न-देउले[155] । तत्थ य चउरो चोरा मोस-विभयणत्थं कलहायंता चिट्ठंति । तो कुमारेण कया तक्कर-सन्ना । 'तक्करो' त्ति हक्कारिओ तेहिं । निवेसिओ पासे पुट्ठो जहा- 'अम्ह तिन्नि वत्थूणि-कंथा लउडो पाउया य ।' कुमारेण भणियं- 'किं सिज्जइ पओयणमिमेहिं ?।' तेहिं भणियं- 'एक्केण सिद्धेण मसाणे छहिं मासेहिं आराहिया विज्जा देवया । तीए तुट्ठाइ दिन्नाइं तिन्नि वत्थूणि । कहियं देवयाए तत्थ इमं- 'पइदिणं कंथाए झाडिज्जंतीए पडंति पंच-रयण-सयाणि । लउडेणं उवरि-भामिएणं न पहवंति पहरणाइं । पाउयाहिं परिहियाहिं गमए समीहिय-प्पएसे ।' अम्हेहि वि हेरिऊण छम्मासं वावाईऊण सिद्धं तिन्नि वि गहियाइं इमाइं, ता तिन्नि वत्थूणि चउरो चोर त्ति विभयणं न घडइ' त्ति । कुमारेण भणियं- 'किमित्थ जुज्झेणं, निट्ठारेमि अहं तुम्ह विवायं' ति भणिऊण गहिओ लउडो कंथा य पट्टोलियाइ, खणं खित्ताओ पाऊयाओ चलणेसु, उप्पइओ गयणे । गओ नयर-बीयभाए । चोरा वि विलक्खा [गया] निय-निय-ठाणेसु ।

कुमारो वि पइदिणं कंथं झाडिऊण गिण्हइ पंच-रयण-सए । वेसंतरं काऊण पविट्ठो नयर-मज्झे । रमेइ जूयं । करेइ विलासे । दिट्ठो कह वि कुट्टणीए । गया गिहं । कहिओ एसो मगहाए । तो सा कुट्टणीए[156] नियंसाविया सेय-वत्थाइं, विरइय-वेणिदंडा नीया कुमर-पासे, भणियं च- 'वच्छ ! मए पावाए निसारिए तुमम्मि मगहा तुह विरहे रोयंती एवं ठिया ।' इच्चाइ कवड-वयणाइं सोऊण चिंतियं कुमारेणं- 'पुणो वि मंडियं रंडाए किंपि कूडं । होउ । भलिस्सामि ।'त्ति पणमिऊण भणिया- 'जुत्तमिणं तुह धूयाए । किं इयाणिं[157] करेमि ?। तओ नीओ निय-घरं । कइवय-दिण-पज्जंते य पुच्छिओ कुमारो कुट्टणीए[158]- 'वच्छ ! कहं तुह दव्वुप्पत्ति ?' त्ति । तेण भणियं जहा- 'अंब ! पाऊयारूढो उप्पयामि गयणे । हरिऊण दविणं देसंतराओ आणेमि । कुट्टिणीए भणियं- 'जइ एवं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ता पुन्ना मे मणोरहा । तुह विरहे मए इच्छियं जलहि-मज्झे काम-पडिमाए उवाइयं, ता नेहि ममं तत्थ ।' कुमारेण नीया कामाययणे । मोत्तूण पाउआओ जाव अब्भंतरे गओ ताव इयरी पाउयाओ [१७९]पहिरिऊण पत्ता स-गिहं । 'अहो ! बहु-पवंचाए वंचिओ म्हि रंडाए' त्ति चिंतयंतो जाव अच्छइ ताव दिट्ठो एक्केण खयरेण पुट्ठो य- 'कहमिहागओ सि ?।' कहियं तेण सच्चं । खयरेण भणियं- 'मा कुणसु खेयं । चिट्ठ पक्खमेक्कं एत्थ काम-पडिमं पूयंतो । अत्थि मे गुरुयं कज्जं । तं काऊण जा नियत्तेमि ता तुमं सट्ठाणं पराणिस्सामि । किंतु इह दार-देसे जे चिट्ठंति दुवे दुमा तेसिं समीवे वि न गंतव्वं ।'पडिवन्नं एयं कुमारेण । खयरो वि दाऊण पक्ख-दिण-जोग्गे मोयगे गओ गयणे ।

अन्नया कुमारो कोउगेण एक्क-रुक्खस्स जाव अग्घाइ कुसुमं ताव जाओ रासहो । दिट्ठो य पक्ख-पज्जंतागएण खयरेण । सुंघाविउं बीय-रुक्ख-कुसुमं जाव जाओ पुणो मणुस्सो, उवालद्धो खयरेण, पडिवन्नो अणेण स-दोसो, पुच्छियं च- 'किमेयमच्छरियं ?' त्ति । खयरेण भणियं- 'मए इमे रुक्खा खरमाणुसी-विज्जाहिं अहिवासिया । तेण इमाणं इमो पभावो ।' खयरो य गओ काम-पडिमं पूईउं । कुमारेण गहियाइं दोण्हं पि रुक्खाणं कुसुमाइं । बद्धाइं भिन्न-भिन्न-गंठीसु । खयरेण नीओ कंचणपुरं कुमारो । कुणइ विलासे । दिट्ठो अक्काए । विम्हिया एसा । मगहाए वारंतीए वि कवडेणं जाणुकुप्पराईसु पट्टए बंधिऊण गया तस्स पासं । सो य सामरिसो कयायार-संवरणो भणइ- 'अंब ! किमेयं ?' त्ति । रुयंतीए तीए वुत्तं- 'कामाययणे पविट्ठस्स ते एक्को खयरो पाउयाओ हरिऊण चलिओ । विढिया हं तस्स । तेण वि उल्लालिऊण खित्ता । पडिया कहं पि इह नयरे । तो[१८०] मे भग्गा जाणुआइ । तेण भणियं- 'अंब ! जंतु पाउयाओ । न दूमंति मे मणं जं तुमं जीवंती दिट्ठा ।' एवं भणिए भुयाए घेत्तूण नीओ घरं सो, तीए पुट्ठो य लुद्ध-मणाए- 'वच्छ ! कहं तुममिहागओ ? कहं वा कुणसि एरिसे विलासे ?।' कुमारेण वुत्तं- 'आराहिओ मए कामो । जाओ पच्चक्खो । तेण दाऊण बहु-दव्वं आणिओऽहमेत्थ ।' भणियमणाए- 'अन्नं पि किंचि दिन्नं कामेण ?।' तेण 'दिन्नं' वुत्तं । तीए भणियं- 'किं तयं ?'। तेण वुत्तं-'जेण ओसहेण आघाइएण वुड्ढं पि तरुणं होइ तं दिन्नं ।' तुट्ठाए तीए वुत्तं- 'तं मे देहि' । तो तेण 'तुह चेव कए मए आणियं'ति भणंतेण हट्टाओ ठवियं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लउडयं घेत्तूण हत्थे सुंघाविया ताइं कुसुमाइं । जाया रासही एसा । तो तीए मुहे दाऊण दढं दढियं चडीओ पट्ठीए । कुट्टंतो लउडेण निग्गओ नयर-मज्झेण । जुत्तं कयमणेण जं लोह-फलं इमीए दंसियं ति तुट्ठा मगहा, पुक्करियं सेस-पाउलेणं । धाविओ तलारो, पुर-परिसरे दिट्ठो कुट्टंतो कुट्टणिं कुमारो । हक्किओ अणेण- 'किमेवं असमंजसं करेसि ?।' कुविएणेव वुत्तं कुमारेण- 'करिस्सं जं रोअइ । वारेसु जइ ते अत्थि सत्ती ।' तओ से सेल्ल-भल्लाईएहिं पहरिउं पवत्तो तलारो, तस्स य लउडं भामंतस्स न कमए किंपि पहरणं । इमं च सोच्चा समागओ राया । पच्चभिन्नाओ अणेण । उत्तरिऊण गयवराओ आलिंगिओ सो रन्ना । भणियं कुमारेण- 'मुंच मुंच बंधव ! ममं जाव स-हत्थाणं करेमि सोक्खं ।' रन्ना वुत्तं- 'वच्छ ! किमेयं ?।' कहिओ अणेण सव्वो वुत्तंतो । बंधाविया खाणुम्मि पुर-मज्झे सा । सयं गयवरारूढो पविट्ठो पुरं समं रन्ना । कुट्टिणिं[111] च तहट्ठियं दट्ठूण पढइ लोओ-

'अति लोभो न कर्तव्यो लोभं नैव(चैव) परित्यजेत् ।
अति लोभाभिभूता हि कुट्टनी गर्दभी कृता ।।'१२५२।।

अह निव-निबंधेणं अग्घावेऊण बीय-कुसुमाइं ।
काऊण माणुसी पाउयाओ घेत्तूण सा मुक्का ।।१२५३।।

तो जुवराओ जाओ वरसेणो भुंजए विउल-भोए ।
आणाविऊण पियरे तुज्झ पसाएण रज्जमिणं ।।१२५४।।

जायं ।'ति जंपिऊणं सवक्कि-माया थिरीकया तेहिं ।
अह अन्नया गवक्खे उवविट्ठा दो वि पेच्छंति ।।१२५५।।

जुगमित्त-दिन्न-चक्खुं सव्वंगालिंगियं तवसिरीए ।
रायपहे मुणि-जुयलं इमेहिं तो सुमरिया जाइ ।।१२५६।।

गंतूण वंदिया ते मुणिणो एक्केण ओहिणा नाउं ।
एएसिं पुव्व-भवं भणियं- 'थेवस्स वि कयस्स ।।१२५७।।

सुकयस्स एत्तिय-फलं पत्ता तुब्भेहिं जं इमा रिद्धी ।
तो कुणह गुरु-पयत्तं जिणपूया-साहुदाणेसु ।।१२५८।।

ते वि हु तह त्ति पडिवज्जिऊण जिणधम्म-उज्जया जाया ।
भोत्तूण विउल-भोए कमेण सुगइं च संपत्ता ।।१२५९।।१५।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इय कुट्टणीए सोउं विडंबणं लोभ-तरलिय-मणाए ।
मा परभव-सुह-लोभेण चयसु लद्धं तुमं पि सुहं ॥१२६०॥

जणणी-जणणाणं बंधवाण मित्ताण तह कलत्ताणं ।
नेहभर-निब्भराणं कुणसु सिणेहं पिय ! तुमं पि ॥१२६१॥

जं चिर-परिचियमेयं चयसि तुमं तं अईव-साहसिओ ।
सहवास-वड्ढिया तरुवरा वि दुक्खेहिं मुच्चंति ॥१२६२॥

कुमारेण भणियं- 'भद्दे !

नेहो राहु-मुहं विवेय-ससिणो दोसंबु-नीरायरो,
नेहो मोह-महोरगस्स विवरं वेरग्ग-सेलासणी ।
नेहो पावभरंधयार-रयणी पुन्नदुमाणं दवो,
नेहो दुव्ववसाय-साइणिकुल-क्कीला-मसाणत्थली॥१२६३॥

नेहो सोय-पिसाय-सुन्न-नयरंऽहिंसा-धरित्ती महा-
कालो सच्च-सरोरुहाण तुहिणं संवेय-मेहानिलो ।
कंदप्पप्पहुणो विलास-भवणं दुक्खंकुराणं जलं,
सव्वाणत्थ-पुरप्पवेस-सरणी सग्गापवग्गग्गला ॥१२६४॥

इय नेह-सरूवं जाणिऊण नेहो न होइ कायव्वो ।
पुरिसेणं बुद्धिमया, को जाणंतो विसं खाइ ?॥१२६५॥ अवि य-

अहियं पि पयट्टावइ जो जं को तस्स तं पइ सिणेहो ।
एत्थ य सुहंकरं पइ नेहे लीलावई नायं' ॥१२६६॥

रयणमंजरीए भणियं- 'सामि ! को सो सुहंकरो ? का वा लीलावई ?'
कुमारेण भणियं-

'इह कामरूव-विसए सविसेस-समुल्लसंत-सुहविसए ।
पुहइ-पुरंधीए विसेसयं व पुरमत्थि मयणपुरं ॥१२६७॥

अरि-करि-कुंभ-वियारण-समय-समुच्छलिय-मुत्तिय-कुलेहिं ।
कय-जयसिरि-सिंगारो पज्जुन्नो अत्थि तत्थ निवो ॥१२६८॥

तस्स य दइया लीलावई त्ति जा देह-किरण-दंडेहिं ।
सम्मग्ग-गमण-खलणं व काउमब्भुज्जया लोए ॥१२६९॥

ताणं च विसय-सुहमणुहवंताण अइक्कंतो कोइ कालो । अन्नया

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गओ राया आस-वाहणियाए। लीलावईए य विवित्त-निज्जूहम्मि ठियाए दिसावलोयण-समयम्मि दिट्ठो रायमग्गवत्ती देवयाययणं पत्थिओ विमलमइ-सत्थवाह-पुत्तो सुहंकरो नाम जुवाणओ। तं च दट्ठूण अविवेय-सामत्थो अब्भत्थियाए गामधम्माणं समुप्पन्नो तीए तस्सोवरिं अहिलासो। पलोइओ सविब्भमं। एसा वि समागया तस्स दिट्ठि-गोयरं, निरूविया मोह-दोसेण साहिलासं। 'अहो चित्तन्नुओ।'त्ति परितुट्ठा लीलावई। कीलिओ व्व मयणबाणेहिं ठिओ एग-देसे। लीलावईए भणिया अभिन्न-रहस्सा जालिणी नाम चेडी-'हला ! दुन्निवारो मयण-पसरो, ता आणेहि एयं जुवजण-सिरोमाणिक्कं।' 'सुवुब्भावयाणि एत्थ वइयरे कामि-हिययाइं' ति परिभाविऊण गया सा। आणिओ अणाए इमो। पवेसिउं[१२] कहं पि वासहरे उवविट्ठो पल्लंके। पणामियं से लीलावईए तंबोलं। अद्ध-गहिए य तम्मि सुओ बंदि-कलयलो। 'समागओ राया'त्ति भीया लीलावई। 'न एत्थ अन्नो उवाओ।'त्ति पवेसिओ वच्चहरए सुहंकरो। पविट्ठो राया। उवविट्ठो पल्लंके। ठिओ कंचि वेलं। भणियं अणेण- 'अरे ! सद्दावेह वारियं। पविसामो हत्थवखालयं। सद्दिओ वारियं। सुयमिणं सुहंकरेण। 'नियमओ वावाइज्जामि।'त्ति अच्चंत भीएण जीविय-लुद्धेण अगाहे गाढंधयारे अच्चंत-दुग्गंधि-किमिकुल-संकुले वच्च-कूवे पवाहिओ अप्पा। निवडिओ आकंठं असुइ-मज्झे। किलामिओ किमीहिं। निरुद्धो से दिट्ठि-पसरो। संकोडियं अंगं। उइन्ना वेयणा। आउलीहूओ दढं। गहिओ संमोहेणं।

इओ य सो राया पच्चुवेक्खियं अंगरक्खेहिं पविट्ठो वच्चहरयं। कया सरीरठिई। निग्गओ वच्चहरयाओ। ठिओ लीलावईए सह चित्त-विणोएण। अइक्कंतो वासरो। ठिओ अत्थाइयाए राया। एत्थंतरे निरुवाविओ सुहंकरो लीलावईए। न दिट्ठो तत्थ। भणियं अणाए- 'हला जालिणि ! कहियं पुण भविस्सइ ?'। तीए भणियं- 'देवि ! भयाभिभूयत्तेणं पवाहिऊण अप्पाणयं वच्चकूवे मओ भविस्सइ।' लीलावईए भणियं- 'एवमेयं, अन्नहा कहं अदंसणं ?' ति अवगया चिंता। इओ य सो सुहंकरो तम्मि वच्चकूवे तहा-दुक्ख-पीडिओ भवियव्वया-नियोएण विचित्त-कम्म-वसवत्ती असुइ-रसपाण-भोयणे गमिऊण कंचि कालं, विसोहण-निमित्तं फोडिए वच्चहरए असुइ-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

निग्गमण-मग्गेण वावन्न-देहच्छवी पणट्ठ-नहरोमो निग्गओ रयणीए । पक्खालिओ कहं चि अप्पा महया किलेसेण । गओ नियभवणं । 'को एसो य माणुसो ?' त्ति भीओ परियणो । भणियं सुहंकरेण- 'मा बीहेह । सुहंकरो हं ।' विमलमइणा भणियं-'पुत्त ! किं तए कयं जेण ईइसो जाओ ? किं वा तुज्झ विमोक्खणं कीरउ ?।' सुहंकरेण भणियं- 'ताय ! अलं मज्झ मरणासंकाए । सो चेव अहं जं च कयं जेण ईइसो जाओ म्हि, तं साहेमि मंदभग्गो तायस्स । किंतु विवित्तमाइसउ ताओ ।' अवगओ परियणो । 'न एत्थ अन्नो उवाओ, जहट्ठियमेव साहेमि ।' त्ति चिंतिऊण साहियमणेण । 'अहो ! अकज्जासेवण-संकप्प-फलं ।'ति संविग्गो से पिया । पवेसिओ णेण गिहं । कओ निवाय-थामे[११] । संतप्पिओ सहस्सपागाईएहिं । काल-परियारणेण समागओ पुव्वावत्थं । उचिय-समएण पयट्टो देवयाययणं । ओइन्नो रायमग्गे । दिट्ठो लीलावईए । तहेव साम-पुव्वयं पेसिया जालिणी । मोह-दोसेण समागओ सुहंकरो । आगयमित्ते तम्मि आगओ राया । तहेव जायाइं वच्चकूव-पडण-निग्गमणाइं । पुणो पडणो दिट्ठो, पुणो पवेसिओ, पुणो विडंबिओ । एवं पुणो पुणो बहुसो त्ति ।

ता पुच्छामि तुब्भे 'तीए लीलावईए तम्मि सुहंकरे अणुराओ अत्थि किं वा नत्थि ?' । रयणमंजरीए भणियं- 'नाह ! परमत्थओ नत्थि, बुद्धि-रहिया सा लीलावई जेण न निरुवइ वत्थुं, न निहालए नियभावं, न पिच्छए स-पर-तंतयं, न चिंतए तस्स आयइं ।' कुमारेण भणियं- 'भद्दे ! जइ एवं ता तुम्हाणं पि नत्थि ममोवरि नेहो, बुद्धिरहियाओ य तुब्भे, जेण असुंदरे पयईए निबंधणे कसायाईणं चंचले सरूवेण इच्छह तुच्छ-भोए, अओ न निरूवह वत्थुं ति । तहा सव्वुत्तमं माणुसत्तं दुल्लहं भव-समुद्दे साहगं निव्वाणस्स न निउंजह धम्मे, अओ न निहालह निय-भावं ति । तहा भुवण-डामरो मच्चू । अइ-दारुणो पयईए गोयरे तस्स तुब्भे न चिंतह अत्ताणं, अओ न पिच्छह स-पर-तंतयं ति । तहा महु-महुरं परिणाम-दारुणं कारणं गब्भ-नरयस्स विसय-सुहं, तं पि सुंदरं ति भणंतीओ निउंजह मं तत्थ, अओ न चिंतह मज्झ आयइं ति । ता-

परमत्थेणं नत्थि तुम्ह नेहो ममोवरिं भद्दे ! ।
जं खिवह नरय-कूवे काउं दिक्खा-गहण-विग्घं ॥१२७०॥१६॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दुग्गय १ चिंतामणि २ चूय ३ कूयनर ४ ससुर ५ सूरसेण निवा ६ ।
वरदत्तो ७ जयवम्मो ८ कज्जो य ९ कुबेरदत्तो य १० ॥१२७१॥

अक्का ११ समुद्ददत्तो १२ जंबुग १३ मित्ततिय १४ अक्क १५ वणिपुत्ता १६ ।
भज्जाहिं कुमारेण य कहियाओ कहाओ एयाओ ॥१२७२॥

एयं सोऊण संविग्गाओ वहुओ । तओ सद्धाइसएण पणमिऊण कुमार-चलण-जुयलं जंपियमिमाहिं- 'अज्जउत्त ! एवमेयं । अम्हाणं पि अवगओ वामोहो । समुप्पन्नं सम्मन्नाणं । नियत्तो विसय-राओ । ता आणवेउ अज्जो जं अम्हेहिं कायव्वं ।'

कुमारेण भणियं- 'साहु भोईओ ! साहु । सुलद्धं तुम्हाण माणुसत्तणं जं ईइसी कुसलबुद्धि त्ति । ता पवज्जह[164] पव्वज्जं ।' तओ पयट्टियं महादाणं । काराविया जिणाययणेसु पूया । पूईया गुरुणो । घोसाविया अमारी । विमुक्काओ गुत्तीओ । सम्माणिया सयणा । पसत्थे तिहि-करणे मुहुत्त-जोए समं धम्ममित्तेहिं धम्मपत्तीहिं य समारूढो दिव्व-सिबियं । वज्जंतेहिं मंगल-तूरेहिं, नच्चंतेणं तरुणि-चक्कवालेण, थुव्वमाणो बंदीहिं, पूरंतो समग्ग-मग्गण-मणोरहेहिं, अणुगम्मंतो सामंत-मंति-परिगएणं पिउणा, पलोइज्जमाणो नायरेहिं, जणंतो तेसिं धम्माणुरायं पत्तो कुसुमागरुज्जाणं । उत्तिन्नो सिबिगाओ । गओ विणयनंदण-गुरु-पायमूले । ति-पयाहिणा-दाण-पुव्वं पणमिऊण समप्पिओ अप्पा गुरुणो । तेणावि दिक्खिओ जहुत्त-सिद्धंत-विहिणा । भज्जाओ वि चंदलेहा-पमुहाओ दिक्खिऊण समप्पियाओ विणयवइ-पवत्तिणीए ।

अह पुरिससीह-साहू परीसहे दुस्सहे वि सहमाणो ।
सुत्तं अहिज्जमाणो अवधारंतो य तस्सत्थं ॥१२७३॥

दिव्वाइ-उवसग्गे अगणंतो गुरुयणं निसेवंतो ।
इंदियगणं जिणंतो कुणमाणो दुक्करं किरियं ॥१२७४॥

मास-दुमास-तिमासप्पमुहं तिव्वं तवं अणुचरंतो ।
सव्वत्थ-अपडिबद्धो विहरइ पवणो व्व स महप्पा ॥१२७५॥

खेलाइ-लद्धीओ तवप्पभावेण तस्स जायाओ ।
गिरिणो व्व ओसहीओ ससिकर-संगेण दित्ताओ ॥१॥१२७६॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तस्स य खेललवेण वि देहं कुट्ठदुयं पि देहीणं ।
कोडीवेह-रसेण व तंबं संपज्जइ सुवन्नं ॥२॥१२७७॥

कत्थूरिया-परिमलो मलो तयंगस्स सव्व-रोगहरो ।
अमएण व कर-फरिसेण तस्स रोगा खयं जंति ॥३॥१२७८॥

तस्संग-संगि-सलिलं रवि व्व तिमिरं हरेइ रोगभरं ।
तस्संग-लग्ग-पवणेण जंति विलयं विसप्पमुहा ॥४॥१२७९॥

विस-दूसिय-मत्ताइ तं मुहपत्तेसु निव्विसं होइ ।
तव्वयण-मंत-सवणेण समइ सव्वो वि सवियारो ॥५॥१२८०॥

नह-केसाइ तदंगं जं जं रोगीण ओसहं तं तं ।
अणिमा-गुणेण संचरइ सो य सूईए रंधे वि ॥६॥१२८१॥

सुरसेलाओ महंतं करेइ महिमा-गुणेण सो रूवं ।
लघिमा-गुणेण लंघिज्ज लाघवं सोऽनिलस्सावि ॥७॥१२८२॥

गरिमा-गुणेण दुसहं सक्काइएहिं पि तस्स गुरुयत्तं[१६५] ।
पवण-सत्तीए छिवेज्ज मेरु-सिरमंगुलीए सो ॥८॥१२८३॥

सो पाकम्म-गुणेणं भुवीव नीरि जले व्व भुवि चरइ ।
सो इस्सरिय-गुणेण चक्किंद-सिरिं खमो काउं ॥९॥१२८४॥

तस्स वसित्त-गुणेणं पसमं कूरा वि जंतुणो जंति ।
अप्पडिघाइत्त-गुणेणं सेल-मज्झे वि सो कमइ ॥१०॥१२८५॥

अंतद्धाण-गुणेणं एसो पवणो व्व जायइ अदिस्सो ।
रूवेहिं कामरूवित्तणेण सो पूरइ जयं पि ॥११॥१२८६॥

एगत्थ-बीयउगेण अत्थ-बीयाइं जत्थ जायंति ।
सा विय बुद्धि-रिद्धी संजाया तस्स वर-मुणिणो ॥१२॥१२८७॥

सो धरइ कुट्ठ-बुद्धी कुट्ठे धन्नं व अक्खयं सुत्तं ।
एग-पयाओ वि गिण्हइ गंथं पि पयाणुसारी णं ॥१३॥१२८८॥

अवगाहइ सुय-जलहिं अंतमुहुत्तेण सो मणोबलिओ ।
सो वायाबलिओ तं गुणेइ अंतोमुहुत्तेण ॥१४॥१२८९॥

सो कायबली पडिमं चिरं पवन्नो वि जाइ न किलेसं ।
सो अमय-खीर-महु-घय-आसवलद्धी तहा जाओ ॥१५॥१२९०॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जं तस्स पत्त-पडियं अमयाइ-रसं भवे कदन्नं पि ।
वयणं व दुक्खिएरसुं जायइ अमयाइ-परिणामं ॥१६॥१२९१॥

अखीण-महाणरस-लद्धिओ य थेवं पि बहुय-दाणे वि ।
तप्पत्त-पडियमन्नं न खिज्जए जिमइ जा न सयं ॥१७॥१२९२॥

अक्खीण-महालय-लद्धि-संजुओ सो जओ असंख-जणो ।
तित्थयररस्स व परिसाए तस्स सम्माइ निब्बाहं ॥१८॥१२९३॥

एगेण इंदिएणं सेसिंदिय-अत्थ-दंसणं जत्थ ।
संभिन्न-सोय-लद्धी सा जाया तस्स महरिसिणो ॥१९॥१२९४॥

जंघाचारण-लद्धीए एक्क-फालाए जाइ सो रुयगं ।
एक्काए नंदीसरमेइ स-ठाणं तु बीयाए ॥२०॥१२९५॥

एक्काए फालाए मेरु-सिरं जाइ सो तओ चलिओ ।
एक्काए नंदणवणे बीयाए एइ स-ट्ठाणं ॥२१॥१२९६॥

सो विज्जालद्धि-जुओ एक्काए माणुसुत्तरं जाइ ।
बीयाए फालाए वच्चइ नंदीसरं दीवं ॥२२॥१२९७॥

तत्तो नियत्तमाणो एक्काए चेव एइ स-ट्ठाणं ।
उड्ढं तु दोहिं फालाहिं जाइ एक्काए पुण एइ ॥२३॥१२९८॥

सो आसीविस-इड्डीए निग्गहाणुग्गह-खमो जाओ ।
लद्धि-फलं न हु गिण्हइ तह वि निरीहो पुरिससीहो ॥२४॥१२९९॥

सो सुद्ध-वासणावस-विसिट्ठ-कुसलोदओ समज्जेइ ।
तित्थयर-नामकम्मं वीसइ-ठाणेहिं एएहिं ॥२५॥१३००॥

पढमं अरहंताणं तप्पडिमाणं च पूयणाइहिं ।
बीयं सिद्धाण सरूव-सद्दहण-कित्तणाइहिं ॥१॥१३०१॥

तईयं बाल-गिलाणाइ-पालणे पवयणस्स वच्छल्लं ।
तुरियं गुरूण आहार-वत्थ-दाणाइ-पडिवत्ती ॥२॥१३०२॥

पंचमयं बहुमाणो वय-पज्जायस्सुएहिं थविराण ।
छट्ठं बहुस्सुयाणं अत्थाविक्खाए वच्छल्लं ॥३॥१३०३॥

सत्तमयं वीसामण-पूयण-दाणाइणा तवस्सीणं ।
अट्ठमयं उवओगो निच्चं सुत्तत्थ-नाणस्स ॥४॥१३०४॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नवमं पुण सम्मत्तं समत्त-संकाइ-दोस-परिचत्तं ।
दसमं व नाण-दंसण-चरित्त-उवयार-विणएहिं ॥५॥१३०५॥

एगारसमिज्झाईय अवस्स-किच्चाईयार-परिहरणं ।
बारसमिह मूलुत्तर-गुण-परिपालणमणईयारं ॥६॥१३०६॥

तेरसमपमाएणं पइक्खणं पइलवं सुहं झाणं ।
चउदसमणवरयं चिय दुवालसविहं तवच्चरणं ॥७॥१३०७॥

पनरसमज्झाईणं[166] संविभागो तवस्सि-लोगम्मि ।
सोलसमायरियाइसु वेयावच्चं सुसत्तीए ॥८॥१३०८॥

सत्तरसं संघस्स उ समाहिकरणं अवायहरणेण ।
अट्ठारसं अउव्वाण सुत्त-अत्थाण संगहणं ॥९॥१३०९॥

एगूणवीसमवितह-सद्दहणुक्कित्तणेहिं सुय-भत्ती ।
वीसं पभावणा सासणस्स वायाइ-लद्धीहिं ॥१०॥१३१०॥

एएहिं ठाणेहिं तित्थयरत्तं उवज्जिऊण इमो ।
विहरइ चिरं महीए पडिबोहंतो भविय-लोयं ॥१३११॥

संलेहण-दुग-पुव्वं पज्जंतावसरमप्पणो नाउं ।
काऊण अणसणं पायवोवगमणेण सुद्धमणो ॥१३१२॥

मरिऊण वेजयंते सुरो विमाणम्मि सो समुप्पन्नो ।
सुह-सागरावगाढो तेत्तीसं[167] सागरे गमइ ॥१३१३॥

सिरि-**सोमप्पहसूरीहिं** विरइए सुमइसामि-चरियम्मि ।
तित्थयर-कम्म-अज्जण-पवरा नर-सुर-भवा भणिया ॥१३१४॥

• • •

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पाठांतर :

१. स्वरूपैः **ल. रा.** ॥ २. खुहा० **ल. रा.** ॥ ३. वालुयाकवलणं **ल. रा.** ४. वरतरं० **ल. रा.** ॥ ५. निरए **ल. रा.** ॥ ६. एक्कं **ल. रा.** ॥ ७. निअयमंते० **दे. पा.** ॥ ८. विरत्तमेवं भव० **रा.** ॥ ९. ०पडिचारि० **दे. पा.** ॥ १०. ०संगिलंत० **ल. रा.** ॥ ११. तंसि **ल. रा.** ॥ १२. पुत्तो **ल. रा.** ॥ १३. ०सिद्धि० **ल. रा.** ॥ १४. रे जीव ! **ल. रा.** ॥ १५. जणे उ **दे. पा.** ॥ १६. तज्जमाण० **ल. रा.** ॥ १७. तो **दे. पा.** ॥ १८. पूजिया **दे. पा.** ॥ १९, २१. ०पिंछं **दे. पा.** ॥ २२. ०रन्नागएण **दे. पा.** ॥ २३. ०पेच्छाणि **रा. दे. पा.** ॥ २४. ०पेच्छाइं **ल.** ॥ २५. ता **पा.** ॥ २६. कुमरेण **पा.** ॥ २७. लद्धूण सुदुल्लंभं कहंपि **दे. पा.** ॥ २८. ०तणगो ?। **ल. रा.** ॥ २९. सिट्ठिणा **ल. रा.** ॥ ३०. सिट्ठिणा **ल. रा.** ॥ ३१. सम्माणेज्जइ **दे. रा. पा.** ॥ ३२. पंचरयणाइ **ल. रा.** ॥ ३३. कइवइदिणा० **ल. रा.** ॥ ३४. तत्तो अण्ण० **ल. रा.** ॥ ३५. निअयावासं **दे. पा.** ॥ ३६. सुवन्नलक्ख० **दे. पा.** ॥ ३७. हवेज्ज **दे. पा.** ॥ ३८. पेच्छिऊण **दे. पा.** ॥ ३९. ०दिस० **दे. पा.** ॥ ४०. महया किं **दे. पा.** ॥४१. जोअणाइं **दे. पा.** ॥ ४२. अत्थि विविह-रयणमयं सुरभवण-विणिग्गय-पहापडल-पाडलं पाडलिउरं नयरं । तत्थ रिउ-रमणि-नयण-सलिलप्पवाह-विलसंत-समुज्जल-जस-रायहंसो रायहंस-धवल-गुण-संदोह-संदाणिय-जयलच्छि-समालिंगिय-काओ पुहइराओ राया । तस्स य तरलच्छि-विच्छोह-मज्झ-पुच्छच्छडा-समुच्छालिय-पंचसर-पसर-पारावारा थोर-थणहरुच्छंग-रंगंत-तारहारा सुतारा देवी तत्थ अवगय० **ल. रा.** ॥ ४३. परिक्खिज्जंति **ल. रा.** ॥ ४४. मुक्खेण **ल. रा.** ॥ ४५. किविणेण **ल. रा.** ॥ ४६. पयट्टिया आ० **ल. रा.** ॥ ४७. इइ विविहा० **ल. रा.** ॥ ४८. पहे बहुय० **ल. रा.** ॥ ४९. ०इं निग्गहमंतो **दे. पा.** ॥ ५०. गुरुय० **ल. रा.** ॥ ५१. याऽमयरसो सह० **ल. रा.** ॥ ५२. भक्खेइ **ल. रा.** ॥ ५३. हा चित्त ! अकज्जं अ० **दे. पा.** ॥ ५४. पटउडी० **ल. रा.** ॥ ५५. अमयमयंबयं **ल. रा.** ॥ ५६. जोवंताणं **ल. रा.** ॥ ५७. रयणीइ **ल. रा.** ॥ ५८. बहुगामेसु **ल. रा.** ॥ ५९. हत्थि डड्डाओ **ल. रा.** ॥ ६०. ०गुरुय० **ल. रा.** ॥ ६१. ०गुरुयं **ल. रा.** ॥ ६२. ०सिहरुग्गओ **ल. रा.** ॥ ६३-६४. ०वयणेज्जा **दे. पा.** ॥ ६५. न पुट्ठिया **दे**; न पुच्छिया **रा.** ॥ ६६. तद्दियहे को० **दे. पा.** ॥ ६७. ०मज्झे कडाइ० **दे. पा.** ॥ ६८. ०मेव विआइया **ल. रा.** ॥ ६९. वट्टइ **दे. पा.** ॥ ७०. देव्व **दे. पा.** ॥ ७१. निव्वूढा **ल. रा.** ॥ ७२. ०हरियं मह **ल. रा.** ॥ ७३. रोयंती **ल. रा.** ॥ ७४. स उवसंतो **ल. रा.** ॥ ७५. वावाएस्सइ **दे. पा.** ॥ ७६. सुवण्णिद० **ल. रा.** ॥ ७७. ०सिट्ठिणा **ल.**

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रा. ॥ ७८ ववहारिउ० **दे. पा.** ॥ ७९. सिट्ठिणो **ल. रा.** ॥ ८०. ०सुंदेर लहुई० **दे. पा.** ॥ ८१. ०णत्थ वण० **ल. रा.** ॥ ८२. ०वड्डीए **दे. पा.** ॥ ८३. करेहि त्ति **ल. रा.** ॥ ८४. परं परभवेसु **ल. रा.** ॥ ८५. ०मयविंभलविह० **दे. पा.** ॥ ८६. दुक्खमिणं न पुण कड्डि० **ल. रा.** ॥ ८७. ०हियंगभूओ **ल. रा.** ॥ ८८. गुरुओ **ल. रा.** ॥ ८९. गुरुयाओ **ल. रा.** ॥ ९०. मुक्खो. **ल. रा.** ॥ ९१. गिण्हइ **ल. रा.** ॥ ९२. गुरुयाणु० **ल. रा.** ॥ ९३. ०नगरलक्खाओ **ल.** ॥ ९४. वेदोच्चारं **टि० ल.** ॥ ९५. निसामंतो **ल. रा.** ॥ ९६. ढहुसं (रं) **दे. पा. रा.** ॥ ९७. ईरिसो **ल. रा.** ॥ ९८. जाणेसि **पा.** ॥ ९९. इत्थिच० **ल.** ॥ १००. गुरुय० **ल. रा.** ॥ १०१. पेच्छंतो व्व लक्खि **ल. रा.** ॥ १०२. गुरुय० **ल. रा.** ॥ १०३. धरिउं तासिं **ल. रा.** ॥ १०४. सिट्ठिणा **दे. पा.** ॥ १०५. सिट्ठी **ल. रा.** ॥ १०६. वड्डंत० **रा.** ॥ १०७. ०पीडाहेउ त्ति **दे. पा.** ॥ १०८. पवाहिया दोवि **ल. रा.** ॥ १०९ भायहंडाइं **दे. पा.** ॥ ११०. गुरुय **ल. रा.** ॥ १११. तीए वि **ल. रा.** ॥ ११२-१३. गुरुय **ल. रा.** ॥ ११४. नडविडबिसा० **पा.** ॥ ११५. चेडी **पा.** ॥ ११६. कुट्टिणी **ल. रा.** ॥ ११७. रमणेज्जं **दे. पा.** ॥ ११८-१९. कुट्टणीए **दे. पा.** ॥ १२०. ०त्थाए **ल.** ॥ १२१. कुट्टणीए **दे. पा.** ॥ १२२. ०मई एसा न **ल. रा.** ॥ १२३. कुट्टणीए **दे. पा.** ॥ १२४. कुट्टिणीए **दे. पा.** ॥ १२५. जं-अमु० **दे. पा.** ॥ १२६. गहिउं **ल. रा.** ॥ १२७. ०परमिट्ठि० **ल. रा.** ॥ १२८. सरंतेण **पा.** ॥ १२९. कुट्टिणी **दे. पा.** ॥ १३०. गरुओ **दे. पा.** ॥ १३१. ०दिसिभित्ती **रा.** ॥ १३२. गुरुयं **ल. रा.** ॥ १३३. किवण० **ल. रा.** ॥ १३४. पिच्छए **दे. पा.** ॥ १३५. दीवदाणदं० **दे. पा.** ॥ १३६. मुक्का तहेव पच्छिम० **दे. पा.** ॥ १३७. अत्थित्थ **ल. रा.** ॥ १३८. जिणपूओ वि दूईओ पुत्तो **दे. पा.** ॥ १३९. वयरसेणो **ल. रा.** ॥ १४०. पिच्छइ **दे. पा.** ॥ १४१. ०पुच्छेहिं **दे. पा.** ॥ १४२. वयरसेणो **ल. रा.** ॥ १४३. सवक्किमाया **दे. पा.** ॥ १४४. पउहा **दे. पा.** ॥ १४५. वयरसेणेण **ल. रा.** ॥ १४६. कीरए **दे. पा.** ॥ १४७. एकस्स **ल. रा.** ॥ १४८. गुरुयं **ल.** ॥ १४९. वयसेणेण **ल. रा.** ॥ १५०. अकहेऊण **ल. रा.** ॥ १५१ जिट्ठ० **दे. पा.** ॥ १५२-५३-५४. वयरसेणो **ल. रा.** ॥ १५५. ०देयउले **ल. रा.** ॥ १५६. कुट्टिणीए **ल. रा.** ॥ १५७. ईयाणिं **ल. रा.** ॥ १५८. कुट्टिणीए **दे. पा.** ॥ १५९. परिहिऊण **दे. पा.** ॥ १६०. तो **ल. रा.** ॥ १६१. कुट्टणिं **ल. रा.** ॥ १६२. पविसिउं **ल. रा.** ॥ १६३. निवायठामे **ल. रा.** ॥ १६४. पव्व ह **ला;**वज्जइ **पा.** ॥ १६५. गुरुअत्तं **पा.** ॥ १६६. पन्नरमन्नाईणं **दे.पा.रा.** ॥ १६७. तित्तीसं **दे. पा.** ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

छट्ठो पत्थावो

अत्थित्थ जंबुदीवो पुरिसत्थ-नरिंद-पुरनिवेसो व्व ।
जलनिहि-परिहा-परिगय-जगई-पायार-परिखित्तो ॥१३१५॥

अद्धिंदु-सुंदरं तत्थ भारहं अत्थि दाहिण-दिसाए ।
भालं व जत्थ रेहइ वेयड्ढो रययपट्टो व्व ॥१३१६॥

जं गंग-सिंधु-सरिया-मुत्ताहल-मालियाहिं रमणिज्जं ।
बहल-वणराइ-कुंतल-रेहा-रेहंत-पेरंतं ॥१३१७॥

तत्थ अउज्झानयरी कणयमई अत्थि तिलय-सारिच्छा ।
पेरंत-मुत्तियावलि-समो जहिं फलिह-पायारो ॥१३१८॥

जा जिण-जम्मट्ठाणं ति सव्व-दीवागएहिं भत्तीए ।
पायार-कणय-कविसीसएहिं रेहइ रवीहिं व ॥१३१९॥

जत्थ सुवन्न-जिणालय-फुरंत-कंती तडिल्लया-लच्छी ।
पावइ डज्झंतागुरु-धूमेसु घणेसु गयणयले ॥१३२०॥

जत्थुन्नय-घरकुट्टिम-गयाओ हरिणंक-हरिण-नयणाइं ।
दट्ठुं व सविब्भम-पिच्छिरीओ रमणीओ जायाओ ॥१३२१॥

जीए रयण-विणिम्मिय-पासाय-पहाहिं पहरिए तिमिरे ।
कुवलय-कमल-वियासेहिं रयणि-दियहा मुणिज्जंति ॥१३२२॥

विरइय-पय-उल्लासो वित्थारिय-रायहंस-संतासो ।
मोहो व्व तत्थ मेहो समुन्नओ अत्थि नरनाहो ॥१३२३॥

पबल-पयाव-दवग्गी विपक्ख-महिहरकुलस्स दिप्पंतो ।
जेण जए विज्झविओ पगिट्ठ-तरवारि-धाराहिं ॥१३२४॥

जस्स ववसाय-साही पल्लविओ सव्वओ पयावेण ।
जस-पसरेणं कुसुमिओ फलिओ उण विउल-लच्छीए ॥१३२५॥

आरामिओ व्व आराम-वीरुहाओ पयाओ पालेइ ।
सो नीई-सारणी-पवहमाण-धम्मम्बु-पूरेण ॥१३२६॥

तस्स नयरस्स व लच्छी धम्मस्स व सहयरी दया अत्थि ।
उल्लासिय-लोय-समग्ग-मंगला मंगलादेवी ॥१३२७॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सीलेण जीए रूवं विणएण पहुत्तणं समेण मई ।
दाणं पणएण विहूसिऊण विहिया गुणा सगुणा ॥१३२८॥

सोहग्गेण गणिज्जए गिरिसुया दासि व्व जीसे पुरो,
धूया नीरनिहिस्स धूलि-सरिसी रूवेण लक्खिज्जए ।
लायन्नेण लहुत्तणं तणमिव प्पत्ता अणंगप्पिया,
सा केणावि कयाऽपरेण विहिणा सव्वोवमा-वज्जिया ॥१३२९॥

सो वसइ तीए चित्ते तस्स य चित्तम्मि वसइ सा देवी ।
रइ-मयणाण व तेसिं न विओगो होइ कइया वि ॥१३३०॥

पोलोमीए व सक्कस्स तस्स तीए समं रमंतस्स ।
रइ-सागरावगाढस्स कोइ कालो अइक्कंतो ॥१३३१॥

अह पुरिससीह-जीवो चुओ विमाणाओ वेजयंताओ ।
सावण-सीय-बीयाए महरिक्ख-गए मयंकम्मि ॥१३३२॥

मंगलदेवी-सरसीइ निच्च-विमलाइ कुक्खि-कमलम्मि ।
सुविसुद्धोभयपक्खो अवयरिओ रायहंसो व्व ॥१३३३॥

तम्मि समयम्मि भुवणत्तए वि जाओ खणं समुज्जोओ ।
दुक्खक्खएण सोक्खं च नारयाणं पि संपन्नं ॥१३३४॥

तीए च्चिय रयणीए महरिह-सिज्जा-गया सुह-पसुत्ता ।
नियइ चउदस-सुविणे सुमंगले मंगलादेवी ॥१३३५॥

दंती उदग्गदंतो झरंत-मय-निज्झरो धवलवन्नो ।
उत्तुंग-कुंभ-सिहरो केलासो जंगमो व्व गिरी ॥१३३६॥

वसहो पीणक्खंधो धवलो चल-कणय-किंकिणीमालो ।
विलसंत-विज्जुलेहा-विराइओ सारओ व्व घणो ॥१३३७॥

सीहो ललंत-जीहो पिंगल-केसर-कडप्प-दिप्पंतो ।
उल्लालिय-नंगूलो सूरेसुब्भियपडाओ व्व ॥१३३८॥

देवी वि पउम-निलया पउम-मुही पउमपत्त-सम-नयणा ।
करिकर-पल्हत्थिय-कणयकलस-सलिलेहिं सिच्चंती ॥१३३९॥

दामं सुरपायव-पंचवन्न-कुसुमप्पवंच-चिंचईयं ।
परिमल-मिलंत-अलिउल-घण-वडले सक्कचावं व ॥१३४०॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वयणं व अत्तणो हरिणनाहि-निम्मिय-कचोल-पत्तलयं ।
हरिणंक-मंडलं कंति-पूर-परिपूरिय-दियंतं ॥१३४१॥

पसरंत-किरण-संदोह-दलिय-नीसेस-तिमिर-संभारं ।
दिवसब्भमं कुणंतं रयणीइ वि भाणुणो बिंबं ॥१३४२॥

पवण-पणुन्न-पडाया-पयलंत-भुओ तिलोयलच्छिं व ।
हक्कारंतो चल-कणिर-किंकिणी-कलरवेण धओ ॥१३४३॥

अंभोकुंभो अंभोय-भूसिओ सायकुंभ-संभूओ ।
अंभोनिहि-महणारंभ-संभवो अमय-कुंभो व्व ॥१३४४॥

थोउं जिण-गुण-निवहं मिलंत-मत्तालि-जाल-मुहलेहिं ।
पउमेहिं पवंचिय-चारु-वयण-विसरं व पउमसरं ॥१३४५॥

विलसिर-अब्भंलिह-लहरि-मंडली-चुंबियंबराभोओ ।
उल्लासंतो सरयब्भ-विब्भमं खीर-नीरनिही ॥१३४६॥

देवत्तणम्मि जं पुव्व-सेवियं सामिणा मणिविमाणं ।
तं चिय गुरुय-सिणेहेण आगयं वेजयंतं व ॥१३४७॥

किरण-कडप्प-पवंचिय-तियसिंद-सरासणो रयण-रासी ।
जिणमुह-ससि-सेवत्थं समागओ तारय-गणो व्व ॥१३४८॥

गहिऊण व तेयं तेयवंत-वत्थूण भासुरो दिट्ठो ।
निद्धूमो जलणो सामिणीए वयणे पविसमाणो ॥१३४९॥

दट्ठूण इमे सुविणे पडिबुद्धा हरिस-निब्भरा देवी ।
पल्लंकं परिहरिउं संपत्ता राइणो पासे ॥१३५०॥

अमयं व उग्गिरंती परहुय-रव-पेसलेहिं वयणेहिं ।
मत्थय-कयंजलि-उडा कहेइ सुविणे नरवइस्स ॥१३५१॥

भणियं रन्ना-

गओ व्व दाणाणुगओ, वसहो व्व धम्म-धुर-धरण-सहो, सीहो व्व सूरत्तण-लद्ध-लीहो, लच्छि व्व तेलोक्क-वल्लहो, कुसुमदामं व सुरासुरेहिं सिरुव्वूढ-सासणो, चंदो व्व कयाणंदो, सूरो व्व अपडिम-पयाव-पब्भरो, झओ व्व भुवण-भवण-भूसणो, पुन्नकुंभो व्व समग्ग-मंगल-निलओ, पउमसरं व्व संतावहारओ, सायरो व्व गुण-रयणायरो, विमाणं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

व्व सुर-सेवणिज्जो, रयणरासि व्व महग्घो, जलणो व्व पडिवक्ख-पयंग-दहणो तुह पुत्तो भविस्सइ ।

देवीए देव-गुरु-चलणाणुभावेण 'एवं होउ' त्ति भणंतीए बद्धो उत्तरिज्जंचले सउण-गंठी । गया निय-वासभवणं देवी । चलियासणा समागया बत्तीसा वि सुरिंदा पणया अणेहिं सामिणीं थोउमाढत्ता-

तं धन्ना सि सलक्खणा सि सहलो माणुस्स-जम्मो इमो,
तुब्भं चेव सलाहणिज्ज-चरिया तं चेव निस्संसयं ।
जीए वट्टइ कुक्खि-सिप्पपुडए सव्वन्नु-मुत्तामणी,
नित्तासो विमलो तिलोय-कमला-वच्छत्थली-भूसणं ॥१३५२॥

माए उद्धरियं तए जयमिणं संसार-काराहरा,
लोए मोह-महंधयार-दलणो दिन्नो तए दीवओ ।
अम्मो ते पय-पंकयाइं नमिमो गब्भम्मि तित्थंकरो,
जीए सीह-किसोरओ व्व वसए कम्मेभ-विद्धंसणो ॥१३५३॥

इय थोउं जिण-जणणीं तीए कहिऊण तह जिणुप्पत्तिं ।
रयण-निहाणेहिं समंतओ वि पूरंति जिण-गेहं ॥१३५४॥

तो सुरवइणो नंदीसरम्मि सासय-जिणिंद-पडिमाणं ।
काऊण महा-महिमं निय-निय-ठाणेसु संपत्ता ॥१३५५॥

गोसे मेह-नरिंदो अणेय-सामंत-मंति-परियरिओ ।
तारय-जुओ व्व चंदो अत्थाण-सहाए उवविट्ठो ॥१३५६॥

हक्कारिऊण सक्कार-पुव्वयं सुविणपाढए राया ।
पुच्छइ सुविणाण फलं विभाविउं ते वि साहंति ॥१३५७॥

अंगं सुविणं च सरं उप्पायं भोममंतरिक्खं च ।
वंजण-लक्खणमेव य अट्ठ-पयारं इह निमित्तं ॥१३५८॥

सुविणय-निमित्त-सत्थे सामन्नेणं निमित्त-निउणेहिं ।
सुविणा सुहासुह-फला कहिया बावत्तरी तत्थ ॥१३५९॥

तीसा य अप्पसत्था बायालीसा य उत्तमा तत्थ ।
बायालीसा मज्झे तीसा भणिया महासुविणा ॥१३६०॥

तेसिं मज्झे चउदस तित्थयराणं तहेव चक्कीणं ।
गब्भावयार-समए सुविणे पिच्छंति जणणीओ ॥१३६१॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तह वासुदेव-जणणीओ ताण मज्झे नियंति सत्तेव ।
बलदेव-मायरो पुण चउरो सुविणे पलोयंति ॥१३६२॥

मंडलिय-नरिंदाणं चरमसरीराण तह य जंतूण ।
जणणीओ महा-सुविणं एक्कं वा दो व पेच्छंति ॥१३६३॥

जं देवीए चउदस दिट्ठाइं इमाइं तेण जाणामो ।
सेसेहिं निमित्तेहिं य तित्थयरो तुह सुओ होही ॥१३६४॥

तो मेह-महीवइणा महंत-हरिसुल्लसंत-हियएण ।
संमाणिऊण सम्मं विसज्जिया ते गया स-गिहं ॥१३६५॥

सक्काएसेण सुरंगणाओ सेवंति मंगलादेवीं ।
वाउकुमार-वहुओ तीए पमज्जंति वासहरं ॥१३६६॥

तं मेहकुमार-नियंबिणीओ गंधोदएण सिंचंति ।
उवुलच्छीओ वरिसंति तत्थ विविहं कुसुम-निवहं ॥१३६७॥

दंसंति जोइसित्थीओ दप्पणं किन्नरीओ गायंति ।
ण्हवण-विलेवण-पमुहं कुणंति वेमाणिय-वहुओ ॥१३६८॥

परचक्क-मारि-दुब्भिक्ख-रोग-पमुहा उवद्दवा तत्थ ।
देसम्मि समुवसंता रिद्धि-समिद्धा मही जाया ॥१३६९॥

गय-तुरय-रयण-कंचण-पयाण-पउणेहिं पत्थिव-सएहिं ।
तित्थयर-पभावेणं पणमिज्जइ[1] मेहराओ वि ॥१३७०॥

तीए लायन्न-सिरी विसेसओ वुड्ढिमुवगया तइया ।
गोसे मइ व्व कइणो गिम्हे वेल व्व जलनिहिणो ॥१३७१॥

सा सहइ दिणयरेणेव तेण गब्भेण तम्मि समयम्मि ।
सरयम्मि पंडुरत्तं संपत्ता मेहमाल व्व ॥१३७२॥

अम्हाण थन्नपाई होही जिणपुंगवो त्ति गरुएण[2] ।
हरिसेण व संपत्ता पओहरा तीए पीणत्तं ॥१३७३॥

सविसेस-वियास-मणहराइं नयणाइं तीए जायाइं ।
वयण-कमलं जिणिंदस्स दट्ठुमुक्कंठियाइं व ॥१३७४॥

इओ य तन्नयरि-वत्थव्वओ चंदो वाणिओ दोहिं भज्जाहिं समं दविणज्जणत्थं देसंतरं गओ । तस्स एक्काए भज्जाए पुत्तो जाओ । दोहिं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पि भज्जाहिं निव्विसेसं वुड्ढिं नीओ। सो चंदो दव्वमुववज्जिऊण नियत्तो देसंतराओ आगच्छंतो दुव्वारत्तणओ दिव्व-दुव्विलसियस्स मओ मग्गे। 'पुत्तो वित्तं च मज्झ संति' भणंती पुत्त-मायाए सह बीया कलहं काउं पवत्ता। कलहंतीओ अ पत्ताओ अउज्झा-नयरिं, ढुक्काओ[३] स-कुल-परकुलेसुं, न छिन्नो विवाओ, गयाओ धम्माहिगरणं, तत्थ वि न छिन्नो, उवट्ठियाओ रायाणं, पुच्छियाओ रन्ना विवाय-कारणं।

विहिय-मायाए विमायाए भणियं- 'एसो विवाओ कहिओ सव्वत्थ, केणावि न छिन्नो, को वा परवसणे दुक्खिओ ? तुमं पुण परदुक्ख-दुक्खियं धम्मरायं दट्ठूण उवट्ठियम्हि। मम उयर-संभवो, सरिसो य मे, पालिओ य मए, वित्तं पि मे इमं।' ति।

पुत्तमायाए भणियं- 'पुत्तो य एस मे, धणं च मे, एसा सवत्ता अणवच्चा लोह-तरलिया कलहं करेइ। जं मए सरलमणाए पुत्तं पालयंती न वारिया, तं संपयं पायंतो[४] (?) सा वि। आउसीयस्सयस्स (?) धाविय' त्ति।

जंपियं मेहराएण- 'दो वि एयाओ एग-विंट-खुडियाओ व्व सरिसरूवाओ दीसंति। जइ पुण वि सरिसत्तणं इमाण होज्ज ता जीसे सरिसो हवेज्ज दारओ तीसे पुत्तो अणुमिणेज्ज। एसो य दोण्हं पि सरिसो, बालत्तणओ वोत्तुं पि न तरइ, किं पुण एसा माया वि एसा विमाय त्ति जाणिओ (जाणिज्ज) ?

एवं जंपंतस्स रन्नो दुट्ठ-निन्नय-पावभीरुणो जाओ मज्झन्न-समओ।

भणियं मंतीहिं- देव ! वज्जगंठि व्व दुब्भेओ एस विवाओ। छहिं पि मासेहिं न याणिओ अम्हेहिं। ता इण्हिं कीरंतु निच्च-किच्चाइं, समयंतरे वियारणिज्जो इमो।

'एवं होउ' त्ति भणंतेण रन्ना विसज्जिया परिसा, कयं करणिज्जं, गओ अंतेउरं राया, पुट्ठो मंगलादेवीए- 'सामि ! किं अज्ज मज्झन्न-निच्चकिच्चाणं जाओ अइक्कमो ?' त्ति। कहिओ रन्ना विवाय-वुत्तंतो गब्भाणुभाव-समुल्लसंत-समईए भणियं देवीए-'इत्थीणं विवाओ इत्थीणं चेव वियारिउं जुज्जइ त्ति। अहं विवायच्छेयं करिस्सं।'

रन्ना सविम्हएण देवीए समं गंतूण सहाए सद्दावियाओ ताओ। पुव्वं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

व पुट्ठाओ सव्वं पि । देवीए वि विवाय-निन्नयं चिंतिऊण भणियं जहा- 'मम गब्भे तिन्नाण-सणाहो अत्थि तित्थयरो । सो य जाओ एयस्स असोय-तरुणो तले एयं विवायं छिंदिस्सइ । ता तुब्भे दुवे वि एत्तियं कालं पडिक्खह ।' विमायाए भणियं- 'एवं होउ' त्ति । मायाए पुण वुत्तं- 'तुमं सव्वन्नु-माय त्ति अज्जरु(?अज्जेव) करेसु निन्नयं, नाहं एत्तियं कालं सवत्ति-आयत्तं पुत्तं वित्तं च करिस्सं ।' विभाविऊण भणियं देवीए- 'कालक्खेवाऽसहत्तणेण नूणं इमीए चेव एसो पुत्तो । जओ परसंतीए पुत्ते वित्ते अ उभयायत्ते कीरमाणे किं मे विणस्सइ त्ति काल-हरणं सहेइ विमाया । जणणी पुण पुत्तं वित्तं च उभयायत्तं कीरमाणं सोढुमक्खमा कहं काल-हरणं सहेइ ? ता भद्दे ! जं तुमं काल-हरणं न सहसे, तं नायं तुह चेव पुत्तो इमो त्ति गिण्हसु पुत्तं ।

इयराए लालिओ पालिओ वि पुत्तो इमो तुह च्चेव ।
जह पोसिओ वि काईइ कोइलो कोइला-सुओ' ॥१३७५॥

गब्भ-पभावेणं देवीए विवाय-निन्नए विहिए ।
नरवइ-पमुहो लोओ सव्वो वि हु विम्हयं पत्तो ॥१३७६॥

दारय-माय-विमायाओ कमलिणी-कुमुइणीओ व पभायाए,
वियसिय मिलाण-मुहकमल-कइरवाओ गयाओ गिहं ।
गब्भो य लहुकरणुज्जओ व्व देवीइ पीडमकुणंतो,
कंदो व्व धरणि-मज्झे कमेण वुड्ढिं समणुपत्तो ॥१३७७॥

मासेसु नवसु अद्धट्ठमेसु तह वासरेसु वइसाहे ।
सेयाए अट्ठमीए महरिक्ख-गए मयंकम्मि ॥१३७८॥

जच्च-सुवण्ण-सवण्णं कुंचंकं पसवए कयाणंदं ।
पुव्व-दिस व्व दिणिंदं सुय-रयणं मंगलादेवी ॥१३७९॥

खणमुज्जोओ तिजए जाओ सुक्खं पि नारयाणं पि ।
अहवा सुपुरिस-जम्मो कस्स न हरिसावहो होइ ॥१३८०॥

अहलोआओ चलियासणाओ जाणिय-जिणिंद-जम्माओ ।
अट्ठ-दिसाकुमरीओ जिण-जम्महरम्मि पत्ताओ ॥१३८१॥

भोगंकरा भोगवई सुभोगा भोगमालिणी ।
तोयधारा विचित्ता य पुप्फमाला अणिंदिया ॥१३८२॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तिं-पयाहिऊण जिणं जिणिंद-जणणिं च वंदिऊण तहा ।
एवं भणंति 'जय-दीव-दाइए देवि ! तुज्झ नमो ॥१३८३॥

अहलोयाओ वयमागयाओ जिण-जम्म-महिम-करणत्थं ।
ता न तए भेयव्वं' ति भणिय विरयंति सूइहरं ॥१३८४॥

मणिथंभ-सहस्स-जुयं संवट्टय-वाउणा तण-रयाइं ।
आजोयणमवहरियं गायंतीओ य चिट्ठंति ॥१३८५॥

एवं मेरु-सिर-ट्ठियाओ उड्ढलोय-वासिणीओ अट्ठ-

मेहंकरा मेहवई सुमेहा मेहमालिणी ।
सुवच्छा वच्छमित्ता य वारिसेणा बलाहिया ॥१३८६॥

गंधोदएण समंतओ महिं सिंचिऊण पंचवण्ण-कुसुम-वुट्ठिं कुणंति ।

एवं पुव्व-रुयग-वत्थव्वाओ अट्ठ-

नंदुत्तरा तहा नंदा आणंदा नंदिवद्धणा ।
विजया वेजयंती य जयंती अपराजिया ॥१३८७॥

एयाओ आयंसहत्थाओ चिट्ठंति ।

एवं दाहिण-रुयग-वत्थव्वाओ अट्ठ-

समाहारा सुप्पदिन्ना सुप्पबुद्धा जसोहरा ।
लच्छीवई सेसवई चित्तगुत्ता वसुंधरा ॥१३७८॥

एआओ भिंगारकराओ चिट्ठंति ।

एवं पच्छिम-रुयग-वत्थव्वाओ अट्ठ-

इलादेवी सुरादेवी पुहवी पउमावई ।
एगनासा नवमिया भद्दा सिया य अट्ठमा ॥१३८९॥

एयाओ तालियंट-हत्थाओ चिट्ठंति ।

एवं उत्तर-रुयग-वत्थव्वाओ अट्ठ-

अलंबुसा मिस्सकेसी पुंडरीका य वारुणी ।
हासा सव्वप्पहा चेव हिरी सिरी य अट्ठमा ॥१३९०॥

एयाओ चामर-कराओ चिट्ठंति ।

एवं विदिसि-रुयग-वत्थव्वाओ चत्तारि-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चित्ता य चित्तकणगा सतेरा य सोयामणी ।
एयाओ दीवय-हत्थाओ चिट्ठंति ।
एवं मज्झिम-रूयग-वत्थव्वाओ चत्तारि -
रूवा रूवंसिया चेव सरूवा रूयगावई ॥१३९१॥

एयाओ चउरंगुल-वज्जं नाहि-नालं कप्पिऊण खणित्ता वियरगं तत्थ तं खिवंति । तं च रयणेहिं पूरंति । तत्थ हरियालियाए पीढं बंधंति । तिदिसं कयलीहरए विउव्वंति । ताण मज्झे चाउसालए विउव्वंति । ताणं च मज्झे सीहासणे तिन्नि विउव्वंति । तित्थयरं करयलेणं तित्थयर-मायरं च बाहाहिं गिण्हिऊण दाहिणिल्ल-कयलीहरय-चाउसाले गंतूण सीहासणे निवेसंति । सयपाग-सहस्सपाग-तेल्लेहिं' अब्भंगंति, सुरहिणा उव्वट्टणेण उव्वट्टंति । दो वि तहेव घेत्तूण पुव्व-कयलीहर-चाउसाले गंतूण 'सीहासणे निवेसंति । गंधोदएहिं ण्हाविंति । सव्वालंकार-विभूसिए काऊण दो वि तहेव उत्तरिल्ल-कयलीहर-चाउसाले नेऊण सीहासणे निवेसंति । हिमवंत-गोसीस-चंदण-कट्ठेहिं अग्गिहोमं काऊणं दोण्हं पि रक्खा-पोट्टलियाओ बंधंति, दुवे रयण-गोलए गहिऊण 'पव्वयाऊ होसु ।' त्ति भणंतीओ जिणस्स कन्नमूलम्मि खोट्टंति । दो वि तहेव गहिऊण जम्मण-भवणे सेज्जाए निसियाविंति ॥

इओ य-

सक्को सिंहासण-कंप-संपउत्तोहि-मुणिय-जिण-जम्मो ।
गंतूण जिणाभिमुहं सत्तट्ठ-पयाइं हिट्ठमणो ॥१३९२॥
पंचंग-पणामं विरइऊण सक्कत्थयं पढइ तत्तो ।
'सिंहासणम्मि ठाउं आणावइ णेगमेसि-सुरं ॥१३९३॥ जहा-

जंबुद्दीवे भरह-मज्झिम-खंडे अओज्झाए पुरीए मेह-रण्णो मंगलादेवीए पुत्तो पंचमो तित्थयरो समुप्पन्नो । तस्स जम्म-महिम-करणत्थं सव्वे देवे सपरिवारे हक्कारेसु । गंतूण तेण सुहम्माए सहाए अप्फालिया सुघोस-घंटा । तीए य समं एगूणबत्तीस-लक्ख-विमाणेसु घंटाओ महुर-गाइणीइ व्व समं पक्खगाइणीओ रणिउं पवत्ताओ । तासिं च पडिसद्देहिं सद्दमओ व्व जाओ जीवलोओ । तेण महया सद्देण उग्घुट्ठो सक्काएसो, मिलिया सव्वे सव्विड्ढीए सुरा । सक्को वि पालयं नाम

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आभिओगिअं आणवेइ । अप्पमाण-मणि-दिप्पमाणं विमाणं निम्मवेहि त्ति । सो वि चक्खुमंतं व गवक्खेहिं, बाहुमंतं व कणय-ज्झएहिं, दंतुरं व रयण-वलभीहिं, रोमंचियं व कंचण-कलसेहिं, लक्ख-जोयण-वित्थारं पंच-जोयण-सय-तुंगं तं विउव्विऊण सक्कस्स विन्नवेइ । सक्को वि समं अट्ठहिं अग्गमहिसीहिं चउरासीएहिं सामाणिय-सहस्सेहिं, तेसिं च चउगुणेहिं अंगरक्खेहिं, तेत्तीसाए तायत्तीसेहिं, तिहिं परिसाहिं, सत्तहिं अणियाहिवइहिं, सत्तहिं अणिएहिं, चउहिं लोगपालेहिं परिवुडो तं विमाणमारुहइ । अन्नेसिं च देवाणं बहूहिं विमाणेहिं परिवारियं तं विमाणमाणंदं नंदी-निनाय-पूरियंबरं सोहम्मकप्पस्स मज्झेण उत्तराभिमुहमुत्तरंतं, असंखे दीव-समुद्दे समुल्लंघिऊण पत्तं नंदीसर-दीवं । तत्थ य दाहिण-पुव्वे रइकर-वर-पव्वयम्मि सुरवइणा सत्थं व सुमइणा तं संखित्तं झत्ति निम्मवियं पत्तं अउज्झाए, सक्को वि तेण विमाणेण दिणमणि व्व मेरुं जिण-जम्म-भवणं पयाहिणीकरेइ । ईसाण-कोणे ठविऊण तं गओ भयवओ समीवं, पणमिऊण तं थोउं पवत्तो-

कारुण्णामय-पूर-पूरिय-मणो मुत्तूण सव्वुत्तमं,
सग्गं उद्धरिउं जणं भव-महा-कूवार-मज्जंतयं ।
ओइन्नो तुममित्थ जं अवगयं तं अप्प-कज्जुज्जमं,
वज्जित्ता परकज्ज-सज्ज-हियया जायंति संतो जणा ॥१३९४॥

मन्ने चक्खु-सहस्स-मज्झ सहलं जं सव्व-तेयस्सिरी,
संकेयावसहं सहाव-सुहयं रूवं निरूवेमि ते ।
निस्सीमं पुण पव्वणिंदु-किरणुक्केराभिरामं गुण-
ग्गामं थोउमणो महामि भयवं ! जीहा-सहस्सं मुहे ॥१३९५॥

अहं खु सोहम्मवई सुरिंदो पुत्तस्स ते जम्म-महूसवत्थं समागओ, ता तुमए न देवि ! भयं विहेयव्वमिमं भणंतो नमंसए देविमिमीइ देइ ओसोअणिं, तीइ समीव-देसे "मिल्हेइ सामि-प्पडिरूवयं च, सो पंचरूवाइं सयं करेइ ।

एक्केण गिण्हेइ जिणं करेहिं अन्नेण पिट्ठम्मि वहेइ छत्तं ।
पासेसु दोहिं चमरे धरेइ परेण वज्जं पुरओ करेइ ॥१३९६॥

ता तूर-संघाय-निनाय-रुद्ध-
नहंगणो वग्गिर-देव-वग्गो ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नच्चंत देवी वि सुरो सुरिंदो
सुमेरु-सिंगम्मि खणेण पत्तो ॥१३९७॥

चूलाइ दाहिण-दिसट्ठियाइ अइपंडु-कंबलसिलाए ।
सिंहासणे निसन्नो उच्छंगे जिणवरं काउं ॥१३९८॥

अह महा-घोसा-घंटा-पडिबोहिएहिं अट्ठावीस-विमाण-लक्खवासि-तियसेहिं परिवुडो सूलपाणी वसह-वाहणो पुप्फगाभिओगिय-कए पुप्फग-विमाणे आरूढो । ईसाण-कप्पस्स मज्झेण दक्खिणाभिमुहमुत्तरंतो नंदीसर-दीवे उत्तर-पुव्वे रइकर-पव्वए संखिविय-विमाणो पत्तो मेरुं ।

एवं सेसा वि तत्थ पत्ता, एवं पुण नाणत्तं सोहम्म-सणंकुमार-बंभलोय-महासुक्क-पाणय-इंदाणं सुघोसा घंटा । नेगमेसी पायत्ताणीयाहिवई उत्तरिल्ला निज्जाणभूमी दाहिण-पुरत्थिमे रइकर-पव्वए । ईसाण-माहिंद-लंतग-सहस्सार-अच्चुय-इंदाणं महाघोसा घंटा लहुपरक्कमो पायत्ताणीयाहिवई । दक्खिणील्ले निज्जाण-मग्गे उत्तरपुरत्थिमे रइकर-पव्वए ।

बत्तीसट्ठावीसा बारस अट्ठ चउरो सयसहस्सा ।
पन्ना चत्तालीसा छत्त सहस्सा सहस्सारे ॥१३९९॥

आणय-पाणय-कप्पे सयाइं चउ आरणऽच्चुए तिन्नि ।
एसा विमाण-संखा सोहम्माईसु विन्नेया ॥१४००॥

सामाणिय-संखा इमा-

चउरासीइ असीई बावत्तरि सत्तरी य सट्ठी य ।
पन्ना चत्तालीसा तीसा वीसा दससहस्सा ॥१४०१॥

एएसिं चउगुणा आयरक्खा विमाणकारिणो इमे ।

पालय पुप्फय सुमणस सिरिवच्छे चेव नंदियावत्ते ।
कामगमे पीइगमे मणोरमे सव्वओभद्दे ॥१४०२॥

एवं चमराईया वीसं भवणवई इंदा मेरुम्मि संपत्ता । नाणत्तं पुण इमं । असुरिंदस्स चमरस्स चमरचंचा रायहाणी, चउसट्ठी सामाणिय-सहस्सा, दुमो पायत्ताणीयाहिवई विमा[णमा]णं पन्नास-जोयण-सहस्साइं । एवं असुरिंदस्स बलिस्स बलिचंचा रायहाणी । सट्ठी सामाणिय-सहस्सा । महादुमो पायत्ताणीयाहिवई पुव्वं व विमाण-माणं । एवं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नागिंदस्स धरणस्स छ सामाणिय-सहस्सा, विमाणमाणं पंचवीस-जोयण-सहस्साइं । एवं असुरिंद-वज्जाणं भवणवासि-इंदाणं नवरं दाहिणिल्लाणं असुराणं ओघसरा घंटा । उत्तरिल्लाणं महोघसरा । नागाणं मेघसरा । सुवन्नाणं हंससरा । विज्जूणं कुंचसरा । अग्गीणं मंजुसरा । दिसाणं मंजुघोसा । उदहीणं सूसरा । दीवाणं महुरस्सरा । वाऊणं नंदिसरा । थणियाणं नंदिघोसा ।

चउसट्ठी सट्ठी खलु छच्च छच्च सहस्सा उ असुर-वज्जाणं ।
सामाणिया उ एए चउग्गुणा आयरक्खाओ ॥१४०३॥

दाहिणिल्लाणं पायत्ताणीयाहिवई भद्दसेणो । उत्तरिल्लाणं दक्खो । वाणमंतरा जोइसिया वि एवं चेव, नवरं चत्तारि सामाणिय-सहस्सा, विमाणं सहस्स जोयणाइं । घंटा दाहिणाणं मंजुसरा, उत्तराणं मंजुघोसा । चंदाइच्च-पमुहाणं जोइसियाणं सुस्सर-निग्घोसाओ घंटाओ । एवं सव्वे मेरुम्मि इंति । अच्चुइंदो आभिओगिए आणवेइ— जिण-जम्म-मज्जणोवगरणाइं आणेह । ते वि 'सोवन्नियाणं रुप्पमयाणं रयणमयाणं सुवन्न-रुप्पमयाणं सुवन्न-रयणमयाणं रुप्प-रयणमयाणं भोमाणं कलसाणं भिंगाराणं दप्पणाणं रयणकरंडगाणं थालाणं पाईणं सुप्पइट्ठाणं पुप्फचंगेरीणं पत्तेयं पत्तेयं अट्ठुत्तर-सहस्सं विउव्वंति । कलसे भिंगारे य घेत्तूण खीरसमुद्दं वच्चंति । तत्थ खीरोयं उप्पलाईणि य गिण्हंति । पुक्खरोयस्स मागहाईणं तित्थाणं गंगाईणं महानईणं पउमाईणं च दहाणं उदयं मट्टियं पउमाईणि गिण्हंति । चुल्लहिमवंत-पमुहाणं कुलपव्वयाणं नंदणाईणं च वणाणं सव्वोसहि-पुप्फगंध-वर-सिद्धत्थए गिण्हंति' मेरु-मत्थयमुविंति । अह अच्चुइंदो दसहिं सामाणिय-सहस्सेहिं तेत्तीसाए तायत्तीसेहिं चउहिं लोगपालेहिं तिहिं परिसाहिं सत्तहिं अणिएहिं सत्तहिं अणियाहिवईहिं चत्तालीसाए आयरक्ख-देव-सहस्सेहिं परिवुडो परिमल-मिलंत-मत्तालि-जाल-परिगय-पारियाय-पमुह-सुरद्दुम-कुसुमंजलिं मोत्तूण चंदण-चच्चिएहिं मंदारमालुम्मालिएहिं सुरहि-वारि-[10]पडिपुन्नेहिं पुव्ववन्निय-कलसेहिं भिंगारेहिं य तित्थयरं अभिसिंचइ ।

तम्मि अभिसेय-समए ठिया सुरवरा,
के वि भिंगार-गुरुकलस-दप्पण-करा ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

के वि उक्खित्त-लोलंत-सिय-चामरा,
के वि मणिघंटिया-धूवभायण-धरा ॥१४०४॥

के वि गायंति गीयाइं किन्नर-सरा,
के वि वाइंति तूराई साडंबरा ।
के वि नच्चंत कंपंत सुरगिरि-सिरा,
के वि कित्तंति जिण-गुण-गणं गुरु-गिरा ॥१४०५॥

के वि जिण-उवरि धारंति छत्तं वरं,
के वि वरिसंति मणि-कणय-कुसुमुक्करं ।
के वि चिट्ठंति कुसुमंजली-हत्थया,
के वि ण्हवणंबु वंदंति नय-मत्थया ॥१४०६॥

के वि दीसंति तुरय व्व हेसंतया,
के वि मयमत्त-हत्थि व्व गज्जंतया ।
के वि सीह व्व नायं वि मुंचंतया,
के वि विज्जु व्व उप्पईय-निवयंतया ॥१४०७॥

अह न्हवण-खीर-नीरच्छडाओ छज्जंति उच्छंलतीओ ।
सीसाओ सामिणो अंकुर व्व नव-सुकय-कंदस्स ॥१४०८॥

ण्हवण-जलं वित्थरियं सिरम्मि पहुणो सियायवत्त-सिरिं ॥
भालयले उण चंदण-नलाडिया-विब्भमं वहइ ॥१४०९॥

मुत्तालंकिय-ताडंक-संकमं केसु कुणइ कन्नाणं ।
कप्पूर-पत्त-वल्ली-तुल्लं रेहइ कवोलेसु ॥१४१०॥

अहरेसु धरइ पसरंत-दंत-किरणुक्करस्स सोहग्गं ।
कंठो व कंठदेसे हरेइ हारावलि-विलासं ॥१४११॥

उव्वहइ बाहु-सिहरे हरियंदण-बहल-वासय-समिद्धिं ।
बाहु-उअर-पट्ठि-भाएसु सहइ सिय-चोलयच्छायं ॥१४१२॥

एवं अच्चुय-नाहेण निम्मिए जिणवरस्स अभिसेए ।
अप्पा पवित्तिओ जं पडिहासइ तं महच्छरियं ॥१४१३॥

गायाइं गंधकासाईएहिं लूहइ जिणस्स सुरनाहो ।
हरियंदणेण लिंपइ अच्चइ दिव्वेहिं कुसुमेहिं ॥१४१४॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मोत्तूण कुसुम-पयरं पुरओ उग्गाहिऊण धूयं च ।
चिट्ठइ कयंजली सो सत्तट्ठ-पयाइ ओसरिउं ।।१४१५।।

इय सेसा वि सुरिंदा कुणंति सामिस्स मज्जणाईयं ।
ईसाणिंदो सक्को व्व विरयए पंच-रूवाइं ।।१४१६।।

एक्केण जिणं अंके घेत्तुं सीहासणे निसन्नो सो ।
अवरेण वहइ छत्ते दोहिं पुण चामरे धरइ ।।१४१७।।

अन्नेण सूलपाणी पुरओ चिट्ठइ तओ कुणइ सक्को ।
वसहे फलिह-मणिमए चत्तारि चउद्दिसं पहुणो ।।१४१८।।

तेसिं सिंगेहिंतो समुच्छलंतीओ सलिल-धाराओ ।
गयणे मिलिउं एगत्थ सामि-सीसम्मि निवडंति ।।१४१९।।

ईय अइ-विच्छड्डेणं ण्हविऊण जिणं विलिंपए सक्को ।
गोसीस-चंदणेणं रयणाभरणेहिं भूसेइ ।।१४२०।।

दिव्व-कुसुमेहिं अच्चइ तो पहुणो रुप्प-तंदुलेहिं पुरो ।
आलिहइ मंडले अट्ठ तयणु आरत्तियं कुणइ ।।१४२१।।

बाल-प्रवालारुण-पाद-पातैः स्थलारविंदानि वितन्वतीभिः ।
सिंजान-मंजीरक-लक्षणेन संगीतमुच्चैरुपचिन्वतीभिः ।।१४२२।।

हेला-समुत्क्षिप्त-पदापदेशोल्लसन्मनोजद्विप-पुष्कराभिः ।
काञ्चीकलाप-क्वणित-च्छलेन प्रबोधितानङ्ग-महाभटाभिः ।।१४२३।।

लावण्य-पीयूष-निवास-वापी प्रकाशयंतीभिरगाधनाभीम् ।
अनङ्ग-मातङ्ग-मदाम्बु-धाराभिराम-रोमावलि-मालिनीभिः ।।१४२४।।

कंदर्प्प-साम्राज्य-पदाभिषेक-कुंभानुकारि-स्तनमण्डलाभिः ।
नानाङ्गहार-भ्रमि-घूर्ण्णमान-हारावली-राजदुरस्थलाभिः ।।१४२५।।

सलिल-विक्षिप्त-कराग्र-चंचन्नख-प्रभा-पल्लवितां स्वराभिः ।
संपूर्ण-चन्द्र-प्रतिमान नाभिः निसर्ग-शोणाधर-पल्लवाभिः ।।१४२६।।

विवृत्त-मीन-प्रमदा-समान-कटाक्ष-शुभ्रीकृत-दिग्मुखाभिः ।।
प्रवृत्त-पुष्पायुध-चाप-चारु-भ्रूवल्लरी-ताण्डव-डम्बराभिः ।।१४२७।।

कपोल-पाली-परिघट्टमान-माणिक्य-रत्नाञ्चित-कुण्डलाभिः ।
आमुक्त-मुक्तफल-जाल-शोभा-स्वेदोदबिन्दु-स्फुरितालिकाभिः ।।१४२८।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मुखारविन्दानुग-भृंगमाला-संपन्न-लोलालक-मालिकाभिः।
परिश्रमावेश-विशीर्ण-बंध-धम्मिल्ल[11]-माल्यार्च्चित-कुट्टिमाभिः॥१४२९॥

आरात्रिकोत्तारणमादधाने शक्रे पुरस्ताज्जिनपुङ्गवस्य।
प्रमोदिताखण्डल-मण्डलास्यं लास्यं वितेने सुरसुंदरीभिः ॥ १४३०॥

नमइ जिणिंदं सक्को तत्तो रूवाइं पंच काऊणं ।
मेरुनयणक्कमेणं जम्मण-भवणम्मि आणेइ ॥१४३१॥

पडिरूवं संहरिउं हरिउं ओसोयणिं च जणणीए ।
पासम्मि मेल्लइ[12] जिणं, तस्स सीसम्मि वत्थ-जुयं ॥१४३२॥

मणिकुंडल-जुयलं तह ठवइ वियाणे पलंबमाणं व ।
सिरिदामगंडमेगं नाणाविह-रयण-दिप्पंतं ॥१४३३॥

दिट्ठि-विणोय-निमित्तं पहुणो अह सुरवई भणइ धणयं ।
मणि-कणय-हिरन्नाणं, कोडीओ ठवसु बत्तीसं ॥१४३४॥

तह नंदासण-भद्दासणाइं जम्मणहरम्मि बत्तीसं ।
अन्नं पि जं' मणोण्णं वत्थाई ठवसु तं सव्वं ॥१४३५॥

सो तं जंभग-देवेहिं कारवित्ता कहेइ सक्कस्स ।
सक्को वि आभिओगिय-देवे एवं समाइसइ ॥१४३६॥

उग्घोसह एयं-'देवा देवीओ सुणह सव्वेवि ।
तित्थयरस्स भयवओ तित्थंकर-माउयाए वा ॥१४३७॥

असुहं मणं करिस्सइ जो अज्जग-मंजरि व्व तस्स सिरं ।
फुट्टिहइ सत्तहा' ते वि तं पयत्तेण घोसंति ॥१४३८॥

न पियइ थणं जिणिंदो छुहिओ तिसिओ अ निययमंगुट्ठं ।
पक्खिवइ मुहे तम्मि य सक्को संकामए अमयं ॥१४३९॥

जिण-मंदिराओ सक्को सेसा उण मंदराओ देविंदा ।
नंदीसरम्मि पत्ता कुणंति सासय-पडिम-पूयं ॥१४४०॥

सक्को पुव्वे अंजणगिरिम्मि अह उत्तरम्मि ईसाणो ।
चमरो य दाहिणिल्ले बली पुणो पच्छिमिल्लम्मि ॥१४४१॥

तेसिं च लोगपाला चउरो चउरो कुणंति जिण-महिमं ।
अंजणगिरीण चउदिस-ठिएसु सोलस-दहिमुहेसु ॥१४४२॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वेमाणिय-जोइस-भवणवासि-वंतरवई सपरिवारा ।
इय जिण-महिमं काउं सव्वे वच्चंति स-ट्ठाणं ॥१४४३॥

जाए पहाय-समए मेह-नरिंदेण नियय-नयरीए ।
नच्चंत-नारि-नियरं वद्धावणयं कयं रम्मं ॥१४४४॥

जं गब्भ-गए नाहे जणणीए सोहणा मई जाया ।
तेण सुमइ त्ति नामं पइट्ठियं सामिणो पिउणा ॥१४४५॥

वारं वारं बालं पेच्छंतो मेह नरवइ नाहं ।
मन्नइ अमय-महद्दह-निमज्जमाणं व अप्पाणं ॥१४४६॥

राया कयाइ कंठे कयाइ हियए कयाइ उच्छंगे ।
सीसे कयाइ धारइ महग्घ-माणिक्कमिव सामिं ॥१४४७॥

पहुणो सुरंगणाओ धाविउं कंति-सलिल-वावीओ ।
सक्क-गिराए पासं देहच्छाय व्व न मुयंति ॥१४४८॥

अंकाओ उत्तरिऊण धाविओ पिंडधाविरिं धाविं(?) ।
खेएइ निब्भओ सो सीहिं केसरि-किसोरु व्व ॥१४४९॥

कीलाए धावमाणस्स सामिणो अग्गओ सुर-कुमारा ।
धावंति वलिय-गीवा करि-कलहस्सेव पडिकारा ॥१४५०॥

लीलाए पाडिएसुं तेसु भणंतेसु रक्ख रक्ख त्ति ।
नर-कुंजरो सकरुणो सिसू वि सदया सया वि जिणा ॥१४५१॥

दप्पण-गय-पडिबिंबं रय-मल-पासेय-रोय-रहियं पि ।
सुरहित्तणमवहंतं कहं पहु-देहस्स होइ समं ॥१४५२॥

पहुणो नीरायमणस्स परिचयं पाविउं व संजायं ।
गो-खीर-हार-धवलं रुहिरं मंसं च देहत्थं ॥१४५३॥

आहारो नीहारो य मंस-चक्खूण जं अपच्चक्खो ।
कित्तेमि कित्तियं तं पहुणो लोउत्तरं चरियं ॥१४५४॥

पहुणो नीसास-समीरणेण सुरहीकयम्मि गयणयले ।
तियस-तरु-कुसुम-परिमल-भंतीए भमंति भमर-गणा ॥१४५५॥

सामी सिसुत्तणं लंघिऊण सूरो पहाय-समयं व ।
विप्फुरिय-फार-तेयं कमेण तरुणत्तणं पत्तो ॥१४५६॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ति-धणुस्सय-तुंग-तणू पीणक्खंधो पलंब-भुयसाहो ।
सोहइ भुवण-वणम्मि जंगमो कप्परुक्खो व्व ॥१४५७॥

हियायाओ निच्छूढो तत्थ पवेसं पुणो वि पत्थंतो ।
रागो सेवं कुणइ व्व सामिणो चलण-तल-लग्गो ॥१४५८॥

दस-दिस-पसरिय-मोहंधयार-हरणुज्जयस्स जय-पहुणो ।
उम्मुह-पहा पय-नहा दिप्पंति दसप्पईव व्व ॥१४५९॥

दसविह-जइधम्म-सिरीण विब्भमायंस-विब्भमा पहुणो ।
अरुणंगुलि-विदुम-हत्थएसु रेहंति चलण-नहा ॥१४६०॥

अइ-दुद्धरमुद्धरियं जइ-सावय-धम्म-धर-दुगं पहुणो ।
अवइन्ना करुणाए कुम्म व्व समुण्णया चलणा ॥१४६१॥

सामिस्स ऊरुदंडा रसणा-मणि-किरण-तोरण-सणाहा ।
सिद्धि-नयरी-दुवारे रंभा-खंभ व्व रेहंति ॥१४६२॥

रेहइ पहुणो नाही कारुन्न-सुहारसस्स वादि व्व ।
दुट्ठट्ठ-कम्मगिरि-चूरणम्मि वज्जं व तणु-मज्झं ॥१४६३॥

कंचणसिला-सरिच्छे छज्जइ वच्छत्थलम्मि सिरिवच्छो ।
पहुणो केवललच्छी-निहिणो मुद्दा-निवेसो व्व ॥१४६४॥

तस्स य रक्खा-भुयग व्व पाणि-फण-दिप्पमाण-नह-मणिणो ।
दुग्गइ-दुग-पुर-परिहा सरला रेहंति भूय-दंडा ॥१४६५॥

पहुणो नाणोअहिणो कंठो कंबो व्व गहिर-निग्घोसो ।
विदुम-मणि व्व अहरो सहइ मुहं चंद-बिंबं व ॥१४६६॥

भमुहाओ तस्सेव य सहंति सेवाल-वल्लरीओ व्व ।
नयणाइं पंकयाइं व नासा-नालग्ग-लग्गाइं ॥१४६७॥

पहुणो सवणा सिरी-सरसईण हिंदोलय व्व सोहंति ।
वयण-कमलावलंबिर-रोलंब-विडंबिणो विहुरा ॥१४६८॥

पहुणो तणु-कंति-तरंगिणीइ विलसंतया मयच्छीण ।
छज्जंति मच्छ-रिंछोलि-सच्छहा अच्छि-विच्छोहा ॥१४६९॥

पिउणो उवरोहेणं परिणेइ पहू नरिंद-कन्नाओ ।
जेण जणयाण आणा अलंघणिज्जा जिणाणं पि ॥१४७०॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भोग-फलं निय-कम्मं खविउं सामी रमेइ ताहि समं ।
मूलाओ वि तित्थयरा कम्म-च्छेउज्जया जम्हा ॥१४७१॥

दससु गएसुं जम्माओ पुव्व-लक्खेसु मेह-राएण ।
अब्भत्थिऊण गाढं रज्जम्मि निवेसिओ सामी ॥१४७२॥

गुरु-पय-मूले गहिउं मेह-नरिंदो सयं समण-दिक्खं ।
कय-तिव्व-तवच्चरणो निय-कज्ज-पसाहओ जाओ ॥१४७३॥

रज्जे ठियस्स पहुणो जं पणया पत्थिवा न तं चोज्जं ।
जं तस्स किंकरा बालभावओ वासवा सव्वे ॥१४७४॥

भमुहा वि न कस्सइ उवरि कोववसओ चडाविया पहुणो ।
चाव-चडावण-वत्ता वि केरिसी तस्स रज्जम्मि ॥१४७५॥

पहुणो रज्जे मोहं किरणं चिय वसणमंबरं चेव ।
सोयं सुइत्तणं चिय लोहं धाउं चिय भणंति ॥१४७६॥

मुणिणो चेव समरया च्छित्ताइं चिय अणीइजुत्ताइं ।
सिद्धंतो च्चिय समओ पहुम्मि रज्जं कुणंतम्मि ॥१४७७॥

परचक्क-भय-विमुक्का विगयायंका अदिट्ठ-दुब्भिक्खा ॥
संपत्त-सयल-सुक्खा पहु-रज्जे सुत्थिया लोया ॥१४७८॥

किंतु पहुणो पयावेण साहिए सयल-महियले भिच्चा ।
अणपाविय-सामि-पसाय-निक्कया बहु किलम्मंति ॥१४७९॥

एगूणतीस लक्खा पुव्वाण तहा दुवालसंगाइं ।
अइवाहियाइं पहुणा सुहेण रज्जं कुणंतेण ॥१४८०॥

गब्भाओ च्चिय नाणत्तएण जुत्तो जिणो सयं बुद्धो ।
संसार-सरूवमिणं मणम्मि परिभावए एवं ॥१४८१॥

संसारे विसय-सुहं विसमीहिय-भोयणं व मुह-महुरं ।
परिणाम-दारुणं बुज्झिऊण उज्झइ न को मइमं ? ॥१४८२॥

चुलसीइ जोणि-लक्खेसु संसरंताण एत्थ जीवाणं ।
मणुयत्तं दुलहं ऊसरम्मि सुस्साउ-सलिलं व ॥१४८३॥

लद्धूण वि मणुयत्तं मूढेहिं विसय-सेवणपरेहिं ।
अमयं व निग्गमिज्जइ चलण-प्पक्खालणेण मुहा ॥१४८४॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इय चिंतंतो सामी आगंतुं मागहेहि व सुरेहिं ।
लोयंतिएहिं वुत्तो 'भयवं ! तित्थं पवत्तेहि' ॥१४८५॥

भणियं च-

सारस्सयमाइच्चा वण्ही-वरुणा य गद्दतोया य ।
तुसिया अव्वावाहा अग्गिच्चा चेव रिट्ठा य ॥१४८६॥

एए देव-निकाया भयवं बोहंति जिणवरिंदं तु ।
सव्व-जगज्जीव-हियं भयवं ! तित्थं पवत्तेहि ॥१४८७॥

तओ संवच्छरियं दाणं दाउं पयट्टो भयवं । अह सक्काणत्त-धणय-जक्ख-चोइया तिरिय-जंभगा देवा नट्ठाणि वा भट्ठाणि वा पहीण-सामियाणि वा पणट्ठ-सेउयाणि वा गिरि-कंदर-गयाणि मसाणट्ठाण-निहियाणि घरंतर-गोवियाणि हिरन्न-सुवन्न-रयण-निहाणाणि सव्वओ समाहरिऊण अओज्झाए नयरीए सिंघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर-चउमुह-महापह-पहेसु नगर-निग्गम-प्पवेसट्ठाणेसु पुंजीकरंति । अन्नत्थ पुण महाणसिया जहिच्छियाहारसारे सत्तागारे पयट्टावंति । किं बहुणा ? जो जं मग्गए तस्स तं दिज्जए ।

भणियं च-

संवच्छरेण होही अभिनिक्खमणं च जिणवरिंदाणं ।
तो अत्थ-संपयाणं पवत्तए पुव्व-सूरम्मि ॥१४८८॥

एगा हिरन्न-कोडी अट्ठेव अणूणगा सयसहस्सा ।
सूरोदयमाईयं दिज्जइ जा पायरासं तु ॥१४८९॥

संघाडग-तिग-चच्चर-चउक्क-चउमुह-महापह-पहेसु ।
दारेसु पुरवराणं [13]रत्थामुह-मज्झयारेसु ॥१४९०॥

वरवरिया घोसिज्जइ-'किमिच्छियं दिज्जए बहुविहीयं' ।
सुर-असुर-देव-दाणव-नरिंद-महियाण निक्खमणे ॥१४९१॥

तिन्नेव य कोडिसया अट्ठासीइं च हुंति कोडीओ ।
असिइं च सयसहस्सा एवं संवच्छरे दिन्नं ॥१४९२॥

कालाणुभावओ तित्थयराणुभावओ य किमिच्छिय-पयाणे वि न समहिय-गाहगा ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एवं संवच्छरमच्छिन्नं सुवन्न-वारि-धाराहिं कयत्थीकाऊण दुग्गइ-बप्पीहए हयासेस-दुत्थो रज्जे निवेसए सच्चवीरिय-कुमारं । अह चउसट्ठि-सुरिंदा चलियासणा सपरिवारा समागया तत्थ विमाणारूढा पयाहिणीकाऊण [१४]भयवओ भवणं ओइन्ना विमाणेहिंतो पुणो पयाहिणीकाऊण भयवंतं पणमंति । जम्म-महूसवे व्व सव्वे सुरिंदा नरिंदा अभिसिंचंति गंधोदएहिं, निमज्जंति गंधकासाईएहिं, विलिंपंति गोसीस-चंदणेणं, परिहाविंति देवदूसेहिं, अलंकरंति किरीडाइ-रयणालंकारेहिं, विभूसंति संताणय-प्पमुह-कुसुममालाहिं । तओ कया अभयंकरा नाम पत्थिवेहिं कणय-रयणमई सिबिया, सुरिंदेहिं पि विउव्विया बीया सिबिया । सा वि पत्थिव-सिबियंतरे कालागरु व्व चंदणे अणुपविट्ठा । अच्चुइंदेण दिन्नहत्थो सक्कीसाणाहिं धुव्वंत-चामरो चमरिंदेण धरिय-धवलायवत्तो बलिंदेण पयडिय-पडिहारकम्मो सेसिंदेहिं कय-जय-जय-सद्दो आरूढो सिबियं, निसिन्नो सिंहासणे ।

पुव्विं उक्खित्ता माणुसेहिं सा हट्ठ-रोमकूवेहिं ।
पच्छा वहंति सीयं असुरिंद-सुरिंद-नागिंदा ॥१४९३॥

तओ पहएसु मंगलतूरेसु, नच्चंतीसु ससंरंभं रंभा-तिलुत्तमा-पमुहासु अच्छरासु, गायंतेसु गंधव्वेसु, पढंतेसु बंदिविंदेसु, आसंसंतीसु मंगलाइं गोत्त-वुड्ढविलयासु धवल-मुहलासु कुलमहिलासु चउद्दिसं वग्गंतेसु तियसवग्गेसु पलोइज्जमाणो विप्फारिय-नयणेहिं नायर-गणेहिं पडिच्छंतो पए पए तक्खय-मंगलाइं आणंदंतो अमय-वुट्ठीए व्व दिट्ठीए भुवणं पत्तो सहस्संबवणं । उइन्नो सिबियाओ, [१५]मिल्लिऊण मल्लालंकाराइं सुरिंद-निहित्तं देवदूसं खंध-देसे धरंतो वइसाह-सुद्ध-नवमीए पुव्वण्हे निच्च-भत्तेणं महारिक्ख-जोगमुवगए चंदे नरिंदाणं सहस्सेण समं सुमइसामी पंचमुट्ठियं लोयं करेइ । सक्को केसे निय-वासंते पडिच्छिऊण तक्खणा खिवइ खीरोए । सुरासुरनराणं मुट्ठिसन्नाए कलयलं इंदेण णिसिद्धं । भयवं पि सिद्धाण नमोक्कारं काऊण 'सव्वं मे पावं अकरणिज्जं' ति पइन्नं पडिवज्जइ, तक्कालमेव केवलनाणोवलंभ-सच्चंकारो व्व समुप्पन्नं सामिणो मणपज्जव-नाणं । तं च केरिसं ?

मणपज्जव-नाणं पुण जण-मण-परिचिंतियत्थ-पागडणं ।
माणुसखेत्त-निबद्धं गुणपच्चइयं चरित्तवओ ॥१४९४॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पहु-दिक्ख-गहण-समए उज्जोओ तिहुयणम्मि संजाओ ।
सोक्खं च निच्च-दुहियाण नारयाणं पि संपन्नं ॥१४९५॥

नमिउं जिणं नरिंदा गया स-नयरं सुरेसरा गंतुं ।
नंदीसरम्मि काउं जिणिंद-महिमं गया सग्गं ॥१४९६॥

अह बीय-दिणे भयवं विजयपुरे पउम-निवइणो भवणे ।
पारइ परमन्नेणं तो पंच हवंति दिव्वाइं ॥१४९७॥

गयणाओ वसुहारं मुयंति गंधोदयं कुसुमवुट्ठिं ।
वायंति दुंदुहीओ चेलुक्खेवं कुणंति सुरा ॥१४९८॥

घोसंति 'अहो दाणं सुदाणमेयं' ति ते नहयलम्मि ।
[16]पहु-पाय-पयट्ठाणे करेइ पउमो [17]रयणपीढं ॥१४९९॥

पूएइ तं तिसंझं पहु-पय-पउमं पवर-भत्तीए ।
भयवं पि अपडिबद्धो विहरइ पवणो व्व भुवणम्मि ॥१५००॥

विविहाभिग्गह-निरओ विसोढ-विविहोवसग्ग-संसग्गो ।
विविह-तवच्चरणपरो विविहासण-करण-कयचित्तो ॥१५०१॥

जिय-राग-दोस-पसरो जिइंदिओ जिय-परीसह-समूहो ।
जिय-कोह-माण-माया-लोहो जिय-मोह-भय-निद्दो ॥१५०२॥

सम-सत्तु-मित्त-वग्गो सम-तण-मणि-लेट्ठु-कंचणो निच्चं ।
सम-सुह-दुक्खो समरूव-गणिय-गरिहा-गुणपसंसो ॥१५०३॥

धम्मो व्व मुत्तिमंतो जंगम-भावं गओ व्व संतोसो ।
परसम-रस व्व सरीरी पच्चक्खो पुन्न-रासि व्व ॥१५०४॥

अपमाओ छउमत्थो वीसं वरिसाणि विहरिउं भयवं ।
एइ सहस्संबवणे दिक्खा-पडिवत्ति-ठाणम्मि ॥१५०५॥

झाणट्ठियस्स पहुणो पियंगु-मूले अउव्वकरणेण ।
खवगसेणिय-पवन्नस्स घाइ-कम्माइं तुट्टाइं ॥१५०६॥

चित्तस्स सुद्ध-एगारसीए महरिक्खमुवगए चंदे ।
पहुणो कय-छट्ठतवस्स केवलणाणमुप्पन्नं ॥१५०७॥

तक्कालं चिय अइ-तिक्ख-दुक्ख-विहुराण नारयाणं पि ।
जायं सुक्खं तह तिहुयणे विप्फुरिओ समुज्जोओ ॥१५०८॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चलियासणा सुरिंदा समागया नाण-महिम-करणत्थं ।
वाउकुमारा सोहंति भूमिमाजोयणं तत्तो ॥१५०९॥

मेहकुमारा गंधोदएण सिंचंति सव्वओ वसुहं ।
सा सुरहि-बाह-धूमेण सहइ उक्खित्त-धूव व्व ॥१५१०॥

बंधंति वंतरसुरा कंचण-मणिमय-सिलाहिं महिवीढं ।
अप्पाणं पुण घण-कम्मबंधणाओ विमोयंति ॥१५११॥

तत्थ अहोमुह-बिंटाइं महियलाओ व्व उग्गमंताइं ।
उउदेवीओ वरसंति पंचवन्नाइं कुसुमाइं ॥१५१२॥

चउसु वि दिसासु ते तोरणाइं तक्कंठ-भूसणाइं व ।
विरयंति रयण-माणिक्क-किरण[१८]-कय-सक्कचावाइं ॥१५१३॥

तेसु परोप्पर-पडिबिंबियाओ मणि-सालभंजियाओ दढं ।
सोहंति सुरवहुओ सहीहिं आलिंगियाओ व्व ॥१५१४॥

रेहंति तेसु मयरा मरगय-घडिया पलायमाणेण ।
भयवसओ मुक्का मयरकेउणा केउमयर व्व ॥१५१५॥

धवलाइं तेसु पहु-नाणलंभ-पाउब्भवंत-हरिसाण ।
हास व्व सव्व-दिससुंदरीण छज्जंति छत्ताइं ॥१५१६॥

तेसु विरायंति धया समोसरण-मउड-लाभ-तुट्ठाए ।
उत्तंभिया भुयाओ व नच्चिउकामाइ धरणीए ॥१५१७॥

रुप्पमयं पायारं बाहिं विरयंति जोयण-पमाणं ।
कंचणमय-कविसीसय-विरायमाणं भवणवइणो ॥१५१८॥

जोइसिया कणयमय-पायारं मज्झिमं विउव्वंति ।
मणि-निम्मिय-कविसीसय-दुगुणीकय-तारयाचक्कं ॥१५१९॥

मणिमयमब्भिंतरयं कुणंति माणिक्क-घडिय-कविसीसं ।
लच्छीए विब्भम-कुंडलं व वेमाणिया वप्पं ॥१५२०॥

वप्पे वप्पे दिप्पंति कणय-मणि-गोउराइं चत्तारि ।
चउरूव-धम्मनिव-पुंगवस्स लीला-गवक्ख व्व ॥१५२१॥

कंचणमय-घडियाओ पइदारं वंतरेहिं मुक्काओ ।
कप्पूरागरु-धूमेहिं मेह-संकं कुणंतीओ ॥१५२२॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तह तेहिं कयाओ कणय-पंकयालंकियाओ वावीओ ।
चउसु वि दिसासु दारेसु रयण-सोवाण-पंतीओ ॥१५२३॥

ते चेव कणयसालंतरम्मि पुव्वुत्तरम्मि दिसभाए ।
देवच्छंदं विरयंति सामि-विस्साम-करणत्थं ॥१५२४॥

मणिवप्पे कप्पसुरा पुव्वदुवारं दुवे कणय-वन्ना ।
रक्खंति वंतरा पुण चंदाभा दाहिण-दुवारं ॥१५२५॥

रत्तुप्पल-समवन्ना जोइसिया दुन्नि पच्छिम-दुवारं ।
उत्तर-दुवारमंजण-समप्पभा भवणवासि-सुरा ॥१५२६॥

कंचणवप्प-दुवारे चउसु पुव्वाइ चउदिस-कमेण ।
पडिहारीओ सिय-रत्त-पीय-नीलंगकंतीओ ॥१५२७॥

देवीओ जया-विजया-अजिया-अपराजियाओ चिट्ठंति ।
सव्वाओ अ(उ)भयपासं कुसुमुग्गर-वावडकराओ ॥१५२८॥

रक्खेइ रुप्पवप्पम्मि तुंबरू नाम सव्व-दाराइं ।
नरसिरमाली खट्टंग-संगओ जड-मउडधारी ॥१५२९॥

सोलस-धणुसय-समहिय-कोस-पमाणो समोसरण-मज्झे ।
कंकेल्लि-तरू-पल्लव-निरंतरो वंतरेहिं कओ ॥१५३०॥

तस्स तले रयणमयं पीढं ते निम्मवंति वित्थिन्नं ।
तस्सोवरि मणि-घडियं तहच्छंदयमप्पडिछंदं ॥१५३१॥

तं मज्झे पुव्व-दिसाइ रयण-सीहासणं विउव्वंति ।
ते च्चिय सपायवीढं उवगूढं तिजय-लच्छीए ॥१५३२॥

तस्सोवरिं च पहुणो तिहुयण-सामित्त-सूयगं विहियं ।
उवरुवरिट्ठिय-ससि-तिग-सरिसं छत्तत्तयं तेहिं ॥१५३३॥

जिण-रविणो तिहुयण-तम-कवलणकामस्स केवलरहस्स ।
चक्कं व कयं चक्कं तेहिं पुरो कणय-कमलगयं ॥१५३४॥

जक्खेहिं उभय-पासेसु चामरा चंदचारुणो धरिया ।
अन्नं पि हु जं किच्चं कुणंति तं वंतरा सव्वं ॥१५३५॥

इय देवेहिं विहिए सालत्तय-सुंदरे समोसरणे ।
भावारि-वार-विहुरिय-जगत्तय-त्ताण-दुग्गे व्व ॥१५३६॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तो नवसु सुरकएसुं कंचण-कमलेसु कंति-विजिएसु ।
सेवं कुणमाणेसु व सत्तसु पुरओ पयट्टेसु ॥१५३७॥

दोसु पुण चलण-जुयलं कमेण भयवं ठवंतओ तत्थ ।
सुर-कोडीहिं परिवुडो पुव्वद्दारेण पविसेइ ॥१५३८॥

चेइयदुमस्स काउं पयाहिणं पणमिऊण तह तित्थं ।
सिंहासणे निसियइ पुव्वाभिमुहो सुमइनाहो ॥१५३९॥

सेस-दिसासु वि पडिरूवयाइं विहियाइं वंतर-सुरेहिं ।
ताणं पि जिण-पभावेण होइ रूवं तयणुरूवं ॥१५४०॥

अन्नहा-

सव्वे सुरा जइ रूवं अंगुट्ठ-पमाणयं विउविज्जा ।
जिण-पायंगुट्ठं पइ न सोहए तं जहिंगालो ॥१५४१॥

सामिस्स सीस-पच्छिमभाए भामंडलं समुब्भूयं ।
दिणमणि-बिंबं चुंबइ खज्जोय-सिरिं पुरो जस्स ॥१५४२॥

सद्देणं भुवण-वियंभिएण निस्संग-चक्कवट्टित्तं ।
पहुणो पयासंतो व्व वज्जिओ दुंदुही गयणे ॥१५४३॥

सहइ भवजलहि-तारय-जिण-निज्जामय-जुए पडाय-सिडो ।
इह समवसरण-पोए कूयक्खंभो व्व रयणधओ ॥१५४४॥

अह तम्मि पविसिऊणं निय-निय-दारेण निय-निय-ट्ठाणे ।
परिसाओ दुवालस रयणसाल-मज्झम्मि चिट्ठंति ॥१५४५॥

[११]मुणि-वेमाणिय-थी-संजइओ पुव्वेण पविसिउं पहुणो ।
काउं पयाहिणं पुव्व-दक्खिणे ठंति दिसि-भाए ॥१५४६॥

जोइसिय-भवण-वंतर-देवीओ दक्खिणेण पविसित्ता ।
चिट्ठंति दक्खिणावर-दिसाइ तिपयाहिणा-पुव्वं ॥१५४७॥

अवरेण भवणवासी-वंतर-जोइस-सुरा पविसिऊण ।
अवरुत्तर-दिसिभाए सामी(सामिं) नमिऊण चिट्ठंति ॥१५४८॥

कप्पसुरा नर-नारीओ पविसिउं उत्तरेण दारेण ।
तिपयाहिणीऊण जिणं चिट्ठंतीसाण-दिसिभाए ॥१५४९॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इतं महिड्डियं पणिवयंति पुव्वागया सुरा तत्थ ।
पुव्वागयं तयं पुण पणमंता चेव वच्चंति ।।१५५०।।

मुक्क-परोप्पर-वेरा तिरिया मज्झम्मि ठंति बीयस्स ।
सालस्स तईअस्स उ मणुयामर-वाहण-समूहा ।।१५५१।।

अह सोहम्म-सुरिंदो भयवंतं पणमिऊण भत्तीए ।
पुलयालंकिय-काओ कयंजली थोउमाढत्तो ।।१५५२।।

जय सिवपुर-पह-संदण नंदण नीसेस-गुण-सुरतरूण ! ।
मेह-नरनाह-नंदण ! जय नयणानंदण ! नमो ते ।।१५५३।।

पणमामि सामि ! तुह पाय-पंकयं जम्मि मत्थय-निहित्ते ।
सिद्धि तरुणी सयण्हं कडक्खलक्खी कुणइ पणयं ।।१५५४।।

भुवणेक्कवीर ! तुमए सरीर-दुग्गाओ भावरिउ-वग्गो ।
चिरमन्नपाण-रोहं काउं निव्वासिओ सव्वो ।।१५५५।।

अन्नोन्न-गाम-धणहरण-जणिय-संगाम-बद्धवेरा वि ।
चिट्ठंति तुह सहाए भूवइणो निद्ध-बंधु व्व ।।१५५६।।

आयड्ढिऊण केसरि-करं करी निय-करेण निस्संकं ।
कंडुयइ कवोल-तलं तुह परिसाए इमो नाह ! ।।१५५७।।

एगत्थ इमो महिसो महिसं व सहोअरं सिणेहेण ।
लिहइ हयं हेसंतं पुणो पुणो नियय-जीहाए ।।१५५८।।

उड्ढमुहो उन्नामिय-कण्णो लीला-विलोल-नंगूलो ।
हरिण-जुवा इत्थ घणं घाणेणऽग्घाइ वग्घ-मुहं ।।१५५९।।

मूसयमेसो पासेसु अग्गओ पच्छओ अ ललमाणं ।
निय-बालयं व चुंबइ बहुं बिडालो इह सिणिद्धो ।।१५६०।।

फण-फलयमारुहंतेण संचरंतेण चउसु वि दिसासु ।
नउलेण समं खिल्लइ सप्पो सप्पहरिसो एसो ।।१५६१।।

अन्ने वि जए जे निच्चवेरिणो ते वि वेर-परिचत्ता ।
चिट्ठंति एत्थ तुमए कय-उवसम-संविभागो व्व ।।१५६२।।

इय थोऊण जिणिंदं इंदाणं अच्चुइंद-पमुहाणं ।
मज्झम्मि निविट्ठो भालवट्ट-विहियंजली सक्को ।।१५६३।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

खेत्ते जोयणमित्ते वि तम्मि सत्ताण कोडिकोडीओ ।
चिट्ठंति निराबाहं तित्थयरस्साणुभावेण ॥१५६४॥

तो सामी जोयणगामिणीइ पणतीस-अइसय-जुयाए ।
सव्व-स-भासाणुगयाइ कहइ भासाइ धम्म-कहं ॥१५६५॥

जम्म-जर-रोग-पियविप्पओग-मरणाइ-दुक्ख-सलिलोहे ।
भव-सायरम्मि दुलहो जिणधम्मो जाणवत्तं व ॥१५६६॥

जओ-

जीवा अणाइनिहणा अणाइओ ताण कम्म-संबंधो ।
मिच्छत्ताऽविरइ-कसाय-जोग-हेऊहिं हुंतो वि ॥१५६७॥

निच्चं अकामनिज्जर-बालतवाईहिं विहडमाणो वि ।
न हु नासिकयाइ इमो पवाहओ नइ-पवाहो व्व ॥१५६८॥

पुव्वं अणंत-पोग्गल-परियट्टे तेण कम्मणा विवसा ।
निवसंति सव्व-जीवा सुहुम-वणस्सइ-निगोएसु ॥१५६९॥

तत्थ असंख-निगोयस्स रूव-नीसंख-गोलय-गयम्मि ।
एग-निगोय-सरीरे संपिंडिज्जंति तेऽणंता ॥१५७०॥

थीणद्धि-महानिद्दा-नाणावरणाइ-कम्म-परतंता ।
पीयमइर व्व विस-घुम्मिअ व्व ते किंपि न मुणंति ॥१५७१॥

भवियव्वयावसेणं विहडिय-घण-कम्म-बंधणा के वि ।
तेहिंतो निक्खंता वसंति बायर-निगोएसु ॥१५७२॥

ते यऽल्लय-सूरण-गज्जराइ-रूवेण परिणया संता ।
छेयण-भेयण-चुन्नण-दहणप्पमुहं सहंति दुहं ॥१५७३॥

तत्थुस्सप्पिणि-अवसप्पिणीओ वसिऊण ते अणंताओ ।
तेहिंतो नीहरिया गमंति ताओ असंखाओ ॥१५७४॥

पुढवाईएसु तत्थ वि विविहाओ वेयणाओ सहिउं ते ।
उप्पज्जंति कहं पि हु पत्तेय-वणस्सइत्तेण ॥१५७५॥

तो पवणगयाईहिं भज्जंति दवानलेहिं दज्झंति ।
खज्जंति बहु-जणेहिं परसु-प्पमुहेहिं छिज्जंति ॥१५७६॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इय अणुहविउं दुक्खं लहंति विगलिंदियत्तणं कह वि ।
तेसु वि सीयायव-मद्दणाइं दुक्खाइं पावंति ॥१५७७॥

पंचिंदिएसु तत्तो असन्निणो सन्निणो य जायंति ।
तो अणुहंवति पीडं जल-थल-नह-चारिणो होउं ॥१५७८॥

भक्खंति ते जलयरा परोप्परं धीवरेहिं घेप्पंति ।
किज्जंति झडित्तं हुयवहम्मि सत्थेहिं छिज्जंति ॥१५७९॥

गालिज्जंति व सत्थेहिं तह तलिज्जंति तत्त-तावीसु ।
पच्चंति थालियासुं वंग-पमुहेहिं गलिज्जंति ॥१५८०॥

थलचारिणो अ सरस-सूयराइणो लुद्धएहिं हम्मंति ।
विविहेहिं उवाएहिं तडप्फडंता निरवराहा ॥१५८१॥

अइभारारोवण-वाह-दाह-सीउण्ह-छुह-त्तिसाइहिं ।
आराकसंकुसेहिं य सहंति गुरु-वेयणं एए ॥१५८२॥

खयरा वि कमढय-चडय-पभिइणो दुव्वलावलित्तेहिं ।
खज्जंति खगेहिं गिद्ध-सेण-सिंचाण-पमुहेहिं ॥१५८३॥

तित्तिरि-मोरप्पमुहा विविहोवाएहिं संगहेऊण ।
बहुविह-विडंबणाईहिं निक्करुणेहिं हणिज्जंति ॥१५८४॥

ते वि हु मीण-भुयंगम-चित्तय-सीहत्तणाइं लहिऊण ।
कूरमणा मंसाइं भक्खंति हणंति जंतु-गणं ॥१५८५॥

रुद्दज्झाणेण मया नरएसु गया सहंति पढमेसु ।
तिसु उण्हं तिसु सीयं परेसु तुरियम्मि सीउण्हं ॥१५८६॥

किञ्च-

तिसु आइमेसु परमाहम्मिय-सुरेहिं विणिम्मियं दुक्खं ।
अवरेसु तिसु परोप्पर-कय-विविह-कयत्थणा-जणियं ॥१५८७॥

नरयम्मि सत्तमे पुण समंतओ वज्ज-कंटगाइन्ने ।
सव्वंग-भेय-पाउब्भवंत-गुरु-वेयणारूवं ॥१५८८॥

एवं खेत-समुब्भवमन्नोन्न-समुत्थमसुर-जणियं च ।
तिविहं दुहं सहंता नरए चिट्ठंति चिर-कालं ॥१५८९॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तत्थुप्पन्ना घडियालयाओ संकडमुहाओ असुरेहिं ।
कड्ढिज्जंति रडंता सीस-सलाय व्व जंताओ ॥१५९०॥

कर-चलणाइसु घेत्तुं सिलायले वज्ज-कंटयाइन्ने ।
अप्फालिज्जंति दढं इमेहिं वेत्थं वरयगेहिं(?) ॥१५९१॥

दढमुच्छुणो व्व कत्थइ निप्पीलिज्जंति लोहजंतेहिं ।
कत्थइ करवत्तेहिं दारुं व दुहा विहिज्जंति ॥१५९२॥

सुमराविऊण परजुवइ-संगमं वज्जकंटय-सणाहं ।
कत्थइ सिंबलि-रुक्खं कत्थइ तत्तायस-पुरंधिं ॥१५९३॥

आलिंगाविज्जंति हणिऊणं मुग्गरेहिं पट्टीए ।
खादिज्जंति समंसं सुमराविय मंसलोलत्तं ॥१५९४॥

सुहगिद्धि-कहणुपुव्वं काराविज्जंति तत्त-तउपाणं ।
भुज्जंति भडित्तं पिव कुंभीपागेसु पच्चंति ॥१५९५॥

तिल-तुस-तिभाय-मित्तं छिन्ना वि मिलंति पारय-रसो व्व ।
तत्त-कडाहेसुं पप्पड व्व कत्थइ तलिज्जंति ॥१५९६॥

कत्थइ पूय-वसा-लोहिएहि कत्थइ य तंब-तऊएहिं ।
तत्तेहिं वहंतीए वेयरणि-नईए खिप्पंति ॥१५९७॥

वाहिज्जंता तीए पुलिण-वसह व्व दुव्वहं भारं ।
वज्जानल-पज्जलिए भट्ठे चणग व्व फुट्टंति ॥१५९८॥

छायत्थिणो अ पत्ता असिपत्त-वणम्मि पवण-विहुएहिं ।
नाणाविहेहिं पत्ताउहेहिं छिज्जंति सव्वंगं ॥१५९९॥

किं बहुणा ? नरएसुं सत्तसु तिक्खाइं जाइं दुक्खाइं ।
ताइं कय-कोडिजीहो सक्को वि न वन्निउं सक्को ॥१६००॥

नरयाओ उव्वट्टा होउं सीहाइणो पुणो नरए ।
पुण मच्छाइसु एवं पुणो पुणो जंति नरएसु ॥१६०१॥

इय हिंडिऊण सुइरं कईयावि अणारिएसु मणुएसु ।
मायंगाइसु अहवा उप्पन्ना आरिएसुं पि ॥१६०२॥

तत्थ अखज्ज-अपेज्जाऽकज्जाऽगम्माइ-सेवणासत्ता ।
जंति नरएसु बहुसो कालमणंतं परिभमंति ॥१६०३॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कुल-जाइ-विसुद्धेसु वि उप्पन्ना माणुसेसु कईया वि ।
पावंति तं दुहं जेण जायए हियय-उक्कंपो ॥१६०४॥

रोमे रोमे सुईहिं अग्गिवन्नाहिं [२०]भिज्जमाणस्स ।
जं होइ दुहं तत्तो अट्ठगुणं गब्भवासम्मि ॥१६०५॥

गब्भाओ नीहरंताण जोणिजंतेण पीढणे जं च ।
तं गब्भवास-दुक्खाओ होइ दुक्खं अणंतगुणं ॥१६०६॥

बालत्तणे लुलंता मुत्त-पुरीसेसु वोत्तुमसमत्था ।
निच्चेयण व्व हत्थं अहि-जलणाईसु वि खिवंति ॥१६०७॥

जोव्वण-पओस-पाविय-पसराहिं पिसाइ-रक्खसीहिं व ।
दविणासा-विसयासाहिं विवस-हिअया किलम्मंति ॥१६०८॥

कुव्वंति किसिं जलहिं तरंति देसंतराइं वच्चंति ।
विवरं पविसंति खणंति रोहणं हुंति कम्मयरा ॥१६०९॥

सेवंति निवं विरयंति रणभरं पर-धणं वि लुंटंति ।
गायंति य णच्चंति य दविणासा-विनडिया जीवा ॥१६१०॥

न गणंति कुल-कलंकं सयण-वयणं न अप्पणो वसणं ।
न य परलोय-विरुद्धं विसयासा-मोहिया मणुया ॥१६११॥

परपरिभव-पेसत्तण-विओग-दोहग्ग-रोग-सोगेहिं ।
गुत्तिनिरोह-विरोहाऽमरिसेहिं य दुत्थिया मणुया ॥१६१२॥

गमणासहा अदंता पुणो वि वियलिंदिया खलिय-वयणा ।
वयण-विगलंत-लाला बाल व्व जराए किज्जंति ॥१६१३॥

सुहिया काम-वियारेहिं दुक्खिया दीणया-पयारेहिं ।
निय-जीवियं विमूढा नयंति न उ धम्म-कम्मेहिं ॥१६१४॥

नीसेस-कम्मक्खयकारयं पि लद्धूण माणुसं जम्मं ।
विहलं कुणंति पावा [२१]पावायारेहिं विविहेहिं ॥१६१५॥

जय-कुंजरं खरेण व काण-कवड्डेण कणय-कोडिं व ।
मणिमुक्लेण व हारंति विसयसुक्खेण मणुयत्तं ॥१६१६॥

सग्गाऽपवग्ग-सोक्खाण कारणे माणुसत्तणे पत्ते ।
अहह नराणं नरयप्पयाण-पवणे मई पावे ॥१६१७॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चारित्त-नाण-दंसण-रयणत्तय-भायणे मणुय-जम्मे ।
पावं कुणंति जे ते खिवंति रेणुं रयण-थाले ॥१६१८॥

ते इंदियत्थ-लुद्धा कसाय-रुद्धा सरीरसुह-गिद्धा ।
नरएसु जंति तत्तो भमंति भीमं भवमणंतं ॥१६१९॥

देवेसु समुप्पन्ना महिड्ढिय-सुरेहिं आणविज्जंति ।
अप्पिड्ढियमप्पाणं पलोयमाणा मिलायंति ॥१६२०॥

विउलं परस्स रिद्धिं दट्ठुं ईसानलेण डज्झंति ।
पुव्वकय-अप्प-सुकयं मणम्मि सोयंति अप्पाणं ॥१६२१॥

कइयावि चविय पिययम-सुरवहु-विरहे लहंति नरय-दुहं ।
कइयावि कुविय-दइयाऽपसायणेणं किलिस्संति ॥१६२२॥

पररमणीओ हरंति लोभवसओ परेण कोवेण ।
वज्जेण ताडिया मुच्छिया य छम्मासमच्छंति ॥१६२३॥

ईसा-विसाय-मय-कोह-लोह-मायाइणो अरि-समूहा ।
रिणियाण व ववहरया [२२]मेल्लंति सुराण वि न पट्ठिं[२३] ॥१६२४॥

रमणी-विमाण-रयणाइ-मोहिया चवणमप्पणो मुणिउं ।
अट्टज्झाणेण चवंति जंति एगिंदिएसु पुणो ॥१६२५॥

एवमणंते पोग्गल-परियट्टे परियडंति संसारे ।
जीवा मिच्छत्त-तमोह-निहुय-सम्मत्त-वर-नयणा ॥१६२६॥

चउदस-रज्जुम्मि जए बालग्ग-समं पि नत्थि तं ठाणं ।
जम्म-मरणाइं पत्ताइं तेहिं नाऽणंतसो जत्थ ॥१६२७॥

तं नत्थि विसय-सुक्खं तज्जणिअं तं न अत्थि दुक्खं पि ।
जं जीवेहिं न पत्तं नवरं पत्तो न जिण-धम्मो ॥१६२८॥

सुलहो विमाणवासो रयणायर-मेहला मही सुलहा ।
लोयम्मि नवरि दुलहो धम्मो सव्वन्नु-पन्नत्तो ॥१६२९॥

सत्तरि-कोडाकोडीओ मोहणीयस्स हुंति अयराणं ।
उक्कोस-ठिई तह वेयणीय-आवरण-विग्घाणं ॥१६३०॥

तीसं कोडाकोडीओ वीस पुण हुंति नाम-गोत्ताणं ।
सत्तण्हं पि इमाणं अहापवत्तेण करणेणं ॥१६३१॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अंतो कोडाकोडिं धरिउं खवियम्मि सेसए जीवा ।
घण-राग-दोस-परिणइरूवं पावंति तो गंठिं ॥१६३२॥

एत्तिय-दूरं व इमे पत्ता सव्वे अणंतसो जीवा ।
किंतु अउन्ना पुणरवि परिवडिऊणं गया मूले ॥१६३३॥

बद्धा उक्कोसठिइ कम्माण पुणो वि संकिलिट्ठेहिं ।
भमिहिंति भवमभव्वा एवं पुरओ सयाकालं ॥१६३४॥

आसन्नकाल-भवसिद्धियाओ तमपुव्वकरणवज्जेण ।
गंठिं गिरिं व भिंदंति पाविउं वीरियमउव्वं ॥१६३५॥

अनियट्टिकरणमइसय-विसुद्धिरूवं तओ समणुभविउं ।
अंतोमुहुत्तमेत्तं कालं ते मोक्ख-तरु-मूलं ॥१६३६॥

कारणमणंत-सोक्खाण वारणं तिक्ख-दुक्ख-लक्खाण ।
सम्मत्तं रयणनिहिं रोर व्व लहंति कयपुन्ना ॥१६३७॥

पत्ते वि हु सम्मत्ते एगाए अयरकोडिकोडीए ।
पलियपुहत्ते खवियम्मि देसविरइं पवज्जंति ॥१६३८॥

संखिज्ज-सायरेसुं गएसु तत्तो लहंति चारित्तं ।
उवसमसेणिं पुण तित्तिएसु तह खवगसेणिं च ॥१६३९॥

इय जाणिऊण दुलहं जिणधम्मं तम्मि उज्जयं(मं) कुणह ।
मा पुण वि पमायवसा निवसह एगिंदियाईसु ॥१६४०॥

लद्धुं जिणधम्मं विसय-परवसा हारवंति जे मूढा ।
ते जलनिहि-मज्झ-गया नावं भिंदंति लोहकए ॥१६४१॥

इय धम्मकहं सोउं चमर-नरिंदाइणो जणा बहवे ।
पडिबुद्धा बेंति जिणिंद ! जंपियं अवितहं तुमए ॥१६४२॥

ता अम्हे सामि ! तुमं दिक्खा-हत्थावलंब-दाणेण ।
दुह-लहरि-रउद्दाओ नित्थारसु भव-समुद्दाओ ॥१६४३॥

तओ ते सव्वे वि दिक्खिया भयवया जाया चमरप्पमुहा मुणिणो । संपन्नाओ विमल-मइ-प्पमुहाओ अज्जाओ । पवन्ना सव्वविरई महाराय-प्पमुहेहिं मणुस्सेहिं । गुणवइ महादेवी-पमुहाहिं महिलाहिं अन्नेहिं य बहुएहिं तिरिक्खेहिं देसविरई पडिवन्नं, देवेहिं देवीहिं सम्मदंसणं । भयवं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चमरप्पमुहाणं सयस्स मुणिवराणं पुव्वभव-पुन्नोदएण गणहर-पय-जोग्गयं जाणिऊण उप्पाय-विगम-धुवत्त-रूवं सयल-सुय-सायर-सार-रयणभूयं पयत्तयं परूवेइ । ते वि य तयणुसारेण दुवालसंगाइं विरयंति । चउव्विह-देवनिकाय-परिवुडो घेत्तूण दिव्वगंध-चुन्नपुन्नं सुवन्न-थालं उवट्ठिओ सक्को ।

अह उट्ठिऊण भयवया विणओणएसु उत्तमंगेसु चमराईणं गणहराणं चुन्नक्खेवं कुणंतेण सुत्तेणं अत्थेणं तदुभएणं सव्व-दव्व-गुण-नय-पज्जवेहिं अणुओगाणुन्ना गणाणुन्ना य दिन्ना । सूर-कर-पहय-दुंदुहि-निनाय-पुरस्सरं सुरेहिं सुरंगणाहिं नरेहिं नारीहिं य कओ तेसिं चुन्नक्खेवो । ते वि कयंजलिउडा भयवओ वयणाणि सम्मं पडिच्छंति । भयवं पि पुणो पुव्वाभिमुहो सिंहासणे निसन्नो अणुसट्ठिगब्भं धम्मदेसणं करेइ ।

एत्थंतरे पुन्ना पोरिसी । आढयप्पमाणो अखंड-कलमसालि-कण-विणिम्मिओ मणिमय-थाल-विणिवेसिओ सुर-पक्खित्त-सुगंधवास-वासिय-दियंतरो तरुण-पुरिस-समुक्खित्तो सच्चवीरिय-महाराय-कारिओ देवदुंदुहि-निनाय-भरिय-बंभंडमंडलो मंगल-मुहल-महिलाणुगओ समंतओ नायर-नियर-परिवारिओ पुव्वदुवारेण पविट्ठो बली । ठिया धम्म-देसणा । पयाहिणीकाऊण भयवंतं तस्स पुरओ पक्खित्तो तिक्खुत्तो बली । तस्सद्धं नहयले चेव चायगेहिं व जलहर-जलद्देवेहिं गहियं, अद्धद्धं धरणि-निवडियं सच्चवीरिएण रन्ना, सेसं पुण पागय-जणेणं । बलि-माहप्पेण पुव्वुप्पन्ना आमया विणस्संति । नवा पुण छम्मासं जाव न हवंति ।

भणियं च-

राया व रायमच्चो तस्सासइ पउर-जणवओ वा वि ।
दुब्बलि खंडियबलि छडिय-तंदुलाणाढयं कलमा ॥१६४४॥

भाईयपुणाणिआणं अखंड-फुडियाण फलगसरियाणं ।
कीरइ बली सुरा वि य तत्थेव छुहंति गंधाई ॥१६४५॥

भवणवइ-वाणमंतर-जोइस-वेमाणिएहिं देवेहिं ।
नरनारि-गणेहिं तहा समंतओ भत्तिभरिएहिं ॥१६४६॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कय-परिवेढो चल्लइ तूर-निनाएण पूरिय-दियंतो ।
आणंदिय-सयल-जिओ जिणिंदचंदाण पवर-बली ॥१६४७॥

बलि-पविसण-समकालं पुव्वद्दारेण ठाइ परिकहणा ।
निउणं पुरओ पाडण-अद्धद्धं अवडियं देवा ॥१६४८॥

अद्धद्धं अहिवइणो अवसेसं होइ पागयजणस्स ।
सव्वामयप्पसमणो कुप्पइ नऽन्नो वि छम्मासं ॥१६४९॥

उट्ठिऊण भयवं कमलायरो व्व महुयरेहिं चउव्विह-सुरेहिं परिगओ गओ उत्तर-दुवारेण ईसाण-कोणे कणय-रयण-सालंतर-ट्ठिए देवच्छंदए निसन्नो मणिमय-सिलावट्टए ।

अह पहुणो पयवीढे विणिविट्ठो पढम-गणहरो चमरो ।
नव-जलहर-महुर-सरेण देसणं काउमारद्धो ॥१६५०॥

जओ-

खेय-विणोओ सीस-गुण-दीवणा पच्चओ उभयओ वि ।
सीसायरिअ-कमो विय गणहर-कहणे गुणा होंति ॥१६५१॥

राओवणीय-सीहासणे निविट्ठो य पायपीढम्मि ।
जेट्ठो अन्नयरो वा गणहारि कहेइ बीयाए ॥१६५२॥

संखाईए वि भवे साहइ जं वा परो उ पुच्छिज्जा ।
नयणं अणाइसेसा वियाणई एस छउमत्थो ॥१६५३॥

भणियं चं भयवया गणहरेण संजमसिरी-कुलहरेण ।
सयल-सुरासुर-किन्नर-नर-संकिन्नाइ परिसाए ॥१६५४॥

भो भो भव-पारावार-पार-गमणम्मि कयमणा तुब्भे ।
सेवह उवएस-पयाइं पोयभूयाइं एयाइं ॥१६५५॥ तहाहि-

• • •

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पाठांतर :

१. पणमेज्जइ **ल. रा.** ॥ २. गुरुएण **ल. रा.** ॥ ३. पुत्ताओ **ल. रा.** ॥ ४. पायंते **ल. रा.** ॥ ५. तिल्लेहिं **ल.** ६. सिंहासणे **ल. रा.** ॥ ७. मिल्लेइ **ल. रा.** ॥ ८. सोवन्नियाणं रुप्पमयाणं सुवन्नरयणमयाणं रुप्परयणमयाणं सुवन्नरुप्परयणमयाणं भोमाणं **पा.** ॥ ९. गेण्हंति **द. पा.** ॥ १०. परिपुण्णेहिं **ल. रा.** ॥ ११. धम्मेल्ल **द. पा.** ॥ १२. मिल्लइ **द. पा.** ॥ १३. रच्छा. **रा. पा.** ॥ १४. 'भयवओ......पयाहिणीकाऊण' पाठ मात्र **द. पा.** ॥ १५. मिल्हिऊण **ल. रा.** १६. पहुपारणए य ह्राणे **द. पा.** ॥ १७. रयणवीढं **द. पा.** ॥ १८. किरिण **द. पा. रा.** ॥ १९. गाथा १५४६-४८ **द. पा.** प्रतिमा ज छे । २०. भेज्ज० **दे. पा.** ॥ २१. पावायरिएहिं **ल. रा.** ॥ २२. मिल्लंति **ल. रा.** ॥ २३. पिट्टिं ल. रा. ।

• • •

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सत्तमो पत्थावो

भत्ती तित्थयराण दाणममलं सीलं तवो भावणा,
हिंसालीय-अदत्त-मेहुण-महारंभाण संरंभणं ।
सिद्धंतामयपाणमुत्तमजणासंगो गुरूवासणं,
कोहाईण विणिग्गहो तह णमोक्कारस्स आराहणं ॥१६५६॥

धम्मत्थिणो अणुट्ठाणमाइमं तत्थ तित्थयर-भत्ती ।
जं सा कयग-फलं पिव सम्मत्त-जलं कुणइ विमलं ॥१६५७॥

उत्तम-गुण-बहुमाणो पयमुत्तमसत्त-मज्झयारम्मि ।
उत्तम-धम्म-पसिद्धी भत्तीए वीयरागाणं ॥१६५८॥

एक्को वि उदग-बिंदू पक्खित्तो खीरसायरम्मि जहा ।
जायइ अक्खयरूवो एवं भत्ती जिणिंदाणं ॥१६५९॥

सुद्धे खेत्तम्मि जहा पइन्नगं होइ बहुफलं बीयं ।
सद्धा-जलेण सित्तं जिणम्मि तह भत्ति-बीयं पि ॥१६६०॥

जं जं मणाभिरामं दीसइ इह पयइसुंदरं किं पि ।
तं तं जिण-भत्तीए फलंति नत्थेत्थ संदेहो ॥१६६१॥

भत्तीए जिणवराणं गलंति पुव्वज्जियाइं पावाइं ।
सग्गाऽपवग्ग-सोक्खाणं भायणं होइ तो जीवो ॥१६६२॥

अच्छउ दूरे जिणभवण-पडिम-ण्हवणऽच्चणाईयं किच्चं ।
जिण-पणमणं पि कल्लाणकारणं सुंदरस्स जहा ॥१६६३॥

तहा हि-

[१. जिनभक्ती सुंदर-कथा]

अत्थि मणिवइ-विसय-मज्झम्मि मणिवइआ वर नयरि ।
मणि-निबद्ध जिण-भवण मणहर ।
गंभीर परिहा-वलय फलिह-पवर-पायार-सुंदर ।
तहिं सुत्थिओ नामिण वसइ रिद्धिविसिट्ठउ सेट्ठि ।
जसु घरि जिण-मुणि-भत्तिपरु बालु वि सम्मदि(द्दि)ट्ठि ॥१॥१६६४॥

तासु मंदिरि अत्थि कम्मयरु
नय-विणय-संकेअहरु ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सुंदरो त्ति दुच्चरियचत्तउ
सहुं ति सेट्ठिण सुत्थिइण सो कयाइं मुणिपासि पत्तउ ।
तिणि आयन्निउ मुणिवयणु जो पणमिवि जिणनाहु ।
भोयणु कुणइ सु अन्न-भवि न लहइ दुह-दव-दाहु ॥२॥१६६५॥

जेम्व तिसियह सिसिरु पयपूरु
परमत्थु(न्नु) जिंव भुक्खियह ।
जेम्व रोग-गहियह वरोसहु ।
ओहेण तं मुणि-वयणु चित्ति लग्गु तिम्व तसु सुहावहु ।
सो परिपालिवि तं वयणु जावजीवु संपुन्नु ।
पयइ-कसाय-विमुक्क-मणु कमिण विवन्नु सउन्नु ॥३॥१६६६॥

अत्थि नामिण नयरि तक्खसिल
पडिवक्ख-वच्छयल-सिलमणि
सिलोह संबद्ध सुरहर ।
हरिणच्छि-हरिणंकमुह-महिलचक्क-चंकमण-मणहर ।
घणरस-पूरिय-परिह-बहु पुरिसु व पवरायारु ।
जहिं ठिय लहरि-भुयालयहिं परिरंभिवि पायारु ॥४॥१६६७॥

तहिं तिविक्कमु अत्थि नरनाहु
तइलोक्क-विक्खाय-जसु
दलिय-सयल-बलिराय-विक्कमु ।
करपंकय-संगहिय-संखचक्कु नावइ तिविक्कमु ।
तासु सुमंगल-देवि पिय कोमल-कमल-दलच्छि ।
रूव-विणिज्जिय-जय-रमणि कणयच्छवि नं लच्छि ॥५॥१६६८॥

तासु कुक्खिहिं जीवु सुंदरह उप्पन्नु ।
पुत्तत्तणिण निसहिं तहिं जि देवीए दिट्ठउ ।
पविसंतु मुह-पंकरुहि ।
पुन्नकलसु सिविणइ विसिट्ठउ ।
सुह-परिबुद्धहिं तीए तउ सुविणउ कहिउ पियस्सु ।
तिण वुत्तउ तुह सुहनिलउ होसइ पुत्तु अवस्सु ॥६॥१६६९॥

तं सोउं तुट्ठा तीए समयम्मि दोहलो जाओ ।
गयखंध-गया मिंठेण राइणा धरिय-सियछत्ता ॥७॥१६७०॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पूरिय-समग्ग-मग्गण-मणोरहा रइय-चारु-नेवच्छा ।
पेच्छामि अगालच्छणमुज्जाणे विहरमाणा हं ॥८॥१६७१॥

तो नरिंदिण गरुय-नेहेण
संपाडिय दोहलय,
उचिय-कालि सा पुत्तु पसवइ ।
विलसंत-तेयप्पसर पहय-तिमिरु पुव्व व्व दिणवइ ।
तं निसुणिवि नरवइ हुयउ हरिसाऊरिय-काउ ।
सुय-जम्मिण जणु हरिसियइ इयरु वि किं पुण राउ ॥९॥१६७२॥

ठांवि ठांवि वर-मंच रइज्जहिं ।
पहि पहि मुत्तिय-सत्थिय दिज्जहिं ।
घरि घरि वंदणमाल निबज्झहिं ।
पगि पगि कप्पूरागुरु डज्झहिं ॥१०॥१६७३॥

हट्टसोह सव्वत्थ वि किज्जइ ।
गयण-विलग्ग पडाय ठविज्जइ ।
रायमग्ग कुंकुम-रसि सिच्चहिं ।
कामिणी पीणपओहर नच्चहिं ॥११॥१६७४॥

वज्जहिं तूर सद्द-भरियंबर ।
पविसहिं अक्खइवत्त निरंतर ।
पउर पढंत छत्त परिवारिय ।
नयरुज्झायइं ति य निवारिय ॥१२॥१६७५॥

असण-वसण-तंबोलिहिं सायर ।
सम्माणिज्जहिं सयल वि नायर ।
भमहिं महल्लय कय-बहु-वग्गण ।
पढहिं दाण-हरिसिय-मण मग्गण ॥१३॥१६७६॥

इय निय-पुरि राइण गुरु-अणुराइण विरइउ पुत्तह जम्मछणु ।
अह वाइउ कित्तिउ परभवि तित्तिउ विहिउ जेण
जिण-पय-नमणु ॥१४॥१६७७॥

जं गब्भ-गए देवी-सुयम्मि नयराओ निग्गया सुहिया ।
तत्तो निग्गयसुहिउ त्ति तस्स पिउणा कयं नामं ॥१५॥१६७८॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कुमरु वट्टइ ससि व सिय-पक्खि ।
संपत्त-संपुन्न-कलु कमिण तारु तारण्णु पावइ ।
अह तस्स असरिस भणिवि ।
रायकन्न न वरेइ नरवइ ।
जं वच्छरु छण-वंचणिण पाव-पसंगिण धम्मु ।
नासइ दियहु कुभोयणिण कुकलत्तिण पुण जम्मु ॥१६॥१६७९॥

एउ निसुणइ धूय वासवह वेसालिपुरि-सामियह ।
'कामकित्ति-नामेण मणहरा
तो निय-पिउ विन्नवइ ।
पट्ठवेसु तसु मइं सयंवर ।
तिण पट्ठविय पयट्ट पहि, सुय निग्गयसुहिएण ।
सोयासंधिय-पेम्मगुण भणि हरिसिउ हियएण ॥१७॥१६८०॥

संभरायणु तीइ पट्ठविउ ।
वर-विप्पु जाइवि पुरउ ।
राउ तेण विन्नत्तु सायरु ।
जं सामि सरियाइ न हु अन्नु ठाणु मिल्लेवि सायरु ।
इय चिंतेविणु अणुचिय वि एइ सयंवर एस ।
पइं कायव्वु न खेउ फुडु बहुखम हुंति नरेस ॥१८॥१६८१॥

संभरायण-वयण-विन्नास-परितुट्ठइ ।
नरवइ भणइ उचिय चेव सायरह सुरसरि ।
को एत्थ खेउ त्ति मणु मुणिवि
निवहं संपत्त पुरवरि ।
सा परिणीया मणह पिय पिउ-वयणिण कुमरेण ।
गुरु-उवइट्ठु मणिट्ठु तह गिण्हइ को न खणेण ? ॥१९॥१६८२॥

तह परोप्पर-जाय-वीसंभ-संभोय-सुहलालसह जंति दियह ।
अह सुणिवि दुज्जउ
रणसूरु नामिण निवइ वलिउ
कुमरु तज्जय-समुज्जउ ।
कुमरिण रणि सो निग्गहिउ कोहु व पसम-गुणेण ।
तुट्ठु तिविक्कमु विक्कमेण निग्गयसुहियह तेण ॥२०॥१६८३॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रज्जभारह जोग्गि पइ पुत्ति
परलोय-कज्जुज्जम-मणि
मणुय-जम्म-फलु लेमि संपइ ।
इय जंपिवि पुहइवइ नियय-रज्जु कुमरह समप्पइ ।
गुरु-पय-मूलि तिविक्कमु वि जिणमय-दिक्ख पवन्नु ।
विसय-सोक्खु तह मोक्खु पहु सेविउ जाणइ धन्नु ॥२१॥१६८४॥

तो निरंतर विसय-वासत्तु नरनाहु
निग्गयसुहिउ गमइ कालु ।
अह समइ अन्नहि गुण-गव्विय
दूय जुवराय मंति अप्पाणु वन्नहिं ।
इट्ठु अम्हह दक्खत्तणिण पालइ रज्जु पमत्तु ।
पवणह विणु नणु पज्जलइ जलणु वि कित्तियमत्तु ॥२२॥१६८५॥

एउ निसुणिवि भणिउ नरवरिण
जुवराउ नामिण मयणु
सुमइ-मंति तह दूउ सुवयणु ।
वसिहुउ विक्खेव विणु मह पयावमेत्तेण अरियणु ।
ता देसहँ दंसण-विसइ कोउगु फुरइ उदग्गु ।
इय जंपिवि सो संचलिउ करि-रह-तुरय-समग्गु ॥२३॥१६८६॥

नगर-गिरि-सर-सरिय पेक्खंतु
निय-देस-सीमंति गउ
ते भणेइ मणि मज्झ वसेण ।
असहाय चत्तारि जण भमहु देस अम्हे अकिंचणा ।
तिहिं जंपिउ पहु पूरियइ वासण एह समत्त ।
रज्ज सुत्थु विरइवि चलिय ते कंचीपुरि पत्त ॥२४॥१६८७॥

भूवइणा भणियं भोयणाइं को तुम्ह अज्जु कारविही ।
जंपियमिमेहिं सो च्चिय जं देवो आणवेइ त्ति ॥२५॥१६८८॥

दक्खो त्ति तओ दूओ आणत्तो पट्टणे पविट्ठो सो ।
तम्मि दिणे तत्थ महो बहुओ वणियाणं ववहारो ॥२६॥१६८९॥

पुडग बंधेउं एकु अखमो त्ति सो ढुक्कओ हट्टि ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तसु कुणइ तत्थ पुडगाइ-बंधणु ।
लद्धो त्ति बहुमन्निययउ तिण विढत्तु वणिएण बहु धणु ।
भोयण-समइ समुट्ठिइण जंपिण तिण निय-गेहि ।
दूउ पयंपिउ पाहुणय अम्हिहिं सहुं घरि एहि ॥२७॥१६९०॥

तेण वुत्तउ तिन्नि अन्नेवि मह मित्त चिट्ठंति बहिइं ।
तु ते वि वाणिइण जंपिउ हक्कारिय ते वि ।
तिण भोयणाइं तं दिण्णु जं पिउ ।
तहिं दविणव्ववउ वाणियह हूउ सवायउ दम्मु ।
जं पावइ फलु पत्तिउ जिण विहिउ विसट्ठु वि कम्मु ॥२८॥१६९१॥

बीय-दिणि गय ते वि रयणउरि ।
आणत्तु भोयण-विसइ सुंदरो त्ति जुवराइण ।
नर-वेसिण तं नियइ मगह-गणिय गरुयाणुराइण ।
धूय मुणिवि नर-रमण-मण चिंताभर-मुक्काइं ।
निब्बंधिण जुवराउ घरि हक्कारिउ अक्काइं ॥२९॥१६९२॥

तत्थ पेच्छइ जुवइ जुवराउ
कमलारुण-करचलण कुंभि-कुंभ-विब्भम-पउहर ।
कंदोट्टदलसम-नयण वयण-विजिय-संपुन्न-ससहर ।
तीए सहत्थिण कणयमय-आसणि दिन्नि निविट्ठु ।
आढत्तउ तिण तीइ सहुं जूय-विणोउ विसिट्ठु ॥३०॥१६९३॥

अक्खजूइण तेण अक्खित्त सा उचिअ-वेलहिं ।
भणइ पाणनाह मज्जेसु संपइ ।
अन्ने वि अच्छंति बहि मज्झ मित्त
जुवराउ जंपइ, सा बुल्लइ आवंतु तिवि, हक्कारिय तो झत्ति ।
मज्जण-भोयण-पमुह तह विरइय गुरु-पडिवत्ति ॥३१॥१६९४॥

तत्थ दम्महं लग्ग सयपंच

पंचेउरि नयरि गय ते वि तईयदिणि तो पसाइण ।

आणत्तु मइमंतु भणि भोयणत्थु वरमंति राईण ।
धम्माहिगरणि सो वि गउ मइगुण जहिं अग्घंति ।
बुद्धिपहाण जि हुंति नर ति किंव कुकम्मु कुणंति ॥३२॥१६९५॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तत्थऽन्नदेस-वणिउ बालावच्चो दुभज्जओ अ मओ ।
तत्तो सुयमाया हं सुयमाया हं ति भणिरीणं ॥३३॥१६९६॥

भज्जाणं ववहारो जाओ किरियाउ संति नो तेण छिज्जइ ।
नसो(तओ) विसन्ना नरिंद-पमुहा पुर-पहाणा ॥३४॥१६९७॥

ताव सुमइणा भणिउ साणंदु
छिंदामि ववहारु हउं
तेहिं होउ एवं ति वुत्तउं ।
सो भणइ दारउ दविण दुन्नि भाग कीरहु ।
निरुत्तउ तं मन्नइ लोहिण इयर, न हु नेहिण सुय-माय ।
सुमइ भणइ निद्धा जणणि, लुद्धा पुण कयमाय ॥३५॥१६९८॥

मुणिवि मंतिण छिन्न ववहारु
नरनाहिण रंजिइण भोयणाइं पडिवत्ति सव्वह ।
हक्कारिवि आयरिण विहिय विहिवि चउसहस-दम्मह ॥
दियहि चउत्थइ ते वि गय गयउरि-नयरि पविट्ठ ।
नवरि नरिंदु सयं गयउ सुत्तु असोगह हिट्ठ ॥३६॥१६९९॥

एत्थु अवसरि सामि गयपुरह
निप्पुत्तु पंचत्तु गउ
पंच-दिव्व अहिसित्त लोइण ।
नीसेस पुरि परिभमिवि ताइं पत्त अह दिव्वजोइण ।
नगरुज्जाणि असोग-तलि अपरावत्तिय-छाउ ।
पडिवन्नउ पुन्निक्कनिहि पंचिहिं दिव्विहिं वि राउ ॥३७॥१७००॥

पुरि पवेसिउ पुर-पहाणेहिं
अहिसित्तउ रज्जि तसु
तासु कन्न कन्नंत-लोयण
परिणेइ पंकय-वयण जयसिरि त्ति संपत्त-जोयण ।
गउरवि भोयण पमुहि तह लग्गउ दम्मह लक्खु ।
विणु पुन्नह नहि अण्णुगुणु रज्ज-समप्पण-दक्खु ॥३८॥१७०१॥

तासु कइवय दिण अइक्कंत पालंतह रज्जसिरि ।
न व निवुत्ति जणयाण धरसहि ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पडिहार आणत्त तिण ताडह त्ति तो ते वि पहसहि ।
चित्ति सकोविण चित्तगय आणत्ता पडिहार ।
तिहिं ताडिय अविणीय नर दिंतिहिं गाढ पहार ॥३९॥१७०२॥

एम्व पिच्छिवि तासु माहप्पु
गिण्हति गव्वुद्धर वि धरणि-निहिय-सीसेण सासणु ।
किं होइ जणु अवसु वसि जणिउ जा न पोरुस-पयासणु ।
अह ते वुत्त नरेसरिण तुम्ह गुणह फलु एउ ।
लज्जिय तिवि अण्णोण्ण मुह पेक्खिवि पावहिं खेउ ॥४०॥१७०३॥

अवर-वासरि दोहिं पुरसेहिं विन्नत्तु ।
नरवइ रहसि अत्थि अत्थ सुत्थिय जणुत्तमु ।
सिरिनयरु नामिण नयरु रयण-भवण-किरिणोह-हय-तमु ।
तहिं नरकेसरि नामु निवु पुरपरिहुब्भडबाहु ।
जसु अत्थि छज्जइ समरभरि अरि-ससि-कवलण-राहु ॥४१॥१७०४॥

तासु अच्छइ देवि महलच्छि तसु कुखिहिं संभविय ।
दुहिय सव्व-लक्खण-समन्निय
निय-रूव-निज्जिय-तिजय पंकयच्छि जयलच्छि-सन्निय ।
तं पइ कहिउ निमित्तिइण जो परिणिस्सइ एह ।
तासु वसुंधर सयल वसि होसइ निस्संदेह ॥४२॥१७०५॥

तासु कन्नह महइ सयमेव
नरकेसरि परिणयणु अणुचियं ति वारिउ पहाणिहि ।
सावज्झ आणत्त तिण तह वि तेहिं मइगुण-निहाणिहिं ।
संरक्खिय पच्छन्न तसु तं पुणु तिण विन्नाउ ।
कुविउ कयंतु व तहँ उवरि तो नरकेसरि राउ ॥४३॥१७०६॥

तिहिं पहाणिहिं एउ विन्नत्तु
नरकेसरि कुनय-निहि विसय-लुद्धु निद्धम्म-सेहरु ।
तुहुं विसय-अणहीण-मणु धम्मवंतु नयलच्छि-कुलहरु ।
अम्हे एयह रक्खसह रक्खि करिवि कारुन्नु ।
दुत्थिय-जण-अब्भुद्धरणु धीर पयंपहि पुन्नु ॥४४॥१७०७॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एयं परिचयामो अंगेणेवागए तुमम्मि इहं ।
चिंतामणिम्मि पत्ते कायमणी को न परिहरइ ?॥४५॥१७०८॥

तो हरिसिउ नरिंदो अणेण वागए तुमं मित्ति ।
एयं सत्त-परिक्खण-फलं ति अवधारिए चित्ति ॥४६॥१७०९॥

तो निजुंजिवि रज्ज-वावारि
मइमंत-मंति-प्पमुह अणुकहेवि सब्भावु भूवइ ।
वीरिक्करस-रसिय मणु असिसहाउ सह तेहिं वच्चइ ।
मंतिहिं तत्थ पडिच्छियउ परिणाविउ जयलच्छि ।
परदेसि वि पुन्नग्गलहं पहि न छड्डइ लच्छि ॥४७॥१७१०॥

तिहिं पयासिउ सयल-नयरम्मि नरनाहु निग्गयसुहिउ
चिर नरिंदि सयमवि पलाणइ ।
अणुरत्त-नायर-नियरु रज्ज-सुक्खु अक्खंडु माणइ ।
तसु जयलच्छि रमंतयह कइवय दिण वोलीण ।
तक्खसिलह अन्नह समइ आगय पुरिस पवीण ॥४८॥१७११॥

तेहिं पणमिवि निवइ विन्नत्तु
पहु वेढिय तक्खसिल सूरतेय-नामिण नरिंदिण ।
तं मुणिवि निग्गयसुहिउ कुविउ चलिउ सामंतवंदिण ।
थेव-दिणेहिं य लक्खियउ तक्खसिलहिं संपत्तु ।
सूरतेउ तिण रणि जिणिवि बद्धु बलिट्ठु वि सत्तु ॥४९॥१७१२॥

पुणु विमुक्कउ करिवि सक्कारु
कारुण्ण-रस-सायरिण, सो वि तस्स नामेण जसमइ
उत्तुंग-थणहर लुलिय-कणय-कलस निय-धूय वियरइ ।
लेइ सयं पुण आण तसु सूरतेओ अइजाणु ।
वणिउ व कयविक्कय करिउ जीवावइ अप्पाणु ॥५०॥१७१३॥

इय निग्गयसुहिउ महानरेसु
अकिलेस-वसीकय-बहुय-देसु ।
पत्तीहिं चउहिं सहुं विविह-भोय
अणुहवइ अदिट्ठ-विओय-सोय ॥५१॥१७१४॥

उप्पन्न कमेण इमाण पुत्त

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चत्तारि नाइ पुरिसत्थ मुत्त ।
तिवि सिक्खिय-सयल-कला-कलाव
तारुन्न-पत्त सुंदर-सहाव ॥५२॥१७१५॥

अह अन्न-दियहि पसरिय-विवेउ
नरनाहु चित्ति चिंतवइ एउ ।
मइ पुव्व-जम्मि किउ कवणु धम्मु
जिं रज्जु पत्तु अच्चंत-रम्मु ॥५३॥१७१६॥

एत्थंतरि मुणिय-विवाग-समउ
चउनाण-जुत्त जण-जणिय-पमउ ।
संपत्तु तत्थ गय-सयल-दोसु
गुरु जंगमु व धम्मघोसु ॥५४ ॥१७१७॥

आगमणु मुणिवि तसु वसुहनाहु
विप्फुरिय-फार-हरिस-प्पवाहु ।
गुरु-रिद्धिहिं गुरु-पय-नमण-हेउ
संचलिउ चउहिं भज्जहिं समेउ ॥५५॥१७१८॥

महिमंडल-निहिय-निडालवट्टु
गुरु पेक्खिवि पणमइ ताव लट्ठु ।
कल्लाण-वल्लि नव-नीरवाहु
गुरुणा वि दिण्णु तसु धम्मलाहु ॥५६॥१७१९॥

गुरु-पासि निसन्नउ भणइ राउ
मह एत्तिउ करु कम्मह विवाउ ।
गुरु कहइ हूउ जिण-नमणु स ज्जु
तुह पुव्व-जम्मि तिण पत्तु रज्जु ॥५७॥१७२०॥

फलु अज्ज वि एयह लद्धु थेवु
जमणंतरु होहिसि पवरु देवु ।
तो भुंजिवि वर-सुर-मणुय-सोक्खु
सत्तमइ लहिस्ससि जम्मि मोक्खु ॥५८॥१७२१॥

इय सुणिवि पहिट्ठिण पत्थिवेण
गुरु-कम्म-गंठि भिन्नउ खणेण ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सह सहयरीहिं सम्मत्त पत्तु पडिवन्नु कमेण य सावगत्तु ।
जिणपुज्ज-कयायरु जीवदयावरु वसुहाहिवु निग्गयसुहिउ।
मुणिसेवासत्तउ पाव-विरत्तउ पावइ सव्वु वि गुरु-कहिउ ॥५१॥
॥१७२२॥

जिणभत्ति-पहावेण वि दाणम्मि समुज्जमो विहेयव्वो ।
जं धम्मसिद्धि-बीयं पढममुदारत्तणं भणियं ॥१७२३॥ यतः-

औदार्यं दाक्षिण्यं पाप-जुगुप्सा च निर्मलो बोधः ।
लिङ्गानि धर्म्म-सिद्धेः प्रायेण जनप्रियत्वं च ॥१७२४॥

दालिद्दं कुवियं व तेसिमणिसं नालोयए संमुहं,
नो मिल्लेइ घरंकमंकवडिया दासि व्व तेसिं सिरी ।
सोहग्गाइ गुणा चयंति न गुणाबद्ध व्व तेसिं तणुं,
जे दाणम्मि मइं कुणंति मणुया सग्गापवग्गावहे ॥१७२५॥

दाणं पुण नाणाभयधम्मोवट्ठंभ-भेयओ तिविहं ।
रयणत्तयं व सग्गापवग्ग-सुहसाहयं नाणं ॥१७२६॥

तत्थ दुभेयं मिच्छानाणं च सम्मनाणं च ।
जं पाव-पवित्तिकरं मिच्छानाणं तमक्खायं ॥१७२७॥

तं च इमं वेज्जय-जोइसत्थ-रस-धाउकाय-कामाणं ।
तह नट्टसत्थ-विग्गहम्मि गयाण परूवगं सत्थं ॥१७२८॥

जं जीवदया-मूलं समग्ग-संसार-मग्ग-पडिकूलं ।
भावरिउहियइ-सूलं तं सम्मं नाणमुद्दिट्ठं ॥१७२९॥

तं पुण दुवालसंगं नेयं सव्वण्णुणा पणीयं ति ।
मोक्खतरु-बीयभूओ धम्मो च्चिय वुच्चए जत्थ ॥१७३०॥किञ्च-

सम्मत्त-परिग्गहियं सम्म-सुयं लोइयं तु मिच्छ-सुयं ।
आसज्जओ सोयारं लोइय-लोउत्तरे भयणा ॥१७३१॥

नाणं पि तं न नाणं पावमई होइ जत्थ जीवाणं ।
न कयावि फुरइ रयणी सूरम्मि समुग्गए संते ॥१७३२॥

नाणं मोह-महंधयार-लहरी-संहार-सूरुग्गमो,
नाणं दिट्ठ-अदिट्ठ-इट्ठ-घडणा-संकप्प-कप्पद्दुमो ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नाणं दुज्जय-कम्म-कुंजर-घडा-पंचत्त-पंचाणणो,
नाणं जीव-अजीव-वत्थु-विसरस्सालोअणा लोयणं ॥१७३३॥

नाणं धम्म-विरुद्ध-बुद्धि-नलिणी-संकोअ-चंदायवो,
नाणं भद्द-परंपरा-वणलया-उल्लास-धारा-धरो ।

नाणं जम्म-जराय-दुक्ख-पडली-कंतार-दावानलो,
नाणं भीम-भवंध-कूव-कुहरुत्तारे करालंबणं ॥१७३४॥

नाणेण पुण्ण-पावाइं जाणिउं ताण कारणाइं च ।
जीवो कुणइ पवित्तिं पुन्ने पावाओ विणियत्तिं ॥१७३५॥

पुन्ने पवत्तमाणो पावइ सग्गापवग्ग-सोक्खाइं ।
नारय-तिरिय-दुहाण य मुच्चइ पावाओ विणियत्तो ॥१७३६॥

जो पढइ अउव्वं सो लहेइ तित्थंकरत्तमन्नभवे ।
जो पुण पढावइ परं सम्म-सुयं तस्स किं भणिमो ॥१७३७॥

जो उण साहिज्जं भत्त-पाण-वरवत्थ-पोत्थयाइहिं ।
कुणइ पढंताणं सो वि नाण-दाणं पयट्टेइ ॥१७३८॥

नाणमिणं दिंताणं गेण्हंताणं च मोक्खपुर-दारं ।
केवलसिरी सयं चिय नराण वच्छत्थले लुढइ ॥१७३९॥

सम्मं नाणेण वियाणिऊण एगिंदियाइए जीवे ।
ताणं तिविहं तिविहेण रक्खणं अभयदाणमिणं ॥१७४०॥

जीवाणमभयदाणं जो देइ दयावरो नरो निच्चं ।
तस्सेह जीवलोए कत्तो वि भयं न संभवइ ॥१७४१॥

आउं दीहमरोगमंगमसमं रूवं पगिट्ठं बलं,
सोहग्गं तिजगुत्तमं निरुवमो भोगो जसो निम्मलो ।
आएसिक्क-परायणो परियणो लच्छी अविच्छेयणी,
होज्जा तस्स भवंतरे वियरए जो सव्व-जीवाभयं ॥१७४२॥

जीवाइ विणा चावं व मंडलग्गं व तिक्ख-धाराए ।
जीवदयाइ विहूणं विहलं सव्वं अणुट्ठाणं ॥१७४३॥

जं नव-कोडी-सुद्धं दिज्जइ धम्मिय-जणस्स अविरुद्धं ।
धम्मोवग्गह-हेउं धम्मोवट्ठंभदाणमिणं ॥१७४४॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तं असण-पाण-ओसह-सयणासण-वसहि-वत्थ-पत्ताइं ।
दायव्वं बुद्धिमया भवण्णवं तरिउकामेण ॥१७४५॥

तं पुण देयं सज्झाय-ज्झाण-निरयस्स चत्त-संगस्स ।
जो तेण उवग्गहिओ तव-संजम-भारमुव्वहइ ॥१७४६॥

कम्म-लहुअत्तणेणं सो अप्पाणं परं च तारेइ ।
कम्मगुरुं अतरंतो सयं पि कह तारए अन्नं ॥१७४७॥

तं दायग-गाहग-काल-भाव-सुद्धीहिं चउहिं संजुत्तं ।
निव्वाण-सोक्ख-कारणमणंतनाणीहिं पन्नत्तं ॥१७४८॥

जो देइ निज्जरत्थी नाणी सद्धाजुओ निरासंसो ।
मयमुक्को जोग्गं जइजणस्स सो दायगो सुद्धो ॥१७४९॥

जो देइ धेणु-खेत्ताइं जइजणाणुचियमेय विवरीओ ।
सो अप्पाणं तह गाहगं च पाडेइ संसारे ॥१७५०॥

जो चत्त-सव्व-संगो गुत्तो वि जिइंदिओ जियकसाओ ।
सज्झाय-झाण-निरओ साहू सो गाहगो सुद्धो ॥१७५१॥

पुव्वुत्त-गुण-विउत्ताण जं धणं दिज्जए कुपत्ताणं ।
तं खलु धुव्वइ वत्थं रुहिरेण च्चिय रुहिर-लित्तं ॥१७५२॥

सुन्नं(द्धं) सुहं पि दाणं होइ कुपत्तम्मि असुह-फलमेव ।
सप्पस्स जहा दिन्नं खीरं पि विसत्तणमुवेइ ॥१७५३॥

तुच्छं पि सुपत्तम्मि उ दाणं नियमेण सुहफलं होइ ।
जह गावीए दिन्नं तणं पि खीरत्तणमुवेइ ॥१७५४॥

दिन्नेण जेण जइया जइजण-देहस्स होइ उवयारो ।
भत्तीए तम्मि काले जं दिज्जइ काल-सुद्धं तं ॥१७५५॥

काले दिन्नस्स पहेणयस्स अग्घो न तीरए काउं ।
तस्सेवाथक्क-पणामियस्स गिण्हंतया नत्थि ॥१७५६॥

कालम्मि कीरमाणं किसिकम्मं बहुफलं जहा होइ ।
कालम्मि तहा दिन्नं दाणं पि हु बहुफलं नेयं ॥१७५७॥

अप्पाणं मन्नंतो कयत्थमेगंत-निज्जरा-हेउं ।
जं दाणमणासंसं देइ नरो भावसुद्धं तं ॥१७५८॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

महया वि हु जत्तेणं बाणो आसन्न-लक्खमहिगिच्च ।
मुक्को न जाइ दूरं इय आसंसाए दाणं पि ॥१७५९॥
मोक्खत्थं जं दाणं तं पइ एसो विही मुणेयव्वो ।
अणुकंपा-दाणं पुण जिणेहिं कत्थ वि न पडिसिद्धं ॥१७६०॥
जं भावेण विसुद्धं पत्ते थेवं पि दिज्जए दाणं ।
होइ सुदत्तस्स व तं महल्ल-कल्लाण-संजणयं ॥१७६१॥तहाहि-

[२. विधि-दाने सुदत्त-कथा]

अत्थि पुरं सागेयं जं निच्चं धणय-लक्ख-कयसोहं ।
एक्केणं चिय धणएण भूसियं हसइ अयल(अलय)पुरिं ॥१७६२॥
तस्सिं सुदत्त-नामो कम्मयरो पयइभद्दओ आसि ।
दाणरुई सो निच्चं खिज्जइ अधणो त्ति चित्तेण ॥१७६३॥
हयविहिणो दुव्विलसिय-दुगं पि एयं विडंबणा बीयं ।
किविणाण धणं तह निद्धणाण दाणम्मि जं वंछा ॥१७६४॥
सो कल्लाणयणत्थं वच्चइ दूरम्मि भोयणं गहिउं ।
दाऊण किंचि कस्सइ तं भुंजइ दाणसीलो त्ति ॥१७६५॥
अह अन्न-दिणे दिट्ठो पडिमा-पडिवन्नगो रिसी तेण ।
जाओ से बहुमाणो वीसमिओ तत्थ स मुहुत्तं ॥१७६६॥
भिक्खाए रिसी चलिओ उवणीया तस्स तेण तो भिक्खा ।
उवओग-सुद्धि-पुव्वं पडिच्छिया तेण सा मुणिणा ॥१७६७॥
तो हरिसिओ सुदत्तो मन्नइ हियए कयत्थमप्पाणं ।
घरमागएण तेणं कहियमिणं नियय-घरिणीए ॥१७६८॥
अणुमोइयं इमीए तए फलं जीवियस्स पत्तं ति ।
तं भावंताण ताणं को वि कालो अइक्कंतो ॥१७६९॥
अह मरिऊण सुदत्तो साकेए एत्थ चेव नयरम्मि ।
निय-तेय-पसर-निज्जिय-रविणो सिरितेय-नरवइणो ॥१७७०॥
भाणुमई-देवीए निसग्ग-सोहग्ग-संगयंगीए ।
कुक्खिम्मि समुप्पन्नो सिप्पउडे मोत्तिय-मणि व्व ॥१७७१॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तीए च्चिय रयणीए अणाइ दिट्ठो मुहेण पविसंतो ।
सुविणम्मि रयण-रासी निय-तेयप्पसर-हय-तिमिरो ॥१७७२॥

दट्ठूण सुह-विउद्धाइ साहिओ पिययमस्स विहि-पुव्वं ।
भणिया अणेण सुंदरि ! तेयस्सी ते सुओ होही ॥१७७३॥

तीए पडिस्सुयं तं लद्धो रन्ना दिणम्मि तम्मि निही ।
समयम्मि समुप्पन्नो देवीए दोहलो एवं ॥१७७४॥

परितोसियऽत्थिवग्गा कीलामि नई-तडेसु सह रन्ना ।
सो पूरिओ निवेणं धन्नाणं न दुल्लहं किंपि ॥१७७५॥

कीलंताणं ताणं च नाइदूरे नई-तडी पडिया ।
तत्थ मणि-कणय-पुन्ना उम्मिंठा कलस-संघाया ॥१७७६॥

गब्भो महप्पभावो त्ति विम्हयं उवगओ जणो सव्वो ।
समयम्मि सा पसूया जाओ तणओ भवणतेओ ॥१७७७॥

कयमुचियं करणेज्जं मासे पुन्नम्मि निम्मियं नामं ।
वसुतेओ त्ति निवेणं सम्माणिय-सयल-लोएणं ॥१७७८॥

देहोवचएण इमो कलाकलावेण तह य वड्ढंतो ।
रमणीयण-माण-मडप्प-मोडणं जोव्वणं पत्तो ॥१७७९॥

सा तस्स पुव्वघरिणी कोसंबीए पुरीए पवराए ।
जुगबाहु-निव-पियाए विमलवईए सुया जाया ॥१७८०॥

तत्तो अ कयं मयणमंजरि त्ति नामं इमीए जणएहिं ।
सिक्खिय-कला-कलावा सा वि हु जोव्वणमणुप्पत्ता ॥१७८१॥

अह [२]राढाहिव-जयमंगलस्स पुत्तेण रूवजोत्तेण ।
मंगलराएण कया पुच्छिओ मागहो एक्को ॥१७८२॥

देसतंराइं तुमए भद्द ! भमंतेण किं पि जइ दिट्ठं ।
कन्ना-रयणं ता कहसु तेण भणिओ[३] सुण कुमार ! ॥१७८३॥

कोसंबी-नयरीए जुगबाहु-नरिंद-नंदिणि-मिसेण ।
केणावि हेउणा का वि सुरवहू एत्थ अवयरिया ॥१७८४॥

जीए विरहे सुरिंदो नयण-सहस्स-छलेण उव्वहइ ।
मयणग्गि-तत्तमंगं निव्वविउं नलिण-पत्ताइं ॥१७८५॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तं सोऊणं मंगलराएण वियंभियाणुराएण ।
मग्गाविया सपणयं सा कन्ना नियय-पुरिसेहिं ॥१७८६॥

अवसउणो त्ति न दिन्ना रन्ना जुगबाहुणा तओ बाला ।
वर-भत्तार-निमित्तं आराहइ रोहिणिं देविं ॥१७८७॥

कुणइ नियमोववासे सुदुक्करे सुयइ भूमि-सयणिज्जे ।
निच्चं जवेइ पुरिसाणुराय-संवायणं मंतं ॥१७८८॥

अच्छइ अ नागवल्ली-आलिंगिय-पूग-पायव-तलम्मि ।
इय किच्च-निच्चलाए कयवइ(कइवय) दियहा अइक्कंता ॥१७८९॥

अह साएए नयरम्मि मंतगोतो त्ति साहगो पत्तो ।
बिल्लाइहोममेसो करेइ पुरपरिसरुज्जाणे ॥१७९०॥

वसुतेएणं वर-तुरय-वाहणत्थं गएण सो दिट्ठो ।
जं तस्स न संपज्जइ तं दिज्जह एवमाइट्ठं ॥१७९१॥

तं पुच्छिऊण तत्तो सव्वं संपाडियं निउत्तेहिं ।
वरिसम्मि गए पुणरवि वसुतेएणं इमो दिट्ठो ॥१७९२॥

अज्ज वि न होइ सिद्धि त्ति कोउगेणं गओ तया तम्मि ।
नमिउं कुमरो तं भणइ भद्द ! किं साहसि तुमं ति ॥१७९३॥

सो भणइ जक्खिणिमहं कुमार ! परमेसरिं पसाहेमि ।
कुमरेण वुत्तमित्तिय-कालेण वि सिज्झए किं न ? ॥१७९४॥

उत्तमसिद्धी खु इमा कह सिज्झइ झत्ति साहगो भणइ ।
वसुतेएणं भणियं बिल्लाइं तिन्नि अप्पेहि ॥१७९५॥

तेणावि अप्पियाइं गुरुओ एयस्स संकिलेसो त्ति ।
भणिऊण हुणियमेगं न खमो दुक्खियमिमं दट्ठुं ॥१७९६॥

इय बीयं पि हु बिल्लं हुणियं तो निग्गया तणु-पहाहिं ।
पायडिय-दियंता दिव्व-जक्खिणी जलण-कुंडाओ ॥१७९७॥

भणियमणाए-भण ते किं कीरइ ? तो भणेइ वसुतेओ ।
आइसइ साहगो जं इय भणिऊणं गओ कुमरो ॥१७९८॥

उवयरिऊण परेसिं जं पच्चुवयार-भीरुणो गरुया ।
तत्तो हुंति निरीहा तं तेसिं चरियमच्छरियं ॥१७९९॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भणिओ य साहगो जक्खिणीए आइससु जं मए कज्जं ।
सो भणइ ताव चिट्ठउ कायव्वं कहसु मह एयं ॥१८००॥

तुमए किमेत्तिएण्ण वि कालेण न दंसणं पि मह दिण्णं ।
कुमरस्स पुण किलेसं विणा वि एवं तुमं सिद्धा ? ॥१८०१॥

अक्खेइ जक्खिणी निच्छिओ खु एसो सिरं पि होमेज्जा ।
तईयाए वाराए इमस्स सिज्झेज्ज जइ नाहं ॥१८०२॥

अह साहगो वि चिंतइ महाणुभावो इमो महासत्तो ।
जइ वि न किं पि अवेक्खइ स-भत्ति-पयडण-कए तह वि ॥१८०३॥

कोउगमित्त-फलं देमि रूवपरिवत्तिणिं महाविज्जं ।
तो तस्स सबहुमाणं तेण सा सद्दिउं दिण्णा ॥१८०४॥

तेणावि माणणिज्जा जणाण एवंविहं ति पडिवण्णा ।
अह मयणमंजरीए तम्मि दिणे रोहिणी तुट्ठा ॥१८०५॥

तो रोहिणीए तीसे वसुतेओ दंसिओ सुविणयम्मि ।
भणियं च तीए भद्दे तुह होही एस भत्तारो ॥१८०६॥

वसुतेयस्स वि कुमरस्स दंसिया मयणमंजरी सुविणे ।
भणियं च तीए- एसा भविस्सए तुज्झ घरिणित्ति ॥१८०७॥

दोण्हं पि साहियाइं ठाण-कुलाईणि ताण देवीए ।
एसो य पच्चओ जं कयवय-दियहेहिं एहिंति ॥१८०८॥

तुह रायपुत्ति ! वरगा इमस्स पिउ-पेसिया पहाण-नरा ।
एहिंति दायगा तुह इमीए पिउ-पेसिया कुमर ॥१८०९॥

आरोग्गोदग्ग-जलनिहि-समुत्थ-मुत्ताहलोह-निम्माया ।
दिन्ना य देवयाए तीए एक्कावली एक्का ॥१८१०॥

संलत्तं च इमीए ति सत्त-वाराहिवासिय-जलेण ।
सत्थाइ-पहारा तक्खणेण रुज्झंति अहिसित्ता ॥१८११॥

तुम्हे दुवे वि मोत्तुं न य परिभोगोचिया परस्स इमा ।
इय जंपिऊण पत्ता अंदसणं रोहिणी देवी ॥१८१२॥

गोसम्मि विउद्धा मयणमंजरी नियइ निय-करे तुट्ठा ।
मोत्तियमालं गलियं व रिक्खमालं नहयलाओ ॥१८१३॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वसुतेय-कुमर-घरिणि त्ति मन्नए सहलमत्तणो जम्मं ।
साहियमिमीय सव्वं सवित्थरं नियं-वयंसीणं ॥१८१४॥

ताहिं पि जणणि-जणयाण साहियं ते वि हरिसिया हियए
तेहिं पेसिया तीए दायगा निय-पहाणनरा ॥१८१५॥[४]

वसुतेय-पिउ-जणेण य इमीए वरगा तहेव पट्ठविया ।
एगेहिं सबहुमाणं दिण्णा अवरेहिं पडिवण्णा ॥१८१६॥

मुणिओ इमो वइयरो मंगलराएण मयण-विहुरेण ।
गच्छंति गिण्हिस्सं ति चिंतिउं सज्जिया धाडी ॥१८१७॥

अह सा विच्छड्डेणं परिणयणत्थं पिऊहिं पट्ठविया ।
देव्व-वसेणं पत्ता मंगलरायस्स धाडीए ॥१८१८॥

काऊण रणं अविभाविऊण निय-जोग्गयं इमा बाला ।
गहिया मंगलराएण रयणमाल व्व काएण ॥१८१९॥

सो वच्चंतो आसमपयम्मि आवासिओ तओ तत्थ ।
दट्ठूण तावसिं मयणमंजरी रहसि नेऊण ॥१८२०॥

नमिउं निय-वुत्तंतं कहिउं अब्भत्थिऊण रोवंती ।
एक्कावलिं सदुक्खं समप्पए तावसी-हत्थे ॥१८२१॥

भणियं च तीए उचियस्स एयमप्पेज्जसु त्ति सप्पणयं ।
उवरोहसीलयाए पडिच्छिया तावसीए इमा ॥१८२२॥

वोलीणं तं दियहं अह बीय-दिणम्मि देव्व-जोगेण ।
तुरगेणं अवहरिओ समागओ तत्थ वसुतेओ ॥१८२३॥

दिट्ठो य तावसीए महाणुभावो त्ति लक्खिओ एसो ।
विहिया गुरु-पडिवत्ती उचिओ एगावलीए त्ति ॥१८२४॥

उवणीया तस्सेसा पडिच्छिया तेण पुच्छिया य इमा ।
कत्तो एस त्ति सदुक्खमक्खिओ वइयरो तीए ॥१८२५॥

तं सोउं वसुतेओ अहो असच्चरियमेयमेयस्स ।
कुविओ राढाहिव-नंदणस्स लग्गोऽणुमग्गेण ॥१८२६॥

सो मिलिओ अडवीए चिंतियमेएण ताव पेच्छामि ।
राय-सुयाए चित्तं तओ करिस्सं जहाजोत्तं ॥१८२७॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रूवपरिवत्तिणीए विज्जाए वामणो इमो जाओ ।
कुड्डावणो त्ति दासीहिं दंसिओ रायकन्नाए ॥१८२८॥

पुव्वभवब्भास-समुल्लसंत-हरिसाए पुच्छिओ तीए ।
कत्तो तुमं ति तेण वि भणियं सागेय-नयराओ ॥१८२९॥

ससुरकुलाओ पत्तो त्ति हरिसिया मयणमंजरी चित्ते ।
पुणरवि वाहिज्जइ दइय-विरह-संताव-पसरेणं ॥१८३०॥

भणिया य तेण किं रायपुत्ति ! लक्खिज्जसे विसण्ण व्व ।
दीहं नीससिऊणं पयंपियं रायकन्नाए ॥१८३१॥

मज्झ विसायकहाए अलं महाभाग ! मंदभग्गाए ।
तो बाह-दुद्दिण-मुही सगग्गरा झत्ति संजाया ॥१८३२॥

वामणगेणं चिंतियमेस विसाओ इमीए मज्झ कए ।
वामणत्तणेण कामस्स तह वि जंपियमिणं तेण ॥१८३३॥

मा वच्च विसायं रायपुत्ति ! तुह वइयरो मए निसुओ ।
वसुतेयस्स तुमं जं दिन्ना तुह जणणि-जणएहिं ॥१८३४॥

मंगलराएणं पुण अवहरिया अंतरा पहे जंती ।
जुत्तं इमं पि मन्ने इमो न सामन्न-पुरिसो त्ति ॥१८३५॥

निरुवायमिणं कज्जं च एवमिमिणा अवस्स होयव्वं ।
सुव्वइ पुराण-कहासु एवमित्थीण परिणयणं ॥१८३६॥

किं च मए वसुतेओ दिट्ठो सुंदरयरो इमो तत्तो ।
ता सुंदरतर-लाभो न विसायकरो विवेगीण ॥१८३७॥

इय चिंतिऊण वच्चसु हरिसं ति पयंपिरम्मि वामणगे ।
रोस-फुरियाहरा मयणमंजरी जंपए एवं ॥१८३८॥

सागेयाओ तुममागओ त्ति तह वामणंगधारि त्ति ।
कन्न-कडुयं पि सुव्वइ तुज्झ मए एत्तियं वयणं ॥१८३९॥

जं च न सामन्न-नरो मंगलराओ त्ति सच्चमेयं ति ।
किं सामन्न-नरो वि हु पयट्टए इय अणायारे ॥१८४०॥

कह व निरुवायमेयं निमेस-मित्तेण जं चइज्जंति ।
पाणा तणं व ता कहमवस्समेवं इमं होइ ॥१८४१॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भणियत्थविवज्जासो वि किं न सुव्वइ चिरंतण-कहासु ।
न य दिट्ठो वसुतेओ तुमए मयणो व्व रूवेण ॥१८४२॥

तो मंगलरायमिमं तत्तो सुंदरयरं तुमं भणसि ।
कणगाओ मणहरं रीरियं पि जइ भणसि ता भणसु ॥१८४३॥

ता भणिएण अलं ते अत्था वि य मणहरत्तणं वयसु ।
वसुतेएणं चिंतियमहो मणं मे पिययमाए ॥१८४४॥

ता किं कहेमि अप्पाणमहव एयं न जुज्जए जम्हा ।
एगागि त्ति इमीए होइ दुहं थी-सहावेण ॥१८४५॥

इय चिंतिऊण भणियं-सुयणु ! मए लक्खियं न तुह चित्तं ।
मरिसेउ सुंदरी ता सिज्झउ तुह वंछियं कज्जं ॥१८४६॥

अहवा समीहियं आगिईइ एयाइ सिज्झए चेव ।
एत्तो य साहणं साहणं ति तुमुलो समुच्छलिओ ॥१८४७॥

एगेण पुच्छियं कस्स संतियं साहियं च अवरेण ।
वसुतेय-राय-पुत्तस्स एयमह चिंतए कुमरो ॥१८४८॥

पत्ता नंदण-पमुह त्ति जंपए रायपुत्ति ! भव धीरा ।
जायं समीहियं हिय-नंदणो आगओ तुज्झ ॥१८४९॥

अहयं पि तप्पउत्तो तुह-प्पउत्तिं गवेसिउं पत्तो ।
वच्चामि त्ति भणंतो विणिग्गओ वामणो तत्तो ॥१८५०॥

तो अज्जउत्त-संबंधि-जणो त्ति विलिया मणम्मि रायसुया ।
निय-साहणस्स मिलिओ वसुतेओ नियय-रूवेण ॥१८५१॥

कहिओ निय-सुहडाणं नंदण-पमुहाण तेण वुत्तंतो ।
जंपंति कयंतभड व्व ते वि कोवुब्भडा एवं ॥१८५२॥

कुविओ तस्स कयंतो जग्गवियं(ओ) तेण केसरी सुत्तो ।
तेण विसविसम-विसहर-फण-मणिणो वाहिओ हत्थो ॥१८५३॥

तेणऽप्पा पबल-जलंत-जलण-जालावईए पक्खित्तो ।
जेणऽम्ह सामि-दईया अवहरिया राय-विवसेण ॥१८५४॥

ता चलह इमं हंतुं काल-विलंबो न जुज्जए काउं ।
रोगा खला य खेमं न कुणंति अणुवखया खिप्पं ॥१८५५॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कुमरो जंपइ मा होह ऊसुया दप्प-दूसहा सुहडा ।
पेसिज्जउ पढमं को वि रायनीइ त्ति से दूओ ॥१८५६॥

दूयस्स साम-वयणेहिं हेउ-दिट्ठंत-जुत्ति-जुत्तेहिं ।
कहमवि मंगलराओ जइ बुज्झउ वराओ जा ॥१८५७॥

मरइ गुलेण वि तस्स देज्ज को नाम कालकूड-विसं ।
इय मंतिऊण दूओ मंगलरायस्स पट्ठविओ ॥१८५८॥

तेणावि तत्थ गंतुं मंगलराओ पयंपिओ एवं ।
वसुतेय-कुमारो रायपुत्त ! आणवइ नेहेण ॥१८५९॥

मलिणिज्जिइ जेण कुलं कलुसिज्जइ कुंदसुंदरा कित्ती ।
कवलिज्जइ गुण-निवहो कुणंति सुविणे वि तं न बुहा ॥१८६०॥

अविभाविऊण रागंधबुद्धिणा आयइं तए भद्द ।
अवहरिया मज्झ पिया अप्पिज्जउ नत्थि ते दोसो ॥१८६१॥

तह सिक्खवेमि अहमवि रत्ते "रच्चिज्जइ त्ति जुत्तमिणं ।
जं पुण विरत्तचित्ते रमइ मणं तं जणो हसइ ॥१८६२॥

वसुतेए रत्ता मयणमंजरी कमलिणि व्व सूरम्मि ।
तुज्झ पओसरस्स व संगमं पि पमिलाइ कमलमुही ॥१८६३॥

न य पडिवन्नं नय-संगयं पि वसुतेय-सासणं तेण ।
थेवमिणं ति सहरिसो सो ढुक्को कुमर-सेन्नस्स ॥१८६४॥

थेव-दलेण वि गुरु-विक्कमेण कुमरेण निज्जिउं बद्धो ।
पबलो वि अरी जम्हा धम्मेण जओ न पावेण ॥१८६५॥

अह लग्ग-गुरु-पहारं वसुतेयं मयणमंजरी दट्ठुं ।
गहिया हरिस-विसाएण सायरं साहए एवं ॥१८६६॥

एत्तो य नाइ-दूरे तवोवणे तावसीइ हत्थम्मि ।
एगावली मए नाह अप्पिया देवया-दिण्णा ॥१८६७॥

ता तीइ इमो समओ त्ति जंपिओ साहिओ पभावो से ।
भणियं कुमरेण पिए सा मज्झ समप्पिया तीए ॥१८६८॥

सा तेण दंसिया मयणमंजरीए समप्पिया तह य ।
पुव्व-कहिओ पओगो कओ य तीए जले खिविउं ॥१८६९॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रायसुयाए धावी समागया तं जलं गहेऊण ।
कुमरो जंपइ पढमं मंगलरायस्स उवणेहि ॥१८७०॥

कुमरो महाणुभावो त्ति चिंतयंतीए तीए उवणीयं ।
तत्तो मंगलराओ खणेण जाओ पउण-देहो ॥१८७१॥

अवयारपरे वि परे कुणंति उवयारमुत्तमा नूणं ।
सुरहेइ चंदण-दुमो परसु-मुहं छिज्जमाणो वि ॥१८७२॥

तत्तो नंदण-पमुहा सुहडा पउणीकया बल-दुगे वि ।
तेणं चिय सलिलेणं पच्छा वसुतेय-कुमरो वि ॥१८७३॥

संपूईऊण मुक्को मंगलराओ इओ य वसुतेओ ।
घेत्तूण मयणमंजरिमुवागओ एत्थ सागेए ॥१८७४॥

अह 'गुरुय-विभूईए परिणीया मयणमंजरी तेण ।
उप्पन्नो वीसंभो संभोएंताण दोण्हं पि ॥१८७५॥

जाओ कमेण पुत्तो तो नत्तुय-वयण-दंसण-कयत्थो ।
सिरितेओ तं रज्जे ठविऊण तवोवणं पत्तो ॥१८७६॥

जाओ महा-नरिंदो वसुतेओ तेय-तुलिय-दिणनाहो ।
पणमंत-पउर-पत्थिव-मत्थय-मणि-लीढ-पयवीढो ॥१८७७॥

अह अन्न-दिणे रन्नो कणगमय-गवक्ख-सन्निसन्नस्स ।
केसे विवरंतीए देवीए पलोइयं पलीयं ॥१८७८॥

भणियं च देव दूओ समागओ तो पलोयइ दिसाओ ।
वसुतेय-महीनाहो ससंभमं तार-तरलच्छो ॥१८७९॥

तो मयणमंजरीए भणियं बहु-समर-लद्ध-विजओ वि ।
किं दूय-समागम-सज्झसेण जाओ सि तरलच्छो ॥१८८०॥

हसिऊण भणइ राया नाहं जाओ भएण तरलच्छो ।
किंतु तुमं जं पिच्छसि अहं न पेच्छामि दूयमिणं ॥१८८१॥

न य पुव्वमकहिओ को वि मज्झ पासं समुल्लिउं लहइ ।
न य तुज्झ देवि दिट्ठी मह दिट्ठीए विसिट्ठयरा ॥१८८२॥

एएण हेउणा हं कुऊहलाउलिय-लोयणो जाओ ।
सा भणइ नाह नाहं मणुस्स-दूयं तुह कहेमि ॥१८८३॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नवरं पलियं दट्ठूण धम्म-दूओ मए समक्खाओ ।
देवीए दावियं पलियमिंदु-किरणुज्जलं रण्णो ॥१८८४॥

तं दट्ठूण नरिंदो हिम-संगम-दड्ढ-कमल-सम-वयणो ।
झत्ति तरंगिय-नयणो संजाओ बाह-सलिलेण ॥१८८५॥

तं फुसमाणा चेलंचलेण हसिऊण जंपए देवी ।
जइ लज्जसे जराए तो पडहं देव दावेमि ॥१८८६॥

जो देवं किल वुड्ढं भणिही तस्संग-निग्गहं काहं ।
तो भणइ निवो सुंदरि ! जुत्तमिणं निव्विवेयाण ॥१८८७॥

जम्हा जयम्मि जीवा मूढा वुड्ढत्तणेण लज्जंता ।
पुण वि तरुणत्त-लुद्धा खिज्जंति रसायण-निमित्तं ॥१८८८॥

वलि-पलिय-नासहेउं कुणंति तणुमद्दणोसहाईणि ।
"चंकम्मंति सलीलं पुरओ तरुणीण तरुण व्व ॥१८८९॥

पुट्ठा परेण बहुयं पि बिंति ते थेवमत्तणो जम्मं ।
गयजोव्वणा वि पयडंति उव्वणे जोव्वण-वियारे ॥१८९०॥

देवि ! मह पुव्व-पुरिसा अदिट्ठ-पलिया पलित्त-पूलं व ।
रज्जं परिहरिऊणं परलोय-समुज्जया जाया ॥१८९१॥

जं पुण पयाण-कम्मं विलंघिउं रज्जमेत्तियं कालं ।
विहियं मए महंतो तं जाओ मह मणे मच्चू ॥१८९२॥

ता संपइ पज्जत्तं रज्जेण विवेय-सेल-वज्जेण ।
परिचत्त-'सयल-संगो परलोय-हियं करिस्सामि ॥१८९३॥

इय नरवइ-वयणं मयणमंजरी सवण-दुस्सहं सोउं ।
परसु-निकत्त-वलय व्व धस त्ति धरणीयले पडिया ॥१८९४॥

विहिय-सिसिरोवयारा सत्थीभूया पयंपए एवं ।
जं पलिय-दंसणेणं मए कओ एस परिहासो ॥१८९५॥

तं नियइ-तुरंगेहिं निय-नयरे सज्जिया मए धाडी ।
तह नियइ-करेहिं मए अंगारायट्टणं विहियं ॥१८९६॥

ता काऊण पसायं देव ! इमं मा परिच्चयसु रज्जं ।
परिहासे वि कए किं जुज्जइ निव्वक्करं काउं ॥१८९७॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भणइ निवो देवि ! इमम्मि जम्म-जर-मरण-पमुह-दुह-बहुले ।
मज्झ भवे निंब-दुमे व्व सव्वकटुए रमइ न मई ॥१८९८॥

ता वज्जिऊण रज्जं परलोय-हियं अवस्स कायव्वं ।
जं उभय-लोय-सहलं सलहिज्जइ माणुसं जम्मं ॥१८९९॥

एत्तो य तस्स पडिबोह-समयमवगच्छिऊण चउनाणी ।
नामेण अमरतेओ समागओ तत्थ आयरिओ ॥१९००॥

कहिओ पुरोहिएणं तो हरिसवसुल्लसंत-रोमंचो ।
सह मयणमंजरीए तन्नमणत्थं गओ राया ॥१९०१॥

कहिओ गुरुणा धम्मो गंठि-विभेएण परिणओ ताण ।
वेरग्गाइसएण य संजाओ चरण-परिणामो ॥१९०२॥

जिणभवण-संघपूया-पुव्वं ठविऊण निय-सुयं रज्जे ।
देवीए सह पवन्नो राया दिक्खं गुरु-समीवे ॥१९०३॥

परिवालिय-सामन्नो काउं तिव्वं तवं गओ सग्गं ।
तह अपरिवडिय-धम्मो नर-सुर-रिद्धीओ भोत्तूण ॥१९०४॥

अविउत्तो देवीए वसुतेओ सत्तमे मणुय-जम्मे ।
विहिदाण-धम्मबीय-प्पभावओ सिद्धिमणुपत्तो ॥१९०५॥

सीलजुयाणं दाणं दिंतो जो पालए सयं सीलं ।
तेणं सोहग्गोवरि संपत्ता मंजरी नूणं ॥१९०६॥

जलणो वि जलं जलही वि गोप्पयं पव्वओ वि समभूमी ।
भुयगो वि कुसुममाला विसं पि अमयं सुसीलाण ॥१९०७॥

तियसा वि सीलकलियं नमंति भिक्खायरं पि भत्तीए ।
निय-सेवया वि वसुहाहिवं पि मुंचंति चूयसीलं ॥१९०८॥

सलहिज्जंति जणेहिं विसुद्धसीला मया वि आचंदं ।
गरहिज्जंति पुणो सीलवज्जिया जीवमाणा वि ॥१९०९॥

विप्फुरइ ताण कित्ती लहंति ते सग्ग-मोक्ख-सोक्खाइं ।
सीलं ससंक-विमलं जे सीलवइ व्व पालंति ॥१९१०॥

तहाहि-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[३. शीले शीलवती-कथा]

अत्थि इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे वासवपुरं व विबुह-जणाणंदणं नंदणपुरं नयरं, तत्थ दरियारि-करि-कुंभत्थल-दलण-समुच्छलिय-मुत्ताहलच्चिय-रणंगणो अरिमद्दणो राया, तत्थ दया-दाण-दक्खिन्नाइ-गुण-रयण-रयणायरो रयणायरो सेट्ठी ।

तस्स निय-सरीर-सुंदेर-गुण-विणिज्जिय-सिरी जयसिरी भारिया। ताणं च पुव्वभवोवज्जिय-पुन्नपब्भार-पाउब्भवंत-सयल-समीहियत्थाणं पंचप्पयारं विसय-सुहमणुहवंताणं वच्चंति वासरा, केवलं निरवच्चत्तण-दुहं दूमेइ मणं सेट्ठिणो[1] ।

अन्नया भणिओ भज्जाए– अज्जउत्त ! अत्थि एत्थेव नयरुज्जाणे अजियजिणिंद-मंदिर-दुवारदेसे अजियबला देवया । सा य अपुत्ताण पुत्तं, अवित्ताण वित्तं, अरज्जाणं रज्जं, अविज्जाण विज्जं, असोक्खाण सोक्खं, अचक्खूण चक्खुं, सरोयाण रोयक्खयं देइ खिप्पं । किं बहुणा ? जं जस्स समीहियं तं तस्स वियरइ, तो तुमं पि किमेवमुव्वेयमुव्वहसि ? कुणसु तीए उवाईयं जेण चिंतियत्थ-सिद्धी होइ । सेट्ठिणा भणियं–पिए ! सुट्ठु सुमरावियं तए । तओ सो ण्हाय-विलित्तो सेय-दुकूल-निवसणो सपरियणो पूओवगरणं गहाय गओ जिण-भवणं, कया अजियसामिणो पडिमाए घण-घुसिण-घणसार-सिरिखंड-कत्थूरिया-अगुरु-कुसुमाईहिं ण्हवणच्चणाइ-महिमा । समागओ अजियबलाए अग्गओ सेट्ठी । तं च तहेव अच्चिऊण भणियमणेण–भयवइ ! जइ तुह पसाएण मह पुत्तो भविस्सइ ता अहं जिणधम्मपरो ते महंत-भत्तिं करिस्सं । तुह संतियं च नामं पुत्तस्स दाहामि त्ति । तप्पभिइं च पाउब्भूओ गब्भो घरिणीए । जाओ कालक्कमेण पुत्तो । कयं वद्धावणयं । पुन्ने य मासे कया महया विच्छड्डेणं जिणभवणे जत्ता । अजियजिणस्स अजियबलाए य चलणाणं पुरओ [10]मोत्तूण पुत्तं तस्स कयं अजियसेणो त्ति नामं । तप्पभिइं च जाओ जिणधम्म-परायणो सेट्ठी । सह जणय-मणोरहेहिं वुड्ढिमुवागओ अजियसेणो । सो य सिक्खिय-कला-कलावो लावन्न-लच्छि-संपन्नं पवन्नो तारुन्नं । तस्स य सयल-जणब्भहियं रूवाइ-गुणगणं पिच्छिऊण चिंतियं [11]सेट्ठिणा–'जइ एस मह नंदणो निय-गुणाणुरूवं कलत्तं न लहइ, ता इमस्स अकयत्था गुणा । जओ–

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सामी अविसेसन्नू अविणीओ परियणो परवसत्तं ।
भज्जा य अणणुरूवा चत्तारि मणस्स सल्लाइं ॥१९११॥

एवं चिंतयंतस्स तस्स समागओ एगो वाणिउत्तो । पणमिऊण निविट्ठो समीवे । पुट्ठो य सेट्ठिणा ववहार-सरूवं । कहियं च तेण सव्वं । अन्नं च, तुज्झ आएसेण गओ हं कयंगलाए नयरीए, पयट्टो ववहरिउं । जाओ जिणदत्त-[14]सेट्ठिणा ववहारो । अन्नया निमंतिओ हं भोयणत्थं, तेण गओ तग्गेहं । दिट्ठा य तत्थ चंदकंतेण वयणेण पउमराएहिं हत्थेहिं पाएहिं य पवालेणं सिरेणं दिप्पमाण-हिरण्णएणं नियंबेणं सुवन्नेणं अंगेणं मयण-महाराय-भंडार-मंजूस व्व संचारिणी एगा कन्नगा । पुट्ठो य मए सेट्ठी- का एस ? त्ति । सेट्ठिणा भणियं- भद्द ! मह धूया-मिसेण मुत्तिमई एसा चिंता । जओ-

किं लट्ठं लहिही वरं पिययमा किं तस्स संपज्जिही,
किं लोयं ससुराईयं निय-गुणग्गामेण रंजिस्सए ।
किं सीलं परिपालिही पसविही किं पुत्तमेवं धुवं,
चिंता मुत्तिमई पिऊण भवणे संवड्ढए कन्नगा ॥१९१२॥

एसा य सरीर-सुंदरिम-दलिय-देवरमणी-मडप्फरा, सहावओ गुणप्पिया पियाला विणीया, नीयजण-संसग्ग-रहिया, हियाहिय-वियार-कुसला, सलाहणिज्ज-सीला सीलमइ त्ति गुणनिप्पन्न-नामा । बालत्तणओ वि पुव्वकय-सुकय-वसेण सउणरूय-पज्जवसाणाहिं कलाहिं सहीहिं च पडिवन्ना । इमीए य अणुरूवं वरमलहंतस्स मे अच्चंतं चिंता वियंभइ । अओ मए एसा वि चिंत त्ति वुत्ता । मए भणियं-सेट्ठि ! मा संतप्प । अत्थि नंदणपुरे रयणायर-सेट्ठिणो विसिट्ठ-रूवाइ-गुणगणेण लोउत्तरो त्ति विस्सुओ [सुओ] अजियसेणो । सो य तुह धूयाए अणुरूवो वरो त्ति । जिणदत्तेण वुत्तं- भद्द ! तुमए महामहंत-चिंता-समुद्द-निमग्गस्स पवर-वरोवएस-बोहित्थेण नित्थारो कओ । ता तुमं चेव पमाणं । ति भणंतेण तेण अजियसेणस्स सीलमइं दाउं पेसिओ जिणसेहरो पुत्तो मए समं, सो य इहागओ चिट्ठइ । ता जहाजुत्तमाइसउ सेट्ठी । सेट्ठिणा वुत्तं-जिणदत्तो व्व तुमए अहं पि चिंता-समुद्दाओ नित्थारिओ । ता हक्कारेसु जिणसेहरं । तेणावि आणिओ एसो । सगोरवं दिन्ना अणेण अजियसेणस्स सीलमई । अजियसेणेणावि तेणेव सह

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गंतूण कयंगलाए परिणीया सीलमई । घेत्तूण तं आगओ स-नयरं । भुंजए भोए । अइक्कंतो कोइ कालो । कयाइ मज्झ-रत्ते घडं घेत्तूण गिहाओ निग्गहा सीलमई । केत्तिय वेलाए आगया दिट्ठा ससुरेण । चिंतियं- नूणं एसा कुसीला । पभाए गिहिणीए समक्खं भणिओ रहसि पुत्तो- वच्छ ! तुहेसा घरिणी कुसीला, जओ, अज्ज मज्झ-रत्ते निग्गंतूण कत्थइ गया आसि । ता एसा न जुज्जए गिहे धरिउं । जओ-

घण-रस-वसओ उम्मग्ग-गामिणी भग्ग-गुण-दुमा कलुसा ।
महिला दो वि कुलाइं कूलाइं नइ व्व पाडेइ ॥१९१३॥

ता पराणेमि एयं पिईहरं । पुत्तेण वुत्तं–ताय ! जं जुत्तं तं करेसु । भणिया वहुया । आगया सीलमई । 'भद्दे ! सिग्घं पेसेज्जसु' त्ति तुह जणय-संदेसओ । ता पहाए चलसु जेण तुमं सयं पराणेमि । सा वि रयणि-निग्गमणेण ममं कुसीलं संकमाणो एवमाइसइ ससुरो, पेच्छामि ताव एयं पि त्ति चिंतिऊण चलिया रहारूढेण सेट्ठिणा समं । वच्चंताणि ताणि पत्ताणि नईए । सेट्ठिणा वुत्तं–वच्छे ! पाणहाओ मुत्तूण नइं ओयरसु । तीए न मुक्काओ ताओ । सेट्ठिणा 'अविणीय' त्ति चिंतियं । अग्गओ गच्छंतेहिं दिट्ठं पढम-वत्ता-पइन्नं अच्चंत-फलियं मुग्ग-खेत्तं । सेट्ठिणा भणियं–अहो ! फलियं मुग्ग-खेत्तं । सव्व-संपया खेत्तसामिणो । तीए भणियं–एवमेयं जइ न खद्धं ति । सेट्ठिणा चिंतियं-अक्खयं पेक्खंती वि खद्धं ति अक्खइ । अओ असंबद्ध-प्पलाविणी । गयाइं एगं रिद्धित्थिमिय-पमुईय-जण-संकुलं नगरं । [13]सेट्ठिणा भणियं–अहो रम्मत्तणमिमस्स !। तीए भणियं–जइ न उव्वसं ति । सेट्ठिणा चिंतियं– उल्लुंठभासिणी इमा । गयाइं अग्गओ, दिट्ठो आगच्छंतो परूढाणेगप्पहारो पहरणकरो कुलपुत्तओ । सेट्ठिणा वुत्तं–अहो ! सूरो एस पुरिसो । तीए भणियं–अत्थि ताव कुट्टिओ । सेट्ठिणा चिंतियं–किं न सूरो सो जो सत्थेहिं कुट्टिज्जइ ? परं अजुत्तजंपिरी इमा । गयाइं अग्गओ । नग्गोह-तले वीसंतो सेट्ठी । इअरी उण नग्गोह-छायं छड्डिऊण ठिया दूरे । सेट्ठिणा भणियं–अच्छसु छायाए । न तत्थ ट्ठिया । सेट्ठिणा चिंतियं–सव्वहा विवरीय त्ति । [14]पत्ताइं य गाममेगं । वहूए वुत्तो सेट्ठी– एत्थ मे माउलगो चिट्ठइ । तं जाव पेच्छामि ताव तुब्भे पडिवालह त्ति । गया मज्झे, दिट्ठा माउलगेण । ससंभमं भणिया–वच्छे ! कत्तो तुमं ?

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तीए भणियं-ससुराओ ससुरेण समं पत्थियम्हि । तेण भणियं-कत्थ ते ससुरो ? तीए वुत्तं-बाहिं चिट्ठइ । गओ तत्थ माउलगो । हक्कारिओ सायरं सेट्ठी । स-कसाओ त्ति अणिच्छंतो वि नीओ गरुय-निब्बंधेण गेहं । भोयणं काऊण आगओ बाहिं । मज्झन्न-समओ त्ति वीसमिओ रहब्भंतरे । सीलमई वि निसन्ना रहच्छायाए । एत्थंतरे करीरत्थंबावलंबी पुणो पुणो वासए वायसो । भणियं णाए-अरे काय ! किं न थक्कसि करयरंतो ?

एक्के दुन्नय जे कया तिहि नीहरिय घरस्स ।
बिज्जा दुन्नय जइ करउं तो न मिलउं पियरस्स[१५] ॥११९४॥

सुयमिणं सिट्ठिणा । भणिया सा- वच्छे ! किमेवं जंपसि ? वहूए भणियं- न किंचि । सिट्ठिणा भणियं- कहं न किंचि ? वायसमुद्दिसिऊण एक्के दुन्नय त्ति जं पढियं तं साभिप्पायं । वहुए वुत्तं- जइ एवं, ता सुणउ ताओ-

सोरब्भगुणेणं छेय-घरसणाईणि चंदणं लहइ ।
रागगुणेणं पावइ खंडण-कढणाइ मंजिट्ठा ॥११९५॥

तियसेहिं तोयरासी महिओ रयणायरत्तण-गुणेण ।
जं पुण गुणेण कीरस्स कीरए पंजरे क्खेवो ॥११९६॥

कणगमदब्भत्त-गुणेण खिप्पए पावयम्मि पुणरुत्तं ।
रमणीअत्त-गुणेणं विंदइ मुत्ताहलं वेहं ॥११९७॥

एवं ममावि गुणो सत्तू संजाओ, जओ, सयल-कला-सिरोमणि-भूअं सउणरूयं अहं मुणेमि । तओ अइक्कंत-दिण रयणीए सिवाए रसंतीए साहियं जहा- नईए पूरेण वुज्झमाणं मडयं कड्ढिऊण सयं आहरणाणि गिण्हसु, मम भक्खं तं खिवसु । इमं सोऊण गयाहं घेत्तूण घडगं, तं च हियए दाऊण पविट्ठा नई, कड्ढियं मडयं, गहियाणि आहरणाणि, खित्तं सवं सिवाए, आगया गिहं, आभरणाणि घडए खिविऊण निक्खयाणि खोणीए । एवं एक्क-दुन्नयस्स पभावेण समागया एत्तियं भूमिं, संपयं तु वासंतो वायसो कहइ जहा-एयस्स करीरथंबस्स हेट्ठा दस सुवन्न-लक्खप्पमाणं निहाणमत्थि । तं घेत्तूण मम करंबय-घडं देसु त्ति । इमं सोऊण सहसा समुट्ठिओ सेट्ठी । भणइ- वच्छे ! सच्चमेयं ? वहुए जंपियं-किं अलियं जंपिज्जए तायपायाणं पुरओ ?

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अहवा हत्थत्थे कंकणे किं दप्पणेणं ? ति निहालेउ ताओ । तओ ठिओ तत्थेव सेट्ठी। गहियं निहाणं रयणीए । अहो मुत्तिमंती इमा लच्छि त्ति जायबहुमाणो आरोविऊण वहुं रहे नियत्तो सेट्ठी । पत्तो नग्गोहं । पुच्छिया वहू-किं न तुमं इमस्स छायाए ठिया ? वहूए अक्खियं- रुक्ख-मूले अहिदंसाइ-भयं, विरामणे चोराइ-भयं, हेट्ठओ कागबगाइ-विट्ठा-पडण-भयं । दूरट्ठियाणं तु न सव्वमेयं । पुणो पुट्ठं सेट्ठिणा सूरमुद्दिस्स-अत्थि ताव कुट्टिओ त्ति तए जंपियस्स को परमत्थो ? तीए वुत्तं- न हि कुट्टिओ त्ति सूरो किंतु पढमं जो न पहरइ । नगरं दट्ठूण सेट्ठिणा वुत्तं- कहमेयमुव्वसं ? ति । तीए वुत्तं-जत्थ नत्थि सयणो सागय-पडिवत्तिकारओ तं कहं वसिमं । खेत्तं दट्ठूण पुट्ठं सेट्ठिणा- कहमेयं खद्धं ? ति । तीए वुत्तं- ववहरगाओ दव्वं वुड्ढीए कड्ढिऊण खेत्त-सामिणा खद्धं ति खद्धं । नइं दट्ठूण भणियं सेट्ठिणा-किं तए नईए पाणहाओ न मुक्काओ ? । तीए जंपियं-जल-मज्झे कील-कंटगाइन्ने न दीसइ त्ति । समागओ गिहं सिट्ठी । दंसियाइं तीए महि-निहित्त-घडगाभरणाइं । तुट्ठेण सिट्ठिणा घरिणीए सुयस्स य सव्वमाविक्खिऊण कया घरसामिणी ।

अन्नया खणभंगुरत्तणेण सव्वभावाणं पइसमइ दिसरारुत्तणेण आउकम्मुणो, अनिवारिअ-पसरत्तणेणं कयंतस्स कय-सव्व-सत्त-क्खामणो पंच-नमोक्कारपरो पंचत्तमुवगओ सेट्ठी । सिरी वि तव्विओग-सोग-संगलंत-बाह-पज्जाउलच्छी, तुच्छ-जले मच्छलिय व्व भववासे रइं अलहंती, पवन्न-तिव्व-तव-विसेस-सोसिय-तणू पत्ता परलोयं । अजियसेणो वि अम्मा-पिउ-मरण-दूसिय-मणो ताण परलोय-किच्चं काऊण सविसेस-जिणधम्मपरो जाओ ।

अह अरिमद्दण-नरिंदो अत्थाण-मंडवोवगओ एगूणपंचसयाणं मंतीणं पहाणभूयं मंतिं मग्गमाणो नायरए, पत्तेयं पुच्छइ- भो ! भो ! जो ममं पाएण पहणइ तस्स किं कीरइ ? त्ति । ते वि अविन्नाय-परमत्था जंपंति-देव ! किन्न सारीरो निग्गहो कीरइ ? पुट्ठो य अजियसेणो । तेण वुत्तं-परिभाविऊण कहिस्सं । गिहमागंतूण राय-परिणुत्तरं पुट्ठा सीलमई । तीए चउव्विह-बुद्धि-संपन्नाए भणियं जहा-तस्स माणुसस्स महंतो सक्कारो कीरइ । भत्तुणा पुट्ठं-कहमेयं ? । तीए वुत्तं-वल्लहाए विणा नत्थि अन्नस्स 'रायाणं पाएण पहणेमि'त्ति चिंतिउं जोग्गया, किं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पुण पहरिउं ?। गओ रायसहाए सो । कहियं पुव्वुत्तं । तुट्ठो राया । कओ अणेण सव्व-मंतीण सिरोमणी ।

अन्नया तस्स रायस्स विउत्थिओ सीहरहो पच्चंतो राया । तस्सोवरिं चलंत-मत्तमयगल-मयजलासार-सित्त-महियलो, तरल-तुरय-खुरक्खय-खोणि-रेणु-घण-पडलापूरिय-नहंगणो, संचरंत-रहसिहर-धवल-धयवडाया-बलायापंति-मणहरो, गहिर-वज्जिराउज्ज-गज्जि-जज्जरिय- बंभंड-भंडोयरो नव-पाउसो व्व चलिओ राया । अजियसेणो य दिट्ठो सीलमईए चिंताउरो, पुच्छिओ चिंताए कारणं । तेण वुत्तं—गंतव्वं मए रन्ना समं । तुमं घेत्तूण वच्चंतस्स मे घरं सुन्नं । तहा जइ वि तुमं अक्खलिय-सीला तह वि एगागिणी गिहे मोत्तूण वच्चंतस्स न मे मण-निव्वुई । अओ चिंताउरो म्हि । सीलमईए वुत्तं—

जलणो वि होइ सिसिरो रवी वि उग्गमइ पच्छिम-दिसाए ।
मेरु-सिहरं पि कंपइ उच्छल्लइ धरणिवीढं पि ॥१९१८॥

जायइ पवणो वि थिरो मिल्लइ जलही वि नियय-मज्जायं ।
तह वि मह सील-भंगं सक्को वि न सक्कए काउं ॥१९१९॥

तह वि तुमं मण-निव्वुइ-हेउं गिण्हसु इमं कुसुममालं ।
मह सील-पभावेण अमिलाण च्चिय इमा ठाही ॥१९२०॥

जइ पुण मिलाइ तो सील-खंडणं निम्मियं ति जंपंती ।
सा खिवइ निय-करेहिं पइणो कंठे कुसुममालं ॥१९२१॥

तो अजियसेण-मंती सीलमइं मंदिरम्मि मुत्तूण ।
निव्वुय-चित्तो चलिओ सह अरिमद्दण-नरिंदेण ॥१९२२॥

अणवरय-पयाणेहिं तम्मि पएसम्मि नरवई पत्तो ।
जत्थ न हवंति कुसुमाइं जाई-सयवत्तियाईणि ॥१९२३॥

दट्ठूण कुसुममालं अमिलाणं अजियसेण-कंठम्मि ।
तं भणइ निवो कत्तो तुह अमिलाणा कुसुममाला ॥१९२४॥

अच्छरियं गरुयमिणं [१६]मए गवेसावियाइं सव्वत्थ ।
निय-पुरिसे पट्ठविउं तह वि न पत्ताइं कुसुमाइं ॥१९२५॥

जंपइ मंती जा मह पियाइ पत्थाण-वासरे खित्ता ।
स च्चिअ माला न मिलाइ तीए सीलप्पभावेण ॥१९२६॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तं सोउं नरनाहो [17]विम्हिय-हियओ गए अजियसेणे ।
निय-नम्ममंति-मंडलमालवइ वियारसारमिणं ॥१९२७॥

जं अजियसेण-सचिवेण जंपियं तं किमेत्थ संभवइ ? ।
कामंकुरेण वुत्तं कत्तो सीलं महिलियाणं ? ॥१९२८॥

ललियंगएण भणियं सच्चं कामंकुरो भणइ एयं ।
रइकेलिणा पलत्तं देवस्स किमित्थ संदेहो ? ॥१९२९॥

भणियमसोगेणं पट्ठवेसु मं देव ! जेण सीलमइं ।
वियलिय-सीलं काउं देवस्स हरामि संदेहं ॥१९३०॥

तो नरवइणा एसो आइट्ठो अप्पिऊण बहु-दव्वं ।
पत्तो य नंदणपुरे सीलवईए गिहासन्ने ॥१९३१॥

गिण्हइ गेहं गरूयं कंठ-पघोलंत-पंचमुग्गारो ।
किन्नरगीयाण गुणं गायइ गीयं गवक्ख-गओ ॥१९३२॥

पयडिय-उज्जल-वेसो पलोयए साणुराय-दिट्ठीए ।
निच्चं पयासए चाय-भोग-दुल्ललियमप्पाणं ॥१९३३॥

एवं बहुप्पयारे कुणइ इमो चेट्ठिए तओ एसा ।
चिंतइ नूणं मह सील-खलणमिच्छइ इमो काउं ॥१९३४॥

फण-फणि-रयणुक्खणणं व जलण-जालावली-कवलणं व ।
केसरि-केसर-गहणं व दुक्करं तं न मुणइ जडो ॥१९३५॥

पेच्छामि ताव कोउगं ति चिंतिऊण पयट्टा तं पलोइउं । असोगो वि सिद्धं मे समीहियं ति मन्नंतो पट्ठवेइ दूइं ।

भणिया य तीए सीलवई- भद्दे ! कुसुमं व थेवकाल-मणहरं जोव्वणं, ता इमं विसय-सुहासेवणेण सहलं काउं जोत्तं । भत्ता य तुह रन्ना समं गओ । एसो य सुहओ तुमं पत्थेइ । तीए चिंतियं-सुहओ त्ति सुट्ठु हओ वराओ जं एरिसे पावे पयट्टइ । दूईए भणियं-

परसयच्छि ! पसीयसु मयण-जलण-जाला-कलाव-संतत्तं ।
नियंग-संगमामयरसेण निव्ववसु मम गत्तं ॥१९३६॥

सीलमईए वुत्तं जुत्तमिणं किंतु परपुरिस-संगो ।
कुल-महिलाण अजुत्तो दव्व-पसंगो व्व साहूण ॥१९३७॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नवरं इमो वि कीरइ जइ लब्भइ मग्गियं धणं कह वि ।
उच्छिट्ठं पि हु भत्तं भक्खिज्जइ नेह-लोहेण ॥१९३८॥

तीए वुत्तं मग्गसि कित्तियमेत्तं धणं तुमं भद्दे ? ।
सीलमई जंपइ अद्धलक्खमिण्हिं समप्पेउ ॥१९३९॥

गहिऊण अद्ध-लक्खं निसाए पंचम-दिणे सयं एउ ।
जेण अपुव्वं वियरेमि रइ-सुहं तस्स सुहयस्स ॥१९४०॥

तीए कहियमेयं असोगस्स । तेणावि समप्पियं अद्ध-लक्खं । सीलमईए वि गूढओ अप्प-पच्छन्न-पुरिसेहिं खणाविआ खड्डा । ठाविआ तीए उवरि वर-वत्थ-पच्छाइआ अवुणिय-खट्टा । पंचम-दिण-रयणीए दाऊण अद्ध-लक्खं आगओ असोगो । निविट्ठो खट्टाए । धस त्ति निवडिओ खुड्डाए । सीलमई वि तस्स दयाए दिणे दिणे देइ दोरबद्ध-सरावेण भोयणं ।

इओ य मासे पुन्ने अरिमद्दण-नरिंदेण भणिया नम्ममंतिणो-किं नागओ असोगो ? । तेहिं वुत्तं-न याणीयइ कारणं । रइकेलिणा वुत्तं-देह ममाएसं जेणाहं साहेमि सिग्घं चेव चिंतियत्थं । रन्ना बहुं दव्वं अप्पिऊण विसज्जिओ सो । आगओ नयरे । सो वि लक्खं दाऊण तहेव निविट्ठो खट्टाए । "निवडिओ खड्डाए । एवं ललियंगय-कामंकुरा वि लक्खं लक्खं दाऊण पडिया खड्डाए । असोग[गाइ सकम्मेण] कमेण चेव ससोगा चिट्ठंति । अरिमद्दण-नरिंदो वि वसीकाऊण सीहरहं समागओ निय-नयरं । भणिया य सीलमई कामंकुराईहिं-

जे अप्पणो परस्स य सत्तिं न मुणंति माणवा मूढा ।
वर-सीलवंति जं ते लहंति तं लद्धमम्हेहिं ॥१९४१॥

ता दिट्ठं तुह माहप्पं । सिट्ठा अम्हे । करेहि पसायं । निस्सारेहि एक्कवारं नरयाओ व्व विसमाओ इमाओ अगडाओ । तीए वुत्तं-एवं करिस्सं जइ मह वयणं करेह । तेहिं वुत्तं-समाइस जं कायव्वं । तीए वुत्तं-जयाहं एवं होउ त्ति भणेमि तया तुब्भेहिं पि एवं होउ त्ति वत्तव्वं । पडिवन्नमणेहिं । तीए वुत्तो मंती-निमंतेहि रायाणं । तेण तहेव कयं । आगओ राया । कया पडिवत्ती । तीए य पच्छन्नं कया भोयणाइ सामग्गी । रन्ना चिंतियं-निमंतिओ हं ताव न दीसए भोयणोवक्कमो को वि । ता किमेयं ? ति । तीए य खड्डाए काऊण कुसुमाईहिं पूयं, भो

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भो ! रसवई सव्वा वि होउ । तेहिं भणियं-एवं होउ त्ति । आगया रसवई । रन्ना कयं भोयणं । तओ पुव्व-पउणीकयाइं तंबोल-पुप्फ-विलेवण-वत्थाहरणाइं जाइं च चत्तारि लक्खाइं इच्चाइ सव्वं पि होउ त्ति । तीए य जंपिए खड्डा-गएहिं जंपियं-एवं होउ त्ति सव्वं ढुक्कं । समप्पियं रन्नो । चिंतियं अणेण-अहो ! अउव्वा सिद्धी । जं खड्डा-समुट्ठियं वयणाणंतरमेव सव्वं संपज्जइ त्ति विम्हियमणेण पुट्ठा सीलमई-भद्दे ! किमेयमच्छेरयं ? ति । तीए वुत्तं-देवं ! मह सिद्धा चिट्ठंति चत्तारि जक्खा । ते सव्वं संपाडंति । रन्ना वुत्तं-समप्पेहि मे जक्खे जेण रसवई-पमुहं ममावि अकिलेसेण संपज्जइ । तीए वुत्तं-देव ! देवस्संतियं चेव सव्वं, तो गिण्ह जक्खे । तुट्ठो राया । गओ नियावासं । तीए वि ते चच्चिया चंदणेण अच्चिया कुसुमेहिं, चउसु चुल्लगेसु चत्तारि विक्खित्ता सगडेसु आरोविऊण वज्जंतेहिं तूरेहिं संझाए नीया रायभवणं । पभाए य अज्ज जक्खा भोयणाइं दाहिंति त्ति निवारिया रन्ना सूअया । राइणो भोयण-समए सयं कुसुमाईहिं पूईऊण चुल्लगाइं भणियं-'रसवई होउ' । चुल्लग-गएहिं वुत्तं एवं होउ त्ति । जाव न किंपि होइ, रन्ना विलक्ख-वयणेण उग्घाडियाइं चुल्लगाइं । दिट्ठा छुहा-सुसियत्तणेण पणट्ठ-मंस-सोणिया फुडोवलक्खिज्जमाण-अट्ठि-संचया पयड-दीसंत-नसाजाला गिरिकंदर-सोयरोयरा "खामकवोला मिलाण-लोयणा असंसत्त-सीयवायत्तणेण विच्छाय-कायच्छविणो विसन्न-चित्ता पयाव-चत्ता चत्तारि जणा । अहो ! न हुंति एए जक्खा, किंतु रक्खस त्ति भणंतेण भणिओ अणेहिं राया-देव ! न जक्खा न रक्खसा अम्हे, किंतु कामंकुराइणो तुह वयंसय त्ति जंपंता पडिया पाएसु । रन्ना वि सम्मं निरूवंतेण उवलक्खिऊण भणिया सविम्हयं-भद्दा ! कहं तुम्हाणं एरिसी अवत्था जाया ? । तेहिं पि कहिओ जहा-वित्तो वुत्तंतो । हक्कारिऊण रन्ना 'अहो ते बुद्धि-कोसल्लं ! अहो ते सील-परिपालण-पयत्तो ! अहो ते विवेयसारया ! अहो ते उभयलोय-भयालोयणप्पहाणया ! त्ति सलाहिया सीलमई, वुत्तं च अमिलाण-कुसुममाला-दंसणेण पयडं पि ते सील-माहप्पं । असद्दहंतेण मए चेव इमे पट्ठविया, तो न कायव्वो कोवो त्ति खमाविया । तीए वि धम्मदेसणं काऊण पडिबोहिओ राया । राय-नम्मसचिवा य कराविया सव्वे परदार-निवित्तिं । खमाविया विसेसओ कामंकुराइणो रण्णा य । सक्कारिया सीलमई गया सट्ठाणं ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अन्नया समागओ गंधगओ व्व कलहेहिं चंदो व्व नक्खत्तेहिं रायहंसो व्व कलहंसेहिं परिवारिओ पवर-समणेहिं मण पज्जवनाण-मुणिय-मणुयाइ-मण-वियप्पणो पणयपाणि-कप्पद्दुमो दमघोसो आयरिओ। गओ तस्स वंदणत्थं समं सीलमईए अजियसेणो। वंदिऊण गुरुं सेस-साहुणो य निविट्ठो उचिय-देसे। भणिया गुरुणा सीलमई-भद्दे ! धन्ना तुमं पुन्नभवब्भासाओ चेव ते सील-परिपालण-पयत्तो। मंतिणा वुत्तं-भयवं ! कहमेयं ? ति। वागरियं गुरुणा-

कुसउरे नयरे कुसलाणुट्ठाण-लालसो पावकम्म-करणालसो सुलसो सावओ। तस्स विणय-दया-दाण-सील-सद्धाइ-गुणावज्जिय-जसा सुजसा भज्जा। ताणं च घरे पयइ-भद्दओ दुग्गो कम्मयरो। दुग्गिला से घरिणी। कयाइ सुजसाए समं गया दुग्गिला साहुणीणं सयासं। कया सुजसाए तत्थ सवित्थरं पुत्थय-पूया पसत्थ-वत्थ-कुसुमाईहिं, वंदिया चंदणा पवत्तिणी। कयं उववास-पच्चक्खाणं, पणमिऊण पुच्छिया दुग्गिलाए पवत्तिणी- भयवइ ! किमज्ज पव्वं ?। भणियं भयवईए- अज्ज सियपंचमी सुयतिहि त्ति सा जिणमए समक्खाया। एयाइ नाणपूया तवो य जहसत्ति कायव्वो।

इह पुत्थयाइं जे वत्थ-गंध-कुसुमच्चएहिं अच्चंति।
ढोयंति ताण पुरओ नेवज्जं दीवयं दिंति ॥१९४२॥

सत्तीए कुणंति तवं ते हुंति विसुद्ध-बुद्धि-संपन्ना।
सोहग्गाइ-गुणड्ढा सव्वन्नु-पयं च पाविंति ॥१९४३॥

तो दुग्गिलाए वुत्तं धन्ना मह सामिणी इमा सुजसा।
अत्थि तवे सामत्थं जीसे धम्मत्थमत्थो य ॥१९४४॥

अम्हारिसो उण जणो अधणो तवकरण-सत्तिरहिओ य।
किं कुणउ मंदभग्गो पवत्तिणीए तओ भणियं ॥१९४५॥

सत्तीए चाग-तवं करेसु सीलं तु अप्पवसमेयं।
पर-नर-निवित्तिरूवं जावज्जीवं तुमं धरसु ॥१९४६॥

अट्ठमि-चउद्दसीसु य तिहीसु तह निय-पइं पि वज्जेसु।
एवं कयम्मि भद्दे ! तुमं पि पाविहिसि कल्लाणं ॥१९४७॥

पडिवन्नमिणं तीए मन्नंतीए कयत्थमप्पाणं।
गेहंगयाइ कहियं निय-पइणो सो वि तं सोउं ॥१९४८॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तुट्ठमणो बहुमन्नइ तए फलं जीवियस्स पत्तं ति ।
भणइ य अओ परमहं काहं परदार-परिहारं ॥१९४९॥

पव्वतिहीसु इमासु अ विरइस्सं निय-कलत्त-नियमं पि ।
इय कय-नियमेहिं तेहिं कमेण पत्तं च संमत्तं ॥१९५०॥

अह दुग्गिला विसेसुल्लसंत-सद्धा सयं तवं काउं ।
पूएइ पुत्थए सुयतिहिसु तद्दियह-वित्तीए ॥१९५१॥

कालेण दो वि मरिउं सोहम्मे सुरवरत्तणं लहिउं ।
चईऊण दुग्गय-जीवो जाओ सि तुमं अजियसेणो ॥१९५२॥

एसा य दुग्गिला तुह सीलमई भारिया समुप्पन्ना ।
नाणाराहणवसओ विसिट्ठ-मइभायणं जाया ॥१९५३॥

तो जाय-जाइसरणेहिं तेहिं भणियं- मुणिंद ! जं तुमए ।
अक्खायं तं सच्चं तो एवं वागरेइ गुरू ॥१९५४॥

जइ देसओ वि [20]परिवालियस्स सीलस्स फलमिणं पत्तं ।
ता कुणह पयत्तं सव्वओ वि परिपालणे तस्स ॥१९५५॥

तं सव्व-संग-परिहाररूव-दिक्खाइ होइ गहणेण ।
तेहिं भणियं- पसायं काउं तं देहि अम्हाणं ॥१९५६॥

तो दिक्खियाइं दोन्नि वि गुरुणा संवेग-परिगय-मणाइं ।
पालंति जावजीवं अकलंकं सव्वओ सीलं ॥१९५७॥

मरिऊण बंभलोयं गयाइं भोत्तूण तत्थ दिव्व-सुहं ।
तत्तो चुयाइं दोन्नि वि निव्वाणपयम्मि पत्ताइं ॥१९५८॥

जो विमल-सील-पालण-समुज्जओ उज्जमं तवे कुज्जा ।
सो किं भन्नइ [21]इक्कं सीहो अन्नं व पक्खरिओ ? ॥१९५९॥

जह कंचणस्स जलणो कुणइ विसुद्धिं मलावहरणेणं ।
जीवस्स तहेव तवो कम्म-समुच्छेय-करणेण ॥१९६०॥

कम्माइं भवंतर-संचियाइं तुट्टंति किं तवेण विणा ? ।
डज्झंति दवानलमंतरेण किं केणवि वणाइं ? ॥१९६१॥

अगणिय-तणुपीडेहिं तित्थयरेहिं तवो सयं विहिओ ।
कहिओ तह तेहिं चिय तित्थयरत्तण-निमित्तमिमो ॥१९६२॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कुसुमसमाओ तियसिंद-चक्कवट्टित्तणाइ-रिद्धीओ ।
जाणसु तव-कप्पमहीरुहस्स सिवसुक्ख-फलयस्स ॥१९६३॥

जं पुव्वज्जिय-पाव-पव्वय-पवी जं काम-दावानल-
ज्जाला-जाल-जलं जमुग्गकरणग्गामाहि मंतक्खरं ।
जं पच्चूह-समूह-मेह-पवणो जं लद्धि लद्धीलया-
मूलं तम्मि तवम्मि निम्मलमई कुज्जा न को आयरं ? ॥१९६४॥

कयदुक्कओ वि पुव्वं कुणमाणो दुक्करं तवं जीवो ।
पावइ विउल-सुहाइं निब्भग्गो एत्थ दिट्ठंतो ॥१९६५॥

तहा हि-

[४. तपश्चरणे निर्भाग्य-कथा]

अत्थि धायइ-संडे दीवे पुव्व-भरहक्खेत्ते अयलग्गामे सीहो गाम-चिंतओ । तस्स सिंहला जाया । जाया य इमा[२२] कयाइ आवन्नसत्ता । एत्तो य सत्तूहिं वावाइओ गामचिंतओ । [२३]अवहडं घरसारं । गहियं गो-महिसाइ धणं । सिंहला वि निद्धणत्तणओ किच्छेण पाणवित्तिं कुणमाणा पसूया दारयं ।

जं गब्भगए य जणओ इमंमि निहणं गओ सह धणेणं ।
ता एसो निब्भग्गो त्ति जंपिओ सयल-लोएण ॥१९६६॥

तं चेव तस्स नामं गयं पसिद्धिं गओ य सो वुड्ढिं ।
मह-दुक्ख-समुदएणं संजाओ अट्ठ-वारिसिओ ॥१९६७॥

अह तस्स मया माया भिक्खं भमिउं इमो समाढत्तो ।
न य किंपि लहइ कत्थइ तत्तो गामाउ निक्खंतो ॥१९६८॥

पत्तो य देवगामे दिट्ठो दत्तेण जणय-मित्तेण ।
भणिओ य- मज्झ गेहे चिट्ठसु चारेसु महिसीओ ॥१९६९॥

तओ चारिउं पवत्तो । अन्नया महिसीहिं समं नीओ चोरेहिं दूरं । तत्थ बंधिऊण अल्लबद्धेण धव-रुक्खेण समं मुक्को अरन्ने । ठिओ छुहा-तिसा-किलंतो सत्त-रत्तं । भवियव्वया-वसेण चम्मलुद्ध-सियालेण खद्ध-बद्धबंधणो नियत्तो । भिक्खं भमंतो पत्तो देवग्गामं । कहिओ णेण

चोर-वुत्तंतो दत्तस्स । पत्ते पाउसे कराविओ करिसणं, बुद्धि-विरहाओ बीयं पि न संपन्नं । सगडं समप्पिऊण पेसिओ कप्पासाणयणत्थं । नियत्तंतस्स दवग्गिणा दड्ढं सगडं । भिक्खं भमंतो पत्तो दत्त-सगासे । अप्पिऊण धणं पेसिओ समुद्दे पवहणेण । फुट्टं पवहणं । लद्ध-फलहखंडो सत्त-रत्तेण तरिऊण समुद्दं भमंतो पत्तो वग्घउरं नयरं । ठिओ रयणीए देवउले । तत्थ रन्नो वग्घदमणस्स विंझउर-सामिणा समरसेणेण समं विग्गहो । अओ हेरिओ ति संकमाणेहिं तलारेहिं गहिऊण गुत्तीए वूढो । अद्धमासाओ मासाओ वा गासमेत्तं लहंतो ठिओ वरिसमेगं । अच्चंत-छुहा-पीडिओ जाओ निरुस्सासो मओ त्ति चत्तो मसाणे । सिसिर-पवणोवलद्ध-चेयणेण य दिट्ठं तत्थ करंबय-सरावं । भक्खियमणेण । उट्ठिऊण तओ पलाणो चिंतिउं पवत्तो-

हा हा ! पुव्व-भवेसुं दुक्कम्मं केरिसं मए विहियं ? ।
पावेमि पाववसओ जं वसणुत्तिरिवडिं एवं ॥१९७०॥

गब्भगयस्स वि पढमं जणओ निहणं गओ सह धणेणं ।
तत्तो सिसुत्तणे मह पंचत्तमुवागया जणणी ॥१९७१॥

पिउमित्तेण करुणावसेण जे जे धणज्जणोवाए ।
कारविओ हं सव्वेसु तेसु पत्तोम्हि वसणाई ॥१९७२॥

तुल्ले वि माणुसत्ते तुल्लेसु वि पाणि-पाय-पमुहेसु ।
संपन्न-वंछिय-धणा कुणंति अवरे वर-विलासे ॥१९७३॥

अहयं पुण कयपावो पावेमि न कत्थई भमंतो वि ।
गासं पि तेण दियहे गमेमि निच्चं छुहाभिहओ ॥१९७४॥

ता इमिणा जम्मेणं नीसेस-दुहाण ठाणभूएण ।
निव्विन्नोहं इण्हिं मरामि केणइ उवाएण ॥१९७५॥

इय चिंतिऊण चलिओ तुंगं गिरिमेगसिंगमारुहिउं ।
मरण-कयज्झवसाओ निब्भग्गो निब्भर-विसाओ ॥१९७६॥

एत्थंतरे पवाईओ सुरहि-मारुओ । पट्ठं सुरेहिं गंधोदयं, कयं दसद्धवन्न-कुसुमवासं । ताडियाओ गयणे दुंदुहीओ । गज्जियं एगसिंग-गिरिणा । किमेयमच्चब्भुयं ति चिंतयंतो जाव वच्चइ अग्गओ ताव दिट्ठो कणय-कमल-निविट्ठो चउव्विह-देवनिकाय परिवुडो धम्मं वागरमाणो

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

माणदेवो केवली। गओ तस्स पासे समुल्लसंत-हरिसो निवडिओ चलणेसु। भणिओ भयवया–

दुक्खद्दुओ त्ति मरणं वंछसि दुक्खाण खंडण-निमित्तं।
दुक्खाइं पुव्वकय-कम्म-जोगओ हुंति जीवस्स ॥१९७७॥

म्मं पुण अक्खवियं छड्डइ परभवगयस्स वि न पट्ठिं।
सग्गं गच्छंतेण वि खरेण सह दावणं जाइ ॥१९७८॥

तुमए य पुरा विहियं मुणीण दाणंतराय-करणेण।
लाभंतराय-कम्मं गासं पि न पावसे तेण ॥१९७९॥

निब्भग्गेण भणियं–भयवं! कहमेयं? केवलिणा वुत्तं–भद्द! पुक्खवरद्ध-पुव्वभरहे रहउरे नयरे नरिंद-सुंदरी-वयणारविंद-चंदो चंदावीडो राया। तस्स य सयल-कुसत्थ-वासणा-वासियप्पा अप्पडिहय-पावकम्मेच्छो मिच्छत्ताच्छाईय-विवेओ वेयविहिय-विहि-निरओ निरयपह-पसुवह-समुज्जओ जयहरो मित्तो। सो कयाइ गओ उज्जाणं। दिट्ठो तत्थ तेण पंचसय-साहु-परिगओ गओ व्व अक्खलिय-सुयदाण-पसरो निज्जिय-वम्मीसरो सूरी। सोवहासं पणमिओ उवविसिऊण भणिओ–'कहसु किंपि'। गुरुणा वुत्तं–

मुह-ससि-पवेस-सुविणोवमाइं दुलहं नरत्तणं लहिउं।
देव-गुरु-धम्म-पडिवज्जणेण सहलं विहेयव्वं ॥१९८०॥

देवो य वीयराओ अट्ठारस-दोस-वज्जिओ अरहा।
तं पणमंता पावंति देवपालो व्व कल्लाणं ॥१९८१॥

तहाहि–

जंबुद्दीवे दीवे भरहे वासम्मि मज्झिमे खंडे।
सुरपुर-पराजय-समत्थमत्थि हत्थिणाउरं नयरं ॥१९८२॥

रेहंति य रुक्खाइं मणाइं वयणाइं तह सरीराइं।
लोयस्स जत्थ मज्झे उज्जाणाइं न उण बाहिं ॥१९८३॥

तत्थ सीहरहो राया–

जस्स करवाल-दंडेण खंडिया निवडिया रणमहीए।
अरि-कुंजर-दंता अंकुर व्व छज्जंति जस-तरुणो ॥१९८४॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तस्सऽत्थि माणणिज्जो जिणदत्तो सावओ पवर-सेट्ठी ।
नामेण देवपालो तस्स घरे अत्थि गोपालो ॥१९८५॥

सो जिणदत्तं दट्ठुं धम्मपरं किंचि भद्दओ जाओ ।
पंच-परमेट्ठि-मंतं च सिक्खए मुणि-समीवम्मि ॥१९८६॥

अह वित्थारियरंभो निरुंभिओगाढ-गिंभ-संरंभो ।
तडिकय-घण-परिरंभो वियंभिओ पाउसारंभो ॥१९८७॥

जत्थ घण-धूम-संगय-नहंगणो गरुय-विज्जुलय-जालो ।
खज्जोय-फुलिंग-जुओ पहिय-दुमे दहइ मयण-दवो ॥१९८८॥

जत्थ लहिऊण उदयं पाडंति तडद्दुमे गिरि-नईओ ।
दूमंति कन्न नीया वित्थरिया महिहरेहिंतो ॥१९८९॥

तम्मि पाउसे गावी-चारणत्थं गओ गोवालो गिरि-निगुंजे । दिट्ठं तत्थ नई-पूर-खणिय-खोणी-णिप्पएसे पसरंत-कंति-चुंबण-चउरेहिं व विहुरेहिं अंसत्थल-विलसिरेहिं रेहंतं हरिणंकमंडल-मणहरं जुगाइदेवस्स वयणं । तुट्ठेण खणियाइं पासाइं । पयडीकया सव्वंगं पडिमा । काऊण पेढं ठविया तत्थ एसा, उवरिं विरईया कुडी । चिंतियं च-'धन्नोहं जस्स मे परवसस्स सयं देवाहिदेवेण दंसणं दिन्नं । ता मए जावज्जीवं इमं दट्ठूण पुज्जिऊण य भुत्तव्वं' । एवं कय-निच्छयस्स अइक्कंतो कोइ कालो । कयाइ वासासु सत्तरत्तं निरंतरं संजाया वुट्ठी । अन्तरा पूरवसेण नई अपारा संपन्ना । देवपालो देवस्सादंसणेण अकय-भोयणो ठिओ सत्त-दिणाइं । अट्ठम-दिणे नियत्ते नई-पूरे गंतूण बाहिं देवं दट्ठूण पुज्जिऊण य पणओ सो । एत्थंतरे गयणंगण-गएण भणिओ जहासन्निहिय-वंतरेण-वच्छ ! तुट्ठोहं तुह इमिणा निच्छएण, ता मग्गसु वरं । गोवालेण वुत्तं-'देहि मे रज्जं'। 'भविस्सइ ।'ति भणिऊण तिरोहिओ वंतरो । गोवालो अणुदिणं देवं पूएइ ।

अन्न-दिणे अपुत्तो राया मओ । पहाणेहिं पंच-दिव्वाइं अहिसित्ताइं। भमंताइं ताइं पत्ताइं तत्थ पहर-दुग-समए गावीसु दुज्झमाणासु जत्थऽविच्छिन्न-वड-विडविच्छायाए पसुत्तो गोवालो । तओ हेसिओ हएण, गलगज्जियं गएण, ढलियं सयं चेव चामरेहिं, उवरि ट्ठियं सस्य-ससि-सवत्तेण आयवत्तेण, कलसं पलोट्टिऊण हत्थिणा खंधमारोविओ गोवालो । वत्थाहरणेहिं अलंकरिऊण पहाणेहिं पवेसिओ नयरं ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

निवेसिओ पट्टे । कंबल-लट्ठि-करंबय-मडक्किया-दंडिखंड-पभिईणि गोदोहियाहिं घेत्तुं सेट्ठिस्स घरम्मि नीयाइं । गोवाल त्ति काउं न को वि तस्स आणं करेइ । हक्कारिओ अणेण सेट्ठी । सो वि अवन्नाए नागच्छइ । 'केवलं मम गोवालो तुमं' ति पयडणत्थं कंबल-करंब-मडक्किया-दंडिखंडाईणि रयणीए सीहदुवारे सिट्ठिणा तोरणीकयाणि । चिंतियं देवपाल-देवेण-'जेण मे रज्जं दिन्नं तमेव देवं विन्नवेमि'त्ति गओ जुगाइदेव-पडिमा-पासं । कप्पूरागरु-कुसुमुच्चएहिं अच्चिऊण विन्नवेइ-'भयवं ! जहा तुमए मह महारज्जमेयं दिन्नं तहा आणिस्सरियं पि देहि, जेण रज्जं थिरी होइ । वंतरेण अंतरिक्ख-ट्ठिएण भणियं-'मट्टियमय-मयगलारूढो रायवाडियं करेज्ज । सो य मज्झ प्पभावेण चलिस्सइ,तओ सव्वो वि जणो तुहाणं करेस्सइ ।

एवं सोच्चा तुट्ठो देवपालो समागओ रायभवणे, आणवेइ कुलाले जहा-करेह मे रायवाडिया-जोग्गं उदग्गं मयगलं सिग्घमेव । कओ सो तेहिं । 'मट्टियमय-मयगलारूढो राया रायवाडियं करिस्सइ' त्ति जाओ जणप्पवाओ । सामंत-मंति-मंडलियाइणो इणमत्थं सुच्चा हसिउं पयट्टा-जो "मट्टियमय-मयगलमारूढो रायवाडियं राया काउं वंछइ सो एस अवितहं चेय" गोवालो । कोउगवसेण बहुओ गामेहिंतो समागओ लोओ, देउल-गोउर-घरसिर-गवक्ख-रुक्खेसु आरूढो । जोइसिय-विणिच्छिय-सुह-दिणम्मि कम्मयर-नियर-उक्खित्तो सालंगणी-समीवे हत्थी आणाविओ रण्णा । चित्तिओ विचित्त-वन्नएहिं चित्तयर-गणेण, अलंकिओ मणिकयण-भूसणेहिं, सज्जिओ कंचण-गुडासारीहिं, कओ विचित्त-चिंध-चिंचईओ । अवरे वि सज्जिया कुंजरा । पट्ठविया नरिंदाईणं पक्खरिया तुरया । सन्नद्धा सुहडा । पउणीकया रहवरा । पडिहारं पेसिऊण हक्कारिओ सेट्ठी । अप्पणो समं कराविओ सिंगारं । अंकुसं घेत्तूण राया निविट्ठो अग्गासणे पच्छासणे निवेसिओ सेट्ठी ।

एत्थंतरे चलिओ सुवन्न-सेलो व्व जंगमो हत्थी । विहिओ महंत-विम्हयवसेण लोएण जयसद्दो । वज्जंताओज्ज-निनाय-भरिय-भुवणो समग्ग-सिन्न-जुओ ठाणे ठाणे कीरंत-मंगलो निग्गओ राया, पत्तो जुगाइदेवस्स अग्गओ । गयवराओ ओइन्नो, तं अच्चिऊण पणमइ नरिंद-सामंत-मंति-जुओ । पुणरवि गयमारूढो ढलंत-सिय-चामरो

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

धरिय-छत्तो पुर-सुंदरीण तन्हाउरेहिं नयणेहिं पज्जंतो नच्चंत-रमणि-चक्कं तेणेव कमेण मंदिरं पत्तो । उत्तरिऊण गयाओ जिणदत्तं जंपए सिट्ठिं-'तुह गोवालेण मए एसो नयरम्मि भामिओ हत्थी । एत्तो परं तुब्भे खंभे अग्गलह गयमेयं' । तत्तो सेट्ठी गहिऊण अंकुसं 'हिज हिज' त्ति वागरइ । एक्कं पि पयं न चलइ । गओ सो विलक्खत्तं ।

दट्ठुं इमं पहारं असंभवं देवपाल-देवस्स ।
सव्वे वि निवा आणं वहंति सीसेण कुसुमं व ॥१९९०॥

कणयमयं पासायं जुगाइदेवस्स कारिऊण इमो ।
जओ जिणधम्मपरो कालेण मओ गओ सुगइं ॥१९९१॥

•

गुरुणा विणा न सम्मं जाणिज्जइ उभय-भव-हियं कज्जं ।
तम्हा गुरुम्मि गरूओ बहुमाणो होइ कायव्वो ॥१९९२॥

कहियं पि कुणंतो निय-मईए सुद्धो व्व दुक्खमणुहवइ ।
तं चेव कुणंतो गुरु-गिराइ सुहभायणं होइ ॥१९९३॥

जंबुद्दीवे भरहे मज्झिम-खंडे अखंड-गुणपरमं ।
पउमपुरं नामेणं पायालपुरं व तायपयं ॥१९९४॥

तत्थ पउमरहो राया, जस्स असि-भिन्न-अरि-करि-कुंभत्थल-गलिय-मुत्तिय-गणेण बीएण जणिया समर-भूमि-पडिएण कित्तिलया । तत्थ पउमं व पउमा-निकेयणं पउमो सेट्ठी । वयण विणिज्जिय-पउमा पउमसिरी से भज्जा पुव्व-भवारोविय-पुन्न-पायव-फलं विसय-सुहं भुंजंताण ताण जाओ सुद्धो नाम पुत्तो । समए कय-कलागहणो पत्तो जोव्वणं । परिणाविओ विसिट्ठ-वणिय-धूयं रइ-सरिस-रूवं जणिय-जण-मणाणंदं णंदं नाम ।

कयाइ परलोय-पह-पत्थिएण पउमेण वुत्तो पुत्तो-'वच्छ ! निसामेसु ममोवएसे' । घेत्तूण संपुडं निविट्ठो पुरउ पुत्तो । सिट्ठिणा वुत्तं-'मिट्ठं भुंजियव्वं १ सुहं सोयव्वं २ दिन्नं न मग्गियव्वं ३ भज्जा बंधिऊण पिट्टियव्वा ४ दंतेहिं घरस्स वाडी विहेयव्वा ५ गामे गिहं कायव्वं । ६ गंगातलं खणियव्वं ७ पाडलि पुत्ते मम मित्तस्स सोमस्स पासे गंतव्वं ८ ।'

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सुद्धेण लिहिया इमे अट्ठ वि उवएसा । इट्ठ-गुरु-देवया-सुमरण-परो परलोयं गओ सेट्ठी । पउमसिरी वि तव्विओग-सोगाउल-मणा कमेण गया पंचत्त ।

तओ 'मिट्ठं भुंजियव्वं'ति पढमो ताओपएसो तं करेमि त्ति चिंतंतो सो भक्खइ दुक्ख-दलण-दक्खाओ दक्खाओ, कय-सुक्खपूरं खज्जूरं, अमंद-सुंदेराइं नालेराइं, अमय-विंडबयाइं अंबयाइं, विहिय-हरिस-तरंगाइं नारंगाइं, मिलिय-सक्करामयलाइं कयलाइं, मण-मोयगे मोयगे, दिहि-दाण-सज्जाइं खज्जाइं, पीइ-विप्फारण-फुरुक्कियाउ सुरुक्कियाउ, पमोय-संपाडण-पंडियाउ मंडियाउ, संसार-सारं कंसारं, छुहा-पसर-खंडए मंडए, घय-सित्त-दालिं कलमसालिं, अरोयग-संजणाइं वंजणाइं, घण-सिणेहाणुवेहे पलेहे, विसिट्ठ-तित्ति-घडयाइं वडयाइं, महुरिम-गुणब्भहियाइं कढिय-दुद्ध-दहियाइं । एवं जं जं मिट्ठं तं तं भुंजंतेण तेण पारद्धो रिद्धिव्वओ । 'सुहं सोयव्वं' ति बीयमुवएसं कुणंतेण तेण वुट्ठि-सीय-घम्मागम्मे हम्मे निम्मविओ[२६] विउलो कणयमओ पल्लंको । खित्ताओ तदुवरिं सोवहाणाओ मत्तहंस-रूयतलीओ । सुयइ तासु सेच्छाए सुद्धो । न चिंतए धणज्जणं । 'दिन्नं न मग्गियव्वं'ति तईयमुवएसं कुणंतो सो न मग्गए कस्स वि पासे पुव्व-दिन्नं । एवं पि तुट्टए दव्वं । 'भज्जा बंधिऊण पिट्टियव्वा' ति चउत्थमुवएसं कुणंतेणं तेण कयाई कम्मि वि अवराहे कुविएण बाल-रज्जूए बंधिऊण नंदा तहा पिट्टिया जहा मोत्तूण तग्गिहं गया पिईहरं । तव्विरहे सच्छंदो परियणो वि विणासए दव्वं । 'दंतेहिं घरस्स वाडी कायव्व' त्ति पंचममुवएसं कुणंतेण महग्घे महंते दंति-दंते किणिऊण कराविया वाडी । एवं पि कओ दव्वव्वओ । 'गामे गामे घरं कायव्वं' ति छट्ठं उवएसं कुणंतेण पारद्धाइं बहुय-गामेसु गिहाइं । एवं जाओ दव्वव्वओ । 'गंगातलं खणियव्वं' ति सत्तमोवएस-करणत्थं अत्थं घेत्तूण गओ गंगातडं, कम्मयरेहिंतो, खणावियं गंगातडं । जाओ सव्वहा निद्धणो । पत्तो निय-घरं । विमुक्को परियणेण । न मन्निज्जइ जणेण । पावए पए पए पराभवं । विसन्नचित्तो पत्तो पाडलिपुत्ते पिउमित्तस्स सोमस्स पासं । दिट्ठो मित्तेण मलिण-जिण्ण-वत्थो दुत्थावत्थो सुद्धो । कयप्पणामो ससिणेहमालिंगिऊण सुहासणत्थो पुच्छिओ-वच्छ ! किमेवं दुग्गओ व्व दीससि ? । सुद्धेण वुत्तं-'अहं इमिणा कम्मेण जणओवएसे कुणंतो एयमवत्थं गओ ।'

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तेणेव समं समागओ सोमो पउमपुरं। भणिओ सोमेण सुद्धो-'सच्चं चेव सुद्धो सि। न याणसि उवएस-परमत्थं, तं पुण कहेमि-देव-गुरु-चलणच्चणेण अत्थोवज्जणेण य आमदुगं गमिऊण जिन्ने पुव्व-भुत्त-भत्ते उइन्नाए छुहाए अतिहिदाण-पुव्वं सयणेहिं समं जं भुज्जइ तं मिट्ठं' ति भन्नइ। 'दुपय-चउप्पयाइ-परिग्गह-सारवणेण दिणायव्वय-चिंतणेण देव-गुरु-संभरणेण य जाममेक्कं जग्गिऊण जं सुप्पइ तं सुहं सोयव्वं' ति वुच्चइ। अब्भहिय-मुल्लं सुवन्नाइ-गहणगं घेत्तूण परस्स परिमियं दायव्वं। तओ सो सयं चेव गहिय-दव्वं दाऊण अप्पणो सुवन्नाइ मग्गइ। अओ 'दिन्नं न मग्गियव्वंट' ति सीसइ। महिलाए पहारो न दायव्वो। अह कह वि कोव-वसेण दिज्जइ ता अवच्च-बंधणेण बद्धाए चेव दिज्जइ। अन्नहा घरं मोत्तूण सा वच्चइ। एवं 'भज्जा बंधिऊण पिट्टियव्व' त्ति साहिज्जइ। वियसिय-मुहेहिं लोयस्स उज्जला दंता दंसियव्वा तओ सो जाय-सिणेहो वसणे पत्ते रक्खगो होइ। एवं 'दंतेहिं वाडी कायव्व' त्ति अक्खिज्जइ। गामे गामे निय-गुणग्गामेण को वि सयणो कायव्वो जो तत्थ-गयाणं सम्माणं कुणइ। एवं 'गामे गामे घरं कायव्वं' ति कहिज्जइ। वच्छ! अत्थि पिउ-परियण-मज्झाओ को वि? सुद्धेण वुत्तं-अत्थि थेरी एक्का। हक्कारिया सा। पुच्छिया सोमेण। आसि गंग त्ति नामेण का वि?। तीए वुत्तं-आसि सेट्ठिस्स वल्लहा धवला गंगा-तरंग-तरला तुरंगी गंगा नामा। पुणो वुत्ता-किं तीए बंधणट्ठाणं?। थेरीए दंसियं। तं खणावियं सोमेण। लद्धं सुवण्ण-लक्ख-प्पमाणं निहाणं। जाओ महाधणो सुद्धो। आणिया साणंदेण नंदा. विसज्जिओ पुज्जिऊण उवएस-परमत्थ-वागरणं गुरू सोमो।

इहभव-हियत्थ-कहगा वि पुज्जणिज्जा जणस्स हुंति गुरू।
किं पुण परभव-सुह-हेउ-धम्म-उवएसगा जइणो ॥1995॥

जे चत्त-सव्व-संगा पंच-महव्वय-भरुव्वहण-वसहा।
ते च्चिय मुणिणो गुरुणो न उ सेसा विसय-विवस त्ति ॥1996॥

धम्मो जीवदय च्चिय नर-सुर-सिव-सुक्ख-कारणं भणिओ।
तं कुणमाणो पावेइ अमरसीहो व्व कल्लाणं ॥1997॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जंबुद्दीवे भरहे दाहिणभायस्स मज्झिमे खंडे ।
अमरनयरं व रम्मं अमरपुरं अत्थि वर-नयरं ॥१९९८॥

विलयाउलाइं वित्थिन्न-पत्त-पुन्नाइं पवर-सालाइं ।
जत्थ भवणाइं मज्झे वणाइं बाहिं विरायंति ॥१९९९॥

तत्थ सुग्गीवो राया ।

मेहं व सजलधारं रण-गयण-समुन्नयं तमालनिहं ।
दट्ठूण जस्स खग्गं पलाइयं रायहंसेहिं ॥२०००॥

तस्स अन्नन्न-कलत्त-कुक्खि-संभूया दुवे पुत्ता ।
समरसीहो अमरसीहो य पत्ता दो वि जोव्वणं ॥२००१॥

कयाइ परलोयं गए जणए जेट्ठो त्ति निविट्ठो समरसीहो रज्जे । सो य निक्करुणो पारद्धि-गिद्धो रज्जकज्जाइं पि अचिंतयंतो चिट्ठइ । अमरसीहो उण पाणिदया-परोपरोवयार-निरओ निरयगमण-निबंधणं बंधणं पिव पावं परिहरंतो कालं गमेइ । कयाइं तुरय-वाहणत्थं निग्गओ नगरबाहिं, तरुच्छायाए वीसमंतो पेच्छए छगलं पुरिसेण निज्जंतं । सो य निय-भासाए बुब्बुयइ । कुमारेण करुणाए मोयाविओ । तहावि बुब्बुयंतो न थक्कइ । कुमरेण भणिओ पुरिसो-

किं नेसि छगलमेयं ?' सो जंपइ-होइ पसुवहो जन्ने ।
सग्गफलो तो हंतुं तम्मि इमं. अह भणइ कुमरो- ॥२००२॥

जइ पसुवहेण सग्गो लब्भइ ता केण गम्मए नरए ।
न हि हिंसाओ अण्णं गरूयं पावं पयंपंति ॥२००३॥

एत्थंतरम्मि पत्तो सोम-मुणी तत्थ दिव्वनाण-जुओ ।
कुमरो भणइ- विवायं एस मुणी छिंदिही अम्ह ॥२००४॥

भणिओ मुणिणा छगलो-

खड्ड खणाविय सइं छगल सइं आरोविय रुक्ख ।
पइं जि पवत्तिओ जन्नु सइं किं बुब्बुयहि मुरुक्ख ? ! ॥२००५॥

इमं सोच्चा ठिओ तुण्हिक्को छगलो । विम्हिएण कुमरेण वुत्तं-भयवं ! एस छगलो किं तुम्ह पढियमित्तेण चेव तुण्हीक्को ठिओ ? । साहुणा वुत्तं- भद्द ! रुद्दसम्मो नाम इमस्स पुरिसस्स पिता आसि । तेण खणावियं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इमं तलायं । पालीए आरोविया रुक्खा । पइवरिसं पवत्तिओ जन्नो, जत्थ छगलगा वहिज्जंति । सो कालेण मओ । जाओ छगलगो । हणिओ इमिणा इत्थेव जन्ने । एवं हओ पंचसु भवेसु । छट्ठो पुण इमो भवो । संपयं अकामनिज्जराए लहुकय-कम्मो जाईसरो इमं भणइ-पुत्तया ! किं मारेसि मं ? तुह पियाहं । जइ न पत्तियसि ता करेमि अहिनाणं । दंसेमि निहाणं । जं मए तुह परोक्खं निक्खयं अत्थि । पुरिसेण वुत्तं- भयवं ! जइ सच्चमेयं ता दंसेउ एसो । जं इमं सुच्चा चलिओ छगलगो[२७] गओ गिहब्भंतरं, निहाण-प्पएसं पाएहिं पहणेइ । खणिए लद्धं निहाणं । जायपच्चओ पडिवन्नो सम्मत्तं पुरिसो । कुमरेण वुत्तं- भयवं ! जइ सत्थ-विहियस्स वि पसुवहस्स एरिसो दारुणो परिणामो ता मए कायव्वा जीवदया । छगलो साहुपासे धम्मं सोच्चा कय-भत्त-पच्चक्खाणो मओ गओ सग्गं । उवगारि त्ति करेइ कुमरस्स सन्निज्झं । एवं वच्चए कालो ।

अह जंपइ छगल-सुरो भासुर-मणि-मउड-कुंडलाहरणो ।
रयणीए रायपुत्तं गयणे होऊण पच्चक्खो ॥२००६॥

एसो राया गरूयं जणाणुरायं तुमंमि असहंतो ।
अच्चंत कूरचित्तो चिंतेइ तुह मारणोवाए ॥२००७॥

ता मुत्तुं नयरमिणं संपइ देसंतरं तुमं वच्च ।
समए पुण रज्जमिणं तुमए च्चिय उद्धरेयव्वं ॥२००८॥

इय सुरगिराइ कुमरो विमलेण अमच्च-नंदणेण समं ।
नयराओ निक्खंतो कमेण कुंडिलपुरं पत्तो ॥२००९॥

तम्मि समए महंतं असिवं तत्थऽत्थि तस्स पसमकए ।
[२८]पुरदेवयाइ पुरओ पसुवहमाणवइ भाणु निवो ॥२०१०॥

तं पारद्धं दट्ठुं कुमरो करुणाइ हिंसगे भणइ-
मा हणह इमे, ते बिंति-'को तुमं वारगो अम्ह ? ॥२०११॥

निव-वयणेण पसुवहं कुणिमो निव-वयणओ य विरमामो' ।
इय भणिऊण पयट्टा काउं ते पसुवहं पुरिसा ॥२०१२॥

तो थंभिया भुया ताण कुमर-वयणाओ छयल-अमरेण ।
सुच्चा अच्छरियमिणं भाणु निवो तत्थ संपत्तो ॥२०१३॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दिट्ठो कुमरो अमरो व्व तेण रमणीय-रूव-संपन्नो ।
सो वि नमिउं नरिंदं जंपइ किमिमे हणिज्जंति ॥२०१४॥

न हि पसुवहेण असिवं नियत्तए अवि य वड्ढए बाढं ।
लोए पलीवणं पिव पलाल-पूलप्पसंगेण ॥२०१५॥

वज्जरइ भाणुराओ-'नियत्तिही भद्द ! कहमिणं असिवं ? ।
कुमरो जंपइ-'एत्तो अवयरिया देवया कहिही ॥२०१६॥

आणाविया कुमारी रन्ना कुमरेण मंडले ठविया ।
सिरिखंड-कुसुम-पमुहेहिं पूईया जंपए एवं ॥२०१७॥

वसइ कमलि कलहंसि जिम्व जीवदया जसु चित्ति ।
तसु पय-पक्खालण-जलिण होसइ असिव-निवत्ति ॥२०१८॥

अह भाणु निवो जंपइ भद्द ! मणे वसइ जस्स जीवदया ।
सो कहमिह नायव्वो ? अत्थि उवाओ भणइ कुमरो ॥२०१९॥

दंसणिणो सव्वे वि हु मेलसु तो मेलिया इमे रन्ना ।
'पुरोभमंतीइ वि अंगणाए सकज्जलं दिट्ठिजुयं न व त्ति ? ।'
पढियं इमा समस्सा कुमरेण समप्पिया तेसिं ॥२०२०॥

'चक्खुं चहुट्टं थणमंडलम्मि अणुक्खणं तेण मए न नायं ।'
पुरोभमंतीइ वि अंगणाए सकज्जलं दिट्ठिजुयं न व त्ति ? ॥२०२१॥

एवं निय-निय-चित्ताणुसारओ जुवइ-वण्णणपरेहिं ।
परतित्थिएहिं बहुहा कयं समस्साइ पुव्वद्धं ॥२०२२॥

भवियव्वयावसेणं सोममुणी छगल-पुव्वभव-कहगो ।
तत्थाऽऽगओ अणेण वि पुव्वद्धं पूरियं एवं ॥२०२३॥

'मग्गे तसत्थावर-जंतु-रक्खावक्खित्त-चित्तेण मया न नायं ।
पुरोभमंतीइ वि अंगणाए सकज्जलं दिट्ठिजुयं न व' त्ति ॥२०२४॥

कुमरो भणइ-'इमेसुं कस्स मणे फुरइ देव ! जीवदया ?' ।
राया जंपइ-जिणमुणिमिणं विमोत्तुं न अन्नेसिं ॥२०२५॥

अन्नेसिं पि इमस्स व मणम्मि जइ विप्फुरिज्ज जीवदया ।
वयणं पि तारिसं होज्ज न उण सिंगाररस-पवरं ॥२०२६॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तो मुणि-पय-पक्खालण-जलेण अब्भुक्खियं नयरमखिलं ।
असिवं खलु उवसंतं राया परिओसमावन्नो ॥२०२७॥

जंपइ कुमरं-'तुममुत्तमो'त्ति सामन्नओ जइ वि नायं ।
तह वि तुह मुणिउमिच्छइ ठाण-कुलप्पमुहमेस जणो ॥२०२८॥

पुर-कुल-पिउ-प्पमुहं कुमर-संतियं कहइ सव्वमवि विमलो ।
निय-धूयं कणगवइं रन्ना परिणाविओ कुमरो ॥२०२९॥

कुमरस्स कुणइ करि-तुरय-कणय-वत्थाइ-वियरणं राया ।
इय तत्थ सुहं चिट्ठइ विसयासेवणपरो कुमरो ॥२०३०॥

अह पुरिसा अमरपुराओ आगया तत्थ तेहिं विन्नत्तो ।
कुमरो तुमम्मि नगराओ निग्गए सो समरसीहो ॥२०३१॥

पारद्धिपरो रज्जं रक्खइ न परेहिं विद्दविज्जंतं ।
कुणइ अणीइं च सयं पयाओ तत्तो विरत्ताओ ॥२०३२॥

तो मिग-हणण-छलेणं पारद्धि-परव्वसो पहाणेहिं ।
सिलाइएहिं हणिउं नीओ सो झत्ति पंचत्तं ॥२०३३॥

तो तत्थ तुमं गंतूण नियय-रज्जं अणाहमुद्धरसु ।
इय सोच्चा संचलिओ कुमरो चउरंग-बल-कलिओ ॥२०३४॥

संपत्तो अमरपुरे पट्टम्मि निवेसिओ पहाणेहिं ।
काऊण चिरं रज्जं जिणधम्मपरो गओ सुगइं ॥२०३५॥

जीवदया-रहिओ इह भवे वि निहणं गओ समरसीहो ।
तं पुण कुणमाणो मंगलाइं पत्तो अमरसीहो ॥२०३६॥

देव-गुरु-धम्म-कज्जे निजुंजिऊणं छलंति जे लच्छिं ।
लच्छीहरो व्व सेट्ठी लहंति कल्लाण-लच्छिं ते ॥२०३७॥

अत्थित्थ भरहखेत्ते नयरं लच्छीपुरं बुह-समिद्धं ।
मुत्तूण जलावासं जलहिं जस्सिं वसइ लच्छी ॥२०३८॥

लच्छिविलासो राया तत्थ पयावानलो नवो जस्स ।
रिउ-रमणि-नयण-नीरप्पवाह-सित्तो[११] वि पज्जलइ ॥२०३९॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तत्थ जिणधम्म-निट्ठो सिट्ठी लच्छीहरो महासत्तो ।
तस्स कमल त्ति भज्जा कमलमुही कमलदल-नयणा ॥२०४०॥

अह अन्नया निसाए सिय-वत्थाभरण-भूसिया नारी ।
दिट्ठा तेण पसुत्तेण पुच्छिया-का तुमं भद्दे ? ॥२०४१॥

तीए वुत्तं-'अहयं तुह गिहलच्छी' तओ भणइ सेट्ठी ।
किमिहाऽऽगया सि ? सा भणइ-तुह गिहाओ गमिस्सामि ॥२०४२॥

इय कहणत्थं सेट्ठी सत्तपहाणो त्ति पण्हिणा हणिउं ।
जंपइ-'जइ पच्छा वि हु वच्चसि वच्चेसु ता इण्हिं ॥२०४३॥

पुरिसा ते च्चिय वुच्चंति जे विरत्ते जणे न रच्चंति ।
तम्मि वि जे अणुरायं कुणंति तेसिं फुससु लीहं ॥२०४४॥

ता अन्नत्थ-गया सा पच्चूसे जाव उट्ठिओ सेट्ठी ।
निम्मविय-निच्च-किच्चो ववहारत्थं पलोएइ ॥२०४५॥

धण-कण-कप्पड-चोप्पड-कणग-प्पमुहं न पिच्छए किंचि ।
तत्तो चिंतइ एवं जइ वि वराई गया लच्छी ॥२०४६॥

तह वि गयं मह सत्तं न किंपि अओ करेमि ववसायं ।
तो पाडिवेसियाओ उच्छिन्नं मग्गए किंचि ॥२०४७॥

घेत्तूण तेण धूवण-लवण-प्पमुहाइं मत्थए पिडगं ।
काऊण भमइ पुर-पाडएसु कय-विक्कय-निमित्तं ॥२०४८॥

उच्छिन्नमप्पियं गेहमागओ विहिय-देव-गुरु-पुज्जो ।
अतिहीण किंचि दाउं लाभेणं चिय कुणइ वित्तिं ॥२०४९॥

इय पइदिणं कुणंतो तम्मि पुरे पउर-लाभ-विरहाओ ।
पिडगं सिरम्मि काउं हिंडइ आसण्ण-गामेसु ॥२०५०॥

एवं कालो वच्चइ सा लच्छी किवण-मंदिरम्मि गया ।
सयमणुवभोज्जमाणा परस्स कस्स वि अदिज्जंती ॥२०५१॥

खड्डाए पक्खित्ता सहमाणा तिक्ख-दुक्खमुव्विग्गा ।
चिंतइ चित्ते एवं-'अहो ! अजुत्तं मए विहियं ॥२०५२॥

जं सो महाणुभावो मुक्को ता संपयं पि तस्स घरे ।
वच्चामि किंतु सो मह दाही निण्हुत्ति न पवेसं ॥२०५३॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ता केणावि उवाएण पुव्वमणुकूलयामि तं गंतुं ।
तो गामाओ इंतस्स सेट्ठिणो वडतरुस्स तले ॥२०५४॥

रमणीय-रमणि-रूवं काउं अइ-सिसिर-सलिल-संपुण्णं ।
धरिउं करे करवियं ठिया तओ सिट्ठिणा दिट्ठा ॥२०५५॥

कावि परित्थी एस त्ति चिंतिउं वडतरुस्स दूरेण ।
सेट्ठी गओ तओ सा बीय-दिणे अभिमुहं गंतुं ॥२०५६॥

सिट्ठिं जंपइ सिट्ठी वि वच्चए उत्तरं अदाऊण ।
तईय दिणे पुण गाढं चलणेसु विलग्गिऊण ठिया ॥२०५७॥

सिट्ठी भणइ तुमं का ? सा जंपइ सिट्ठि ! तुज्झ घरलच्छी ।
तुह गेहमागमिस्सामि भणइ सेट्ठी[30] अलं तुमए ॥२०५८॥

जाइकलियं न इच्छसि कमलग्गं मुयसि अक्कमारूढे ।
विवरीय-सरूवे लच्छिभमरि तं वंदणेज्जा[31] सि ॥२०५९॥

ता मज्झ चलण-जुयलं भद्दे ! मुत्तूण दूरमोसरसु ।
लच्छी भणइ पसीयसु मह मन्नसु निय-घरागमणं ॥२०६०॥

गरूयस्स तुज्झ जुज्जइ किं काउं पणय-पत्थणा विहला ।
इय निब्बंधे विहिए सिट्ठी जंपइ-तुमं चवला ॥२०६१॥

गंतुं जया समीहसि तए तया वच्छरेण एक्केण ।
पुरओ मह कहियव्वं-सिट्ठि ! अहं गंतुकाम त्ति ॥२०६२॥

पडिवन्नमिणं लच्छीइ जंपियं सेट्ठिणा वि जइ एवं ।
ता आगच्छसु भद्दे ! अह सेट्ठी आगओ गेहं ॥२०६३॥

तम्मि दिणे सविसेसं करेइ सिट्ठिस्स गोरवं घरिणी ।
जं कमलच्छी लच्छी पेच्छइ सो पावए पूयं ॥२०६४॥

निच्चं पि वल्ल-तेल्लाइं असण-दुत्थस्स तुज्झ जोग्गाणि ।
जा अज्ज मुग्ग-तंदुल-घयाणि आणेमि हट्टाओ ॥२०६५॥

ता खाणुमिणं वच्छेण उक्खयं निक्खणेसु उंडयरं ।
इय जंपिऊण सिट्ठिं संपत्ता सिट्ठिणी हट्टे ॥२०६६॥

सिट्ठी वि दरं दिंतो निहाण-कलसस्स कंठयं नियइ ।
तो उक्खणिऊण निहिं निय-भवणब्भंतरे खिवइ ॥२०६७॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

निहि-दव्वेणं धय-तंदुलाइं आणाविउं पुणो पउरं ।
कय-देवातिहि-दाणे भुंजइ घरिणीए सह सेट्ठी ॥२०६८॥

तत्तो दिणाओ आरब्भ पसरिया तस्स मंदिरे लच्छी ।
सो वि सयं तं भुंजइ वियरइ सुहि-सयण-दीणाण ॥२०६९॥

इय लच्छि-फलं लिंतस्स तस्स कालो बहू अइक्कंतो ।
अह रयणीए उवसप्पिऊण लच्छी भणइ सिट्ठिं ॥२०७०॥

मोत्तूण तुमं अन्नत्थ वच्छरंते अहं गमिस्सामि ।
इय सोच्चा पच्चूसे सिट्ठी दाऊण बहु-दव्वं ॥२०७१॥

जिण-मंदिरं महंतं सिग्घं कारवइ सुत्तहारेहिं ।
वत्थऽन्न-पत्त-दाणं विसेसओ कुणइ समणाण ॥२०७२॥

सिद्धंत-पुत्थयाइं लिहाविउं जइजणस्स अप्पेइ ।
जीवाण अभयदाणं दव्वं दाऊण कारवइ ॥२०७३॥

तह बंधु-मित्त-बंदियण-दीण-दुत्थाण वियरिउं सव्वं ।
कच्छुट्टयं च काउं सुत्तो तण-सत्थरे सेट्ठी ॥२०७४॥

पुणरवि पत्ता लच्छी रुयमाणा सिट्ठिमुल्लवइ एवं- ।
देव-गुरु-धम्म-कज्जे तुमए दाऊण छलियाहं ॥२०७५॥

नग्गा भुग्गा[32] वच्चामि कत्थ अन्नत्थ ? ता न वच्चिस्सं ।
दासि व्व अंकवडिया तुज्झ घरे चेय चिट्ठिस्सं ॥२०७६॥

सेट्ठी जंपइ-'जं तुज्झ रुच्चए तं करेसु, किं बहुणा' ।
तत्तो सिट्ठिस्स घरे लच्छी पुव्वं व वित्थरिया ॥२०७७॥

इय लच्छीहर सेट्ठी लच्छिं देव-गुरु-धम्म-कज्जेसु ।
छलिऊण चिरं पत्तो कमेण सग्गं च मोक्खं च ॥२०७८॥

एवं सोच्चा संजायमच्छरो जयहरो निवं भणइ ।
वन्नंति इमे समणा नियए च्चिय देव-गुरु-धम्मे ॥२०७९॥

मन्नंति न उण अन्ने ता कुण एयाण भिक्ख-पडिसेहं ।
वच्चंति जेण अन्नत्थ तो निवो दावए पडहं ॥२०८०॥

जो समणाणं भिक्खं दाही तस्संग-निग्गहं काहं[33] ।
राय-भएण न केण वि दिन्ना भिक्खा तया तेसिं ॥२०८१॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लाभंतराय-कम्मं निबिडं तप्पच्चयं जयहरेण ।
बद्धं तओ निसाए विसूइया तस्स संजाया ॥२०८२॥

तो तक्खणेण तिव्वा सव्वंगं वेयणा समुप्पन्ना ।
नरयम्मि नायरस्स वि पाएणं जा न संभवइ ॥२०८३॥

तं जहा-

फुट्टइ सीसं तुट्टंति व्व संधिणो भज्जंति व अट्ठीणि उम्मूलिज्जंति व्व लोयणाइं छिज्जंति व्व अंताइं भज्जंति व्व कुक्खिणो दलिज्जंति व्व दसणा जलणेण डज्झंति व्व सव्वंगाइं । तओ विरसमारसंतो रक्ख-रक्ख त्ति दीणं पयंपंतो केणावि अकय-परित्ताणो पत्तो पंचत्तं सो । उप्पन्नो पढमे नरए । तओ उवट्टो सरीसिवो होऊण गओ बीए । तओ पक्खी होऊण गओ तईए । तओ सीहो होऊण गओ चउत्थे । तओ उरगो होऊण गओ पंचमे । तओ इत्थी होऊण गओ छट्ठे । तओ मच्छो होऊण गओ सत्तमे ।

इय तिरिय-नारएसुं मणुएसु वि दुक्खिएसु सो भमिओ ।
सव्वत्थ छुहा-तण्हा-किलामिओ च्चिय गओ मरणं ॥२०८४॥

सो य तुमं जाओ गामचिंतग-सुयत्तणेण निब्भग्गो ।
जइ वि असंख-भवेसुं तुमए तं कम्ममणुभूयं ॥२०८५॥

तहवि अइ-संकिलिट्ठासएण बद्धं ति अणणुभूयं पि ।
अज्जवि अत्थि पभूयं तेण तुमं दुक्खिओ वच्छ ! ॥२०८६॥

तो जाय-जाइसरणो संविग्ग-मणो भणइ निब्भग्गो ।
अत्थि उवाओ किं वा वि तुट्टए जेण तं कम्मं ? ॥२०८७॥

केवलिणा वागरियं-अत्थि उवाओ तवो खु कम्म-खए ।
जं होइ खओ तेसिं तवसा उ निकाईयाणं पि ॥२०८८॥

सो य तवो बारसहा छहि छहि बज्झंतरंग-भेएहिं ।
आराहिज्जइ समणत्तणेण सम्मं समग्गो वि ॥२०८९॥

निब्भग्गो भणइ-अहं जइ जुग्गो ता ममं कुणसु समणं ।
जेणाऽऽराहेमि तवं, गुरुणा वुत्तं-तुमं जोग्गो ॥२०९०॥ जओ-

अइ-कूरज्झवसाया जे च्चिय समणत्तणस्स न हु जोग्गा ।
भवियव्वयावसेण लहंति जोग्गत्तणं ते वि ॥२०९१॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एवं भणिऊण विहिपुव्वं दिक्खिओ इमो करेइ नियमं जहा-जहन्नेण वि मासाओ पारियव्वं ति ।

कयनियमो पइदिणं भिक्खं भमिऊण समणाणं भत्तपाणं अप्पंतो पारणग-दिणे वि मणुन्नमन्नमन्नेसिं चेव दिंतो सो दुवालसविहं तवं आराहिंतो जीविऊण वरिस-लक्खं समाहिणा मओ समाणो[३४] असमाण-सुहसारं सहस्सारं [३५]गओ सुरलोयं जाओ इंद-सामाणिओ ॥

इह जंबुद्दीवे दीवे भारहवासम्मि मज्झिमे खंडे ।
पुरमत्थि पइट्ठाणं लोउत्तर-संपया-ठाणं ॥२०९२॥

वागरणं व चउक्काइ-पवरमत्थट्ठवन्न-संकिन्नं ।
नवरं निवाय-उवसग्ग-वज्जियं जणइ जं चोज्जं ॥२०९३॥

तत्थत्थि पत्थिवो दुत्थ-सत्थ-नित्थरण-रित्थ-वित्थारो ।
नामेण मलयकेऊ केउ व्व विवक्ख-निवईणं ॥२०९४॥

जस्स करे करवालो छज्जइ ताविच्छ-गुच्छ-सच्छाओ ।
समरम्मि हढायड्ढिय-जयलच्छी-वेणि-दंडो व्व ॥२०९५॥

तस्सत्थि विलासवई सुंदेर-विलास-मंदिरं देवी ।
जीए पिय-वयण-जियं अमयं अमयं फुडं जायं ॥२०९६॥

सो य निब्भग्ग-जीवो अट्ठार-सागरोवमाइं भोत्तूण ।
दिव्व-सुखं चुओ समाणो समुप्पन्नो तीए गब्भे ॥२०९७॥

दिट्ठो य देवीए तीए चेव रयणीए वयणे पविसमाणो पुन्न-कलसो । गब्भाणुभावेण य पणया तस्स सीमंत-सामंता, पयडीहूयाणि पुव्व-नरिंद-निहित्ताणि पणट्ठ-निहाणाणि । निहणं गया पच्चत्थिणो । जाओ सो कालक्कमेण । कयं वद्धावणयं । सुविणाणुसारओ पइट्ठियं से पुन्नकलसो त्ति नामं, वड्ढिओ देहोवचएणं कला-कलावेण य ।

नीलुप्पल-दल-नयणो निल्लंच्छण-छणससंक-सम-वयणो ।
परिहोवम-भुयजुयलो कणयसिला-विउल-वच्छयलो ॥२०९८॥

सव्वंगं अमएण व विणिम्मिओ जणिय-जण-मणाणंदो ।
पत्तो गुणसंपन्नं तारुन्नं पुन्नकलसो सो ॥२०९९॥

सो जत्थ कीलणत्थं पुरम्मि परिभमइ मयण-समरूवो ।
सयल-विलयाओ वियरंति तत्थ अणुमग्ग-लग्गाओ ॥२१००॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तस्स पुरे वियरंतस्स पूरयंति व्व मुत्तिय-चउक्के ।
धावंतीओ तरुणी रहस-सतुट्टंत-हारेहिं ॥२१०१॥

तद्दंसण-रहस-पहाविरीहिं पउरंगणाहिं रायपहा ।
अच्चिज्जंति निरंतर-ल्हसंत-धम्मेल्ल-कुसुमेहिं ॥२१०२॥

कह वि पहे वच्चंतं जा पेच्छइ कामिणी कुमारमिणं ।
उव्वहइ हरसिमेसा संपत्त-तिलोय-रज्ज व्व ॥२१०३॥

लीलाइ च्चिय जं जं पलोअए बालियं इमो सुहओ ।
सा सा गणइ निरग्गल-सोहग्ग-समग्गमप्पाणं ॥२१०४॥

रमणीओ रयणीसु वि सुविणे तं पेच्छिऊण सहस त्ति ।
एते स एइ कुमरो त्ति जंपमाणीओ उट्ठंति ॥२१०५॥

अन्नया निय-पासाए पसंडि-सिंहासण-निसन्नस्स कुमारस्स समीवमुवागओ एगो पुरिसो । पणमिऊण विन्नत्तमणेण-कुमार ! अत्थि सावत्थी नयरी, तत्थ जिणच्चण-पसत्तो उदारसत्तो मुणि-पय-भत्तो मुणिय-जीवाजीवाइ-तत्तो जिणदत्तो सावओ । अहं पि तत्थेव वत्थव्वओ तस्स मित्तो मित्तसेणो । सो य कयाइ अकय-कत्थूरियाइ-विलेवणो वि अविहिय-कुसुमामेलो वि सुरहि-परिमल-वासिय-दियंतरो दट्ठूण पुट्ठो मए मित्त ! किं निमित्तो ते एरिसो परिमलो ? भणियमणेण-मित्त ! अत्थि मे सिद्धो सव्वाणुभूई नाम जक्खो । तेण समं गयणंगणे गयारूढो नंदीसराईसु सासय-जिण-पडिम-वंदणत्थं वच्चामि । तत्थ निरंतरं देवा अवयरंति, सुरकुसुम-सोरब्भ-वासियत्तणेण मे एवंविहो परिमलो त्ति । वुत्तो सो मए-जइ एवं ता देहि मे तस्स साहण-मंतं । दिन्नो अणेण मंतो । साहिओ साहण-विही । कया मए छम्मासं जाव पुव्वसेवा । अओ परं सव्व-लक्खणोवेएण महासत्तेण उत्तर-साहगेण साहिज्जइ । मए य सयल-महियलं गवेसंतेण तुमं चेव तारिसो पर-पत्थणा-भंग-भीरू य दिट्ठो । ता पसायं काऊण तहा करेसु जहा मे मंतसिद्धी हवइ त्ति । पडिवन्नमिणं कुमारेण । आगया कण्ह-चउद्दसी, गहिय-खग्गो साहगेण समं गओ कुमारो मसाणं,

जंबिया-जलण-जालोलि-लीढं वरं,
चंडवेयाल-कय-तंडवाडंबरं ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

फार-फेक्कार-भीसण-सिवा-संकुलं,
मडय-मंसासणक्खित्त-डाइणि-कुलं ॥२१०६॥

तत्थ आलिहियं मंडलं साहगेण । मुक्को रत्त-कणवीर-कुसुमुक्करो । दिण्णावसाणे दीवया । कया दिस-रक्खा । ठिओ खग्ग-वग्ग-करो कुमारो । ठवियं मंडले मडयं । तम्मुहे पज्जालिओ जलणो । खित्ताओ मंत- पुव्वं आहुईओ । तओ किलिकिलियं भूएहिं । नच्चियं वेयालेहिं । हसियं रक्खसेहिं । मिलियं वग्घ-वराह-हय-हरिण-फेरंड-तुंडाहिं डाइणीहिं ।

तह वि न जा खुब्भइ मंतसाहगो ताव उट्ठियं मडयं ।
खिविउं तमेव कक्खाए धावियं पुव्व-दिसहुत्तं ॥२१०७॥

तो कोववसुग्गीरिय-खग्गो लग्गोऽणुमग्गओ कुमरो ।
'रे ! जासि कत्थ ? मह होसु सम्मुहो' इय पयंपंतो ॥२१०८॥

तव्वयणं अवगणिय मडयं वच्चंतयं गयं रन्ने ।
तहवि पडिवन्न-पालणपरो त्ति न नियत्तए कुमरो ॥२१०९॥

तो साहगं विमोत्तुं पडियं मडयं महीए सहस त्ति ।
अह फुरिय-रयण-मउडो मणि-कुंडल-लीढ-गंडयलो ॥२११०॥

मयजल-परिमल-मिलियालि-जाल-मुहलं गइंदमारूढो ।
सव्वाणुभूइ जक्खो जंपइ होऊण पच्चक्खो-॥२१११॥

कुमार ! तुह इमिणा अविमुक्क-परोवयार-क्कमेण विक्कमेण रंजिय-मणो सिद्धो हं ।

कुमारेण वुत्तं-भद्द ! साहगस्स सिज्झसु ।

जक्खेण वुत्तं-नत्थि एयस्स जोग्गया । तुमं पुण पुन्नग्गलो । अहं तुहाएसकारी निच्च-सन्निहिओ वट्टिस्सं । तुह समीवट्ठियस्स इमस्स वि सव्वं समीहियं होहि त्ति । भुयाए घेत्तूण कुमारो साहगो य आरोविओ हत्थि-क्खंधं । भणियं-कुमार ! अत्थि वित्थिन्न-पुन्न-पब्भार-पुरिस-पाओब्भवं ता विदब्भ-विसए धरणि-रमणि-मणि-कुंडल-पवरं कुंडलउरं नयरं । तत्थ वेरि-नरिंद-करिंदमियारी दमियारी राया । तस्स वयण-विणिज्जिय-वियसिय-कमला कमलादेवी । रज्ज-कज्ज-संदब्भ-पगब्भो नाणगब्भो मंती । मुणिचंदसूरि-पासे पवन्नं रन्ना सम्मत्तं ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अन्नया जाया आवन्नसत्ता कमलादेवी, पत्तो पसव-समओ ।

इओ य अवाय-बहुलत्तेण सरीरस्स समुप्पन्नो पुव्व-कय-कम्म-दोसओ दूसहो सयल-मंतोसहासज्झो राइणो रोगो । भवियव्वयावसेणं संकाइ-दोस-दूसिय-सम्मत्तो पत्तो पंचत्तं राया । जाओ जक्खो । सो य अहं । आभोईओ मए पुव्व-भवो । अत्थि देवीए गब्भे पुत्तो त्ति बुद्धीए मंतिणा पालिज्जंतं दिट्ठं रज्जं । जाया देवीए धूया । विसन्ना देवी । धीरविया मंतिणा- देवि ! पुत्तो जाओ त्ति पयासिऊण ''धूयं चेव रज्जं कारविस्सं । धरियव्वा तए इमा पुत्त-वेसेण । कारिओ नयरे पुत्त-जम्मूसवो । कयं कामसेणो त्ति नामं । सा य संपयं संपुन्न-चंद-सुंदर-मुही जाया जोव्वणाभिमुही । ता तुमं तत्थ गंतूण परिणेसु तं । पडिवण्णं कुमारेण । अग्गओ गहियंकुसेण जक्खेण पिट्ठओ निसन्नेण साहगेण गय-पट्ठि-गओ गयणे चलिओ कुमारो । पत्तो कुंडलउरं परिसरज्जाणे । दिन्ना जक्खेण रूव-परिवत्तिणी विज्जा कुमारस्स, भणियं च- तए इत्थीरूवेण परिणेयव्वा इमा । कयं कुमारेण कण्णा-रूवं । जक्खेण य विउव्वियं करि-तुरय-रह-पाइक्क-परिगयं सिन्नं । सिक्खविऊण पेसिओ साहगो नाणगब्भ-मंति-पासे । भणिओ अणेण सो जहा- सिंहलदीवाओ सिंहलेसरेण कामसेण-रन्नो रूवाइसयं सोऊण पेसिया सयंवरा पुन्नकलसी कन्ना, ता तहा करेहि जहा राया तं परिणेइ । पडिवन्नं मंतिणा । विसज्जिओ साहगो । सयं च गओ देवी-सयासं, कहिओ सयंवर-कन्नागमण-वुत्तंतो । किं कायव्वं ? ति विसन्ना देवी । वुत्ता मंतिणा- देवि ! धीरा होहि । जओ, असुहस्स कालहरणं होइ । ता इमं चेव पत्तयालं जं इमीए करग्गहणं कारविज्जइ कामसेण राया । पच्छा जहाजोत्तं करिस्सामो । जइ पुण इमं न कीरइ तो विन्नाय-वत्थु-परमत्था पच्चत्थिणो अम्ह रज्जं विद्दवंति त्ति निच्छिऊण भणिया रहसि कामसेणा-वच्छे ! तुमं राय त्ति सोऊण साणुराया रायकन्ना सयंवरा पत्ता, तुमए य रज्ज-रक्खवणत्थं पुरिसवेसेणं चेव सा परिणेयव्वा । पडिवन्नमिमीए । जाणावियं साहगस्स । जक्खेण विउव्विओ विवाह-मंडवो ।

मरगय-परिगय-वलही-वलओ विलसंत-जलय-पडलो व्व ।
कणयमय-खंभ-कलिओ थिर-रेहिर-विज्जु-दंडो व्व ॥२११२॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मुत्तावचूल-निचिओ निब्भर-निवडंत-नीर-धारो व्व ।
वंचंत-चामर-निचओ धवल-बलायावलिधरो व्व ॥२११३॥

विउलिंदनील-निम्मिय-तलो नवुब्भिन्न-तण-सणाहो व्व ।
पसरंत-विविह-रयणंसु-भासुरो भासुर-धणु-जुओ व्व ॥२११४॥

वज्जंत-तूर-निग्घोस-संगओ गरुय-गज्जि गहिरो व्व ।
गयणंगणग्ग-लग्गो पाउस-समओ व्व सो सहइ ॥२११५॥

तयणंतरं च बहु अत्थि-सत्थ-दिज्जंत-दविण-संघायं ।
वर-वसण-असण-तंबोल-दाण-पीणिय-पणय-वग्गं ॥२११६॥

नच्चंत-पउर-तरुणी-थणहर-तुट्टंत-हार-दंतुरियं ।
दोसु वि पक्खेसु कयं वद्धावणयं हियय-सुहयं ॥२११७॥

गणावियं विवाह-लग्गं, पत्ते य तम्मि जक्ख-कय-रमणीहिं पमक्खणत्थं मुत्तिय-चउक्क-चच्चिक्किय-चउरिया-रइय-रंगावलि-निवेसियाए सेय-दुगूल्ल-छन्नाए आसंदियाए ठविओ कुंकुमं कुमारी-वेसधारी कुमारो, निवेसिया से मणिपट्टए चलणा । कयवच्छीउत्तेण नहयम्मं पमक्खिया दहिय-घय-दुद्धंकुर-वावड-कराहि रत्तंसुय-निवसणाहिं वरंगणाहिं ण्हविया पुप्फ-फल-सलिल-कलिय-कणयकलसेहिं । ओमिणिया सव्वंगं पुन्नवत्तेण, दिन्ना य अक्खया उत्तिमंगे, आढत्तो पसाहण-विही । पाडिओ पाएसु कामसेणो व्व साणुराओ जावयरसो । कणयकंति-मणहराओ-कयाओ कुंकुमेण पुणरुत्त-पिंजराओ । जंपियाओ लिहियाओ घण-कलसेसु कत्थूरियाए पत्तलेहाओ । अणुराग-संगयाणंदेणेव काले अमीस-गोसीसचंदणेण निम्मज्जियं मुहकमलं । कयं कज्जल-रयंजियं लोयण-जुयं । ससहरे हरिणो व्व रेहए वयणे कओ कत्थूरिया-तिलओ । कमलेसु भसल-मंडलाइं व सहंति चलणेसु पिणद्धाइं मरगय-मणि-नेउराइं । पडिवन्नाओ नह-किरण-दुगुणिय-किरण-रयणालंकियाहिं कणय-बिंटियाहिं अंगुलीओ । सुर-ऊसव-तूरं व बद्धं नियंबे मणि-किंकिणी-जाल-मुहलं मेहला-दामं । नह-भल्लि-संगयंगुलि-सरसणाहेसु मयण-भड-भत्थएसु भुएसु भासंति बंधव-बद्धाणि मणि-कंकणाणि । जण-नयण-हरिण-वागुराओ व्व बद्धाओ बाहु-सरियाओ । कंठावलंबिणा घणुच्छंग-संगिणा नाहि-निवेसं फरिसंतेण पत्तं गुणित्तण-फलं हारेण । कामरहस्स

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चक्काइं व सोहंति सवणालंबियाइं मणि-कुंडलाइं । एवं जाव पुन्नकलसी पसाहिज्जइ ताव पसाहण-निउणाहिं वार-विलयाहिं पसाहिओ कामसेण-राओ । आसन्नं पाणिग्गहण-मुहुत्तं ति जोइसिएहिं निवेइए देवीए मंतिणा य समं मत्त-करि-कंधराधिरूढो वज्जंत-तूर-रव-बहिरिअंबरो, पवण-पणच्चंत-धय-विरायंत-रहवरारूढ-रायलोय-परियरिओ, धरिय-धवलायवत्तो पत्तो विवाह-मंडवं । धरिओ तस्स दुवारे गहियग्घ-सक्कारेणं रामायणेणं । मग्गिओ आयारिमं, मग्गिअब्भहियं दाऊण ओइन्नो करिवराओ । भग्गा भिउडी कंचण-मुसलेणं । गओ तत्थ जत्थ सियवत्थ-पच्छाइयाणणा अत्थि पुन्नकलसी । काराविओ अविरुद्ध-कोउयाइं । मग्गिओ मुहच्छवि-फेडावणियं । तेण दिन्नमायारिमं । फेडिया मुहच्छवी । दिट्ठा पुन्नकलसी । पुन्नकलसेणावि साणुरायं पेच्छिऊण तं चिंतियं ।

रमणिज्जा एसा पुरिसवेस-पच्छाइयस्सरूवा वि ।
सरयब्भ-पडल-छन्ना वि सोहए किं न ससिलेहा ? ॥२११८॥

कामसेणेणावि लग्ग-समए गहिया करे पुन्नकलसी । चिंतियं कामसेणाए- अहो ! किमेयं न महिला-कर व्व इमीए कोमलं कर-कमलं, किंतु धणु-गुण-किणंकियं पुरिसस्सेव लक्खिज्जइ ? । फुरइ मे वाम-लोयणं । ता अणुकूल-दिव्व-विलसियं किंपि एयं संभावेमि त्ति चिंतयंतीए मुत्तिएहिं व सेयबिंदूहिं विभूसियं भालवट्टं । पुलयंकुरेहिं कयं कयंब-कुसुम-समं सरीरं । थरहरियं थोव-घणुब्भेयं हिययं । तओ

चचचलसु चउरियाए ददददईए मा विलंबए ताहे ।
जजजलणे पज्जलिए भभभमिमो मंडलाइं वयं ॥२११९॥

इय खलियक्खर-सुहयं पयंपमाणा खलंत-गइ-पसरा ।
घेत्तूण कामसेणा करे कुमारं गया तत्थ ॥२१२०॥

पारद्धं परिभमिउं वहू-वरं मंडलाइं चत्तारि ।
अघडिय कंचण-कोडी दिन्ना जक्खेण पढमम्मि ॥२१२१॥

बीयम्मि हार-कुंडल-कडिसुत्तय-कडय-पमुहमाभरणं ।
तइयम्मि थाल-कच्चोल-सिप्पि-पमुहं रयय-भंडं ॥२१२२॥

पट्टंसुयाइ वत्थं विविहं तुरियम्मि मंडले दिन्नं ।
मंती वि पुन्नकलसीए कुणइ अइ-गरूयमुवयारं ॥२१२३॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वत्थ-विलेवण-तंबोल-कुसुम-पमुहो जणाण उवयारो ।
हरिस-विहवाणुरूवो विहिओ दोहिं पि पक्खेहिं ॥२१२४॥

वित्ते वीवाह-महे महंत-करि-कंधराधिरूढमिणं ।
संजणिय-जणाणंदं वहूवरं पविसइ पुरम्मि ॥२१२५॥

तद्दंसण-कोऊहल-कलिय-मणो नयर-नारि-नर-नियरो ।
चडिओ गवक्ख-गोउर-घरसिर-पायारमंचेसु ॥२१२६॥

जंपइ परोप्परमिणं विहिणो निम्माणं कोसलं सहलं ।
अज्ज अणुरूवमेयं वहूवरं जेण संघडियं ॥२१२७॥

किंतु वरो जो एसो अधीरदिट्ठी अणुद्धयाहारो ।
सो सज्झसवस-वसणावरिय-तणू नज्जइ वहु व्व ॥२१२८॥

जा उण वहुया सा धीर-लोयणा मेह-छन्न-तवणो व्व ।
तेय-पसरं वहंती [१५]गरूयं लक्खिज्जइ वरो व्व ॥२१२९॥

एवं पयंपमाणे नयर-जणे जणिय-मंगलायारं ।
सुर-मिहुणं व विमाणे वहूवरं निय-घरे पत्तं ॥२१३०॥

सूरं पयाव-जुत्तं कुमरं दट्ठुं तिरोहियप्पाणं ।
जाओ सहस्सरस्सी तिरोहिओ हारिवडिउ व्व ॥२१३१॥

पसरिय-कुमुयामोए मयंक-कर-नियर-निहय-तम-विसरे ।
उल्लसिय-कामिणी-मण-मयण-प्पसरे पओसम्मि ॥२१३२॥

सव्वुत्तम-कणयमयं मणि-कुट्टिम-मुक्क-सुरहि-कुसुमभरं ।
रयणपईव-सणाहं मयणाहि-विलित्त-वर-भित्तिं ॥२१३३॥

रइय-विचित्त-वियाणं पट्टंसुय-पिहिय-कंचणक्खंभं ।
विद्दुम-पल्लंक-निहित्त-हंसतूली-विरायंतं ॥२१३४॥

कलहोअमय-पडिग्गहमोलंबिय-मालईय-मउल-मालं ।
डज्झंतागरु-कप्पूर-पूर-परिमल-महग्घवियं ॥२१३५॥

घणसार-सार घण पूग पूग-तंबोल-वीडय-समेयं ।
वट्टिय-सुरहि-विलेवण-संपुन्न-सुवन्न-कच्चोलं ॥२१३६॥

कहमेएसिं रइसुह-समागमो वेस-पिहिय-पयईणं ।
होहि त्ति कोउगेण व कलियं पारावय-कुलेणं ॥२१३७॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वासहरमेरिसं सो संपत्तो कामसेण-नरनाहो ।
करगहण-समय-संजाय-पुरिस-संका-कलिय-हरिसो ॥२१३८॥

विसज्जिऊण परियणं निविट्ठो सीहासणे । सज्झसवसेण जाव न किंचि जंपइ ताव हसिऊण वुत्तं पुन्नकलस-कुमारेण-कमलच्छि ! एत्तिय-कालं तुमए पुरिसवेसेण भोलविओ मुद्ध-जणो । छइल्ल-जणो उण न पारीयइ पयारिउं । ता संपयं परिच्चय पुरिस-वेसं । कामसेणाए वुत्तं- तुमं पि परिच्चय इत्थी-वेसं । कुमारेण वुत्तं- कहं तए पुरिसो त्ति जाणिओ हं ?। तीए वुत्तं- करग्गहण-समए फरिस-विसेसेण । अहं पुण तए कहं महिल त्ति लक्खिया ? । अक्खिओ जक्ख-वुत्तंतो कुमारेण । जायाइं दोवि पयइरूवाइं ।

अवरोप्परं नियंताणि ताणि रूवं सहाव-रमणिज्जं ।
दोन्नि वि अणमिस-नयणाइं अमर-मिहुणं विडंबंति ॥२१३९॥

इत्थी पुरिसो जाओ त्ति विम्हिया, अहो ! मे दिव्वमणुकूलं ति तुट्ठा, चिराओ सणाहा जाय त्ति निब्भया, इत्थीए पुरिसत्तणं दुघडं मज्झंतरस्स जणस्स किमुत्तरं करेस्सं ति सविसाया, रूवाइ-गुणेहिं ममब्भहिओ त्ति सलज्जा, मह कडक्ख-लक्खीकओ कामाउरो जाओ त्ति गव्विया, पढम समागमो त्ति ससज्झसा, किमित्थ होहि त्ति सवियक्का, पइरिक्के लद्धो त्ति ऊसुया, कहं तोसियव्वो त्ति चिंताउरा- एवं विविह-वियप्प-संकुल-मणा ओणयमुही भणिया कुमारेण-

उन्नामहि मुहचंदु मुद्धि ! बंदिणउ पयट्टउ,
संमुहु पिच्छि मयच्छि ! कमल-दल-वुट्ठि विसट्टउ ।
जंपसु किंपि सकं पि दप्पु परहुय परिवज्जउ,
पयडहि तणु तणुयंगि ! कणगु कालिम पडिवज्जउ ॥२१४०॥

इय भणिउं पल्लंकम्मि कामसेणा निवेसिया तेण ।
अणुवत्तिया य तह जह जाया रइ-समर-सोंडीरा ॥२१४१॥

सा सुहमय व्व रयणी अणुरायमइ व्व पम्मयमईय व्व ।
अन्नोन्न-मंतिंताणं ताणं खणद्धं व वोलीणा ॥२१४२॥

तओ पढियं मागहेण-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पुव्व-दिसा-संगं पाविऊण संपत्त-गुरु-पयावभरो ।
सूरो मुसुमूरिय-तिमिर-मंडलो पायडो होइ ॥२१४३॥

एवं सोऊण विउद्धो कुमारो । भणिओ कामसेणाए- नाह ! करेसु इत्थी-रूवं । कयमणेण तं । कामसेणा वि गया जणणी-पासं । तं इत्थी-वेस-धारिणिं दट्ठूण चमक्किया चित्ते जणणी 'हद्धी किमेयं ?'ति रहसि ठाऊण पुण पुच्छए धूयं । तीए वि अक्खिओ सव्वो वि वईयरो । तुट्ठा जणणी । आहूओ मंती । कहियं तस्स वि सव्वं । देवी मंती पत्ताइं वासहरं । दिट्ठो इत्थीरूवधरो मारो व्व सुकुमारो । भणिओ कामसेणाए- नाह ! पयडेसु साहावियं रूवं । पयडियमणेण । विम्हिय-मणेहिं भणियमणेहिं -

अणुकूले दिव्वे कइयवं पि पुरिसस्स सुह-फलं होइ ।
पडिकूले तम्मि पुणो सच्चं पि भवे अणत्थ-फलं ॥२१४४॥

एत्थंतरे तरणि-मंडल-दिप्पमाणो, माणिक्क-कुंडल-विलीढ-कवोल-मूलो, वच्छत्थली-विलसमाण-महप्पमाण-हारो नहंगण-गओ पभणेइ जक्खो- 'अहं हि दमियारी मरिऊण सव्वाणुभूई जक्खो जाओ । मए य तुम्होवरि सिणेहं वहंतेण एत्तियं कालं रक्खियं रज्जं । संपइ पइट्ठाणपुर-सामिणो मलयकेउणो पुत्तो पुन्नकलसो नाम कुमारो कामसेणाए पवरो वरो त्ति रज्ज-रक्खणत्थं[१६] तुम्ह समप्पिओ, ता इमस्स आणाए समं वट्टियव्वं' ति भणिऊण तिरोहिओ जक्खो । तव्वयण-सवण-ववगय-भंतीहिं पडिवन्नो कुमारो देवी-मंतीहिं ।

जक्खाइट्ठो गुण-कुलहरं व अंगीकओ त्ति किं चोज्जं ? ।
पडिवज्जइ को न जए मिट्ठं विज्जोवइट्ठं च ॥२१४५॥

विहियं वद्धावणयं पुणो वि अह पालए इमो रज्जं ।
पंचप्पयार-विसए सेवइ सह कामसेणाए ॥२१४६॥

पुन्नकलसं पि जाणइ जणो इमो कामसेण-राओ त्ति ।
पुन्नकलस त्ति सरिसत्तणेण तह कामसेणं पि ॥२१४७॥[१७]

सो मंतसाहगो मित्तसेण-नामो कओ कुमारेण ।
दंडवई तस्स य नियय-नंदणी मंतिणा दिन्ना ॥२१४८॥

अइक्कंतो कोइ कालो । जाओ पुत्तो कामसेणाए । वीरसेणो त्ति

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कयनामो वड्ढिउं पवत्तो । अन्नया कुमारेण वुत्तो मित्तसेणो-मित्त ! देसंतरदंसण-कोउगं मे महंतमत्थि । निच्च-सन्निहिएण जंपियं जक्खेण-'जइ एवं ता हत्थि-खंधमारोहसु जेण तं पूरेमि'त्ति भणिऊण कुमारो समारोविओ समं मित्तसेणेण सह हत्थि-खंधे । पयट्टो पुव्व-कमेण गणयंगणे गंतुं । गामागर-नगर-गिरि-सरि-सरोवर-विरायमाणं मेइणीवलयमवलोयंतो पत्तो कंचणमय-पायार-परिक्खित्तं कंचणपुरं । जं फलिह-विणिम्मिय-पढम-भूमि-उवरि-ट्ठिएहिं भवणेहिं गयण-गएहिं व मणि भासुरेहिं सुरपुर-सिरिं वहइ । तं च दट्ठूण भणिओ पुन्नकलसेण जक्खो- सव्वुत्तमं नयरमेयं । ता इमस्स दंसणेणं करेमो नयण-निम्माणं सहलं । 'एवं करेह' त्ति भणंतेण जक्खेण उत्तारिया हत्थि-खंधाओ कुमार-साहगा । तिरोहिओ जक्खो । ते वि पविट्ठा पुरब्भंतरं । कोउगक्खित्त-चित्ता सयल-वासरं पेच्छिऊण नयर-सिरिं रयणीए पसुत्ता मयण-देवउले ।

एत्तो य तम्मि नयरे राया रिउ-निद्द-निद्दलण-सूरो ।
नामेण सूरसेणो, सूरो व्व पयाव-दुव्विसहो ॥२१४९॥

तस्सऽत्थि वसंतसिरी देवी तीए य कुक्खि-संभूया ।
तइलोक्क-तिलयभूया धूया नामेण मयणसिरी ॥२१५०॥

तीए वयंसियाओ कामलया-ससिकला-महुसिरीओ ।
दंडाहिव-मंति-पहाण-सेट्ठि[40]-धूयाओ जह-संखं ॥२१५१॥

तत्थऽत्थि उवज्झाओ विज्जाणंदो त्ति विबुह-विक्खाओ ।
तस्स समीवे सम्मं कुणंति ताओ कलग्गहणं ॥२१५२॥

अह तत्थ सत्थवाहो वेसमण-समाण-रिद्धि-वित्थारो ।
सागरदत्तो नामेण सागरो गुरु-गुण-मणीणं ॥२१५३॥

तस्स य समुद्ददत्तो पुत्तो पुत्तो व्व जलहि-धूयाए ।
सो वि कलाओ गेण्हइ विज्जाणंदस्स पासम्मि ॥२१५४॥

पडिदियह-दंसणेणं सहास-वीसंभ-[41]जंपणेणं च ।
कन्नाण ताण जाओ समुद्ददत्तम्मि अणुराओ ॥२१५५॥

जओ-

अइ दंसणाओ पीई पीईए रई रईइ वीसंभो ।
वीसंभाओ पणओ पंचविहो वड्ढए मयणो ॥२१५६॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मंतंति ताओ एवं परोप्परं अम्ह निब्भरं नेहो ।
तो अम्हाण विवाहं जइ पियरो कारविस्संति ॥२१५७॥

ता होही विरहो भिन्न-भिन्न-ठाणेसु दिन्नाण ।
जइ पुण सयं पि एक्कं परिणेमो किंपि नर-रयणं ॥२१५८॥

तत्तो परोप्परं विरह-विरहियाओ सुहेण चिट्ठामो ।
एसो य सयल-रूवाइ-गुण-जुओ सत्थवाह-सुओ ॥२१५९॥

ता इमं चेव परिणेमो' त्ति मंतिऊण कहिओ तस्स सब्भावो । पडिवण्णं तेण । 'अज्जेव रयणीए सोहणं मुहुत्तं' ति तुमए मयण-देवउले परिणेयव्वाओ अम्हे उ,' त्ति कओ ताहिं तेण समं संकेओ । विन्नायमिणं कुरंगएण पासवत्तिणा पत्तिणा, कहियं सत्थवाहस्स, अत्थंगए गयण-लच्छि-मणि-कुंडले चंडंसु-मंडले, वियंभमाणे भमरमाला-सामले तिमिर-पडले, पाहरिय-दिट्ठिं वंचिऊण विवाहोवगरण-वग्ग-कराए वियक्खणाए चेडीए समं समागयाओ मयणसिरि-प्पमुहाओ कन्नाओ मयण-देवउले । अच्चिओ चारु-कुसुमाईहिं कुसुमाउहो । सत्थवाह-सुओ वि कय-तक्कालोचिय-सिंगारो वच्चंतो वणियकुलाणुचियमेयं ति चिंतिऊण सत्थवाहेण खित्तो घरब्भंतरे । दिण्णं दुवारे तालयं । ताओ य कण्णगाओ तत्थ समुद्ददत्तं अपेच्छमाणीओ भणंति-हला वियक्खणे ! गवेसहि समुद्ददत्तं । तओ तीए पईव-हत्थाए गवेसंतीए दिट्ठो मत्तवारणे पसुत्तो साहग-सहाओ कुमारो । भणियमणाए- अत्थि एसो कुरंगय-परिगओ पसुत्तो । इमं च सोच्चा समागयाओ सव्वाओ जाव दीवुज्जोएण पेच्छंति ताव भणियं मयणसिरीए- न एस समुद्ददत्तो, किंतु तत्तो विअंभियरूवो भयवं मयणो । कामलयाए वुत्तं-सो अणंगो सुव्वइ, एसो सव्वंग-सुंदरो, ता धुवं लच्छिवल्लहो । ससिकलाए वुत्तं-सो जणद्दणो त्ति परिसिद्धो, एसो जणाणंदणो, ता नूणं संकरो । महुसिरीए भणियं-सो वि विरूवक्खो अक्खिज्जइ, एसो उण कमल-दल-विलास-नयणो, ता निच्छियं सुरिंदो । मयणसिरीए वुत्तं-सो वि नयण-सहस्स-दूसिय-सव्वंगो, ता एस अन्नो को वि । इमं च ताणं परोप्परालावं सोऊण भणियं साहगेण-

एसो न कामएवो न केसवो न गिरिसो न वा सक्को ।
किंतु तणओ पइट्ठाण-सामिणो मलयकेउस्स ॥२१६०॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नामेण पुन्नकलसो निसग्ग-सोहग्ग-भग्ग-मयणमओ ।
चाय-चमक्किय-भुवणो विक्कम-कमला-विलास-हरो ॥२१६१॥

ता साहिलासमन्नोन्न-वयण-पंकय-पलोयणा-पुव्वं ।
भणियं इमाहिं- मयणेण भत्ति-तुट्ठेण अम्हाणं ॥२१६२॥

उवणीओ एस वरो ता एयं उद्ववेहि जेणऽम्हे ।
परिणेमो संपइ भद्द ! सोहणं वट्टए लग्गं ॥२१६३॥

उट्ठविओ साहगेण कुमारो, दट्ठूणं कन्नाओ चिंतिउं पवत्तो- किं एयाउ पायालवासुव्विग्गाओ नायकन्नाओ ? किं गलिय-गयणंगण-गमणविज्जाओ विज्जाहर-वहुओ ? किं वा कुविय-सुरवइ-साव-परिब्भट्ठाओ तियसंगणाउ ? त्ति चिंतयंतो जाव चिट्ठइ ताव मुणियभावाए भणिओ मयणसिरि-चेडीए विअक्खणाए-'कुमार ! किं वियप्पेसि ? । एसा खु सूरसेणस्स रन्नो कन्ना मयणसिरी । एसा दंडाहिव-धूया कामलया । एसा मंति-पुत्ती ससिकला । एसा सिट्ठि-सुया महुसिरी । एयाहिं सत्थवाह[५२]-पुत्तेण समुद्ददत्तेण समं कओ विवाह-संकेओ, सो य दिव्ववसओ न आगओ ।

जं वणिय-पुत्त-मेत्तं मग्गंतीहिं तुमं नरिंद-सुओ ।
पत्तो तं तरुमेत्तं गवेसमाणीहिं कप्पतरू ॥२१६४॥

करिमेत्तं पत्थंतीहिं सुरकरी, वंछिरीहिं जलमेत्तं अमय-रसो, मणिमेत्तऽत्थिणीहिं चिंतामणी लद्धो । ता करेसु करग्गहणेण एयाण सहले मणोरह' त्ति भणंतीए समप्पियाइं पारणेत्त-वत्थाइं, नियत्थाइं कुमारेण । बद्धं मयणफल-सणाहं करे कंकणं, गयाइं कामएवस्स पुरओ, कयं कुमारेण तासिं चउन्हं पि पाणिग्गहणं, विहिओ तक्कालोचिय विही । भणियं च मयणसिरीए-

जइ वि तुमं देसंतर-परिभमणपरो तहा वि अम्हाणं ।
हियए तहा पविट्ठो नीहरसि जहा न हु खणं पि ॥२१६५॥

कामलयाए वुत्तं-

बहुय-महिलाहिं रुद्धं हिययं बहु-वल्लहस्स तुह सुहय ! ।
अम्हं पि तस्स कोणे तहा वि वियरेज्ज ओगासं ॥२१६६॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ससिकलाए वुत्तं-

तुह मुह-चंदस्स पलोयणेण अम्हाण माणस-समुद्दे ।
तह सुहय ! समुल्लसिओ विरमिस्सइ जह न कईया वि ॥२१६७॥

महुसिरीए भणियं-

निय-निय-घरेसु अम्हं वच्चंतीणं सरीरमेत्तेण ।
ठाही मणं तुहच्चिय पासे बद्धं तुह गुणेहिं ॥२१६८॥

एवं भणिऊण गयाओ निय-निय-ठाणेसु सव्वाओ ।

पहाए अत्थाण-मंडव-निसन्नस्स रन्नो विन्नत्तं पडिहारेण-देव ! आलाण-खंभं उम्मूलिऊण वियरिओ मत्त-हत्थी, पयट्टोऽसमंजसं काउं । तहाहि-

खणु पवणु व्व गुरुवेगेण जाइ,
खणु निच्चलंगु सेलो व्व ठाइ ।
खणु गिंभु व रयभरु विक्खिरेइ,
खणु घणु व गज्जिओ वित्थरेइ ॥२१६९॥

पडिहारं हणइ घण-जव-मरट्ट, मुसुमूरइ तरल-तुरंग-थट्टं ।
उम्मूलइ मूलह विडवि-वग्ग, मेढ-हट्ट-भवणं भंजइ समग्ग ॥२१७०॥

न गणेइ बालु विलवंतु करुणु, संहरइ तार-तरलच्छु तरुणु ।
छड्डइ न बुड्डु कंपिर-सरीरु, महिला-समूहु मारइ अभीरु ॥२१७१॥

नवि वारइ निद्धणु न हु धणड्डु परिहरइ न मुक्खु न वा वियड्डु ।
उक्खिविय वियडु दढ-सुंड-दंडु, तं दंड-पाणि जसु कोव-चंडु ॥ २१७२॥

इय कय-असमंजसु कोव-परव्वसु मयजल-सिंचिय-महिवलउ ।
तुह मत्तउ मयगलु भमिरु निरग्गलु कुणइ अकालि वि पुरि पलउ ॥२१७३॥

रन्ना वुत्तं- जो इमं वसीकरेइ तस्स मयणसिरिं धूयं देमि । तं सोऊण पयट्टा पयंड-पोरुसुब्भडा बहवे सुहडा । गया गइंदस्स पासे । ते तस्स पज्जलिय-जलणस्स व तेयमसहमाणा ठिया दूरओ । इओ य कुमारो सुत्त-विउद्धो करि-वुत्तंतं मुणिऊण करि-सिक्खा-वियक्खणत्तणेण कोउगक्खित्त-चित्तो पत्तो तयभिमुहं । दिट्ठो तेण हत्थी ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जो सत्त-करुत्तुंगो नव-कर-दीहो ति-हत्थ-वित्थिन्नो ।
दस-हत्थ-परीणाहो सत्तंग-पइट्ठिओ भद्दो ॥२१७४॥

आरोविय-धणुवंसो वीसनहो नह-विलग्ग-कुंभयडो ।
महुपिंगच्छो लक्खण-सएहिं वालेहिं चउहिं जुओ ॥२१७५॥

गओ गयरस्सऽग्गओ कुमारो । हक्किओ अणेण करी । धाविओ तयभिमुहं, पक्खित्तमुत्तरिज्जं कुमारेणऽपरिणओ तत्थ हत्थी आहओ कुलिस-कढिणेण मुट्ठिणा पट्ठि-प्पएसे । चलिओ कुमराभिमुहं करी । भामिओ कुलाल-चक्कं व मंडल-परिब्भमिरेण कुमरेण, परिस्संतो य ठिओ लेप्पमओ व्व निच्चलो मयग्गलो । आरूढो केसरि-किसोरो व्व विज्जुक्खित्त-करणेण करिणो खंधे कुमारो । बद्धमासणं । गयाणुचरेहिं समप्पियं अंकुसं । तओ सलहिज्जंतो नायर-जणेण, साहिलास-मवलोइज्जमाण-मुहकमलो विलयाहिं, चलिओ रायभवणाभिमुहं । वद्धाविओ य राया लोएहिं जहा-देव ! अमरकुमारागारेण निरुवम-विक्कम-गुणागारेण केण य पुरिस-रयणेण हत्थी वसीकओ त्ति । इओ य पहाए दिट्ठा नव-विवाह-नेवच्छा परियणेण रायकन्ना, कहिया जणणीए । तीए वि तहा दट्ठूण पुट्ठा-वच्छे ! किमेयं ? । जाव न किंपि जंपइ मयणसिरी ताव कहियं सव्वं पि वियक्खणाए । देवी वि वियक्खणाए समं गया रन्नो समीवं । विन्नत्तमिणं जहा- देव ! दंडवइ-मंति-सिट्ठि-धूयाहिं समं मयणसिरीए एगत्थ-पढणेण जाओ अच्चंत-सिणेहो । एयाहिं च परोप्पर-विरह-कायराहिं पइट्ठाणपुर-पहुणो मलयकेउणो पुत्तो पुन्नकलसो नाम भवियव्वया-वसेण अज्ज रयणीए परिणीओ । रन्ना वुत्तं- ममावि एसो चेव मणोरहो आसि । परं रहसग्गलेण एवमाइट्ठं जहा-जो इमं हत्थिं वसीकरेइ तस्स मए मयणसिरी दायव्व त्ति । ता संपयं पइन्ना इमा कहं नित्थरियव्व त्ति चिंताउरो जाव चिट्ठइ राया ताव पत्तो रायभवणंगणे कुमारो । दिट्ठो रन्ना । अहो ! असरिसी रूव-संपया, अहो ! निरुवमो विक्कमो इमस्स । ता को एसो ? त्ति । विन्नत्तं वियक्खणाए-देव ! एसो चेव पुन्नकलसो जेण अज्ज रयणीए परिणीया मणयसिरी । पहाण-पुरिसेहिं भणियं- जुज्जए एयं, जओ एसो नवविवाह-कंकणालंकिय-करो दीसइ त्ति । रन्ना वुत्तं- सोहणं संपन्नं । जं पुन्नकलस-कुमारेणं चेव हत्थी वसीकओ । अओ पत्तोहं संपयं पइन्ना-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

महन्नवस्स पारं ति जंपंतेणं आइट्ठं जहा- कुमार ! हत्थिं खंभे अग्गलिऊण इहागच्छ । कुमारो वि तहेव काऊण पणओ नरिंदस्स । रन्ना वि ससिणेहमालिंगिऊण निवेसिओ समासन्न-दिन्न-सुवन्नासणे । भणियं च-

जइ वि तुमं अप्पाणं कुमार ! अम्हाण न हु पयासेसि ।
तहवि चरिएण लोउत्तरेण इमिणा पयडिओ सि ॥२१७६॥

अप्पाणमपयंडतो वि होइ पयडो गुणेहिं सप्पुरिसो ।
छन्नो वि चंदण-दुमो किं न कहिज्जइ परिमलेण ? ॥२१७७॥

कुमारेण वुत्तं-

जं एसो मत्त करी कुविय-कयंतो व्व दुस्सहो वि मए ।
विहिओ वसमं तं सामि ! तुम्ह चलणाणुभावेण ॥२१७८॥

जं निग्गुणो वि पयडेइ गुणलवं तं गुरूण माहप्पं ।
पंगू वि गयणमक्कमइ अक्कमंडल-गओ अरुणो ॥२१७९॥

रन्ना वुत्तं-

'वच्छ ! तुमए मयणसिरीए सयं चेव परिणीओ, संपयं पुण मए वि तुज्झ इमा दिन्न' त्ति भणिऊण पसत्थ-वत्थेहिं महग्घ-रयणालंकारेहिं करि-तुरयाइ-दाणेण सक्कारिऊण विसज्जिओ पवरावासे । कुमारो पत्तो सह मयणसिरीए । इमं च सोच्चा सेणावइ-सचिव-सेट्ठीहिं पि सम्माण-पुव्वं समप्पियाओ निय-निय धूयाओ । भुंजए ताहिं समं भोए ।

अह अन्नया कुट्टिम-सन्निविट्ठ-सुवन्नसीहासण-सन्निसन्नो ।
नरेसरो पेच्छइ सूरसेणो नहंगणे वब्भयदब्भमब्भं ॥२१८०॥

कमेण तं सज्जण-संगयं, व वुड्ढिं गयं निब्भर-पूरियासं ।
गज्जंतमुल्लासिय-विज्जुलेहं, काउं पयट्टं सहस त्ति वुट्ठिं ॥२१८१॥

एत्थंतरे उल्लसिओ समीरो, कप्पं व कालप्पभवो व्व तिव्वो ।
समाहयं तेण य तक्खणेण, तमक्कतूलं व कहिं पि नट्ठं ॥२१८२॥

दट्ठूण तं चिंतइ सूरसेणो, वेरग्ग-मग्गोवगओ मणम्मि ।
लोयम्मि एएण निदंसणेणं, नीसेस-भावाण विणस्सरत्तं ॥२१८३॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पावाइं दोगच्च-निबंधणाइं, भोगत्थिणो जस्स कए कुणंति ।
अभिक्खणं तं पि असारमंगं, रोगा विलुंपंति घुण व्व कट्ठं ॥२१८४॥

विमोहिया जेण जणा मणम्मि, हियाहियं किं पि न चिंतयंति ।
तं जोव्वणं झत्ति जरा कराला, दवग्गि-जाल व्व वणं दहेइ ॥२१८५॥

रसायणाइणि कुणंति जस्स, थिरत्तणं-काउमणा मणुस्सा ।
मयं व वग्घेण गसिज्जमाणं, तं मच्चुणा रक्खइ जीवियं को ? ॥ २१८६॥

जीए कए भूरि किलेस-जालं, कुणंति मेल्लंति तणं व पाणे ।
पणस्सए सा सहसा पयंड-वायाहया दीव-सिहि व्व लच्छी ॥२१८७॥

जेणावलित्तो विसएक्कचित्तो, परित्थि-संगं पि करेइ मूढो ।
खणेण तं खिज्जइ धाउ-खोहे, हिमागमे पंकरुहं व रूवं ॥२१८८॥

किलिस्सए जस्स कए कुणंतो, विचित्त-चाडूणि परस्स जीवो ।
लद्धूण थेवं पि विलीय-वन्हिं, विणिज्जए तं मयणं व पेम्मं ॥२१८९॥

किच्चं अकिच्चं व न जम्मि पत्ते, पलोयए पीयसुरो व्व जीवो ।
पहुत्तणं तुट्टइ तं पणट्ठे, पुन्ने घणे सेलनई रओ व्व ॥२१९०॥

एगत्थ रुक्खे व्व कुडुंबवासे, कालंकियं तं पि खग व्व बंधू ।
ठाऊण वच्चंति चउग्गईसुं, चउद्दिसासुं च सकम्मबद्धा ॥२१९१॥

एवं अणिच्चं सयलं पि वत्थुं, वियाणमाणस्स दुहेक्कगेहे ।
गेहे पलित्ते व्व भवम्मि मज्झ, जुत्तो पमाओ न खणं पि काउं ॥२१९२॥

एत्तो य पत्तो फल-फुल्ल-हत्थो, उज्जाणपालो नमिउं भणेइ ।
सूरी तसत्थावर-जंतु-चत्ते, लीलावणे तुम्ह समागओ त्ति ॥२१९३॥

जो तारएहिं व मुणीहिं जुत्तो, निच्छिन्न-सम्मोह-महंधयारो ।
कारुन्न-पीऊस-पसन्नमुत्ती, चंदो व्व नामेण पसन्नचंदो ॥२१९४॥

तं सूरसेणो सुणिऊण तस्स, तोसेण दाउं दविणं अणग्घं ।
गओ गयक्खंध-गओ गुरूणं, नमंसणत्थं गुरु-भत्ति-जुत्तो ॥२१९५॥

उज्जाण-मज्झोवगओ नरिंदो, करिंद-खंधाउ समुत्तरेइ ।
आलोयमेत्तुज्झिय-रायचिंधो, गुरूण पाए पणमेइ सम्मं ॥२१९६॥

तो धम्मलाभं भवदाव-दाह-नवंबुवाहं वियरेइ सूरी ।
नमंसिऊणं मुणिणो विसेसे, राया निसन्नो उचियासणम्मि ॥२१९७॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पयासयंतो विलसंत-दंत-कंतीहिं हारं व तवस्सिरीए ।
घणोह-निग्घोस-गहीर-घोसो-गुरु विधम्मं कहिउंपवत्तो ॥२१९८॥

माइंदजालं व विलोलमेयं, वियाणमाणो वि भवस्सरूवं ।
निव्वाण-मग्गे न पयट्टए जो, दिट्ठेहिं चोरेहिं मुसिज्जए सो ॥२१९९॥

माणुस्स-जम्मं लहिउं दुलंभं, गमेइ जो भोगसुहस्स कज्जे ।
सो वायसुड्डावण-कारणम्मि, खिवेइ चिंतारयणं व मूढो ॥२२००॥

नियत्तिउं वंछइ भोग-तण्हं, सेवाएँ जो मूढमणो मणुस्सो ।
समीहए सो जलणस्स तित्तिं, संपाईउं दारु-समुच्चएण ॥२२०१॥

संतोस-सुक्खं स-वसं विमोत्तुं, परव्वसं भोग-सुहं सुहत्थी ।
संपत्थए जो अमयं चइत्ता, करेइ सो हालहलाहिलासं ॥२२०२॥

धम्मं असारेण सरीरएण, जो साहए मोक्ख-सुहेक्क-हेउं ।
किणेइ सो मत्त-करिं खरेण, चिंतामणिं काण-कवड्डएण ॥२२०३॥

जो पावकम्मुज्जमर्मिदियाणं, सकज्जलुद्धाण कए करेइ ।
सो मूढबुद्धी निय-कंठदेसं, हणेइ तिक्खेण कुहाडएणं ॥२२०४॥

लद्धे नरत्ते वि समीहियत्थं, संसाहगे साहइ जो न मोक्खं ।
पत्तो वि सो रोहणपव्वयम्मि, न लेइ माणिक्कमणग्घमोल्लं ॥२२०५॥

मोत्तूण जो रज्जमवज्ज-मूलं, तवं न कुज्जा सिव-सुक्ख-हेउं ।
लद्धूण धत्तूर-तरुं सुरुक्खो, सो कप्परुक्खं पि परिच्चएज्जा ॥२२०६॥

एवं गुरूणं वयणं सुणित्ता, नरेसरो जंपइ सूरसेणो ।
धम्मत्थिणो मज्झ तुहोवएसो, वाउ व्व जाओ सिहिणो सहाओ ॥२२०७॥

काऊण तो संपइ रज्जसुत्थं, गिण्हामि दिक्खं तुह पाय-मूले ।
गुरू पयंपेइ महाणुभाव !, मणोरहो सिज्झउ ते अविग्घं ॥२२०८॥

गंतूण गेहम्मि पहाण-लोयं, हक्कारिउं जंपइ सूरसेणो ।
अहं हि संसार-विरत्तचित्तो, रज्जं विमोत्तूण वयं गहिस्सं ॥२२०९॥

पुत्तो न मे दिव्व-वसेण जाओ, एक्को वि जं रज्जपए ठवेमि ।
ता संपयं एत्थ निवेसइस्सं, भत्तारमेयं मयणस्सिरीए ॥२२१०॥

रज्जम्मि पुन्नकलसं अहिसिंचिऊण,
तेणेव निम्मविय-निक्खमणप्पवंचे ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लीलावणे पविसिऊण गुरूण पासे,
दिक्खं पवज्जइ नरेसर सूरसेणो ॥२२११॥

गहिय-दुविह-सिक्खो सो सरीराणवेक्खो,
विविह-तव-परत्तो निच्चलोदाररत्तो ।
परम-परसम-रम्मो निद्दियाऽसेस-कम्मो,
धुवमणुवम-सोक्खं जाइ कालेण मोक्खं ॥२२१२॥

पुन्नकलसो वि गुरु-समीवे पवन्नो देसविरइं परिपालइ रज्जं, सेवए मयणसिरी-पमुह-पत्तीहिं सह विसयसुहं । जाओ कमेण मयणसिरीए नंदणो । तस्स कयं मयणवम्मो त्ति नामं ।

[४१]कयाइं कुंडलउराओ करह-समारूढा समागया पुरिसा । विन्नत्तोऽणेहिं पुन्नकलसो- देव ! देउर-सामिणा नरसिंहेण रन्ना पेसिओ दूओ नाणगब्भ-मंति-पासे । भणियं अणेण-देवो नरसिंहो आणवेइ एवं जहा-एत्तियं कालं तए पुत्त-ववएसेण काराविया रायकन्ना रज्जं । तं च न विन्नायं मए, संपयं पुण रायकन्नाए अविन्नाय-कुलक्कमेण केणावि पुत्त-मुप्पाईऊण रज्जं कारवेसि । अहो ! ते बुद्धि-कोसल्लं । तो जइ रज्जस्स कुसलं वंछसि ता मे दंडं देसु । अह न देसि ता नूणं विणस्ससि । मंतिणा वुत्तं-'जइ ते दंड-गहण-वंछा ता देवो दमियारी दंडं किं न मग्गिओ ? संपयं पुण बालरज्जं दट्ठूण दंडं मग्गसि, ता तुमं छलं नेसि नरसारमेओ न नरसीहो । जं पुण महाराय-मलयकेउ-कुलकेउभूयं पुन्नकलस-कुमारं अविन्नाय-कुलक्कमं जंपसि तं तुमं जमदंडाभिलासी, ता न देमि दंडं । वच्च, कहेसु निय-सामिणो जं ते रुच्चइ तं करेसु' त्ति वोत्तूण विसज्जिओ दूओ । अम्हे वि तुम्ह पासं पेसिया । अओ परं देवो पमाणं ति । कुमारेण वुत्तं-गच्छह तुब्भे, न कायव्वं नरसिंह-भयं । नियत्ता ते । पुन्नकलसो वि तत्थ रज्जसुत्थं काऊण पुव्वं सव्वाणुभूई-पउणीकय-कुंजरारूढो पत्तो तत्थ जत्थ दूय-वयण-सवण-कुविओ कुंडलपुरं पइ पत्थिओ देवउर-परिसरे आवासिओ चिट्ठइ नरसिंहो । किमेस एरावणारूढो सयं सुरिंदो एइ ? त्ति विम्हयवसुप्फुल्ल-लोयणेण सेन्नलोएण पलोइज्जमाणो अवयरिओ नरसिंहस्स पुरओ । भणियं कुमारेण-अरे ! अविन्नाय-कुलक्कमं ममं जंपसि । ता जइ कुलक्कमं [४४]मुणिउमिच्छसि ता उट्ठेहि [करेहि] करे करवालं । मम भुयाओ चेव

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कहिस्संति कुलं । तओ 'अरे ! गेण्हह इमं' ति भणंतो गहिय-खग्गो उट्ठिओ नरसिंहो । विविह-पहरण-विहत्थ-हत्था पयट्टा पहरिउं सुहड-सत्था । नरसिंहं विणा थंभिया सव्वे सव्वाणुभूइणा ।

उग्गीरिय-खग्गा के वि के वि चक्कलिय-चंड-कोदंडा ।
उक्खित्त-मोग्गरा के वि चित्त लिहिय व्व संजाया ॥२२१३॥

नरसिंहेण 'किं न पहरंति ?'भणिया सुहडा । वुत्तं कुमारेण- किमेएहिं किमिप्पाएहिं पाइक्केहिं ? अहं तुमं च दो वि जुज्झामो । पयट्टा दो वि जुज्झिउं । कहं ?

वग्गंति दो वि हक्कंति दो वि पहरंति दो वि खग्गकरा ।
दो वि गयणंगणे उप्पयंति निवयंति ते दो वि ॥२२१४॥

दक्खत्तणओ खग्गेण तस्स खग्गं तड त्ति तोडित्ता ।
नरसिंह-नरिंदो पाडिऊण कुमरेण तो बद्धो ॥२२१५॥

मुक्का सिद्ध-गंधव्वेहिं गयणाओ कुमरस्सोवरिं कुसुमवुट्ठी । सव्वाणुभूइणा उत्थंभिया सुहडा । पवन्ना कुमार-सरणं । नरसिंहो वि मुक्को सक्कारिउं कुमारेण । भणियं च तेण- कुमार !

जं तुह मए सरूवं अयाणमाणेण अणुचियं भणियं ।
तेण असच्चरिएणं सक्केमि न दंसिउं वयणं ॥२२१६॥

ता वणवासं वच्चामि मज्झ गिण्हेसु रज्जसिरिमेयं ।
नीसेस-विसय-पवरं परिणेसु सुयं व रायसिरिं ॥२२१७॥

कुमरेण वुत्तमेयं पालसु रज्जं करेसु मा खेयं ।
सुहडस्स भूसणं न उण दूसणं रणमहीवडणं ॥२२१८॥

कन्ना-परिणयण-कए जं तुममाणवसि तं पुण करिस्सं ।
जम्हा गुरूण वयणं अलंघणिज्जं बुहा बिंति ॥२२१९॥

रन्ना वुत्तं सच्चं जइ गुरु-वयणं अलंघणिज्जं ते ।
रज्जसिरिं रायसिरिं च दो वि गिण्हसु तुमं तत्तो ॥२२२०॥

तओ कुमारेण परिणीया रायसिरी पडिवन्नं च रज्जं । गओ नरसिंहो तवोवणं । कुमारो वि तत्थ नमंत-सामंत-मंति-सेविज्जमाण-पायकमलो पालए रज्जं । सेवए रायसिरीए समं विसए । जाओ कमेण पुत्तो । पइट्ठियं तस्स देवसीहो त्ति नामं । अन्नया पिउ-पासाउ समागया पहाण-पुरिसा ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विन्नत्तमणेहिं जहा- देव ! वत्तमकहिऊण निग्गए तुमम्मि महंतं सोय-संभारं पत्तो मलयकेउदेवो, देवी य विलासवई अणवरय-बाह-सलिल-धोय-कवोलमूला ठिया एत्तियं कालं। संपयं पुण अपडुदेहो देवो जाओ। अओ तुम्ह आहवणत्थं पेसिया अम्हे देवेण। इमं च सोच्चा विसन्नो कुमारो। सव्वाणुभूइ-पउणीकय-करिवरारूढो साहग-समेओ पत्तो पइट्ठाणं। पणया अणेण जणणि-जणया। निवेसिओ जणएण रज्जे। सयं च पंच-परमेट्ठि-सुमरणपरो परलोगं गओ मलयकेउ राया। एवं पुन्नकलसो चउण्ह-रज्जाणं जाओ अहिवई। निय-पयाव-सहायं साहगं सेणावइं पेसिऊण साहियाइं तेण अन्नाइं पि बहूणि रज्जाइं। आणियाओ पुत्तेहिं समं पुव्व-परिणीय-पत्तीओ। अन्नाओ वि परिणीयाओ पउराओ रायकन्नाओ। भुंजंतस्स तस्स ताहिं समं विसय सुक्खं जाया अवरे वि पवर-पुत्ता। जिण-मुणि-पूया-पहाणस्स तिवग्गसारं रज्जमणुपालयंतस्स अइक्कंता बहवे वास-लक्खा।

अन्नया तुरय-वाहियालीओ नियत्तेण नयर-मज्झे मासक्खमण-पारणए परियडंतो दिट्ठो पुन्नकलसेण एगो महरिसी जो य जूयमेत्त-महि निहिय-लोयण-जुओ देह-परिकम्म-रहिओ दया-संजुओ तिव्व-तव-सुसिय-वस-मंस-सोणिय-वओ अट्ठि-चम्मावसेसो विसिट्ठव्वओ। तो भत्तिवसुल्लसिय-रोमंचेणं मुत्तूण तुरयं नरिंदेण वंदिओ मुणी। मुणिणा वि अभिणंदिओ सो धम्मलाभेण। तत्तो कहिं पि मए एरिसं समणरूवं दिट्ठं ति चिंतयंतेण सुमरिओ पुव्व-भवो जहा- मह चेव पवन्नसामन्नस्स तिव्व-तवच्चरणेण सोसियंगस्स एरिसं रूवमासि, तवप्पभावेण सुरलोय-सुहं भुंजिऊण इमं रज्जरिद्धिं पत्तो म्हि, ता संपयं तं चेव तवमणुचरिस्सं ति चिंतिऊण भणिओ मुणी- भयवं ! कत्थ तुम्ह गुरुणो ? मुणिणा वुत्तं-इहेव कुसुमसारुज्जाणे पभासायरिया समोसढा चिट्ठंति। रन्ना निवेसिओ निय-पए पुन्नकुंभो नाम निय-नंदणो। काराविया जिणहरेसु महिमा। विसेसओ अमारिघोसणा-पुव्वं दिन्नं जहिच्छियं दीणाईण दाणं। महाविभूईए पभासायरिय-पासे पवन्ना दिक्खा।

काउं इमो तिव्व-तवं विवन्नो सव्वट्ठसिद्धम्मि गओ विमाणे।
तओ चुओ लद्ध-मणुस्स-जम्मो महाविदेहे लहिही सिवं पि ॥२२२१॥

जीए च्चिय संजुत्तं दाणं सीलं तवं च जीवाण।
जायइ निव्वाण-फलं तं भावह भावणं भविणो ॥२२२२॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वंझं बिंति जहिच्छ-सत्थ-पढणं अत्थावबोहं विणा,
सोहग्गेण विणा मइप्पकरणं दाणं विणा संभमं ।
सब्भावेण विणा पुरंधि-रमणं नेहं विणा भोयणं,
एवं धम्म-समुज्जमं पि विबुहा सुद्धं विणा भावणं ॥२२२३॥

उभय-भवेसु असुद्धा निद्दिट्ठा भावणा दुह-निमित्तं ।
स च्चेय सुक्ख-मूलं सुद्धा जह खुड्डगाईण ॥२२२४॥

तहाहि-

[५. भावनायां क्षुल्लकादि कथा]

अत्थि इह भरहवासे संकेय-निकेयणं व साकेयं ।
नयरं पिहुलच्छीणं पि हु लच्छीणं वर-मुणीणं ॥२२२५॥

वेरि-करि-पुंडरीओ परिपंडुर-पुंडरीय-रुद्ध-दिसो ।
सिरि-केलि-पुंडरीयं तत्थ निवो पुंडरीओ त्ति ॥२२२६॥

तस्स भुयदंड-कुंडलिय-चंड-कोयंड-कंड-तुंडेहिं ।
खंडिय-विपक्ख-मुंडो कंडरीओ अत्थि जुवराओ ॥२२२७॥

कंता कांचण-कंती ससिकंता नाम पुंडरीयस्स ।
तीए सुओ जसभद्दो भद्दगइंदो व्व दाणपरो ॥२२२८॥

भद्द-गुण-विढत्त-जसा जसभद्दा भद्द-हत्थि-समगणणा ।
जाया जाया वर-सील-मंडणा कंडरीयस्स ॥२२२९॥

जिस्सा सरीर-सुंदरिम-दलीअ-दप्पाओ देव-रमणीओ ।
लज्जंतीउ व्व न दंसयंति लोयम्मि अप्पाणं ॥२२३०॥

तं कहवि पुंडरीओ दट्ठुं लावन्न-लच्छि-कुल-भवणं ।
मयण-सर-विहुर-चित्तो चिंतिउमेवं समाढत्तो ॥२२३१॥

चंदो इमीए मुह-पंकएण जित्तो समुद्द-सलिलम्मि ।
मज्जइ निच्चं पि कलंक-पंक-पक्खालणत्थं व ॥२२३२॥

एईए बालाए लोयण-लायन्न-लीह-[४५]लुद्धाइं ।
मुद्धाइं मयकुलाइं वणवास-वयं व सेवंति ॥२२३३॥

एईए अहर-हरियारुणिम-मरट्टाइं लज्जमाणाइं ।
बिंबफलाइं उब्बंधणं व वल्लीसु विरयंति ॥२२३४॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ता जइ इमीए सह विसयसुहं सेवेमि ता अत्तणो जीवियं सहलं मन्नेमि । तओ सो इमीए कुसुम-तंबोल-विलेवणाईणि पेसिउं पयट्टो । सा वि गुरु त्ति तं पइ निव्वियारा सव्वं गिण्हइ । अन्नया अविभाविऊण उभय-लोग-भयं भणिया रन्ना-सुंदरि ! ममं पडिवज्जसु । तीए वुत्तं-महाराय ! जो मे भत्तुणा तुमं पडिवन्नो सो मए पुव्वं पडिवन्नो । रन्ना वुत्तं-मणुस्सभावेण ममं पडिवज्जसु । तीए वुत्तं- अणेय-समर-निव्वूढ-साहसं तुमं मणुस्सं को न पडिवज्जइ ? । रन्ना वुत्तं-ममं पइं पडिवज्जसु । तीए वुत्तं-जो तुमं सयल-पुहवीए पई सो ममावि पई चेव ।

रन्ना वुत्तं-कमलच्छि ! अलं परिहासेण । मयण-जलण-जाला-पलित्त-गत्तं ममं नियंग-संगमामय-रसेण निव्ववेसु त्ति । तीए वुत्तं-देव! मा एवं आणवेसु । गरुओ तुमं, मेढिभूओ भुवणस्स । समुद्दो व्व मा विलंघेसु मज्जायं । विलंघिय-मज्जाए तुमम्मि समुद्दे य जायए जगप्पलओ । तुह भएणं च नाएण वट्टए लोओ । यतः-

इदं प्रकृत्या विषयैर्वशीकृतं परस्पर-स्त्री-धन-लोलुपं जगत् ।
सनातने वर्त्मनि साधु-सेविते प्रतिष्ठते भूप-भयोपपीडितं ॥२२३५॥

नयो वशीकर्तुमलं वपुस्थितं निजेन्द्रिय-ग्राममपेतसत्पथं ।
विदूरदेशस्थमपास्त-पौरुषो विपक्षवर्गं स कथं विजेष्यते ॥२२३६॥

ता अलं इमिणा कुल-कलंककारिणा दुग्गइ-निबंधणेणं दुरज्झवसाएणं । परिचत्तो एस मग्गो खुद्द-सत्तेहिं पि । पइदिण-पत्थंतस्स तस्स अन्नया जंपियं अणाए-किमेयस्स वि भाउणो न लज्जसि ? । तओ चिंतियं रन्ना-नूणं कंडरियासंकाए ममं न पडिवज्जए, ता वावाईऊण तं गिण्हामि एयं देविं । तहेव काऊण भणिया एसा-वावाईओ भयो मए भय-कारणं ते । ता संपयं किं पयंपिहिसि ? । तीए चिंतियं-हद्धी इमिणा विलाएण मह कए गुणनिही अज्जउत्तो वावाईओ । ता जाव न एसो सीलखंडणं करेइ ताव अन्नत्थ वच्चामि । तओ आवन्नसत्ता सावत्थी-गामिणा सत्थेण सह गंतुं पयट्टा । कमेण पत्ता सावत्थीए । तत्थ विजिय-सयलंतरारिसेणो अजियसेणो आयरिओ । मुत्तिपुर-वत्तिणी कित्तिमई पवत्तिणी । जसभद्दा वि पत्ता तीए समीवं । वंदिया सा सविणयं तीए । अहो ! असरिसाए आगिईए रायपुत्ती-सरिच्छेहिं लक्खणेहिं इमीए एरिसी अवत्थ त्ति चिंतिऊण भणियं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पवत्तिणीए-वच्छे ! का तुमं ? कत्तो वा इहागयासि ? । तीए वि कहियं जहावत्तं सव्वं पि । पवत्तिणीए वुत्तं-

धन्नासि तुमं वच्छे ! जा एवं सीलपालण-निमित्तं ।
मिल्लसि जलण-पलीविय-पलाल-पूलं व रज्जं पि ॥२२३७॥

जं सयलोवद्दव-सेल-दलण-दंभोलि-दंड-दुप्पेच्छं ।
जं पुव्व-भवज्जिय-पाव-दप्प-विज्झवण-घण-तुल्लं ॥२२३८॥

जं सग्ग-सोक्ख-तरु-मूलमुत्तिमं मंदिर-दुवारं ।
सीलम्मि तम्मि निच्चं जत्तो जुत्तो च्चिय बुहाणं ॥२२३९॥

तीए य संविग्ग-मणाए पडिवन्नं समणत्तणं । तओ अपत्थासिणो वाहि व्व वड्ढिउं पवत्तो गब्भो । पुच्छिया[५५] पवत्तिणीए-भद्दे ! किमेयं ? ति । तीए वुत्तं-पुव्वं चेव निय-पइ-संगमेण मे एस गब्भो जाओ । परं वय-विग्घो मा होउ त्ति न मए अक्खाओ । सावय-घरे पच्छन्ना ठिया, पसूया एसा दारगं । कमेण वड्ढंतो जाओ सो अट्ठ-वारिसिओ । गाहिओ साहु-किरियं । पसत्थ-वासरे य पव्वाविओ सूरिणा । गहिय-दुविह-सिक्खो-पत्तो जोव्वणं, कम्मवसओ पडिवन्नो वियारेहिं । यतः-

यौवने वर्त्तमानस्य विकलस्यापि देहिनः ।
विकारः स्फुरति प्रायो नाविकाराय यौवनं ॥२२४०॥

तओ न तरामि पव्वज्जं काउं, सेवेमि विसए, पच्छा पुणो वि पव्वज्जं काहं ति चिंतिऊण खुड्डएण निवेइयमिणं जणणीए । तीए वुत्तं-वच्छ ! मा एवं पलवसु । आयरिओ जाणिस्सइ अकुलीणो त्ति गणिस्सइ । पवत्तिणी सुणिस्सइ, अविणीओ त्ति भणिस्सइ । सयणा मुणिस्संति, लज्जिया भविस्संति । सेस-लोगो संभलिस्सइ, पवयण-निंदं करिस्सइ । किञ्च-

दिण पंच करिवि विसओवभोगु,
संघाइवि अणप्पह पाव-जोगु ।
नीसंख-कालु दुह-लक्खखवि,
वसियव्वु वच्छ ! नरयंध-कूवि ॥२२४१॥

पइ-जम्म-मरण-कल्लोल-मत्तु, भव-जलहि भमिवि मणुयत्तु पत्तु ।

परिहरिवि विसयफलु वासु लेहि, किं कोडि कवड्डिइ हारवेहि ॥२२४२॥

चारित्तु चइवि जो विसय-सुक्खु, परिणाम-विरसु सेवेइ मुक्खु ।
सो पियइ दुद्ध जर-गहिउ सुद्ध, सो भक्खइ मंसु गलंत-कुट्ठु ॥२२४३॥

मुह-महुरु चएविणु विसय-सुक्खु पेरंत-विडंबण-बहुल-दुक्खु ।
धरि चरणु वच्छ ! वज्जिवि पमाउ जिम्व नरइ न पावहि पच्चवाउ ॥ २२४४॥

खुड्डएण वुत्तं-अहं पि जाणेमि सव्वमेयं, परं न तरामि पावो पवज्जं काउं।

जणणीए भणियं-तहा वि मज्झ कए बारस-वरिसाणि कुणसु वयं। तीए उत(व)रोहेण ठिओ सो तेत्तियं कालं । पुणो वि पुच्छए जणणिं । तीए वुत्तं-मम सामिणिं पवत्तिणिं पुच्छ । पुट्ठा पवत्तिणी । तीए वि भणियं-

जा दोस-भुयंग-करंडियाओ तइलोक्क-विडंबण-पंडियाओ ।
वालुंकि-वाल-वंकुड-मणाओ तडि-भंगुर-जीविय-जोव्वणाओ ॥२२४५॥

संझब्भलेह-खण-रागिणीओ नरयंध-कूव-रिउ-वत्तिणीओ ।
निम्मल-विवेय-रवि-बिम्ब-मेहु महिलासु तासु को कुणइ नेहु ? ॥ २२४६॥

खुड्डएण वुत्तं-किं करेमि ? । न सक्केमि दुक्करं वयं काउं । पवत्तिणीए वि पडिक्खाविओ दुवालस-वरिसाणि[७७] । पुन्नेसु तेसु पुच्छियाए पवत्तिणीए पेसिओ उवज्झाय-पासे । तेणावि भणियं-

जो जोव्वणु जाव सरीरु सत्थु जा विंदहि इंदिय-निय-नियत्थु ।
ता वच्छ ! कुणसु संजमि पवित्ति किं कूवु खणिज्जइ धरि पलित्ति ॥२२४७॥

वज्जे वि सव्वु सावज्जु कम्मु जो वच्छ ! न जोव्वणि कुणइ धम्मु ।
सो मरण-कालि परिमलइ हत्थु गुणि तुट्टइ जिम धाणु कुपत्थु ॥२२४८॥

खुड्डएण भणियं-सच्चमिणं तहावि न सक्कुणोमि वयं काउं । उवज्झाएण भणियं-ममावि देसु बारस-वरिसाणि । ठिओ सो तित्तियं कालं । पुणो पुट्ठो उवज्झाओ । तेण भणियं-गुरुं पुच्छ । गओ गुरु-समीवं । साहिओ निययाभिप्पाओ । तेणावि भणियं-

परिहरिवि चरणु परिणई अपच्छ जं विसय-तुच्छ वंछेसि वच्छ ! ।
जलबिंदु-मित्त-सुहालस-लुद्ध तं जलहि-तुल्ल दुहं लेसि सुद्ध ॥२२४९॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विसउवभोग-भोलविय-चित्तु चारित्तु वच्छ ! वज्जिवि पवित्तु ।
बहु पाव कुणंतु अणंतु कालु भवरन्नि सहिस्सरसि दुक्ख-जालु ॥२२५०॥

अवगणिवि नरय-दुहु अप्पमेउ जं विसय समीहसि निव्विवेउ ।
अणवेक्खिय लउड-पहारु लुद्धु तं वच्छ ! बिडालु व पियसि दुद्धु ॥२२५१॥

सिद्धंतु पढसु परमत्थं सुणसु चल-करणग्गाम-निरोहु कुणसु ।
मण-मक्कड-नियमण-संकलाओ परिभावसु बारस भावणाओ ॥२२५२॥

चलु जीविउ जोव्वणु धणु सरीरु जिंम कमल-दलग्ग-विलग्गु नीरु ।
सुविणिंदयालसमु पिय-पसंगु मा वच्छ ! कुणसु चारित्त-भंगु ॥२२५३॥

पिउ-माय-भाय-सुकलत्त-पुत्तु पहु परियणु मित्तु सणेह-जुत्तु ।
संपत्तइ मरणि न कोवि सरणु परिपालसु निच्चल-चित्तु चरणु ॥२२५४॥

राया वि रंकु सयणो वि सत्तु जणओ वि तणओ जणणि कलत्तु ।
भवरंगि नडु व बहुरूवु जंतु पेच्छेवि म मुज्झसु तवु वयंतु ॥२२५५॥

एकल्लउ[५८] पावइ जीवु जम्मु एकल्लउ[५९] मरइ विढत्त-कम्मु ।
एकल्लउ परभवि सहइ दुक्खु इय सुणिवि म वंछहि विसय-सुक्खु ॥२२५६॥

जहिं जीवह पउंजिअत्तु देहु तहिं किं न अन्नु धणु सयणु गेहु ।
इय जाणिवि गय-विसयाभिलासु तुहु वच्छ ! होहि संजमि दढासु ॥२२५७॥

वस-मंस-रुहिर-चम्मट्ठि-बद्ध नव-छिड्ड-झरंत-मलावणद्ध ।
असुइस्सरूव-नर-थी-सरीर परिभाविवि संजमु धरहि धीर ॥२२५८॥

मिच्छत्त-जोग-अविरइ-पमाय-मय-कोह-लोह-माया-कसाय ।
पावासव सव्वि वि परिहरेसु चारित्ति चित्तु निच्चलु करेसु ॥२२५९॥

जह मंदिरि रेणु तलाइ वारि पविसइ न वच्छ ढक्किय-दुवारि ।
पिहियासवि जीवि तहा न पावु इति चिंतिवि थिरु करि चरण-भावु ॥२२६०॥

परवसु अनाणु जं दुहु सहेइ तं जीवु कम्मु नणु निज्जरेइ ।
बहु खव्वइ जिइंदिउ तवु चरंतु इय चिंतिवि चिट्ठसु वउ धरंतु ॥२२६१॥

जहि जम्मणु मरणु न जीवि पत्तु तं नत्थि ठाणु बालग्गु मत्तु ।
उड्ढाहो चउदस रज्जु लोगि बुज्झंतु म मुज्झहि चरण-जोगि ॥२२६२॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सुह-कम्म-निउइण कहवि लद्ध विसयास करेविणु पुणवि रद्ध ।
जलनिहिभुय-रयणु व दुलह-बोहि चल-चित्तु समंजससि वच्छ ! होहि ॥२२६३॥

धम्मो त्ति कहंति जि पावु पाव ते कुगुरु मुणसु निद्दय-सहाव ।
पइं पुन्निहि दुल्लहु सुगुरु पत्तु तं मा चएसु तुहु विसयसत्तु ॥२२६४॥

तथा-

पैशाचिकमाख्यानं श्रुत्वा गोपायनं व कुलवध्वाः ।
संयमयोगैरात्मा निरन्तरं व्यावृतः कार्यः ॥२२६५॥

एवं पि पन्नविओ जाव न मेल्लइ विसय-वंछं ता सूरिणा वि दुवालस वासाणि धरिओ । पुन्नेसु तेसु गमणत्थं पुच्छिओ सूरी । पुणो कया धम्मकहा । न से परिणया । मुक्को गुरुणा । तओ अहो ! से कम्म-गरुयत्तणं जेण एत्तिएणावि कालेण नावगया विसय-तण्हा । ता जत्थ तत्थ वा कम्मयरो व्व मा किलिस्सउ त्ति चिंतिऊण कहिओ पुव्व-वुत्तंतो जणणीए । भणिओ य- वच्छ ! एयं पुव्वाणीयं मुद्दाए सह कंबल-रयणं घेत्तूण वच्चसु साकेए पुंडरीयराय-समीवं । तह त्ति पडिवज्जिऊण गहिय-दव्व-लिंगो कमेण पत्तो 'तत्थ पओस-समए । पच्चूसे नरनाहं पेच्छिस्सामि त्ति ठिओ जाणसालाए । अह रायसभाए पारद्धं पेच्छणयं । निसन्ना नरिंदाइणो । आढत्तो पुव्वरंगो । पणच्चिया नट्टिया । कोउहल्लेण गओ खुड्डओ, सव्व रायं(इं) च नच्चंतीए तीए आवज्जिया रायाइणो । विढत्तो साहु-सद्दो । अच्चंत-खिन्ना सा पभाए पयलाईउमारद्धा । तओ से जणणीए-'अव्वो ! तोसिओ रंगो । विढत्तो जसो । ता मा पयलायंती लोगाओ निंदं पावउ' त्ति नट्टियाए पडिबोहणत्थं पढिया एसा गीईया-

सुट्ठु गाईयं सुट्ठु वाईयं सुट्ठु नच्चियं सामसुंदरि ! ।
तुममणुपालिय दीह राइ आउ सुविणं ते मा पमायए ॥२२६६॥

इमं सोऊण पडिबुद्धा नट्टिया, इमे खुड्डयाइणो । तुट्ठेण खुड्डएण लक्खमोल्लं खित्तं कंबल-रयणं । जसभद्देण रायसुएण कुंडल-जुयलं । सिरिकंताए इब्भघरिणीए हारो । जयसंधिणा सचिवेण कडय-जुयं । कन्नवालेण मिंठेण अंकुसो । सव्वाणि वि लक्खमुल्लाणि ! अणुचिय-दाणओ य पुच्छियाणि रन्ना पभाए सव्वाणि । तओ खुड्डएण साहिओ पुव्व-वुत्तंतो जाव विसयाहिलासी पट्ठविओ तुज्झ समीवं जणणीए । इमं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

च सोच्चा पच्चागय-चरण-परिणामेण मए दिण्णं कंबल-रयणं ।

रन्ना बहुमन्निऊण भणिओ-गिण्हसु रज्जं, करेसु अंतेउरं, उवभुंजसु विसए, पच्छिम-वयम्मि करेज्ज पव्वज्जं ।

खुड्डएण भणियं-

जं चिर-कालं धरियं चिंतारयणं व चिंतियत्थकरं ।
विसय-तुस-भोयण-कए तं सीलं विक्किणेमि कहं ? ॥२२६७॥

रायसुओ जंपइ- 'अज्जं कल्लं वा तुमं वावाईऊण रज्जं गिण्हिस्सामि'त्ति कयसंकप्पो पडिबुद्धो अहं गीईयाए । रन्ना वुत्तं-अलं वियप्पेण । देमि ते रज्जं । सो वि न इच्छइ ।

सिरिकंता भणइ- बारस वरिसाणि पउत्थस्स पइणो अज्जं कल्लं वा पुरिसं पवेसेमि जाव इमाए गीईयाए पडिबोहिया । रन्ना वुत्तं-करेसु इच्छं । तीए वुत्तं-अलं एरिसीए इच्छाए ।

अमच्चो भणइ- अन्नेहिं नरिंदेहिं सह मिलामि त्ति चिंतयंतो गीईयाए पडिबुद्धो ।

मिंठो भणइ-पच्चंत-नरिंदेहिं भिन्नो हं जहा पट्टहत्थिं देसु मारेसु वा । तं च काउकामो गीईयं सुच्चा अलं मे इमिणा दुरज्झवसाएण त्ति पडिबुद्धो ।

पच्छा सव्वेसिं कया खुड्डएण धम्मदेसणा । संजाया चारित्त-परिणामाणि चत्तारि वि पव्वावियाणि, अन्ने य कया बहवे सावया । घेत्तूण ताणि गओ गुरु-सयासं खुड्डओ । कहिओ सव्व-वुत्तंतो गुरुणो । बहुमन्नियाणि सव्वाणि तेण । वेरग्ग-वसुल्लसिय-सुह-भावाणि ताणि पालिऊण अकलंकं सामन्नं काऊण तिव्वं तवं गयाणि देवलोगं कमेण मोक्खं पि । खुड्डगाईणं पुव्विं असुह-भावणा आसि, पच्छा वेरग्गोवगयाणं सुह-भावणा । जइ असुह-भावणाए ताणि पयट्टिंसु असुह-कज्जेसु तो असुह-कम्म-गलहत्थियाणि वच्चिंसु असुह-गइं । किंतु सुह-भावणाए काउं सव्वाणि सुह-समायारं सुह-कम्मवसेण गयाणि सुह-गइं खुड्डगाईणि ॥

• • •

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पाठांतर :

१. कंतमुकित्तिमइ मणहरा **पा.** ।। २ 'रायाहिव' **रा.** ।। ३. वुत्तं ल. रा. ४. 'ते वि.....निय-पहाणनरा ।' पाठ मात्र **द. पा.** मां. ५. रंजिज्जइ **पा.** ।। ६. गरुय. **पा.** ।। ७. चक्कम्मंति **पा.** ।। ८. सयल-भोगो **ल. रा.** ।। ९. सिद्विणो **ल. रा.** ।। १०. मुत्तूण **ल. रा.** ।। ११-१२-१३. सिट्टिणा **ल. रा.** ।। १४. पत्ता य **ल. रा.** ।। १५. पियस्स **द. पा.** ।। १६. 'मए....कुसुमाइं' पाठ मात्र **द. पा.** मां. १७. विम्हय **द.** ।। १८. पडिओ **पा.** ।। १९. खीणकवोला **ल. रा.** ।। २०. परिपालियस्स **द. पा.** ।। २१. एक्कं **ल. रा.** ।। २२. सा कयाइ **ल. रा.** ।। २३. अवहओ घरसारो **ल. रा.** ।। २४. मट्टिय-मयगला० ल.रा. ।। २५. चेव **ल. रा.** ।। २६. निम्माविओ **ल. रा.** ।। २७. छगलो **ल. रा.** ।। २८. पुरदेवयाए **ल. रा.** ।। २९. पत्तो **ल. रा.** ।। ३०. सेट्ठी **ल. रा.** ।। ३१. वंदणिज्जा **ल. रा.** ।। ३२. नग्गा सुग्गा **ल. रा.** ।। ३३. काही **पा.** ।। ३४. समणो **पा.** ।। ३५. सहस्सारे **ल.** ।। ३६. एयं **ल. रा.** ।। ३७. गुरूयं ल. रा. ३८. रज्ज-करणत्थं **ल. रा.** ।। ३९. गाथा २१४७ ल. रा. मां नथी. ४०. सिद्वि **ल. रा.** ।। ४१. वीसंभ-पणयणेणं **ल. रा.** ।। ४२. सत्थाह **ल. रा.** ।। ४३. कयाइ **ल.** ।। ४४. सुणिउ० **ल. रा.** ।। ४५. मुद्धाइ **पा.** ।। ४६. पुच्छियं **रा.** ।। ४७. वासाणि **ल. रा.** ।। ४८. एक्कल्लउ **द. ल.** ।।

• • •

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अट्ठमो पत्थावो

जो तिक्ख-दुक्ख-विसरुक्ख-बीयभूयं न वज्जए हिंसं ।
दाणाइं तस्स सव्वं पि निप्फलं कासकुसुमं व ॥२२६८॥

तिव्वं पि तवं नाणं पि निम्मलं दुक्करं पि चारित्तं ।
तुस-खंडणं व विहलं नरस्स हिंसासमेयस्स ॥२२६९॥

जो जीववह-निवित्तिं करेइ सो लंघिऊण वसणगणं ।
नर-सुर-सिव-सुक्खाइं पावइ देवप्पसाउ व्व ॥२२७०॥

[१. अहिंसायां देवप्रसाद कथा]

अत्थि इह जंबुदीवे भरहे पंचाल-विसय-अवयंसं ।
परचक्क-अकय-कंपं कंपिल्लं नाम वर-नयरं ॥२२७१॥

जत्थ मणिभवण-भित्तीसु पेच्छिउं अत्तणो वि पडिबिम्बं ।
पडिजुवइ-संकिरीओ कुप्पंति पिएसु मुद्धाओ ॥२२७२॥

अणुवत्तिय-नयधम्मो आजम्म-परोवयार-कयकम्मो ।
मयरद्धओ व्व रम्मो जयवम्मो नाम तत्थ निवो ॥२२७३॥

करिकुंभ-दलण-संसत्त-मुत्तिओ जस्स संगरे खग्गो ।
सत्तूण सग्ग-मग्गो व्व सहइ नक्खत्त-संकिन्नो ॥२२७४॥

मुद्ध-हसिएण जीए हसियं व जयम्मि लज्जियं अमयं ।
अप्पाणं न पयासइ जयावली तस्स सा देवी ॥२२७५॥

सो तीए सह विसय-सुहमणुहवंतो चिट्ठइ । अन्नया दिट्ठो देवीए सुविणगो- केणावि दुट्ठेण छिन्नं राइणो सिरं, तं च मउड-रयण-पज्जलंतं पडियं ममुच्छंगे, ससंभमाए मए उव्वाईयं । विउद्धा ससज्झसा देवी । मुणिया रन्ना, पुच्छिया- किमेयं ? त्ति । सोगेण रोविउं पवत्ता । समासासिया रन्ना । पुच्छिया अवसरे । साहियं जहट्ठियमिमीए । रन्ना भणियं- अलमेत्थ[१] सोगेण । मउडधरो ते महाराओ पुत्तो भविस्सइ । चिंतियं अणेण- ममावि आसन्न-मरणं इमिणा सुविणेण सुइज्जइ । तहावि ववसाओ चेव एत्थ जुत्तो

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

त्ति अइक्कंतो कोइ कालो। जाया आवन्नसत्ता महादेवी। इओ य सूरसेणो नाम गोत्तिओ पहाण-सामंते वसीकाऊण तेहिं समं समागंतूण नगर-रोहं करेइ। तओ रन्ना अप्पणो अवलुत्तं बुज्झिऊण खणाविया देवी-गिहाओ सुरंगा उम्मिट्टा मसाणे ठयाविया रन्ना दंसिया महादेवीए। भणिया य एसा-देवि! पबलो वेरी। विसमा कज्जगई। न नज्जइ किं पि होइ। ता कालं नाऊण एयाए तए गंतव्वं। पडिवन्नं देवीए। पत्तो वेला-मासो। पारद्धे परेण नगरभंगे जयवम्मो निग्गंतूण जुज्झिओ विवन्नो य। उद्धाईओ कलयलो। सुरंगाए नट्ठा देवी निग्गया मसाणे। भएण पसूया। जाओ से दारओ। निव-मुद्द-कंबल-रयण-वेढिओ मुक्को मसाणे। ठिया लयंतरिया देवी। इओ य तत्थ नयरे भद्दो सेट्ठी। तस्स सुभद्दा भज्जा। सा य निंदू। सिट्ठिणा आराहिया कुलदेवया। तीए तुट्ठाए वुत्तं- मयगब्भ-परिट्ठवणत्थं गओ जं दारयं पिच्छसि तं गिण्हिज्जसु त्ति। तत्थ-गएण गहिओ सिट्ठिणा। एयं दट्ठूण गया महादेवी।

खणमित्त-दिट्ठनट्ठा[१] रिद्धी सुमणोवलद्ध-रिद्धिं व्व।
अधुवो निय-निय-पुर-चलिय-पहिय-मेलो व्व पियमेलो ॥२२७६॥

अप्प-पर-समुत्थ-अवाय-लक्ख-मज्झम्मि वट्टमाणं जं।
तडिलय-ललियं व थिरं खणं पि जीयं तमच्छरियं ॥२२७७॥

चिंतयंती निव्वेएण जाया तावसी। इओ य सिट्ठिणा स-भज्जाए वि अणाविक्खिय-सब्भावं जीवइ चेव एसो त्ति समप्पिओ सुभद्दाए दारओ। अइक्कंतो मासो, कयं वद्धावणयं, देवया-पसाएण लद्धो त्ति तस्स दिन्नं देवप्पसाओ त्ति नामं। वड्ढिओ एसो देहोवचएणं कला-कलावेण य। पत्तो जोव्वणं। आगच्छंति तस्स सिट्ठि-कन्नगाओ। नाणुरूवाओ त्ति न इच्छइ ताओ सेट्ठी।

एत्थंतरे तत्थागओ नेमित्तिओ। कओ अणेण लोयाण पच्चओ। सुंदरो त्ति सुओ सूरसेणेण। सद्दाविओ सगोरवं। मुट्ठिभेयाईहिं नायं सुंदरत्तं। पुच्छिओ एगंते-किमेयं रज्जं मम वंस-पइट्ठं न व? त्ति। नेमित्तिगेण वुत्तं- न खेओ कायव्वो। सत्थ-परतंता अम्हे। रन्ना वुत्तं-को इत्थ अवसरो खेयस्स?। निमित्तगेण वुत्तं- जइ एवं ता न ते वंस-पइट्ठं ति। रन्ना वुत्तं- को उण एयं करस्सिइ?। नेमित्तिगेण भणियं-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जो ते अद्धमासेण गोउलं भिल्लेहिं हीरंतं रक्खिस्सइ, तहा ते पुत्ताण आणं न करिस्सइ, तहा रयणउर-सामिणो पुन्नचंदस्स धूयाओ परिणेस्सइ त्ति ।

एवमेयं ति अवधारिऊण भणिओ रन्ना नेमित्तिगो- नेयं अन्नस्स पुरओ जंपियव्वं । पडिवन्नमिणं तेण । पुज्जिओ एस रन्ना । निग्गओ रायकुलाओ पट्टणाओ य । पेसिया सूरसेणेण गोउलं निय-पुत्ता, भणिया य-मासं जाव तुब्भेहिं गोउलं रक्खियव्वं । गया ते अवन्नाए चेव अपरिवारा तत्थ । अद्धमासे गए पमत्ताण ताण हढं गोउलं भिल्लेहिं । सयण-विवाह-कज्जे गएण मग्गे हीरंतं दट्ठूण परक्कम-पहाणयाए नियत्तियं तं देवप्पसाएण । सुओ एस वुत्तंतो रन्ना । भद्दसेट्ठि-पुत्तो देवप्पसाओ रज्जधरो त्ति अवगयमेयस्स । निय-पुत्तेहिं नयरे काराविओ अगालूसवो । भमिओ पडहगो-'जो एत्थ तरुणो नीहरइ कीलिउं तस्स रायपुत्ता पसायं कुणंति, जो पुण एवं न करेइ तस्स न खमंति ।' एयं सोऊण निग्गया बहवे नायर-कुमारा । न निग्गओ देवप्पसाओ । भणिओ जणणि-जणएहिं-वच्छ ! निग्गच्छ, पेच्छ रायपुत्तूसवं । विसमं खु रायउलं । तेण भणियं-सीसं मे दुक्खइ । अओ परं न जंपियं नेहेण एएहिं ।

बीय-दियहे सुयं देवप्पसाएण जहा- रयणउरे नयरे पुन्नचंदस्स रन्नो धूयाओ लच्छिमइ-कंतिमइ-नामाओ गंधजुत्तीए अईव-कुसलाओ भणंति इमं-जो अम्हेहिं कयाणं गंधाणं विसेसं जाणेइ तं चेव परिणिस्सामो, न अन्नं पुरिसमेत्तं । पेसिया ते गंधा बहूणं रायपुत्ताणं । न नाओ य तेहिं ताण समं विसेसो य, ताओ न परिणिज्जंति । एय-वईयरेण दुक्खिओ राया, भमइ य तत्थ पइदिणं पडहगो-'जो एएसिं गंधाणं विसेसं जाणइ तस्स दिज्जंति एयाओ समं रज्ज-अद्धेण'। एयं सोऊण चिंतियं देवप्पसाएण- कहं मए तत्थ गंतव्वं ? ति चिंता-समागओ गओ उज्जाणे ।

एत्थंतरे ऊसवानीसरण-कुविएण रन्ना पेसिया पुरिसा । आगया ते । भणिओऽणेहिं सेट्ठी-कत्थ देवप्पसाओ राइसासणाइक्कमणकारी ? । दुट्ठो खु सो पावो, ता वावाइयव्वो त्ति आइट्ठा अम्हे देवेण सूरसेणेण । सिट्ठिणा वुत्तं-गओ सो कल्लं चेव माउलग-पाहुणो रयणउरं । एह अहं

Jain Education International　　For Private & Personal Use Only　　www.jainelibrary.org

चेव रायपासं गच्छामि । देवप्पसायस्स पासे माउलग-संदेसाओ तए इओ चेव रयणउरे गंतव्वं ति गहिय-सिक्खं पच्छन्न-पुरिसं पेसिऊण गओ सेट्ठी । कहियमिणमेव तेण रन्नो । न अन्नहा नेमित्तिय-वयणं ति चिंतियं रन्ना-'तहा वि सामग्गीई एत्थ उवाओ' त्ति भणिओ सेट्ठी- लहुं तं सुयं आणेहि त्ति । सिट्ठिणा वुत्तं-'जं देवो आणवेइ' त्ति । असंभंतो गओ सेट्ठी सगिहं । देवप्पसाओ वि अणुकूल-जणयाएस-तुट्ठ-चित्तो गओ रयणउरं । पविट्ठो बंधुदत्त-माम-गिहं । कयं उचिय-करणिज्जं । भणियमणेण-ममावि दंसेहि ते गंधे । मामगेण हक्कारिऊण गंध-चेडिं दरिसाविया ते देवप्पसायस्स । तेणावि सुहुम-परिक्खाए वियाणिया सम्मं निरूविऊण । भणियं च-एए एत्थ गंधा परिणया दव्वा वि निम्मविया महं तीए । एएण पुण पच्चग्ग-दव्वगया बालाए एगे पयट्टाविंति मंथरं, अन्ने पुण सिग्घं । परिभोग-जोग्गा पुण दुवे वि । गंध-चेडीए वुत्तं-को एत्थं पच्चओ ? । देवप्पसाएण वुत्तं-आणाविज्जंतु भमरा । आणाविया भमरा । मुक्का गयणाओ पढम[3] गंधा, पडिय-मित्ता गहिया भमरेहिं निलीणा परमलएण ते । मुक्का बिया[4] गंधा, निवडमाणा गहिया भमरेहिं । वियंभिया इओ तओ ते । को एत्थ भावत्थो ? त्ति पुच्छियं गंध-चेडीए । गभीरो मणोहरो य एयाहिं संभोगो त्ति साहियं देवप्पसाएण । पेसियाणेण एयासिं साहारण-दव्व-कया पडिगंधा । साहारणो एस अम्हाणं ति वियाणियमेयाहिं । उयार-वियक्खणो महाणुभावो त्ति जाओ एयाणमणुराओ ।

विन्नायमिणं रन्ना पुण्णचंदेण, चिंतियं च-धणवंतो वि एस वाणिओ, न य एवं उदार-विन्नाणवंतो वाणिओ होइ । न य मुद्ध-रायकन्नाणं अणभिजाए अणुराओ संभवइ । ता कहमेयं ? ति चिंतंतस्स पत्तो कंबल-रयणं जयवम्म-नाम-मुद्दं च घेत्तूण देवप्पसायस्स कित्तिम-मामगो बंधुदत्त-सिट्ठी । भणियं च णेण- देव ! समागओ मे भगिणिवइ-पेसिओ कंपिल्लपुराओ पुरिसो । कहियं च तेण-तत्थ सूरसेण-रन्ना विणा वि दोसं गहिओ ते भगिणीवइ । तेण य महावसण-संगएण विन्नत्तं-एस[5] देवप्पसाओ महाराय-जयवम्मावसाण-समए जयवम्म-नाम-मुद्दा-सणाहं कंबलरयण-संगओ देवयाप्पसाएण लद्धो मए मसाणे । नाम-मुद्दा-चिंधेण य जाणिओ एस महाराय-जयवम्म-सुओ त्ति । भएण य कस्सइ अकहिऊण संवड्ढिओ । न याणामि य एत्थ तत्तं । किंतु एओवरि

महतो निब्बंधो सूरसेणस्स । सो य तेण खिप्पमाणो कहवि वाजेण मए पेसिओ । ता एवंविहं एयं वत्थुं ति निवेईयं देवस्स । रक्खियव्वो पयत्तेण सूरसेणाओ एसो । एवं भणिऊण उवणीया नाम-मुद्दा कंबल-रयणं च ।

जयवम्म-पुत्तो मे भाइणिज्जो एसो त्ति तुट्ठो राया । सुट्ठु चिंतियं मए जं न एवं उदार-विन्नाण-वंतो वाणियगो होइ त्ति चिंतिऊण भणियं रन्ना- भो सिट्ठि ! संदिसह तस्स सिट्ठिणो जहा साहुकयं जमेवं एवंविहं वुत्तंतं जाणावियं । अलं च संपइ कुमारं पइ सूरसेण-संरंभेण । सव्वहा जम्ममोचियं तं अहमित्थ काहं ति सद्दाविओ देवप्पसाओ । दिट्ठो रन्ना । अणुहरइ जयवम्मस्स त्ति आणंदिओ राया । पयासियं जणे सव्वमेयं । दिन्नाओ कन्नगाओ । वत्तो वीवाहो ।

एत्थंतरे समागया सूरसेण-पेसिया अहिमरा कइवय-दिणेहिं । उज्जाणे गयस्स कुमारस्स मालागारच्छलेण ढुक्का एए । सूरसेणो कुद्धो त्ति आसन्ने जंपियमिमेहिं । कुमारो वि ढुक्को इमाणं । पाडिया एए । एसो वि लद्धो दाहिण-भुय-प्पहारेण । एयं सोऊण आगओ राया । अद्धवावाईया अहिमरा । किमेएहिं खुड्डेहिं वावाईएहिं ति वारिया कुमारेण । अभयं दाऊण पुट्ठा रन्ना- फुडं साहह केण पउत्ता तुब्भे ? त्ति । सूरसेणेण त्ति साहियं अहिमरेहिं । जणय-वेरिओ त्ति कुविओ कुमारो । विन्नत्तो णेण पुन्नचंदो-देहि मे विक्खेवं जेण निज्जाएमि जणय-वेरं । पुन्नचंदेण वुत्तं-सयमेव गच्छामि किमेत्थ विक्खेवेण । सोहण-दिणे निग्गओ राया । पत्तो अणवरय-पयाणेहिं कंपिल्लं । आसन्नेण भणिओ सूरसेणो-'रज्जं मोत्तूण धम्मं करेहि' त्ति । न इच्छियमिणं सूरसेणेण । जाओ संगामो । महाविमद्देण जिओ सूरसेणो । गाढप्पहार-पीडिओ मओ य । अंगीकयं रज्जं देवप्पसाएण । ठवियाओ पुव्व-नीईओ । आणंदियाओ पयाओ । वसीकया पच्चंत-सामंता । जाओ महाराओ देवप्पसाओ । सहावेण चेव दयावरो न हिंसए जीवे ।

अन्नया नयरस्स ईसाण-भाए उग्गमंत-रवि-सहस्स-पहाण-पुरो व्व भासुरो दिट्ठो उज्जोओ । रन्ना किमेयं ति जाणणत्थं पेसिओ पडिहारो । सो वि गंतूण आगओ साहेइ- देव ! अज्ज कुसुमकरंड-उज्जाणे दमसारस्स मुणिणो समुप्पन्नं केवलनाणं । अवयरिया तत्थ तियसा । एस ताण समुज्जोओ । पहाए तस्स केवलिणो चलणारविंद-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वंदणेण कयत्थमप्पाणं करिस्सं ति चिंतयंतस्स रन्नो पणट्ठा अविरइ व्व कसाय-पिसाय-पसर-विरयणी रयणी, वियलिओ मोह व्व हणिय-सम्मदिट्ठि-प्पयारो अंधयारो, वियसियं भविय-जण-मणं व पुव्व-बद्ध-विणिंत-पाव-पडल-भसलगणं कमलवणं, समुग्गओ विवेओ व्व पयासिय-सयल-पयत्थ-पूरो सूरो । तो

राया सिंधुरक्खंध-परिगओ धरिय-धवल-वर-छत्तो ।
चलिओ चलंत-सिर-चारु-चामरो अमरनाहो व्व ॥२२७८॥

गच्छंतेण य रन्ना दिट्ठो चलिउं पि अक्खमो खामो ।
वयण-विणिग्गय-दसणो मसिकसिणो सूण-कर-चलणो ॥२२७९॥

किमि-कुट्ठ-विणट्ठ-तणू भमडंत-असंख-मक्खिया-छन्नो ।
दमगो पहंमि एगो पच्चक्खो पाव-पुंजो व्व ॥२२८०॥

अह चिंतियं निवेणं फुरंत-कारुन्न-पुन्न-हियएणं ।
पुव्वभव-दुक्कय-फलं अणुभवइ अहो वराओ त्ति ॥२२८१॥

सो उज्जाणे पत्तो परिचत्त-समत्त-रायवर-चिंधो ।
सुर-कय-कमल-निसन्नं दमसारं नमइ केवलिणं ॥२२८२॥

उचियासणे निसन्नो पुच्छइ पह-दिट्ठ-दमग-पुव्वभवं ।
भयवं पि कहइ दिप्पंत-दंत-कंति-छुरिय-गयणो ॥२२८३॥

अत्थि धन्नउरं नयरं । तत्थ जयपालो राया । तत्थ दुवे कुलपुत्तया भायरो सामदेवो वामदेवो य । स-कम्म-निरया कालं गमिंति । अन्नया दुब्भिक्खे भणिओ सामदेवो वामदेवेण- भाय ! भोयणाभावाओ न नित्थरिज्जइ । ता पारद्धिं काऊण वित्तिं कप्पेमो त्ति गया अडविं । पारद्धा पारद्धीं । हरिणं दट्ठूण मुक्को सरो वामदेवेण । न लग्गो हरिणस्स । भवियव्वयावसेण निवडिओ विडवंतरियस्स काउस्सग्ग-ट्ठियस्स मुणिणो अग्गओ । सरं अन्नेसंतेहिं तेहिं दिट्ठो नासग्ग-निविट्ठ-दिट्ठी पलंबिय-बाहु-जुयलो अहोमुहु फुरंत-कर-नहं मऊह-रज्जूहिं नारय-नियरं उद्धरिउकामो मुणी । तओ सामदेवो सामवयणो 'अहो ! 'अकज्जं कयं । जइ जइणो सरो लग्गेज्ज तो नरएवि अम्ह ठाणं न होज्ज' त्ति भणंतो पणमिऊण मुणिं खामेइ । मुणी वि जोग्गयं नाऊण पारिय-काउस्सग्गो धम्मं कहेइ-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नरयपुर-सरल-सरणी अवाय-संघाय-वग्घवण-धरणी ।
नीसेस-दुक्ख-जणणी हिंसा जीवाण सुह-हणणी ॥२२८४॥

जो कुणइ परस्स दुहं पावइ तं चेव सो अणंत-गुणं ।
लब्भंति अंबयाइं न हु निंबतरुम्मि ववियम्मि ॥२२८५॥

जो जीव-वहं काउं करेइ खणमित्तमत्तणो तित्तिं ।
छेयण-भेयण-पमुहं नरय-दुहं सो चिरं सहइ ॥२२८६॥

जं दोहग्गमुदग्गं जं जण-लोयण-दुहावहं रूवं ।
जं अरस-सूल-खय-खास-सास-कुट्ठाइणो रोगा ॥२२८७॥

जं कन्न-नास-कर-चलण-कत्तणं जं च जीवियं तुच्छं ।
तं पुव्वारोविय-जीव-दुक्ख-रुक्खस्स फुरइ फलं ॥२२८८॥

भवजलहि-तरी-तुल्लं महल्ल-कल्लाण-दुम-अमय-कुल्लं ।
संजणिय-सग्ग-सिव-सुक्ख-समुदयं कुणह जीवदयं ॥२२८९॥

इय सोउं पडिबुद्धेण सामदेवेण गरुय-सद्धाए ।
गहिया गुरु-पासे निरवराही-जीवस्स वह-विरई ॥२२९०॥

मुणिणा वुत्तं- सम्मं पालिज्जसु जेण नियम-भंगम्मि ।
होइ गरुओ अणत्थो एत्थ य कुंदो उदाहरणं ॥२२९१॥

तहाहि-

अत्थि सुरट्ठा-विसए अणुमंजी पुरवरी सुरपुरि व्व ।
जीए सुपव्व-कलिया मणिमय-निलया विमाण व्व ॥२२९२॥

तीए य कुंदो कम्मयरो । भज्जा से मंजरिया । सो य पयइभद्दओ विणीओ । अन्नया समागओ तत्थ मेहघोसो आयरिओ । ठिओ विवित्ते काणणे । कट्ठाइ-निमित्तं वच्चंते दिट्ठो कुंदेण । 'अहो ! धन्नो' त्ति बहुमन्निओ अणेण । भत्तीए इंत-जंतो पिच्छइ तयं । भव्वो त्ति कया से गुरुणा धम्मदेसणा । पडिबुद्धो एसो । 'गिण्हामि किंचि वयं'ति चिंतियमणेण । गहिया मज्ज-मंस-विरई । गओ स-गिहं । आगओ से सालगो पाहुणगो । कयं मंजरीए पाहुन्नगं । रद्धं मंसाइं । उवविट्ठा दो वि भुत्तुं । अद्ध-परिविट्ठं मंसं पडिसिद्धं कुंदेण । 'सालगो

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वि न गिण्हिस्सइ' त्ति बला दिन्नं मंजरीए। तदुवरोहेण च ओहय-मण-संकप्पेण भक्खियं कुंदेण। जाओ से अणुतावो। निसाए नीससंतो भणिओ मंजरीए- किमेवं नीससरिस ?। साहिओ अणेण वुत्तंतो। 'वय- भंगो कओ' त्ति महंतो मे संतावो त्ति उव्विग्गा से भज्जा वि। भणियं तीए- कीस तए एयं मे न कहियं ?। अहं पि पावे पाडियम्हि। गोसे पुच्छिऊण गुरुं जमेत्थ जुत्तं तं करिस्सामो। किमेइणा नीससिएण ?। जुत्तमेयं ति चिंतियं कुंदेण। पहाया रयणी। लज्जा-पराहीणो वि नीओ एस गुरु-सगासं भज्जाए। वंदिऊण गुरुं लज्जेण उ चिट्ठई। तओ गुरुणा भणिओ- कीस तुमं एवं ? ति। तेण वुत्तं- भयवं ! पावो अहं। न जुत्तं मे संभासणं। गुरुणा वुत्तं- कीस ? त्ति। भज्जाए साहिओ वुत्तंतो। गुरुणा चिंतियं- सोहणाणि एयाणि जेसिं ईइसो परिणामो। भणियं चालं एत्थ उव्वेएण। किं तुट्टो वितंनू न संधिज्जइ ?। किं असुइ-विलित्तो पाओ न धुव्वइ ?। तुज्झं पि अभाव-दोसओ अप्पो बंधो। इच्चाइ कया एएसिं धम्म-देसणा। संविग्गाणि दुवे वि। गहिया दोहिं पि मज्ज-मंस-विरई। परिवालिया भावओ। अहाउयक्खएण मओ कुंदो। समुप्पन्नो 'सिरिकंठ-विसए जयंतीए नयरीए कुरुचंदस्स रन्नो मंगलाए महादेवीए पुत्तत्तेणं। दिट्ठो अणाए सुविणयम्मि तीए चेव रयणीए रायहंसो वयणे पविसमाणो। सुह-विउद्धाए साहिओ जहा-विहिं रन्नो। भणिया तेण-सुंदरि ! रायहंसो ते पुत्तो भविस्सइ। पडिस्सुयमिमीए। परितुट्ठा चित्तेण। अइक्कंतो कोइ कालो। जाओ से दोहलो-'करेमि जिणमुणि-पडिवत्तिं।' संपाडिओ से रन्ना। पसूया एसा। जाओ दारगो। कयं वद्धावणयं। समए पइट्ठियं नामं दारगस्स सुविणाणुसारेण रायहंसो त्ति। समाइट्ठं महारज्जं नेमित्तिगेण। अइक्कंतो कोइ कालो। जाव चेव न जोव्वणं पावइ ताव मरणपज्जवसाणयाए जीवलोगस्स मओ से पिया। अणुगमिओ मंगलाए। बालो रायहंसो त्ति ठिओ रज्जम्मि एयस्स चुल्लबप्पो सिरिचंदो। कओ तेण एसो जुवराओ। इओ य वय-भंग-कम्म-दोसेण मम पुत्तस्स रज्ज-परिपंथी एसो त्ति जाओ चुल्लबप्प-घरिणीए रज्जादेवीए रायहंसम्मि कोवो। दिन्नं कम्मणं। अचिरेण गहिओ एस जलोयर-वाहिणा। उम्माहिओ राया। पारद्धो किरिया-कम्मो। न य

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वाही नियत्तइ । अह सत्तुणा पच्चंत-विसओ हओ त्ति गओ धाडीए राया । दुग्ग-भूमिबलेण न सो जिप्पइ त्ति जाओ तत्थेव निग्गहो । एत्थंतरे देवी-भावन्नुणा परिहूओ एस परियणेण । न से को वि किंचि वि करेइ । चिंतियं अणेण- मम घरं चेव विदेसो ता वरं सो चेव विदेसो त्ति छिड्डेण निग्गओ रायगेहाओ नगरीओ य । महया किलेसेण गामाओ गामं भमंतो गओ उज्जेणीए । तत्थ अईव घत्थो वाहिणा परिसक्किउं पि न सक्कइ । ठिओ देवउले । तत्थ लोओ दयाए देइ मंडगाइ । एवं महाकिलेसेण अइक्कंतो कोइ कालो ।

सा वि पुव्व-जम्म-घरिणी मंजरी अहाउयक्खएण मया समाणी समुप्पन्ना इमीए चेव उज्जेणीए महासेणस्स रन्नो सेणाए महादेवीए देइणि त्ति धूया । इमीए वि वियंभिओ वयभंग-कम्म-दोसो । दंतुब्भेय-काले गहिया अंबा रेवईहिं दढं । कयाइं उचिय-विहाणाइं । तहावि न से दुक्खक्खओ जायइ । एवं दुक्ख-पीडियाए जाओ जोव्वण-समओ । एत्थंतरे सयमेव मुक्का मणागं वाहिणा । तओ मायाए अहियं पसाहिया रायउले रमंती चिट्ठइ । ईओ य राया महासेणो सेवग-जणं पुच्छइ-कस्स पुन्नेहिं रिद्धिं तुब्भे विलसह ? । ते वि भणंति-देव ! तुम्ह पुन्नेहिं । तओ संपूईय विसज्जेइ राया । अन्नया दिट्ठमिणं देइणीए । हसिऊण भणियमणाए-अहो ! तायस्स मुद्धया, जो एवमेएहिं विप्पयारीयइ । सुयमेयं माइ-सवत्ति-चेडीए । भणियं अणाए-सामिणि ! का एत्थ विप्पयारणा ? किं न एवमेयं ? ति । देइणीए भणियं- न पर-पुन्नेहिं कोवि सिरिं भुंजइ त्ति परमत्थो । कहियमिणं चेडीए रन्नो । कुविओ राया । सद्दाविया देइणी । भणियाऽणेण- कस्स पुन्नेहिं तुह एसा सिरी ? । तीए वुत्तं-ताय ! परमत्थओ अप्प-पुन्नेहिं । जओ सव्वे पाणिणो स-कयाणि सुकड-दुक्कडाणि भुंजंति, निमित्तमित्तं चेव एत्थ परो त्ति । एयं सोऊण अहियं कुविओ राया । सद्दावियाऽणेण दंडवासिया, भणिया य सगोरवं- भो ! जो कोइ तुब्भेहिं दिट्ठो एत्थ नयरीए अच्चंत-दुक्खिओ सत्तो तमित्थ सिग्घं आणवेह । तेहिं वुत्तं- जं देवो आणवेइ । न अन्नो इओ वि दुक्खिओ त्ति आणिओ रायहंसो । दंसिओ रन्ना । भणियं अणेण- अहो ! जहिच्छिओ एसो । अवन्नाए दंडि-खंडं परिहाविऊण परिणाविओ देइणिमाणत्तो य समं तीए निव्विसओ । विसेसेण वुत्ता देइणी- माणेसु अप्प-पुन्नाइं । तीए वुत्तं- जं तुमं आणवेसि । किलेसेण निग्गयाणि नगरीओ । मिलियाणि

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उत्तरावहगामि-सत्थेहिं । दिट्ठो देइणीए सत्थवइ। कहिओ से वुत्तंतो, भणिओ य सबहुमाणं- जाव ताय-संतिगं विसयं उत्तरामो ताव तए नेयव्वो एस मे भत्तारो । पडिवन्नं सत्थवाहेण । समप्पिओ से महिसगो । कमेण पत्ताणि अन्न-रट्ठं । आवासिओ सत्थो अडवीए । देइणी वि भत्तारं गिण्हिऊण ठिया तयासन्ने भूयमाया-पीढे । कओ तीए तरु-पल्लवेहिं सत्थरो, नुवन्नो तत्थ एसो । समागया से निद्दा । देइणी वि सीसं से कुरुमालंती चिट्ठइ ।

इओ य जा पुव्वं कुमार-माया मंगलादेवी कुरुचंद-मरणे मया समाणी तद्देसे वंतरी समुप्पन्ना । तीए दिट्ठो रायहंसो पच्चभिन्नाओ य । तओ दिव्व-सत्तीए विउव्वियं इंदजालं, वम्मियाओ उट्ठिओ सप्पो । भणियं अणेण- अरे ! दुरप्प सप्प ! कीस तए एस रायपुत्तो विणासिओ ? नत्थि कोइ इत्थ जो एयस्स राईगाओ पीसिऊण तक्केणं देइ । एवं सोऊण तम्मुहट्ठिएण भणियं सेय-सप्पेण- अरे किण्ह सप्प ! कीस तए एयं अहिट्ठियं दव्वं ? । नत्थि एत्थ कोइ जो एयं खणिऊण लेइ । सुयमिणं देइणीए । रायउत्तो एसो त्ति हरिसिया एसा । चिंतियं अणाए-अहो ! सच्चमेयं-

परस्परं च मर्म्माणि ये न रक्षंति मानवाः ।
त एव निधनं यान्ति वाल्मीकोदरसर्प्पवत् ।।२२१३।।

ता मए लद्धो रोगक्खओवाओ । वोलीणाणि अम्हे ताय-विसयं । ता एत्थेव कहिंचि करेमि किरियं एयस्स । अन्नेसमाणीए गामाइ दिट्ठमासन्नमेव गोउलं । अब्भत्थिओ तस्स सामी एय वईयरे । पडिवन्नमणेण गहिया य धूय त्ति देइणी । पुच्छिऊण सत्थवाहं ठिया एसा गोउले । पारद्धो किरिया-कम्मो । थेव-कालेणेव पउणो रायहंसो विज्जाहरो विव अन्नो चेव संवुत्तो । अहो ! एस पावक्खओ त्ति तुट्ठा देइणी । अइक्कंता कइ वि दियहा विसिट्ठ-गोरसाहारेण । को कत्थ तुमं ? त्ति पत्थावेण पुच्छिओ देइणीए । साहिओ अणेण सब्भावो । चिंतियं देइणीए- अणुकूलो संपयं एयस्स विहि त्ति जुत्तं सदेस-गमणं । भणिओ य एसो- कुलहरं ते वच्चऽम्ह । तेण भणियं- एवं करेमो किंतु गोउलवइणो अणुवगरिए न गमणं जुत्तं । देइणीए चिंतियं- महासत्तो एसो । भवियव्वमेयस्स संपयाए। साहिओ से निहि-वइयरो । खणिऊणं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दिन्नं दविणं गोउलवइणो । कमेण पत्तो जयंतीए । ठिओ आरामे सहयार-छायाए । आगया से निद्दा ।

एत्थंतरे अपुत्तो मओ राया सिरिचंदो । अहिवासियाणि दिव्वाणि, निग्गयाणि नगरीओ, गयाणि जत्थ रायहंसो । दिट्ठो अपरियट्टंतीए सहयारच्छायाए । एसो पडिवन्नो दिव्वेहिं, पमोएण पवेसिओ नयरीए । कओ से रायाभिसेओ । पुन्न-बलेण मणोरमो सामंताईण । अइक्कंतो कोइ कालो । जयंतीए नवो राय त्ति सुयमिणं महासेणेण । पेसिओ से दूओ-'सिग्घं रायाणं धणभंडारं पेसिऊण मम भिच्चो होहि जुज्झासत्तो वा होसु' त्ति गओ दूओ । भणिओ अणेण जहाइट्ठं रायहंसो । पडिभणियमणेण-गुरूओ तुह सामी । अओ न किंचि अहं पढमं करेमि, पारद्धे उण विग्गहे तक्कालोचियं अवुत्तो चेव करिस्सामि त्ति विसज्जिओ दूओ । पत्तो एस उज्जेणिं । निवेईयमिणं महासेणस्स । कुविओ एस । तद्दियहे चेव निग्गओ उज्जेणीओ । पयट्टो अणवरय-पयाणएहिं । सुयमिणं निउत्त-पुरिसेहिंतो देइणीए । निवेइयं रन्नो रायहंसस्स । भणिओ य एसो-संदेसगाणुरूवं करेहि । देहि तुमं पि तदभिमुहं पयाणयं । रायहंसेण वुत्तं-जुत्तमेयं । समालोचियं समं सामंताईहिं । विग्गह-विहाणेण निग्गओ रायहंसो दुगुण-प्पयाणगेहिं । लंघिऊण सविसय-संधिं मिलिओ महासेण-कडगस्स बीय-दियहे चेव । पवत्तमाओहणं । महया विमद्देण जिओ महासेणो, पाडिऊण बद्धो य । सद्दावियाऽणेण देइणी, भणिया य-किमित्थ जुत्तं ? ति । तीए भणियं-संपूईऊण विसज्जणं सज्जणस्स । 'एवं' ति पडिवन्नं रन्ना । सयमेव भग्गा प्पहारा, बद्धा वण-पट्टगा ।

एत्थंतरे समागया देइणी । चलणेसु निवडिऊण भणिओ राया-ताय ! तुज्झ आसीसाए एसा अहं माणेमि अप्प-पुन्नाइं । देइणि त्ति पच्चभिन्नाया रन्ना । 'जस्स मए एसा दिन्ना तं मोत्तूण अन्नो इमीए पई कओ' त्ति लज्जिओ राया । तस्स भावं नाऊण कहिओ सव्व-वुत्तंतो देइणीए । एस कुरुचंद-पुत्तो रायहंसो, एसा वि महासेण-धूय त्ति हरिसिया सामंताइणो । अहो ! मए न सोहणमणुचिट्ठियं ति विलिओ महासेणो । एवमेयं सव्वो अप्प-पुन्नाइं माणइ त्ति जंपियमणेण । पउणवणो विसज्जिओ महासेणो । भणियमणेण-गच्छामि अहं वणं, मम

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पुत्ता पुण ते भिच्च त्ति । एवं जाया अणेग-मंडल-सिद्धी । रायाहिराओ संवुत्तो । जाओ देइणीए जोग-पुत्तो । दिन्नं तस्स रायमयंको त्ति नामं। कयाइ जाया इमस्स चिंता-कस्स पुण कम्मुणो एस विवागो ? त्ति ।

एत्थंतरे मुणिय-तप्पडिबोह-समओ समागओ भयवं चउनाणी नाणभाणू आयरिओ । ठिओ जयंती-भूसणे तिलउज्जाणे । निवेईओ रन्नो पुरोहिएण । समं देइणीए गओ तत्थ राया । सुओ तदंतिगे धम्मो । परिणओ पुव्व-पओगेण । पुच्छियं जम्मंतर-कयं सुह-दुक्ख-निमित्तं । साहियं गुरुणा । जायं जाईसरणं । एवमेयं ति साहियं परियणस्स । पडिबुद्धो बहुजणो वयभंग-विवाय-सवणेण । जाया सिद्धंत-सवणेच्छा । गहियाइं अणुव्वयाइं । काराविया धम्माहिगारा । बहुय-कालमणुपालिय सावगत्तं, दाऊण पुत्तस्स रज्जं, पव्वइओ रायहंसो समं देइणीए पहाण-परियणेण य । पालिउं सामन्नं काऊण कालमासे कालं गओ बंभलोए, कमेण सिद्धो य ।

एवं वयभंग-विवागं सोऊण सामदेवेण वुत्तं- भयवं ! पाणप्पणासे वि नाहं वयभंगं काहं ति कय-निच्छओ गओ गिहं । वामदेवो उण कम्मदोसओ अपडिवन्न-गुरुय-वयणो पयट्टो पाणिवहे । भक्खए मंसं । तं तहाविहं दट्ठूण ठिओ भिन्नो सामदेवो । कुविओ तदुवरिं वामदेवो । पत्तो पारद्धिपियस्स जयपालस्स रन्नो समीवं । पन्नत्तोऽणेण राया-देव ! सामदेवो इमं भणइ-'जो पारद्धिं करेइ सो पावो' त्ति । तओ कुद्धो राया। हक्कारिओ सामदेवो । नीओ पारद्धिट्ठाणे[1] । वुत्तो रन्ना-जइ पारद्धिं करेसि ता ते पसायं करेमि । सामदेवेण वुत्तं-जो पाणिवहेण होइ तेण पज्जत्तं पसाएण । रन्ना वुत्तं-अप्पेह पहरणं । जइ न पहरइ हरिणाइणो तो एसेव हणियव्वो । तहेव कए निउत्तेहिं जाव पहणिज्जंतो वि न पहरए सामदेवो ताव चिंतियं रन्ना-न एस लोभेण भएण वा जीवे वहेइ ता सोहणो अंगरक्खो होइ त्ति कओ अंगरक्खो । कमेण तेण राया वि गाहिओ जीव-वह-विरइं । एवं पालिऊण निरईयारं गहियवयं सामदेवो मओ, गओ सोहम्मं । वामदेवेण वि कया वि पारद्धिगएण हओ निरवराहो वराहो सरेण । सो वि रोसारुणो धाविऊण अभिमुहं चंदकला-कुडिलाहिं दाढाहिं छिंदए तस्स जंघाओ, पडियस्स य फालए पोट्टं । तओ वामदेवो रुद्दज्झाणोवगओ मओ, गओ पढमं नरयं । सामदेव-जीवो य

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सुरलोयाओ चुओ समुप्पन्नो तुमं महाराओ । वामदेव-जीवो य नरयाओ उवट्टिऊण जाओ एस दमगो । अओ चेव इमं दट्ठूण ते समुप्पन्नो मणागं सिणेहो । अच्चुक्कडयाए य पावकम्मस्स न कओ कोइ एयस्स उवयारो । पावप्पभावेण य भमिस्सइ एस दीहं संसारं ।

तुमए उण पुव्व-भवे जं विहिया थूल-जीववह-विरई ।
तं वसण-सयाइं तुमं विलंघिउं रज्जमणुपत्तो ॥२२९४॥

ता जाय-जाइसरणो राया जंपइ मुणिंद ! जं तुमए ।
अक्खायं तं सच्चं पच्चक्खं मज्झ संजायं ॥२२९५॥

संपइ पसीय भयवं ! पयच्छ मे सव्व-जीव-वह-विरइं ।
गुरुणा भणियं-सावय ! सा वय-गहणेण संभवइ ॥२२९६॥

रन्ना भणियं-तं पि हु गिण्हिस्सं रज्ज-सुत्थयं काउं ।
तत्तो जयस्स रज्जं दाउं विजयस्स जुवरज्जं ॥२२९७॥

गिण्हइ सयं राया दिक्खं दमसार-केवलि-सयासे ।
कय-तिव्व-तवो पत्तो सग्गं च कमेण मोक्खं च ॥२२९८॥

हिंसं परिच्चयंतो जो न अलियं विवज्जए जीवो ।
सो दोत्तडीए नट्ठो निवडइ वग्घस्स मुह-कुहरे ॥२२९९॥

भुयगो व्व अलियवाई होइ अवीसासभायणं भुवणे ।
पावइ अकित्ति-पसरं जणयाण वि जणइ संतावं ॥२३००॥

सच्चेण फुरइ कित्ती सच्चेण जणम्मि होइ वीसासो ।
सग्गापवग्ग-सुहसंपयाओ जायंति सच्चेण ॥२३०१॥

सच्चवसेणं तियसा आणाए किंकर व्व वट्टंति ।
लिप्पघडिय व्व न कमंति मत्त-करि-केसरि-प्पमुहा ॥२३०२॥

जायइ सिल व्व सरिया पंकय-पत्तं व पहरणं होइ ।
न दहइ जलं व जलणो न दसइ रज्जु व्व करिसणाही ॥२३०३॥

सच्चाणुभाव जा ओहिनाण-विन्नाय-ववहियत्थ-गणो ।
जायइ जणस्स पुज्जो अकुलो वि कुलाल-सद्दो व्व ॥२३०४॥

तथाहि-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२. सत्ये कुलाल कथा]

इह जंबुद्दीव-भरहम्मि अंग-जणवय-वयंस-संकासा ।
परचक्क-अकय-कंपा चंपा नामेण अत्थि पुरी ॥२३०५॥

भावि सिरि-वासुपुज्जुप्पत्तिं नाउं व जत्थ भीएहिं ।
न कयं कयावि दुब्भिक्ख-मारि-डमराईएहिं पयं ॥२३०६॥

तत्थ य राया अरिराय-चंपओ रायचंपओ नाम ।
छज्जइ भुय-खंभे जस्स जयसिरी सालभंजि व्व ॥२३०७॥

सोहग्ग-हत्थिसाला दुत्थिय-जण-दुक्ख-रुक्ख-दवजाला ।
ससि-विमल-गुण-विसाला चंपयमाला पिया तस्स ॥२३०८॥

कन्ना पंकयनयणा ससिवयणा ताण कुंदसम-रयणा ।
वित्थरिय-विणय-रयणा वर-गुण-रयणा रयणमाला ॥२३०९॥

तीए [10]लायन्न-तरंगिणीए विलसंत-नयण-कमलाए ।
कीलइ मयणो तिहुयण-विजय-परिस्सम-पसमणत्थं ॥२३१०॥

तीए य सयल-कला-कोसल्ल-कोस-तुल्लाए विसेसओ कव्व-विणोय-पत्त-पगरिसाए चिंतियं-

अवियड्ढ-पई पोढंगणाण गुणियाण निग्गुणो सामी ।
चाईण य दालिद्दं तिन्नि वि गुरुयाइं दुक्खाइं ॥२३११॥

ता जो कव्व-विणोएण मे मणं हरिस्सइ सो मए परिणेयव्वो ति कया पइन्ना । विन्नाय-वुत्तंतेण पिउणा कओ सयंवर-मंडवो । आगया कलाकलाव-कुसला बहवे रायपुत्ता, निसन्ना सयंवर-मंडवे । निविट्ठो राया सहा-नायगो । ठिया पहाण-बुहा । संपत्ता कंति-कडप्पेण पयासयंती सयल-दिसाओ रयणमाल व्व रयणमाला । निविट्ठा पिउ-पायवीढे । पढिया तीए गूढ-चउत्थ-पाया गाहा जहा-

जं कय-भुवणाणंदं समुद्द-महणम्मि देव-विंदम्मि ।
अमयमुल्लसियं तं [वल्लह-मुह-दंसणं अमयं] ॥२३११॥

जाणह मुद्धमयं ।

एवं पढिऊण भणिया रायपुत्ता- लहेह चउत्थ-पायं । ते वि य निय-मइ-विहवाणुरूवं परिभाविउं पवत्ता । कोसंबी-सामिणो विजयवम्मुणो

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नंदणेण सिरिनंदणेण लहिऊण पाढियं जहा-'वल्लह-मुह-दंसणं अमयं।'

भणियं बुहेहिं-अहो ! लहण-वेगो कुमारस्स सिरिनंदणस्स । रंजिया रयणमाला । भणियमणाए-कुमार ! तुमं पढसु । तेणावि पढियं-

निःसीम-कान्ति-सलिला वर-नयनोत्पल-विलास-रमणीया ।
हसिता ननराजी(वनराजी) वा,........... ॥२३१३॥

एवं पढिऊण भणियं-'लहेसु चउत्थ-पायं ।'

तीए वि लहिऊण भणियं-'सरसीव मनो हरति बाला' ।

भणियं सहासएहिं-अहो ! कुमरीए मइ पगरिसो ।

पुणो पढियं कुमारीए पसिणुत्तरं-

पृच्छत्युज्ज्वलदशना प्रमोदिताः शौर्य-विनय-मुख्य-गुणैः ।
राजानः किं कुर्वंत्यनुजीविजनाय ? ॥
सिरिनंदणेण भणियं-'कुं ददति'। कुं पृथ्वीं ददति ॥२३१४॥

तेणावि पढियं पसिणोत्तरं ।

किं सर्प्पास्पदमायुधं ? मुसलिनः किं दुर्ल्लभं ?
किं निधेर्वाराकं निगदंति ? कर्दम-रुचिं खादंति किं, निर्घुणाः ? ।
किं सौभाग्यतरं, तरोरकुशलं कं वक्तुमाचक्षते ?,
सच्छिद्रं तृणभेदमाहुरिह किं साधुं विदुः कीदृशम् ? ॥२३१५॥
[अष्टदल कमल जातिः ।]

रायपुत्तीए परिभाविऊण भणियं-'**विहतकोपदवानलं**' ।

सहासएहिं भणियं-अहो ! दुण्हं पि करण-भेयण-कुसलया । सहानायगेण भणियं-जुत्तो एयाणं संबंधो । कस्स वा नाभिमया पूगपायवमारुहंती नागवल्ली ? । रन्ना दिन्ना सिरिनंदणस्स रयणमाला । वत्तो वीवाहो । संपूईऊण विसज्जिया सेस-रायपुत्ता । धरिओ य सिरिनंदण-कुमारो सगोरवं रन्ना । तया य गिम्ह-समओ-

जहिं दुट्ठ-नरिंदु व सयल-भुवणु
परिपीडइ तिव्व-करेहिं तवणु ।
जहिं दूहव-महिल व्व जण-समग्ग
संतावइ लूय सरीर-लग्ग ॥२३१६॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जहिं तण्हा-तरलिय-पहिव हंत
अणुसरहिं सरस पेम्व जेम्व कंत ।
जहिं चंदणु चंदु जलद्दहारु
सज्जणु व दिंति आणंदु फारु ॥२३१७॥

जहिं सेवहिं धारा जंतु नीरु
जण सिसिरु नाइ कामिणि-सरीरु ।
जहिं दक्खा वाणय पियहिं महुरु
गुरु-वयण नाइ भवताव-विहुरु ॥२३१८॥

जहिं नियय-कडक्ख-समुज्जलेण
घणसार-सार-चंदण-जलेण ।
सिच्चंतउ तरुणिहिं तरुण-लोउ
संताव-चत्तु पावइ पमोउ ॥२३१९॥

तत्थ गिम्हे गओ कीलणत्थं पमयवणं सिरिनंदण-कुमारो समं रयणमालाए । सा य कीला-पमत्ता छलन्नेसिए गहिया खुद्ददेवयाए परसु-निकिन्न-चंपयलय व्व पडिया महीवट्ठे । सित्ता खिरिखंडजलेणं तप्परिमल-लुद्धा इव गाढयरमहिट्ठिया तीए निरुद्धा वाणी । तओ लिप्पमइय व्व निप्फंद-नयणा न किंचि जंपइ । नीया राय-भवणं । नाय-वुत्तंतेहिं जणणि-जणएहिं आहूया वेज्जा मंतवाइणो य । पउत्तो तेहिं विविहोवयारो । न जाओ कोवि विसेसो । विसन्ना जणणि-जणया रोविउं पयत्ता-

हा वच्छे ! सयल-कला-कलाव-कोसल्ल-भूसिय-सरीरे ।
पत्तासि दिव्ववसओ कहमिण्हिं एरिसं वसणं ? ॥२३२०॥

अमयं पि जस्स पुरओ न चेव महुरत्तणेण हरइ मणं ।
तं जायमम्ह दुलहं तुह वयण-विणिग्गयं वयणं ॥२३२१॥

पत्तासि जयवडायं अखलिय-पसरेण जेण बुह-मज्झे ।
तं कइया तुह वयणं कय-सवण-सुहं सुणिस्सामो ॥२३२२॥

रायाणं तहाविहं दट्ठूण भणियं मंतिणा- देव ! आसन्नेसु सीमग्गामे अत्थि गुणनिप्फन्न-नामो सच्चपालो नाम कुलालो । तस्स य सच्च-वयण-पयंपणाणुभावेण समुप्पन्नमोहिनाणं । सो य तेण नाणेण नाणाविहं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

छिंदेइ संदेहे । ता सो पुच्छिज्जउ रयणमालाए वाहि-विगमोवायं । रन्ना वुत्तं-सद्दावेहि तं । मंतिणा भणियं- निरीहत्तणेण न सो कस्सइ समीवमुवेइ। अइसय-नाणत्तणेण पूयारिहो सो, अओ तत्थ गम्मउ । तओ धूयं घेत्तूण चंपयमाला-संगओ गओ तत्थ राया । कय-पडिवत्ती निविट्ठो तस्स पुरओ । एत्थंतरे तिव्व-तव-सुसिय-देहो जड-मउड-धरो समागओ तत्थ एक्को रिसी । कुलालेण भासिओ-भद्द ! तुह कुसलं ? ।

"विमलवईए इह पेसिओ सि तुह तव-अदड्ड-देहाए ।
जं पभणसि तं सच्चं ति जंपए पंजली जडिलो ॥२३२३॥

अह विम्हय-रसवसओ नरेसरो जंपए किमेयं ति ।
तो साहए कुलालो मूलाओ जडिल-वुत्तंतं ॥२३२४॥

विंझाडवीए मज्झे संडिल्लो तावसो तवं तवइ ।
कइया वि इमस्स सिरे विहिया विट्ठा सउलियाए ॥२३२५॥

सा कोव-परवसेणं इमिणा हुंकारमित्तओ दड्डा ।
नाउं तं निय-सत्तिं तुट्ठो पत्तो य तिउरिपुरिं ॥२३२६॥

भिक्खा-कए पविट्ठो भवणे धणदेव-पवर-सड्ढस्स ।
तस्स जिण-धम्म-निरया घरिणी विमला विमलसीला ॥२३२७॥

घरकम्म-वावडाए चिरेण भिक्खा इमीए उवणीया ।
तद्दहणत्थं मुक्को उ इमिणा कुविएण हुंकारो ॥२३२८॥

हसिऊण भणइ विमला- महरिसि ! ना हं खु सउणिया होमि ।
विंझाडवीए दड्डा जा तुह हुंकारमेत्तेण ॥२३२९॥

तो तावसेण भणियं- भद्दे ! जाणसि तुमं कहं एयं ? ।
तीए वुत्तं- कहिही सुसीमगामे तुह कुलालो ॥२३३०॥

तो आगओ "इहेसो नरिंद विमलाइ विमल-सीलेण ।
संजायमवहिनाणं ममावि सच्चप्पभावेण ॥२३३१॥

नाणेण तेण" अम्हे जाणामो दो वि ववहिअं वत्थुं ।
तो रन्ना भणियमहो माहप्पं सच्चसीलाण ॥२३३२॥

एवं नाणाइसय-रंजिएण दंसिया रयणमाला कुलालस्स । पुट्ठो सो वाहिणो कारणं तव्विगमोवायं च । भणियमणेण-महाराय ! महई कहा । तहाहि-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अत्थि सत्थिमई-सन्निवेसो । तत्थ दया-दाण-दक्खिन्नाइ-गुण-जुत्तो देवगुत्तो वाणिओ । गुत्ता से भज्जा, देविला भइणी । सा य परिणीयमेत्ता चेव चत्ता भत्तुणा चिट्ठइ भायगेहे । निउत्ता तेण दाणाइ-कज्जे । कयाइ गिहमागयाओ भिक्खत्थं साहुणीओ । भिक्खं दाऊण पुट्ठाओ कत्थ तुब्भे वसह ? त्ति । साहुणीहिं भणियं-जिणदत्त-सिट्ठि-जाणसालाए । तत्थ अम्ह पवत्तिणी विमलवई चिट्ठति । अवरण्हे गया तत्थ देविला, वंदिऊण पवत्तिणिं निसन्ना पुरओ । भणिउं पवत्ता-भयवई ! बहु-सत्थ-परिकम्मिय-मईओ तुब्भे । ता कहेह किं पि वसियरण-जोगं । पवत्तिणीए भणियं-भद्दे ! अणुचियमिणं साहुणीणं । जओ-

जोइस-निमित्त-अक्खरकोउयाए सभूईकम्मेहिं ।
करणाणुमोयणेहिं य साहुस्स तवक्खओ होइ ॥२३३३॥

किं च, धम्मो चेव परमं वसीकरणं । जओ-

सोहग्गं आरोग्गं आउं दीहं मणिच्छिया लच्छी ।
भोगा विउला सुर-सिव-सुहाइं लब्भंति धम्मेण ॥२३३४॥

एवमणुदिणं धम्मं सुणंतीए वियलिओ कम्म-गंठी, नियत्ता विसय-वासणा, पडिवन्नो सम्मत्तमूलो गिहत्थधम्मो । कहेइ देवगुत्तस्स जिणधम्मं । सो वि अदिन्न-पडिवयणो ठिओ अहोमुहो । देविला वि पइदिणं वच्चए जिण-मंदिरे । पूएइ जिणिंद-पडिमाओ, पज्जुवासए जइ-जणं, सुणेइ सिद्धंतं, वज्जेइ मिच्छत्तं, करेइ अट्ठमभाए दिवसस्स वेयालियं । सिणेहलंघिओ न किं पि जंपए देवगुत्तो । अन्न-दिणे भणिया तेण देविला-भइणि ! जिण-धम्मो चेव सग्गापवग्ग-कारणं । न सेस धम्म त्ति जं भणसि तं ते राग-दोस-विलसियं संभावेमि । को वा दोसो रयणि-भोयणे जेण न भुज्जइ ? । तओ भणियं जिणधम्म-कुसलाए देविलाए-

पुट्ठो परेण महुरं उच्छुं कडुयं च कहइ जइ लिंबं ।
तो रागदोस-विलसियमिमस्स किं होज्ज पुरिसस्स ? ॥२३३५॥

जइ को वि सीयलं सलिलमुण्हमनलं व सव्वमुल्लवइ ।
ता तस्स होज्ज किं रागदोस-विप्फुरिय-लेसो वि ॥२३३६॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इय जीवदया-परमं जिण-धम्मं सग्ग-मोक्खपुर-मग्गं ।
पसुवह-परूवग-मिच्छदिट्ठि-धम्मं च कुगइ-पहं ॥२३३७॥

जंपंताण जणाणं अवितह-वत्थुस्सरूव-भणणाओ ।
रागो वा दोसो वा न एत्थ परमत्थओ अत्थि ॥२३३८॥

वत्थु-सहावो एसो जत्थ दया विसय-निग्गहो जत्थ ।
सो धम्मो मोक्खपहो सेसो संसारमग्गो त्ति ॥२३३९॥

निसि-भोयणम्मि दोसे समासओ संपयं निसामेसु ।
नयनिद्दोसं वत्थुं को वि सकन्नो परिच्चयइ ? ॥२३४०॥

रक्खस-भूय-पिसाया निसाए हिंडंति अक्खलिय-पयारा ।
उच्छिट्ठमन्नमेएहिं तत्थ कहं होइ भोत्तव्वं ? ॥२३४१॥

चिट्ठउ ता परलोओ रयणीए भोयणं कुणंताणं ।
इह लोए वि अणत्था हवंति जे ते निसामेहि ॥२३४२॥

मेहं पिपीलिया हंति जूया कुज्जा जलोयरं ।
करेइ मच्छिया वंतिं कुट्ठरोगं च कोलिओ ॥२३४३॥

कंटओ दारुखंडं च विहेइ गल-वेयणं ।
वंजणंतो निवडिओ तालुं विंधइ [१४]विंछिओ ॥२३४४॥

विलग्गो य गले वालो सरभंगाय जायए ।
इच्चाइणो दिट्ठ-दोसा हवंति निसि-भोयणे ॥२३४५॥

जइ वि हु पिपीलियाई दीवुज्जोयम्मि किं पि दीसंति ॥
तह वि तस-थावराणं सुहुमाणं दंसणं कत्तो ? ॥२३४६॥

भणियं च-

संतिसंपा इमा सत्ता अदिस्सा मंस-चक्खुणो ।
तेसिं संरक्खणट्ठाए वज्जियं निसि-भोयणं ॥२३४७॥

जइ वि हु फासुय-दव्वं कुंथू-पणगा तहावि दुप्पस्सा ।
पच्चक्खनाणिणो वि हु राई-भत्तं परिहरंति ॥२३४८॥

चिट्ठंति चरंते च्चिय जे मणुया वासरे निसाए य ।
विरइ-परिचत्त-चित्ता माणुसवेसेण ते पसुणो ॥२३४९॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पसुणो वि केवि रयणीए भोयणं परिहरंति पायेण ।
तेहिंतो हीणयरा मणुया जीए ''य भुंजंता ॥२३५०॥

धम्मत्थिणो सया वि हु रयणीए भोयणं परिहरंति ।
जिणधम्म-बाहिरेहिं वि जम्हा इणमणुचियं भणियं ॥२३५१॥

तद्यथा-

त्रयी तेजोमयो भानुरिति वेदविदो विदुः ।
तत्करैः पूतमखिलं शुभं कर्म्म समाचरेत् ॥२३५२॥

नैवाहुति र्न च स्नानं न श्राद्धं देवतार्चनं ।
दानं वा विहितं रात्रौ भोजनं तु विशेषतः ॥२३५३॥

दिवसस्याष्टमे भागे मंदीभूते दिवाकरे ।
नक्तं तद्विजानीयात् न नक्तं निशिभोजनं ॥२३५४॥

दैवैस्तु भुक्तं पूर्वाह्णे मध्याह्ने ऋषिभिस्तथा ।
अपराह्ने तु पितृभिः सायाह्ने दैत्य-दानवैः ॥२३५५॥

संध्यायां यक्षरक्षोभिः सदा भुक्तं कुलोद्वहैः ।
सर्ववेलमतिक्रम्य रात्रौ भुक्तमभोजनं ॥२३५६॥

आयुर्वेदेप्युक्तं-

हृन्नाभिपद्मसंकोचश्चण्डरोचिरपायतः ।
''लतो नक्तं न भोक्तव्यं सूक्ष्मजीवादनादपि ॥२३५७॥

मुत्तूण दिणं पुत्ताहिलासिणो जे निसाइ भुंजंति ।
तण्हा-पसम-निमित्तं पियंति ते जलण-जालाओ ॥२३५८॥

जे भुंजंति निसाए निद्धम्मा ते लहंति परलोए ।
मज्जार-काय-कोसिय-सुणह-वराहाइ-तिरियत्तं ॥२३५९॥

जे रयणि-भोयणाओ कुणंति विरइं विसुद्ध-सद्धाए ।
ते अकिलेसेण लहंति अद्ध-जम्मोववास-फलं ॥२३६०॥

एवं सोऊण पडिवन्नो देवगुत्तेण जिणधम्मो । गहियं निसि-भोयण-विरइ-वयं । कुलक्कमागयं आयारं मोयाविओ नणंदाए मह पइ त्ति कुविया तब्भज्जा । गया पिईहरं ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अन्नया वुत्तो देविलाए देवगुत्तो- भाय ! गंतूण ससुरकुलं आणेसु नियघरिणिं । गओ सो तत्थ संझाए । तम्मि य माहमास-सोहग्ग-सत्तमि-दिणाओ समारब्भ सोहग्ग-निमित्तं रयणि-चरम-जाम-मुहुत्त-मेत्तं कालं आकंठ-जलावगाहेण सग्गाहारेण य ठिया सत्त-दिणाणि देवगुत्तस्स सालिया । सत्तमो सो वासरो । पडिवन्न-तव-विसेसाए पारण-निमित्तं पारद्धो समारंभो । तत्थ पुण एस कप्पो- अखंड-सालि-तंदुलेहिं तव्वेल-दुद्ध-पारिहट्टि-दुद्धेण रद्धं पायसं महुणा सह पईवाइ-वज्जियाए रयणीए भोत्तव्वं । तओ भोयणत्थमुवविट्ठं सव्वं कुडुंबयं । हक्कारिओ देवगुत्तो । न पडिवन्नं तेण । सावओ त्ति उवहसिओ सालएहिं । कर-परामरिसेण भुंजिउमाढत्ता ससुराइणो ।

एत्थंतरे निवडिओ भवियव्वयावसेण मुह-गहिय-मूसओ वलहरणाओ ससुर-भायणोवरि सप्पो । उसिण-पायस-ताव-पीडिएण सप्पेण मुक्को मूसओ । अह पक्खित्तो ससुरेण कवल-गहणत्थं भायणे हत्थो, डक्को सप्पेण । खद्धो खद्धो त्ति पुक्करियं तेण । आणिओ पईवो । दिट्ठा भायण-मज्झे सप्प-मूसया । विस-वियार-विघायण-सामग्गिं कुणंताणं चेव ताण उवरओ सो । अक्कंद-सद्द-भरिय-भुवणोयरं कयं उद्धदेहियं । सव्वेहिं पि भणियं-सोहणो देवगुत्त-धम्मो । तेहिं पि पडिवन्नं रयणिभोयण-विरमणं । भज्जं गहिऊण समागओ देवगुत्तो गिहं । गुत्ता वि 'पडिवन्नो मए जिण-धम्मो'त्ति भणंती साणंदा नणंदाए पडिया पाएसु । वच्चए कालो । देविलाए य सुद्ध-वणिय-भज्जा वज्जा नाम वयंसिया । कयाइ गया तग्गिहं । देविलाए दिट्ठा अन्न-पुरिसेण समं वज्जा, गए य तम्मि सिक्खविया देविलाए-

संतोस-चत्त-चित्तत्तणेण अजिइंदिया तुमं भद्दे ! ।
जं ससिणेहं अन्नं समीहसे कुणसि तमजुत्तं ॥२३६१॥

इमं च तक्कालागएण सुयं सुद्धेण । नूणं अन्नासत्त त्ति चिंतिऊण परिचत्ता इमा । विसन्नाए तीए कहियं देविलाए । तीए वुत्तं- मा करेसु खेयं । अहं ते पइं पन्नविस्सामि । भणिओ देविलाए सुद्धो- भो किमेवं मिसेहिं अवमाणेसि ? । तेण भणियं-अलं मे [१७]इमाए दुट्ठसीलाए । दुट्ठसीला खु महिला विणासेइ संतइं, करेइ वयणिज्जं, मयलेइ कुलं, वावाएइ दईयं । ता किं उभयलोग-गरहियाए तीए परिग्गहेणं ? ति ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

देविलाए वुत्तं- कहं मुणसि जहा एसा दुट्ठसील ? त्ति । तेण भणियं- किमेत्थ जाणियव्वं ? । सुया मए तुमं सिक्खवंती जहा- संतोस-चत्त-चित्तत्तणेण इच्चाइ । देविलाए वुत्तं- अहो ! ते पंडियत्तणं । अहो ! वियारक्खमया । अहो ! सिणेहाणुबंधो । मए एसा तम्मि दिणे जर-कला-कलिय त्ति निवारिया सिणिद्धं भोयणं भुंजंती । तए उण एद्दहमेत्तेण वि अन्न-पुरिसासत्त त्ति संभाविया । सव्वहा सुसील त्ति एसा मुणियव्वा । तओ सो सुद्धो पुव्वं व तीए उवरि साणुराओ जाओ ।

एत्थंतरे बद्धं देविलाए कूड-सक्खि-दाण-दोसओ मूयत्तण-जणयं तिव्व-कम्मं । अह देवगुत्तो देविला गुत्ता य पालिऊण सावगत्तं गयाणि सोहम्मं । तओ चुओ देवगुत्तो तुमं समुप्पन्नो । गुत्ता य चंपयमाला देवी जाया । देविला उण रयणमाला धूय त्ति । एयं सोऊण तिण्हं पि जायं जाईसरणं । रन्ना भणियं- भद्द ! सच्चं सव्वमेयं । संपयं कहेसु इमीए मूयत्तण-विगमो कहं भविस्सइ ? त्ति । भणियं कुलालेण- तित्थयर-समागमेणं असिवोवसमो हवइ त्ति मं घेत्तूण गच्छ अउज्झनयरिं । तत्थ अभिनंदण-तित्थयरो सयं विहरइ त्ति । राया वि सक्कारिऊण कुलालं गओ अउज्झाए । वंदिओ भयवं । तप्पभावओ य पणट्ठा खुद्ददेवया । जाया सहावत्था रयणमाला ।

इय कूड-सक्खि-जणिएण कम्मुणा देविलाए मूयत्तं ।
दट्ठूण विरत्ताइं तिन्नि वि दिक्खं पवन्नाइं ॥२३६२॥

कय-तिव्व-तवच्चरणाइं समये साहिय-समाहि-मरणाइं ।
माहिंद-देवलोयं पत्ताइं कमेण मोक्खं पि ॥२३६३॥

जीव-वहमलिय-वयणं च चइउकामो वि न क्खमो चइउं ।
सो पुरिसो जो पर-धणमदत्तमवहरइ मूढप्पा ॥२३६४॥

दोहग्गमंगछेयं दासत्तं दीणया दरिद्दत्तं ।
दुग्गइ-गमणं च नराण होइ परदव्व-हरणेण ॥२३६५॥

एक्कस्स चेव दुक्खं मारिज्जंतस्स होइ खणमेक्कं ।
जावज्जीवं सकुडंबयस्स पुरिसस्स धणहरणे ॥२३६६॥

परदव्व-हरण-पावद्दुमस्स वह-बंध-मरण-पमुहाइं ।
वसणाइं कुसुम-नियरो नारय-दुक्खाइ फल-रिद्धी ॥२३६७॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जग्गंतो सुत्तो वा न लहइ सोक्खं दिए निसाए वा ।
संका-छुरियाए छिज्जमाण-हियओ धुवं चोरो ॥२३६८॥

जो हरइ परस्स धणं बहिरंगं जीवियं स तेण हओ ।
दविण-विगमम्मि जम्हा वच्चइ खयमंतरंगं पि ॥२३६९॥

जो परदव्वमदिन्नं न गिण्हए लोह-निग्गह-पहाणो ।
अल्लियइ इमं कल्लाणमालिया नागदत्तं व ॥२३७०॥

[३. अस्तेये नागदत्त-कथा]

वाणारसी पुरी अत्थि सुरयणालंकिया सुरपुरि व्व ।
तत्थ जियारि य राया सक्कु व्व न जो अवज्जकरो ॥२३७१॥

रन्नो गोरवठाणं दक्खिन्न-विवेय-विणय-रयणनिही ।
धणउ व्व धण-समिद्धो धणदत्तो तत्थ वर-सेट्ठी ॥२३७२॥

घरिणी तस्स धणसिरी सिरि व्व रूवेण विणय-कुलभवणं ।
दो वि दयापवणाइं जिणसासण-रंजिय-मणाइं ॥२३७३॥

विसय-सुहं भुंजंताण ताण पुत्तो गुणालओ जाओ ।
नामेण नागदत्तो नागकुमारो व्व रूवेण ॥२३७४॥

बालत्तणे वि जिणवयण-भाविओ भवविरत्त-चित्तो सो ।
परिणेउं न पवज्जइ रूववईओ वि कन्नाओ ॥२३७५॥

सो अन्नया भमंतो समाण-निय-मित्त-मंडल-समेओ ।
नंदणवण-संकासे सहसंबवणम्मि संपत्तो ॥२३७६॥

जम्मि कुसुमेहिं तरुणो कुसुमाइं महुरसेहिं सोहंति ।
भमरेहिं महुरसो महुर-गुंजिएहिं च भमरगणा ॥२३७७॥

काऊण तम्मि नाणाविहाओ कीलाओ सो खणं एक्कं ।
तस्स य मज्झभायम्मि संठियं जिणहरं पत्तो ॥२३७८॥

जं कणय-खंभ-कलियं नाणा-मणि-खंड-मंडियं सहइ ।
जिणभत्तीए सक्केण पेसियं सुरविमाणं व ॥२३७९॥

अह तम्मि पविसमाणेण तेण एक्का पलोइया कन्ना ।
जिणपूयं कुणमाणी रइ व्व रूवेण पच्चक्खा ॥२३८०॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चिंतियं च-

एइए मणोहर-वयणकंति-विजियाइं कणय-कमलाइं ।
सेवंति अमरसरियं विसेस-सोहा-निमित्तं व ॥२३८१॥

पूयं कुणमाणीए सिवतरुबीयस्स वीयरायस्स ।
तीए वि विम्हय-रसाउलाए दिट्ठीए सो दिट्ठो ॥२३८२॥

एत्थंतरम्मि तेलोक्क-विजय-पसरिय-मयस्स मयणस्स ।
दोण्हं पि हियय-लक्खेसु निवडिया बाण-रिंछोली ॥२३८३॥

काउं जिणिंद-पूयं सा बाला मयण-बाण-विहुरंगी ।
सुइरं सिणिद्ध-दिट्ठी नागदत्तं पलोयंती ॥२३८४॥

चलिया निय-गेहं पइ मत्थइ रइयंजली पणमिऊण ।
भत्तीए नागदत्तो वि जिणवरं थोउमाढत्तो ॥२३८५॥

दिट्ठे तुमम्मि भुवणेक्कनाह ! निहयंतरंग-रिउवग्गे ।
संसार-जलनिही गोपयं व जाओ उ सुहुत्तारो ॥२३८६॥

तओ-

नयणच्छेरयभूयं जिणपूया-कोसलं सलहिऊण ।
विम्हयवसेण पुट्ठा निय-मित्ता नागदत्तेण ॥२३८७॥

कस्सेसा वर-कन्ना पूया-विन्नाणमेरिसं जीए ? ।
एसो अणुरत्तो पुच्छइ त्ति मित्तेहिं तो भणियं ॥२३८८॥

नागवसू नामेसा पुत्ती पियमित्त-सत्थवाहस्स ।
कन्ना निय-रूवेणं सुर-रमणीणं कयावन्ना ॥२३८९॥

बालत्तणओ वि इमा नीसेसकलाहिं पियसहीहिं च ।
खणमेक्कं पि अमुक्का भुवणस्स वि विम्हयं कुणइ ॥२३९०॥

किंतु,

एक्को इमीए दोसो जं तुमए सरिस-गुण-कलावेण ।
पडिकूल-दिव्व-जोग्ग अज्ज वि पावइ न संबंधं ॥२३९१॥

अणुरूव-वर-विउत्ता रेहइ महिला न सुंदरंगी वि ।
माणिक्कमणग्घं पि हु न लहइ सोहं विणा कणगं ॥२३९२॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तम्हा वयंस ! जुज्जइ तुह एईए परिग्गहो काउं ।
असहाएण न तीरइ काउं धम्मो वि पुरिसेण ॥२३९३॥

नागदत्तेण भणियं-भो ! मा एवं पलवह । न मए अणुरागबुद्धीए पुट्ठा, किंतु एईए जिणिंद-पूया-कोसल्लं अतुल्लं दट्ठूण एवं संलत्तं । तुब्भेहिं पुण पेम्म-परव्वसेहिं अन्नहा संभावियमिणं ति पयंपंतो नागदत्तो पत्तो निय-घरं । सा य नागवसू कन्ना नागदत्तस्स निरुवम-रूव-लावन्न-खित्त-चित्ता तं चेव चिंतयंती कया कामेण परव्वसा न पयट्टए भोयणाइ किरियासु, न पावए निसासुं पि निद्दासुहं, मणिमय-पंचालिय व्व चिट्ठए-निच्चिट्ठा । चंदण-जलद्दाईहिं कय-सिसिरोवयारा वि दढं देह-दाहमुव्वहइ । कसिणपक्ख-ससिलेह व्व झिज्जए पइदिणं । विसन्ना सयणा । रहसि पुट्ठा सहीहिं निब्बंधेणं । तओ पुच्छंति एगओ पियसहीओ अन्नत्थ वारए लज्जा, इय वग्घ-दुत्तडी-नाय-निवडिया किं करेमि अहं ?- एवं वोत्तूण ठिया मोणेण ।

अह विन्नायभावाए अमरसिरीए सहीए भणिया एसा-हुं, विन्नायं मए सहि ! सहसंबवणुज्जाणे नागदत्तेण तुह अवहरियं हिययं । अहो ! जत्थ वाणियगा वि चोरा तत्थ किं कीरइ ? । तुज्झ वि लज्जाकरमिणं न जुत्तं वोत्तुं । तया वि मए तुहं दिट्ठिभावेण मुणियमिणं, परं लज्जाए न जंपियं इत्तियं कालं । तहेव(ता होउ) सुवीसत्था तुह गुणसंदोह-रज्जु-संदाणियं दंसेमि तं अनयकारिणं । इमं सोऊण अहो ! सहीणं छइल्लत्तणं ति भणंती जाया परम्मुही नागवसू । एवं संठविऊणं तं कहिओ तज्जणयाणं वुत्तंतो । तेहिं वुत्तं-उचिओ चेव अम्ह धूयाए नागदत्तेण संबंधो । कमलायरे रमंती रायहंसी कस्स नाणुमय ? त्ति भणिऊण पत्तो पियमित्तो धणदत्त-गेहं । दट्ठूण अब्भुट्ठिओ धणदत्तेण, कया आसणाइ पडिवत्ती । भणिओ य-किमागमण-पओयणं ? । पियमित्तेण वुत्तं- एक्कं ताव तुम्ह दंसणं, अवरं अत्थि मे नागवसू नाम कन्ना, तं तुह सुयस्स दाउं । ता पडिच्छ तुमं । होउ मह धूयाए तुह तणएण अणुरूव-संबंधो । धणदत्तेण भणियं-पियमित्त ! जुत्तं वुत्तं तए । ममावि बहुमयमेयं । कस्स वा न पडिहाइ लच्छी घरंगणमाविसंती ? किंतु मह पुत्तो संसार-विरत्त-चित्तो न पडिवज्जइ परिणयणं । अन्नेसिं पि बहूणं महंत-सेट्ठीणं विसिट्ठाओ वि कन्नाओ न पडिवन्नाओ अणेण । परं पुणो

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वि भणिस्सं- ति वोत्तूण विसज्जिओ पियमित्तो । तेणावि कहिऊण पुव्व-वुत्तंतं भणिया धूया- वच्छे ! मुंच तम्मि अणुरायं । जओ-

दुल्लह-जणम्मि पेम्मं खलम्मि मित्ती जडम्मि उवएसो ।
कोवो य समत्थ-जणे निरत्थओऽणत्थ-हेऊ य ॥२३९४॥

तीइ वि कया पइन्ना सो च्चिय परिणेइ मं न उण अन्नो ।
अहवा जं सो काही अहं पि त चिय करिस्सामि ॥२३९५॥

अह नयरारक्खगेण वसुदत्तेण दिट्ठा घरंगण-गया नागवसू । तओ कओ सो कामेण परवसो गओ पियमित्त-गेहं ।

अब्भत्थिओ अणेण पियमित्तो- देसु मे नयणच्छरियभूयं निय-धूयं । मग्गेसि जेत्तियं देमि तेत्तियं ते धणं । पियमित्तेण भणियं-'न मे धणेण कज्जं । को वा तुमं जामाउगं नाभिनंदइ ?, किंतु दत्ता मए धणदत्तस्स पुत्तस्स नागदत्तस्स कन्ना, ता न तए एत्थ खिज्जियव्वं'ति भणिऊण विसज्जिओ वसुदत्तो । सो य तयाणुरत्तो नागदत्त-हणणत्थं छिद्दाणि मग्गिउं पवत्तो ।

अन्नया आसवाहणिया-निग्गयस्स जियसत्तु-रन्नो निवडियं कुंडलं । घरागएण नायं रन्ना । भणिओ नयरारक्खगो-'कहिं पि निवडियं कुंडलं, निभालेसु तं' । 'जं देवो आणवेइ' त्ति भणिऊण उग्घोसावियं नयरे वसुदत्तेण-'जेण रन्नो कुंडलं कहिं पि पत्तं सो समप्पेउ जइ जीविय-मिच्छइ'। नयर-परिसरे य गवेसणत्थं सव्वत्थ निउत्ता नरा ।

इओ य नागदत्तो अट्ठमीए पडिवन्न-पोसहो संझाए पडिमं पडिवज्जिउकामो उज्जाण-मज्झट्ठियं जिणहरं पट्ठिओ । गच्छंतेण य तेण दिट्ठं पहे पहा-पूर-पूरिय-दिसामंडलं कुंडलं । दट्ठूण तं नागदत्तो नियत्तिऊण पयट्टो अन्न-मग्गेण । नियत्तमाणो य दिट्ठो दिव्व-जोगओ वसुदत्तेण । गओ सो सासंक-माणसो तं पएसं । जाव दिट्ठं कुंडलं । पहट्ठचित्तो[१८] तं घेत्तूण तं 'अहो लद्धो मए नागदत्त-मारणोवाओ' त्ति चिंतयंतो गओ तत्थ जत्थ पडिमा-पवन्नो नागदत्तो । मुक्कं तस्स पासे कुंडलं । कहियं रन्नो- देव ! गहिय-कुंडलो पत्तो नागदत्तो, ता जं आणवेह तं कीरइ ? त्ति सुच्चा वज्जाहओ व्व विसन्नो चिंतए राया-हा ! किमेयं ? ति । न संभवइ नागदत्ते एयं । एसो य तं सकुंडलं कहेइ । ता एत्थ जुत्तो वियारो त्ति आणाविओ रन्ना नागदत्तो । दिट्ठो कंठावलंबिणा

हियंयबरचुंबिणा विवेय-रविमंडलेणेव कुंडलेणं । पुट्ठो सबहुमाणं वुत्तंतमेयं । पडिमा-पडिवन्नो त्ति न किं पि जंपए एसो ।

भणिओ राया महल्लएहिं- देव ! अज्ज वि इमस्स नियमो न पूरइ त्ति चिट्ठह जाव सूरोदयं । ठिओ राया । उग्गओ सूरो । चिंतियं नागदत्तेण- 'जइवि निरवराहस्स मे दिन्नं अब्भक्खाणं इमिणा तहावि मए न तं वत्तव्वं, जओ परदोस-कित्तणं उभयलोय-दुक्खावहं । न य किं पि इमिणा कयं मे । सव्वो वि सकय-कम्म-फलमेव भुंजइ । ता सिरच्छेए वि न मए परदोसो वत्तव्वो'त्ति कय-निच्छओ पुणो पुणो पुट्ठो वि न जंपए । कुद्धेण रन्ना आणत्तो वज्झो । तुट्ठेण आरक्खिएण रत्तचंदणाणुलित्तो तण-मसिकय-विविह-मुंडो सिर-धरिय-छित्तरय-छत्तो गलोलंबिय-सरावमालो विरस-वज्जंत-डिंडिमो उग्घुट्ठ-रायकुंडलावराहो रासहारूढो ओयारिओ राय-पहे । घर-पुर-[११]पायाराइ-सिहरट्ठिओ नायर-जणो जंपिउं पवत्तो- अहो ! वियार-मूढया रन्नो । अहो ! मइब्भमो मंतिप्पमुहाणं । पेच्छ केरिसं अकज्जं ? ति ।

अमयाओ वि होज्ज विसं मुंचिज्ज व सिहिकणे मयंको वि ।
न य कहवि नागदत्तो करेज्ज एवंविहमकज्जं ॥२३९६॥

जइ कहवि दुज्जणा सज्जणम्मि दोसं ठवंति अलियं पि ।
तह वि हु वियार-निउणा सच्चवियं तं न मन्नंति ॥२३९७॥

जइ होइ महापुरिसाण एरिसाणं पि एरिसं वसणं ।
परिहरणिज्जो ता सव्वहा वि भववास-विसरुक्खो ॥२३९८॥

एवं पयंपमाणे जणम्मि जंतेण नागदत्तेण ।
सच्चविया नागवसू पिउमंदिर-कुट्टिम-तलम्मि ॥२३९९॥

विगलंत-बाहबिंदूण नयण-कमलाण पाडिसिद्धीए ।
थणएहिं रूयंतेहिं व करताडण-तुट्टहारेहिं ॥२४००॥

परिणेइ न मं जइ वि हु तहावि नयणेहिं दीसिही सुहओ ।
तुट्ठाहमेत्तिएण वि तं पि न मे खमइ दुट्ठ-विही ॥२४०१॥

इय विलवंती मुच्छाए महियले पडइ रुद्ध-करणगणा ।
पिय-वसणमपेच्छंती विहिणा विहिओवयार व्व ॥२४०२॥

नागदत्तो वि दट्ठूण तीए तहाविहं चेट्ठं आवज्जिय-मणो चिंतए एवं-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

'जइ एयं वसणं अहं लंघेज्ज ता इमं बालं परिणिऊण पच्छा वयं चरिस्सं । अह न लंघेज्ज ता सागारं सिद्ध-पच्चक्खं पच्चक्खामि चउव्विहाहारं' ति कय-पच्चक्खाणो पत्तो वज्झट्ठाणं । नागवसू वि वेगेण संठविऊण अप्पाणं पूईऊण जिणपडिमाओ ठिया सासणदेवयाराहणत्थं काउसग्गेण । नागदत्तो विक्खित्तो सूलाए आरक्खिएण । भग्गा सासणदेवयाए सूला । तओ [१०]उल्लंबिओ तरु-साहाए । एसो तुट्टो पासओ । तओ आहओ खग्गेण गीवाए । जाओ खग्गप्पहारो हारो । तओ तस्स कओ साहुवाओ लोएण । भीया निव-निउत्ता नरा । सुणियमेयं रन्ना ।

तत्थागंतूण काऊण पडिवत्तिं पुट्ठो नागदत्तो निब्बंधेणं-कहेसु, को एस वुत्तंतो ? । नागदत्तेण वुत्तं-वसुदत्तस्स जइ अभयं देसि ता कहेमि । पडिवन्नमेयं रन्ना । कहिओ कुंडलावलोयणाइओ तेण वईयरो । तुट्ठेण रन्ना निवेसिओ करेणु-पट्ठीए अप्पणो पासे । पवेसिओ गुरु-विभूईए नयरीए । नीओ रायभवणं । सक्कारिऊण पट्ठविओ निय-गेहं । वसुदत्तो वि निव्वासिओ निय-देसाओ । गिहागयस्स नागदत्तस्स नागरा आगच्छंति वद्धाविया । पियमित्तो वि पत्तो पियपुच्छओ । कहिओ नागवसू-कय-काउस्सग्ग-वुत्तंतो । संजाय-सिणेहेण परिणीया नागवसू नागदत्तेण । भुंजए तीए समं भोए ।

अन्नया गवक्ख-गयस्स पिययमाए समं नागदत्तस्स पच्चासन्नघरे कयंतेण हरिणा हरिणो व्व हरिओ वणिय-तणओ । जाओ अक्कंद-रवो । भणियं भज्जाए-नाह ! किमेयमइ-विरसं सुव्वइ ? । भणियं नागदत्तेण- सुयणु,

जस्स भएण अणागय-जत्तो काउं समीहिओ वि मए ।
न कओ मूढेण इमं वि चिट्ठियं तस्स जमहरिणो ॥२४०३॥

नहि गणइ इमो सुहियं न दुक्खियं न सधणं न धणहीणं ।
न नराहिवं न रंकं दवो व्व सव्वं वणं दहइ ॥२४०४॥

इय पभवंते एयम्मि विसय-पडिसेवणं महामोहो ।
सिर-पज्जलियम्मि हुयासणम्मि को सुयइ निच्चिंतो ? ॥२४०५॥

जइ वि सयं न पहुप्पइ एसो तह वि हु करेइ जण-पीडं ।
सिंह व्व जरा डिंभ व्व वाहिणो तस्स परिवारो ॥२४०६॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ता आसन्ने पडिओ मयच्छि ! जह मुच्छियाण विसएसु ।
एसो मच्चुमइंदो तह निवडइ जा न अम्हं पि ॥२४०७॥

ता एय-भएणं चिय पलाण-मुणि-पहिय-पहय-मग्गेणं ।
वच्चामो मुक्खपुरं जत्थ पवेसो न एयस्स ॥२४०८॥

अह भणइ पिया-तुह घरे णिरिसिद्धमित्तत्थिणी गमह सच्चं ।
सिद्धमिहलोइय-सुहं अओ परं को इह पसंगो ॥२४०९॥

न य सागरोवमेहिं वि हुंति वियण्हा सुरा वि विसयाणं ।
तम्हा संतो सो च्चिय निवारओ विसय-तण्हाए ॥२४१०॥

ता नाह ! कुरु समीहियमहं पि सज्जा तुहाणुमय-मग्गा ।
पिय-पडिकूला वित्ती जओ निसिद्धा कुलवहूणं ॥२४११॥

तो भणइ नागदत्तो साहु पिए ! जंपियं तुमए ।
ता दिन्न-महादाणाइं जणिय-जिण-पडिम-पूयाइं ॥२४१२॥

घेत्तूण सव्व-विरइं गुरु-पाय-मूले,
काऊण तिव्व-तवमंग-सुहाणवेक्खं ।
पत्ताइं दोन्नि वि दिवं च सिवं च पच्छा,
निच्छिन्न-कम्म-दढ-संकल-बंधणाइं ॥२४१३॥

जीववहालिय-परधणहरण-नियत्तो वि मेहुणासत्तो ।
सत्तो वियाणियव्वो समत्त-पावासवाचत्तो ॥२४१४॥

अगणिय-कज्जाऽकज्जा निरग्गला गलिय-उभय-लोय-भया ।
मेहुण-पसत्त-चित्ता कं पावं जं न कुव्वंति ॥२४१५॥

आवायमित्त-महुयर परिणामे दिन्न-तिक्ख-दुक्खभरा ।
को सेवए सकन्नो किंपाग-फलं व विसय-सुहं ? ॥२४१६॥

संढत्तं दोहग्गं इंदियच्छेयं सरीर-बल-हाणिं ।
दुग्गइ-गइं च जीवा पावंति अबंभचेरेण ॥२४१७॥

जो महिला-संगेणं नियत्तिउं वंछए विसय-तण्हं ।
घय-भोयणेण अहिलसइ पसमिउं सो अजिन्न-जरं ॥२४१८॥

जो सव्व-रमणि-परिहार-अक्खमो चयइ पर-कलत्तं पि ।
पावइ उभय-भवेसुं सो रणसूरो[1] व्व कल्लाणं ॥२४१९॥ तहाहि-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[४. शीले रणवीर-कथा]

अत्थि इह जंबुद्दीवे भारहवासम्मि मज्झिमे खंडे ।
अमरपुरं नामेणं नयरं नय-रंजिय-जणोहं ॥२४२०॥

सुरभवण-पइट्ठिय-पउमराय-कलसुल्लसंत-किरणेहिं ।
पयडइ गयणंगण-पायवस्स जं पल्लव-विलासं ॥२४२१॥

तत्थ परिपंथि-पत्थिव-पयाव-दव-जलण-पसम-जलवाहो ।
पुरपरिह-दीहबाहो रणपालो नाम नरनाहो ॥२४२२॥

जस्स कर-मंडणं मंडलग्गमवलोईउं पि न खमंति ।
सूरस्स व गरुय-भयाउलाइं रिउ-कोसिय-कुलाइं ॥२४२३॥

तस्सत्थि धीरसोहा[२२] देवी देवंगण व्व वर-रूवा ।
नवरं विलास-लालस-लोयण-पंकय-कयाणंदा ॥२४२४॥

पुव्व-भवज्जिय-सुकयाणुरूव-वर-विसय-सेवणपराण ।
ताणं तणओ जाओ रणवीरो नाम विक्खाओ ॥२४२५॥

सो मयण-सरिस-रूवो सयल-कला-कुलहरं विणय-पवरो ।
सूरो चाई दक्खो दक्खिन्ननिही थिरो गहिरो ॥२४२६॥

नवरं जूय-व्वसणेण दूसिओ तस्स गुण-गणो सव्वो ।
ससिणो व्व कलंकेणं खारत्तेणं जलहिणो व्व ॥२४२७॥

अगणिय-गुरु अणलज्जो अकलिय-निद्दा-छुहा-तिसा-दुक्खो ।
जूय-रय-परिक्खित्तो निच्चं चिय रमइ सो जूयं ॥२४२८॥

अन्न-दियहम्मि रन्ना भणिओ सो वच्छ ! बुद्धिमंतेण ।
जुत्ताजुत्त-वियारणपरेण पुरिसेण होयव्वं ॥२४२९॥

तुज्झ गुण-रयण-निहिणो निहीण-जण-सेवियं इमं जूयं ।
न हु सहइ असुइ-असणं हंसस्स व वायसायरियं ॥२४३०॥

जं कुल-कलंक-बीयं गुरु-लज्जा-सच्च-सोय-पडिणीयं ।
धम्मत्थ-काम-चुक्कं दाण-दया-भोय-परिमुक्कं ॥२४३१॥

पिय-माय-भाय-सुय-भज्ज-मोसणं सोसणं सुह-गुणाणं ।
सुगइ-पडिवक्खभूयं ते जूयं पुत्त ! परिहरसु ॥२४३२॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तह वि रणवीर-कुमरो कुणइ निवित्तिं न जूय-वसणाओ ।
उवएसेण वि पायं नराण दुपरिच्चया पयई ॥२४३३॥

ता जूय-वसण-अणियत्त-माणसं पेच्छिऊण तं कुमरं ।
जूय-पडिसेह-पडहो नयरम्मि दवाविओ रन्ना ॥२४३४॥

अहिमाण-धणत्तणेण इमं पि पराभवं मन्नंतो खग्ग-सहाओ विणिग्गओ नयराओ कुमारो । परिभमंतेण तेण दिट्ठा एगत्थ-मग्गे तक्करेहिं विद्दविज्जंता दुवे मुणिणो । निक्कारण-करुणा-कलिय-मणेण-'अरे ! उभय-लोय-विरुद्धं किमेयमारद्धं ?'ति भणंतेण हक्किया तक्करा । कयं युद्धं । पुरिसक्कार-प्पहाणयाए एक्केणावि केसरिणा करिणो व्व तक्करा नासिया सव्वे कुमारेण । नीया खेमेण वसिमं मुणिणो । भणियमणेहिं-भद्द ! भवया निय-जीविय-निरवेक्खेण रक्खिया अम्हे ता महासत्तो तुमं । इमिणा सच्चरिएण भविस्ससि भायणं सयल-संपयाणं । अओ किं पि पत्थेमो । तेण भणियं-आइसह भयवं !। मुणीहिं वुत्तं-पंचण्हं पाणिवहाईणं पावासवाणं निवित्तिं करेसु । कुमारेण वुत्तं-भयवं ! गुरुकम्मो हं । न क्खमो सव्वेसिं पि निवित्तिं काउं । एक्कं पुण[३] परित्थि-वज्जणं जावज्जीवं करिस्सं । मुणीहिं वुत्तं-'भद्द ! इमं चेव दुक्करं कायर-नराणं, कारणं सयल-कल्लाणाणं, निवारणं वसण-सयाणं, निबंधणं सग्गापवग्ग-सुह-संपयाणं ।

कमलाण सरं रयणाण रोहणं तारयाण जह गयणं ।
पररमणि-वज्जणं तह गुणाण जंपंति जम्म-पयं ॥२४३५॥

ता इमं कुणंतेण तए कयं चेव सव्वं । पालेज्जसु सम्ममेयं' ति अणुसासिऊण गया अन्नत्थ साहुणो । कुमारो वि पत्तो कोसलाविसय-भूसणं सिरिउरं नयरं ।

जं गणयग्ग-विलग्गं विलंघिउं पक्खिणो वि न खमंति ।
लंघिज्जइ पायारो सो तस्स कहं विवक्खेहिं ॥२४३६॥

तत्थ महसेणो राया । कुमारो वि पयट्टो पुव्वब्भासेण जूय-वसणे तहवि असंपज्जंत-धणो एगवीस-कणय-कोडीण सामिणो सिरिपुंज-सेट्ठिणो गिहे खणिऊण खत्तं पविट्ठो निसीहे । जाव पईवहत्थाए घरिणीए दिण्ण-ववहार-लेक्खयं निरिक्खंतो पुत्तस्स पासे दिट्ठो सेट्ठी । पुणो पुणो

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गणंतस्स वि पुत्तस्स न पुज्जए विसोपओ तओ कुविओ सेट्ठी । गहिय चम्मलट्ठी पुट्ठी हओ पुत्तस्स । चिंतियं रणवीरेण-अहो ! लोहंधबुद्धिणो वणिणो धण-कज्जे पुत्तं पि हणंति । ता-

आजानु-लंबित-मलीमस-झाटकानां,
मित्रादपि प्रथम-याचित-भाटकानाम् ।
पुत्रादपि प्रियतमैकवराटकानां,
मुष्णाति कः किल धनानि किराटकानाम् ? ॥२४३७॥

तओ गओ तन्नयर-तिलयभूयाए पभूय-धण-सामिणीए लीलावईए वेसाए भवणं । दिट्ठा सा दीवुज्जोएण गलंत-पूयप्पवाह-विहिय-मच्छिया-जाल-तुट्ठिणा कुट्ठिणा सह पसुत्ता । चिंतियं चऽणेण-

जा निय-तणूं पि तणमिव धणलुद्धा निग्गुणं गणइ गणिया ।
तन्नो विहीणसत्तो सत्तो किं कोवि होइ जए ? ॥२४३८॥

जा निय-तणु-निरवेक्खा लुद्धमणा कुट्ठिणा वि सह सुवइ ।
वेसाइ तीइ नूणं धणहरणे फुट्टिही हियय़ं ॥२४३९॥

तओ निग्गओ कुमारो । पहाया रयणी । गंतूण संबुज्जाणं गहिया गोहा । पुच्छे बंधिऊण वरत्तं रत्तीए खित्ता रायमंदिरोवरिं । विलग्गा सा वलहियाए । वरत्ताए लग्गिऊण चडिओ गवक्खेण जाव तत्थ, ता तदुवरि पसुत्तस्स रन्नो अन्नासत्ता उत्तिन्ना वसंतसेणा महादेवी । वेईया रन्ना । तओ पेच्छामि ताव किं करेइ एस ? त्ति उवउत्तो राया । दिट्ठो देवीए निय-देहाभरण-रयणालोएण लोयणाणंद-जणणो रायपुत्तो । को एसो दिव्वागिइ ? त्ति अणुरत्ता एयम्मि । दिट्ठा एसा रायपुत्तेण । भणियं च णाए-को तुमं ? त्ति । तेण भणियं-जो एयाए वेलाए परघरं पविसइ । महादेवीए चिंतियं-चोरो एसो विसिट्ठो य, तो अलं मज्झ अवरेण । वरं एसो चेव रामिओ त्ति । पेसिया साहिलासा दिट्ठि-दूई । भणिया कुमारेण-का तुमं ? ति । तीए भणियं-रन्नो पत्ती वसंतसेणा महादेवि त्ति । संविग्गो कुमारो । भणियं चऽणेण-माया मम तुमं । तीए भणियं-केण कज्जेण ? इयरेण वुत्तं-परकलत्ताओ विरओ अहं, किं पुण रन्नो महादेवीए ? । तीए भणियं-किमेवं धम्मिट्ठो चोरियं करेसि ? । इयरेण वुत्तं-विचित्ता कम्म-परिणई । तीए भणियं-अलं इमिणा उत्तरेण । सव्वहा पडिवज्जसु ममं । अन्नहा न तुमं ईओ खेमेण वच्चसि । इयरेण

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वुत्तं-अंगीकयमिणं, किमन्नहा एयाए वेलाए परघरे पविसीयइ ? ।

इच्चाइणा वइअरेण निरागरिया महादेवी । सुयमिणं सव्वं रन्ना । अणविक्खिऊण आयइं अक्कंदियं महादेवीए । सकलयलं उट्ठिया पाहरिया । रन्ना उवरिं ठाऊण भणियं-भो ! भो ! अविणासेण चोरं गिण्हह । भणिओ पाहरिगेहिं कुमारो-भो ! अविणासगा अम्हे तुज्झ, तो मुंच आउहं । कुमारेण भणियं-न मुंचामि । किंतु अपहरंतो अनासंतो य तुब्भेहिं समं चिट्ठामि । तेहिं भणियं-एवं होउं । पहाया रयणी । उग्गओ गयणमणी । काऊण गोसकिच्चं ठिओ राया अत्थाईयाए । सद्दाविओ चोरो । आगओ सो । दिट्ठो रन्ना । अहो ! उदारो त्ति चिंतियमणेण । एरिसो वि चोरियं करेइ त्ति जंपियं मंति-पमुहेहिं । रन्ना वुत्तं-भो ! ओसरह तुब्भे । अहमेयं किंचि पुच्छामि । ओसरिओ लोओ । सुहासणत्थो भणिओ कुमारो रन्ना-भो ! को तुमं ? ति । तेण वुत्तं-कम्मओ चेव अवगए किं पुणरुत्त-पुच्छाए ? । रन्ना भणियं-परोप्पर-विरुद्धं ते चरियं ति पुच्छामि । कुमारेण चिंतियं-'नूणं विन्नाओ रन्ना रयणि-वुत्तंतो, ता एवमुल्लवइ । गुरुत्थाणिओ य एसो, अओ जहट्ठियमेव साहेमि'त्ति चिंतिऊण मग्गिऊण य देवीए अभयं साहिओ सव्वो वि निय-वुत्तंतो । तुट्ठेण रन्ना पुत्तो ति पडिवन्नो कुमारो । दिन्नो से महाविसओ । कया करि-तुरय-रह-पाइक्क-सामग्गी । जाओ सयल-जण-सम्मओ । चिंतियमणेण-

सयल-जय-वच्छलेहिं गुरुहिं करुणापरेहिं तेहिं अहं ।
जं पर-कलत्त-नियमं कराविओ तस्स फलमेयं ॥२४४०॥

इह लोयमित्त-सुहया चिंतामणि-कामधेणु-कप्पदुमा ।
उभय-भव-सुहकरेहिं गुरूहिं कह हुंतु सारिच्छा ॥२४४१॥

जाण गुरु-वयण-मंतक्खराइं हियए सयावि निवसंति ।
पररमणि-रक्खसीहिं ते वि य न नरा छलिज्जंति ॥२४४२॥

इय चिंतिऊण जइजण-पयपंकय-सेवणुज्जओ जाओ ।
पडिवज्जइ सम्मत्तं कमेण रणवीर-वर-कुमरो ॥२४४३॥

अन्नया सामंत-सेणावइ-पमुह-सुहड-कोडि-संकिन्नाए सहाए निसन्नस्स रन्नो महसेणस्स बालमित्तो बंधुदत्तो सेट्ठी समागओ । पणामिय-पाहुडो पणमिऊण रायाणं निविट्ठो उचियासणे । पुट्ठो रन्ना-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सेट्ठि ! सागयं ते ! । सेट्ठिणा वुत्तं-देवपायाणं पसाएण । रन्ना वुत्तं-किं चिराओ दिट्ठो सि ? । तेण वुत्तं-संववहारेण समुद्द-परतीरं पत्तोम्हि । पुणो वि पुच्छिओ कोऊहलाउलिय-माणसेण रन्ना-सिट्ठि ! दिट्ठं तए किंचि कहिं चि अच्चब्भुयं ? । तेण भणियं-देव ! सुयमेगं न उण दिट्ठं । रन्ना भणियं-किं सुयं ? । तेण भणियं-न चएमि कहिउं । रन्ना भणियं-सुयं न कहिउं तीरइ त्ति कारणेण होयव्वं । तेण वुत्तं-देव ! एवं ति । रन्ना वुत्तं-वीसत्थो होऊण साह । अलं आसंकाए । अप्पाण तुल्लो मम तुमं । तेण भणियं-देव ! जइ एवं ता सुण.

रयणीए वहंते जाणवत्ते कज्जओ अवगच्छामि-कहिं चि दीवे सुओ अच्चंत मणहरो सद्दो 'किं करेमि ? अमणुस्सा पुहई' त्ति, सुणमाणस्स मे वेगेण वोलियं जाणवत्तं । ता देव ! पुहईवयम्मि 'अमणुस्सा पुहइ'त्ति अच्चब्भुयं ति । इमं च सोच्चा ससोयं नीससियं रन्ना । पलोइया समंतओ सामंत-सेणावइ-पमुहा सुहडा । अविसओ एस अम्हं ति न किंपि जंपियमिमेहिं । नाइदूरोवविट्ठो उट्ठिओ रणवीर-कुमारो । भणियमणेण-देव ! देहि आणत्तिं जेण दंसेमि देव ! तत्थ मणुस्सं ति । रन्ना वुत्तं-साहु वच्छ ! साहु । एवं करेहि त्ति दिन्नं निय-गलग्गमाभरणं । महा पसाओ त्ति भणंतो पणमिऊण उट्ठिओ रणवीर-कुमरो । पुच्छिओ अणेण बंधुदत्तो-कत्थ सो तए सुओ ? त्ति साहिओ अणेण समुद्देसो । साहस-पहाणयाए निग्गओ खग्ग-सहाओ रणवीरो । कमेण पत्तो समुद्दतीरं । दिट्ठो तत्थ रयणकूडो पव्वओ ।

किं कल्लोल-भूयाहिं बाहिं रयणायरेण पक्खिविउं ।
रइयाइं रयण-कूडाइं तेहिं एसो रयणकूडो ? ॥२४४४॥

किं च तरंग-करेहिं इमस्स रयणाइं रयणकूडस्स ।
अणवरयं गेण्हंतो जलही रयणायरो जाओ ? ॥२४४५॥

इय चिंतंतो चित्ते कुमरो दिवसावसाण-समयम्मि ।
आलिंगिय गयणसिरिं आरूढो रयणकूड-गिरिं ॥२४४६॥

कुमरेण तत्थ दिट्ठं घण-कंचण-खंभ-पंति-दिप्पंतं ।
रयणमय-कुट्टिम-तलं फलिह-सिला-संघ-संघडियं ॥२४४७॥

पन्नत्ति-देवयाए आययणं गयण-मग्ग-संलग्गं ।
इंतेहिं जंतेहिं जणेहिं दुस्संचरं निच्चं ॥२४४८॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

खयर-नरनाह-मंडलिय-मंति-सामंत-सेट्ठि-पमुह-जणा ।
पन्नत्ति-देवयं पूईऊण सेवंति सकलत्ता ॥२४४९॥

सोहग्गं आरोग्गं रज्जं विज्जं तणुब्भवं विभवं ।
अन्नं पि वंछियत्थं तुट्ठा सा देइ तेसिं पि ॥२४५०॥

तत्थ भवणे पविट्ठो कुऊहलाउलिय-लोयणो कुमरो ।
पन्नत्ति-देवयं पणमिऊण खणमेक्कमुवविट्ठो ॥२४५१॥

रयणि त्ति कयावस्सगो पसुत्तो तत्थेव । अइक्कंता रयणी । उट्ठिओ एसो । कयं गोसकिच्चं । निज्झाइया दिसि-पहा । दिट्ठा पुव्व-दिसाए धूली । थेव-वेलाए महंतं आस-साहणं । तं मज्झे आस-विमाणं । तत्थ तट्ठ-कुरंग-लोयणा कन्नगा समागया देवयायणं । अवयरिऊण विमाणाओ गया पन्नत्ति-देवया-समीवं । वंदिऊण पन्नत्तिं ठिया कंचि कालं । दिट्ठोऽणाए रूवेण अमरो व्व कुमारो । मिलिया दोण्हं पि परोप्परं दिट्ठी । न बुल्लाविओ इमीए । ससिणेह त्ति वियाणिया कुमरेण । मज्जिऊण विभूईए पूइया कन्नगाए पन्नत्ती । वित्थरिओ[२४] पुरओ विविह-फल-नेवज्ज-बंधुरो बली । विहियं दुवेहिं पि भोयणं । एवं नीसेसं दिवसावस्सयं कयमेएहिं, केवलं असंभासेण परोप्परं जाव रयणीए अत्थुयं सयणेज्जं ननु वज्जइ एसा । घुम्मंति से निद्दाए लोयणाइं ।

एत्थंतरे भणियं रणवीरिण-भणामि किं च निल्लज्जयाए अहं । को पुण तुम्ह महाणुभावाण वि एस एरिसो वुत्तंतो ? । नीससियं, न जंपियं इमीए । कुमारेण वुत्तं-कहियमिणं तुमए अहं पुण अत्थं नावगच्छामि । तीए भणियं-केरिसी परायत्ताण महाणुभावया ? । कुमारेण भणियं-कहं परायत्तं त्ति नावगच्छामि । कन्नगा कुमारमालोइऊण रोविउमारद्धा । समासासिया सहीए । भणियं अणाए-महाभाग ! सुण इमीए[२५] वुत्तंतं ।

गंगा-जउणा-जोगं नीले गयणम्मि धवल-किरणेहिं ।
[२६]उवसंसिउं वियड्ढो वेयड्ढो नाम अत्थि गिरी ॥२४५२॥

तत्थत्थि सुवित्थिन्नं सुवन्न-पायार-पवर-पेरंतं ।
नह-लच्छी-लीला-[२७]नेउरं व लीलापुरं नयरं ॥२४५३॥

तम्मि नमंत-निरंतर-विज्जाहर-मउलि-मिलिय-पयकमलो ।
जयसिरि-लीलानिलओ लीलाचिंधो त्ति नरनाहो ॥२४५४॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तस्स धूया एसा लीलावई कन्नगा य। इमीए जेट्ठ-बहिणी लीलादेवी। सा य परिणीया लच्छिपुर-सामिणा किसोर-विज्जाहरेण। सो पणट्ठो वज्जिय-लज्जो विज्जाहर-समरे। उवहसिओ सेस-विज्जाहर-भडेहिं। लज्जिया इमीए भगिणी लीलादेवी। तं पिच्छिऊण चिंतियं इमीए- ममावि एरिसो भत्ता न होइ तहा करेमि त्ति। तायं पुच्छिऊण आगया एत्थ। आराहिया अणाए पन्नत्ती देवया। जाया वराभिमुही। मग्गिया इमीए- भयवइ! मा मज्झ अमणुस्सो भत्ता होज्ज। पडिसुयं देवयाए, भणियं च- वच्छे! रणवीरो ते भत्ता भविस्सइ, किंतु अत्थि तुहाभिओगिय-कम्म-सेसं। तदुदएण छम्मासं ते किलेसो होही। तओ न तए संतप्पियव्वं, जओ तं किलेसं सो चेव ते भत्ता पणासिस्सइ। एयं सोऊण पहट्ठा वि दूमिया एसा। गया स-नगरं। ठिया कंचि कालं।

अन्नया अरुणोदए दिट्ठा मए एसा विद्दाण-वयण-कमला। पत्थावे पुच्छिया कारणं। बाह-जल-भरिय-लोयणाए साहियं अणाए- सहि! वसंतलीले! अज्ज सुविणए चिय केणावि महा-विगरालेण नीयाऽहं समुद्दतीरं। दिट्ठो य तत्थेगो मए कावालिगो। भणिया अहं तेण-सुंदरि! अहं आयाससिद्धी नाम [34]महावयग-चूडामणी। साहिओ मए कन्ना-रयणाकरिसगो दिव्व-मंतो। तेण सव्वुत्तम त्ति आणिया तुमं। ता पसयच्छि! पसायं काउं पडिवज्ज मं गुरुसिणेहं। भुंजसु मणहरे भोए। तिजयस्स वि सामिणी होसु। मए भणियं-महावयगस्स विरुद्धमेयं। तेण भणियं- किं तुह इमीए चिंताए ?। विरुद्धमविरुद्धं वा अहं चेव जाणामि। एवं भणमाणो वि न इच्छिओ सो मए। तेण गहिया कत्तिगा। धाविओ मम सम्मुहं। मए भणियं-अमणुस्सा पुहइ त्ति। अन्नहा कहं तुममेवं ववहरसि ?। तओ 'अधन्ना तुमं जा अच्चंताणुरत्तं ममं एवं अवहीरेसि। तहा वि न [35]मिल्लेमि एत्थाणुबंधं, छम्मासेहिं आगरिसियव्वा मए तुमं'ति भणमाणेण मोहिया अहं अणेण। थेव वेलाए दिट्ठो एत्थ अप्पा, निरूजा य जाया। ता तक्केमि तं एयं भयवई-वागरणं। एयमित्थ कारणं। एवं कहिऊण विसन्ना एसा। मए चिंतियं-अवितहो पन्नत्ति-देवयाएसो। न अन्नहा काउं तीरइ। ता एत्थ इमं पत्तयालं देवयाए चेव समीवे चिट्ठम्ह जेण तप्पभावेण वोलेइ उवसग्गो।

तओ अम्हे इहागया। जाव इहावि सो चेव वुत्तंतो।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आगरिसिज्जइ एसा पइदिणं ति । एएण कारणेणं जंपियमिमीए- केरिसी परायत्ताए महाणुभावय त्ति । एयं सोऊण हरिसिओ रणवीरो । भणियं अणेण- मा उव्वेयं उव्वहसु । नेह ममं तत्थ जेण तस्स दुरप्पणो दंसेमि दुव्विलसिय-फलं ति । तीए भणियं- अत्थि एयं, किंतु विसमो एस कावालिगो । रणवीरेण भणियं- अलं तस्स विसमत्तणेण । नेह ममं तहिं ति । तीए चिंतियं- सो चेव एसो रणवीरो भविस्सइ । अभिरमइ सामिणीए इमम्मि दिट्ठी । उदार-धीरो एसो । पुन्ना य पायेण छम्मासा । ता जुत्तमेयं ति चिंतिऊण जंपियं इमीए- एवं करेम्ह । परितुट्ठो रणवीरो । आगओ मंताहवण-समओ । चलियाओ विज्जाहरीओ । नीओ ताहिं रणवीरो । मुक्को एक्क-पासे । आढत्तो कावालिगेण पुव्व-वइअरो । पुव्वं व जंपियं इमीए-'अमणुस्सा पुहइ' त्ति । एवं सोऊण उट्ठिओ रणवीरो । भणियमणेण- कहं देवे चंडमहासेणम्मि पहवंते अमणुस्सा पुहइ ? त्ति ।

रणवीर-कुमारेण पुण वि वुत्तु, कावालिगु कवडनिहाणु धुत्तु ।
चिरकालु करेविणु बहु अकज्जु, रणकारणि संपइ होहि सज्जु ॥२४५५॥

कावालिगु निसुणिवि कुमर-वयणु, ठिउ सम्मुहु रोसारुणिय-नयणु ।
तडि-तेय-तरल-कत्तिय-करालु, सो कुमरिण दिट्ठउ नाइ कालु ॥२४५६॥

ता कुमरु वि [१०]मेल्लइ खग्ग-दंडु, करि धरिवि छुरिय ढुक्कउ पयंडु ॥
जे सत्त-गुणुत्तम-नर हवंति, असमाण-जुज्झु ते न हि करंति ॥२४५७॥

वग्गंति दोवि हक्कंति दोवि, पहरंति दोवि वंचंति दोवि ।
ओहट्टिवि वेगिण मिलहिं बे वि, उप्पइवि नहंगणि पडहिं बे वि ॥२४५८॥

कुमरेण निवाडिओ तो कमेण, कावालिगु उक्कड-विक्कमेण ।
पावेण पडणु धम्मिण जइत्तु, जं वयणु एउ सव्वओ पवित्तु ॥२४५९॥

सुर-सिद्ध-खयर तो जायतुट्ठि,
कुमरोवरि मेल्लहिं[११] कुसुम-वुट्ठि ।
गयणंगणि जयजयकारु कुणहिं,
रणवीर-कुमर-सच्चरिउ [१२]थुणहिं ॥२४६०॥

कावालिगु पच्छायाव-सहिओ, कुमरं पइ जंपइ कोव-रहिओ ।
अहिलसिय एह जं तुह कलत्तु, तसु पावह फलु मइं एउ पत्तु ॥२४६१॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हउं पाव-परसत्तु चरित्त-चुक्कु,
परिचत्त-लज्जु मज्जाय-मुक्कु ।
पडिवन्न-वउ वि जो वय-निरासु,
इणपरि करेमि महिलाहिलासु ॥२४६२॥

ते धन्न सलक्खण सत्तवंत, सच्चरिय जगुत्तम कित्तिमंत ।
परदार पलोइवि जाहं चित्तु, न वियारलवु[33] वि पावइ पवित्तु ॥२४६३॥

इय पयडिय पाइण पच्छायाविण वागरमाणु महावइओ ।
रणवीर-कुमारिण विक्कमसारिण कोमल-वयणिहिं संठविओ ॥२४६४॥

भद्द ! न तए संतप्पियव्वं, जओ दुज्जओ मयरद्धओ, उद्दामो इंदियग्गामो, वियारोव्वणं जोव्वणं, वामो कम्म-परिणामो । इमाइं पडिवन्न-वयं पि विडंबंति पुरिसं, कारविंति मज्जाया-लंघणं, लहाविंति पइट्ठा-भंसं । तथाहि-

प्रजापतिः स्वां दुहितरम कामयत् ॥

अज्ज वि तुमं जोग्गो जो संपयं पि संपन्न-पच्छायावो पावकारिणं अप्पाणं निंदसि ।

जे अवगय-परमत्था सयमेव समायरंति नाऽकिच्चं ।
ते पुरिसा कित्तिज्जंति उत्तमा कित्ति-कुलभवणं ॥२४५५॥

जे वसण-दंसणाओ परोवएसं च पाविऊण नरा ।
विरमंति अकज्जाओ गिज्जंती उत्तमा ते वि ॥२४५६॥

वसणं संपत्ता वि हु वारिज्जंता वि सेस-लोएण ।
कुव्वंति जे अकिच्चं पुरिसा वुच्चंति ते अहमा ॥२४६७॥

कावालिगो वि कुमार-चरिय-चमक्किय-चित्तो कुमारस्स गयणगामिणिं विज्जं दाऊण गओ सिरिपव्वयं । कुमारो साहिऊण विज्जं विईय-वुत्तंतेण लीलाचिंध-विज्जाहर-नरिंदेण दिन्नं गहिऊण लीलावइं विमाणारूढो समागओ सिरिउरं । साहिओ सव्वो वि वइयरो चंड-महासेणस्स । हरिसिओ राया । सद्दाविओ णेण बंधुदत्तो, भणिओ य-मिलइ एस सद्दो ? त्ति । तेण वुत्तं- देव ! एवमेयं । अवगयं रन्नो 'रणवीरं विणा न अन्नो मणुस्सो त्ति' । कओ महंतो पसाओ इमस्स । भुंजए एसो उदार-भोए लीलावईए समं । पसरिओ लोगवाओ-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

"भोग्गं जं जस्स लोयम्मि अदिट्ठं वस्सओ भवे ।
नियमा भुंजइ तं सो अन्नदीवुब्भवं पि हु ॥२४६८॥

अह अन्नया निसाए पच्छिम-जामम्मि सुत्त-पडिबुद्धो ।
चिंतइ चित्तम्मि इमं चंडमहासेण-नरनाहो ॥२४६९॥

करि-तुरय-रह-समिद्धं नमंत-सामंत-लीढ-पयवीढं ।
संपत्त-वंछियत्थं जं परिपालेमि रज्जमहं ॥२४७०॥

जय जीव देव सामि त्ति जंपिरा पहरण-प्पहाणकरा ।
मणुयत्तणे वि तुल्ले अवरे विरयंति मह सेवं ॥२४७१॥

तं पुव्व-भवे सुकयं कयं मए किंपि ता न तं जाव ।
विलयं वच्चइ सयलं पुणो वि अज्जेमि ताव नवं ॥२४७२॥

अत्थेण जह विढप्पइ अत्थो घिप्पंति जह गएहिं गया ।
अज्जिज्जइ तह सुकयं सुकएण चिरंतणेण नवं ॥२४७३॥

एवं चिंतंतस्स रन्नो पहाया रयणी । समुग्गओ कमलायर-विबोह-विहियायरो दिवायरो । उज्जाणवालेणाऽऽगंतूण विन्नत्तो राया- देव ! उज्जाणे समागओ गंभीर-देसणा-गज्जि-मणहरो जलहरो व्व गुणहरो नाम [३४]गणहरो । गओ राया तव्वंदणत्थं । वंदिऊण तं निसन्नो पुरओ । पारद्धा गुरुणा धम्मदेसणा-

लद्धूण माणुसत्तं विसयासत्तो न जो कुणइ धम्मं ।
रोहण-गओ वि रयणं मोत्तुं सो गेण्हए उवलं ॥२४७४॥

तो संविग्ग-मणेणं रन्ना नमिऊण जंपियं-भयवं ! ।
पव्वज्जा-गहणेणं सहलं मणुयत्तणं काहं ॥२४७५॥

गुरुणा वुत्तं- मा पडिबंधं करेह त्ति । गंतूण गिहं नत्थि अन्नो पुत्तो त्ति ठविऊण रज्जे रणवीरं पवन्नो दिक्खं । रणवीरो य सयल-भूवाल-पणय-पय-पंकओ कय-जिणिंद-धम्मप्पभावणो पालए रज्जं । कयाइं तम्मि नयरे पयट्टं महंतं पलीवणं । न नियत्तए कहं पि । आउलीभूओ पउर-जणो । तओ जइ न मए परकलत्तं कामियं ता उवसम भयवं जलण !, न अन्नह त्ति सविऊण सित्तं तहिं सलिलं चुल्लएहिं तं रणवीर-नरिंदेण । उवसंतं तक्खणा चेव । अन्नया जायं दारुणं असिवं । तं पि पुव्वुत्त-सवह-साविय-सलिलाभिसेएण नयरस्स उवसामियं । पत्ता

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परदार-सहोदरो त्ति कित्ती "रन्ना । सुरा वि किंकरत्तं कुणंति त्ति जाओ एयस्स गरुओ जणाणुराओ ।

एगया गयकंधराधिरूढेण रन्ना दिट्ठा रायमग्गे संचरंता चोर-भय-विमोइया मुणिणो । पच्चभिजाणिऊण वंदिया सविणयं । ताण अणुमग्ग-लग्गो गओ वसहिं । निसन्नो पुरओ, भणिउं पवत्तो य- भयवं ! अवितह-वयणा तुब्भे । तुब्भेहिं 'भविस्ससि सयल-संपया-भायणं'ति जं आइट्ठं तं तह त्ति जायं । जं च परकलत्त-नियमं काराविओ अहं, तस्स दिट्ठं विसिट्ठं फलं इहावि मए । मुणीहिं वुत्तं- महाराय !

तियस-कय-सन्निहाणं सुर-नर-सिवसोक्खं-अक्खय-निहाणं ।
दुग्गइ-दार-पिहाणं सीलं सयल-व्वय-पहाणं ॥२४७६॥

विप्फुरइ पहावो ताव इत्तिओ देसओ वि सीलस्स ।
जं सव्वओ वि सीलं माहप्पं तस्स किं भणिमो ? ॥२४७७॥

वेरग्गोवगएणं भणियं रन्ना विवज्जिउं रज्जं ।
संपइ तुम्ह समीवे पडिवज्जे सव्वओ सीलं ॥२४७८॥

तो लीलावइ-पुत्तं रणसेणं ठाविऊण रज्जम्मि ।
विहिपुव्वं पडिवन्नो चरणं रणवीर-नरनाहो ॥२४७९॥

सुत्तत्थ-पढण-निरओ तवच्चरण-करण-उज्जुत्तो ।
अण्हाण-केसलुंचण-भूसयण-किलेसिय-सरीरो ॥२४८०॥

तह वि हु लायन्नं वहइ किंपि न कित्तिमं महासत्तो ।
रेणुकण-गुंडियं पि हु कणगं किं झामलं होइ ? ॥२४८१॥

गाम-नगरागराइसु रणवीर-महारिसी विहरमाणो ।
अणुराय-परवसाहिं पत्थिज्जइ पंकयच्छीहिं ॥२४८२॥

तह वि न पावइ खोहं गुणाइरित्ताओ निय-चरित्ताओ ।
मेरु व्व सठाणाओ समीर-लहरीहिं हम्मंतो ॥२४८३॥

इय अकलंकं सीलं सुइरं परिपालिऊण रणवीरो ।
संलेहण-दुग-पुव्वं पज्जंते अणसणं काउं ॥२४८४॥

मरिऊण समाहिपरो पाणयकप्पम्मि सुरवरो जाओ ।
तत्तो चुओ समाणो कमेण मोक्खं च संपत्तो ॥२४८५॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जो मेहुण-विणिवित्तिं काउं कम्मं समीहए पुरिसो ।
नरय-पवेस-दुवारं परिग्गहो तेण मुत्तव्वो ॥२४८६॥

रमणीयणम्मि रागं विणा न संभवइ मेहुणं जम्हा ।
मुच्छा-ममत्त-राया परिग्गहस्सेव पज्जाया ॥२४८७॥

जं च परिग्गह-निग्गह-भणणेणं मेहुणं पि पडिसिद्धं ।
चाउज्जामो धम्मो तेणं चिय कारणेण भवे ॥२४८८॥

दुक्ख-विसरुक्ख-मूलं जत्तो मणुओ महंतमारंभं ।
कुणइ असंतुट्ठमणो परिग्गहं तं परिच्चयह ॥२४८९॥

देव-गुरु-धम्म-तत्तं कज्जाकज्जं हियाहियं सम्मं ।
चेयन्न-सुन्न-चित्ता न मुणंति परिग्गह-ग्गहिला ॥२४९०॥

सारीरियाइं दुक्खाइं जाइं जाइं च मण-समुत्थाइं ।
सव्वाण ताण हेउं परिग्गहं बिंति तित्थयरा ॥२४९१॥

जह जह वड्ढइ बाहिं परिग्गहो मोह-बहुल-हियस्स ।
तह तह नरस्स अंतो वुड्ढिं पावेइ पावभरो ॥२४९२॥

जीवो भवे अपारे गरुय-परिग्गह-भरेण अक्कंतो ।
दुह-लहरि-परिक्खित्तो बुड्डइ पोओ व्व जलहिम्मि ॥२४९३॥

धम्माराम-खयं खमा-कमलिणी-संघाय-निग्घायणं,
मज्जाया-तडिपाडणं सुह-मणोहंसस्स निव्वासणं ।
वुड्ढिं लोह-महन्नवस्स खणणं सत्ताणुकंपा-भुवो,
संपाडेइ परिग्गहो गिरि-नई-पूरो व्व वड्ढंतओ ॥२४९४॥

जो गरुयारंभकरं परिग्गहं परिहरेइ संतुट्ठो ।
सो होइ सयल-कल्लाण-भायणं देवदत्तो व्व ॥२४९५॥

तहाहि-

[५. परिग्रहविरतौ देवदत्त-कथा]

अत्थि इह जंबुदीवे भारहखित्तम्मि कासि-विसयम्मि ।
वाणारसि त्ति नयरी नयरिद्धि-विसिट्ठ-जणकिन्ना ॥२४९६॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तीए नमंत-सामंत-मउलि-मणि-किरण-छुरिय-पयवीढो ।
जणिय-रिउरमणि-विरहो नामेणं ढढरहो राया ॥२४९७॥

रेहंति दिसवहुओ निचियाओ जस्स जस-पयावेहिं ।
धवलारुणेहिं चंदण-घुसिणेहिं रंजियाओ व्व ॥२४९८॥

तस्स मणे मणिमय-दप्पणि व्व विमले सयावि संकंता ।
सीलाइ-गुणक्कंता ससिकंता नाम वर-कंता ॥२४९९॥

तत्थऽत्थि दत्त-नामो सुवन्न-कोडीण एक्कवीसाए ।
सामी सम्मदिट्ठी विसिट्ठ-चरिओ पवर-सिट्ठी ॥२५००॥

तस्स सुजस त्ति भज्जा निरवज्जा विप्फुरंत-गुरु-लज्जा ।
निम्मविय-धम्म-कज्जा गुरु-पयपंकय-नमण-सज्जा ॥२५०१॥

संते वि रयण-कंचण-विणिम्मिए भूसणाण पब्भारे ।
सा बहुमन्नइ निच्चं एक्कं चिय भूसणं सीलं ॥२५०२॥

पुव्वभवोवज्जिय-पवर-पुन्न-संपन्न-वंछियत्थाण ।
ताणं तणओ जं नत्थि तेण दम्मिज्जए हिययं ॥२५०३॥

आराहिया य संभवजिण-भवण-पइट्ठिया सुय-निमित्तं ।
दुरियारि-देवया तेहिं तीए तुट्ठाइ तो भणियं ॥२५०४॥

होही गुण-रयण-निही सव्वुत्तम-पुन्नभायणं पुत्तो ।
नवरं तुम्ह भविस्सइ कित्तिय-कालं पि तव्विरहो ॥२५०५॥

इय देवयाए वयणं सोउं संजाय-गरुय-हरिसो वि ।
निय-पिययमाए सहिओ किंचि विसन्नो मणे सिट्ठी ॥२५०६॥

पहाण-सुविणय-सूइओ पाउब्भूओ सुजसाए गब्भो, नवण्हं मासाणं [15]अद्धट्ठमाण-राइंदियाणं पज्जंते समुप्पन्नो सयण-जणाणंदेण सह नंदणो । पारद्धं वद्धावणयं ।

वज्जंति निरंतर तूर सत्थ,
विय़रंति लोय तंबोल हत्थ ।
बज्झंति वारि तोरण पसत्थ,
दिज्जंति जणह मणवंछियत्थ ॥२५०७॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सिच्चंति घरंगण पहरिसेण,
घणसार-घुसिण-चंदणरसेण ।
दिज्जंति पउर-घय-सालि-दालि,
मयनाहि-तिलय किज्जंति भालि ॥२५०८॥

थणबद्ध-पघोलिर-तार-हार, पायडिय-विविह-करणंगहार ।
घण-कुंकुम-कद्दमि घर-दुवारि,खुप्पंत-चलण नच्चंति नारि ॥२५०९॥

एवं मासं जाव कए वद्धावणए मास-पज्जंते य पारद्धे नाम-करणूसवे सयल-जण समक्खं विविह-रयणाहरण-भूसिय-सरीरा विसेसुज्जल-वेसा सुय-दंसणुक्कंठियस्स सिट्ठिणो जाव कर-संपुडे संपाडेइ सुयं सुजसा, ताव तीए बला बाहुवल्लीओ मोडिऊण अवहडो बालओ केणावि अदिट्ठेण । तओ सुजसा सुय-विओग-सोग-भरक्कंता परसु-निक्कत्त[१७]-चंपयलय व्व पडिया झड त्ति धरणीए । सेट्ठी वि तहाविहमसमंजसं दट्ठुमचयंतो व्व मुच्छा-निमीलियच्छो मोहमुवगओ । बंधुजणो वि अक्कंद-सद्द-गब्भिणं पयट्टो तेसिं सिसिरोवयारेहिं[१८] । कहवि लद्ध-चेयणो सेट्ठी विलविउमारद्धो । तथाहि-

काऊण बहु-किलेसे हा वच्छ ! मणोरहेहिं विविहेहिं ।
संपत्तो कह मए रोरेण महानिहि व्व तुमं ॥२५१०॥

केणावि अकारण-वेरिएण करुणा-विमुक्क-हियएण ।
मज्झ अउन्नेहिं कहं एक्कपए चेव अवहरिओ ? ॥२५११॥

दाऊण इमो पुत्तो मज्झ अपुत्तस्स दिव्व ! जं हरिओ ।
अंधस्स नयण-जुयलं काऊण तमुक्खयं तुमए ॥२५१२॥

हा दिव्व ! मह विलीयं किं दिट्ठं जं तए सुयमिसेण ॥
आरोविऊण भवणे कप्पतरु एस अवहरिओ ? ॥२५१३॥

जइ अवहरिउं पुणरवि हय-विहि ! तुमए विचिंतियं आसि ।
ता तणय-रयणमेयं पढमं चिय अप्पियं कीस ? ॥२५१४॥

सुजसा वि कहवि संपत्त-चेयणा सोय-सिढिल-सव्वंगा ।
विलुलंत-कुंतलब्भत्त-कुसुम-कत्थूरि महिवट्टा ॥२५१५॥

घण-बाह-सलिल-बिंदूहिं निवडिरेहिं थणत्थले हारं ।
करयल-पहार-तुट्टं अणुसंधंति व्व विलवेइ ॥२५१६॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हा चंदवयण ! हा कमलनयण ! हा वच्छ ! लच्छि-कुलभवण ! ।
हा निय-वंस-विभूसण ! हा किसलय-अरुण-कर-चरण ॥२५१७॥

खिविऊण ममं दीणं दुस्सह-सोयानलम्मि पजलंते ।
अगणिय जणणि-सिणेहो पुत्त ! तुमं कत्थ पत्तो सि ? ॥२५१८॥

निल्लक्खणा अहं चिय निब्भग्ग-सिरोमणी अहं चेव ।
जं परिहरिऊण ममं वच्छ ! तुमं कत्थ वि गओ सि ? ॥२५१९॥

हा तणय ! जणणि-वच्छल ! जीवंती लोयणेहिं एएहिं ।
किं तुज्झ वयण-कमलं कयाइ पुणरवि पलोइस्सं ॥२५२०॥

खणंतरे य गयणयल-गयाए कुलदेवयाए वुत्तं- भो भो ! किमेवं सोयमुव्वहह ? । जओ-

सयल-सुरासुरेहिं पि दुरइक्कमो कम्म-परिणामो । ता अवलंबेह धीरयं । तहा जो विसम-सप्प-दट्ठं रायसुयं वीस-वरिस-पज्जंते जीवाविस्सइ, सो अम्ह नंदणो इय मणे धरह । एवं सोउं पि सोय-सायरावगाढाइं दो वि कालं गमंति । इओ य भद्दसालपुरे एगवीस-सुवन्न-कोडि-सामी भद्दो सेट्ठी, भद्दा से भारिया । दुन्नि वि परम-सावगाणि । निरवच्चो त्ति संतावमुव्वहइ सिट्ठी । भद्दाए भणिओ- किमेवं संतावमुव्वहसि ? । अन्नं परिणेसु । सिट्ठिणा भणियं- तुह अवच्चेण मे निव्वुइ । तओ तीए आराहिया कुलदेवया । तुट्ठाए तीए भणिया भद्दा-भद्दे ! नत्थि तुह गब्भ-संभवो । जइ भणसि ता अन्नं तक्खणुप्पन्नं सुयं संपाडेमि । भद्दाए भद्द-सिट्ठि-सम्मए वुत्तं- एवं करेसु । आणिऊण समप्पिओ देवयाए दत्त-नंदणो । गूढगब्भा मे घरिणी पसूय- त्ति भणंतेण भद्देण कयं वद्धावणयं । देवयाए दत्तो त्ति विहियं तस्स देवदत्तो त्ति नामं । वड्ढिओ देहोवचएणं कलाकलावेण य । अवि य,

चाई भोई सदओ सूरो सरलो सहाव-गंभीरो ।
लायन्न-पुन्न-देहो पच्चक्खो पंचबाणो व्व ॥२५२१॥

बालत्तणओ वि इमो गुरु-पयमूले पवन्न-सम्मत्तो ।
कुणइ तिकालं जिण-पडिम-पूयणं सेवए मुणिणो ॥२५२२॥

निसुणइ पवयण-सारं धण-बीयं ववइ सत्त-खित्तीए ।
साहम्मिएसु रज्जइ विहल-जणुद्धरणमायरइ ॥२५२३॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अह अन्नया पयट्टो महु-समओ जणिय-तरुण-जण-पमओ ।
नच्चंत-लय-निवहो व्व पवण-चल-किसलय-करेहिं ॥२५२४॥

सहयार-मंजरीओ सहंति परिभमिर-भमर-सहियाओ ।
मयणानल-जालाओ व्व जम्मि पसरंत-धूमाओ ॥२५२५॥

उत्तर-दिसा-पसत्तं सूरं दट्ठूण खेय-विहुराए ।
दाहिण-दिसाइ पसरइ नीसासो इव मलय-पवणो ॥२५२६॥

उद्दाम-काम-परवस-माणिणि-माणप्पवास-पडहो व्व ।
सहयार-काणणेसुं वियंभिओ परहुया-सद्दो ॥२५२७॥

जग्गविय-जोव्वण-मओ सुव्वइ सव्वत्थ चच्चरी-सद्दो ।
रज्जाभिसेय-तूरं व कुसुमकोदंड-नरवइणो ॥२५२८॥

एवंविहे वसंते मयण-महूसव-पलोयण-निमित्तं ।
उज्जाणे संपत्तो नयर-जणो परियण-समेओ ॥२५२९॥

देवदत्तो वि मित्त-विंद-परिगओ तत्थ पयट्टो विचित्त-कीलाहिं कीलिउं । कंदुग-कीलाहि कीलंतेण तेण सुओ पुरओ काए[१९] वि कन्नगाए परियणस्स हाहारवो जहा- अत्थि को वि सत्तसत्तमो सप्पुरिसो जो इमिणा दुट्ठ-विज्जाहरेण निज्जमाणिं अम्ह सामिणिं रक्खेइ ? । देवदत्तेण समुप्पन्न-कारुन्नेण कणय-कंदुगेणेव तहा पहओ मम्मप्पएसे खेयरो जहा तस्स तव्वेयणा-विहत्थस्स हत्थाओ निवडिया सरोवरोवरि कन्नगा । बुड्डंती बाहाए घेत्तूण कणय-सिलायल-विउलेण निय-हियएण नवुब्भिन्न-थण-मणहरं तीए हिययं संपीडंतेण देवदत्तेण उत्तारिया जलाओ । परितुट्ठो कन्नगा-परियणो । पुणो पुणो साहिलासं तीए पलोइज्जमाणो पच्चुवयार-भीरु-हियओ गओ अन्नत्थ देवदत्तो । यतः-

इयमुच्चधियां विजृंभते महती कापि कठोर-चित्तता ।
उपकृत्य भवंति निःस्पृहाः परतः प्रत्युपकारभीरवः ॥२५३०॥

कन्नगा वि णीया सयणेहिं सगिहं ।

नवरं सलिलुत्तारण-समए संपत्त[२०]-गाढ-जोगाण ।
हिययाण परावत्तो संजाओ ताण दोण्हं पि ॥२५३१॥

एगया उववणे कुसुम-सेज्जा-निसन्नस्स तं चेव चंद-सुंदर-मुहि-कन्नगं चिंतयंतस्स वयंस-कय-कयलिदल-पवणस्स देवदत्तस्स

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

समीवमागया कन्नगाए पियसही पियमई । निसन्ना पुरओ भणिउं पवत्ता-सेट्ठिपुत्त ! अत्थि एत्थ एक्कवीस-सुवन्न-कोडि-सामी सामदेवो सेट्ठी । गुणसिरी से भज्जा । ताणं च अपुत्ताणं एक्का चेव गुणमई कन्ना । दुट्ठ-विज्जाहरेण हीरमाणी रक्खिया तुमए । सा य गया निय-गेहं अणवरयं दीण-मुक्क-नीसासा । कत्थ वि रइमलभंती परिचत्तासेस-वावारा रहसि मए संलत्ता- पियसहि ! संताव-कारणं किं ते ? । तीए वि कहियमेयं-सहि ! मह हिययम्मि गुरु-दुक्खं ।

निय-जीविय-निरवेक्खं जं जीविय-दायगस्स गुणनिहिणो ।
तस्स अकयन्नुयाए पच्चुवयारो मए न कओ ॥२५३२॥
निय-कंठ-कंदलाओ वत्थाभरणाइं तस्स पट्ठविउं ।
कीरउ पच्चुवयारो संपयमवि भइणि ! किं नट्ठं ? ॥२५३३॥

तीए वुत्तं-जं मज्झ तेण सुहएण जीवियं दिन्नं ।
तं चेव तस्स दिज्जइ जइ तत्तो पडिकयं होइ ॥२५३४॥

हसिऊण मए भणियं- पियसहि ! तं चेव देसु किमजुत्तं ? ।
तो इयरीए भणियं-दिन्नं चिय सहि ! मए एयं ॥२५३५॥

इमस्स अत्थस्स संवायणत्थं निय-कंठ-कंदलाओ उत्तारिऊण इमं पसरंत-कंति-कडप्प-कय-तिमिरावहारं समप्पिऊण पेसिया तुम्ह पासं ।

ता सुहय ! गुणाहारं लोउत्तर-चित्त-मणहरं हारं ।
हिययं व मह सहीए निय-हियय-विभूसणं कुणसु ॥२५३६॥

घेत्तूण देवदत्तो वि तोस-वियसंत-माणसो हारं ।
भुय-जुयलं व पियाए आरोवइ अप्पणो कंठे ॥२५३७॥

जणइ चंद-चंदण-कयलीदल-कुसुमसत्थरेहिं न ।
जो संतावो उवसंतो इमिणा हारेण सो नट्ठो ॥२५३८॥

अप्पेइ पियमईए कंठाभरणं सुवन्न-रयणमयं ।
भणइ इय निय-सहीए समप्पियव्वं इमं तुमए ॥२५३९॥

कहियव्वं तह एयं जह- एस जणो दुहं गमइ दियहे ।
तुममलहंतो हंसो व्व नलिणिमुप्फुल्ल-कमल-मुहिं ॥२५४०॥

तओ पहिट्ठ-हियया गया पियमई । कहिऊण सव्वं गुणमईए समप्पियं कंठाभरणं । परितुट्ठाए ठावियं कंठे इमीए । एवं अन्नुन्न-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परत्थ-पयत्थ-पेसणेण पवड्ढमाण-मण-पमोयाण ताण गएसु कइवय-दिणेसु सामदेवेण सयं गंतूण घरं भणिओ भद्द सिट्ठी- अम्ह पुव्वं पि तुह सुयस्स निय-धूयं दाउं मणं आसि । संपयं पुण खयराओ रक्खंतेण इमिणा विक्कमेण किणीया एसा । ता पडिच्छ तुमं सुयस्स जुग्गं मे धूयं । पडिच्छिया सा भद्द-सिट्ठिणा । वत्तो वीवाहो । भुंजए भोए गुणमईए समं देवदत्तो । कयाइ जिन्नुज्जाणे गाढप्पहार-विहुरो कंठ-गय-पाणो दिट्ठो देवदत्तेण जोगी । सत्थीकओ भणिउं पवत्तो- जोगप्पा नाम जोगीऽहं । जोगसिद्धी मे भज्जा । कायसिद्धि-निबंधणं आउवुड्ढि-कारणं काल-वंचणा-पवणं पवण-निरोहाईयं जोग-मग्गं गुरूवइट्ठं अणुचिट्ठंतो जाव चिट्ठामि ताव मिलिओ मे जोगसारो जोगी । कया तेण मए सह कवड-मित्ती । नत्थि जोगीणं अकज्जं अखज्जं अपेज्जं अगम्मं च किंचि त्ति भणंतेण कराविओ हं मज्जपाणं । ममं मज्ज-मत्तं गाढप्पहारेहिं पहणिऊण मओ त्ति मुत्तूण घित्तूण मे भज्जं जोगसिद्धिं पणट्ठो जोगसारो । देवदत्तेण वुत्तं- भद्द ! अणुचियमिणं मज्ज-पाणं । जओ-

नच्चइ गायइ पहसइ पणमइ परिभमइ सुयइ वत्थम्मि ।
तूसइ रूसइ निक्कारणं पि मइरा-मउम्मत्तो ॥२५४१॥

जणणिं पि पिययमं पिययमं पि जणणिं जणो विभावंतो ।
मइरा-मएण मत्तो गम्मागम्मं न याणेइ ॥२५४२॥

न हु अप्प-पर-विसेसं वियाणए मज्जपाण-मूढ-मणो ।
बहुमन्नइ अप्पाणं पहुं पि निब्भच्छए जेण ॥२५४३॥

वयणे पसारिए साणया वि विब्भमेण मुत्तंति ।
पह-पडियस्स सव्वस्स दुरप्पणो मज्जमत्तस्स ॥२५४४॥

धम्मत्थ-काम-विग्घं विहणिय-[४१]मइ-कित्ति-कंति-मज्जायं ।
मज्जं सव्वेसिं पि हु भवणं दोसाण किं बहुणा ? ॥२५४५॥

जा कायसिद्धि-बुद्धी जल-गय-ससि-बिंब-गहण-वंछा सा ।
पच्चक्खेण सरीरे विणस्सरे दीसमाणम्मि ॥२५४६॥

जं कयगं तमणिच्चं ति जुत्तिओ भंगुरत्तणे सिद्धे ।
कायस्स थिरीकरणं सुरचाव-सिरीकरण-तुल्लं ॥२५४७॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ता [४२]मोत्तूण कुबुद्धिं जीवदया-सच्च-पमुह-गुण-पवरे ।
सयल-सुह-हेउभूए जिणिंद-धम्मे मई कुणसु ॥२५४८॥

इय सोउं पडिबुद्धो जिणिंद-धम्मं पवज्जए जोगी ।
बहुमन्नइ धम्म-गुरु त्ति देवदत्तं गुरु-गुणड्ढं ॥२५४९॥ भणियं च-

जो जेण सुद्ध-धम्मम्मि ठाविओ संजएण गिहिणा वा ।
सो चेव तस्स भन्नइ धम्मगुरू धम्मदाणाओ ॥२५५०॥

वुत्तं च जोगप्पणा- अत्थि मे दुवे पढिय-सिद्धा मंता भूय-निग्गहो विस-घायणो य । महासत्त ! सत्ताणुकंपापरो तुमं इमेहिं पि परोवयारं करिस्ससि, ता गिण्हाहि इमे । देवदत्तो वि तदुवरोहेण गिण्हइ मंते । अन्न-दिणे दिट्ठा विद्दाण-वयणा गुणमई पुच्छिया देवदत्तेण- पिए ! किमुव्वेय-कारणं ? । तीए भणियं- अज्जउत्त ! सुण, अत्थि एत्थेव एक्कवीस-सुवन्न-कोडि-सामी सोमिलो सेट्ठी । सोमा तस्स भज्जा । ताणं अपुत्ताण एक्का पउमसिरी कन्ना । सा मे बालसही अज्ज पबल-भूय-वियारेण पीडिया पाण-संसए वट्टइ । तेण वुत्तं- अत्थि मे भूय-निग्गह-मंतो, ता तुह वयणेण तं पउणीकरेमि । तीए वुत्तं-महा पसाओ । गंतूण तीए कहियं सोमिलस्स । सो वि देवदत्तं घेत्तूण गओ पउमसिरी-समीवे । देवदत्तेणावि कया मंडलाइ-सामग्गी । धरिया मुद्दा । सुमरिओ मंतो । आहयं सरिसवेहिं पत्तं । हसिऊण जंपियं पत्तेण-जो हं सयल-नयर-मंतवाईहिं पि न सक्किओ मोयाविउं तं ममं मोयावेसि ? अहो ! ते मूढया । देवदत्तेण सुट्ठुयरं सुमरिओ मंतो । तप्पभाव-पराभूएण भणियं भूएण-एवं बलामोडीए मोयावंतस्स जं ते करेमि तं पेच्छेज्जसु त्ति । जंपमाणं पवण-पहयं पायव-पक्क-पत्तं व कंपिऊण पडियं पत्तं पुहवीए । दिट्ठो इमीए साहिलासं पउम-दल-दीहराए दिट्ठीए देवदत्तो । तेणावि साणुरायं पलोइया इमा । अन्नोन्न-पिच्छंताण ताण कामग्गहो सरीरम्मि सो संकंतो जायाइं जेण दोन्नि वि परवसाइं । लक्खियमिणं सोमिलेण । एयस्स कामग्गहस्स निग्गहे अहं चेव समत्थो त्ति चिंतिऊण देवदत्तस्स मत्थए अक्खयक्खेवं कुणंतेण दिन्ना पउमसिरी, परिणीया इमिणा विभूईए य । वच्चए कालो ।

कयाइ निसाए पसुत्तो पल्लंके, पच्छा पिच्छए अप्पाणं तरंतं गुरु-तरंगाए गंगाए । नूणं पुव्वावरद्ध-भूएण इह पक्खित्तो हं ति चिंतंतो

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भवियव्वयावसेण लद्ध-फलहगो लग्गो वाणारसी-परिसरे । परिस्समेण निच्चेयणो व्व चिट्ठइ । इओ य तत्थ अत्थि एक्कवीस-सुवन्न-कोडि-सामिणी कवड-कुलहरं धरण-सत्थवाह-घरिणी नागिला नाम । तीए पुत्तो सागरदत्तो जाणवत्त-भंगेण समुद्दे विवन्नो । समागया तस्स मयस्स वत्ता । चिंतियं नागिलाए तत्थुप्पन्न-बुद्धीए- पुत्त-मरण-वुत्तंतमपयासंती पुरिसंतरेणावि उप्पाईऊण पुराण-सत्थ-पन्नत्ते खेत्तजे पुत्ते रन्ना घेप्पमाणं धणं रक्खेमि त्ति । तओ तदत्थं गंगातीरि परिब्भमंतीए तीए दिट्ठो तदवत्थो देवदत्तो । रयणीए उप्पाडिऊण आणिओ निय-गेहे । कंठे लग्गिऊण रोयंती भणिउं पवत्ता- वच्छ सागरदत्त ! केरिसं अवत्थं पत्तो सि ? तुह जाणवत्त-भंगं सोऊण सोय-विहुरा अहं रयणीए कुलदेवयाए वुत्ता-मा खेयमुव्वह । तुह पुत्तो सागरदत्तो गंगाए आगमिस्सइ । तओ मए गंगातीरि गवेसंतीए तुमं दिट्ठो सि । भणिया सागरदत्त-भज्जा- पिच्छ वच्छे ! लच्छिमइ ! तुह पई । सलिल-संगेण अन्नारिसो व्व संजाओ, ता तुमए पुव्वं व निव्वियप्पं कायव्वा इमस्स सव्व पडिवत्ती । अम्मो ! जं तुमं आणेवेसि त्ति भणंती पयट्टा काउं तहेव लच्छिमई । देवदत्तो वि पेच्छामि इमं पि विहि-विलसियं ति चिंतंतो सरूवं अप्पणो अपयासंतो भुंजए भोए लच्छिमईए समं । ठिओ पच्छन्नो वरिस-तिगं । जाया दुन्नि पुत्ता लच्छिमईए । चिंतियं लोहंधलाए नागिलाए- एयम्मि पुरिसे विज्जमाणे न होइ ममायत्तं वित्तं, ता उवाएण वावाएमि एयं ति । तक्करो त्ति कओ कोलाहलो । आगया दंडवासिया । दंसिओ ताण देवदत्तो । नीओ अणेहिं रायभवणं । दिट्ठो रन्ना । चिंतियं च- न होइ इमाए आगिईए चोरो त्ति । पुच्छिओ सायरं- भद्द ! को एस वुत्तंतो ? । कहं परदोसं पयासेमि त्ति पुणो पुणो पुच्छिओ वि न किंपि जंपए जाव देवदत्तो ताव आणत्तो वज्झो । विरस-डिंडिमेण वज्जंतेण निज्जए नयरमज्झेण ।

विसमो विहि-वावारो उव्वियणेज्जो न कस्स संसारो ।
जं एरिसा वि पुरिसा लहंति एयारिसं वसणं ॥२५५१॥

अविवेओ नरनाहो अवियारा मंतिणो पहाणा य ।
निब्भग्गमिणं नयरं जमेरिसा वि हु वहिज्जंति ॥२५५२॥

एवं पयंपमाणे नायर-जणे पत्तो वज्झ-ट्ठाणं देवदत्तो । एत्थंतरे

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

डक्को उक्कडविस-विसहरेण मेहरहो नाम रायपुत्तो । आहुया बहवे मंतवाइणो । पउत्ताओ तेहिं किरियाओ । न जाओ कोवि विसेसो । तओ 'जो मह पुत्तं [४१]सप्प-दट्ठं जीवावेइ तस्स निय-धूयं कणयसिरिं अद्ध-रज्जं च देमि' त्ति उग्घोसणा-पुव्वं दवाविओ रन्ना पडहगो, वज्जंतो य समागओ तं पएसं । तं सोऊण चिंतियं देवदत्तेण-

काउं परोवयारं जसं च पुन्नं च पाविउं विउलं ।
जइ परलोयं वच्चामि एस ता किंन्न पज्जत्तं ॥२५५३॥

तओ भणिअं-भद्दा ! अत्थि ताव मे विसावहार-मंतो, डक्को य एसो रायपुत्तो भुयंगमेण । तो एयं अहं जीवावेमि जेण मे परलोय-पत्थियस्स इमं चेव संबलं होइ । भणियं अणेहिं- जइ एवं ता छिवेसु पडहगं । छित्तोऽणेण सो । नीओ रायपासं । जीवाविओ रायपुत्तो । परितुट्ठो राया सपुर-जणवओ । रन्ना भणियं- भद्द ! पुव्वं आगिइए संपयं पुण गुणेहिं विन्नाओ मए महापुरिसो तुमं, ता परिणेसु मे धूयं । मंतीहिं वुत्तं-कहं अविन्नाय-कुलक्कमस्स रायकन्ना दिज्जइ ? त्ति ।

एत्थंतरे 'सप्पडक्कं रायपुत्तं जीवावियं' सोऊण संभरिय-देवया-वयणो पत्तो दत्त-सेट्ठी । देवदत्तावहार-समणंतरमेव भद्द-सेट्ठी वि भद्दसाल-नयराओ निग्गओ । सव्वत्थ गवेसंतो समागओ तत्थ । देवदत्तं पडुच्च मम नंदणो त्ति भणियं दुवेहिं पि । रन्ना वुत्तं- अहो ! अयं कहं तुम्ह दोण्हं एक्को नंदणो ? दत्तेण वुत्तं- देव ! जायमित्तो इमो अवहडो केणावि । देवया-कहिएण अहिडक्क-रायपुत्त-जीवावणाहिन्नाणेण विन्नाओ मए वीसइम-वरिसाओ । भद्देण भणियं- देव ! संवयइ एयं, जओ न मे घरिणी-जाओ इमो, किंतु कुलदेवयाए बालओ चेव समप्पिओ । सत्तरस-वरिसाई वसिओ मह घरे, पच्छा कत्थ वि गओ त्ति गवेसंतेण वरिस-तिग-पज्जंते अज्ज दिट्ठो ।

एत्थंतरे समागया पुत्त-दुग-समेया लच्छिमई । विन्नत्तो राया-देव ! एस मे भत्ता सागरदत्तो नाम समुद्द-परतीरं पत्थिओ बोहित्थ-भंगे लद्ध-फलगो गंगाए आगओ सासुयाए दिट्ठो । जाव इमं इमिणा पुत्त-दुगं । अज्ज उण अहं निसाए पिईहरे पसुत्ता । पच्छा न याणामि किंपि संपन्नं । दिट्ठो य एसो वज्झट्ठाणं निज्जमाणो । इओ य तं पुत्त-दुगं विप्फारिय-लोयण-जुयं पसारिय-भुयं देवदत्तस्स उच्छंगमारूढं । भद्देण

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भणियं-भद्दे ! न एस सागरदत्तो किंतु देवदत्तो । रन्ना वुत्तं- कहमेयं ?। देवदत्तेण कहिओ भूयावहाराइओ चोरंकार-पज्जंतो सव्वो वि निय-वुत्तंतो । रन्ना विन्नाय-कुल-सीलेण 'अहो ! पुन्ननिहि' त्ति पसंसिऊण दिन्ना निय-धूया कणयसिरी, समप्पियं करि-तुरय-रह-वत्थाहरण-संगयं अद्ध-रज्जं, भणिया य दत्त-भद्द-सेट्ठीणो-

एक्केण देवदत्तो जाओ अवरेण वड्ढिओ एसो ।
ता दोण्हं पि हु पुत्तो न विवाओ एत्थ कायव्वो ॥२५५४॥

भणिया लच्छिमई वि हु तुज्झ पई सासुयाए जो दिन्नो ।
सो सागरदत्तो विय दट्ठव्वो देवदत्तो वि ॥२५५५॥

जा एरिसे वि पुरिसे चोरंकारं चडावए चंडा ।
सा तुमए कायव्वा भवणाओ नागिला बाहिं ॥२५५६॥

तह सामदेव-सोमिल-वणिणो विन्नाय-वईयरा तत्थ ।
घेत्तुं निय-धूयाओ संपत्ता धण-कुडुंब-जुया ॥२५५७॥

एवं स देवदत्तो दढाणुरत्ताहिं चउहिं भज्जाहिं ।
इंदो व्व अच्छराहिं अणिंदिए भुंजए भोए ॥२५५८॥

तत्तो कमेण भद्दो सुवन्न-कोडीओ एक्कवीसं पि ॥
दाऊण देवदत्तस्स गुरु-समीवम्मि पव्वइओ ॥२५५९॥

पुव्वुत्त-कणय-कोडी-सहियाओ समप्पिऊण धूयाओ ।
जे सामदेव-सोमिल-सिट्ठिवरा ते वि पव्वइया ॥२५६०॥

एवं दत्त-भद्द-सामदेव-सोमिल-सागरदत्ताणं पत्तेयं एक्कवीस-सुवन्न-कोडीओ संजायाओ । सव्व-संखाए पंचुत्तर-कोडि-सयस्स अद्ध-रज्जस्स य सामी देवदत्तो कारवेइ पुरे पुरे सुकय-लच्छि-लीलावणाइं जिण-भवणाइं । पइट्ठावए तेसु अप्पडिमाओ कणय-रयण-पडिमाओ । पूयए ताओ भुवणच्छरियभूयाहिं अट्ठप्पयार-पूयाहिं । विरएइ विहिय-पाव-विरह-जुत्ताओ रहजत्ताओ । वियरेइ साहूण कम्मवाहि-विउडणसहाइं[४४] पवर-वसहि-वत्थ-[४५]भत्त-पाणोसहाइं । लिहावए विहणिय-मोहधंसं सिद्धंतं । निम्मवेइ निम्महिय-पावसल्लं साहम्मिय-वच्छल्लं । पयट्टेइ पयडिय-सम्मवुब्भावणाओ पवयण-पभावणाओ । सम्माणेइ मणप्पमोय-जणए जणणि-जणए । विहेइ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दुत्थिए सुत्थिए । संपाडेइ निरुवयारं परोवयारं । सेवए मणोरहाणं पि अविसए पंचप्पयार-विसए । एवं तिवग्गसारं मणुय-जम्म-फलं उवभुंजंतस्स अइक्कंतो कोइ कालो ।

अह पाव-पसर-पसमण-समण-समेओ समागओ सूरी ।
नामेण विजयसिंहो परमय-मयगल-विजय-सिंहो ॥२५६१॥

सुअनाणं सम्मत्तं चरित्तमट्ठप्पयारमेक्केक्कं ।
बारसविह-तव-जुत्तं इह छत्तीसं गुणे धरइ ॥२५६२॥

जं निज्जिओ अणंगो सव्वंगोवंग-संगएण जए ।
लीलाए तेण गुरुणा मन्नेमि न किंपि तं चोज्जं ॥२५६३॥

पत्तो य देवदत्तो जणेहिं सम्मं नमंसए सूरी ।
तत्तो पुरो निसन्नो पारद्धा देसणा गुरुणा ॥२५६४॥

जिनेन्द्र-पूजा गुरु-पर्युपास्तिः सत्त्वानुकंपा प्रशमानुरागः ।
सुपात्र-दानं श्रुतिरागमस्य नृजन्म-वृक्षस्य फलान्यमूनि ॥२५६५॥

पत्थावे पुट्ठं दत्तेण- भयवं ! किं कारणं जं अम्हेहिं सुअ-विओग-दुहं पावियं ? । गुरुणा भणियं- सोम ! सुण,

आसि आसापुरे नयरे जिणधम्म-भावियमई चंदो गहवई । रेवई से भज्जा । ताणं च चंदणो नाम नंदणो । ताणि कयाइ वसंते कीलणत्थं गयाणि उज्जाणे । तत्थ कीलंतेहिं तेहिं तरुनिकुंज-मज्झाओ भएण पलायमाणं अहिणवुप्पन्न-हरिण-पोयगेण समं दिट्ठं हरिण-मिहुणं । भणियं भज्जाए- अज्जउत्त ! बालस्स मम" सुयस्स कीलणकए गिन्हाहि मणहरं हरिण-बालयं । तेणावि धाविऊण पलाइउमचयंतं गहिऊण तं समप्पियं पियाए । हरिण-मिहुणं पि तव्विओग-विहुरं महंत-दुक्खमावन्नं अवच्च-सिणेहेण । पासेसु परिब्भमंतं पेच्छिऊण वीस-पाणी-पल-पज्जंते करुणाए मुक्को तेहिं हरिण-डिंभो मिलिओ जणणि-जणयाण । एय-दुच्चरिय-पच्चयं बद्धं तेहिं अवच्च-विओग-फलं असुह-कम्मं । सो य चंदणो पत्तो जोव्वणं ।

कईया वि काणणे मुणिवरो झाणवावडो दिट्ठो ।
धम्मो व मुत्तिमंतो विउल-सिलावट्ट-विणिविट्ठो ॥२५६६॥

तो वंदिऊण विहिणा पुरओ होऊण पंजिलउडेण ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भणियं- भयवं ! वेरग्ग-कारणं तुम्ह किं जायं ? ॥२५६७॥

मुणिणा भणियं- सुण सोम ! अत्थि एत्थेव भरहवासम्मि ।
धम्म-धण-कोसभूया कोसंबी नाम वर-नयरी ॥२५६८॥

तीए य आसि सिट्ठी तावस नामो त्ति भूरि-विभवभरो ।
निच्चं पमाय-बहुलो विवेय-वियलो अकय-धम्मो ॥२५६९॥

धण-कण-कणय-कुडंबय-भवणाइ-परिग्गहम्मि गिद्धमणो ।
विहलं नर-जम्मं गमइ किंचि दाणाइ-निरओ सो ॥२५७०॥

अट्टज्झाणोवगओ मरिऊणं सूयरो समुप्पन्नो ।
नियए च्चिय गेहे तम्मि तस्स चंकम्ममाणस्स ॥२५७१॥

पुव्वाणुभूय-सयणप्पएस-दंसणवसेण संजायं ।
जाईसरणं पत्तो य पियर-कज्जम्मि पारद्धे ॥२५७२॥

रद्धप्पायाए रसवईए परिवेसणे समासन्ने ।
मज्जारीए मंसं हरियं तो सूवयारीए ॥२५७३॥

गहवइ-भएण वेला-वइक्कमं तत्थ रक्खमाणीए ।
मंस-निमित्तं पच्छन्नमेव निहओ वराहो सो ॥२५७४॥

मरिऊण तहाविह-कोव-परिगओ तम्मि चेव गेहम्मि ।
जाओ भुयंगमो गवल-भसल-ताविच्छ-सच्छाओ ॥२५७५॥

तत्थ वि तं चेव गिहं दट्ठुं भय-संभमाभिभूयस्स ।
परिणाम-विसेसेणं जाईसरणं समुप्पन्नं ॥२५७६॥

कम्म-विवागस्स विचित्तयाए गहिओ न सो कसाएहिं ।
अणुतप्पियं च तेणं पुणो पुणो नियय-हिययम्मि ॥२५७७॥

दिट्ठो घर-दासीए सप्पो सप्पो त्ति कलयलो विहिओ ।
मुग्गर-लावड-हत्था समागया तयणु कम्मयरा ॥२५७८॥

वावाईओ य तेहिं तहाविहाकाम-निज्जरा-वसओ ।
मरिऊण नियय-पुत्तस्स नागदत्ताभिहाणस्स ॥२५७९॥

बंधुमई-नामाए पियाए गब्भे सुओ समुप्पन्नो ।
जाओ समए विहियं असोगदत्तो त्ति से नामं ॥२५८०॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दट्ठूण जणय-जणणिं परियण-भवणाइ वरिस-पज्जाओ ।
भवियव्वया-वसेणं पुव्व-भवे सुमरए एसो ॥२५८१॥

चिंतियमणेण चित्ते- सुण्हा जणणी सुओ पिया जत्थ ।
तं संसार-सरूवं धिरत्थु नड-पिच्छण-सरिच्छं ॥२५८२॥

ता वहुयं वि य जणणिं सुयं च तायं कहं पयंपेमि ? ।
एएण कारणेणं पडिवन्नं तेण मूयत्तं ॥२५८३॥

जाओ य लोगवाओ अहो ! इमो मूयगो त्ति सव्वत्थ ।
एवं तस्स दुवालसमइक्कंताइं वासाइं ॥२५८४॥

तत्थ चउनाणजुत्तो समागओ समणवंद-परियरिओ ।
पाव-दवानल-मेहो मुणिनाहो मेहनाह त्ति ॥२५८५॥

इमिणा मुणिऊण मणं असोगदत्तस्स पेसिओ पासे ।
गेहम्मि नागदेवस्स वयणे कुसलो रिसी एक्को ॥२५८६॥

भणिओ य रिसी गुरुणा असोगदत्तो घरंगण-निविट्ठो ।
तुमए पयंपियव्वो- कुमार ! सुण गुरु-वयणमेयं ॥२५८७॥

तावस ! किमि[मि?]णा मोणव्वएण ? पडिवज्ज जाणिउं धम्मं ।
मरिऊण सूयरोरग जाओ पुत्तस्स पुत्तो त्ति ॥२५८८॥

गंतूण तेण रिसिणा गुरु-संदेसो निवेइओ तस्स ।
नमिउं इमिणा भणियं- कत्थ गुरु ? तो मुणी भणइ ॥२५८९॥

चिट्ठइ कुमार ! सक्कावयार-चेइयहरे गुरू धम्मं ।
[४५]वागरमाणा तो भणइ मूयगो एह गच्छम्ह ॥२५९०॥

दट्ठूण मूयगं जंपमाणमेयस्स विम्हिया सयणा ।
चिंतियमिमेहिं-गरूओ अहो ! पभावो मुणिवरस्स ॥२५९१॥

ता वच्चउ गुरु-पासे कइया सोहणतरं भवे तत्थ ।
गंतूण मूयगो तं नमइ गुरुं पुच्छए तत्तो ॥२५९२॥

भयवं ! कहं पुण तुमं मह वुत्तंतं मुणेसि ? तो गुरुणा ।
भणियं- नाणबलेणं तत्तो विम्हय-रसं पत्तो ॥२५९३॥

जंपइ असोगदत्तो नाणाइसओ अहो ! तुह अउव्वो ।
तो मेहनाह-गुरुणा कहिओ जिण-देसिओ धम्मो ॥२५९४॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सो हं असोगदत्तो पडिबुद्धो सावगत्तणं पत्तो ।
इय निय-चरियं वेरग्ग-कारणं ताव मह एयं ॥२५९५॥

अन्नं च दुल्लहबोहि त्ति बोहियव्वो अहं तए एवं ।
सुर-भव-कय-संकेओ लहु-भाया मज्झ संजाओ ॥२५९६॥

सो कहवि न पडिबुद्धो बहुप्पयारं पि बुज्झवंतस्स ।
तत्तो निव्विन्नो हं पडिवन्नो संजमं एसो ॥२५९७॥

चंदणेण भणियं- भयवं ! अवगयं वेरग्ग-कारणं । जइ परिग्गह-गिद्धाणं एवंविहाओ विडंबणाओ हुंति, ता मए परिमिय-परिग्गहेण होयव्वं । अओ कहसु कइविहो परिग्गहो हवइ त्ति ? । कहिओ गुरुणा-धण-धन्न-खेत्त-वत्थु-रुप्प-सुवन्न-दुपय-चउप्पय-कुप्प-भेएहिं नव-विहो परिग्गहो हवइ त्ति । चंदणेण पडिवन्नं असोगदत्त-मुणि-पासे परिग्गह-परिमाणं । पालए निरईयारं । इओ य अणिच्चयाए जीव-लोगस्स चंदो रेवई य काऊण जिण-धम्मं गयाणि सोहम्मं । चंदणो वि धण-भवण-सयणाइ-परिग्गहे अगिद्धो संतुट्ठ-चित्तो कुडुंब-वत्तणाइरित्तं वित्तं जिण-मुणि-जणाइ-धम्मट्ठाणेसु वियरंतो समाहिणा मरिऊण तत्थेव गओ । चंदजीवो य देवलोगाओ चविऊण तुमं दत्तो समुप्पन्नो । रेवई-जीवो य सुजसा जाया, चंदणो पुण तुम्ह नंदणो देवदत्तो जाओ । जं हरिण-मिहुणस्स हरिण-पोयगो वीस-पल-मित्तं कालं विजोजिओ तेण तुम्हं पि वीस-वासाइं पुत्त-विओगो जाओ । देवदत्तो वि अभग्ग-परिग्गह-परिमाण-फलेण किलेसं विणा वि विउल-रिद्धि-भायणं जाओ । एवं सोऊण तिण्हं पि दत्त-सुजसा-देवदत्ताणं जायं जाईसरणं । दत्तेण भणियं-

जइ एत्तियमेत्तस्स वि संजायं दुक्कडस्स फलमेयं ।
ता गरुय-दुक्कडाणं परिणामो केरिसो होही ? ॥२५९८॥

गुरुणा वुत्तं-गुरु दुक्कडाण जीवा तिरिक्ख-नरएसु ।
पावंति फलं विउलं चिरकालं तिक्ख-दुक्ख-हया ॥२५९९॥

तो दत्तेणं वुत्तं- बहु-दुक्कड-संकडं घरावासं ।
वज्जित्ता पडिवज्जे पव्वज्जं तुज्झ पयमूले ॥२६००॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अह भणइ देवदत्तो-परिग्गहो देसओ मए चत्तो ।
पुव्व-भवे संपइ पुण चयामि तं सव्वओ वि अहं ॥२६०१॥

गुरुणा वुत्तं-जुत्तं तत्तो ठविऊण निय-पए पुत्तं ।
गिण्हेइ देवदत्तो दिक्खं सह-जणणि-जणएहिं ॥२६०२॥

काऊण तवं तिव्वं तिन्नि वि पत्ताइं लंतयं कप्पं ।
तत्तो सुमाणुसत्तं लद्धूण गयाइं मोक्खं पि ॥२६०३॥

• • •

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पाठांतर :

१. अलमित्थ **ल. रा.** ॥ २. नट्ठदिट्ठा **द. पा.** ॥ ३. पढमं **ल. रा.** ॥ ४. बिय गंधा **द. पा.** ॥ ५. एसो **ल. रा.** ॥ ६. अकज्जं जइ **द. पा.** ॥ ७. ठवियम्मि **पा.**; पवियम्मि **रा.** ॥ ८. सिरिकंत-विसए **द. पा.** ॥ ९. पारद्धिट्ठाणं **ल. रा.** ॥ १०. लावन्न **ल. रा.** ॥ ११. सीलवईए **द. पा.** ॥ १२. इहं सो **ल. रा.** ॥ १३. जेण **ल. रा.** ॥ १४. विच्छिओ **ल. रा.** ॥ १५. उ **ल. रा.** ॥ १६. अतो **ल. रा.** ॥ १७. एआए **ल. रा.** ॥ १८. पहट्ठतुट्ठो **द. पा.** ॥ १९. पायार-सिहर **ल. रा.** ॥ २०. ओलंबिओ **ल.** ॥ २१. रणवीरो **ल. रा.** ॥ २२. वीरसोहा **ल. रा.** ॥ २३. पि **ल. रा.** ॥ २४. वित्थारिओ **ल. रा.** ॥ २५. इमाए **द. पा.** ॥ २६. उवदंसिउं **ल. रा.** ॥ २७. निउरं **पा.** ॥ २८. महावइग **द. पा.** ॥ २९. मिल्हेमि **ल. रा.** ॥ ३०. मेल्हइ **ल. रा.** ॥ ३१. मेल्हइ **ल. रा.** ॥ ३२. मुणहिं **ल. रा.** ॥ ३३. वियारलवो **द. पा.** ॥ ३४. गणधरो **ल.** ॥ ३५. रन्नो **ल. रा.** ॥ ३६. अद्धट्ठम **द. पा.** ॥ ३७. निक्खित्त ल. रा. ३८. सिसिरोवयारेसु **द. पा** ॥ ३९. कीए **ल. रा.** ॥ ४०. संपन्न **ल. रा.** ॥ ४१. नइ- **ल. रा.** ॥ ४२. मुत्तूण **ल. रा.** ॥ ४३. सप्पदट्ठं **द. पा.** ॥ ४४. विउट्टणसहाइं **पा.** ॥ ४८. पत्त- **ल. रा.** ॥ ४६. मे **द. पा.** ॥ ४७. वागरमाणो **पा. रा.** ॥

• • •

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नवमो पत्थावो

विप्फुरइ परिग्गह-विरमणम्मि मणुयस्स माणसं जस्स ।
संतोस-रस-निमित्तं सिद्धंतो तेण सोयव्वो ॥२६०४॥

जेसिं न मोह-तिमिरं जिण-वयण-रसंजणेण अवहरियं ।
मोक्ख-पहं सम्ममसम्मदिट्ठिणो ते न पेच्छंति ॥२६०५॥

बुड्डंति भव-समुद्दे जम्म-जरा-मरण-जलभर-रउद्दे ।
जीवा गुण-परिणद्धं जिण-पवयण-पोयमलहंता ॥२६०६॥

अजरामरत्त-जणगं जिण-वयण-रसायणं न जा पीयं ।
ताऽकम्म-वाहि-विगमेण निव्वुई जायए कत्तो ? ॥२६०७॥

मिच्छत्त-तमच्छन्ने भुवणे जिण-मइ-पईव-परिहीणा ।
जीवा अदिट्ठ-मग्गा दुग्गइ-गड्डाइ निवडंति ॥२६०८॥

लद्धुं जिणिंद-वयणं चिंता-रयणं व चिंतियत्थकरं ।
न लहंति जंतु-निवहा कयावि दोगच्च-दुक्खाइं ॥२६०९॥

न देवं नादेवं न गुरुमकलंकं न कुगुरुं,
न धर्म्मं नाधर्म्मं न गुण-परिणद्धं न विगुणं ।
न कृत्यं नाकृत्यं न हितमहितं नापि निपुणं ।
विलोकंते लोका जिनवचन-चक्षुर्विरहिताः ॥२६१०॥

सिद्धंत-मंतमायन्निऊण सवन्नु-देसियं जीवो ।
नरसुंदरो व्व जायइ विगय-महा-मोह-विस-पसरो ॥२६११॥ तहाहि-

[१. आगम-विराधनाराधनायां नरसुंदरराज-कथा]

अत्थि इह जंबुदीवे भारहखेत्तम्मि धरणि-रमणीए ।
कंचण-कंची-तुल्ला कंचण-नामेण अत्थि पुरी ॥२६१२॥

तत्थ नरसुंदरो मंदरो व्व राया महीहर-पहाणो ।
परबल-जलहिं महिऊण जेण आयड्ढिया लच्छी ॥२६१३॥

सो नाहियवाई बंध-मोक्ख-गुरु-देव-पुन्न-पावाइं ।
जीवं च न मन्नइ परभवाणुगं भूय-वइरित्तं ॥२६१४॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तस्स य पुरंदरस्स वसुललिय-लायन्न-लच्छि-पडिहत्था ।
कमल-दल-लच्छी सुरसुंदरि व्व रइसुंदरी देवी ॥२६१५॥

सुमइ त्ति तस्स मंती निय-मइ-माहप्प-विजिय-सुरमंती ।
जिणवयण-भाविय-मणो समणोह-निसेवणप्पवणो ॥२६१६॥

इओ य अत्थि चंडउरे नयरे चंडसेणो नाम सामंतो । तस्स मंत-तंत-कुसलो बाल-मित्तो अत्थि एक्को जोगी । कयाइ नरसुंदर-नरिंद-सेवा-निव्विन्नेण तेण भणिओ जोगी जहा- मे हियय-सल्ल-तुल्लं नरसुंदरं वावाएहि । जोगिणा वुत्तं- एवं करेमि । तओ तुट्ठेण तेण दिन्नं नियंगलग्गमाभरणं । सो य जोगी आगओ कंचीपुरीं, ठिओ एगत्थ मढे । अणेण कोउगप्पओगेहिं जणेइ जणस्स विम्हयं । पत्तो पसिद्धिं । सद्दाविओ रन्ना, उचियासण-निसन्नो य पुच्छिओ सविणयं- जोगिंद ! कत्तो तुमं ? । जोगिणा वुत्तं-सिरि-पव्वयाओ । तुह जोगि-जणे भत्तिं सोऊण इहागओ । पुणो वि भणियं रन्ना- अत्थि का वि दिव्व-सत्ती ? । जोगिणा वुत्तं- बाढं । तहाहि-

रत्तीए वि दिणं दिणे वि रयणिं दंसेमि सेलेऽखिले,
उप्पाडेमि नहंगणे गहगणं पाडेमि भूमीयले ।
पारावारमहं तरेमि जलणं थंभेमि रुंभेमि वा,
दुव्वारं परचक्कमत्थि न जए तं मज्झ जं दुक्करं ॥२६१७॥

एत्थंतरे नम्म-सचिवेण भणियं- जोगिंद ! गरुयं गलगज्जिं करेसि । किं गह-पव्वयप्पमुहेहिं पाडिएहिं उप्पाडिएहिं वा ? । मह बंभणी रूसिऊण गामंतरं गया । जं विणा न केवलं भवणं, भुवणं पि मे सुन्नं । तो जइ तं आणेसि ता ते सव्वं सद्दहेमि । जोगिणा सुमरिओ आगिट्ठि-मंतो। आणीया मंडए कुणंती कणिका-लित्त-हत्था बंभणी । अहो ! जोगिणो दिव्वा सत्ति त्ति पयंपमाणो पणच्चिओ नम्मसचिवो[1] । जाय-विम्हएण भणियं रन्ना- अत्थि कालवंचणोवाओ ? । जोगिणा वुत्तं- गिण्ह दिक्खं जेण तं देमि । पडिवन्ना रन्ना दिक्खा । दिन्नो उवएसो जोगिणा जहा- नियदेहे बारस-अंगुलाइं नीहरइ पविसइ दसेव पवणो । तं विवरीयं जो कुणइ स वंचए कालो ।

इय कूडब्भम-मोहिय-मणस्स नरसुंदरस्स नरवइणो ।
पाणिवह-प्पमुहासवपरस्स परलोय-विमुहस्स ॥२६१८॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वच्चंतेसु दिणेसुं विस्संभगयस्स मज्ज-मज्झम्मि ।
दाऊण विसं विसमं झत्ति पणट्ठो सयं जोगी ॥२६१९॥

राया वि विस-वियारेण पीडिओ विगय-चेयणो जाओ ।
हाहारवं कुणंता मिलिया सव्वे पहाण-जणा ॥२६२०॥

हक्कारिया अणेहिं सपच्चया मंतवाइणो बहवे ।
विस-निग्गहोवयारो सवित्थरं तेहिं पारद्धो ॥२६२१॥

नवरि संजाओ विहलो ऊसर-खित्तम्मि बीय-निवहो व्व ।
पुरिसम्मि वीयरागे तरुणीण कडक्ख-नियरो व्व ॥२६२२॥

विसन्ना मंतिणो । अक्कंद-सद्द-गब्भिणं करयल-पहय-थणवट्ट-तुट्टंत-हार-दंतुरिय-भूमियलं मिलियमंतेउरं । मओ त्ति करिणी-खंधमारोविऊण निओ मसाणं राया । ठविओ जाव चंदणागुरु-कट्ठ-निचियाए चियाए ताव उम्मिल्लिय-लोयणो तक्खणुप्पन्न-चेयणो चईऊण चियं जंपिउं पवत्तो-किमेयं ? ति । पणमिऊण भणियं सुमइ-मंतिणा-देव ! तुम्ह उग्ग-विसं दाऊण [नट्ठो] दुट्ठ-जोगी, बहुप्पयारे विस-निग्गहोवयारे कुणंताणं पि अम्ह न जाया तुब्भे सचेयणा, ता अओ परं जं कीरइ तं काउमाढत्तं । रन्ना वुत्तं- संपयं वण-पवण-संगेणावि कहं अहं निव्विसो जाओ ? । सुमइणा वुत्तं-देव ! दिव्वो जाणइ, किंतु मए एयं सुयं आसि जहा- तिव्व-तव-बलुप्पन्न-विविह-लद्धीणं मुणीणं अंग-लग्ग-पवण-संगेणावि निव्विसा हुंति जंतुणो त्ति । रन्ना वुत्तं-उवरिभाए पलोएह, अत्थि किं केवि मुणिणो ? । निउत्त-पुरिसेहिं गवेसिऊण कहियं जहा- देव ! पुप्फागरुज्जाणे संपयं चेव चंदो व्व तारएहिं, रायहंसो व्व कलहंसेहिं, सुरकुंजरो व्व कुंजरेहिं, मुणीहिं परियरिओ पवित्त-चरिओ दिव्व-नाणलच्छि-वरिओ समोसरिओ ससिप्पहायरिओ । रन्ना वुत्तं- तप्पभावो संभाविज्जइ जं अहं निव्विसो जाओ, ता वच्चामि तस्स पासं । गओ सपरिवारो राया, वंदिऊण निसन्नो पुरओ । पारद्धा गुरुणा देसणा-

स्वर्ण-स्थाले क्षिपति स रजः पादशौचं विधत्ते,
पीयूषेण त्रिदशकरिणं वाहयत्येन्धभारम् ।
चिन्तारत्नं विकिरति कराद्वायसोड्डायनार्थं,
यो दुष्प्रापं गमयति मुधा मर्त्य जन्म प्रमत्तः ॥२६२३॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

राज्ञोक्तं-भगवन् ! इदं न मे चित्त-चमत्कारमारचयति भूत-चतुष्टयाऽतिरिक्तस्य परलोकयायिनो जीवस्याऽसत्त्वात् । तथाहि-जीवो नास्ति प्रत्यक्ष-गोचरातीतत्वात् आकाशकुसुमवत् । यच्चास्ति, न तत् प्रत्यक्षगोचरातीतं, यथा-भूतचतुष्टयम् ।

गुरुणोक्तम्-भद्र ! किमयं जीवो भवतः प्रत्यक्षं गोचरातीत उत सर्वेषाम् । तत्र यदि भवत् प्रत्यक्षा-गोचरातीतत्वान्नास्ति तदा देश-काल-स्वभाव-विप्रकृष्टानां प्रभूत-भू-भूधरादीनामप्यभाव-प्रसंगस्तेषामपि भवत् प्रत्यक्षेणाग्रहणात् । अथ सर्व-जन-प्रत्यक्षगोचरातीतत्वान्नास्ति इत्युच्यते तदसिद्धम् । सर्व-जनप्रत्यक्षाणां भवद् प्रत्यक्षत्वात् । अथ तान्यपि ते प्रत्यक्षाणि तदा तवैव सर्वज्ञजीवस्य प्रसंगः । किं चेदं चैतन्यं किं भूतानां स्वभाव उत कार्यं ? न तावत् स्वभावस्तेषाम चेतनत्वात् । न च कार्यं भूतानुरूपाऽभावात् । अथ समुदितेभ्यो भूतेभ्यश्चैतन्यमुत्पद्यते यथा मद्याङ्गेभ्यो मदशक्तिस्तदप्ययुक्तम् । यतो यद्येषु प्रत्येकं नास्ति तत्र तेभ्यः समुदितेभ्योपि स्याद्यथासिकताकणेभ्यः तैलं मद्याङ्गेषु च प्रत्येकमपि मदशक्ति-सद्भावात् । सर्वानुभवसिद्धं चेदं चैतन्यं यस्य कस्य चित्-स्वभावः । स भूत-चतुष्टय-व्यतिरिक्तः परलोकयायी जीवः ॥

रन्ना भणियं-जइ परलोयं जाइ जीवो, अत्थि ता मे पिया पाणिवहप्पमुह-महापाव-निरओ नरए समुप्पन्नो तुम्ह मएणं, सो कहं ममं पावाओ न नियत्तेइ ? ।

गुरुणा वुत्तं-जहा कोइ महावराहकारी गुत्तीए खित्तो न निय-बंधवे पिच्छिउं पि पावइ, किं पुण जंपिउं ? । एवं नारया वि कम्म-परतंता नरगाओ निग्गंतुं पि न लहंति ।

रन्ना वुत्तं- जइ एवं ता मे जणणी जिण-धम्मपरा जीवदया-निरया सग्गं गया, सा कहं ममं न पडिबोहेइ ? ।

गुरुणा वुत्तं- सग्गे निसग्ग-सुंदर-सुरंगणा-पेम्म-परवसा गरुय-रिद्धि-अविखित्त-चित्ता असमत्त-प्पओयणा मणुयाण हीणकज्जा दुग्गंधयाए य तिरियलोयस्स जिण-पंचकल्लाण-समोसरणाइ-वज्जं नेच्छंति अवयरणं सुरा ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रन्ना भणियं- मए एगो चोरो खयरो व्व सुहुम-खंडीकओ, न य दिट्ठो तत्थ कोइ भूय-वइरित्तो जीवो ।

गुरुणा वुत्तं- केणावि अरणि-कट्ठं खंडीकयं, न दिट्ठो तत्थ अग्गी । अवरेण महणप्पओगेण उट्ठविओ । जइ मुत्ता वि पयत्था संता वि न दीसंति, ता अमुत्तस्स जीवस्स अदंसणे को विरोहो ? ।

रन्ना भणियं- एगो चोरो मए जीवंतओ चेव लोह-मंजूसाए पक्खित्तो, । ढक्कियं मंजूसा, जउसारिया पयत्तेण । अइक्कंतो कोइ कालो जाव सो तत्थेव विवन्नो, किमिपुंजो जाओ, तत्थ देहे चेव विणट्ठो । जइ पुण कोइ जीवो घड-वडग-तुल्लो तओ निग्गओ पविट्ठो वा होज्ज, तओ लोह-मंजूसाए तदणुरूवं छिड्डं हवेज्ज[१] । न य तं दिट्ठं । ता नज्जइ न भूय-वइरित्तो जीवो ।

गुरुणा वुत्तं- एगम्मि नयरे कोइ संखिगो संखं धमेइ । तस्स एरिसो विन्नाणाइसओ जेण अगोयरगयाणं कन्ने चिय धमेइ । अन्नया रन्नो वच्चहरकाले धमिओ संखो । कन्ने चिय धमेइ त्ति आसंकाए वच्चनिरोहेण रुद्धो सो राया । वज्झो सो आणत्तो । तेण भणियं- देव ! दूरे धमेमि, परं कन्नमूले चिय पडिहाइ । विसिट्ठा खलु मे लद्धी अत्थि । जइ न पच्चओ ता विन्नासेउ देवो । तओ रन्ना खित्तो कुंभीए संखिगो, ढक्किऊण जउसारिया एसा । पच्छा धमाविओ, सुओ संख-सद्दो सव्वेहिं । निरुविया कुंभी, न दिट्ठं निग्गमण-छिड्डं । तहा लोह-पिंडे धमिए केण छिड्डेण अग्गी पविट्ठो जेण सो अग्गिवन्नो जाओ ? । एवमिहावि सद्दाओ अग्गीओ य सुहुमस्स जीवस्स निग्गमे पवेसे वा न विरोहो ।

रन्ना भणियं- अन्नो चोरो वावायण-काले तोलिओ, पच्छा गल-करमोडणेण वावाईओ । पुणो वि तहेव तोलिओ । जाव जत्तिओ पुव्वं तत्तिओ पच्छा वि, अओ नज्जइ न तत्थ घडचडगोवमो कोइ गओ त्ति ।

गुरुणा वुत्तं- एगेण गोवालेण कोउगेण एगो दिइपुडो वायस्स भरिऊण तोलाविओ, पच्छा विरिक्को पुणो वि तोलाविओ, जाव जत्तिओ विरिक्को वि तेत्तिओ । जइ फासिंदिय-गब्भत्तणेण मुत्तस्स पवणस्स सब्भावो सब्भावेसु न तोल्ल-विसेसो ता अमुत्तस्स जीवस्स तुल्लविसेस-विरहे को विरोहो ? । तम्हा सव्व पाणिणं सरीराइरित्तो ससंवेयणाणुभव-पच्चक्खो चेयन्नरूवो गमणाइ-चिट्ठा-लिंगो पवणो

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पडागमो पयलणलिंगो अत्थि जीवो त्ति सद्दहियव्वं ।

रन्ना वुत्तं -भयवं ! मोह-पिसाओ मह नट्ठो तुह वयण-मंतेहिं । नवरं नाहियवायं कमागयं कहं विवज्जेमि ? ।

गुरुणा वुत्तं-एयं न किंचि नरनाह ! सइ विवेगम्मि ।
वाही दालिद्दं वा कमागयं मुच्चए किं न ? ॥२६२४॥

तहा-

केइ पुरिसा भमंता धणत्थिणो अणुकमेण दट्ठूण ।
लोहं तओ रुप्प-कणए पुव्वग्गहिए वि मुत्तूण ॥२६२५॥

रयणाइं गिण्हिऊण य एगे संपत्तिभायणं जाया ।
अवरे तहा अकाऊण दुत्थिया सोयमणुपत्ता ॥२६२६॥

एवं तुमं पि नरवर ! कमागयं कुग्गहं अमिल्लंतो ।
पुव्वं व संपयं पि हु मा दुग्गइ-दुक्खमणुहवसु ॥२६२७॥

रन्ना भणियं-पुव्वं दुग्गइ-दुक्खं कहं मए पत्तं ? ।
गुरुणा वुत्तं-सुण सोम ! एत्थ भरहम्मि [1]नवगामे ॥२६२८॥

आसि कुलपुत्तओ अज्जुणो त्ति मित्तो सुहंकरो तस्स ।
सो सावओ कयावि हु समागया साहुणो तत्थ ॥२६२९॥

भणिओ सुहंकरेणेवमज्जुणो मित्त ! मुणि-सयासम्मि ।
वच्चामो निसुणामो जिण-भणियं आगमं तत्थ ॥२६३०॥

तो अज्जुणेण भणियं-मित्त ! मे मुणियमागम-सरूवं ।
धुत्तेहिं कया कव्वा कालेण य आगमा जाया ॥२६३१॥

एवं पयंपमाणेण तेण असुहं समज्जियं कम्मं ।
आउक्खएण मरिऊण अज्जुणो बुक्कडो जाओ ॥२६३२॥

निययम्मि चेव भवणे अज्जुण-पुत्तेण पियर-कज्जम्मि ।
हणिऊण माहणाणं दिन्नो तो रासहो जाओ ॥२६३३॥

भारं वाहिज्जंतो खुहा-पिवासाउलो कुलालेण ।
विट्ठा-भक्खण-निरओ गमेइ सो दुत्थिओ कालो ॥२६३४॥

कइया वि गुरुभरेणं पडिओ सो भंडएसु भग्गेसु ।
कुविएण कुलालेणं तहा हओ लउड-घाएहिं ॥२६३५॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जह पत्तो पंचत्तं तो गड्डा-सूयरो समुप्पन्नो ।
भक्खंतो असुइं चिय लोट्टंतो असुइ-पंकम्मि ॥२६३६॥

आहेडय-सुणहेहिं निहओ दढ-दसण-धरिय-कन्न-जुओ ।
सो विरसमारसंतो मरिउं करहो समुप्पन्नो ॥२६३७॥

गुरु-भार-वहण-खित्तो नइ-दुत्तडि-पडण-दलिय-सव्वंगो ।
कन्न-कडुयं रडंतो दुस्सह-पीडाए मरिऊण ॥२६३८॥

जाओ गोब्बर-गामे गोधण-वणियस्स मूयगो पुत्तो ।
बहुसो वि नडिज्जंतो अणेय-अविवेय-लोएहिं ॥२६३९॥

निय-जीविय-निव्विन्नो कूवे पडिऊण मरणमणुपत्तो ।
जाओ नंदिग्गामे ठक्कुर-गेहम्मि दास-सुओ ॥२६४०॥

कइया वि मज्ज-विवसो अमुणंतो अप्प-पर-विसेसमिमो ।
निय-ठक्कुरमुक्कोसइ असब्भ-वयणेहिं पुणरुत्तं ॥२६४१॥

कुविएण ठक्कुरेणं छिन्ना जीहा इमस्स दासस्स ।
अह पीडा-विहुरंगो सो अइसयनाणिणा मुणिणा ॥२६४२॥

दट्ठूण महुर-वयणेहिं भासिओ भद्द ! कुणसि किं खेयं ? ।
जम्हा कयं तए च्चिय जं कम्मं तस्स फलमेयं ॥२६४३॥

तहाहि-

अज्जुण-जम्म-विणिम्मिय-आगम-निंदा-फलेण जाओ सि ।
छागो खरो वराहो करहो तह [य] मूयगो दासो ॥२६४४॥

एवं सोच्चा सो जाय-जाईसरणो मुणिं पणमिऊण ।
पच्छायाव-परिगओ अप्पाणं निंदए बहुसो ॥२६४५॥

पंच-परमिट्ठि-मंतं मुणिणा दिन्नं मणम्मि धरमाणो ।
मरिऊण एस जाओ तुममिह नरसुंदरो राया ॥२६४६॥

पुव्व-भवब्भासेणं नाहियवाओ इहावि तुह जाओ ।
एयं सोउं जायं जाईसरणं नरवइस्स ॥२६४७॥

भणियं अणेण-भयवं ! अवितहमेयं तए जमुवइट्ठं ।
ता मुत्तुं रज्जमिणं चरेमि चरणं तुह समीवे ॥२६४८॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विन्नाय-दुक्कय-फलो जिणागमाराहणं च्चिय करिस्सं ।
को मुणिय-विस-विवागो अमयं पाउं न वंछेइ ? ॥२६४९॥

तो निय-रज्जे ठविओ नरवइणा नंदणो अमरसेणो ।
विहिणा गहिया दिक्खा ससिप्पहायरिय-पासम्मि ॥२६५०॥

जयं चरे जयं चिट्ठे जयमासे जयं सए ।
जयं भुंजंतो भासंतो पावं कम्मं न बंधई ॥२६५१॥

इय आगमाणुसारेण सव्व-कज्जे जयं पयट्टंतो ।
पढइ गुणेइ सुणेइ य निच्चं चिय आगमं एसो ॥२६५२॥

नरसुंदर-रायरिसी सुय-पारावार-पारगो जाओ ।
गुरुणा गुरुगुण-कलिओ त्ति जाणिउं निय-पए ठविओ ॥२६५३॥

मिच्छत्त-तिमिर-मंडल-संहरण-परायणो दिणमणि व्व ।
अविरइ-रयणि-विवक्खो पडिबोहइ भविय-कमलाइं ॥२६५४॥

निप्पाईऊण सीसे वर-सीसं निय-पयम्मि ठविऊण ।
तुलिऊण य अप्पाणं तुलणाए पंचभेयाए ॥२६५५॥

जिणकप्पं पडिवन्नो सरीरमत्ते वि निम्ममो भयवं ।
गामम्मि एगराइ नगरे पुण पंचरायं च ॥२६५६॥

भुवणम्मि विहरिऊणं पज्जंते पायवोवगमणेण ।
कय-काय-परिच्चाओ सव्वट्ठविमाणमणुपत्तो ॥२६५७॥

आगममणुसीलंतो वि सीलवंताण उत्तम-जणाणं ।
संगं न परिहरेज्जा उत्तम-गुण-लाभमिच्छंतो ॥२६५८॥

उत्तम-जण-संसग्गं मुत्तुं जो अत्तणो महइ कुसलं ।
मूढो सलिलेण विणा सो वंछइ सस्स-निप्फत्तिं ॥२६५९॥

गुणि-संसग्गपरेणं गुण-बहुमाणो धुवं कओ होइ ।
जेण गुणिणो गुणाण य एगत्तं भासियं समए ॥२६६०॥

गुणलाभ-लालसेणं गुणि-संसग्गो सया वि कायव्वो ।
जं संकमंति लोए संगेण गुणा य अगुणा य ॥२६६१॥

जो जारिसेण मित्तिं करेइ अचिरा स तारिसो होइ ।
कुसुमेहिं सह वसंता तिला वि तग्गंधिणो जाया ॥२६६२॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अंबस्स य लिंबस्स य दोण्हं पि समागयाइं मूलाइं ।
संसग्गीय विणट्ठो अंबो लिंबत्तणं पत्तो ॥२६६३॥

इय जाणिऊण निउणेण परिहरंतेण नीय-संसग्गं ।
आमलगमाहणेण व उत्तम-संगो विहेयव्वो ॥२६६४॥

तहाहि-

[२. उत्तम-सेवायां दिवाकर-कथा]

अत्थित्थ भरहवासे बंगा नामेण जणवओ विउलो ।
तस्स पुरी विस्सपुरी चउब्भुओ माहणो तीए ॥२६६५॥

तस्स य दिवायरो नाम नंदणो तेण विमलमईणा वि ।
तरुणत्तणे न सम्मं पढिया विज्जा अणज्जेण ॥२६६६॥

मरण-समयम्मि पिउणा भणिओ सो-वच्छ ! उभयभव-सुहया ।
विज्जा सयल-जणाणं विप्पाण पुणो विसेसेण ॥२६६७॥

वरं गर्भ-स्रावो वरमृतुषु नैवाभिगमनं,
वरं जातः प्रेतो वरमपि च कन्यैव जनिता ।
वरं वन्ध्या भार्या वरमगृहवासे प्रयतितं,
न चाऽविद्वान् रूप-द्रविण-बल-युक्तोऽपि तनयः ॥२६६८॥

विज्जारहिओ य तुमं परस्स सेवाए वट्टिहसि नूणं ।
ता उत्तमस्स संगं करेज्ज मुत्तूण नीय-जणं ॥२६६९॥

तेण पडिस्सुयमेयं चिंतियमह नीय-संगमे दोसं ।
पेच्छामि जेण पच्छा निच्चल-चित्तो अहं होमि ॥२६७०॥

तत्तो इमो पयट्टो भइड्ड जरठक्कुरस्स सेवाए ।
घडिया तद्दारेणं पिंगल-नामेण सह मित्ती ॥२६७१॥

विहिओ तहा सिणेहो तग्घरदासीए मित्तसेणाए ।
सो रायचारिगो ठक्कुरेण ठविओ वियट्ठो त्ति ॥२६७२॥

जयनयर-नयरपहुणो वियारधवलस्स निच्च-सन्निहिओ ।
रंजवइ वयण-विन्नास-कोसलेणं इमो लोयं ॥२६७३॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अन्यदा-'समान-शील-व्यसनेषु सख्यं'।
एयस्स पुव्व-पाया पुट्ठा रन्ना सहाए दिव्व-वसा ।
केणइ न तत्थ पढिया पढिया य दिवायरेण इमे ॥२६७४॥

मृगा मृगैः सङ्गमनुव्रजन्ति, गावश्च गोभिस्तुरगास्तुरङ्गैः ।
मूर्खाश्च मूर्खैः सुधीयः सुधीभिः [समानशीलव्यसनेषु सख्यम्] ॥२६७५॥

एवं पढिए तुट्ठेण राइणा जंपिओ इमो-मग्ग ।
किं ते देमि ? दिओ वि हु जंपइ पहु-कज्ज-सज्ज-मणो ॥२६७६॥

देव ! मह सामिणो नत्थि जीवणं तस्स जीवणं देसु ।
साहंति हि सप्पुरिसा पहु-कज्जं अभणयंता वि ॥२६७७॥

चुलसीइ-गाम-जोग्गस्स तस्स रन्ना लिहावणेण विणा ।
अट्ठट्ठम-गाम-सएहिं संगयं सिरिउरं दिन्नं ॥२६७८॥

तो "ठक्कुरस्स पासे भट्टो गामं इमस्स सो देइ ।
जंपइ य-तुह अहं पि हु एक्कं कज्जं करिस्सामि ॥२६७९॥

तेण भणियं-पसाओ त्ति मज्जमत्तस्स पिंगलस्स दढं ।
गालि-पयाणपरस्स य कयाइ कोवं गओ राया ॥२६८०॥

आढत्तो से जीहा-छेयं काउं दिवायरेण तओ ।
भणियपसाएण इमो विमोइओ मित्त-नेहेण ॥२६८१॥

अह जाया गब्भवई दासी तीसे मऊर-मंसम्मि ।
संपत्तो डोहलओ दियस्स अक्कोसिउं कहिओ ॥२६८२॥

सो भणइ-नत्थि अन्नो रन्नो कीलाकलाविणं मुत्तुं ।
तो तं चिय गिह-पत्तं निहणिस्सं तुह सिणेहेण ॥२६८३॥

भवणंगणे भमंतं पुरओ दासीए गिण्हिउं मोरं ।
बाहिं गंतूण इमं दिवायरो ठवइ देवउले ॥२६८४॥

अन्नं मंसं दासीए देइ सा पुन्नदोहला तुट्ठा ।
एत्तो य गवेसिज्जइ मोरो लब्भइ न जा ताव ॥२६८५॥

कुविएण दाविओ ठक्कुरेण पडहो मऊर-वुत्तंतं ।
जो कहइ तस्स दिज्जइ दम्मट्ठसयं च अभयं च ॥२६८६॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अह न कहइ सो पच्छा नायम्मि सरीर-निग्गहो दंडो ।
सोऊण इमं चित्तम्मि चिंतए मित्तसेणा वि ॥२६८७॥

संपइ कहिज्जमाणे लाभो पच्छा उ निग्गहो होही ।
तत्तो वरं इयाणिं कहेमि तो कहियमेईए ॥२६८८॥

रुट्ठो य ठक्कुरो माहणस्स तो पडहगम्मि वज्जंते ।
कहियं सब्भावं पिंगलस्स गेहम्मि स निलुक्को ॥२६८९॥

तो ठक्कुरेण भणियं-को तं लहु लहइ ? जंपए दासो ।
देव ! लहेमि अहं तो दिवायरो तेण आणीओ ॥२६९०॥

अणुवकए उवयारं कुणंति जे ते जए सलाहिज्जा ।
उवयारिणि अवयारीण [1]पुणो न नामं पि घेत्तव्वं ॥२६९१॥

अह ठक्कुरो पयंपइ कयग्घतिलओ दिवायरस्स लहुं ।
उप्पाडह नयणाइं छिंदह हत्थे य पाए य ॥२६९२॥

जं आणवेइ देवो तं कीरइ इय पयंपए दासो ।
लग्गो य परियणो देव ! खमसु से एक्कमवराहं ॥२६९३॥

न खमेइ ठक्कुरो परियणेण भणिओ[1] पुणो वि करुणाए ।
जं आणवेइ देवो दंडं अवरं तं करेमो ॥२६९४॥

तो ठक्कुरेण भणियं-न इमा वत्ता वि तस्स निब्बंधे ।
भणइ इमो-जइ एवं ता तं चिय मोरमाणेउ ॥२६९५॥

तो मोरमप्पिओ ठक्कुरस्स पाएसु निवडिउं भट्टो ।
भणिओ य ठक्कुरेणं तुह अवराहो इमो खमिओ ॥२६९६॥

मा पुण एवं काहिसि पडिवन्नमिणं दिवायर-दिएण ।
दिट्ठो दोसो नीयाण संगमतो गओ तत्तो ॥२६९७॥

पत्तो य मंगलउरे समग्ग-मंगल-समग्गले जत्थ ।
देहावयवं मोत्तुं बाहं लोया न याणंति ॥२६९८॥

तत्थत्थि पुन्नचंदो राया चंदो व्व कय-जणाणंदो ।
वर-नीईलया-कंदो पडिवक्ख-पयाव-दव-कंदो ॥२६९९॥

गुणचंदो नामेणं तस्स सुओ विस्सुओ बहुसुओ वि ।
उत्तमगुणो त्ति [2]तमिमं दिवायरो सेवए कुमरं ॥२७००॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तेण मणोरहदत्तो सिट्ठी मित्तीकओ विसिट्ठो त्ति ।
विहिया वसंतसेणा विलासिणीए य सह मित्ती ॥२७०१॥

अह अन्नया कुमारो हरिओ विवरीयसिक्ख-तुरएण ।
तस्साणुमग्ग-लग्गो दिवायरो धाविओ रन्ने ॥२७०२॥

वच्चंतेण दिवायरेणं एक्कामलगीए गहियाणि तिन्नि आमलगाणि, मुक्कवग्गो य ठिओ आसो । मिलिओ कुमारस्स दिवायरो वच्चति सणिय-सणियं । तण्हाभिभूएण भणिओ दिवायरो रायपुत्तेण-कहिं चि अत्थि पाणियं ? ति । निरूविऊण साहियं दिवायरेण-देव ! न ताव दीसइ । सुकुट्ठतालुगस्स कुमारस्स दिन्नमेगमामलगं । आसायंतो गओ थेव-भूमिं कुमारो । पुणो वि पुच्छिए पुणो वि दिन्नं बीयं । पुणो वि तईयं । उत्तिन्ना कंतारं । रायपुत्तेण चिंतियं-नत्थि एयाण आमलगाण अग्घो, मा विस्सरहि त्ति तिसंझं सुमरेइ । कमेण जाओ राया रायपुत्तो । कओ णेण दिवायरो मंती । अइक्कंतो कोइ कालो । परूढा पीई सह सिट्ठिणा विलासिणीए य । संपन्नाइं दोण्हं पि अंतेउराइं । जाओ पुत्तो नरवइस्स । सो मंति-गेहे बहुसो कीलइ । दिट्ठो आवन्नसत्ताए मंतिघरिणीए । गब्भ-दोसेण जाओ कुमार-मंसे दोहलो इमीए । न साहिओ दिवायरस्स । दुब्बलीभूया एसा । पुट्ठाए साहिओ तस्स । तेण भणियं-कित्तियमेयं ? । वीसत्था चिट्ठसु त्ति । तीए पिच्छंतीए गहिओ रायपुत्तो । संगोविओ पयत्तेणं । दिन्नं अन्नं मंसं । संतुट्ठा भट्टिणी । पुन्नो से दोहलो । कया पच्छन्न-भूमिहरे जेण न किंचि वुत्ततं जाणइ ।

इओ य रायभोयणवेलाए गवेसिज्जइ रायपुत्तो । निरूविओ मंति-गेहे । मंतिणा भणियं-आगओ आसि, गओ तयाणिं चेव । एवमेयं ति पडिवन्नं रन्ना । मूलसुद्धीए गवेसिज्जइ जाव । दिट्ठो मंति-गेहे पविसंतो न उण नीहरंतो त्ति जाओ पवाओ, मुणिओ मंतिणा । तओ गंतूण साहियं मणोरहदत्तस्स जहा-'भट्टिणीए दोहलय-कज्जे मए कुमारो वावाईओ'त्ति को एत्थ उवाओ ? । तेण भणियं- तुण्हिक्को अच्छसु । एवं वसंतसेणाए वि साहिओ । तीए वि इमं चेव भणियं । पयट्टो पडहगो-'जो कुमार-वुत्ततं साहेइ तस्स जं मग्गियं दिज्जइ । पच्छा नाए लेससंगेणावि सरीर-निग्गहो' । सुओ सो वसंतसेणाए । चिंतियं तीए-गरूओ निबंधो देवस्स । न इमं अजाणियं अच्छइ, तो छिवेमि पडहगं, जेण इओ चेव

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

समप्पइ कहा । मम पुण जं होइ तं होउ'त्ति छित्तो पडहगो । निवेईयं रन्नो-देव ! मए वावाईओ त्ति । सो पुण गहिओ कडीए पडिओ मओ य । गहिया वसंतसेण त्ति जाओ लोगप्पवाओ । सुओ मणोरहदत्तेण, चिंतियं च-आढत्तो भट्ट-परियणो ता किं इमिणा ? । अहमेयं पवज्जामि । जेण इओ चेव समप्पइ कह त्ति । मित्त-परिरक्खण-फलं मणुयाण जीवियं, जेण भणियं च-

निरर्थकाय चपलस्वभावा यास्यन्ति सद्यः स्वयमेव नाशं ।
त एव यान्ति क्रिययोपयोगं प्राणाः परार्थे यदि किं न लब्धं ? ।। २७०३।।

तओ गंतूण निवेइयं रन्नो-देव ! मए वावाइओ त्ति । सोऊण दद्दर-पडणेणं ति । 'मिलियाणि परोप्परं । अन्नोन्नं दूसंति । रन्ना सद्दाविओ मंती । कहियमेयस्स किमेवमेयं ? ति । तेण भणियं-देव ! विसिट्ठाण विसिट्ठत्तणं । रन्ना भणियं-कहं ? ति नावगच्छामि । मंतिणा भणियं-इमिणा वइयरेणं कुमारो मए वावाईओ । एएसिं पुण अनिमित्तो आरंभो त्ति । परियणेण खिंसिओ मंती-अरे दुट्ठ ! एद्दहमित्तस्स कप्पस्स एयं तए ववसियं ? ति । रन्ना अंबाडिओ परियणो य-बंभणेण बंभण-परिरक्खणं न थेवं कज्जं । अरे ; मम सरीरदोहगो जो भट्टं किंचि वि भणइ । मणोरहदत्त-वसंतसेणाहिं भणियं-देव ! महापसाओ । रन्ना भणियं-पइट्ठमेगमामलगं ति विसज्जिओ भट्टो ।

अन्नया उचिय-वेलाए नागच्छइ त्ति गओ तग्गिहं राया । कओ उचिओवयारो भट्टेण । पत्थावेण भणियं रन्ना-भट्ट ! जं अहं जाचेमि तं तए दायव्वं ति । भट्टेण भणियं-आणवेउ देवो । रन्ना भणियं-'तारिसी वीसत्थय त्ति । भट्टेण भणियं-देव ! उत्तमो तुमं । किमित्थ अवरं भणीयइ ? । साहिओ वुत्तंतो । समप्पिओ दारगो । रन्ना भणियं-केरिसी मम उत्तमया जो एवं आमलग-संकित्तणेण अकंडे चेव बुलुबुलो ? । उत्तमो तुमं मणोरहदत्त-वसंतसेणा य । एवमइक्कंतो कोइ कालो । उत्तम-संबंधो हिओ त्ति परिणयं दिवायरस्स ।

अन्नया-

जाया इमस्स चिंता-करेमि सव्वुत्तमस्स संबंधं ।
इय परिणामाओ गयं किलिट्ठकम्मं खओवसमं ।।२७०४।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तस्स पडिबोह-समयं मुणिउं मुणिविंद-परिगओ पत्तो ।
कय-भविय-जणाणंदो आणंदो नाम आयरिओ ॥२७०५॥

सो वंदिउं सबहुमाणमणेण पुट्ठो ।
सव्वुत्तमं कहसु मे गुरुणा वि सिट्ठो ।
माणुस्स-खेत्त-कुल-जाइ-बलायु-बुद्धि-
आरुग्ग-रूव-सवणाइ कमेण धम्मो ॥२७०६॥

एयस्स सो परिणओ करुणापहाणो
तस्संतीए सविणयं इमिणा पवन्नो ।
राया वि तेण विहिओ पडिबोहिऊण
सुस्सावगत्त पडिवंति पवित्तचित्तो ॥२७०७॥

एवं उत्तम-संगमेक्करसिओ सव्वन्नुणा वन्नियं,
धम्मं दुक्खय-कम्म-सेल-कुलिसं सव्वुत्तमं सेवियं ।
कल्लाणं लहिउं इहेव तिदिवं जम्मंतरे पाविउं,
पज्जायेण दिवायरो दियवरो पत्तो पयं सासयं ॥२७०८॥

सव्वुत्तमो य धम्मो जाणिज्जइ जेण गुरु-सयासाओ ।
तत्तो हियमिच्छंतो गुरु-पयसेवापरो होज्जा ॥२७०९॥

गुरु-देसणावरत्तं वर-गुण-गुच्छं विणा गहीराओ ।
संसार-कूव-कुहराओ निग्गमो नत्थि जीवाण ॥२७१०॥

गुरुणो कारुन्न-घणस्स देसणा-पयभरेण सित्ताण ।
भविय-दुमाणं पसमेइ झत्ति मिच्छत्त-दावग्गी ॥२७११॥

भव-अडवि-निवडियाणं जाण गुरू मग्गदेसओ नत्थि ।
मोहदिस-मोहमूढा कह ते पावंति मोक्खपुरं ? ॥२७१२॥

गुरु-भत्तिं अकुणंता कुगइं जीवा लहंति पुणरुत्तं ।
तं च कुणंता सुगइं [१०]विमलमई एत्थ दिट्ठंतो ॥२७१३॥

[३. गुर्वाराधनयोर्विमलमति-कथा]

अत्थि इहेव जंबुद्दीवे वराड-विसयम्मि जयपुरं नयरं ।
जं सुरपुरं व बहु-विबुह-संकुलं केवलमणिंदं ॥२७१४॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तत्थ निवो सिरिचूलो नरिंद-चूलग्ग-लग्ग-पयमूलो ।
जण-अणूकूलो करिदंत-मुसल-वियलिय-जलहि-कूलो ॥२७१५॥

तस्स बहु-वन्नणिज्जो जिणदत्तो नाम अत्थि वर-सेट्ठी ।
जिण-समण-चलण-कमलो जो भसल-विलासमुव्वहइ ॥२७१६॥

तस्स वरुण त्ति घरिणी वर-सीलाभरण-भूसिय-सरीरा ।
ताण सुया विउलमई मइजिय-सुयदेवि-मइपसरा ॥२७१७॥

जिणदत्तस्स कयावि हु विहवो दिव्वाणुभावओ तुट्टो ।
तो रन्ना तस्स पए धणमित्तो ठाविओ सेट्ठी ॥२७१८॥

जस्स पुरो वेसमणं समणं व अकिंचणं जणो भणइ ।
दट्ठूण जस्स रूवं तणं व मयणं पयंपेइ ॥२७१९॥

अह कित्तियम्मि काले गयम्मि पत्तो कयाइ हेमंतो ।
अग्घविय-तिल्ल-कुंकुम-कामिणिथण-जलण-पावरणो ॥२७२०॥

अइ-सिसिर-पवण-कंपंत-गत्त पेक्खेविणु भुवणि समत्त सत्त ।
वियसंत-कुंद-''कलियामिसेण जो हसइ गरुय-विम्हयवसेण ॥२७२१॥

हिम-पीडिय पंथिय जहिं असेस, भुयमंडल-पीडिय-हियय-देस ।
निय-कंत निच्चु मणि निवसमाण, पडिहासहिं नं परिरंभमाण ॥२७२२॥

जहिं तरुणिहिं घण-घुसिणंगराओ, निम्मविय सीय-संगम-विघाओ ।
मणि मज्झिय मंतु पियाणुराओ, न निग्गओ बाहिरि निव्ववाओ ॥२७२३॥

संतावकरु वि जहिं जणह जलणु, हिम-पीड-हरो त्ति पमोय-जणणु ।
जं कहवि अणिट्ठु वि होइ इट्ठु, सियवाओ जिणिंदिहिं तेण दिट्ठु ॥२७२४॥

तम्मि हेमंते धणमित्तेण [सह] समागओ नगर-बाहिं जिणदत्तो । दिट्ठं हिम-पवण-सीयल-सलिल-निब्भरं सरोवरं । भणियं धणमित्तेण-जो इह सरोवरे आकंठ-बुड्डो रयणिं वसेइ तस्साहं दीणार-लक्खं देमि । ततो धणलुद्ध-बुद्धिणा भणियं जिणदत्तेण-अहं वसिस्सं । जओ-

अगणिय-सरीरपीडा अणविक्खिय-सयल-लोय-वयणेज्जा ।
लच्छी-लव-लुद्ध-मणा मणुया न कुणंति किमकज्जं ? ॥२७२५॥

तओ निसाए तहेव ठिओ सरोवरे जिणदत्तो । पच्चूसे गंतूण भणइ धणमित्तं-देसु मे दीणार-लक्खं । ठिओ हं सरोवरे निसाए । धणमित्तेण

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भणियं-को इत्थ पच्चओ ? । जिणदत्तेण वुत्तं-तुह गिह-गवक्खे जामिणी-जाम-चउक्कं पि पज्जलंतो पईवो मए दिट्ठो त्ति पच्चओ । धणमित्तेण वुत्तं- पईव-पलोयणेण ते सियं पणट्ठं, अओ न देमि । जइ तुमं तं न पलोयंतो ता अहं ते दीणार-लक्खं देमो । विलक्खीभूओ जिणदत्तो गओ स-गिहं । कहियमेयं निय-धूयाए । तीए वुत्तं-मा करेसु खेयं ।

अन्न-दिणे सामग्गिं काऊण निमंतिओ भोयणत्थं धणमित्तो । आढत्तो भोत्तुं । सिणिद्ध-सलवण-भोयणाओ पिवासिएण मग्गियं अणेण जलं । विउलमईए वुत्तं- सीयल-सलिल-समग्गाओ अग्गओ गग्गरीओ इमाओ पेच्छिऊण वुच्छिन्न-तण्हो होसु । धणमित्तेण वुत्तं-किमेयारिसं दंसणेण पणस्सइ तन्हा ? । विउलमईए हसिऊण भणियं-जइ पईव-दंसणेण सीयं पणस्सइ, ता एयारिसं दंसणेण किन्न तुण्हावगमो होइ ? त्ति । अहो ! इमीए मइ-माहप्पं ! । कयं कय-पडिकयं । ता पुणो वि कायव्वं किं पि विप्पियं मए इमीए । संपयं तु न अन्नो उवाओ त्ति चिंतिऊण भणियं धणमित्तेण- गिण्ह लक्खं, पाएसु पाणियं । तहेय कयं विउलमईए । भुत्तुत्तरं[दाऊण] धणं मग्गिओ धणमित्तेण जिणदत्तो- 'देसु मे परिणयणत्थं धूयं ।' 'आलोविऊण देमि' त्ति भणिऊण जिणदत्तेण भणिया रहसि धूया-वच्छे ! लक्ख-गहण-विलक्खो इमो तह विडंबणं काउमिच्छंतो तुमं परिणेउं मग्गइ त्ति संभावेमि, ता किं कायव्वं ? । तीए वुत्तं-देसु ममं । करिस्सं अहं सव्वत्थ-सुत्थं । दिन्ना तेण । परिणीया इयरेण । विवाहाणंतरं[१२] चेव खित्ता भवणब्भंतर-कए कूवए, भणिया य-इह ट्ठिया कंगु-कूरमाणयं खायंती कप्पासं कत्तंती ताव चिट्ठ जाव ते पुत्तुप्पत्ती होइ । पच्छा निग्गच्छिज्जा । सयं पुण पत्थिओ अत्थोवज्जणत्थं, पत्तो तामलित्तीए अच्छे । इयरीए धणमित्त-चित्तं नाऊण अणागयं खणाविया पिइहराओ सुरंगा । तीए निग्गंतूण गया सिग्घं तामलित्तीए । धणमित्तावास-पासे पासायं घेत्तूण ठिया विउलमई । पेसिया सिक्खिविऊण अणाए निउणिया निय-चेडी धणमित्त-पासं । भणिओ तीए इमो- अम्ह सामिणी कामलया नाम गुणाणुराइणी न पुरिस-मित्ते चक्खुं पि खिवइ, अज्ज पुण तुमं दट्ठूण साणुराया जाया ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ता सुहय ! तं मयच्छिं निय-संग-सुहाररसेण निव्ववसु ।
जेण पर-पत्थणा-भंग-भीरुणो हुंति सप्पुरिसा ॥२७२६॥

तो पत्तो धणमित्तो तग्गेहं गहिय-अवरवेसाए ।
तीए वि रंजिओ तह एक्कचित्तो जहा जाओ ॥२७२७॥

भुंजइ उदार-भोए अह जाओ ताण नंदणो एक्को ।
पडिबोहिओ इमीए जिणिंद-धम्मम्मि धणमित्तो ॥२७२८॥

तो संवेग-परिगओ जंपइ जं परिणिऊण विउलमई ।
कूव-कुहरम्मि खित्ता मए अकज्जं तमायरियं ॥२७२९॥

ता तं कूवाओ कड्ढिऊण पुणरवि इहागमिस्सामि ।
इय भणिउं संपत्तो जयउर-नयरम्मि धणमित्तो ॥२७३०॥

आगंतूण पविट्ठा पुव्वं चिय कूवयम्मि विउलमई ।
आयड्ढिया य इमिणा कूवाओ नरयरूवाओ ॥२७३१॥

दिट्ठा पुत्त-जुया सा तो विम्हिय-माणसेण संलत्तं ।
माइंदजाल-तुल्लं किमेयमवरुप्पर-विरुद्धं ? ॥२७३२॥

विउलमईए कहिओ सव्वो निय-वइयरो तओ तुट्ठो ।
धणमित्तो भणइ-अहो ! मइ-माहप्पं मह पियाए ॥२७३३॥

घरसामिणिं विहेउं तं चिय भुंजइ अणुत्तरे भोए ।
जिणपूया-गुरुसेवा-कउज्जमो गमइ दियहाइं ॥२७३४॥

अह तत्थ दिव्वनाणोवलद्ध-भव-भावि-भाव-सब्भावो ।
भवदेवो नाम गुरू नयरुज्जाणे समोसरिओ ॥२७३५॥

पत्तो धणमित्तो तस्स वंदणत्थं कलत्त-संजुत्तो ।
तं वंदिउं निसन्नो धम्मकहं सोउमाढत्तो ॥२७३६॥

पुच्छइ समयं लहिउं-किं विहियं मह पियाए पुव्व-भवे ? ।
जेण विसुद्धा बुद्धी भोगा विउला य संपत्ता ॥२७३७॥

गुरुणा वुत्तं-सोम ! सुण,

आसि कुसउरे नयरे भाणुदेवस्स सिट्ठिणो अपुत्तस्स रोहिणी धूया । सा य विहवा, ववहारे करेइ पिउणो साहिज्जं । कयाइ नव-जोव्वणे वट्टमाणो मयणो व्व रूवेणं समागओ गिहं देसंतराओ वणियपुत्तो । तं च

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दट्ठूण अविवेय-बहुलयाए जोव्वणस्स, चंचलयाए इंदियगामस्स, तुच्छयाए इत्थी-सहावस्स, अगणिय-गुरुयण-लज्जाए, अकलिय-कुलकलंकाए, अविभाविय-उभय-भवदुहाए पेसिया साहिलासा दिट्ठी रोहिणीए। निज्झाईओ सुइरं वणिय-पुत्तो। लक्खियमिणं भिक्खा-निमित्तं तक्कालं गिहागएण सीलसार-मुणिणा। जओ-

जइ वि न समइ न जंपइ निहुयं झाएइ हियय-मज्झम्मि।
मयणाउरस्स दिट्ठी लक्खिज्जइ तह वि लोएण ॥२७३८॥

जं सविलासा दिट्ठी जं सज्झसवस विसंठुला वाणी।
सेय-जल-बिंदु-संदोह-दंतुरं जं नडालयलं ॥२७३९॥

जं दंसिय-थणवट्टं पुणरुत्तं उत्तरिज्ज-संठवणं।
जं मयण-केलि-वावी-सणाहि-नाहीइ पायडणं ॥२७४०॥

जं असिढिल-केसकलाव-बंधणं उल्लसंत-भुय-मूलं।
तं लक्खिज्जइ रमणीण को वि चित्ते चहुट्टो त्ति ॥२७४१॥

अहो दुज्जओ मयण-पसरो त्ति चिंतंतो निग्गओ सीलसार-मुणी। कमेण अहिगय-समत्त-सुत्तत्थो ठविओ गुरुणा सूरिपए। गामागर-नगरेसु विहरंतो आगओ कुसउरे। निग्गया नागरा। नमिऊण निसन्ना पुरओ। पारद्धा धम्म-कहा गुरुणा। पडिबुद्धा बहवे जणा। पणमिऊण भणियं रोहिणीए-भयवं! देहि मे सम्मत्तं।

गुरुणा भणियं पुव्वं अइयारालोयणं कुणसु भद्दे ॥
भवजलहि-पोयभूयं पच्छा पडिवज्ज सम्मत्तं ॥२७४२॥

जह सुविसुद्धे कुड्डे लिहियं चित्तं विहाइ रमणिज्जं।
तह निरइयार-जीवे सम्मत्तं गुणकरं होइ ॥२७४३॥

जह लंघण-हणिय-रसस्स रोगिणो ओसहं गुणाय भवे।
आलोयणा-विसुद्धस्स धम्म-कम्मं तहा सयलं ॥२७४४॥

एवं सोऊण इमा आलोयइ बालभावओ विहियं।
सव्वं चिय अइयारं दिट्ठि-वियारं वि मोत्तूण ॥२७४५॥

गुरुणा वुत्तं-सम्मं आलोयसु तीइ जंपियं भयवं।
किमसम्मं ?, भणइ गुरू- वीसरियं किं तयं भद्दे ॥२७४६॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जं तइया वणिपुत्तो तुमए दिट्ठो दढाणुराएण ।
मुणियं मए वि एयं भिक्खत्थं तुह गिह-गएण ॥२७४७॥

"सा भणइ वणि-पुत्तो न मए मयणाउराइ सच्चविओ ।
किं आलोएमि ? तओ भणइ गुरू-किं तए न सुया ? ॥२७४८॥

मण-चिंतिय-अइयारं अकहेत्ता गारवेण गुरु-पुरओ ।
तिव्व-तवच्चरण-रया वि लक्खणज्जा गया कुगइं ॥२७४९॥

तहाहि-

धरणिपइट्ठिय-नयरे आसि निवो जंबुदाडिमो नाम ।
देवी य सिरिमई से बहु पुत्ता किंतु नत्थि सुया ॥२७५०॥

कुलदेवय-उवाईय-सएहिं धूया कमेण संजाया ।
सुलक्खण त्ति नामेणं लक्खणा तेहिं सा वुत्ता ॥२७५१॥

अइ-वल्लह त्ति काउं तीए रन्ना सयंवरो विहिओ ।
चउरी-मज्झम्मि मओ तब्भत्ता दिव्व-जोएण ॥२७५२॥

राया वि सोग-विहुरो भयमाणिं लक्खणं भणइ एवं ।
वच्छे ! मच्चुमुवेंतं सक्को वि न सक्कए खलिउं ॥२७५३॥

ता पुत्ति ! तुज्झ एयं पुव्वज्जिय-कम्म-परिणइ-वसेण ।
विहवत्तं संजायं नीसेस-दुहाण जं ठाणं ॥२७५४॥

चरसु तवं कुणसु दयं दाणं वियरेसु रयसु जिण-पूयं ।
पढसु य वेरग्ग-सुयं उब्भड-वेसं विवज्जेसु ॥२७५५॥

विहवाण छड्डियाण य पउत्थवईयाण तह य समणीणं ।
धम्म-निरयाण दियहा जंता वि हु नेव नज्जंति ॥२७५६॥

इय पन्नविया रन्ना धम्मपरा लक्खणा गमइ कालं ।
अह तत्थ तित्थनाहो केवलनाणी समोसरिओ ॥२७५७॥

गओ राया जंबुदाडिमो वंदणत्थं सपरिवारो । वंदिऊण निसन्नो सट्ठाणे । परूवियं भयवया संसारासारत्तणं । संविग्गो राया पवन्नो सदारो सपुत्तो लक्खणाए समं दिक्खं । अप्पियाणि सव्वाणि थेराणं । तेहिं पि समणीओ पवत्तिणीए । पढंति सुत्तं कुणंति तिव्व तवं । कयाइ पयट्टाइं गणि-जोगेसु ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अन्नया तीए असज्झाइयं ति काउं न पेसिया पवत्तिणीए उद्देस-समुद्देस-मंडलीए लक्खणज्जा । ठिया वसहि-कोणे । एत्थंतरे तीए असुह-कम्म-रासि-आयड्ढियं पिव आगयं चडय-मिहुणयं । दिट्ठं विविह-कीलाहिं कीलंतं । चिंतियं तीए-धन्नाणि एयाणि जाणि सच्छंदं कीलंति कयत्थ-जीवियं व । दुल्ललियाए जा एवं चाडुएहिं लालिज्जइ निय-पिएण । ममावि इमे दट्ठूण जायं परम-सुहं ।

एयाणं दंसणे पि हु पुरिसपरो(रि) सो व्व जणइ मे हरिसं ।
जं पुण सेवाए सुहं इमाण तमहं न याणामि ॥२७५८॥

ता किं जिणेण एयाण दंसणं वारियं मुणिजणस्स ।
मन्नेमि वीयरागो मुणइ सरागाण न हु दुक्खं ॥२७५९॥

अहवा अजुत्तं मए चिंतियं । अहह ! एयाण दंसणेणावि चलियं मह चित्तं, जाया पुरिस-वंछा, ता सुंदरं कयं जिणेहिं जं वारियं एरिसाण दंसणं । पावा अहं जं इमं पि महापावं बहुमन्नेमि । आलोएमि गुरु-पुरओ त्ति चिंतिऊण चलिया, ताव खुत्तो पए कंटओ । ठिया एसा, चिंतिउं पवत्ता य-अहं खु रायधूया अखंडिय-सीला सव्वत्थ विक्खाया, तो जइ मे जणणी-जणया जाणिस्संति ता लज्जिस्संति । अओ न जुत्तं कस्स वि पुरओ [कहिउं ?] । अईयार-धरणे स-सल्लत्तणं, कहणे य लाघवं । ता किं करेमि ? । हुं, परव्ववएसेण पुच्छामि गुरुं जहा-जो एवं चिंतेइ तस्स किं पायच्छित्तं ? । तं च सोऊण करेमि सयमेव तवच्चरणेण सुद्धिं । तवो एत्थ कारणं, किं पागडकरणेणं ? ति । तहेव पुच्छिऊण तवं काउमारद्धा । जाव पत्ता संवच्छराणि छट्ठऽट्ठम-दसम-दुवालसेहिं सोसिय-सरीरा । सच्छंद-पायच्छित्तेणं सकलुसा मया लक्खणज्जा । समुप्पन्ना एगम्मि नयरे कुट्टिणी-चेडाए सुया खंडोट्ठा नाम । पत्ता जोव्वणं । कयाइ चिंतियं कुट्टिणीए-इमा चेडा रूव-लायन्न-संपन्ना । मम धूयाए जे रमणा आगच्छंति ते इमं साहिलासं पलोयंति, न मम दारियं, ता इमीए नासं कन्नं उट्ठं च छिंदेमि जेण न इमं कामुय-जणा पलोयंति । अहवा न जुत्तमेयं । मम धूया तुल्ला एसा, ता निज्जासेमि । इमं पि न जुत्तं, जओ अन्नत्थ वि सुरूव[१४] त्ति लहिस्सइ थामं । ता सीवेमि इमीए जोणिं, नियलाणि य देमि जेण निगडिया न सक्कइ अन्नत्थ गंतुं । एवं चिंतिऊण पसुत्ता कुट्टिणी । इमं च सव्वं खुड्डाए करुणाए केणइ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वाणमंतरेण सुविणे सिट्ठं । पहाए पणट्ठा खंडुट्ठा । भमंती छम्मासेण पत्ता संखडं नाम खेडं । तत्थ दिट्ठा एगेण महाधणेण रंडासुएणं । काऊण नियपरिग्गहे नीया निय-घरं । तस्स पुव्वभज्जा ईसाए चिंतेइ-

वरं कूवे झंपा वरमनलजाला-कवलणं,
वरं सूला-भेओ वरमसिण(मसणि)दंडस्स पडणं ।
वरं खग्गच्छेओ वरमुरग-तुंडेण डसणं,
रमंतो मा दिट्ठो तहवि अवराए सह वरो ।।२७६०।।

मग्गए छिद्दाणि । अन्नया निब्भर-पसुत्तं खंडुट्ठिं दट्ठूण चुडलिं दत्तं च घेत्तूण धाविया । चुडुलिं गुज्झ-मज्झे घत्तिऊण दत्तेण फालेमाणी ताव गया जाव हिययं तं फुरफुरंतिं दट्ठूण पुणो वि तत्त-लोह-कुसीताए जोणीए कुट्टिया मया दुक्खेण खंडोट्ठा । तओ तीए सरीरगं खंडिऊण पक्खिवइ" सा साणाईणं । एत्थंतरे समागओ रंडासुओ, तं च तारिसं असमंजसं दट्ठूण संविग्गो पडिवन्नो जिण-दिक्खं, कय-तिव्व-तवच्चरणो गओ सुगइं । लक्खणा-जीवो वि भमिऊण चिरं संसारं सहिऊण तिरिय-नरगाइसु तिक्ख-दुक्खाइं सेणिय-"जीव-तित्थयर-तित्थे सिज्झिस्सइ ।

ता गुरु-पुरओ दोसं सम्ममणालोईउं भव-समुद्दे ।
मा निवडसु छेयगंथ-अक्खिया लक्खणज्ज व्व ।।२७६१।।

आलोयणा-परिणओ सम्मं संपट्ठिओ गुरु-सयासे ।
जइ अंतरा वि कालं करेज्ज आराहओ तहवि ।।२७६२।।

आगंतुं गुरु-मूले जो पुण पयडेज्ज अत्तणो दोसे ।
सो जइ न जाइ मोक्खं अवस्सममरत्तणं लहइ ।।२७६३।।

काऊण पाव-कम्मं सम्ममालोइऊण गुरु-पुरओ ।
पत्ता अणंत-जीवा सासय-सोक्खं च निव्वाणं ।।२७६४।।

ता मोत्तूण नियडिं आलोयसु दिट्ठि-वियारं । तओ पुणो पुणो मे दोसमुग्गिरइ गुरू इमो त्ति कोवमावन्ना, कहं अहं अकयं कयं ति जंपेमि ? त्ति भणित्ता गया सट्ठाणं रोहिणी । पइसमइ समुच्छलंत-मच्छरा अपडिवन्न-सम्मत्ता गुरुजण-हीलापरा परिचत्त-धम्ममग्गा मरिऊण समुप्पन्ना साणी । रिउ-काले विणट्ठा तीए जोणी । तओ किमिकुलेण

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

खज्जमाणी गलंत-पूय-मिलिय-मच्छिया-मंडला [१७]सव्वत्थ-निच्छुब्भ-माणा किच्छेण मया, समुप्पन्ना सप्पिणी । दवग्गि-दड्ढा मया गया नरए । तओ वग्घी वाहेण हया गया पुणो नरए ।

इच्चाइ असंख-भवे सहमाणा तिक्ख-दुक्ख-लक्खाइं ।
तिरिएसु नारएसु य परिभमिया रोहिणी एसा ॥२७६५॥

दोहग्ग-रोग-दालिद्द-सोग-पियविप्पओग-पमुहेहिं ।
दुक्खेहिं दुयं बहुसो इत्थी-जम्मम्मि संपत्ता ॥२७६६॥

कइयावि कुदेव-भवे परपेसत्तणकरे समुप्पन्ना ।
इय चउगइ-संसारं भमिऊण असंखकालमिमा ॥२७६७॥

उप्पन्ना धन्नउरे गामे गोवद्धणस्स गिहवइणो ।
धूयत्ताए एत्तो धन्निय त्ति नामं कयं तीए ॥२७६८॥

अह धन्निया पवन्ना तारुन्नं तरुण-लोय-मणहरणं ।
दिट्ठा मयहर-पुत्तेण मग्गिया तह य परिणीया ॥२७६९॥

तीए य अंग-संगम्मि तस्स जाओ स को वि संतावो ।
जेणप्पा पजलिय-जलणकुंड-खित्तो व्व पडिहाइ ॥२७७०॥

तओ विरत्तेण निव्वासिया सगेहाओ धन्निया [१८]रुयंती पत्ता पिईहरं । समासासिया पिउणा दिन्ना निय-पिंडारस्स । भणिओ य सो-भद्द ! घर-जामाउओ तुमं, मा मम धूयाए पणय-खंडणं करेसु त्ति । सो वि तीए सरीर-फरिस-मित्तेण जणिय-महंत-संतावो गामं पि मोत्तूण पणट्ठो । विसन्ना धन्निया । भणिया पिउणा- वच्छे ! तुह वच्छल्ल-तल्लिच्छेण मए अकज्जं पि कयं । तं पि तुह पुव्व-कम्मवसओ विहलं जायं,अओ खेयमकुणंती दाणाइ-धम्म-रया मह घरे चिट्ठ । तहेव चिट्ठमाणीए वच्चए कालो । कयाइ गिहमागया साहुणो पुच्छिया इमीए-जाणह तुब्भे मंतं तंतं वा जेण परो वसीहवइ ? । तेहिं वुत्तं-जाणंति अम्ह गुरुणो जेण तेलोक्कं पि वसो होइ । धन्नियाए वुत्तं- कत्थ ते गुरुणो ? । मुणीहिं वुत्तं-लीलागरुज्जाणे सीलागरा नाम समोसढा चिट्ठंति । भुत्तुत्तरं गया पिउणा सह धन्निया । वंदिऊण गुरुं निसन्ना पुरओ । भणियं अणाए- भयवं ! कहेह वसीयरण-विसयं मंतं तंतं वा । गुरुणा वुत्तं-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तइलोक्क-वसीकरणो समत्त मणि चिंतियत्थ-संजणणो ।
जिण-पन्नत्तो धम्मो मंतो तंतो व न हु अन्नो ॥२७७१॥

जेहिं विहिओ न धम्मो पुव्वं ते एत्थ दुत्थिया जीवा ।
किं पसरइ दालिद्दं चिंतारयणे वि संपत्ते ? ॥२७७२॥

गोवद्धणेण भणियं- पुव्व-भवे मह सूयाए किं विहियं ।
जेणेसा एवंविह-दोहग्ग-कलंकिया जाया ? ॥२७७३॥

भणइ गुरु-जमिमीए रोहिणि-जम्मे कया गुरु-अवन्ना ।
तीए फलेण लहिउं असंख-जम्मेसु दुक्खाइं ॥२७७४॥

उप्पन्ना तव धूया इय सोउं जाय-जाइसरणाए ।
नमिऊण धन्नियाए अवितहमेयं ति संलत्तं ॥२७७५॥

गुरुणा वुत्तं-

इहलोईए वि कज्जे देवं गुरुं [च] नमंति जणा ।
किं पुण परलोय-पहे धम्मायरियं पईव-समं ॥२७७६॥

नाणस्स होइ भागी थिरयरओ दंसणे चरित्ते य ।
धन्ना आवकहाए गुरुकुलवासं न मुंचंति ॥२७७७॥

छट्ठट्ठम-दसम-दुवालसेहिं मासद्ध-मासखमणेहिं ।
अकुणंतो गुरु-वयणं अणंत-संसारिओ होइ ॥२७७८॥

इय सोउं पुव्वकयाईयारमालोईऊण गुरुपुरओ ।
गहिउं गिहत्थधम्मं च धन्निया कुणइ तिव्व-तवं ॥२७७९॥

वत्थं भत्तं पाणं पत्तं सेज्जं च जं जमणुकूलं ।
तं तं गुरूण वियरेइ फासुयं एसणिज्जं च ॥२७८०॥

अह उल्लसंत-सद्धा संवेगपरा "पवज्जिउं दिक्खं ।
गुरुणो पवत्तिणीए य कुणइ आणं सबहुमाणं ॥२७८१॥

किं बहुणा ? ऊसासाइ वज्जिउं अवर-सव्व-किच्चेसु ।
ते पुच्छिऊण सम्मं पयट्टए धन्निया धन्ना ॥२७८२॥

इय गुरुजण-आणाए विहिय-वया वीस-वरिस-लक्खाइं ।
मरिऊण धन्निया सा सोहम्म-सुरालयं पत्ता ॥२७८३॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तत्तो चविऊण इमा विउलमई तुज्झ पिययमा जाया ।
गुरु-भत्ति-फलेणं विउल-बुद्धि-भोगेहिं संजुत्ता ॥२७८४॥

जो पुव्व-भवे गोवद्धणो त्ति जणओ इमीए कय-सुकओ ।
सग्गं गंतूण चुओ तुमं पइ एत्थ सो जाओ ॥२७८५॥

इय सोउं धणमित्तो विउलमई तह य दोवि चिंतंति ।
नडपिच्छणय-सरिच्छं धी ! संसारस्स रूवमिणं ॥२७८६॥

जम्मि जणओ वि भत्ता सुया वि भज्जा य जायए एवं ।
को तत्थ रमइ मइमं विडंबणा-भायणम्मि भवे ? ॥२७८७॥

इय संविग्गमणाइं काउं जिण-मंदिरेसु महिमाओ ।
कय-सव्व-संग-चागाइं ताइं दिक्खं पवन्नाइं ॥२७८८॥

गुरु-आणाए छट्ठट्ठमाइं तिव्वं तवं विहेऊण ।
धणमित्तो विउलमई य दोवि पत्ताइं निव्वाणं ॥२७८९॥

गुरु-सेवं कुणमाणो वि जो न कोहग्गि-निग्गहं कुज्जा ।
दोगच्च-दलण-दच्छं धम्म-धणं दज्झए तस्स ॥२७९०॥

बहिरम्मि मंतणं पिव रन्ने रुन्नं व तमसि नट्टं व ।
उवसम-रहिए जीवे धम्माणुट्ठाणमिह विहलं ॥२७९१॥

कज्जाकज्ज-वियारण-चेयन्नहरस्स विसहरस्सेव ।
कोवस्स कोऽवगासं मइमं मण-मंदिरे दिज्जा ? ॥२७९२॥

सुट्ठु जलणो जलंतो वि दहइ तं चेव जत्थ संलग्गो ।
कोह-जलणो उ जलिउं परमप्पाणं परभवं च ॥२७९३॥

दुव्वयण-पूय-कलिओ कलुसज्झवसाय-किमिकुलाइन्नो ।
कोहो कोहो व्व धुवं धम्म-सरीरं विणासेइ ॥२७९४॥

जिण-पवयण-मेह-समुब्भवेण परसमामएण कोव-दवं ।
विज्झवइ जो नरो होइ सिव-फलं तस्स धम्म-वणं ॥२७९५॥

कविलो व्व कोव-कलिओ इह-परलोए य लहइ दुक्खाइं ।
उवसम-सहिओ पुण केसवो व्व पावेइ कल्लाणं ॥२७९६॥

तहाहि-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[४. कोपोपशमयो कपिल-केशव-कथा]

इहेव जंबुद्दीवे भारहे वासे नाणामणि-खंड-मंडिय-परंडि-पासाय-संदब्भा विदब्भा नयरी । तत्थ सूरो वि न कमलोवयारओ, सोमो वि न दोसायरो, वसुहानंदणो वि न वक्को विक्कमसेणो राया । तस्स निरुवम-रूव-लायन्नावगन्निय-सुरसुंदरी रइसुंदरी देवी । तीए सरयंद-कुंद-सुंदर-गुणो गुणसेणो पुत्तो । लहुओ य तस्स सावक्कओ [10]चंडसेणो भाया ।

सरल-सहावत्तणओ गुणसेणो गुणइ तम्मि जह नेहं ।
गुणसेणे उण न तहा [11]चंडसेणो कुडिलचित्तो ॥२७९७॥

बालत्तणओ वि हु विसय-सोक्ख-विमुहो मणम्मि गुणसेणो ।
जणणि-जणय-उवरोहेण गेहवासम्मि संवसइ ॥२७९८॥

एगया उग्ग-विस-वियार-जणिय-तिव्व-वेयणो मुच्छा-निमीलियच्छो निवडिओ धरणिवट्ठे गुणसेणो । कओ परियणेण महंतो कोलाहलो । तं सोऊण 'हा ! किमेयं ?' ति संखुद्धचित्तो समागओ राया । दिट्ठो तहाविहावत्थगओ गुणसेणो । लक्खिय-विस-वियारेण रन्ना वाहरिया मंत-तंत-कुसला पहाण-विज्जा । कओ तेहिं तन्नियत्तणोवयारो । कहवि जाओ सच्छ-सरीरो गुणसेणो । पहिट्ठ-हियएण रन्ना वत्थाभरण-दाणेण तोसिऊण विसज्जिया विज्जा । केण कयमकज्जं ? त्ति पयट्टा परियणे गवेसणा । जाए ववहारे निच्छियमिणं जहा- चंडसेणकुमार-कारियमेयं ति । गुणसेणो तप्पभिइ वियंभिय-विसय-विराग-चित्तो चिंतिउं पवत्तो-

धी संसार-सरूवं जम्मि महामोह-तरलिया जीवा ।
विसयामिस-लुद्धमणा कज्जमकज्जं व न मुणंति ॥२७९९॥

मह संपइ पज्जत्तं किंपागफलोवभोग-तुल्लेहिं ।
मुहमहुरेहिं परिणाम-दुक्खहेऊहिं विसएहिं ॥२८००॥

जइ कहवि पुन्नवसओ सुगुरूणं दंसणं मह हविज्जा ।
तो तेसिं पयमूले पव्वज्जमहं पवज्जिस्सं ॥२८०१॥

एवमइक्कंतेसुं कइवइ-दिणेसु समागओ तत्थ दिव्वनाण-मुणिय-तिकालसरूवो व्व हरिसिय-वम्महो महंत-पुन्न-पब्भारु पावणिज्ज-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पायरा(?) जीवो जीवाणंदो नाम गणहरो । गओ तस्स वंदणत्थं गुणसेणो । दिट्ठोऽणेण भयवं सुरकय-कमल-निसन्नो । नमिऊण तं तक्काल-वियंभमाण-पमोयभर-निब्भरो भालवट्ट-निविट्ठ-करसंपुडो भणिउं पवत्तो-

धन्नो हं मुणिनाह ! लोयण-जुयं जायं कयत्थं इमं,
संपत्ता मह पाणि-पंकय-तले कल्लाणमालाऽखिला ।
संपन्नो मह गोपयंमि व सुहत्तारो भवंभोनिही,
जं दिट्ठो सि विसिट्ठ-पुन्नवसओ धम्मो व्व मुत्तो मए ।।२८०२।।

एवं थोऊण गुरुं पणमिऊणं सेस-साहुणो निविट्ठो गुणसेणो । पारद्धा गुरुणा भवपबंध-विद्धंसणी धम्म-देसणा । लद्धावसरेण पुट्ठं गुणसेणेण- भयवं ! जं एस लोओ चंडसेणं पडुच्च वागरइ तं तहेव न व ? त्ति । गुरुणा भणियं- तहेव । गुणसेणेण भणियं- भयवं ! अच्चंत-करुणापरस्स वि ममोवरि कोवमुव्वहइ एसो । किमित्थ कारणं ? । गुरुणा भणियं- पुव्वभवब्भत्था तुह इमम्मि करुणा इमस्स य तुमम्मि कोवोऽनिमित्तं । गुणसेणेण वुत्तं- भयवं ! कहमेयं ? । गुरुणा वुत्तं- सोम ! सुण,

इहेव जंबुद्दीवे अवर-विदेहे पुक्खलावइ-विजए मंगलउर-नयरं, तत्थ हरि व्व विसाल-वच्छत्थल-निलीण-लच्छी वि सलालसो हरिविक्कमो राया । तत्थ पसत्थ-सत्थ-पारगो पुरोहिओ सोमदत्तो । तस्स सोमिला-कुच्छि-संभवा कविल-केसवाभिहाणा दुवे पुत्ता । समए समप्पिया उवज्झायस्स । तत्थ कविलो मंद-मइत्तणेण बहु-कालेणावि न किं पि सम्मं गेण्हइ । केसवो पुण निउण-बुद्धित्तणेण थेव-कालेणावि सुसिक्खियं करेइ । तओ कविलो पए पए उवहसिज्जइ सेस-छत्तेहिं । दूमिज्जइ हियएणं । एसो ममं उवहसावेइ त्ति वहइ केसवं पइ पओसं । पउट्ठचित्तो नियत्तो पढणाओ । केसवो पुण अवगय-सव्वत्थ-परमत्थो जाओ । अह कालगए जणए गुणाहिओ त्ति निवेसिओ पुरोहिय-पए रन्ना । जाओ रायप्पमुह-महायण-सम्मओ एसो । गुणि त्ति विउसो त्ति सुद्धबुद्धि त्ति परहिय-रओ त्ति कुसलाणुट्ठाणपरु त्ति केसवो कित्तिमणुपत्तो ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जह जह जसवाओ केसवस्स सव्वत्थ वित्थरइ ।
गरूओ तह तह कविलस्स मणम्मि मच्छरो दूरमुच्छलइ ॥२८०३॥

गुण-लद्ध-पूयमवलोईउं परं सिखए खलो न गुणो ।
गुणवंतम्मि पउस्सइ अहह ! अउव्वो खल-सहावो ॥२८०४॥

अन्नम्मि दिणे कविलो मच्छरवसगो विसिट्ठ-जण-पुरओ ।
जंपंतो दोसे केसवस्स जणणीए संलत्तो ॥२८०५॥

रे वच्छ कविल ! पुरिसेण अत्तणो कुसलमहिलसंतेण ।
संतमसंतं व परस्स दूसणं नेव वत्तव्वं ॥२८०६॥

परदोसग्गहणेणं सगुणो किं होइ निग्गुणो संतो ।
जइ पुण गुणी सयं चिय ता किं परदोस-गहणेण ॥२८०७॥

परदोस-जंपणेणं रिद्धी जा होइ तीए पज्जत्तं ।
सगुण-विढत्तं सुयणस्स भूसणं वक्कलं पि दढं ॥२८०८॥

जं गुणनिहिणो निय-बंधवस्स दोसे पयंपसि असंते ।
तं कुणसि तुमं तणमिव लहुयं लोयम्मि अप्पाणं ॥२८०९॥

एवं पन्नविओ वि हु नियय-सहावं अमुंचमाणो सो ।
घय-सित्तो व्व हुयासो बाढं रोसेण पज्जलिओ ॥२८१०॥

उवएस-सहस्सेण वि पिसुणो सुयणत्तणं न पावेइ ।
परिकम्मिओ वि बहुसो काओ किं मरगओ होइ ? ॥२८११॥

तओ सिणेह-पेसलं पि केसवं पडुच्च पच्चवायं चिंतंतस्स कविलस्स वच्चंति दियहा। केसवो उण थेवं पि संकिलेसं परिहरंतो कालं गमेइ। एगया गओ उज्जाणे कीलणत्थं विविह-कीलावक्खित्त-चित्तो य रयणीए पहओ छुरियाए केणावि। कओ परियणेण कोलाहलो। किमेयं ति पहाविया विविह-पहरण-विहत्थ-हत्था रायपुरिसा। सो वि पलायमाणो अकज्जकरण-संखुद्ध-हिययत्तणेण खलंत-गइप्पसरो सरोस-मुक्कहक्कारव-रउद्देहिं गहिओ रायपुरिसेहिं। समप्पिओ तलवरस्स। कविलो त्ति उवलक्खिओ तेण। निवेइओ रन्नो। तओ चिंतियं रन्ना-अहो! उभयलोग-विरुद्धमायरणं महाकुलप्पसूयस्स वि इमस्स। केसवो वि नीओ नियघरं। परियणेण पारद्धा वण-ऽतिगिच्छा। समागओ घरं राया। पुट्ठो केसवो सरीर-पउत्तिं। महंतं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संतावमुव्वहंतेण रन्ना भणियं- जमेरिसे पुरिसे सयल-सत्त-संतोसकारए पर-पीडा-परम्मुहे कविलस्स दुरप्पणो इमं विरुद्धायरणं ति तं महंतमच्छरियं ।

अहवा किं अच्छेरं ? समत्त-जियलोय-लोयण-सुहस्स ।
हरिणंकस्स कवलं गहकल्लोलो कुणइ किं न ? ॥२८१२॥

तो केसवेण वुत्तं- तेण नराहिव ! न किंचि अवरद्धं ।
केवलमिणं पुराकय-कडुकम्म-वियंभियं मज्झ ॥२८१३॥

जं [२३]पुव्वे दुक्कम्मं कयं मए किंपि परिणयं तमिमं ।
कहमन्नहा न कुज्जा पीडमिमो सयल-लोयस्स ? ॥२८१४॥

जं जेण पुव्व-जम्मे सुहमसुहं वा समज्जियं किं पि ।
तं चेव सोऽणुभुंजइ निमित्तमेत्तं परो होइ ॥२८१५॥

ता न हु इमस्स दोसो दोसो मह चेव पुव्व-पावस्स ।
जेण इमं कारविओ[२४] एसो नरनाह ! परमत्थो ॥२८१६॥

पहट्ठ-मुहपंकएण भणियं रन्ना-अहो ! मे फुरंत-पसमावेगो केसवस्स विवेगो, विसुद्धा बुद्धी, अच्चब्भुयं चरियं जमेवंविहावराह-कारगे वि ईसिं पि न पओसो । अहवा,

सुयणो न याणइ च्चिय कोवं काउं परे विरुद्धे वि ।
किं मुयइ कयाइ मयंक-मंडलं जलण-कण-वुट्ठि ? ॥२८१७॥

दूमिज्जंतो वि हु दुज्जणेहिं सुयणो न जंपए कडुयं ।
निप्पीलिओ वि उच्छू महुर-रसं चिय समुग्गिरइ ॥२८१८॥

एवं खणमेक्कं ठाऊण गओ राया सगिहं । केसवो वि जाओ पउण-सरीरो । कविलो वि अकज्जकारि त्ति निव्वासिओ नयराओ रन्ना । परिब्भमंतो पत्तो महाडविं । तत्थ ससिकला-कुडिल-दाढा-कडप्प-दुप्पेच्छ-मुह-कुहरेण पाविओ पंचत्तं पंचाणणेण । [२५]मरिऊण रुद्दज्झाणोवगओ गओ रयणप्पहाए पुढवीए । दट्ठूण निय-बंधवस्स चरिय-पावासवं केसवो संवेगोवगओ गुणड्ढ-गुरुणो पासे गिहत्थोचियं धम्मं संपडिवज्जिऊण विहिणा तं पालिऊणं चिरं पंचत्तं लहिउं समाहि-सहिओ सोहम्मकप्पं गओ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अह जंबुद्दीव-भरहे नयरी नामेण अत्थि मायंदी ।
मायंद-पमुह-पायव-सोहिय-सव्वोउय-धणड्ढा ॥२८१९॥

सरयब्भ-विब्भमादब्भ-भवण-पंतिप्पहा-समूहेण ।
निय-रिद्धीए जा सुरपुरं पि रेहइ हसंति व्व ॥२८२०॥

तत्थऽअत्थि पवर-सेट्ठी विसिट्ठ-निय-विहव-हसिय-वेसमणो ।
समण-पय-पज्जुवासण-विहिय-मणो माणिभद्दो त्ति ॥२८२१॥

तस्स घरिणीए दक्खिवन्न-दाण-विणयाइ-गुण-कलावेण ।
भुवणम्मि लद्ध-निम्मल-जसाइ सुजसाइ गब्भम्मि ॥२८२२॥

सोहम्माओ चविउं केसव-जीवो सुओ समुप्पन्नो ।
जाए वद्धावणयं विहियं रिद्धिप्पबंधेण ॥२८२३॥

अह वड्ढिउमाढत्तो कुबेरदत्तो त्ति विहिय-नामो सो ।
चंदो व्व सयल-जियलोय-लोयणाणं कयाणंदो ॥२८२४॥

समए समप्पिओ सो कलोवज्झायस्स तो कलग्गहणं ।
थेव-दियहेहिं तेणं विहियं अह जोव्वणं पत्तो ॥२८२५॥

एत्तो य कविल-जीवो नरगाओव्वट्टिउं भरहवासे ।
वासवपुरग्गलाए कयंगलाए वर-पुरीए ॥२८२६॥

धणसार-धणसिरीणं वर-धूया देविल त्ति संजाया ।
जोव्वणभरम्मि पत्ता कुबेरदत्तेण परिणीया ॥२८२७॥

पुव्वभवब्भासेणं अत्थि मई तीए कुबेरदत्तस्स ।
जह देविलाए उवरि कुबेरदत्ते न तह तीए ॥२८२८॥

अन्नया पिउ-घरे चिट्ठंतीए देविलाए आणयण-निमित्तं कयंगलाए गओ कइवय-पुरिस-सहाओ कुबेरदत्तो । कय-सक्कारो ठिओ तत्थ कइवय-दिणाणि नाणाविह-विणोएहिं । आणंदिओ गुण-कलावेण ससुर-वग्गो, नवरं दूमिया मणम्मि देविला । पत्थिओ पसत्थ-दियहे कुबेरदत्तो सनयरं । न गंतुमिच्छए देविला । भणिया अम्मा-पिऊहिं-वच्छ ! धन्ना तुमं जीए उदग्ग-सोहग्ग-गुणनिही सयल-कला-कोसल्ल-कोसो वल्लहो लद्धो, ता कीस विसायमुव्वहसि ? । वच्छ भत्तुणा समं ससुरहरं, तत्थ गयाए य तुमए कायव्वा गुरुयणस्स सुस्सूसा, न लंघियव्वा सव्वत्थ उचिय-पडिवत्ती, मोत्तव्वा कुसील-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संसग्गी, परिहरियव्वं परघर-गमणं, न वत्तव्वं परस्स दूसणं, न दूमियव्वो कडुय-वयणेहिं परियणो, न वट्टियव्वं गरूयावराहे वि भत्तुणो पडिकूल-वित्तीए, न खंडियव्वं पाण-संसए वि सीलं। तत्तो सोऊण इमं पवन्नमाणा अणिच्छमाणी वि सद्धिं कुबेरदत्तेण पत्थिया देविला।

मग्गे वच्चंतीए मज्झण्हे गामदुग-विचालम्मि।
भणिओ कुबेरदत्तो-नाह! ममं बाहए तण्हा ॥२८२९॥

जइ कहवि संपयं पिय! पावेमि न पाणिउं तओ पाणा।
वच्चंति मज्झ नूणं कुबेरदत्तेण तो धरिउं ॥२८३०॥

निय-वाहणं सहाया पयंपिया-पाणिउं गवेसेह
तो सव्वे वि पयट्टा गवेसिउं रन्न-मज्झम्मि ॥२८३१॥

ते वि हु परिब्भंता जलत्थिणो दूर-देसमणुपत्ता।
सयमवि कुबेरदत्तो पिया-समेओ समुत्तरिउं ॥२८३२॥

सगडाओ परियडंता मग्गतडे वग्गडे वियडमयडं।
पेच्छइ तण-संछन्नं तो एवं पिययमं भणइ ॥२८३३॥

अत्थत्थि अंध-कूवे नीरं नवरं न तीरए घेत्तुं।
तो तीए संलत्तं मह मोयग-गग्गरिं रित्तं ॥२८३४॥

काऊण उत्तरिज्जेहिं बंधिउं खिवसु कूव-मज्झम्मि।
कड्ढेसु जलं तह वि हु विहुरा तण्हाए जेणाहं ॥२८३५॥

तं सो तहेव काउं जा कूवे खिवइ गग्गरिं गरूयं।
तो तीए पक्खित्तो कुबेरदत्तो तहिं कूवे ॥२८३६॥

पच्छाहुत्तं चलिया संपत्ता पिउहरं रूयंती सा।
अम्मा-पिऊहिं पुट्ठा विसाय-भर-निब्भर-मणेहिं ॥२८३७॥

वच्छे! रूयसि किमेवं? कुसलं जामाउयस्स गुणनिहिणो?।
वच्चंताणं मग्गे किं को वि उवद्दवो जाओ? ॥२८३८॥

तो तीए अलिय-विसाय-वस-विसट्टंत-बाह-सलिलाए।
संलत्तमिणं-हा हा! हयम्हि विहिणा विणासेण ॥२८३९॥

वच्चंताण म्ह पहे सुन्नारन्ने गवेसिउं सलिलं।
दूरं गएसु वंठेसु तो समुग्गीरिय-किवाणा ॥२८४०॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चोरा समागया झत्ति अज्जउत्तो चउद्दिसं तेहिं ।
पहरिउमारद्धो तो अहं पि भय-संभमुब्भंता ॥२८४१॥

नट्ठा कट्ठेण इहं समागया अह समग्ग-सयण-गणो ।
सोउं इमं महंतं संपत्तो सोग-संतावं ॥२८४२॥

विलवइ कुबेरदत्तस्स गुण-गणं निय-मणम्मि सुमरंतो ।
सुपुरिस-चूडामणिणो पिच्छ अह ! केरिसं जायं ? ॥२८४३॥

हयविहि हयास निग्घिण कीस तए तस्स कयमिणं वसणं ।
एसा वि कित्तणिज्जा अभग्गवंताण धूरि वंछा ॥२८४४॥

इच्चाइ विलविऊणं संठविउं देविला मिउ-गिराहिं ।
खित्ता रसोइहरए बोडित्ता मत्थयं तीए ॥२८४५॥

तो खिन्न-सव्व-गत्ता मसिमलिणिय-वत्थ-हत्थ-पायतला ।
कालं गमेइ दुक्खत्त-माणसा देविला बाढं ॥२८४६॥

इओ य पडिनियत्ता ते वंठा विसंठुलं कुबेरदत्त-सुन्नं सगडं पेच्छिऊण 'अहो ! चोर-विलसियमेयं' ति विसन्नचित्ता गया सनयरं, सिट्ठं जहाइट्ठं सिट्ठिणो । विसन्नो सो । कुबेरदत्तो वि अंधकूवे पक्खित्तो पंच-नमोक्कार-प्पभावेण अक्खय-सरीरो निवडिओ नीर-मज्झे । उत्तरिऊण ठिओ तस्स एग-देसे । बीय-दिणे समागओ तत्थ सुगुत्त-सत्थवाहो । आवासिओ तत्थ पएसे । तओ कूवाओ सलिलमागरिसिउं पवत्ता सत्थ-पुरिसा भणिया कुबेरदत्तेण-भो भो ! नित्थारह ममं इमाओ कूवाओ । नायवुत्तंतो समागओ तत्थ सत्थवाहो । नित्थारिओ तेण, नीओ नियावासं, पुट्ठो य सायरं-भद्द ! संसारे व्व दुत्तरे कहं अंध-कूवे निवडिओ तुमं ? । तेण वुत्तं- तण्हाभिभूओ जलमायड्ढंतो निवडिओऽहमित्थ । पडिवन्नो पुत्तो त्ति सत्थवाहेण, काराविओ न्हाण-भोयणाईयं, नियंसाविओ महामुल्ल-दुगुल्ल-जुयलं, धरिओ अप्पणो पासे ।

अन्नया कुबेरदत्तेण भणिओ सत्थवाहो- जइवि तुह ताय-निव्विसेसस्स समीवे वट्टमाणस्स मे मण-निव्वुइ तहा वि मह विरहे अम्मा-पियरो दुक्खं जीवंति त्ति । ता विसज्जेसु मं । विसज्जिओ सत्थवाहेण गओ स-नयरं । आणंदियाणि जणणि-जणया । कयं वद्धावणयं । मिलिया सयण-वग्गा । कमेण समागओ निय-धूयं गहाय

ससुरो । वद्धाविओ कुबेरदत्तो वत्थाभरणप्पयाणेण, पुट्ठो य कुसलोदंतं । तेणावि देविला-चरियं निगूहंतेण कहियं किंपि । गओ सो स-नयरं । ठिया देविला । कवड-नेहप्पयंसणेण आवज्जिओ कुबेरदत्तो । कयाइ कुसग्ग-लग्ग-जलबिंदु-चंचलत्तणेणं जीवियव्वस्स सुरासुरेहिं पि अप्पडिहय-प्पसरत्तणेणं मच्चुणो पंच-नमोक्कार-सुमरणपरो परलोय-मग्गं पवन्नो माणिभद्द-सेट्ठी । कमेण सुजसा वि जससेसा जाया । कुबेरदत्तो वि सुविणिंदयाल-विब्भमं जीवलोयमवलोयंतो विसं व विवाग-विसमं विसय-वासंग-सोक्खमवगच्छंतो तप्पभिइ-वियंभिय-सविसेस-संवेग-वासणो सुगुरु-समीवे पडिवन्न-देसविरई उवासग-पडिमाराहण-कओज्जमो कालं गमेइ । देविला वि कसाय-कलुसिय-मणा मणागं पि अणियत्त-विसयाहिलास-पसरा सराग-हियया हियाहिय-वियार-वज्जिया जिइंदिय-मुणिजणासायणपरा परलोय-भय-विप्पहीणा हीणायार-निरया निरंकुसा कुसीलजण-संसग्गं च अहिलसमाणा समाण-सीलम्मि दुग्गिलाभिहाण-कुलपुत्तगम्मि संपलग्गं चिट्ठइ । अइक्कंतो कोइ कालो ।

एगया गरुयावराह-कुविएण रन्ना उब्बंधाविओ दुग्गिलो । कुबेरदत्तो वि तम्मि दिवसे चउद्दसि त्ति पडिमं पडिवज्जिऊण निय-घरासन्न-सुन्नघर-कोणम्मि ठिओ धम्मज्झाण-परायणो । इयरी वि रयणीए गहिऊण फुल्ल-विलेवणाईणि निग्गया गेहाओ वच्चंती य दिट्ठा तलवरेण । कहिं एसा वच्चइ ? त्ति चिंतंतो लग्गो तीए पिट्ठओ । इयरी वि गया तं पएसं जत्थ सो दुग्गिलो उब्बद्धो चिट्ठइ । आरुहिऊण रुक्ख-साहाए अलंकरिऊण तं फुल्लाईहिं अच्चंताणुरत्तचित्ता चुंबिउं पवत्ता । एत्थंतरे केलिप्पिय-वंतरेण मय-सरीरमणुपविसिऊण खंडियं दंतग्गेहिं नासग्गं तीए । इयरी वि विरसमारसंती नियत्ता, पत्ता निय-गेहं । दिट्ठं च सव्वमेयं तलवरेण । पहायप्पायाए रयणीए पोक्करंती गया राउलं । पुट्ठा रन्ना-किमेसा पुक्करइ ? त्ति । वागरियमणाए- मह दुरप्पा पई एक्क-पल्लंक-पसुत्ताए अज्ज निसाए नासियं छिंदिऊण कहिं पि पणट्ठो । आणत्तो रन्ना तलवरो-गवेसेहि तं । आएसो त्ति भणित्ता पयत्तो तं गवेसिउं । दिट्ठो तेण तहेव पडिमापवन्नो कुबेरदत्तो । आणीओ भुयाए घेत्तूण रन्नो समीवं । भणिओ रन्ना-किं तुमए निरवराहाए नासा छिन्ना ? त्ति । कुबेरदत्तेण चिंतियं- 'अहो ! पावाए वियंभियं ! ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जं अप्पणा कएणं पावेणं पाविउं अणत्थमिणं ।
अप्पाणं निद्दोसं कुणइ तमारोवइ ममं पि ॥२८४७॥

ता मह अलं इमीए कहाए पावाए पाव-जणणीए' ।
इय चिंतिऊण चित्ते कुबेरदत्तो तहेव ठिओ ॥२८४८॥

रन्ना पुणो वि पुट्ठो जाव पयंपइ न किं पि स महप्पा ।
तो तीए पलत्तमिणं-किमुत्तरं कुणइ कयपावो ? ॥२८४९॥

एसो देवस्स पुरो कवडेण ठिओ अवलंबिउं मोणं ।
ता देव ! निव्वियारं इमं अकज्जं कयं इमिणा ॥२८५०॥

तो रन्ना वागरियं- तलवर ! एयस्स निग्गहं कुणसु ।
जेण विणा अवराहं पावेण विडंबिया बाला ॥२८५१॥

तो तलवरेण वुत्तं- इमस्स गुणरयण-रोहणगिरिस्स ।
न वहंति वहत्थं पत्थिविंद ! हत्था मह विहत्था ॥२८५२॥

तो नरवरेण वुत्तं-किं कारणमित्थ तलवर ! कहेसु ।
तो तलवरेण सव्वं कहियं रन्नो रयणि-वित्तं ॥२८५३॥

भणियं पुणो वि तेणं एत्थत्थे देव ! पच्चयं काही ।
मयग-मुहे चिट्ठंतं अज्ज वि तं नासिया सयलं ॥२८५४॥

तओ रन्ना पेसिओ पच्चइय-पुरिसो, दिट्ठं च तं मयग-मुहे नासग्गं। सिट्ठं तेण जहादिट्ठं रन्नो । कुद्धेण रन्ना निव्वासिया स-नयराओ देविला । कुबेरदत्तो उण 'अहो ! परदोस-पयंपण-परम्मुहो एस'त्ति संतुट्ठ-हियएण संपूईओ रन्ना । पत्तो सगेहं परिभाविउं पवत्तो-

धिद्धी ! भवस्सरूवं जम्मि महामोह-परवसा संता ।
पीयमइर व्व जीवा कज्जमकज्जं न मुणंति ॥२८५५॥

गिरि-सरि-पय-पूरं पिव समूलमुम्मूलयंति धम्म-वणं ।
उम्मिंठ-मत्त-करिणो व्व उप्पहेणं पयट्टंति ॥२८५६॥

पेक्खंति समुक्खय-चक्खुणो व्व सग्गापवग्ग-मग्गं नो ।
विसवेग-विहुरिया विव हिओवएसं पि न सुणंति ॥२८५७॥

अगणिय-जण-वयणेज्जा तं किं पि समायरंति किं बहुणा ? ।
इह-परलोए य हवंति भायणं जेण दुक्खाण ॥२८५८॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

किञ्च,

खलमेत्ति व्व खणेणं विहडइ चुडलि व्व जणइ संतावं ।
मइर व्व कुणइ मोहं नइ व्व नीयं सरइ लच्छी ॥२८५९॥

जाण कए कुणसि तुमं रे ! जीव ! बहुप्पयार-पावाइं ।
सयणा सिणेहहीणा खणेण ते सत्तूणो हुंति ॥२८६०॥

जं पुण सरीरमेयं वरवत्थाहरण-भूसणाईहिं ।
अणवरयमुवयरिज्जइ तं पि असासयमसारं च ॥२८६१॥

एगत्थ कहवि परिमोइया वि अन्नत्थ लग्गइ खणेण ।
दूरेण होइ सुहया महिला कंथारि-साह व्व ॥२८६२॥

विसया विसं व परिणाम-दुक्ख-जणगा अवस्स मोत्तव्वा ।
ते उण सयं विमुक्का न कुणंति मणस्स संतावं ॥२८६३॥

ता भव-निबंधणेणं धण-सयण-सरीर-जुवइ-विसयाणं ।
पडिबंधेणं इमिणा न किंचि कज्जं ममेयाणिं ॥२५६४॥

एवं विरत्तचित्तो कुबेरदत्तो समुल्लसिय-सत्तो ।
दाऊण दविण-निचयं चेईहराइसु ठाणेसु ॥२८६५॥

चारित्त-रयण-रोहणगिरीण सिरिभुवण-भूसण-गुरूणो ।
पयमूले पडिवन्नो पव्वज्जं पावगिरि-वज्जं ॥२८६६॥

अहिगय-समत्त-सुत्तो गीयत्थो गुरूयणं अणुन्नविउं ।
जिणकप्पं कुणमाणो पत्तो पच्चंत-गामम्मि ॥२८६७॥

तो देविलाए दिट्ठो परिब्भमंतीए तत्थ दिव्ववसा ।
काउसग्गेण ठिओ बाहिं गामस्स जक्खहरे ॥२८६८॥

तो विस-धूम-पओगं काउं कुवियाए तीए रयणीए ।
मुणिणो विणासणत्थं जक्खहरं सव्वओ पिहियं ॥२८६९॥

विसधूव-धूम-संसग्ग-जाय-गुरु-वेयणो स मुणि-सिंहो ।
नाऊणमप्पणो मरण-समयमुल्लसिय-सुह-भावो ॥२८७०॥

सिद्ध-समक्ख-समुद्धरिय-सव्व-सल्लो महव्वउच्चारं ।
काउं सो पच्चक्खइ सयमेव चउव्विहाहारं ॥२८७१॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आवेइं इमं रे जीव ! सव्व-सत्तेसु तं कुणसु मित्तिं ।
मा कत्थ वि रोसं वहसु देविलाए विसेसेण ॥२८७२॥

उवयारिणी तुहेसा जं नरयाइसु अवस्स-खवणिज्जं ।
तं कम्ममुईरेउं इहावि निट्ठवइ किर एसा ॥२८७३॥

जइ उण इमाइ उवरिं करेसि रोसं चिरं तवं तविउं ।
ता हारिहिसि सुवन्नं धम्मिय पिहु एक्क-फुक्काए ॥२८७४॥

संसारम्मि अणंते अणंतसो नारएसु तिरिएसु ।
जाएण तए सहियाइं जाइं तिक्खाइं दुक्खाइं ॥२८७५॥

तयविक्खाए दुक्खं थोवमिणं धीरिमं तओ धरिउं ।
सहसु सयं कडु-कम्मं ललियमेयं विचिंततो ॥२८७६॥

एवं समाहिपत्तो कुबेरदत्तो महामुणी मरिउं ।
जाओ सणंकुमारे कप्पम्मि महड्ढिओ देवो ॥२८७७॥

अह देविला कयत्थं अप्पाणं मुणिवहेण मन्नंती ।
भयवेविरी पलाणा रन्ने तत्थेव रयणीए ॥२८७८॥

डक्का भुयंगमेणं मया समाणी किलिट्ठ-परिणामा ।
तो वालुयप्पभाए उप्पन्ना नरय-पुढवीए ॥२८७९॥

अत्थि इह जंबुद्दीवे भारहवासे विसिट्ठ-सुरभवणं ।
कंचणपुरं सुरपुरं व सुरयणालंकियं नयरं ॥२८८०॥

तत्थत्थि सूरराओ जय-लच्छि-विलासिणी-विलास-रओ ।
सरय-ससि-किरण-निम्मल-जस-धवलिय-सयल-दिस-वलओ ॥२८८१॥

जइ होज्ज न सत्तासो करचंडो वा न होज्ज जइ सूरो ।
गुणओ वि होज्ज तुल्लो तत्तो सो सूररायस्स ॥२८८२॥

तस्स नरिंदस्स दुवे दइयाओ दिव्व-रूय-रम्माओ ।
रइ-पीइउ व मयणस्स गउरि-गंगाउ व हरस्स ॥२८८३॥

पउमा तत्थ कमलिणी अवरा नामेण कुमुइणी देवी ।
दो वि उवरोह-साराओ सूररायस्स दईयाओ ॥२८८४॥

एत्तो सणंकुमाराकप्पाउ चूओ कुबेरदत्त-जिओ ।
गब्भम्मि कमलिणीए सुह-सुविणाय-सूइओ संतो ॥२८८५॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उप्पन्नो पुत्तत्तेण तो सुहं हरिस-निब्भरा देवी ।
गब्भं परिवहइ वहंति सयल-लोया वि आणंदं ॥२८८६॥

अह पडिपुन्ने समए पसत्थ-दियहम्मि पसवए देवी ।
जाओ तणओ निय-तणु-पहा-पहणिय-भवण-तिमिरो ॥२८८७॥

तो वद्धावइ चेडी तुट्ठिदाणं निवेण तं दिन्नं ।
आसत्तम-वेणीए भुज्जंतं जं न निट्ठाइ ॥२८८८॥

तो आणत्तो मंती नयरे वद्धावणं करावेहि ।
गुरु-रिद्धि-पबंधेणं तेणावि कराविय़ं तं पि ॥२८८९॥

तं जहा-

काराहराइं सोहावियाइं, बंदियाइं सयल मोयावियाइं ।
सव्वत्थ पयट्टिय हट्टसोह, सम्माणिय दाणिण मग्गणोह ॥२८९०॥

सुव्वंति निरंतर तूर-घोस, नच्चंति तरुणि-जण जणिय-तोस ।
निव्वत्तिय घरि घरि तोरणाइं, कय निब्भर-रत्था-सोहणाइं ॥२८९१॥

पुर-मग्ग सित्त चंदण-जलेण, घण-घुसिण-रयण-मय-पेसलेण ।
पविसंति निरंतर अक्खवत्त, रंजिज्जहि कुंकुमि लोय-गत्त ॥२८९२॥

तिय-चच्चर-नच्चिर-वामणयं, मय-घुम्मिर-कंचुइ-हासणयं ।
गुण-कित्तण-वावड-बंदिगणं, परिपूइय-नायर-वुड्ढजणं ॥२८९३॥

गुरु-देवय-पूयण-पत्तजसं, जण-भुत्त-मणिच्छिय-भोज्जरसं ।
जिय-लोयह विम्हय-संजणणं, हुयमेरिसयं सुय-जम्म-दिणं ॥२८९४॥

एसो नीसेस-गुणे धरइ त्ति गुणंधरो त्ति तो नामं ।
कुमरस्स तस्स समए पइट्ठियं गुरु-विभूईए ॥२८९५॥

देहेण गुणोहेण य जह जह कुमरो पवड्ढए कमसो ।
तह तह मणोरहा वि हु वड्ढंति मणे पिउ-जणस्स ॥२८९६॥

समए समप्पिओ सो कलोवज्झायस्स सुह-मुहुत्तम्मि ।
तेण य सव्व-कलाओ गहियाओ थेव-दियहेहिं ॥२८९७॥

अह जोव्वणम्मि पत्तस्स तस्स सो अंगचंगिमो जाओ ।
जेण कओ नरनारी-गणाण चित्ते चमक्कारो ॥२८९८॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जो कुमर-गुण-कित्तण-वावारेणं दिणाइं न गमेइ ।
सो नत्थि तम्मि नयरे बालो तरुणो तहा बुड्डो ॥२८९९॥

खयर-सुर-सुंदरीओ विब्भम-सोहग्ग-चाव-चंगाइं ।
भरियाइं चंद-कर-निम्मलाइं गायंति कुमरस्स ॥२९००॥

अह देविलाए जीवो तत्तो उव्वट्टिऊण नरगाओ ।
परिभमिओ संसारं दुक्खत्तो हीण-जोणीसु ॥२९०१॥

काऊण पुव्व-जम्मे तहाविहं किं पि सुकय-लेसमिमो ।
जाओ कुमार-धावीए नंदणो जोणगो नाम ॥२९०२॥

सो वि कुमरेण समं पवड्डिओ जोव्वणम्मि संपत्तो ।
पुव्व-भवब्भासेणं तम्मि सिणेहो कुमारस्स ॥२९०३॥

कुमरम्मि पउसो जोणगस्स सो को वि माणसे वसइ ।
जव्वसओ सो चिंतइ कुमरस्स विणासणोवाए ॥२९०४॥

एत्तो य अपडुदेहा संपन्ना किंचि कुमुइणी देवी ।
नाउं इमं वइयरं विगप्पियं किंपि समईए ॥२९०५॥

अंसु-जलाविल-नयणो साम-मुहो जोणगो विसन्नो व्व ।
दीहं नीससिऊणं एगंते जंपए कुमरं ॥२९०६॥

किं कुमर ! करेमि अहं ? कत्थ व वच्चामि मंदभग्गोहं ? ।
अहह ! अइ-निंदणेज्जं हय-विहिणो विलसियं विसमं ॥२९०७॥

तो कुमरेणं वुत्तं-वयंस ! विहिणा किमेयमवरद्धं ? ।
कहसु ममावि हु तो जोगणेण वुत्तं-कह कहेमि ? ॥२९०८॥

जं कहिउं पि न तीरइ एयं कहियं पि को व सद्दहिही ? ।
तो कुमरेणं भणियं किमेरिसं जंपसि वयंस ? ॥२९०९॥

एत्तिय-दिणाइं किं कयमसद्दहाणं कयावि तुह वयणे ? ।
तो जोणगो पयंपइ जइ एवं कुमर ! तो सुणसु ॥२९१०॥

अज्ज गिलाण-सरीरा भणिया देवेण कुमुइणी देवी ।
किं तुह देहम्मि दुहं ? सा जंपइ किंपि न दुहं मे ॥२९११॥

तत्तो निब्बंधेणं रन्ना पुट्ठाइ तीइ परिकहियं ।
सवण-विसयं पि पत्तो कुमरो दूमेइ मह हिययं ॥२९१२॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जह जह सुणेमि नामं इमस्स तह तह स मज्झ संतावो ।
संभवइ जो न तीरई कहियं पि किमंग पुण सहिउं ॥२९१३॥

एयम्मि पुणो दिट्ठे जाइ तं किं पि मह मणे दुक्खं ।
मन्नामि जं न नरएसु नारयाणं पि संभवइ ॥२९१४॥

जइ जीवियाए कज्जं मए तुमं ता करेसु कुमरस्स ।
नामं पि जहा न सुव्वइ अन्नह मम[26] जीवियं नत्थि ॥२९१५॥

एवं देवीए जंपियंमि देवेण पभणिया देवी- ।
मा कुणसु देवि ! खेयं तहा जइस्सं जहा न तुमं ॥२९१६॥

नामं पि सुणसि कुमरस्स तस्स हक्कारिओ अहं तत्तो ।
देवेण पणय-पुव्वं एगंते पभणिओ एवं ॥२९१७॥

एएण कारणेणं कुमरो देसंतरं जहा कुणइ ।
तं तह तुमं पयंपसु अम्हे पुण नियय-जीहाए ॥२९१८॥

न चएमो वोत्तुमिमं कुमराभिमुहं भणिज्जसि तुमं तो ।
आएसो[27] त्ति भणित्ता समागओ कुमर ! तुह पासं ॥२९१९॥

तत्तो जमित्थ जुत्तं तं कुणसु तओ विचिंतए कुमरो ।
नूणं महिलाओ इमाओ गरूय-दुच्चरिय-भरियाओ ॥२९२०॥

जे के वि अणत्थपयं दोसा सुव्वंति सव्व-लोयम्मि ।
तेसिं निवासभूमी सव्वेसिमिमाओ महिलाओ ॥२९२१॥

अन्नो होज्ज न होज्ज व कयाइ दोसो सहावतुच्छाणं ।
महिलाण मच्छरो उण निच्चं पि न मुंचए चित्तं ॥२९२२॥

अहवा किं एएणं ? सच्चिय परमोवयारिणी मज्झ ।
जं देस-दंसणे मह पुव्वं पि कुऊहलं आसि ॥२९२३॥

जओ-

निय-पुन्न-परिक्खा देसभास नाणं संसत्त-माहप्पं ।
नव-नव-कुऊहलाइं न विणा देसंतरगमेण ॥२९२४॥

तत्तो न इमा जइ पन्नवेज्ज एवं कमेण मह तायं ।
ता नेह-निब्भर-मणो ताओ कह मं विसज्जेज्ज ? ॥२९२५॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एवं विचिंतिऊणं कस्स वि अनिवेइऊण नयराओ ।
खग्गसहाओ कुमरो विणिग्गओ जोणगेण समं ॥२९२६॥

वच्चंतो य कमेणं पहे परिव्वायगस्स तो मिलिओ ।
अन्नन्न-संकह-खित्त-माणसा जंति ते सव्वे ॥२९२७॥

पत्ता एगम्मि सन्निवेसे । ठिओ बाहिं गुणधरो । गया परिव्वायग-जोणगा मज्झभाए भोयणत्थं । गहियं जोणगेण भोयणं, दोन्नि मोयगा य इमं गुणंधरस्स दाहामि त्ति चिंतिऊण पक्खित्तमेगम्मि मोयगे विसं । समागओ गुणंधर-सयासं । मइब्भमेणं दिन्नो निव्विसो मोयगो गुणंधरस्स, भुत्तो य अप्पणा सविसो । तव्वसेण मुच्छा-समुच्छिन्न-चेयणो निमीलिय-लोयणो निवडिओ महीए जोणगो । हा ! किमेयं ? ति पज्जाउलो जाव चिट्ठइ गुणधरो ताव काऊण भोयणं पत्तो परिव्वायगो । दिट्ठो तेण तहावत्थो जोणगो । लक्खिय-विसवियारेण करुणाए कओ तन्नियत्तणोवयारो । जाओ सो समासत्थो । जं तेण गुणंधरस्स चिंतियं तं तस्सेव जायं । जओ-

चिंतेइ जो मूढमई दुरप्पा अपावचित्तस्स परस्स पावं ।
तेणेव पावेण हयस्स तस्स तं अप्पणो चेव पडेइ पायं ॥२९२८॥

तिन्नि वि पयट्टा गंतुं । कमेण पत्ता समंतओ भमंत-मत्त-मायंग-वग्घ-सिंघ-संघाय-संकुलं महाडविं । तत्थ पुरओ वच्चंतं परिव्वायगं पडुच्च कुविय-कयंतो व्व उद्धाइओ करचवेडा-भीएण घणेण उवाइणीकएहिं वज्जतंतूहिं व कडारेहिं केसरेहिं करालकंधरो निय-हरिण-विणास-संकिएण हरिणंकेण पणामियाहिं कलाहिं व कुडिलाहिं दाढाहिं दुप्पेच्छो, अतुच्छ-पुच्छच्छड-छोडणुत्तट्ठाए पुहवीए समप्पिएण पिय-पुत्तेण पडिवन्नो, भयमुत्तिणा मंगलेणं व फुलिंगपिंगलेण नयण-जुगलेण भीमाणणो पंचाणणो । 'भद्द गुणंधर ! परित्तायसु ममं' ति अक्कंदियं परिव्वायगेण । तओ निसियग्ग-खग्गमुग्गीरिऊण गरूय-सत्तयाए 'भद्द ! मा बीहसु' त्ति बिंतेण गुणंधरेण हक्किओ केसरी । सो वि रोसवस-विवसो पहाविओ गुणंधराभिमुहं । दिट्ठो जोणगेण । अहो ! सोहणं संवुत्तं जमेस केसरिणा संरुद्धो । सो एस ओसहं विणा वाहि-विगमो त्ति चिंतिऊण पणट्ठो जोणगो । गरूय-सत्तयाए अचिंत-सामत्थयाए पुन्नोदयस्स खग्गेण दुहा काऊण कुमारेण पंचत्तमुवणीओ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पंचाणणो । खेमेण चलिया कुमार-परिव्वायगा । पत्ता दोवि वसिमं । भणिओ परिव्वायगेण कुमरो- भद्द ! रंजिओ हं इमिणा तुह सच्चरिएण । जओ-

संसय-तुलाए आरोविऊण निय-जीवियं पि सप्पुरिसा ।
कुव्वंति तुमं व परस्स पाण-संरक्खणं के वि ॥२९२९॥

ता महासत्त ! भणामि किं पि तुमं । कुमरेण जंपियं-आइसउ अज्जो जं किंपि करणिज्जं । परिव्वायगेण वुत्तं- अत्थि मे दोन्नि विज्जाओ पढियसिद्धाओ, एक्का विस-निग्घायणी अवरा जल-थंभणी य । ताओ गिण्ह तुमं जेण सुपत्त-निक्खेवेण कयत्थमप्पाणं मन्नेमि । 'अलंघणीय वयणा गुरुणो' त्ति भणंतेण दो वि विज्जाओ विहाणपुव्वं गहियाओ कुमरेण । गओ परिव्वायगो अन्नत्थ । कुमरो वि पत्तो जयपुरं नयरं ।

जं कामिणी-मुहं पिव सुदीहरच्छं सुहालय-सणाहं ।
रयण-समिद्धं जं पुण अनासडंडं तमच्छरियं ॥२९३०॥

पडिवक्ख-नराहिव-तरुणि-नयण-नीरप्पवाह-सित्त व्व ।
सव्वत्थ वित्थरिया भुवण-वणे जस्स कित्तिलया ॥२९३१॥

सो य जसेण नरिंदो परिपालइ तम्मि जयपुरे रज्जं ।
देवी जयावली मणसिहंडि-जलयावली तस्स ॥२९३२॥

ताए धूया तइलोक्क-तिलयभूया अणन्नसमरूया ।
नामेणं ससिलेहा जण-नयणाणंदकर-देहा ॥२९३३॥

सा माहवी-पमुह-सहियणेण सद्धिं मणोरमुज्जाणे ।
कुसुमुच्चयं कुणंती दट्ठुं चंपाहिवस्स सुयं ॥२९३४॥

जणगावमाण-वसओ समागयं तत्थ कणयसिह-नामं ।
मयणसर-ताडियंगी कहकहवि नियत्तिउं सगिहे ॥२९३५॥

सेज्जाए निवडिया नीसहेहिं अंगेहिं सयणलोएण ।
पुट्ठा सरीर-वुत्तं मोणं काउं ठिया तत्तो ॥२९३६॥

अह माहवीए भणिया रहसि-असब्भाविणी सहि ! किमेवं ।
जाया तुमं ममावि हु जं कहसि पुरो न सब्भावं ॥२९३७॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तह वि सरीराऽसत्थ-कारणं तुज्झ सहि ! मए नायं ।
जं रायसुय-पलोयण-कुऊहलक्खित्त-चित्ताए ॥२१३८॥

कुसुमसर-पूयणत्थं न कओ कुसुमुच्चओ तए नूणं ।
तेण तुह कमलवयणे कुविओ कुसुमाउहो भयवं ॥२१३९॥

तेणावि ताडिया निय-सरेहिं जाया सि तो असत्थ-तणू ।
एइए लक्खियाहं ति लज्जिया चिंतए कुमरी ॥२१४०॥

अद्धच्छि-पिच्छियाइं दूरे चिट्ठंतु वंक-भणियाइं ।
ऊसरियं पि मुणिज्जइ वियड्ढ-जण-संकुले गामे ॥२१४१॥

तो भणिया रायसुयाए माहवी-सहि ! तुमं वियड्ढा सि ।
मुणसि सयं चिय ता नत्थि ते रहस्सं अओ सुणसु ॥२१४२॥

एगत्तो अणुराओ पेलइ लज्जा खलेइ अन्नत्तो ।
इय वग्घ-दुत्तडी-नाय-निवडिया किं करेमि अहं ? ॥२१४३॥

तो माहवीइ भणियं-धीरत्तं रायउत्ति ! मा मुयसु ।
तह कहवि जइस्समहं जइ झत्ति समीहियं लहसि ॥२१४४॥

इय जंपिऊण एसा रायसुय-समीवमुवगया सिग्घं ।
दिट्ठो सो अच्चत्थं मयणावत्थाए अणुरागो ॥२१४५॥

रायसुयाए सरूवं सव्वं तीए निवेइयं तस्स ।
तस्स विय सरूवं सव्वमक्खियं रायधूयाए ॥२१४६॥

अह माहवीइ तेसिं काल-विलंबाऽखमत्तणं नाउं ।
कामभवणे निसीहे विहिओ परिणयण-संकेओ ॥२१४७॥

तओ जायाए रयणीए केणइ अमुणिज्जंती अविन्नाय-रयणि-विभागा अपत्ते वि मज्झ-रत्ते परिणयणाणुरूवोवगरण-हत्थाए माहवीए अणुगम्ममाणा मंदमंदुम्मुक्क-चलणा समागया कामाययणे ससिलेहा । कया कुसुमाउहस्स पूया । माहवीए वि भवणब्भंतरं करेण परामुसंतीए पत्तो पुव्व-पसुत्तो तत्थ गुणंधरो । पुव्वुत्त-रायउत्त-संकियाए य सवण-मूले ठाविऊण[28] भणिओ-अहो ! किमेवं विलंबेसि ? । अवक्कमइ एस हत्थग्गह-मुहुत्तो । एयं च सुच्चा गुणंधरेण चिंतियं- मन्ने एसा वराई पुव्वकय-संकेय-पुरिस-बुद्धीए ममं समुल्लवइ । ता जावऽज्ज वि सो न आगच्छइ ताव करेमि एय-वयणं ति चिंतिऊण उट्ठिओ एसो ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

समप्पियाइं पवर-वत्थाभरणाइणि माहवीए कुमरस्स । तेण वि 'पुव्वभवारोविय-सुकय-कप्पदुमस्स को वि कुसुमुग्गमो इमो' त्ति मंतिऊण नियत्थाइं ताइं । नीओ तीए एस कुसुमाउह-समीवं । कारिओ रायकन्नाए करग्गहणं । कओ सव्वो वि तक्कालोचिय-विही । भणियं माहवीए-रायउत्त ! जइ वि अविरुद्धो एस मग्गो तहावि गुरुयण-अणाउच्छाए सयं कीरंतो न [11]संतोसं जणइ त्ति, ता संपयमिहा-वत्थाणमणुचियं । तओ निग्गओ रायउत्तो ताहिं समं । वच्चंताणं पहे पहाया रयणी । समुग्गओ कमलबंधवो । सम्मं निरूविओ निरूवम-रूव-लावण्ण-सुन्नियामर-मरट्टो गुणंधरो रायकन्नाए । किमेयं ? ति पलोईयं मुहं माहवीए । 'असमिक्खियं कयं'ति विसन्ना माहवी । भणिया रायधूयाए- भद्दे !

मा कुणसु किं पि खेयं कायमणिं पइ पसारिए हत्थे ।
जइ चडइ मरगय-मणी पुन्नवसा किं तओ नट्ठं ? ॥२९४८॥

भोत्तुं गुड-मोयगमुज्जयाइ जइ खंड-मोयगो लद्धो ।
ता किं हरिसावसरे कायव्वो होइ मणखेओ ? ॥२९४९॥

गुणंधरेण निरूविया अहरिय-रइ-रंभा-रूव-सरंभा रायधूया । चिंतियं- अहो ! अणब्भा वुट्ठि त्ति । एवं अन्नोन्न-दंसण-खित्त-चित्ताइं पत्ताइं तामलित्तिं । ठियाइं तत्थ । परूढो परोप्परं पणओ । एगया मिलिओ जोणगो रायउत्तस्स । तेणावि नीओ नीयावासं पुट्ठो- भद्द ! कुसलं ? । तओ 'हा ! तहाविहं वसणमणुपत्तो वि जीवइ इमो !' त्ति अंतोदूमिय-मणेण बाहिं कवड-नेहं पयासंतेण भणियमणेण-रायउत्त ! कुसलं संपयं तुह दंसणेण । जओ-

एत्तिय-कालं तुह विरह-जलण-जाला-पलित्त-हियएण ।
पत्तं दुहं मए जं तं मा रिउणो वि पावंतु ॥२९५०॥

तुह सुद्धिकए रन्नं भमिओ गामाइएसु भमिरेण ।
कहवि पुरा-कय-पुन्नोदएण दिट्ठो सि अज्ज तुमं ॥२९५१॥

गुणंधरेणाऽवि सिट्ठो निय-वुत्तंतो जोणगस्स । एवं वच्चंतेसु दिणेसु जोणगेण समं गओ गुणंधरो मयण-महूसवं पलोईउं । परिब्भमंतेण दिट्ठा सहयार-वीहियाए विबुद्धारविंद-सुंदर-मुही कुम्मुन्नय-कमा कमलदल-विसालच्छी लच्छी विव मणोरमा नाम राय-कन्नगा । तीए अ तप्पइं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पेसिया पीऊस-वुट्ठि व्व दिट्ठी साहिलासं । ठिओ सो तत्थ वाजेण । भणिओऽणेण जोणगो- मित्त !

नूणमिमीए निरग्गल-निसग्ग-सोहग्ग-भग्ग-गव्वाओ ।
लज्जाइ सुर-वहूओ अदिस्सभावं पवन्नाओ ॥२९५२॥

जोणगेण वुत्तं- तुमं महिला-लंपडो संवुत्तो ता एवं मन्नेसि । पेसियमिमीए कुमरस्स कविंजलाए हत्थे तंबोलं । गहियं गुणंधरेण । किमेत्थ जुत्तं ति जाव चिंतइ ताव उम्मूलिऊण खंभं वियरिओ मत्त हत्थी । कयमणेण असमंजसं । आउलीहूओ जणो । समागओ सहयार-वीहिमुद्देसं भउब्भंत-लोयणो पलाणो कन्नगा-परियणो । न पलाणा रायकन्ना । धाविओ तं पइ हत्थी । अद्धगहिया इमा । तेण धाहावियं परियणेण- अत्थि को वि महासत्तो सप्पुरिस-चूडामणी चउद्दसी-जाओ जो अम्ह सामिणिं कयंत-विब्भमाओ इमाओ रक्खेइ ? ।

तो धाविऊण हत्थी पच्छिम-भागम्मि रायपुत्तेण ।
मुट्ठीइ तहा पहओ तयभिमुहं सो जहा चलिओ ॥२९५३॥

तं वंचिऊण तत्तो नीया अन्नत्थ तेण रायसुया ।
नित्थारिया कयंताणुगारि-करिसंभमाहिं तो ॥२९५४॥

मुंचइ न मुंचमाणो वि रायकन्ना गुणंधर-कुमारं ।
आणंद-सुंदरेहिं पुणरुत्तं नियइ नयणेहिं ॥२९५५॥

तत्तो अन्नत्थ-गए गयम्मि मिलिओ अ परियणो तीए ।
तेणावि सरूवं किंचि लक्खियं ताण दोण्हं पि ॥२९५६॥

तम्मि समयम्मि पढियं केणावि हु मागहेण जह एसो ।
जयइ गुणंधर-कुमरो सूर-नरिंदस्स वर-पुत्तो ॥२९५७॥

एत्थंतरे तरुण-पउरेहिं पारद्धं परुप्पर-विइन्न-सिंगय-जलप्पहार-मुक्क-सिक्कार-मणहरं हरिणमय-घुसिण-घणसार-घणचंदणुम्मिस्स-सलिलेहिं छंटणं । गओ दिसोदिसं सव्व-लोगो । गुणंधरो वि पत्तो नियावासं । अन्न-दियहे पेसिओ गुणंधरेण रायकन्ना-पउत्ति-निमित्तं जोणगो रायसुयावासस्स पेरंते परिसक्कंतो दिट्ठो कविंजलाए । तओ सो एस तस्स सुहय-सेहरस्स सहयरो त्ति बहुमाणपुव्वं हक्कारिऊण नीओ रायकन्ना-समीवं । दिन्नं सगोरवमासणं । दिट्ठा तेण रायकन्ना । केरिसी ?

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पल्लव-सयणेज्ज-गया मुणाल-वलया मुणालमय-हारा ।
कय-कयलिदलावाया चंदण-रस-सित्त-सव्वंगी ॥२९५८॥

दीहं नीससमाणा अलद्ध-लक्खं खणं निरिक्खंती ।
परिचत्त-कलब्भासा परिहरिआहरण-तंबोला ॥२९५९॥

परियणमणालवंती अद्वाण-विइन्न-सुन्न-हुंकारा ।
विरह-विहुरा सदीणा दिण-धूसर-ससि-विवन्न-मुही ॥२९६०॥

निद्दा-सुहं निसासु वि अपावमाणा दिणाइं गमयंती ।
कहवि गुणंधर-गुण-संकहासु कय-पहरिसुक्करिसा ॥२९६१॥

भणिया कविंजलाए- सामिणि ! तस्स सुभग्ग-चूडामणिणो मित्तो पेसणेणागओ । एयमायन्निऊण वलिय-कंधरं साणंदं पलोईऊण भणियं रायकन्नाए- भद्द ! सागयं ते, कुसलं ते मित्तस्स ? तहा को एस तुह मित्तस्स ववहारो ? जं एक्कसो दंसणं दाऊण पुणरुत्तं अणुरत्त-जणस्स वत्ता वि न पुच्छीयइ ? । इसिं हसिऊण कविंजलाए भणियं-

जं सामिणि ! तुम्हाणं मणमवहरियं ति तेण सो सुहओ ।
अवराहिणमप्पाणं मुणिऊण अदंसणीहुओ ॥२९६२॥

रायसुयाए वुत्तं-अवराहपयं कहं न सो होज्जा ? ।
जेणाहं अइ-दुसहे विरह-हुयासम्मि पक्खित्ता ॥२९६३॥

तो जइ तं पेक्खिस्संतो भुयपासेण बंधिउं निबिडं ।
काहं तहा जहा सो मणभवणाओ न नीहरइ ॥२९६४॥

जोणगेण वुत्तं- देसंतरागओ मह मित्तो तेण अपरिचिय-रायकुलेसु पवेसं नो सक्कइ त्ति अवनमुणा(?) दंसणं कयं । कविंजलाए भणियं- तुम्ह गवेसणत्थं सव्वत्थ नयरे पेसिओ परियणो मए, परं पउत्ति-मित्तं पि नोवलद्धं । ता कहेसु कया समित्तेण मम सामिणीए दंसणं कारविस्सामि ? । जोणगेण वुत्तं-कल्लं कुसुमागरुज्जाणे मित्तमहं नइस्सं । तुमए मयणपूया-ववएसेण सामिणी नेयव्वा, जेण दंसणं दोण्हं पि होइ ।

एत्थंतरे कंचुइणा आगंतूण विन्नत्तं-कुमरि ! देवी तुह अस्सत्थं सरीरं सोऊण अधिईए वत्तं पुच्छिउमणा आगच्छइ एसा । तओ विसज्जिओ जोणगो निग्गओ तओ ठाणाओ । चिंतियमणेण-अहो ! विसमं विहिणो

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विलसियं ति ।

जह जह अहं उवाए चिंतेमि गुणंधरस्स वसणकए ।
तह तह दिव्वो वि इमो अहिययरं कुणइ कल्लाणं ॥२१६५॥

किं ववसाएण न किंचि विक्कमेणं मईए पज्जत्तं ।
एक्कं चिय देहीणं सुहमसुहं वा कुणइ दिव्वं ॥२१६६॥

तहावि न तरामि इमस्स महब्भुदयं दट्ठुं, एसा य रायधूया इमस्स अच्चंताणुरत्ता । इमीए सयासाओ महंतो अब्भुदओ संभाविज्जइ, ता अन्नहा वुग्गाहेमि एयं । तओ कित्तियं पि वेलं विलंबिऊण बाहिं, अत्थमिए मायंडमंडले विसंभमाणे भुवणब्भंतरम्मि तमालमाला-सामले तिमिर-मंडले मलिणमुहो पत्थिओ आवासं । इओ य नागओ जोणगो त्ति संभंतो आवासाओ निग्गओ गुणंधरो । मिलिओ जोणगस्स । पुट्ठो कुमरेण सो मित्त ! किमत्तिअ-वेलं ठिओसि बाहिं ? । कुविएण व जोणगेण वुत्तं-कीस जाणसि तुमं ? । दुन्नया वि तुज्झ अज्ज वि फलंति । अहं पुण अकय-पावो पावेमि वसणं । संभंतेण भणियं गुणंधरेण- मित्त ! वीसत्थो होउ, कहेसु किं संवुत्तं ? । जोणगेण भणियं- इओ गओहं तुहाएसेण, रायसुया-वास-पेरंते, परिसक्कंतो दिट्ठो रायपुरिसेहिं, तओ अरे ! सो एस रायविरुद्धकारिणो पुरिसस्स सहयरो, ता धरेमो इमं, पच्छा तं पि लहिस्सामो त्ति भणंतेहिं कयंत-भडेहिं व्व भिउडि-भीम-भालवट्टेहिं बद्धोऽहं तेहिं पुट्ठो य कत्थ सो तुज्झ नायगो जेण करि-संभम-मोयणा-ववएसेण चिरं परिरंभिया राय-धूया ? । तओ न याणेमि त्ति जंपियं मए । बाढं कयत्थिओ हं तेहिं तहावि मए न किंचि वुत्तं । संपयं सकज्ज-पज्जाउलाण तेसिं दिट्ठिं वंचिऊण निग्गओहं । ता कुमर ! सच्चं कहेमि-

जयसेण-रायधूयं हरिउं वसणं न जं तुमं पत्तो ।
तं पाणिएण दीवो पज्जलिओ किं न चिंतेसि ? ॥२१६७॥

जइ जीविएण कज्जं ता वच्चसु पवहणं समारुहिउं ।
दीवंतरम्मि संपइ अन्नह ते जीवियं नत्थि ॥२१६८॥

सरल-हिययत्तणेण पडिवज्जिऊण तव्वयणं गओ गुणंधरो जोणगेण समं वेलाउलं । आरूढा दोवि अचल-सत्थवाह-संतिए तक्काल-मुक्के पवहणे ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वच्चंति जाव दीवंतरम्मि ते दो वि तत्थ आरूढा ।
ता जोणगेण दुट्ठाभिसंधिणा मज्झरत्तम्मि ॥२९६९॥

पवहण-तडे निविट्ठो सरीरचिंता-कए विकरुणेण ।
खित्तो गुणंधरो धीरमाणसो जलहि-मज्झम्मि ॥२९७०॥

तो खणमेक्कं ठाउं महंत-कोलाहलो कओ तेण ।
भाया गुणंधरो मे अहह ! कहं सायरे पडिओ ? ॥२९७१॥

ता किं करेमि ? कस्स व कहेमि ? कं वा उपालभामि अहं ? ।
इय किंचि विलविऊणं तुट्ठमणो जोणगो चलिओ ॥२९७२॥

अह अन्न-दिणे दुज्जण-वयण व्व सज्जण-गुणेहिं सामलीकयं गयणं घणेहिं, कुविय-कयंत-जीहाहिं व विप्फुरियं विज्जूहिं, तुच्छ-पुरिसो व्व कहवि दाणं दाऊण गलगज्जिं काउं पयट्टो जलहरो, खलो व्व लद्धप्पसरो समुच्छलिओ कालियावाओ, पीयमइरो व्व जाओ जलही विसंठुल-पयप्पयारो । तओ तड त्ति फुट्टं महिला-हिअय-गय-गुज्झं पिव पवहणं । जोणगो वि भवियव्वया-निओगेण लद्ध-फलगो सत्त-रत्तेण समुत्तरिऊण जलहिं लग्गो तीरि, चिंतिउं पवत्तो य-

गरूया वि आवया मह दूमेइ इमा न माणसं किं पि ।
जं पक्खित्तो खिप्पं गुणंधरो सायरम्मि मए ॥२९७३॥

खिवियं गुणंधरं जलनिहिम्मि मन्नइ कयत्थमप्पाणं ।
अह कुणइ दमगवित्तिं रज्जं व पहिट्ठ-चित्तो सो ॥२९७४॥

जओ-

पयइ खलस्स एसा सहिऊण सयं किलेसजायं पि ।
हणिउं अप्पाणं पि हु परस्स जं कीरए दुक्खं ॥२८७५॥

सिहिप्पवेसं घण-घाय-कुट्टणं सराण-संगं दढ-मुट्ठि-पीडणं ।
खलो किवाणो पर-मारणुज्जओ सहेइ नूणं वसणं न कित्तियं ? ॥२९७६॥

इओ य गुणंधरेण सुमरिया जलथंभिणी विज्जा । तप्पभावेण जलोवरि तरंतो दिट्ठो पहाय-समए दोहिं विज्जाहरेहिं उप्पाडिओ, नीओ सुवेल-पव्वयं ।

घण-निद्ध-पत्तलाइं जम्मि विरायंति तरु-निउंजाइं ।
सूर-भएण व तिमिराइं मिलिय-दुग्गं पवन्नाइं ॥२९७७॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मरगय-सिलायलुल्लसिय-किरण-जालाइं गयण-लग्गाइं ।
जम्मि रवि-रह-तुरंगा लिहंति हरियंकुर-भमेण ॥२९७८॥

तत्थ वित्थिन्न-रयण-खंड-खचिय-खंभ-संभव-पहा-पहयंधयार-पसरं परसंडि-पासायं आरोविऊण 'सामि ! एस अम्हेहिं सलिलोवरि तरंतो पत्तो महाभागो'त्ति भणंतेहिं मुक्को अणेग-विज्जाहर-परिगयस्स पुरओ वाउवेग-विज्जाहरस्स । तेणावि ससमंभममब्भुट्ठिऊण आलिंगिओ गाढं, निवेसिओ पवरासणे भणिओ य- भद्द ! गुणंधर ! सागयं ते । तओ कहमेसो ममं जाणइ त्ति विम्हय-खित्त-चित्तेण वुत्तं गुणंधरेण- सागयं तुम्ह दंसणेण । आणत्तो निय-परियणो खयरेसरेण-करेह न्हाण-भोयणोवयारमेयस्स । कमल-कोमल-करयलेहिं खयरगणेहिं गुणंधरो अब्भंगिओ गंध-तिल्लेहिं सुगंध-दव्वेहिं उव्वट्टिऊण, ण्हविओ कणग-भिंगार-मुह-विणिग्गय-गंधोदएहिं । नियत्थ-पसत्थ-वत्थो वित्थिन्न-मंडवे वाउवेग-विज्जाहरेण सह दिव्व-रसवईए भोत्तुमाढत्तो ।

एत्थंतरे तिरिच्छच्छि-विच्छोहेहिं समुच्छलंत-मच्छरिंछोलि-छाइयं पिव दिसिचक्कं गुणंती समागया गयण-गामिणी मणिमयालंकार-किरण-करंबिय-भवणब्भंतरा तत्थ विज्जुलेहा कन्नगा । सा य भुंजंतस्स निय-बंधुणो वाउवेगस्स समीवे हत्थ-साडयं गहिऊण ठिया । दिट्ठो तीए गुणंधरो अच्चंत सुंदरागारो त्ति गरुय-विम्हिय-खित्त-चित्ताए पुणरुत्तं पलोईउं साहिलासाए दिट्ठीए चिंतियं च-

तइलोक्क-तिलय-भूयं रूयं दट्ठुं इमस्स मयणो वि ।
लज्जाए विलीण-तणू नूणमणंगत्तणं पत्तो ॥२९७९॥

गुणंधरो वि विज्जुलेहा-लावन्नावलोयण-परव्वसो मयणसर-सल्लिय-मणो चिंतिउं पवत्तो- अहो ! चंगिमा अंग-सन्निवेसस्स । अहो ! महुरिमा मुहकमलस्स । अहो ! लवणिमा लोयणाणं ।

चिट्ठइ सइ सन्निहिया किं विज्जादेवया इमा का वि ? ।
विज्जाहरेण इमिणा सत्तेण वसीकया संती ? ॥२९८०॥

जइ पुण अणन्न-सरिसं रूवमिणं होज्ज माणुसीणं पि ।
ता सुरलोय-निमित्तं मुहा किलिस्संति मूढमणा ॥२९८१॥

इच्चाइ चिंतयंतो कय-भोयणो कर-कलिय-तंबोलो खयरेण समं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

निसन्नो महल्ल-पल्लंके । विविह-विणोएहिं गमिऊण खणं भणिओ वाउवेगेण- भद्द ! अत्थि किंचि वत्तव्वं ? गुणधरेण वुत्तं- सम्मं भणसु निव्वियग्घं ।

विज्जाहरेण वुत्तं- वेयड्ढो नाम पव्वओ अत्थि ।
नवरयण-कूड-सिहरग्ग-भग्ग-रवि-रह-तुरंग-पहो ॥२९८२॥

तत्थऽत्थि रयणसालं नयरं नय-रम्म-खयर-रमणीयं ।
रमणीयण-रयणाहरण-किरण-निम्मविय-सुर-चावं ॥२९८३॥

साहिय-समग्ग-विज्जो विज्जाहर-मउलि-मिलिय-पयकमलो ।
धम्मत्थ-काम-निरओ जलणसिंहो तत्थ खयरिंदो ॥२९८४॥

तस्सत्थि चंदकंता कंता सयलावरोह-कयसोहा ।
सोहग्ग-रयणखाणी ताण सुओ वाउवेगो हं ॥२९८५॥

किंच मह लहुय-बहिणी लहूकयाऽमर-पुरंधि-रूवमया ।
मयणस्स हत्थि भल्लि व्व विज्जुलेह त्ति नामेण ॥२९८६॥

संपत्त-जोव्वणा सा पत्थिज्जइ पउर-तरुण-खयरेहिं ।
ताएण चिंतियं तो जस्स न दिज्जइ इमा बाला ॥२९८७॥

सो वि करिस्सइ कोवं ति रोहिणी देवया तओ पुट्ठा ।
साहेसु देवि ! होही को एत्थ वरो मह सुयाए ? ॥२९८८॥

तो देवयाए कहियं- सुवेल-पव्वय-समीव-देसम्मि ।
[१०]पेच्छसि जं नररयणं समुद्द-सलिलोवरि तरंतं ॥२९८९॥

होही गुणंधरो नाम सो वरो नूण विज्जुलेहाए ।
तो ताएणाणत्तो इहागओ हं सपरिवारो ॥२९९०॥

गहिऊण विज्जुलेहं तो एत्थ विउव्विऊण पासायं ।
चिट्ठंतेण मए खलु चउदिसं पेसिया पुरिसा ॥२९९१॥

जलनिहि-गवेसणत्थं तेहिं भमंतेहिं तो तुमं दिट्ठो ।
सलिलोवरिं तरंतो समप्पिओ मह इहाणेउं ॥२९९२॥

ता मज्झ पत्थणाए करग्गहं कुणसु विज्जुलेहाए ।
जेणऽम्ह जणयलोओ लहेइ मण-निव्वुई सव्वो ॥२९९३॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तत्तो गुणंधरेणं वुत्तं वियसंत-वयण-कमलेण ।
भो ! सव्वहाणुकूले कज्जम्मि किमित्थ वत्तव्वं ? ॥२९९४॥

एक्कं ता कज्जमिणं मण-इट्ठं तुम्ह पत्थणा दुईया ।
तं भुक्खियाए[31] सयमवि निमंतणेणं समं जायं ॥२९९५॥

ता भद्द ! जणो एसो करिस्सई नूण जं तुमं भणसि ।
जं पुण जुत्ताऽजुत्तं तमेत्थ जाणसि तुमं चेव ॥२९९६॥

तो खयरेणं वुत्तं- जुत्तमिणं सव्वहा जओ भद्द !।
कहिओ सि देवयाए एक्कं अन्नं बहुगुणो सि ॥२९९७॥

वर-रूव-संपयालोयणाओ नायं तुमं बहुगुणो त्ति ।
जत्थागिई गुणा तत्थ हुंति जम्हा इअ पसिद्धी ॥२९९८॥

दट्ठुं विणयमउव्वं विसुद्ध-कुल-संभवो त्ति नायमिणं ।
जम्हा अकुलीणाणं न होइ विणओ त्ति जणवाओ ॥२९९९॥

तत्तो गुणंधरेणं लज्जोणय-कंधरेण संलत्तं ।
का रूव-संपया मह को वा विणओ गुणा के वा ? ॥३०००॥

किंतु गुण-रयण-रोहण-सुयणाण सिरोमणी तुमं जेण ।
तेणुव्वहसि महायस ! विगुणे वि परम्मि परिओसं ॥३००१॥

किंच तुमं विमलगुणो मुणसि तओ जंपिउं पियं चेव ।
न कयाइ अमयकिरणो अन्नं अमयाउ पज्झरइ ॥३००२॥

इच्चाइ सुह-संकहाहिं गमिऊण खणमेक्कं वाउवेगेण आणत्तो नियपरियणो जहा-'करेह सिग्घं विवाह-सामग्गिं, जेण अज्जेव संझाए सोहणं लग्गं ति कीरइ करग्गहण-मंगलं' । तओ लग्गो समग्गो परियणो निय-निय-वावारेसु ।

इओ य भोयण-मंडवाओ विज्जुलेहा गुणंधराओ हीण-गुणमप्पाणं मन्नमाणी किंचि विसन्न-माणसा पत्ता पासाउवरिमतलं, तत्थ य संताव-नीसहेहिं अंगेहिं दीहुण्ह-नीसास-विसोसियाहरा निसन्ना सिज्जाए । दिट्ठा तहट्ठिया निउणियाए भणिया-'सामिणि ! किमेवमुव्विग्गा विव लक्खीयसि ? । तओ वामयाए मयणस्स विज्जुलेहाए भणियं-'न याणामि किंपि, केवलं भोयण-मंडवं गयाए मम सो को वि महंतो संतावो संजाओ जो कहिउं पि न तीरइ'। तओ तीए कया कयलिदल-पवण-

जलद्दाइ सिसिरोवयारा । पुणो चलणेसु लग्गिऊण भणियं निउणियाए-सामिणि ! कहेह को एत्थ परमत्थो ? । निब्बंधे कए कहियमणाए जहा-सुयं मए अज्ज समुद्दे तरंतो को वि सप्पुरिसो लद्धो । देवयाए कहिओ त्ति पारद्धो मह बंधुणा महंतो तस्स उवयारो । भोयण-मंडवं गयाए अ मए मयणब्भहिय-रूवाइ-गुणो पच्चक्खीकओ नयणेहिं । तं अप्पणो अब्भहिय-गुणं पेच्छमाणीए मणम्मि जाया मे चिंता किमेस मं पडिवज्जिस्सइ न व ? त्ति । तमेयं मे विसाय-कारणं । निउणियाए भणियं-सामिणि ! मुंच विसायं जओ-

जइ गिरिसुयं गिरीसो नेच्छइ सिरिवच्छलंछणो लच्छिं ।
मयरद्धओ रइं तो तुमं पि नायरइ सो सुहओ ॥३००३॥

किं च भोयण-मंडवे तुह समीवट्ठियाए मयण-परवसत्तणं तस्स तुमं पेच्छमाणस्स सक्खा वेअलक्खित्तं । एत्थंतरे आगंतूण चउरियाहिहाणाए चेडीए भणियं-सामिणि ! जुवराओ आणवेइ-'अज्जेव संझाए पाणिग्गहण-लग्गं, ता संपयं कीरंतु सरीर-सक्कार-मंगलाइं । विज्जुलेहा तहेव काउमाढत्ता । लग्ग-समए समागए महाविभूईए परिणीया गुणंधरेण । दिन्नं वाउवेगेण तीए गुणंधरस्स य सुवन्न-रयणालंकार-वत्था य वित्थिण्ण-वत्थुजायं । ठिओ तत्थेव कयवइ(कइवय)-दिणाइं । अन्नया गुणंधरेण वुत्तो वाउवेगो-तामलित्तीए नयरीए ममं पराणेहि । तओ तेण तक्खणा विउव्वियं विउल-मणि-दिप्पमाणं महप्पमाणं विमाणं । आरोविओ गुणंधरो निउणिया-चउरियाहिं चेडीहिं समं विज्जुलेहा, सुवन्न-रयणाइयं च आणिऊण तामलित्तीए कुसुमागरुज्जाणे मुक्काइं सव्वाइं । तओ वाउवेगो विओग-विगलंतंसुजलाविल-लोयणो गुणंधर-विसज्जिओ संतो पत्तो सठाणं । गुणंधरो वि वाउवेग-गुणावज्जिय-हियओ तव्विरहे सुन्नं व अप्पाणं मन्नए । अरइ-विणोयणत्थं वण-पेरंतेसु परिब्भमंतेण तेण दिट्ठं पिट्ठलग्ग-सिर-पिट्ट-कुट्टण-पयट्ट-रूयमाण-रमणि-चक्कं । अक्कंद-सद्द-रउद्द-पुरिस-परंपरा-परिगयं मयगं, तूरसद्द-सवणाओ जीवमाणं निज्जइ त्ति नाऊण पुट्ठो गुणंधरेण पासवत्ती पुरिसो-भद्द ! को एवं कयंतातिही संवुत्तो ?, केण वा निमित्तेण ? ।

तेणावि नाय-वुत्तंतेण वुत्तं-सोम ! सुण, अत्थि एत्थ रिद्धि-वित्थरावहत्थिय-वेसमणो समग्ग-मग्गण-मणोरहाइरित्त-वित्तप्पयाण-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पत्त-कित्ति-पब्भार-भरिय-भुवणब्भंतरो निरंतर-दया-दक्खिन्नाइ-गुण-रयण-रयणायरो रयणायरो[१२] सेट्ठी । तस्स चउण्हं पुत्ताणं उवरि मणोरह-सएहिं समुप्पन्ना संपुन्न-ससि-निम्मलेणं निय-गुण-कलावेणं सयल-रमणि-चक्क-चूडामणी मणिप्पभा कण्णगा, जीए निरुवम-रूवं पेच्छंता अणिमिसेहिं नयणेहि अणिमिसनयणि(णा) त्ति पसिद्धिमुवगया सुरवरा नूणं । सा य संपयं कुसुमाउह-महाराय-लीलावणे जोव्वणे वट्टमाणी निय-घरासन्नुज्जाण-मज्झ-गया नाणाकीलाहिं कीलमाणी डक्का उक्कड-विस-विसहरेण । तव्वियार-वस-नट्ठ-चेयणा परसु-निक्कत्त-चंपयलय व्व धस त्ति निवडिया धरणीए । कओ परियणेण हाहारवो । तं सोऊण ससंभमो समागओ सेट्ठी । मिलिओ समग्ग-सयण-वग्गो । दिट्ठा तयवत्था कन्नगा । समाहूया पहाण-गारुडिया । विहिपुव्वं पढियाइं तेहिं गारुडाइ, पउत्ताओ विविहोसहीओ, बद्धाओ मणीओ, कओ जल-जंतप्पओगो । परं सव्वं पि नीराग-पुरिस-पउत्तं सकाम-कामिणी-कडक्खियं व, नीरस-जण-पुरओ पढियं सुभासियं व ऊसर-खित्ते निक्खित्तं बीयं व, निप्फलं संपन्नं । पुणो वि सिट्ठिणा पडहग-दाण-पुव्वं उग्घोसावियं नयरीए जहा-जो सेट्ठि-धूयं जीवावेइ तस्स सेट्ठी जं मग्गियं पयच्छेइ । अवि य,

जो वरडिं पि न याणइ आहुओ सो वि सिट्ठिणा तत्थ ।
नेहाउराण अहवा केत्तियमेत्तं मणुस्साणं ? ॥३००४॥

तेहिं पि जं कायव्वं तं कयं सव्वं । तहावि न जाओ को वि विसेसो । तओ पच्चक्खाया सव्वेहिं । वियलियासा बंधुणो । हा मच्चो मुद्धो त्ति भणंतो घरिणीए रयणवईए समं मुच्छा-निमीलयच्छो निवडिओ महीए रयणसारो । परियण-कओवयार-लद्ध-चेयणो सोग-संगलंतंसु-जल-पज्जाउल-कवोलो - 'हा वच्छे ! चंद-चारु-वयणे ! हा विसट्ट-कंदोट्टदल-दीह-नयणे ! नयणेहिं इमेहिं कत्थ पुणरुत्तं पलोइयव्वा सि' त्ति पलवमाणो खणं मुच्छिओ खणं सत्थो तं धूया-सरीरगं अग्गिणा सक्कारिउमणिच्छंतो भणिओ सयण-वुड्ढेहिं-'महाभाग ! परिच्चयसु [१३]विओय-सोयं । अवलंबेहि धीरियं ।

तुम्हारिसावि पुरिसा जइ विहुरिज्जंति दड्ढ-सोएणं ।
ता कत्थ थिरं होही धीरत्तमणिंदियं भुवणे ॥३००५॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

किंच सुरासुरेहिं पि अप्पडिहयप्पसरो मच्चू ता संठवेसु अप्पयं, मुंचसु नेह-कायरत्तणं । करेसु धूया-सरीरगस्स सक्कारं । इच्चाइ-पन्नविओ संतो कहवि तमेयं काउं ववसिओ सेट्ठी । गुणंधरेण वुत्तं- तूर-सद्द-सवणाओ नायं मए जहा-'सजीवमेयं'ति । तओ जो एयं जाणइ सो कयाइ जीवणोवायं पि जाणिस्सइ त्ति चिंतिऊण भणियं पुरिसेण-महासत्त ! अत्थि किं कोवि जीवणोवाओ ? । गुणंधरेण वुत्तं-अत्थि ताव मंतो, कज्ज-सिद्धीए पुण दिव्वो पमाणं, ता पउंजेमि मंतं जइ धरावेसि मयगं । पुरिसेण सिग्घं गंतूण चियाए आरोविज्जमाणं धरावियं, भणिओ य सेट्ठी-अत्थि एगो सप्पुरिसो जो इमं जीवावेइ । पच्चुज्जीविएणेव भणियं सेट्ठिणा-कहिं सो ? । पुरिसेण वुत्तं-एसो एइ ।

एत्थंतरे पत्तो तत्थ गुणंधरो, दिट्ठो लोएण । 'अहो ! भद्दागिइ' त्ति विम्हिओ एसो । नूणं जीविया मणिप्पभ त्ति । जाओ समासत्थो सव्व-लोओ । करावियं मंडलं गुणंधरेण । ठाविया तत्थ कन्ना । कओ सयं सिहा-बंधो । सुमरिऊण मंतं भणिया एसा- उट्ठेहि, जणणीए मुहसोहं देहि त्ति । उट्ठिया एसा, गहिया सुवन्न-वालगा, तीए दिन्नं मुह-सोहणं, हरिसिओ सव्व-लोओ, वायावियं तूरं । तं च वारावियं गुणंधरेण । नणु किमणेण ? । अज्जवि सविसा एसा, इमं पुण मए मंत-सामत्थं दंसियं, न उण किंपि कम्मं करेमि । लोएण भणियं- महापभावो तुमं ति । ता जीवावेहि इमं । पाडिया पुणो उत्तरिज्जाहरण-विस-संकामणेण दंसियं कंचि वेलं जणाण खेड्डं । जीवाविया सा परमत्थेणं । हरिसुप्फुल्ल-लोयणाए अणाए पलोईओ साहिलासं कुमारो, तेणावि विम्हिय-मणेण मणिप्पभा ।

अवरोप्परं नियंताण ताण फुरिओ सको वि मयणाही ।
डक्काइं जेण जायाइं दोवि सुन्नाइं सहस त्ति ॥३००६॥

जायं महावद्धावणयं ।

चलिओ गुणंधरो सट्ठाणं । जओ-

अच्छरियगरा गरूया उवयारं जं परस्स काऊण ।
पच्चुवयार-भएणं दूरं तत्तो पलायंति ॥३००७॥

पडिबोहए दिणिंदो कमलाइं किंपि निच्छए तत्तो ।
वरिसंति जए जलया न किंचि तत्तो समीहंति ॥३००८॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तम्हा न सामन्नपुरिसो एसो त्ति चिंतिऊण सिट्ठिणा भुयाए घेत्तूण भणिओ गुणंधरो-'महासत्त ! पवित्तेसु निय-पय-पंकएहिं मज्झ भवणं। एत्तिएणावि कयत्थमप्पाणमहं मन्नामि । गुणंधरेण वुत्तं-अत्थि एवं, किंतु सकज्ज-वावडत्तणेण गंतव्वं मए। सेट्ठिणा वज्जरियं- परत्थ-संपाडणं चेव तुम्हारिसाण सकज्जं ति निब्बंधं काऊण सेट्ठिणा नीओ पुरिसेण समं सघरं गुणंधरो। काराविओ ण्हाण-भोअणाइयं । तदवसाणे भणिओ-

जं अन्नो न सक्कइ मह एक्कं तं पियं कयं तुमए ।
अन्नं पि कुणसु सुयणा कुणंति नहि पत्थणा-भंगं ॥३००९॥

कुमरो जंपइ सज्जोम्हि तत्थ एसो कहेसु जं [१७]किच्चं ।
सिट्ठी साहइ सुपुरिस ! एयं परिणेसु मह धूयं ॥३०१०॥

गुणंधरेय पलोइयं पुरिस-मुहं । पुरिसेण वुत्तं-महाभाग ! सव्वस्स अलंघणीय-वयणो सेट्ठी रयणायरो गुणागरो गरुओ य तुमं । ता कीरउ जमेस वागरइ । गुणंधरेण वुत्तं- जइ एवं तो तुमं जं किं पि जाणसि त्ति । पहिट्ठ-हियएण सेट्ठिणा महंतो अम्हाणमणुग्गहो त्ति भणंतेण हक्काराविओ नेमित्तिओ। कहियं च तेण- तम्मि चेव दिणे संझाए सोहणं लग्गं । तम्मि महा-विभूईए मणिप्पभाए पाणिग्गहणं कराविओ गुणंधरो। सेट्ठिणा पयट्टाविओ महूसवो। दिज्जंति महादाणाइं। किज्जंति सयण-सम्माणाइं । नच्चंति चारु-तरुणीओ । गिज्जंति मंगलाइं । रइज्जंति गुरु-देवया-पूयाओ । एवं पमोय-पगरिसं पत्ते विवाह-महूसवे दुईय-दिवसे विसिट्ठ-नेवच्छ-विच्छाईय-सुरकुमारो दिट्ठो गुणंधरो कहिंचि तत्थ सपओअणाऽऽगयाए माहवीए । विम्हयवसुप्फुल्ल-लोयणाए गंतूण साहियं जहादिट्ठं ससिलेहाए । सा विय पवट्टंत-हरिस-मच्छरा माहवीए समं समागंतूण ममेस भत्तारो त्ति भणंती घेत्तूण भूयाए गुणंधरं पत्थिया सभवणं। ममेस जामाउगो त्ति भणंतो निय-धूयाए मणिप्पभाए समेओ लग्गो पिट्ठओ सेट्ठी ।

इओ य विज्जुलेहा निउणियाए समं गुणंधरं गवेसमाणी समागया तत्थ । सा वि तं दट्ठूण ममेस भत्तारो त्ति भणंती लग्गा अवर-भूयाए । परोप्परं च विवयमाणाइं दिट्ठाइं ताइं तलारेण । नियाणि रायउलं । दंसियाणि रन्नो । पणमिओ अणेहिं राया । रन्ना पुट्ठो सेट्ठी- भद्द !

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

किमेयं? ति। तेण वुत्तं-देव! मह धूया मणिप्पभा एसा सप्पेण डक्का पच्चक्खाया सव्व-गारुडिएहिं मय त्ति नीया मसाणे, जीवाविया इमिणा महासत्तेण। परमोवयारि त्ति परिणाविओ एसो मए महंत-पत्थणाए एयं चेव धूयं। पुट्ठा राइणा ससिलेहा। सा वि लज्जाभरोणय-मुही जाव न किं पि जंपइ ताव भणियं माहवीए- महाराय! एसा मह सामिणी महाराय-जणयसेण-धूया, इमस्स भज्जा, इमिणा सद्धिं इहागया। ठिओ य एत्थ एसो कइवय-दिणाणि, गओ य पच्छा कहिं चि त्ति न नाओ! एय-विरहे य मह सामिणीए तं किंपि दुक्खमणुभूयं जं कहिउं पि न तीरइ। अज्ज पुण बहूय-कालाओ पुन्नोदएण एस दिट्ठो। पुट्ठा विज्जुलेहा। तीए वि लज्जावसेण सयं मोणमवलंबिऊण दिट्ठिसन्नाए निउत्ता निउणिया। तीए जहा- वेयड्ढ-पव्वए रयणसालनयर-सामिणो रयण-खेयरिंदस्स[३३] धूया इमा, जहा देवयाए कहिओ इमीए स वरो, जहा वाउवेगेण बंधुणा समं सुवेल-पव्वए संपत्ता, जहा समुद्दे तरंतो एस लद्धो, जहा इमिणा परिणीया इमा, जहा वाउवेगेण विमाणमारोविऊण कल्लं कुसुमागरुज्जाणे आणिऊण मुक्काइं दोवि, जहा अकहिऊण गओ गवेसंतीए अज्ज दिट्ठो तहा सव्वमावेइयं।

तओ राया विम्हयरसावहिय-हियओ चिंतिउं पवत्तो- अहो! एयस्स अच्चब्भुयं चरियं। अहो! अच्चंत-चारुत्तण-तणीकयाणंग-चंगिमा तणुलया। अहो! अणन्नसरिसो पुन्न-पगरिसो, ता नूणं इमिणा महासत्तेण केणावि महग्घ-गुणमणि-महल्लवेण [३४]विसालकुल-संभवेण होयव्वं ति चिंतयंतस्स रन्नो समीवमागया कविंजला, दिट्ठो अणाए गुणंधरो, पच्चभिजाणिऊण हरिसवस-विसट्टंत-वयण-कमलाए भणियमणाए-देव! सो एसो सूर-नरेसरस्स तणओ गुणंधरो नाम नीसेस-कला-कुसलो सोहग्ग-महोअही धीरो जेण करि-संभम-मोयणाओ कुमरीए जीवियं दिन्नं। तं निक्कयत्थमिव हिययमप्पियं तीए व इमस्स।

जम्मि सुहयम्मि कुमरी चिट्ठइ अणुराय-निब्भरा निच्चं।
सा जस्स चरिय-संकित्तणेण वोलेइ दियहाइं ॥३०११॥

जस्स गुण-रयणनिहिणो विरह-हुयासेण पलित्त-सव्वंगी।
जलण-पलित्ताइं व दिसमुहाइं मण्णइ मणे कुमरी ॥३०१२॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पत्थिज्जंती वि महानरिंद-तणएहिं गुण-महग्घेहिं ।
निप्पडिम-देहसुंदेर[16]-दलिय-कंदप्प-दप्पेहिं ॥३०१३॥

तप्परिनयण-निमित्तं जणणीहिं सहीहिं परियणेणं च ।
देवस्साएसेणं बहुयं पि भणिज्जमाणा वि ॥३०१४॥

मोत्तूण जं सरीरे मह जलणो चेव लग्गइ न अन्नो ।
इय निच्छियं विहेउं एत्तिय-कालं ठिया कुमरी ॥३०१५॥

[18]एयं च निच्छयं जाणिऊण कणगप्पभाइ देवेण ।
जस्स गवेसण-हेउं चउद्दिसं पेसिया पुरिसा ॥३०१६॥

संपइ सयमेव समागओ इहं अज्ज दिव्व-जोएण ।
एसो सो रायसुओ, जं जुत्तं तं कुणउ देवो ॥३०१७॥

एवं अहियं पि कपिंजलाए परिओस-निब्भरो राया ।
जंपइ [19]कविंजले साहु साहु तुमए इमं कहियं ॥३०१८॥

जओ-

जं सिरि-सूर-नरिंदस्स परम-मित्तस्स निद्धचित्तस्स ।
पुत्तो समागओ इह अम्हेहिं न याणिओ पुव्विं ॥३०१९॥

तं पि मणे अम्हाणं अज्जवि सल्लं व सल्लए बाढं ।
जं च करि-संभमाओ विमोइयाऽणेण मह धूया ॥३०२०॥

तस्स सुकयस्स उचियं अम्हेहिं न किंचि जं कयमिमस्स ।
तं सामन्नजणाण वि मग्गेण न वट्टिया अम्हे ॥३०२१॥

अणुवकए वि परेसिं कुव्वंति उवयारमुत्तमा लोए ।
उवयारे उवयारो चरियमिणं पागयजणस्स ॥३०२२॥

तं पि पमाय-परव्वस-माणसेहिं अम्हेहिं नायरियं ति । अहो ! अकयन्नुत्तणं । कुमरेण वुत्तं-देव ! तुम्हाण व तुमेयं न जुज्जए ॥ जओ-

गरुयाण मणपसायं विओसमेत्तं ति गरुय-सम्माणं ।
दाणाइ-पयारेण उ रंजिज्जइ पागओ लोओ ॥३०२३॥

सुद्धाण सुद्ध-भावो सुद्धस्स परस्स कुणइ परिओसं ।
चंदम्मि अदिंतम्मि वि दिट्ठे वियसंति कुमुयाइं ॥३०२४॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सोऊण मण-पसाओ तुम्ह ममोवरि न विहडए चेव ।
न कयावि नियय-मेरं लंघइ रयणायरो नूणं ॥३०२५॥

रन्ना भणियं- कुमार ! संपयं इणमेव पत्तयालं जहा कणगप्पहाए कुमरीए कीरउ करग्गहणं । कविंजलाए भणियं- सोहणं भणइ देवो । कुमरेण वुत्तं- जुत्तमेव जाणंति वोत्तुं महापुरिसा । केवलं ससिलेहा-पमुहाओ पुच्छसु इमाओ । रन्ना भणियं- कविंजले ! उचियमाह कुमारो जओ पुव्वं पि कलहंतीओ दीसंति, ता इमाओ पुच्छमरिहंति । कविंजलाए समीवमुवसप्पिऊण भणिया ससिलेहा- भद्दे ! पढम-घरिणी तुमं कुमारस्स, ता अणुमन्नसु रायधूयं । तीए भणियं- किमहं निवारेमि ? । किं वा ममं पुच्छिऊण एयाओ वि परिणीयाओ, ता किंपि जं मणस्स रोयइ तं करेउ त्ति ।

तत्तो भणिया विज्जुलेहा । तीए भणियं- जं अज्जउत्तस्स बहुमयं तं ममावि बहुमयं चेव । नाहं अज्जउत्तस्स पडिकूलभासिणी । तओ पुट्ठा सेट्ठिधूया । तीए लज्जावस-खलंतक्खराए वुत्तं अव्वत्त-सद्दं- किमहं जाणामि ? केवलं जं इमाण दोण्हं पि अणुमयं तं मे मत्थयस्सोवरि त्ति। पहट्ठ-मुहपंकयाए कविंजलाए भणिओ राया- देव ! सव्वाहिं पि बहुमन्नियं कणगप्पहाए कुमरीए करग्गहणं । तत्तो हरिसियमणेणं तहा सव्वासिं पि तुम्हाण साहारणो एस भत्ता, अओ परोप्परं परिचत्त-चित्त-संतावाहिं तुब्भेहिं पिया विव वट्टियव्वं ।

अन्नं च अओ उड्ढं तुम्हे सव्वाओ मज्झ धूयाओ ।
होउ चउत्थी बहिणी एसा कणगप्पहा तुम्ह ॥३०२६॥

एवं जंपंतेणं गुणंधरो पूइओ नरिंदेणं ।
ताओ चिय सव्वाओ वत्थाभरणाइ-दाणेण ॥३०२७॥

रन्ना विसज्जिओ सो गओ सभज्जो गुणंधर-कुमारो ।
कणयमय-खंभ-कलिए राय-समप्पिय-वरावासे ॥३०२८॥

संवच्छरिय-विणिच्छिय-पहाण-लग्गे गुणंधरो रन्ना ।
परिणाविओ महा-वित्थरेण कणगप्पहं धूयं ॥३०२९॥

दिन्नं च रन्ना तीए पसत्थ-वत्थ-कणग-रयणालंकाराइ पभूयं, कुमारस्स वि दिन्नं सहस्सं करिवराणं सहस्सं रहाणं अणेग-गामागर-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नगर-संकुलो पसाईकओ विसओ । तओ चउहिं पत्तीहिं समं पंचप्पयारं विसयसुहं सेवंतस्स वच्चंति वासरा । कयाइ कणगप्पहाए भणिओ कुमारो जहा- कल्लं कुसुमागरुज्जाणे तुम्ह कुमार-दंसणं कारविस्सं ति पडिवज्जिऊण गओ तया जोणगो । बीय-दिणे तत्थगयाए मए न दिट्ठा तुब्भे न य जोणगो, ता को एत्थ परमत्थो ? ।

तओ कवडप्पहाणय-जोणगस्स मज्झे कुमुइणी देवी कोविएण ताएण देसंतरं कराविओहं ति तंपि कवडमेव काऊण परदेसं[४०]गहाविओ । एत्थ वि अलियमेव वोत्तूण पवहणं आरोहाविओ पच्छा जलहिम्मि पक्खित्तो । ता तस्स दुरप्पणो पज्जत्तं कहाए । कहा वि पाविट्ठाणं पावहेउ त्ति चिंतिऊण भणियं कुमारेण- तेण अलियवाइणा मह पुरो तं किंपि जंपियं जेणाहं पि तेण समं दीवंतरं पत्थिओ । कणगप्पहाए भणियं- संपयं सो वराओ कहिं ? ति । कुमारेण वुत्तं-तस्स नामं पि न गहियव्वं ।

अह अन्नया निसन्नो अत्थाणे सुहड-कोडि-संकिन्नो ।
विन्नत्तो पडिहारेण भू-नमिय-मउलिणा कुमरो ॥३०३०॥

देव ! दुवारे चिट्ठइ सिरि-सूरनरिंद-पेसिओ पुरिसो ।
कुसलमई नामेणं को आएसो हवइ तस्स ? ॥३०३१॥

मुंच तुरियं ति वुत्ते तेण स मुक्को समागओ तत्थ ।
उवलक्खिऊण कुमरेण तोस-परितोसमुवगूढो ॥३०३२॥

उचियासणे निसन्नो पुट्ठो कुमरेण सो कुसलवत्तं ।
सिरि-सूरराय-कमलिणिदेवी-पमुहस्स लोयस्स ॥३०३३॥

पुट्ठेण तेण कहियं कुसलं सव्वं पि कुमर ! तुह रज्जे ।
एयं चेव अकुसलं दीससि नयणेहिं जं न तुमं ॥३०३४॥

नूणं नयराओ तओ पुरोहियं तुज्झ निग्गयं सोक्खं ।
अन्नह सुही कह तुमं नयरं च दुहेण अक्कंतं ? ॥३०३५॥

तुह विरहे रुयमाणीए कमलिणीए कुमार ! देवीए ।
घोरंसुएहिं घण-निवडिरेहिं हाराइयं हियए ! ॥३०३६॥

बाहजल-भरिय-नयणो सुन्न-मणो मुक्क-दीह-नीसासो ।
तुह विरह-दुक्खमेयं दिव्ववसा सहइ देवो वि ॥३०३७॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तं नत्थि किं पि ठाणं जए गवेसाविओ न जत्थ तुमं ।
निय-पुरिसे पेसेउं तह वि पउत्ती न तुह पत्ता ॥३०३८॥

संपइ सागरदत्तेण सत्थवाहेण एय नयरीए ।
पत्तेण तत्थ कहिया तुज्झ पउत्ती इमा सव्वा ॥३०३९॥

तो तुज्झ आणणत्थं कुमर ! अहं पेसिओ नरिंदेण ।
ता काऊण पसायं तत्थ पहुच्चह [४१]लहुं तुब्भे ॥३०४०॥

अह कइवय-दिवसब्भंतरम्मि पत्तो सि तत्थ जइ न तुमं ।
ता मन्ने जीवंते अम्मा-पिउणो न पेच्छिहिसि ॥३०४१॥

एवं सोउं वज्जाहउ व्व विमणो विचिंतए कुमरो ।
पेच्छ मए केरिसयं सुक्खं जणयाण संजणियं ॥३०४२॥

जइ जीवियं पि दिज्जइ पच्चुवयारो न जाण तह वि भवे ।
ताण पियराण दुक्खं मए कयं ही ! अपरिमाणं ॥३०४३॥

एवं विचिंतिऊणं भूयाए घेत्तूण कुसलमइ-दूयं ।
पत्तो झत्ति कुमारो महसेण-नरिंद-पासम्मि ॥३०४४॥

कहियं च सव्वमेयं सो पुरिसो दंसिओ य पच्चक्खं ।
ता नाउमुचिय-समयं काऊण महंत-सम्माणं ॥३०४५॥

कणगप्पभा-समेओ अणेग-करि-तुरय-रहप्पयाइ-जुओ ।
अइ-नेह-निब्भरेण वि विसज्जिओ राइणा कुमरो ॥३०४६॥

पइदियह-पयाणेहिं कुमरो निय-नयर-पासमणुपत्तो ।
कुसलमइणा वि पुरओ गंतुं वद्धाविओ राया ॥३०४७॥

तो हरिस-वियसियच्छो सव्व-समिद्धीए निग्गओभिमुहो ।
चउ-पणइणी-समेओ पणओ कुमरो नरिंदस्स ॥३०४८॥

आलिंगिऊण रन्ना तत्तो आणंद-निब्भर-मणेण ।[४२]
आरोविओ गइंदे कुमरो सहिओ पणइणीहिं ॥३०४९॥

सिर-धरिय-धवल-छत्तो ढलंत-सिर-चारु-चामरुप्पीलो ।
नयरीए पविसंतो पियाहिं सह गयवरारूढो ॥३०५०॥

सलहिज्जंतो नायर-जणेण सो विविह-वयणेहिं । तं जहा-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कहं कुमरो एगागी वि निग्गओ एरिसिं सिरिं पत्तो ।
अहवा पुव्व-भवज्जिय-सुकयाणं कित्तियं एयं ? ॥३०५१॥

जम्मंतर-समुवज्जिय-पुन्न-गुणागरिसिया खणं लच्छी ।
भवणे वणे[४१] विदेसे न मुयइ पट्ठिं सुपुरिसाण ॥३०५२॥

एयाउ सउन्नाओ पत्ताउ जाउ कुमर-घरिणित्तं ।
दिणयर-समागमे कमलिणीउ पावंति परभागं ॥३०५३॥

कुमरो वि कयत्थो च्चिय इमाउ जायाओ जस्स जायाओ ।
मुत्ताहि परिगओ जह सहइ मणी केवलो न तहा ॥३०५४॥

एवं सलहिज्जंतो पत्तो कुमरो घरम्मि मिलिओ य ।
हरिसिय-मणेण सयणाण कमलिणीदेवि-पमुहाण ॥३०५५॥

पियराण कहियमेयं भमिओ हं देस-दंसण-निमित्तं ।
जं च तहिं अणुभूयं कुमरेण निवेइयं तं पि ॥३०५६॥

इय तोसिय-सयल-जणो कुमरो चिट्ठइ पगिट्ठ-विसय-सुहं ।
भुंजंतो ताहिं समं ससिलेहा-पमुह-भज्जाहिं ॥३०५७॥

इअ बहु-कालम्मि गए उज्जाणे तुरय-वाहणं काउं ।
निवइ-कुमराण सहयार-तरुतले वीसमंताण ॥३०५८॥

दुंदुहि-झुणी पयट्टो सुयंधि-सिसिरो पवाइओ पवणो ।
गंधोदएण सित्ता भूमी खित्ताइं कुसुमाइं ॥३०५९॥

विहियं सुवन्न-कमलं तो सुर-नर-निवह-नमिय-कम-कमलो ।
कल्लाणकोस-नामो उवविट्ठो केवली तत्थ ॥३०६०॥

नाउमिणं निव-कुमरा गंतुं हरिसभर-निब्भरा तत्तो ।
तं पणमिउं निसन्ना अन्ने य नरामरा बहवे ॥३०६१॥

तो केवलिणा सिय-दंतपंति-किरिणोह-दलिय-तिमिरेण ।
पारद्धा धम्म-कहा संसार-विराय-संजणणी ॥३०६२॥

भो भो भव्वा ! संसार-सायरे दुक्ख-सलिल-संपुन्ने ।
जम्म-जरा-मरण-समुल्लसंत-कल्लोल-लल्लक्के ॥३०६३॥

कोह-वडवग्गि-दुग्गे मोह-महावत्त-भीसण-सरूवे ।
माण-गिरि-दुग्गमम्मी घण-माया-वल्लि-दुल्लंघे ॥३०६४॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

धण-मुच्छ-मच्छरिंछोलिच्छाईए पावपंक-पडिहत्थे ।[४४]
राग-महोरग-रुद्धे विविहामय-मयर-दुप्पेच्छे ॥३०६५॥

अणवरय-पडंत-महंत-आवया-सयसहस्स-संकिन्ने ।
दुद्धर-विसय-पिवासुच्छलंत-वेला-पसर-विसमे ॥३०६६॥

किच्छेण परिभमंता धम्मं लद्धूण जाणवत्तं व ।
आयरह किन्न तुब्भे जेण लहुं लहह सिव-पारं ॥३०६७॥

[४५]एयं सोउं संविग्गमाणसो नरवरो भणइ कुमरं ।
पुव्वं पि याऽऽसि भवचारयाउ चित्तं विरत्तं मे ॥३०६८॥

संपइ केवलिणो पुण वयणं सोउं दढं अहं मन्ने ।
पासं व गेहवासं विसं व विसमं विसय-सोक्खं ॥३०६९॥

रज्जं गलरज्जुं पिव बंधं पिव निद्ध-बंधु-संबंधं ।
ता कुणसु तुमं रज्जं अहं तु दिक्खं गहिस्सामि ॥३०७०॥

कुमरेण तओ वुत्तं-ताय ! विरत्तो अहं पि गिण्हिस्सं ।
दिक्खं गुरु-पय-मूले पालसु रज्जं तुमं चेव ॥३०७१॥

रन्ना भणियं- पढमं वय-गहणं काउमुचियमम्हाणं ।
पच्छा तुमं पि कुज्जा कुमर ! तुमं को निवारेही ? ॥३०७२॥

धम्मो वि कीरमाणो कमेण सोहं समुव्वहइ लोए ।
कुमरेण तो पलत्तं- सुट्ठु तए जंपियं ताय ! ॥३०७३॥

किंतु-

पिउणा अकए धम्मे कुणइ सुओ तं न नत्थि इय नियमो ।
लग्गे पलीवणे किं पलायमाणाण को वि कमो ? ॥३०७४॥

ता पसिऊण विसज्जसु ताय ! ममं संजमग्गहण-हेउं ।
तो गहिऊण भुयाए रन्ना भणिओ इमं कुमरो ॥३०७५॥

वच्छ ! परिणय-वओ हं वय-गहणे होसु तं मह सहाओ ।
दुप्पडियारा पिउणो त्ति एयमत्थं जइ मुणेसि ॥३०७६॥

रज्जभर-समुव्वहणे नत्थि समत्थो तुमं विणा अन्नो ।
कह मुच्चंति पयाओ कमागयाओ अणाहाओ ? ॥३०७७॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एवं जुत्तीहिं पयंपियम्मि रन्ना पयंपए कुमरो ।
जइ एवं ताय ! तओ कुणसु तुमं जं मणोभिमयं ॥३०७८॥

तो हरिस-निब्भरेणं रन्ना कुमरो निवेसिओ रज्जे ।
विहिणा सयं पवन्ना दिक्खा केवलि-चलण-मूले ॥३०७९॥

सम्मत्तमूल-सावयधम्मं गहिउं[56] गुणंधर-नरिंदो ।
नमिऊण य केवलिणं संपत्तो नयरि-मज्झम्मि ॥३०८०॥

तो केवली वि अन्नत्थ विहरिओ सूररायरिसि-सहिओ ।
अह काउं तिव्व-तवं सूररिसी सग्गमणुपत्तो ॥३०८१॥

अह विच्छाईकय-रायमंडलो फुरिय-दसदिसि-पयावो ।
परिपालइ हयदोसो सूरो व्व गुणंधरो रज्जं ॥३०८२॥

नव-नव-जिणभवणाइं कारवइ समुद्धरेइ जिन्नाइं ।
सव्वत्थ-वित्थरेणं रहजत्ताओ पयट्टेइ ॥३०८३॥

पूएइ साहु-वग्गं पव्व-दिणे पोसहं कुणइ सम्मं ।
जिणधम्मम्मि परं पिहुजणं पयट्टावए बहुयं ॥३०८४॥

एवं जिणिंद-धम्मं कुणमाणेणं महापयत्तेणं ।
रन्ना गुणंधरेणं केरिसं न कओ चमक्कारो ? ॥३०८५॥

अह चिरकालं परिपालिऊण रज्जं गुणंधर-नरिंदो ।
ससिलेहा-अंगरुहं जसोहरं ठाविउं रज्जे ॥३०८६॥

कल्लाणकोस-केवलि-पासे पडिवज्जिऊण पव्वज्जं ।
जाओ गीयत्थ-मुणी सम्मं गुरुणा अणुन्नाओ ॥३०८७॥

जिणकप्पं पडिवन्नो विहरंतो बहुविहेसु देसेसु ।
पत्तो कुसग्ग-गामे काउस्सग्गे ठिओ बाहिं ॥३०८८॥

एत्तो य जोणगेणं परिब्भमंतेण दमगवित्तीए ।
दिट्ठो सो अज्ज वि [57]जीवइ त्ति रोसं वहंतेणं ॥३०८९॥

अह अत्थमिओ भाणू वियंभिओ भसल-सामलच्छाओ ।
गयणंगणे तमोहो तह मोहो जोणगस्स मणे ॥३०९०॥

लउडेण हओ सो जोणगेण तो भग्गमुत्तिमंगं सो ।
अह वेयणा सरीरे संजाया जीवियंतकरी ॥३०९१॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सो मरण-समयमालोइऊण कय-तयणुरूव-कायव्वो ।
अवलंबिय-गुरुसत्तो चिंतिउमेवं समाढत्तो ॥३०९२॥

मा कुणसु जीव ! खेयं दीणत्तं दूरओ परिच्चयसु ।
तस्स च्चिय फलमेयं तए कयं जं पुरा पावं ॥३०९३॥

एत्तो अणंतगुणियं नरएसु निरंतरं महादुक्खं ।
छेयण-भेयण-पमुहं सहियं तुमए अकामेण ॥३०९४॥

तिरियत्तणेऽणुभूयं अणंतसो जं तए दुहं दुसहं ।
तेण न कोवि गुणो तुह संजाओ परवसत्तणओ ॥३०९५॥

इण्हिं जिण-वयणामय-संपन्न-विवेय-वियलिय-कसाओ ।
सम्ममहियासमाणो अणंत-गुण-निज्जरं लहसि ॥३०९६॥

कम्मं कुणइ सयं चिय तस्स फलं भुंजए सयं जीवो ।
तो किं परे पओसो विवेगिणो जुज्झए काउं ॥३०९७॥

रे जीव ! तए पुव्विं समज्जियं किंपि जं असुह-कम्मं ।
तं निट्ठवइ इमो तुह अगणंतो अप्पणो बंधं ॥३०९८॥

एस परमोवयारी ता जोग्गो गरुय-तुट्ठिदाणस्स ।
एयम्मि जइ पउस्ससि ता लहसि कयग्घ-धुरि-लीहं ॥३०९९॥

इय तत्त-भावणाए गुरु-वेयण-विहुरिओ वि सुहझाणो ।
मंदरगिरि-थिर-चित्तो सरीरमेत्ते वि अममत्तो ॥३१००॥

हा कम्मबंध-हेऊ इमस्स जाओ अहं वरायस्स ।
उवसग्गकारए वि हु इय अणुकंपं परिवहंतो ॥३१०१॥

मुत्तूण पूइ-देहं समाहिणा सो गुणंधरो समणो ।
तेत्तीस-सागराऊ सव्वट्ठविमाणमणुपत्तो ॥३१०२॥

अह जोणगो तहाविह-अकज्ज-करणा सयं पि संखुद्धो ।
तुरियं पलायमाणो विसम-नई-दुत्तडीहिंतो ॥३१०३॥

तह निवडिओ दुरप्पा नईइ मज्झे जहा हियय-देसे ।
चिक्खल्ल-खुत्त-तिक्खग्ग-खयर-बेर-खाणुणा भिन्नो ॥३१०४॥

अह तिव्व-वेयणं सो वि सहंतो जीविऊण तिन्नि दिणे ।
मरिऊण नारओ छट्ठ-नरय-पुढवीए संजाओ ॥३१०५॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अह सो गुणंधर-जिओ सव्वट्ठाओ तुमं समुप्पन्नो ।
उव्वट्टिऊण तत्तो नरगाओ जोणगस्स जिओ ॥३१०६॥

भमिऊणं संसारं पुव्व-भवे किंचि कय-सुकय-लेसो ।
जाओ कुमर ! तुह इमो लहुओ सावक्कओ भाया ॥३१०७॥

पुव्व-भवेसु बहूसु कओ पओसो तुमम्मि जं इमिणा ।
तेणेवब्भासेणं इमस्स सो इह भवे जाओ ॥३१०८॥

जं पुण तएऽणुकंपा विहिया एयम्मि पुव्व-जम्मेसु ।
तेणेव हेउणा तुह स च्चिय इण्हिं पि विप्फुरिया ॥३१०९॥

जओ-

एक्कं पि भवे जीवे गुणं च दोसं च जो जमायरइ ।
जम्मंतरम्मि नूणं रमइ मणो तस्स तत्थेव ॥३११०॥

पढमं थोवं थोवं गुणो व दोसो व होज्ज जो जस्स ।
पइजम्मब्भासेणं पगरिस-पत्तो स तस्स भवो ॥३१११॥

एएण कारणेणं दूरं मोत्तूण दोसलेसं पि ।
कायव्वो बुद्धिमया गुणेसु पइसमयमब्भासो ॥३११२॥

एवं सोउं संजाय-जाइसरणो भणइ गुणसेणो ।
भयवं जं तुब्भेहिं कहियं तं अवितहं सव्वं ॥३११३॥

पुव्वं पि विसय-वासंग-सुह-परम्मुह-मणो अहं आसि ।
पुव्वब्भवस्सवणाओ इण्हिं तु विसेसओ भयवं ॥३११४॥

तत्तो जणणी-जणए सविणयमापुच्छिऊण गुणसेणो ।
सव्वविरइं पवन्नो जीवाणंदायरिय-पासे ॥३११५॥

पडिवन्न-दुविह-सिक्खो परीसहे दुस्सहे वि सहमाणो ।
तिव्व-तवच्चरण-रओ अहिगय-नीसेस-सुत्तत्थो ॥३११६॥

उभय-भव-दुक्ख-हेउं कोव-विवागं मणे वि भावंतो ।
उवसग्गकारए वि हु परम्मि करुणं चिय कुणंतो ॥३११७॥

सिवपासायारोहण-निस्सेणिं खवगसेणिमारूढो ।
खविय-चउघाइकम्मो उप्पाडइ केवलं नाणं ॥३११८॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तियस-कय-कणय-कमले उवविट्ठो धम्मदेसणं कुणइ ।
भाणु व्व भविय-कमलाण मोह-निद्दं वि निद्दलइ ॥३११९॥

विहरइ भुवणम्मि चिरं कमेण सेलेसिकरणमणुपत्तो ।
चत्तारि भवोवग्गहकराणि कम्माणि निम्महइ ॥३१२०॥

तुट्टेसु कम्मलेवेसु सो मुणी सयल-लोय-सिरि-भूयं ।
निव्वाण-पयं पावइ तुंबं व जलस्स उवरितलं ॥३१२१॥

अह चंडसेण-कुमरो अविणयसीलो पलोयए जं जं ।
रमणीय-वयर-मणिमय-वत्थ-सुवन्नाइ अन्नेसिं ॥३१२२॥

तं तं सव्वं गिण्हइ तो पिउणा वारिओ रिउ व्व तओ ।
कुवियमणो खग्गेणं सीसं छिंदेइ जणयस्स ॥३१२३॥

रज्जे सयं निविट्ठो पाविट्ठो कुनयवारण-पहाणे ।
हणइ पहाणे तत्तो सो तेहिं उवेक्खिओ संतो ॥३१२४॥

गहिऊण वइरिएहिं कुंभीपागेण पाविओ निहणं ।
रुद्दज्झाणोवगओ सत्तम-नरयम्मि संपत्तो ॥३१२५॥

कोवं परिहरमाणो वि माणवो माण-वज्जणे सज्जो ।
जइ होज्ज तो लभिज्जा इह-परलोए य कल्लाणं ॥३१२६॥

माणत्थद्धो अंतोनिविद्ध-संकु व्व कुणइ पणिवायं ।
न हु जणणी-जणयाणं न गुरूण न देवयाणं पि ॥३१२७॥

माणद्धो उद्धमुहो गयणम्मि गणंतओ व्व रिक्खाइं ।
अनिरिक्खिय-सुह-मग्गो भवावडे पडइ किं चोज्जं ? ॥३१२८॥

पुत्तं पि य विणयपरं परं व गणिऊण जणणि-जणया वि ।
चिरगोवियत्थ-वित्थार-भायणं कहवि न कुणंति ॥३१२९॥

गुरुणो विज्जं सिप्पाइं सिप्पिणो नट्टसूरिणो नट्टं ।
गीयाइं गायणा वि हु न माणिणं सिक्खवंति नरं ॥३१३०॥

रायाऽमच्चाईणं पि सेवओ माणवज्जिओ चेव ।
लहइ मणवंछियत्थं पुरिसो इयरो पुण अणत्थं ॥३१३१॥

माणी उव्वेवकरो न पावए कामिणीण कामसुहं ।
इत्थीण कामसत्थेसु संकमणं मद्दवं जम्हा ॥३१३२॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मोक्खलरु-बीयभूओ माणथद्धस्स नत्थि धम्मो वि ।
धम्मस्स जओ समए विणओ च्चिय वन्निओ मूलं ॥३१३३॥

जाइ-कुल-रूव-बल-सुय-तव-लाभिस्सरिय-अट्ठमय-मत्तो ।
तव्विवरीयं कम्मं बंधइ लीलावइ व्व जीओ ॥३१३४॥ तहाहि-

[५. मान-विपाके लीलावती-कथा]

अत्थि इह जंबुद्दीवे कासी-नामेण जणवओ जत्थ[४८] ।
उल्लंघयंति निय-वइमुच्छलियाओ न निवलयाओ ॥३१३५॥

विस्सपुरी तत्थ पुरी जत्थुज्जाणेसु कुसुमिय-तरूणं ।
परिमल-हरण-प्पवणो पवणोच्चिय वुच्चए चोरो ॥३१३६॥

तत्थ नरसुंदरो नरवई [अत्थि] जस्स भोग-दुल्ललिओ ।
उव्वहइ भूमिभारं भुयंगराय व्व भुयदंडो ॥३१३७॥

वेरि-पयावानल-पसम-पच्चले[४९] जस्स असिलया-सलिले ।
जस-रायहंस-सहिया विलसइ हंसि व्व जयलच्छी ॥३१३८॥

मयणस्स व भुवणमणोरमस्स पाणप्पिया पिया तस्स ।
अणुरूव-रूवलीला रइ व्व लीलावई देवी ॥३१३९॥

तीए सह विसय-सुहं उवभुंजंतस्स तस्स संपत्तो ।
सत्तच्छय-परिमल-मिलिय-भसल-विसओ सरय-समओ ॥३१४०॥

हंसउलाइं विलसंति जत्थ गयणे तमाल-दल-नीले ।
कुमुयाइं सरवरम्मि व फेण-पडलाइं जलहिम्मि ॥३१४१॥

जत्थ ससी सविसेसं जोण्हं लद्धूण जणइ जय-हरिसं ।
विमला रिद्धिं पत्ता कस्स व न कुणंति उवयारं ॥३१४२॥

जं लद्धुं रयरहिउं गुरुं व हिययाइं पंक-कलुसाइं ।
सहसा जायाइ जलासयाण सलिलाइं विमलाइं ॥३१४३॥

तम्मि सरए गओ राया रायवाडियाए । दिट्ठं अणेण परिसुस्समाणं चिंचियंतेण मंडुक्क-वंद्रेण संगयं पल्ललं । जाया से करुणा 'अहो ! एए पइदिणं मच्चुणो आसन्नीभवंति । न केवलं एए अम्हे वि एवमेव त्ति नियाविया ते पयत्तेण विउल-जलासयं । सुत्तविउद्धस्स जाया से चिंता-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पल्लल-समाणो जीवलोगो, सुरसइ इह पइदिणं आउ-सलिलं । को पुण एवं ववत्थिए उवाओ ? गहिओ तत्त-जिन्नासाए ।

एत्थंतरे समागओ तत्थ चउनाणी भयवं युगंधरायरिओ, ठिओ सहसंबवणे चेइए । निवेइओ से पुरोहिएण । गओ तत्थ राया वंदिऊण गुरुं निसन्नो पुरओ । कहिओ गुरुणा धम्मो । परिणओ पुव्वप्पओगेण रन्नो । तओ पुत्तं रज्जे ठविऊण समं लीलावईए पंचहिय-पत्थिव-सएहिं पव्वइओ एसो । अहिगय-समग्ग-सुत्तत्थो जाओ महायरिओ । अणुजाणियाणि गुरुणा से पंच-विसयाणि सिस्साणं । लीलावई वि जाया पवत्तिणी । रायपत्ति त्ति समुव्वहइ गव्वं, बंधइ नीयागोयं । एवं अइक्कंतो कोइ कालो ।

उज्जुय-विहारि त्ति विन्नत्तो गुरु सीसेहिं-भयवं ! वट्टमाण-जोगेहिं जम्मंतरे वि अम्हे तए पडिबोहियव्व त्ति । अणंतराएण पडिवन्नं गुरुणा । उचिय-कालेण गयाइं सव्वाइं सुरलोगं । तओ इहेव भरहे संपज्जमाण-मणवंछिय-विसए[९०] अत्थि अत्थि-जण-पीणणत्थं अत्थवइ-वित्थारिय-कणय-कोसा कोसंबी नयरी । तत्थ निय-जस-परसरोवहसिय-सरय-चंदो देवचंदो नाम नरिंदो । तस्स बहु-कज्ज-करण-सायरो बुद्धिसायरो मंती । तस्स कणयकंतिमई संतिमई भज्जा । सुरलोयाउ चविऊण तीए उयरे सरोरुहे रायहंसो व्व अवयरियो आयरिय-जीवो जाओ । कालक्कमेणं कयं से नामं संखायणो त्ति । इयरे वि समुप्पन्ना वाणारसीए नयरीए माहण-कुलेसु । लीलावई वि जाया उसभपुरे नीया-गोय-कम्म-वसेण माणिभद्द-सिट्ठिणो गेह-दासीए सुया मयणमंजरी नाम ।

अइक्कंतो कोइ कालो । बालभावे चेव संखायणस्स मओ बुद्धिसायरो । अहिट्ठियं मंतिपयं अन्नेण । कयाइ सो गच्छमाणो महारिद्धीए दिट्ठो संतिमईए । परुइया एसा भणिया संखायणेण- अंब ! कीस रोयसि ? । तीए भणियं- पुत्त ! एसा तुह पिउ-संतिगा रिद्धी अन्नेण गहिया । तेण भणियं- कहं एसा पुणो पाविज्जइ ? । तीए भणियं- पुत्त ! विज्जाए । तेण भणियं- अंब ! मा रोयसु, अहं विज्जमहिस्सामि । तीए भणियं- पुत्त ! सुंदरमेयं । तेण भणियं- अंब ! एत्थ नयरे अहिणव-मंति-भएण न कोवि ममं पाढेइ, ता वच्चामि देसंतरं । न एत्थ अंबाए खेओ कायव्वो । तीए चिंतियं एवमेयं, भणियं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

च-पुत्त ! जइ एवं ता वच्च तुमं उसभपुरं । तत्थ तुह पिइमित्तो वेयगब्भो माहणो परिवसइ । सो चउद्दस-विज्जाट्ठाण-पारगो, तस्स पासं गच्छाहि । तत्थ ते विज्जा अयत्तेण भविस्सइ । पडिसुयमणेण । गओ एसो उसभपुरं । दिट्ठो वेयगब्भो । निवेइओ तस्स अप्पा । तेण चिंतियं-पुत्त-तुल्लो खु एसो विसिट्ठाहारोचिओ य चक्कधर-वित्ती य अहं, तो न एयस्स मह गेहे ठिई हवइ । अओ अब्भत्थेमि एय-भोयणकए सिरिमंत-सिरोमणिं माणिभद्दं । पाढेमि य सयं निब्बंधेण । अणुट्ठियमिणं इमिणा । सबहुमाणं पडिवन्नं माणिभद्देण । विणीय त्ति निरूवियासेसं चेव दासी मयणमंजरी-परियायावन्ना पुव्वजम्म-पत्ती लीलावई, जहा तए एयस्स अवखेवेण अणुकूलं कायव्वं । पडिस्सुयमिमीए । हरिसिया एसा तद्दंसणेण । जओ-

आयइं लोयह लोयणइं जाई सरइं न भंति ।
अप्पिइं दिट्ठइ मउलियहिं पिय दिट्ठइं विहसंति ॥३१४४॥

अइक्कंतो कोइ कालो । पढियप्पयोगं घत्था जाओ पयाणुसारी एसो । समुप्पन्नो संखायणस्स दासीए समं पणओ । गाढ-रत्ता य तम्मि एसा न अन्नं पुरिसं कामेइ । अणुरागपरा इमीए जुवाणा उवणस्संति दविणजायं, न इच्छइ त्ति कुविया से जणणी । समागए वसंते भणिया इमीए- पुत्ती ! मुंच मम संतिगं आहरणाइं । मग्गेहि अन्नं निय-दईयस्स पासे, तप्पभावेण य सुवण्ण-लक्ख-दाणेणं जेऊण गणियाओ आरुह वसंत-दोलं । मुक्कं मयणसुंदरीए आहरणं, एवं निबद्धो य सउण-गंठी । हसिया सहियाहिं, विसन्ना एसा । समागया रयणी । सुत्ता समं संखायणेण, न एइ से निद्द त्ति लक्खिया संखायणेण, भणिया य- पिए ! किमेयं ? ति । तीए वुत्तं- न किंचि । निब्बंधेण पुच्छियाए साहिओ वईयरो । भणिया संखायणेणं-पिए ! थेवमिणं कज्जं । आहरेमि तुमं थेव-कालेणेव सव्वुत्तमाभरणेहिं, पूरेमि य गुरुजण-मणोरहं । तीए वुत्तं- आहरिया चेव तए भत्तारेण, गुरुजण-मणोरहापूरणे उण दिव्वो पमाणं ।

एवं सोऊण चिंतियं संखायणेण- को पुण इहोवाओ ? अच्चासन्नो दोला-दिवसो । सव्वहा गुरु-देवाणुभावेण सोहणं भविस्सइ । पसुत्तो एसो । दिट्ठो अणेण रयणीए चरम-जामे सुविणओ-'किल कुंजरेण चडाविऊण नियखंधे नीओ नयर-नंदणोज्जाणं । मुक्को तत्थ

कीलापव्वय-सिहरे । तओ गुलुगुलियं अणेण । समागया तत्थ सव्वाभरण-संगया मयणमंजरी । तओ वेइयमणेण । सुओ [11]विचित्तमंगलुग्गार-महुरो नयर-देवया-पहाउय तूर-रवो, हरिसिओ चित्तेण । थेव वेलाए य पहाया रयणी । कयं गोसकिच्चं । निग्गओ नयराओ । गओ उज्जाणंतरं । दिट्ठो अणेण नग्गोह-हिट्ठओ तुट्ट-पास-पडिओ मूढाए वेयणाए कंठगय-पाणो बंभसिद्धी नाम साहग-परिव्वायगो, संवाहिओ अणेण, वेईयं बंभसिद्धिणा, उट्ठिओ एसो, भणिओ संखायणेण- भयवं ! किमेयं ? ति । तेण भणियं- भद्द ! महापाव-विलसियं । सुण कहमेयं -

सेविओ मए सुगहिय-नामो दुवालस-संवच्छरे अणेग-संसिद्ध-विज्जो पवणसिद्धी नाम गुरू । कओ य मे तेणाणुग्गहो, दिन्ना तेलोक्क-चिंतामणी विज्जा, अट्ठविहेस्सरी य साहणी । साहिओ साहणोवाओ । पारद्धो य एत्थ गंगा-महानई-तीरे जाव तत्थ समुप्पन्नं विग्घं । विसुमरियं तीए एक्कं पयं, कालगओ य भगवं गुरू । तओ अकल्लाण-भायणो म्हि निव्वेएण मए एवमुल्लंबिओ अप्पा । तुट्टो य मे पासओ । नाहिलसिय-मरणसंपत्ती वि त्ति महा-पाव-विलसियं । संखायणेण भणियं- भयवं ! किं तं विज्जं अन्नो न कोइ जाणइ ? तेण भणियं- एवं, अओ चेव मरणमिट्ठं ति । संखायणेण भणियं-एवं पि जुत्तो पुरिसकारो, न पुण मरणं । तेण भणियं- महापाव-संगयाणं न एसो फलइ, महापाव-संगओ य अहं । अन्नहा कहं विज्जा-पय-नासो । मयसमाणो य पुरिसो अहिलसिय-फलहीणो, ता गच्छ तुमं । अहं पुणो वावाएमि अत्ताणं । संखायणेण भणियं- भयवं ! न जुत्तमेयं । अन्नं च विन्नवेमि भगवंतं-किं अत्थि एस कप्पो जं सा विज्जा अन्न-समक्खं पढिज्जइ ? । तेण भणियं-अत्थि, किंतु को गुणो एएण ? । संखायणेण भणियं- भयवं ! जइ एवं ता पढसु एक्कसिं, महंतो मे पमोओ भवइ । गुणो य एसो भगवओ, पमोयहेऊ महापुरिसा, एवं ति । पढिया परिव्वायगेण, लद्धं पयं संखायणेण, सुमराविय परिव्वायगस्स, तुट्ठो एसो, भणियं अणेण-भो महापुरिस ! गुरूओ तुमं मम । एरिसो य एत्थ कप्पो नादिन्नाए गुरु-दक्खिणाए एसा अब्भसिज्जइ, सिद्धाइं[12] मे धाउव्वायाइणो खुद्दप्पओगा । ता भण किं ते संपाडेमि ? ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संखायणेण चिंतियं-घित्तव्वं किंचि एत्थ, अन्नहा अलद्धसममेव एयं पयं पत्थावो य एस दक्खिणा-गहणस्स, न अन्नहा मे पियाए आहरणाइं होइ । ता जुत्तमेव एयस्स निय-वुत्तंत-साहणं ति चिंतिऊण साहिओ वुत्तंतो । परितुट्ठो परिव्वायगो । भणियं अणेण-सिद्धो मे रसिंदप्पओगो । अत्थि इहासन्नमेव तं खेत्तं, ता पच्छाए संपाडेमि ते दस-सुवन्न-लक्खे । अत्थि य मे जक्खिणी-दिन्नो दिव्वालंकारो, तं पुण इयाणिं चेव गिण्ह तुमं पि । समप्पिओ अलंकारो । गहिओ संखायणेण । भणिओ य एसो परिव्वायगेण- गच्छ, समप्पेहि एवं ताव घरिणीए, पच्छाए कम्मयरे घेत्तूण लहुं आगच्छेज्जसु त्ति । एवं ति पडिवन्नं संखायणेण, गओ एस, समप्पिओ मयणमंजरीए अलंकारो । भणिया य एसा-पिए ! गुरुजणाणुभावेणेव पुन्नप्पाओ ते गुरुजण-मणोरहो वि । एवमवगच्छिय न संतप्पियव्वं पियाए । परितुट्ठा मयणमंजरी वि ।

न तहा वित्त-लाभेण जहेट्ठ-भत्तार-गुण-पयडणाए ।
उवणीयं आहरणं जणणीए विम्हिया एसा ॥३१४५॥

न एस सामन्न-माणुसो त्ति चिंतियमिमीए । विभूसिया मयणमंजरी । अइक्कंतो वासरो । बीय-दियहे गओ परिव्वायग-समीवं । उवणीयं परिव्वायगेण जहुत्तं सुवन्नं । गहियं संखायणेण । नेयावियं मयणमंजरि-गिहं । समप्पियमिमीए, इमीए वि जणणीए । परितुट्ठा एसा । मयण-तेरसीए दाऊण सुवन्न-लक्खं आरोहाविया वसंतदोलं मयणमंजरी इमीए । अहो ! धन्ना एस त्ति जाओ लोगप्पवाओ । तन्नेहेण अणायरो विज्जागहणे संखायणस्स । एवमइक्कंतो कोइ कालो विसय-सुहमणुहवंतस्स । पसूया मयणमंजरी । जाओ से पुत्तो ।

इओ य कोसंबीए कोडिन्नायरिय-पासे पडिबुद्धा संखायण-जणणी संतिमई । पडिवन्ना अणाए विणयमइ-पवत्तिणि-समीवे पव्वज्जा । पवत्तिणीए सह विहरमाणी समागया सा उसहपुरं । गोयर-विणिग्गया दिट्ठा संखायणेण । 'हंत ! अंबा एस'त्ति जायसंवेगो लज्जिओ निय-वुत्तंतेण 'अहो ! अकज्जं मए अणुट्ठियं, न संपाडिया गुरुजणाण संपयं पि, जमेसा आणवेही तमहं करिस्सं'ति चिंतिऊण वंदियाऽणेण, धम्मलाभिओ संतिमईए । विन्नत्ता संखायणेण एसा- अंब ! पमाई अहं इत्तियं कालं आसि, संपयं समाइस जमहं करेमि । संतिमईए वुत्तं-पुत्त !

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

करेहि सफलं मणुय-जम्मं-संखायणेण 'किं पुण एयस्स फलं ?' ऊहापोहप्पहाणेण जाणियं सव्वहा अत्थाइवागेण धम्मो, तं च अकुणमाणस्स माणुसत्तणं विहलं । धम्मो य सव्वुत्तमो पुरिसत्थो । अहह ! उज्झिओ मए विसय-परवसेणं ति गहिओ महंतेण पच्छायावेण, विसोहिया कम्माणुबंधा, समुप्पन्नं अपुव्वकरणं, उल्लसिया खवगसेढी, जायं केवलन्नाणं, कया केवलि-महिमा अहासन्निहिय-देवेहिं । तुट्ठा से जणणी । इमं सोऊण समागया मयणमंजरी, पडिबोहिया य पुव्व-भव-कहणेण । जाया समणोवासिगा । माण-विवागं सोऊण संविग्गो लोओ ।

इओ य ते वाणारसि-माहणा परित्तसंसारयाए संजाय-संवेग-परिणामा धम्माऽरन्ने आसमपए जाया तावसा, चिट्ठंति महातव-विहाणेण संसयमावन्ना य महापयत्थेसु । आभोईयमिणं केवल-नाणेण संखायणेण । तप्पडिबोहणत्थं पुव्व-सिंगारेण पयट्टो एस पत्तो धम्मारन्नं । दिट्ठो भगवं तावसेहिं-'महाणुभावो'त्ति वंदिओ सहरिसेहिं । सुरकय-कणय-कमल-निसन्नो पुच्छिओ सविणयं- भयवं ! जीवाण का माया ? को वा पिया ? तहा को मरिउं वियाणइ ? । अन्नं च किं जीवियं सेयं किं वा मरणं ति ? । भयवया वुत्तं- देवाणुप्पिया ! जीवाणं परमत्थओ माया निद्दा, पिया हंकारो । तेहिं जाया माया-कोह-कामाइणो धावि बालहार-तुल्ला ।

तहा, जो जीवियं वियाणइ सो मरिउं पि । जओ जो जीवमाणो धम्मं करेइ तस्स सुहो मरण-समओ त्ति ॥ जीविय-मरणाण उ मरणं सेयं । जीवंताण नियमा संसारो, मयाण पुण मोक्खो ॥

एयं सोऊण पडिबुद्धा तावसा, दिक्खिया केवलिणा, कम्मक्खयं काऊण गया सव्वे वि मोक्खं ति ।

अह मयणमंजरी वि हु कमेण पुत्तम्मि जोव्वणं पत्ते ।
मुणिउं माण-विवागं थेवं पि हु गुरु अणत्थ-फलं ॥३१४६॥

सव्वविरइं पवन्ना तिव्व-तवच्चरण-खविय-कम्म-मला ।
केवलनाणं उप्पाडिऊण परमं पयं पत्ता ॥३१४७॥

कोवरहिओ वि माणुज्झीओ वि मायाए जइ न वट्टेज्जा ।
होज्ज सिवमग्ग-संदण-समग्ग-धम्मस्स तो जोग्गो ॥३१४८॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

धम्मवण-जलण-जाला मोह-महा-मयगला गलण-साला ।
कुगइ-वहू-वरमाला माया सुहमइ-हरण-हाला ॥३१४९॥

अविवेय-रायहाणी माया मण-तणु-समुत्थ-दुह-खाणी ।
कित्ति-कयली-किवाणी करुणा-कमलिणिवण-हिमाणी ॥३१५०॥

माया-परिणामपरा परवंचणमायरंति जे मूढा ।
ते वंचयंति सग्गाऽपवग्ग-सुक्खाणमप्पाणं ॥३१५१॥

थेवकए कवडपरो निबिडं निवडंतमावयालक्खं ।
पिक्खइ न सिरे लगुडं पयं पिबंतो बिडालो व्व ॥३१५२॥

उदयं लहंति लीलाए अणुसरंता सरं व सरलत्तं ।
खिज्जंति निद्दयं पुण कवडं अवडं व सेवंता ॥३१५३॥

धणलव-लुद्धा कवडेण मुद्धजण-विप्पयारण-प्पहाणा ।
पावंति पावमइणो संखो व्व असंख-दुक्खाइं ॥३१५४॥

तहाहि-

[६. मायायामनिग्रहनिग्रहयोः शंख-कथा]

इत्थेव भरहवासे विस्सपुरं नयरमत्थि वित्थिन्नं ।
मेरुतणय व्व रेहंति जत्थ सोवन्न-पासाया ॥३१५५॥

कंपिल्लो तत्थ दिओ नंदा से भारिया सुओ ताण ।
संखो व्व कुडिल-हियओ संखो नीसंख-दोस-गिहं ॥३१५६॥

सो बालगो चेव मायावी तेहिं तेहिं पयारेहिं परवंचणेक्क-चित्तो पत्तो जोव्वणं । किंपि धाउव्वायाइ-पओगं सिक्खिऊण भमंतो गओ गयउरं । दिट्ठोऽणेण तत्थ चंदण वणिओ, भणिओ य-भद्द ! इमिणा वाणिज्ज-किलेसेण बहुणा वि न होइ दालिद्दच्छेओ । जइ पुण मह वयणे पयट्टसि ता अलं किलेसेणेव, तुमं महिड्ढिओ होसि । चंदणेण वुत्तं- जं तुमं आणवेसि तं करेमि । संखेण वुत्तं- अत्थि मे सुवन्न-सिद्धी, ता पच्चयत्थं आणेसु एक्कं सुवन्न-गदियाणयं जेण तं दुगुणं काऊण दंसेमि । आणिओ अणेण सो । कया सामग्गी । संखेणाऽवि हत्थ-लाघवेण

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नियं-कणगं खिविऊण दंसिया दुन्नि गद्दियाणगा । विम्हिओ चंदणो, आढत्तो अणेण य संखस्स आयरो ।

पुणो वि वुत्तो संखेण एसो- दिट्ठं तए ओसह-सामत्थं ? इत्तिएणेव किलेसेण "बहुयं पि सुवन्नं होइ । चंदणेण आणियं सुवन्न-सयं । धम्मियं चंदण-समक्खं सयलं पि रत्तिं, चरम-जामे य निद्दा-विलुत्त-चेयणे चंदणे घित्तूण सुवन्नं पणट्ठो संखो, वच्चंतो य पउमाडवीए पत्तो, चोरेहिं गहिऊण सुवन्नं विणासिओ । उप्पन्नो तीए चेव ससगो । चंदणो वि निग्गओ निव्वेएण नियं-नयराओ । कयाइ भमंतो पत्तो तमुद्देसं । बुभुक्खा-परिगओ निसन्नो कुरवय-तले दिट्ठो ससगेण । ईहापोह-मग्गणाए जायं से जाईसरणं । मओ सो माणस-दुक्खेण । पईऊण खद्धो चंदणेण । उववन्नो एसो गंगातडे नउलो । अइक्कंतो कोइ कालो । अन्नया तमुद्देसं आगओ चंदणो । दिट्ठो तहाविह-फल-भक्खण-पवणेण नउलेण । जायं जाईसरणं, समागया वेयणा । विहुणियं वयणं । पडियाओ दाढाओ, गहियाओ चंदणेण । कयाइ अहिदट्ठो, ताहिं जियाविओ एसो मग्ग-मिलिएण खसदेसुब्भवेण वाईएण । तव्वेयणाए मओ नउलो, समुप्पन्नो हिमवंत-पव्वए चमरो । अइक्कंतो कोइ कालो ।

अन्नया दारिद्दाभिभूओ आगओ तमुद्देसं चंदणो । दिट्ठो महाखयंकिय-पुच्छ-भागेण चमरेण । जायं जाईसरणं । संखोहेण विहुयाइं अंगाइं । पडियं पुच्छं चमरस्स । गहियं चंदणेण । तहाविह-ठक्कुरस्स तप्पयाणेण निच्छूढा आवया । तव्वेयणाए मओ चमरो । उप्पन्नो गिद्धकूड-गिरिम्मि कणगमिगो । अइक्कंतो, कोइ कालो । अन्नया खयवाहि-गहिओ गओ तत्थ चंदणो, दिट्ठो कणगमिगेण । "जाय-जाईसरणो मिगो वीसत्थो वावाईओ सबरेण, उप्पन्नो मलयपव्वए मणिसप्पो । सबरेण वि दिन्नं कणगमिग-चम्मं चंदणस्स । पउणो य सो तेण जाओ । अइक्कंतो कोइ कालो । अन्नया अत्थत्थी गओ तत्थ चंदणो, दिट्ठो वाहि-पीडिएण मरण-समए सप्पेण, जायं जाईसरणं, उव्वेल्लियमओ सप्पो उप्पन्नो सो पीलाडवीए चित्तगो । गहिओ मणी-चंदणेण, विक्किओ, लद्धा अत्थमत्ता । अन्नया गुरु-नियोगेण चित्तगो खल्ला-निमित्तं गओ । तत्थ चंदणो दिट्ठो जंत-गहिएणं चित्तगेणं, संजायं जाईसरणं, संखोभेण गाढयरं पडिओ नासगे, मओ गलग्गह-

पीडाए, उप्पन्नो चंपाए सउलगो । भिल्लेहिंतो गहियं चित्तग-चम्मं चंदणेण । कयाइ महिलाए सुवन्नाभरणं मग्गिओ । तयत्थी परिब्भमंतो पत्तो चंपं चंदणो ठिओ नगरुज्जाणे । इओ य पुव्वुत्त-सउलगेण दिट्ठा नरिंद-पत्ती मुक्केण कणय-कडि-सुत्तगेण ण्हायंती, गहिऊण कडि-सुत्तगं वच्चंतेण दिट्ठो चंदणो, जायं से जाईसरणं, उप्पन्नो ईसि संवेगो, पडियं कडिसुत्तयं संभंतस्स, गओ स-नीडं, निसन्नो तहिं, डक्को पुव्वागएण पन्नगेण, मरिऊण उप्पन्नो चंपाए चेव कत्तियस्स माहणस्स भद्दाए भारियाए पुत्तत्तणेण । गहियं चंदणेण कडिसुत्तगं, समप्पियं पिययमाए ।

कयाइ पडिबुद्धो विणीय-देवगुरु-समीवे चंदणो पव्वईओ य पढियसुत्तो पत्तो सूरिपयं जाओ चउनाणी । इओ य सउलग-जीव-बड्डगो जाओ जोव्वणत्थो । एत्थंतरे जाणिऊण परिवाग-समयं समागओ चंपं चंदणायरिओ । निग्गओ वंदणत्थं नरिंदो चंदवाहणो, तेण समं सउलग-बड्डगो य । सुओ तदंतिगे धम्मो, संविग्गो ईसि राया बड्डगो य । अइसयनाणि त्ति पुच्छिओ राइणा-भयवं ! एत्थ समरू-वाइगुणजुयाओ वि गरूय-रायधूयाओ न वल्लहाओ, तहाविह-रूवरहिया वि कीस वल्लहा किराएसर-धूया गुंजावली, हत्थी य जयमंगलो ? अवेयदुक्खाणि य एयाणि हवंति मम दंसणेण, किं पुण एत्थ कारणं ?। एवं पुच्छिएण भणियं चंदणायरिएण- महाराय ! सुण एत्थ कारणं । गुंजावलीए नेहाणुबंधो इयरस्स मायाए ओघसन्ना । तहाहि-

आसि कालावल्लहे गामे कालसेणो चंडालो, कयाइ दिट्ठा तेण कालमुह-चंडालस्स संकरी जाया । जायाणुरागेण कालसेणेण हढेण हरिऊण घरिणी कया सा । सहाव-मद्दवज्जव-जुओ उचिय-कागाइ-बलि-दाण-संपउत्तो तहाविहं अवरं पावं अकाऊण मओ कालसेणो समुप्पन्नो सीहगुहाए पल्लीए मोरूओ नाम सबर-दारओ सहावओ सच्चवाई । तत्थ य पल्लीवइस्स परोप्परं असहमाणा दुवे पहाणा सबरा चंडीसरो चंडिगो य । संकरी वि समुप्पन्ना चंडीसररस्स हंसिया नाम धूया, जोव्वणत्था दिन्ना मोरुयस्स, पुव्व-भवब्भासेण जाया अच्चंत-वल्लहा ।

अह अन्नया कयाई चिंतइ चंडीसरो मणे एवं ।
चंडं चंडिगमेयं हणेमि केणइ उवाएण ॥३१५७॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एगपय-बद्धराओ सव्वत्थ वि कुणइ पाडिसिद्धिं जो ।
तं हियइ सल्लभूयं माणधणा पेक्खिउं न खमा ॥३१५८॥

तेण भणिओ मोरुओ जहा-पल्लीवइस्स पुरओ अहं इमं भणिस्सं जहेस चंडिगो तुह वेरिणा सह संबंधं करेइ । इत्थत्थे तए सखेजं(साहेज्जं) कायव्वं । मोरुएणावि सच्चवाइत्तणेण न पडिवन्नं तं । तओ कुविएण चंडीसरेण उद्दालिया निय-दुहिया हंसिया । मोरुओ वि तव्विरहे महंतं संतावमावन्नो मरिऊण समुप्पन्नो एगसिंग-गिरि-समीवे पाणइज्ज-पल्लीए दंगिक-सुओ वीरसेणो नाम । हंसिया वि तहा मोरुयस्स मरणं सोऊण उब्बंधणेण मया समाणी समुप्पन्ना अन्न-दंगिक-दुहिया सारसिगा नाम, पिउणा दिन्ना धाडिगाभिहाणस्स पिउच्छासुयस्स । कयाइ दिट्ठो इमीए वीरसेणो । पुव्वभवब्भासेण" जायाणुरागा धाडिगं मोत्तूण पविट्ठा वीरसेण-घरे । वीरसेणस्स य मित्तो कुरवो नाम । सो मायावी अणुज्जुओ उजुयं वीरसेणं अइसंधइ तेहिं तेहिं प्पगारेहिं ।

अन्नया सारसिगाए समं गहण-पव्वे ण्हाणत्थं गओ तित्थं वीरसेणो । आगच्छंतस्स उट्ठिओ सीहो, वावाईओ सो तेण । तओ छुरियं उप्पाडिऊण ठिओ सारसिगाए पुरो, भणिया य एसा-'वावाएमि तुमं जइ कस्सइ अग्गओ बोल्लिहिसि एयं सिंह-विणास-वईयरं'। तीए भणियं-'न बोल्लेस्सं' । चिंतियं अणाए-अहो ! महाणुभावो एसो । अन्नया हढेण हरिया सा, धाडिगेण कयं वद्धावणयं । भज्जा आणीय त्ति पवत्तमावाणगं । फुरंतो धाडिगेण दूरओ कंडेण भिन्नो मूसगो । तओ तं घेत्तूण नच्चिउं पवत्तो दंसेइ सारसिगाइ, चिंतियं अणाए- अहो पुरिसाणमंतरं ।

एगे सिंहं पि विणासिऊण निय-पोरिसेण लज्जंति ।
अवरे हणिउं पुण मूसगं पि हरिसेण नच्चंति ॥३१५९॥

विरत्ता धाडिगस्स । हढेण घेप्पमाणी तेण तदत्थं जलणं साहिऊण मया सारसिगा उववन्ना वंतरेसु । सुयमिणं वीरसेणेण । तओ घेत्तूण तीए अट्ठिगाइं गओ गंगं वीरसेणो, जायं तत्थ साहु-दंसणं, अणुसासिओ तेणेसो । अहाउयक्खएण मओ गंगातीरे उववन्नो वंतरेसु । कुरवो वि कुट्ठवाहिघत्थो जलणं पविसिऊण मओ समुप्पन्नो वंतरेसु । पालिउं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अहाउयकालो तओ चविऊण वीरसेण-जीओ जाओ तुमं राया, सारसिगा-जीवो वि किराएसर-धूया गुंजावली, कुरव-जीवो वि जयमंगलो हत्थी। ता एवं गुंजावलीए नेहाणुबंधो। इयरस्स वि मायाए ओघसन्ना एत्थ कारणं।

जं कालसेण-जम्मे हढेण हरिऊण संकरिं घरणिं।
नरवर ! तुमए खित्तो विओग-दुक्खम्मि कालमुहो ॥३१६०॥

तं दोसु भवेसु तए वि पावियं पिययमा-विरह-दुक्खं।
जं कीरइ सुहमसुहं व तस्स लब्भइ फलं नूणं ॥३१६१॥

जं च तुमं पुव्वं वंचिऊण कुरवेण भक्खियं दव्वं।
तेणेस वाहणं तुह जाओ जयमंगलो हत्थी ॥३१६२॥

इय सोउं संविग्गो राया बडुगो य जंपियं रन्ना।
भयवं ! किमित्थ जुत्तं ? अह जंपइ चंदणायरिओ ॥३१६३॥

कहिऊण पुव्व-वइयरमेसिं कुसलप्पवत्तणं कुणसु।
एवं ति जंपिऊणं गुरु-भणियमणुट्ठियं रन्ना ॥३१६४॥

एत्थंतरम्मि जायं जाईसरणं इमस्स बडुगस्स।
सो संविग्गो नमिउं निय-वुत्तंतं कहइ गुरुणो ॥३१६५॥

गुरुणा वुत्तं-जाणामि अहमिणं, आगओ अओ चेव।
तुज्झ पडिबोहणत्थं तं सोउं विम्हिओ राया ॥३१६६॥

पडिबुद्धो बडुगो वि हु जंपइ- भयवं ! किमित्थ मह जुत्तं ?।
भणइ गुरू- माया-निग्गहेण जिण-धम्म-पडिवत्ती ॥३१६७॥

एवं ति अब्भुवगयं इमिणा तो सावगत्तणं गहियं।
तं पालिऊण विहिणा मरिउं सोहम्ममणुपत्तो ॥३१६८॥

तत्तो चविओ लहिउं[३६] सुनरत्तं नियडि-निग्गह-पहाणो।
काऊण वयं कम्मक्खएण मोक्खं गओ एसो ॥३१६९॥

इय कोह-माण-माया-रहिओ वि हु जइ न वज्जए लोहं।
लोहं व जले जीवो तो बुड्डइ दुत्तरम्मि भवे ॥३१७०॥

दुज्जय-फारफणेणं विवेय-जीविय-विणास-दक्खेणं।
लोह-भुयगेण डक्का न मुणंति हियाहियं जीवा ॥३१७१॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सिसिकर-धवला वि गुणा निययासय-दाहकारए लोहे ।
आवट्टंति जलकणा लोहम्मि व जलण-संतत्ते ॥३१७२॥

लोह-तिमिरोह-उवहय-विवेय-नयणा अदिट्ठ-सुहमग्गा ।
निवडंति नरा नरयंधकूव-कुहरम्मि किं चोज्जं ? ॥३१७३॥

जह इंधणेहिं जलणो जलेहिं जलही न जायए तित्तो ।
तह जीवो बहुएहिं वि धणेहिं संतोस-परिचत्तो ॥३१७४॥

दुरिय-दविण-कोसं सोग-धूयप्पओसं
सुकय-हियय-सूलं आवया-वल्लि-मूलं ।
नय-नलिण-तुसारं दुग्गई-गेहदारं
भवविडवि-जलोहं सूरिणो बिंति लोहं ॥३१७५॥

जीवा लोहालिद्धा लहंति तिक्खाइं दुक्ख-लक्खाइं ।
लोह-विहीणा य सुरासुर व्व सुरसिद्धि-सोक्खाइं ॥३१७६॥

तहाहि-

[७. लोभ-विपाकस्य जयाजये च सुरासुर-कथा]

अत्थित्थ कत्तियपुरं पुरं पुरंधीण पीण-थणवट्ठं ।
मोत्तूण जत्थ न परो पावइ करपीडणं को वि ॥३१७७॥

तत्थत्थि [१७]नंदसेणो विप्पो छक्कम्म-करण-तल्लिच्छो ।
तस्स पिया अणुरत्ता गोरी गोरि व्व गिरिसस्स ॥३१७८॥

पुत्ता सुरो य असुरो ताण अह ते गया पढण-हेउं ।
कोल्लाग-सन्निवेसे पढंति सम्मं गुरु-समीवे ॥३१७९॥

तत्थ अरिमद्दणो राया । तस्स सिरिया देवी भज्जा । सा य चउत्था(?) अदिट्ठ-रिद्धि-साहण-फलं अदिट्ठ-वयगं । तत्थ एस कप्पो-

अदिट्ठ-पुव्वा बडुगा अदिट्ठ-रयणा य भरिय-कच्चोला ।
उवरि-दिन्नेण आहार-जाएण परिसिज्जंति कयमिमीए ॥३१८०॥

एएसिं निग्गयाए कच्चोले गहिऊण अंगुलि-पक्खेवेण नायमिणं सुरेण । चिंतियं अणेणं-'असुरस्स वि कच्चोलं रयणगब्भं' ति । ता तं गेण्हिय एयं वावाइस्सं । पेच्छामि ताव केरिसं तदीयं ति मग्गिओ असुरो

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कच्चोलं, समप्पियं असुरेण । चिंतियं अणेण-वीसारेमि ताव एयं कच्चोल-समप्पणेणं जेण एसो वि मे निय-कच्चोलं समप्पेइ । तओ घेत्तूण वावाइ(य)स्सं सुरं ति । एवं दूसिय-चित्ता गया दुवे वि आरामं । न जाओ वावाइणप्पओगो । जंपियं असुरेण-भुंजामो त्ति । न एत्थ अन्नो उवाओ ता इमं एत्थ पत्तकालं ति भणियं सुरेण- अरे ! भुत्तमम्हेहिं मदीए कच्चोले अन्नं चेव हेट्ठओ ता तुमं पि निखवेहि । निखवियं हरिसिएण असुरेण, दिट्ठाणि रयणाणि, गहिओ अहियं संकिलेसेण । दूसियचित्तेहिं चेव अन्नोन्न-वावायण-निमित्तं मायाए आलोचियमिमेहिं एत्थेव निहाणीकरेमि, ताव इमाणि कच्चोलाणि रयणाणि य तओ जहाजुत्तं अणुचिट्ठिस्सम्ह एवं ति अणुचिट्ठियमिमेहिं निरूवंति अन्नोन्नं वावायणप्पगारे ।

अन्नया हिंडमाणा गया अंधकूव-समीवं । तं पलोयंतो पेल्लिओ सुरेण असुरो, पडिओ असुरो, घेत्तूण सुरं, मया दुवे वि अट्टज्झाणेण समुप्पन्ना एत्थेव सप्पा, परिग्गहियं ओहसन्नाए दुवेहिं पि दव्वं, रमंति तत्थुद्देसे धिईए । अन्नया जायं परोप्परं दंसणं । कुविया लोह-सन्नाए । महा-कलहेण वावन्ना परोप्परं, उप्पन्ना तत्थेव मूसगा । परिग्गहियं ओह-सन्नाए दुवेहिं पि दव्वं । अभिरमइ तत्थ दुण्हं पि । कालेण जायं दंसणं । मोह-वासणाए कलहिऊण परोप्परं विवन्ना, जाया तस्सासन्न-पुक्खरिणीए मंडुक्का । तओ सन्नाए रमंति निहाण-देसे, अन्नया जायं दुण्हं[ओह-] पि दंसणं, पुव्व-वासणाए रुट्ठा परोप्परं, कलहिऊण मया, सम्मोहेण जाया तदासन्ने संखणगा, ओह-सन्नाए समागया दव्व-देसं, चिट्ठंति सुहेण । कयाइ मिलिया कुद्धा, ओह-सन्नाए मया, कायपीडाए उववन्ना तदासन्ने कुंथुगा, तहेव समागया दव्व-देसं । इच्चाइ समाणं "पुव्वेण, नवरं उववन्ना तत्थेव कोल्लुगा । ते वि एवं चेव मया । नवरं उप्पन्ना एए तत्थेव पउमाछोडा, ओह-सन्नाए ओइण्णा दोण्हं पि पायसा । अन्नया अणाभोगेण उक्खया मालिगेण, मया अहाउयक्खएण, उववन्ना तस्सेव पुत्ता जाया । कालक्कमेणं पत्ता वय-विसेसं, समागच्छंति आरामं, तूसंति निहाणुद्देसे, तद्देसकए कलहंति परोप्परं, न विरमंति पिइवयणेणावि । एवमइक्कंतो कोइ कालो । अन्नया समागओ तत्थ मयंकसेणो नाम केवली रायरिसि-कुमरो, ठिओ तदारामभूसणस्स बउल-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तरुणो तले । सूर-कय-कणय-कमल-निविट्ठो मालिगेण समं पुत्तेहिं गओ तस्संतियं एसो, वंदिऊण केवलिं निसन्नो पुरओ चिंतिउं पवत्तो य- अहो ! भयवओ निरुवम-रूवसंपया । अहो ! सव्व-लक्खणालंकिया कायलच्छी । अहो ! पसम-पीऊस-पवाह-पेसला दिट्ठी । अहो ! कायर-नरुक्कंपकारओ दुक्कर-किरिया-कलाव करण-परक्कमो । अहो ! सयल-सत्त-साहारणं धम्म-वागरणं । ता विसाल-भूवाल-कुल-संभवेण भवियव्वं भयवयं ति। भणियं अणेण- भयवं ! सामन्नेणावगओ निग्गुणो एस संसारो । जं तुब्भे मुत्तूण इमं सयल तइलोक्कालंकारकप्पा कुसुमाउह-महाराय-लीलावणे नव-जोव्वणे वि पवन्ना दुरणुचरं चारित्तभरं, विसेसओ पुण किं निव्वेय-कारणं ? ति । गुरुणा वागरियं- भद्द ! संसारम्मि निव्वेयकारणं पुच्छसि । जओ-

दव-दहण-पलित्ते काणणे व्व भवणे व सप्प-सय-किन्ने ।
संसारे दुक्ख-सहस्स-संकुले को न निव्विन्नो ? ॥३१८१॥

जम्म-जराऽऽमय-मरण-प्पमुहेहिं दुहेहिं विद्दविज्जंति ।
जत्थ जणा तम्मि भवे कस्स सयन्नस्स रमइ मई ? ॥३१८२॥

तो मालिगेण भणियं-जइ वि हु एवं तहावि पाएण ।
न विसेस-कारणेणं विणा इमं वज्जए को वि ? ॥३१८३॥

गुरुणा भणियं-जइ इत्तिओ महाभाग तुज्झ निब्बंधो ।
तो तं पि समासेणं कहिज्जमाणं निसामेसु ॥३१८४॥

तहाहि-

समतड-विसए वसुहा-वहुए विउले नडालपट्टे व ।
पट्टिक्केरं पुरमत्थि टिक्कगं पिव सुवन्न-जुयं ॥३१८५॥

तत्थत्थि सूरसेणो राया सूरो व्व पसरिय-पयावो ।
संवरइ अणह-मग्गे जं एसो तं महच्छरियं ॥३१८६॥

तस्सत्थि पिया ललिया जीसे नयणेहिं निज्जियाइं व ।
कमलाणि मयकुलाणि य निच्चं सेवंति वणवासं ॥३१८७॥

दुन्नि सुया जाया ताण अमरसेणो मयंकसेणो य ।
अह संविग्गमणाइं ठविउं रज्जे अमरसेणं ॥३१८८॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

राया ललियादेवी य दोवि संजमभरं पवन्नाइं ।
सो हं मयंकसेणो संसार-विरत्त-चित्तो वि ॥३१८९॥

चिट्ठामि अमरसेणस्स भाउणो नेह-निगडिओ गेहे ।
अन्न-दियहम्मि रन्ना महानिहाणं सुयं तत्थ ॥३१९०॥

तेण खणावियमेयं न य लद्धं दूमिओ मणे एसो ।
पडहं पुरे दवावेइ लेउ जो सक्कए को वि ॥३१९१॥

तस्सेव निहाणमिणं ति तो मए राइणो अभिप्पायं ।
सविसायमसत्तीए इणमाणत्तं ति नाऊण ॥३१९२॥

ता गिण्हिऊण उवणेमि एयमेयस्स त्ति पारद्धो उवाओ । खित्ता संखणगा तेसिं ठाणेण । महातिल्ल-दीवग-पडणेण य लद्धं निहाणं । मए उवणीयं रन्नो । न गहियं अणेण, तुज्झ चेव एयं ति जंपियं सासूयं, न लक्खिओ मए भावो । पसाओ त्ति दिन्नं तं दीणाईण । कुविओ राया चित्तेण । जाया ममोवरि वावायणिच्छा । लक्खिया मे परियणेण । निवेइया हियबुद्धीए । न सद्दहियं मए । पेसिओ अह आडविगस्स दुग्गरन्नो उवरि विक्खेवेण भणिओ महंतगेहिं पसत्ते वावायणप्पओगो अवहीरियं तं मए, गओ दुग्गरन्नो उवरि वसीकओ मए । आगच्छंतेण गिरिगुहाए दिट्ठो केवलि-रिसी । सुओ तदंतिगे धम्मो । अइसय-नाणि त्ति पुच्छिओ रिसी-भयवं ! ममं पइ रन्नो मारणाभिलासो त्ति किं सच्चं ? रिसिणा वुत्तं-सच्चं । संविग्गो अहं चित्तेण । न जाओ तदुवरिं कोवो । पुच्छिओ पुणो वि रिसी- भयवं ! किमित्थ कारणं न मे पओसो एयम्मि ? संपयं पि गुरु-भत्ती चेव । रिसिणा वुत्तं- लोभाणुबंधो एयस्स कारणं, तुज्झ उण निल्लोभस्स एयम्मि भत्ती चेव । तहा हि-

अत्थि अत्थि-जण-सुलह-समग्गाहारो अणिंदिय-दियवग्गाहारो महुसित्थं नाम अग्गाहारो । तत्थ तुब्भे खंदिल-सोमिला नाम सहोदर-भाउणो वेयपाढिणो दरिद्दा य निव्वेएण गया उत्तरावहं, चउव्वेय त्ति तत्थ पूइया जणेणं । पयट्टा निय-देसमागंतुं । तद्दव्व-लोभेण विणट्ठं खंदिलस्स चित्तं । चिंतियमणेण-'वावाएमि सोमिलं, गिण्हेमि केवलो दव्वं ।' तओ गिलाणस्स ते पिज्जाए छूढं घयं, वाउजरो त्ति जाओ तुमं तेण पउणो मओ य । एसो पहे पुरओ पयट्टो पडिऊण ""तण-छिन्नरूवे कूवे पाव-परिणामेण समुप्पन्नो रयणप्पहाए । इमं च दट्ठूण वेरग्गिओ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तुमं विरओ असुहाणुट्ठाणाओ, तदुद्देसेण दाऊण दाणं मओ अहाउयक्खएणं उप्पन्नो सोहम्मे । पालिउं अहाउयं चुओ देवलोगाओ, उप्पन्नो लाडविसए भरूयच्छे पट्टणेब्भ-सिद्धदत्तस्स नाइत्तगस्स नम्मयाए भारियाए पुत्तो । पइट्ठावियं ते नामं मणोरहदत्तो ति ।

एत्थंतरे एसो वि नरगाओ उव्वट्टिऊण उप्पन्नो तत्थेव कुंडलगस्स वाणियगस्स टंकीसरीए भारियाए पुत्तो, कयं दोणगो त्ति से नामं । पत्ता दोवि जोव्वणं, जाया परोप्परं पीई । संते वि विहवे अहिमाणमेत्तेण वि दविण-निमित्तं गया सिंहलदीवं । कम्म-धम्म-संजोएण विढत्ताणि रयणाणि, पयट्टा निय-देसमागंतुं । रयण-लोहेण विणट्ठं दोणगस्स चित्तं । चिंतियमणेण-'वावाएमि मणोरहदत्तं, गेण्हामि केवलो रयणाणि ।' गओ कम्मणिज्जे भोयण-निमित्तं । कारावियाओ तेण संभियक-मोदिगाओ, छूढमेगाए विसं । ताओ गिण्हिय आगओ आरामं । सुत्ताहिदट्ठस्स दिन्ना ते विसकमोदिगा । 'विषस्य विषमौषधमिति' न मओ तुमं तीए, मओ य एसो तदजिन्नविसूईयाए । असुहज्झवसाएण उप्पन्नो सक्करप्पभाए । वेरग्गिओ तुमं एय-वईयरेण विरओ भोग-सुहाओ । कयमेयस्स उद्धदेहियं । मओ कालक्कमेण, उप्पन्नो सणंकुमारे, पालिय-महाउयं चुओ देवलोगाओ, उप्पन्नो दक्खिणावहे काबेरीनयरीए सोमिलस्स माहणस्स गंगाए भारियाए पुत्तो । कयं से नामं आइच्चदत्तो त्ति ।

एत्थंतरे इयरो वि नरगाओ उव्वट्टिय उप्पन्नो एत्थ चेव देवदत्तस्स माहणस्स संवुक्काए भारियाए पुत्तो । ठावियं से नामं धणंजओ त्ति । उवज्झाय-पुत्तो एसो त्ति गोरवेसि तुममेयं । एवमइक्कंतो कोइ कालो । एत्थंतरे पडिबुद्धो तुमं संगयायरिय-समीवे, जाओ सावगो तुह पीइवाजेण एसो वि । अन्नया कुसाइ-निमित्तं गया अडविं । तं गहाय आगच्छमाणा वीसमिया निग्गोह-हिट्ठओ । तत्थ अकम्हा सुवन्न-भरिय-गोणि-संगया समागया वेसरी । खिविऊण गोणिं पलाणा । दिट्ठमिणं तुब्भेहिं । चलंत निही एसो त्ति तुट्ठा तुब्भे, रत्तिं नस्सामो त्ति संपहारिऊण संगोविया करमद्द-जालीए, पयट्टा नयरिहुत्तं ।

एत्थंतरे विणट्ठं चित्तं धणंजयस्स, चिंतियमणेण-वावाईऊण आइच्चदत्तं केवलो[60] गिण्हिस्सं ति रुद्दज्झाण-दूसियस्स वोलिओ दियहो,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पयट्टा दोवि रयणीए, एत्थुद्देसे वावाइस्सं ति आसारिया कुंठी धणंजएण। एत्थंतरे उग्गविसेण डक्को सप्पेण इमो। दड्ढो दड्ढो त्ति जंपियमणेण। विसन्नो तुमं। मओ एस, थेव वेलाए उप्पन्नो वालुगप्पभाए। गहिओ तुमं संवेगेण, अहो अहो ! असारो त्ति चत्तो विसय-संगो। विणिजोजियं दव्वं धम्मट्ठाणेसु। पव्वईओ गुरु-समीवे। पालिय-महाऊयं मओ सिद्धंतविहिणा, उप्पन्नो माहिंदे। आउक्खएण चुओ देवलोगाओ, उप्पन्नो मरहट्ठ-विसए एलउरे पट्टणे सूरधम्मस्स सिट्ठिणो सिरीए भारियाए पुत्तो। कयं चंदवम्मो त्ति ते नामं। सावग-कुलुप्पत्तीए लहुं चेव पाविओ तए जिण-धम्मो।

एत्थंतरे इयरो वि उव्वट्टिऊण नरगाओ एत्थेव पट्टणे समुप्पन्नो वाणियग-पुत्तो, कयं से नामं कडुगो त्ति। जाया पीई लेहसालाए। पत्ता दोवि जोव्वणं। कयाइ गया बोहित्थेण परतीरं। विढत्तं दविणजायं। तद्दंसणेण विणट्ठं कडुगस्स चित्तं। चिंतियमणेण-रयणीए पक्खिवामि समुद्दे चंदवम्मं तं। एक्किगा-कए उट्ठियं मुणिऊण भवियव्वयावसेण तस्सच्छायं चेव संरंभेण पेल्लंतो पडिओ सयं समुद्दे कडुगो, मरिऊण समुप्पन्नो पंकप्पभाए। एय-वईयरेण संविग्गो तुमं, परिचत्ता विसया, पवड्ढंत-संवेगो, काऊण उचिय-किच्चं पव्वईओ तुमं। अहाऊयं पालिऊण मओ समुप्पन्नो बंभलोए। आउक्खएण चुओ तत्तो, उप्पन्नो दक्खिणावहे पइट्ठाणे पट्टणे रुद्ददेवस्स माहणस्स चंदजसाए पुत्तो। कयं पउमदेवो त्ति ते नामं। सावगकुलुप्पत्तीए पडिबुद्धो बालभावे।

एत्थंतरे इयरो वि नरगाओ उव्वट्टिऊण एत्थेव पट्टणे उप्पन्नो माहण-सुओ। कयं से नामं दत्तगो त्ति। अभिजाय-सुओ त्ति गारवेसि एयं। अन्नया पाविओ मडग-साहण-मंतो तुब्भेहिं साहिओ, किण्ह-चउद्दसीए कड्ढिऊण मंतो मडगं, जायं सुवन्नं। संपयं पहायं ति संगोविऊण पविट्ठा दोवि नगरं। एत्थंतरे विणट्ठं चित्तं दत्तगस्स। चिंतियमणेण-वावाएमि पउमदेवं तओ केवलो गिण्हिस्सं। ठिओ संकिलिट्ठो दियहं। अमुगत्थामे रयणीए मिलिस्सामो त्ति संपहारिऊण बद्धा रयणीए वट्टा, वीसत्थ-वावायण-तल्लिच्छो सकुंटिगो चेव वावाईओ असणीए, उप्पन्नो धूमप्पभाए। तद्दंसणेण संविग्गो तुमं पुव्वं व पव्वईओ, उप्पन्नो महासुक्के, आउक्खएण चुओ देवलोगाउ, उववन्नो

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पुव्वदेसे कन्नसुवन्नए नयरे धणदेवस्स इब्भस्स लच्छिकंताए पुत्तो । कयं रिद्धिदेवो त्ति ते नामं। सावग-कुलुप्पत्तीए बालगस्स चेव जाया धम्म-परिणई ।

एत्थंतरे इयरो वि नरगाओ उव्वट्टिऊण समुप्पन्नो एत्थेव नयरे वाणियग-सुओ, कयं से नामं खलुगो त्ति । जाया तुम्हाण पीई, कुलग्गओ त्ति गारवेसि तुममेयं । एसो वि तुह पीईए देइ किंचि समणाईणं । अन्नया गया तुब्भे ववहारपडियाए कामरूवं । विढत्तं तत्थ दविणजायं । तं पभूयं दट्ठूण विणट्ठं खलुगस्स चित्तं, चिंतियमणेण- वावाएमि रिद्धिदेवं, तओ केवलो चेव गिण्हिस्सामि दव्वं ति । तहा संकिलिट्ठ-चित्तेण चिंताए चेव कया बहवे वहोवाया । अन्नया निप्पिडंता कामरूवाओ आरूढा डुंगरं, दिट्ठा तत्थ महंती टंकछिन्न-दुत्तडी, खलुगेण चिंतियं- इओ पाडइस्सामि गत्ताए रिद्धिदेवं । तप्पाडणत्थं गत्तं पलोयंतो भमणीए निवडिओ खलुगो, मओमहा-रुद्दज्झाणेण, उववन्नो तमप्पभाए पुढवीए । तुमं पि तन्निमित्तं गहिओ संवेगेण, परिचत्ता विसया, विणिओजियं दविणजायं, पव्वइओ निय-थामे, अहाउयमणुपालिऊण मओ समाणो उववन्नो अच्चुए । आउक्खएण तओ देवलोगाओ चविऊण तुमं मयंकसेणो, खलुगो वि उव्वट्टिऊण नरगाओ जाओ अमरसेणो । एवं एयस्स एवंविहा लोह-सन्ना पओसस्स कारणं, तुज्झं पि अमरसेणोवरि भत्तीए एवंविहो कुसलब्भासो त्ति ।

एवं सोऊण मए संविग्ग-मणेण केवली पुट्ठो ।
भयवं ! कहेसु एवं ववत्थिए मज्झ किं जुत्तं ? ॥३१९३॥

केवलिणा वागरियं- अप्पहियं धम्ममेव सेवेसु ।
भणियं मए- मुणीसर ! रन्नो सेवा न किं जुत्ता ? ॥३१९४॥

केवलिणा संलत्तं- पज्जत्तं नरवइस्स सेवाए ।
जेणेस संकिलिस्सइ अहियं सेविज्जमाणो वि ॥३१९५॥

तुह वहहेउं आरोग्गसिद्धि-विज्जो अणेण पट्ठविओ ।
सो वि हु विसिट्ठ-धम्माणुवत्तगो तावसो जाओ ॥३१९६॥

मिलिही तुज्झ पभाए स तावसो तो गुरू मए पुट्ठो ।
कत्थ गमिस्सइ राया ? भणइ गुरु-सत्तम महीए ॥३१९७॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भणियं मए- अहं पुण कत्थ गमिस्सामि ? सामिणा भणियं- ।
अट्ठविह-कम्म-मुक्को तुमं गमिस्ससि पयं परमं ॥३१९८॥

तो संविग्गेण मए काऊण समग्गमुचिय-करणिज्जं ।
परलोग-हिया गहिया गुरु-पयमूलम्मि पव्वज्जा ॥३१९९॥

तं एयं संजायं निव्वेय-विसेस-कारणं मज्झ ।
गुरु-चरियमिणं सोउं सव्वे संवेगमावन्ना ॥३२००॥

तो मालिगेण भगवं निय-नंदण-कलह-कारणं पुट्ठो ।
कहियं च तेण निहि-दंसणेण सव्वे वि पडिबुद्धा ॥३२०१॥

भणियं अणेहिं- भयवं ! किं जुत्तं अम्ह ? भगवया वुत्तं-।
सव्वाणत्थनिबंधण-लोभच्चागेण धम्मो त्ति ॥३२०२॥

एयं सोउं सुगुरु-वयणं मालिगो पुत्तजुत्तो,
लोभच्चायावहिय-हियओ गिण्हए सावगत्तं ।
ते उज्जुत्ता जिणमुणिगणाराहणे जीवियंते,
जाया सव्वे पवर-विबुहा बंभलोयम्मि कप्पे ॥३२०३॥

मुक्क-कसाय-चउक्को वि पंच-परमेट्ठि-सुमरणं मणुओ ।
जो कुणइ भत्तिमंतो पावइ सो चेव कल्लाणं ॥३२०४॥

तेसिं न प्पहवंति भूय-पमुहा सक्कंति सीहाइणो,
काउं किंपि न विप्पियं पहरिउं पच्चत्थिणो न क्खमा ।
संपज्जंति न वाहिणो दवजलुप्पीला न दाउं दुहं ।
दक्खा जे परमिट्ठि-मंतमणिसं झायंति सुद्धासया ॥३२०५॥

पंच-परमेट्ठि-पंचाणणस्स संभरणमेत्तओ चोज्जं ।
पंचत्तं जंति दुरओ दुरिय-दोघट्ट-थट्टाइं ॥३२०६॥

निवडंति आवया-निवह-भीसणं भवसमुद्दमुद्दामं ।
सोसइ न परो परमेट्ठिमंत-वडवानलं मुत्तुं ॥३२०७॥

मुत्तूण खविय-नीसेस-पाव-संगं दुवालसंगं पि ।
सरइ परमेट्ठि-मंतं चोद्दसपुव्वी वि पज्जंते ॥३२०८॥

पंच-परमेट्ठि-मंतं सरमाणो माणवो मणे निच्चं ।
नर-सुर-मोक्ख-सुहाइं पावेइ पुलिंद-मिहुणं व ॥३२०९॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तहाहि-

[८. नमस्कार-विषये पुलिन्द्र-मिथुन-कथा]

अत्थि मही-महिला-केलि-पुक्खरे पुक्खरद्ध-भरहद्धे ।
रिद्धि-समिद्धो सिद्धावड्ड त्ति गामो जय-पसिद्धो ॥३२१०॥

तत्थागओ निरंकुस-कसाय-दावानलेण डज्झंतं ।
मेहो व्व निव्ववंतो भुवण-वणं वयण-धाराहिं ॥३२११॥

देस-कुल-जाइरूवी संघयणी धिई-जुओ अणासंसी ।
अविकत्थणो अमाई थिर-परिवाडी-गहिय-वक्को ॥३२१२॥

जिय-परिसो जिय-निद्दो मज्झत्थो देस-काल-भावण्णू ।
आसन्न-लद्ध-पइभो नाणाविह-देसभासन्नू ॥३२१३॥

पंचविहे आयारे जुत्तो सुत्तत्थ-तदुभय-विहिन्नू ।
आहरण-हेउ-उवणय-नय-निउणो गाहणा-कुसलो ॥३२१४॥

ससमय-परसमय-विऊ गंभीरो दित्तिमं सिवो सोमो ।
इय छत्तीस-गुण-जुओ सूरी सिरि-अजियदेवो त्ति ॥३२१५॥

तम्मि समयम्मि पत्तो वासारत्तो विउत्त-मण-दमणो ।
नव-केयग-कुडय-कयंबुब्बु-विरोलं व निउरंबो ॥३२१६॥

जम्मि पट्टु-पवण-पिंडार-पिल्लियाओ भमंति गयण-वणे ।
पयदाण-पहाणाओ महीसीओ व मेहमालाओ ॥३२१७॥

तडि-छुरियं घण-माणाइं तेजयंतीइ पाउससिरीए ।
खज्जोया गयणयले फुरंति फारा फुलिंग व्व ॥३२१८॥

विलसंत-विज्जुलेहा हेमाहरणाइ मेहमालाए ।
गयणम्मि बलायाओ सहंति मुत्तावलीओ व्व ॥३२१९॥

आयट्टि(ड्ढि)य-सुरचावो धारा-सर-धोरणीहिं अणवरयं ।
पहणेइ विरहि-हरिणे वाहजुवाणो व्व जलवाहो ॥३२२०॥

महि-महिला मेह-पिएण सरल-धारा-करेहिं छिप्पंती ।
उब्भिन्न-"नव-वणंकुर-मिसेण रोमंचमुव्वहइ ॥३२२१॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तत्तो सूरी संजम-विराहणं पिच्छिऊण मग्गम्मि ।
मग्गइ वसहिं गामम्मि तम्मि गामाहिव-सगासे ॥३२२२॥

गामवई जंपइ- साहु वसहि-दाणम्मि किं फलं होइ ? ।
वागरइ गुरु- गरुयं दाणाणमिणं वसहि-दाणं ॥३२२३॥ जओ-

असणाइ देइ बहुओ मुणीण गेहंगणम्मि पत्ताणं ।
अंगीकय-सयलभरो वसहिं पुण वियरए विरलो ॥३२२४॥

तक्कर-सीयायव-वाय-वुट्ठि-रोगाइ-विद्दवेहिंतो ।
साहूण कुणइ रक्खं वसहिं निरुवद्दवं दिंतो ॥३२२५॥

जं तत्थ ठिया मुणिणो पढंति सुत्तं कुणंति धम्मकहं ।
संजमजोगेहिं निरंतरेहिं साहंति परलोयं ॥३२२६॥

जं तत्थ मुणि-समीवे संमत्तं सावगत्तणं चरणं ।
अन्नं अभिग्गहं वा भवियगणो गिण्हए गरुयं ॥३२२७॥

जं तत्थ ठियाणं मुणिवराण अन्ने वि भावओ भविया ।
पत्तं भत्तं पाणं वत्थं तह ओसहं दिंति ॥३२२८॥

पुन्नस्स तस्स हेऊ सेज्जाए दाइगो इमेण इमो ।
संसार-सायरं तरइ तेण सिज्जायरो वुत्तो ॥३२२९॥

एवं सोउं गामाहिवेण वसही समप्पिया गुरुणो ।
बहु-साहु-जुओ सो तत्थ पाउसं काउमाढत्तो ॥३२३०॥

मासोववासु केवि मुणि कुणंति,
केवि दुन्निमास निरसणं गमंति ।
केवि तिन्नि केवि चत्तारि मास,
चिट्ठंति विसय-सुह-निप्पिवास ॥३२३१॥

तह मज्झि साहु दमसार-नामु,
गिरि-गुहहिं जाइ परिहरिवि गामु ।
चउमासं तहिं ठिओ असण-मुक्कु,
सज्झायज्झाणपरु गुह-निलुक्कु ॥३२३२॥

अह तत्थ पुलिंदय-मिहुण पत्तु,
तिण दिट्ठु साहु सो पवरसत्तु ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मुणि-दंसणि तक्खणि गलिउ पावु तसु,
मिहुणह मणि हुयउ सुह-भावु ॥३२३३॥

मुणिणा वि मुणिवि तं भत्तिमंतु,
उवइट्ठु पंच-परमेट्ठि-मंतु ।
सो लग्गु पुलिंदय-मिहुण-चित्ति
अमओ व्व पवंचिय-परम-तित्ति ॥३२३४॥

मुणिणा पुणो वि वुत्तं इमो तिकालं मणम्मि सरियव्वो ।
जेण चिरंतण-पावक्खएण पावेह कल्लाणं ॥३२३५॥

एयं सोऊण पुलिंद-मिहुणयं किंचि जाय-सुहभावं ।
पंच-परमिट्ठि-मंतं सरइ ति-संझं सबहुमाणं ॥३२३६॥

तस्स प्पभावओ च्चिय पावमकाउं तहाविहं तिव्वं ।
कालेण मयं एयं मुणि-उवयारं सुमरमाणं ॥३२३७॥

इह चेव भरहवासे नयरं मणिमंदिरं पवरमत्थि ।
वित्थिन्न-कूव-वावी-सरोवराराम-रमणिज्जं ॥३२३८॥

जत्थत्थि जणो वसणी दाणे भीरू अकज्ज-करणम्मि ।
गुण-विढवणे अतित्तो निम्मल-जस-अज्जणे लुद्धो ॥३२३९॥

पर-पत्थणे अयाणो परमहिला-दंसणम्मि जच्चंधो ।
परधण-हरणे पंगू परदोस-पयासणे मूओ ॥३२४०॥

तं परिपालइ राया रायमयंको मयंक-समकित्ती ।
सरभस-नमंत-पत्थिव-मत्थय-मणि-लीढ-पयवीढो ॥३२४१॥

पल्लविय व्व असिलया अरि-करि-कुंभत्थलीण रुहिरेण ।
मुत्तिय-नियरेणं कुसुमिय व्व रेहइ रणे जस्स ॥३२४२॥

विजय त्ति तस्स भज्जा जीए हसंतीए उणयमुहीए ।
दुगुणेइ दंत-कंती थणवट्टे हारलट्ठीओ ॥३२४३॥

तीए गब्भे गिरिकंदरे व्व सीहो पुलिंद-जीवो सो ।
सीहसुविणय-पयासिय-गुणमाहप्पो समुप्पन्नो ॥३२४४॥

जायस्स तस्स विहियं वद्धावणयं महाविभूईए ।
नामं च कयं सुविणाणुसारओ रायसीहो त्ति ॥३२४५॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लिवि-गणिय-प्पमुहाओ सउणरूयं ताओ तेण गुरुपासे ।
बावत्तरी कलाओ अकिलेसेणेव गहियाओ ॥३२४६॥

मइसार-मंति-पुत्तो सुमई नामेण तस्स पिय-मित्तो ।
नीसेस-कला-कुसलो बालत्तणओ वि संजाओ ॥३२४७॥

संपत्तो तारुन्नं कुमरो लायन्न-लच्छि-परिपुन्नं ।
जं तरुणी-लोयण-छप्पयाण पंकेरुह-वणं व ॥३२४८॥

तद्दंसणूसुयाओ मग्गं रमणीओ पेच्छमाणीओ ।
नयणेहिं कुणंति निहित्त-नील-नलिणोवहारं व ॥३२४९॥

तस्स भमिरस्स दंसण-सतण्ह-तरुणीण सहइ वयणेहिं ।
गयणं गवक्ख-निक्खंतएहिं ससि-लक्ख-निचियं व ॥३२५०॥

गायंति थुणंति निहालयंति झायंति तं मइच्छीओ ।
तहवि मणागं पि मणं मुणि व्व न कुणइ इमो तासु ॥३२५१॥

अन्न-दिणम्मि कुमारो मित्तेण समं विणिग्गओ बाहिं ।
वाहिय-विविह-तुरंगो सहयार-तलम्मि वीसंतो ॥३२५२॥

दट्ठुं पहियं पुच्छइ कत्तो वा कत्थ वा तुमं चलिओ ।
भमिरेण तए दिट्ठं सुयं व अच्छेरयं किंचि ? ॥३२५३॥

पहिओ पणामपुव्वं उवविसिऊणं पुरो पयंपेइ ।
पसरंत-दंत-किरणेहिं हार-नियरं व विकिरंतो ॥३२५४॥

कुमार ! श्रूयतां । अस्ति प्रशस्त-समस्त-वस्तु-वास्तुभूतं भूतलालङ्कार-कल्पं कल्पद्रुमोपमान-मानवं नवयौवनाभिराम-रमणी-रमणीयं मणीयमान-कनककलश-भूषणैः फणैरिव शेषस्याशेष-विशेष-विलोकन-कुतूहलेन भुवनमूलाद्विनिर्गतैः सहस्रसङ्ख्यैर्देवकुलैः संकुलं कुलभवनं सकल-पद्मानां पद्मपुरं नाम नगरं ।

असमलवलिराजीराजिता मन्दमन्दा-
निलवल-दल-कान्ताः सम्भृतालीहितार्थाः ।
पृथुल-कुच-मनोज्ञाः कस्य लोकस्य न स्यु-
र्वनभुव इव भूरि प्रीतये यत्र नार्यः ॥३२५५॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चैत्यान्यप्रतिमानि यत्र यतयः सूत्रार्थबद्धादराः ।
क्षमापालः परलोक-भीलुकमति र्वेलात्कुचेष्टाः स्त्रियः ।
श्रीमन्तो बहुधा विपत्तिकलिता विप्रा न यज्ञक्रिया-
निष्णाताः सदनानि भोगिनिचितान्यन्यत्किमत्र स्तुमः ॥३२५६॥

ततः पुरात्परमेश्वर-श्रीयुगादिदेवादिगणधरस्य कषाय-करि-खंडनैक-पुण्डरीकस्य निर्वाणपद-प्राप्त्या पवित्रितं श्रीशत्रुञ्जय-तीर्थं प्रस्थितोऽस्मि यत्पुनराश्चर्यं किंचिद्दृष्टमिति पृष्टं तदप्याकर्णयतु कुमारः । तत्रैव पुरे प्रणत-नरपति-शत-मुकुट-मरकत-मरीचि-वीचि-चंचरीक-चुम्बित-चरणपद्मः पद्मो राजा,

विजृंभितसयं ति यस्य कोपः सकोप-दुर्वात-इवातिचण्डः ।
येनारि नारीजन-यौवनानां जज्ञे वनानामिव निष्फलत्वं ॥३२५७॥

तस्य हृदय-कुशेशय-शायिनी विशुद्धोभयपक्ष-राजिनी राजहंसीव हंसी देवी ।

क्रीडत्यनङ्गद्विरदस्तदङ्गे लावण्यसिन्धाविति तर्क्कयामि ।
उन्मज्जती भाति यदेतदीया कुम्भस्थली स्थूल-कुचस्थलेन ॥३२५८॥

तयो र्भुञ्जानयो र्भोगान् विश्वविश्वातिशायिनः ।
यज्ञे सर्वाङ्गनाचूडारत्नं रत्नवती सुता ॥३२५९॥

यस्याः शरीर-सौद्धर्यं विभाव्य भुवनाद्भुतम् ।
लज्जयेव न निर्यान्ति पातालान्नागकन्यकाः ॥३२६०॥

भ्रमन्ति शक्तिमत्यो पि खे न विद्याधराङ्गनाः ।
दर्शनं न प्रयच्छन्ति कस्यापि सुरयोषितः ॥३२६१॥

कलाकलापे सकले कलयामास कौशलम् ।
सा क्रमान्मदनक्रीडावनं यौवनमापद ॥३२६२॥

अन्यदा वरयोग्येति सा मात्रा प्रेषिता सती ।
पितुःसभानिविष्टस्य प्रणिपातार्थमागमत् ॥३२६३॥

प्रणम्य पितरं तस्य पादान्ते निषसाद सा ।
तां लोकोत्तर-लावण्यां दृष्ट्वाऽमात्यमुवाच सः ॥३२६४॥

किं रूपेणानुरूपः स्याद्विधिना क्वापि निर्मितः ।
अस्या योग्यो वरः कश्चिदिति ताम्यति मे मनः ॥३२६५॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मन्त्रिणोक्तं- महाराज ! योग्यं यद्यस्य तस्य तत् ।
विधाय दूराच्चानीय विधिरर्प्पयति स्वयं ॥३२६६॥

अत्रान्तरे नृपस्याग्रे प्रेक्षणीयं व्यधान्नटः ।
बाला पुलिन्द्रवेषेण तं नृत्यन्तं व्यलोकयत् ॥३२६७॥

ततो मूर्च्छामगात्पुत्री पपात पृथिवीतले ।
स्वस्थीचकार तां राजा चन्दन-व्यजनानिलैः ॥३२६८॥

साऽवोचत्तात ! सन्जातं जातिस्मरणमद्य मे ।
अहमासं महाटव्यां पुलिन्द्री पूर्व-जन्मनि ॥३२६९॥

अभूद्भर्त्ता पुलिन्द्रो मे जीवितादपि वल्लभः ।
लेभे तं चेत्प्रियं पाणिग्रहं कर्त्तास्मि नाऽन्यथा ॥३२७०॥

इति पथिक-वचस्सु श्रोत्र-पात्रीकृतेषु,
प्रशिथिल-सकलाङ्गः प्राप मूर्च्छां कुमारः ।
शिशिर-पवन-योगात् स्वास्थ्यमासाद्य सद्यः,
करजुषमिवमुक्तां पूर्वजातिं ददर्श ॥३२७१॥

अथैक-प्रीति-सम्पन्नः पथिकं प्रत्यभाषत ।
अग्रतः किमभूत्तत्र पथिकोप्युक्तवानिदम् ॥३२७२॥

प्रतिज्ञां दुहितुः श्रुत्वा तादृशीं पद्म-पार्थिवः ।
कथं ज्ञेयः पुलिन्द्रोऽसाविति चिन्तापरोऽभवत् ॥३२७३॥

अमुं वृत्तान्तमाकर्ण्य तल्लोभेन नृपात्मजाः ।
दूरादेत्याऽब्रुवन् पूर्व-भवे स्वस्य पुलिन्द्रताम् ॥३२७४॥

पप्रच्छ राजपुत्री तान् कुमारान् कुटिलाञ्चिति ।
केन पुण्येन युष्माभिर्लेभे सम्पत्तिरीदृशी ॥३२७५॥

तत्तेनाज्ञासिषुः सम्यक् पूर्वजन्म-पुलिन्द्रताम् ।
तेषां निश्चित्य तन्वंग्या कुतोऽपेक्षा पुलिन्द्रवत् ॥३२७६॥

ततोऽलीकगिरोमर्त्या एवं सञ्चिन्त्य चेतसि ।
मर्त्यविद्धेषणी जज्ञे केवल-स्त्रीवृता च सा ॥३२७७॥

सा तत्र विदधे धात्रा रमणीनां शिरोमणिः ।
कल्याणमूर्त्तिरत्र त्वं कुमार ! तिलको नृणाम् ॥३२७८॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

यद्येषयोगं युवयोः कथञ्चि-
दन्योन्य सादृश्यवतो विदिध्यात् ।
तदाक्षणेनाऽननुरूपवस्तु.
सम्बन्ध जं मार्ष्टि निजं कलङ्कम् ॥३२७९॥

इत्यद्भुतं वस्तु निवेद्य पान्थः कुमार ! गच्छाम्यहमित्युवाच ।
विद्वानपूर्वार्थ-निवेदक श्चेत्यस्मै निजाङ्गाभरणान्यदात् सः ॥३२८०॥

विसृज्य पथिकं प्राप कुमारो निज-मंदिरे ।
द्रष्टुं रत्नवतीं बालामुपायं पर्यचिन्तयत् ॥३२८१॥

अथ पौरैः रहस्येवं विज्ञप्तं भूपतेः पुरः ।
यत्र यत्र कुमारोयं भ्राम्यति क्रीडया पुरे ॥३२८२॥

उपेक्ष्याऽपरकार्याणि संत्यज्य रुदतः शिशून् ।
अनावृत्य गृह-द्वाराण्यकृत्वा कस्यचित् त्रपाम् ॥३२८३॥

कुमार-रूप-लावण्य-सौभाग्य-हृतचेतसः ।
धावंति विहितोन्मादास्तत्र तत्र पुरस्त्रियः ॥३२८४॥

तेनाऽसमंजसं जज्ञे सर्वत्र नगरेऽधुना ।
अतः केनाप्युपायेन कुमारो वार्यतां भ्रमन् ॥३२८५॥

ततोऽवादीत्प्रतीहारं कृतलोककृपो नृपः ।
राजसिंह-कुमारस्य पुरतः कथ्यतामिदं ॥३२८६॥

गृहान्तरेऽवस्थातव्यं कलाऽभ्यासकृता त्वया ।
बहिर्विहरतः पुंसो गलन्ति सकलाः कलाः ॥३२८७॥

इत्यादेशं प्रतीहारः कुमारस्य न्यवेदयत् ।
तातः किमिदमादिक्षन्मामेत्येष व्यचिन्तयत् ॥३२८८॥

ततोऽस्य पौरवृत्तान्तं सुमतिः प्रत्यपीपदत् ।
अवाप्त निर्गमोपायः कुमारस्तमभाषत ॥३२८९॥

गृहान्तरेऽवतिष्ठेति तातादेशश्च दुष्करः ।
कौतुकं च मम द्रष्टुं कन्यां पांथ-निवेदिताम् ॥३२९०॥

पुण्यमानं गुणस्फूर्त्तिं र्नानाभाषासु कौशलम् ।
स्वान्ययोरन्तरज्ञानं न च देशान्तरं विना ॥३२९१॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ततो देशान्तरं यामीत्युक्तः सुमतिरब्रवीत् ।
अस्मिन्नर्थे सहायोस्मि कुमार ! कुरु वाञ्छितम् ॥३२९२॥

अनिवेद्यैव कस्यापि निशितासिकरो निशि ।
पुरात्सुमतिना सार्द्धं राजपुत्रो विनिर्ययौ ॥३२९३॥

क्रमेण पृथिवीं क्रामन्नटव्यां देवतागृहे ।
प्रसुप्ता निशि शुश्राव साधकस्यार्त्तमारवम् ॥३२९४॥

विभ्रत्कृपां कृपाणं च कुमारस्तं प्रतिव्रजन् ।
साक्षाद्राक्षसमद्राक्षीत्कक्षा-निक्षिप्त-साधकम् ॥३२९५॥

तमूचे तिष्ट शिष्टात्मन्नमुं च मुञ्च साधकम् ।
साधकेनापराद्धं किं वराकेणामुना तव ? ॥३२९६॥

राक्षसः स्माह- अद्रैष मां वशीकर्त्तुमुद्यतः ।
अयाचिषं महामांसं सप्तरात्रमुपोषितः ॥३२९७॥

तदेतन्नक्षमो दातुं महं चातिबुभुक्षितः ।
ततः कथममुं मुञ्चे त्वमेव परिभावय ॥३२९८॥

अवोचद्राजपुत्रस्तं- यद्येवं मुञ्च साधकम् ।
वितरामि महामांसं महात्मन्नहमेव ते ॥३२९९॥

इत्युक्तः साधकं त्यक्त्वा प्रीतः प्रोवाच राक्षसः ।
देहि त्वमेव तद्यो गा निवर्त्तयति सोऽर्जुनः ॥३३००॥

कुमारः खड्गदण्डेन छित्त्वा सत्त्वमहोदधिः ।
निजाङ्गाज्जाङ्गलं यावत् प्रदातुमुपचक्रमे ॥३३०१॥

तावज्जगाद सानन्दं राक्षसो नृपनन्दनम् ।
तुष्टोस्मि तव सत्त्वेन परप्राण-प्रदायिना ॥३३०२॥

वरं वृणु ततोऽवोचत् कुमारो राक्षसं प्रति ।
तुष्टो सि यदि मेऽभीष्टं साधकस्य तदा कुरु ॥३३०३॥

करिष्यामीत्यसौ जल्पन् अमोघं देवदर्शनम् ।
इत्यस्मै राक्षसश्चिन्तारत्नं दत्वा तिरोदधे ॥३३०४॥

निवृत्य राजपुत्रोपि तत्रैवायतने ययौ ।
अतिवाह्य निशाशेषं समित्रश्चलितोऽग्रतः ॥३३०५॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चिन्तारत्न-प्रभावेण सम्पन्नाशेषवाञ्छितः ।
स्वराज्य इव सर्वत्र विलसन्विजहार सः ॥३३०६॥

पुरं रत्नपुरं प्राप रत्नप्रासाद-सुन्दरम् ।
राजरोहणशैलो यस्याऽवकरकूटवत् ॥३३०७॥

ददर्श सर्व सौवर्णं तत्र मन्दिरमर्हतः ।
रत्नोत्कर्ष-गुणं दृष्ट्वा मेरोः शृङ्गमिवागतम् ॥३३०८॥

तत्र गर्भगृहे जैनीं प्रतिमां रत्ननिर्मिताम् ।
भून्यस्त-मस्तको नत्वा तुष्टुवे तुष्टमानसः ॥३३०९॥

प्रशमरस-निमग्नं दृष्टि-युग्मं प्रसन्नं,
वदन-कमलमङ्कः कामिनी-सङ्ग-शून्यः ।
करयुगमपि यत्ते शस्त्र-सम्बन्ध-वन्ध्यं,
तदसि जगति देवो वीतरागस्त्वमेव ॥३३१०॥

ततस्तच्चैत्यमालोक्य कौतुकाक्षिप्तलोचनम् ।
श्रावकं पृष्टवानेकं केनेदं भद्र ! कारितम् ? ॥३३११॥

सो वा दीन्मणिपीठेऽस्मिन् निविश्य श्रूयतामिदम् ।
आसीदिह यशोभद्रः श्रेष्ठी श्रावकपुङ्गवः ॥३३१२॥

तस्य सूनुः शिवो नाम गुरुभिः शिक्षितोऽप्यसौ ।
द्यूतादिव्यसनासक्तो धर्म्मं न प्रतिपन्नवान् ॥३३१३॥

सपित्रोक्तो यदाभ्येति विपत्तिस्तव दुस्तरा ।
तदा त्वं तद्विघातार्थं नमस्कारममुं स्मरेः ॥३३१४॥

ततः पित्रनुरोधात् सनमस्कारमधीतवान् ।
पिताऽपि तस्य कालेन स्वर्गलोकमुपागमत् ॥३३१५॥

शिवो दुर्ललितैः पुंभिः सङ्गतो मधुपैरिव ।
धनं विनाशयामास वनं मत्त इव द्विपः ॥३३१६॥

अन्यदा तद्गृहासन्ने त्रिदण्डी विदधे स्थितिम् ।
स शिवं निर्द्धनं दृष्ट्वा कृपापर इवावदत् ॥३३१७॥

भद्र ! त्वं हेतुना केन विषन्न इव दृश्यसे ?
शिवः प्रोवाच संतोष-साधनं नास्ति मे धनं ॥३३१८॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तं परिव्राजकोऽवादीत् करोषि यदि मे वचः ।
विदधे ते तदा वश्यां गृहदासीमिव श्रियम् ॥३३१९॥
शिवोऽवोचत्तवादेशं करिष्याम्येष निश्चितम् ।
दारिद्र्यं मे प्रयातु त्वत्प्रसाद-गलहस्तितम् ॥३३२०॥
परिव्राडवदद्वच्छ यद्येवं शवमक्षतम् ।
लभस्व क्वापि स प्रापदुद्बद्धं पुरुषं द्रुमे ॥३३२१॥
तस्मै न्यवेदयत्सो पि त्रिदण्डी शिवमब्रवीत् ।
अद्य कृष्ण-चतुर्दश्यां स्मशानं नय तं शवम् ॥३३२२॥
बलि-प्रदीप-पुष्पादि-पूजोपकरणं तथा ।
नीतं सर्वं शिवेनापि ययौ तत्र त्रिदण्ड्यपि ॥३३२३॥
यत् क्वचित् शरदभ्रौघ शुभ्रादभ्रास्थिदंतुरम् ।
क्वचित् स्थितानलज्वाला-जाल-पल्लविताम्बरम् ॥३३२४॥
क्वचित्कलित-कंकाल-काल-वेताल-भीषणम् ।
क्वचित्क्रीडद्धताशङ्क-शाकिनी-कुल-सङ्कुलम् ॥३३२५॥
क्वचिद्राक्षसदुर्वीक्ष्यं क्वचिद्भूतभयानकम् ।
क्वचिन्मघूक-पूत्कारं क्वचिद् घोर-शिवारवम् ॥३३२६॥
चक्रेऽस्मिन् मण्डलं दत्त दीप्र-दीपक-मण्डलम् ।
तस्मिन्निवेशितस्तीक्ष्ण-करवाल-करः शवः ॥३३२७॥
शव-पादतलाभ्यङ्गकर्मण्यादिश्य तं शिवम् ।
मन्त्रं संस्मर्तुमारेभे त्रिदंडी ध्याननिश्चलः ॥३३२८॥
स्मशानं प्रचुरापायं निशितासिकरः शवः ।
त्रिदण्डी क्रूरकर्म्मा चेत्येवमालोचयत् शिवः ॥३३२९॥
ततः पित्रा समादिष्टामनिष्टहननक्षमाम् ।
सोऽस्मरं तत्परः पञ्च-परमेष्टि-नमस्क्रियाम् ॥३३३०॥
क्षणान्तरे परिव्राजः प्रौढमन्त्र-प्रभावतः ।
चचाल किञ्चिदुत्तस्थौ तथैवन्यपतच्छवः ॥३३३१॥
शवस्य पतने किञ्चिद्विचिन्त्य क्षणमात्मनः ।
त्रिदंडी स्मर्तुमारेभे मन्त्रमेष विशेषतः ॥३३३२॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जपान्ते पुनरुत्थाय निपपात पुनः शवः ।
परिव्राट् शिवमप्राक्षीत् मन्त्रं कञ्चन वेत्सि किं ?॥३३३३॥

शिवोऽजानन्नमस्कार-माहात्म्यमिदमब्रवीत् ।
नवेद्मीति ततोऽत्यर्थं त्रिदण्डी मन्त्रमस्मरत् ॥३३३४॥

शिवस्याशिवमाधातुं नमस्कार-प्रभावतः ।
नाशकत्किमपि क्रुद्ध-वेतालो वेष्टितः शवः ॥३३३५॥

ततोऽसौ खड्गदण्डेन क्षणात् मुण्डं त्रिदण्डिनः ।
छित्वाधःपातयामास फलं तालतरोरिव ॥३३३६॥

परिव्राजक-देहोऽथ सुवर्णपुरुषोऽभवत् ।
तमादाय गृहं प्राप शिवः शव-समन्वितः ॥३३३७॥

तस्याङ्गैरन्वहं कृत्यैः प्रातः प्रातर्पुनर्नवैः ।
दानं भोगांश्च कुर्वन् सचैत्यमेतदकारयत् ॥३३३८॥

राजपुत्रोऽवदत्पञ्चनमस्कार-प्रभावतः ।
मुक्तं विघ्नविघातेन शिवः प्राप परां श्रियम् ॥३३३९॥

ततोऽसौ राजपुत्रोऽगात्पुरं क्षितिप्रतिष्ठितम् ।
तदानन्दमयं दृष्ट्वा मर्त्यं कञ्चन पृष्टवान् ॥३३४०॥

किं कारणमिदं प्रोद्यत्पताकं प्रतिमन्दिरम् ।
दृश्यते कनकस्तम्भ-निबद्ध-मणितोरणम् ॥३३४१॥

तेनोचे श्रूयतामस्मिन् पुरेऽस्ति नृपतिर्बलः ।
बलाभुज इवाऽशेष-विपक्ष-दलनक्षमः ॥३३४२॥

तस्यैकदा पुरारक्षः पुरासन्नसरिज्जलैः ।
उह्यमान-महामानं मातुलिङ्गं व्यलोकयतः ॥३३४३॥

प्रविश्यातस्तदादाय सोऽर्पयामास भूभुजे ।
वर्ण-गन्ध-रसोत्कृष्टं तत् दृष्ट्वा मुमुदे नृपः ॥३३४४॥

सदत्वाऽस्मै श्रियं प्राप्तं कुत्रेदमिति पृष्टवान् ।
नद्यामित्युक्तवानेष ततोऽमुं पार्थिवोऽवदत् ॥३३४५॥

अन्वेषय वनं मौलं यत्रेदमुदपद्यते ।
ऊर्ध्वभागे व्रजन्नेष नद्यास्तीरे ददर्श तत् ॥३३४६॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रविश्य तत्र गृह्णाति यः फलं मृत्युमेति सः ।
इत्याचख्यौ पुरा रक्षः पुरतः पृथिवीपतेः ॥३३४७॥

राज्ञो चेऽवश्यमानेयमेकैकं प्रत्यहं त्वया ।
प्रवेश्य तत्र वारेण पुरस्यैकैकमानुषम् ॥३३४८॥

फलादानेऽन्वहं तस्मिन् एकैको म्रियते पुमान् ।
कियत्यपि गते काले पुरलोके विषीदति ॥३३४९॥

वारको जिनदासस्य श्रावकस्य समाययौ ।
ययौ तत्र विवेशान्तः सनमस्कारमुद्गृणात् ॥३३५०॥

तन्निशम्य स्मरन् पूर्वभव-व्रतविराधनम् ।
वनाधिष्टायक क्षुद्र व्यन्तरः प्रतिबुद्धवान् ॥३३५१॥

प्रत्यक्षीभूय नत्वा च श्रावकं स मुदाऽवदत् ।
दास्यामि फलमेकैकं स्थानस्थस्यैव तेऽन्वहं ॥३३५२॥

असौ व्यावृत्य वृत्तान्तं नृपस्य च न्यवेदयत् ।
प्राप्नोत्युच्छीर्षके शश्वदेकैकं व्यन्तरात् फलम् ॥३३५३॥

तदर्प्पयति राज्ञे स तुष्टेनाऽनेन पूजितः ।
अकालमृत्यु-विश्रान्त्या कारितश्चोत्सवः पुरे ॥३३५४॥

इति निशम्य महोत्सव-कारणं,
नृपसुतो निजगाद जगत्यहो ।
इह भवे पि विपादित-विप्लवं,
स्फुरति पञ्च-नमस्कृति-वैभवम् ॥३३५५॥

ततो राजसुतो प्राप वसंतपुर-पत्तनम् ।
तत्राऽपश्यज्जनं सर्वं नमस्कार-परायणम् ॥३३५६॥

सोऽवोचत्सुमतिर्मित्र लोकः पञ्चनमस्क्रियाम् ।
निःशेषोऽपि पठत्यत्र तत्रार्थे विद्धि कारणम् ॥३३५७॥

सो पि सम्यक् परिज्ञाय कुतो पि पुरुषादिदम् ।
रूपनिर्जितमारस्य कुमारस्य पुरोवदत् ॥३३५८॥

इहासीन्नृपतिर्नाम्ना जितशत्रु र्गुणैरपि ।
तस्य भद्रा महादेवी नामतो गुणतोऽप्यभूत् ॥३३५९॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पुरे त्रैवाऽभवच्चौरः प्रचण्डश्चण्डपिङ्गलः ।
सोन्यदाऽप्रविशद्भित्वा भांडागारं महीभुजः ॥३३६०॥

हृत्वा तस्मादसौहारं नक्षत्रश्रेणिसोदरम् ।
गणिकायाः कलावत्याः प्रविवेश निवेशनम् ॥३३६१॥

सा श्राविका तया सार्द्धं भेजे भोगान् स तस्करः ।
अथाऽऽययौ कृतातोद्यमातङ्गानङ्ग-त्रयोदशी ॥३३६२॥

तस्यां विनिर्ययुर्वेश्याः सर्वाः संभृतमूर्त्तयः ।
दिक्चक्रे शक्रचापालीस्तत्रान्यैर्मणिभूषणैः ॥३३६३॥

पुष्पदामेव कामस्य तं हारं हृदि बिभ्रती ।
जेतुं कामापराः सर्वाः कलावत्यपि निर्ययो ॥३३६४॥

हारं दृष्ट्वा महादेव्याः दासी तस्यैन्यवेदयत् ।
सा राज्ञः कथयामास प्रतीहारमुवाच सः ॥३३६५॥

केन सार्द्धं वसत्येषा तद्विज्ञाय जगाद सः ।
चण्डपिङ्गल-चौरेण श्राहयामास तं नृपः ॥३३६६॥

शूलया भेदयामास ततो दध्यौ कलावती ।
मम दोषेण शूलायां रोपितश्चण्डपिङ्गलः ॥३३६७॥

अतो मे परिहृत्यै तमपरैः पुरुषैरलम् ।
साम्प्रतं साम्प्रतं दातुमस्य पञ्च-नमस्क्रियाम् ॥३३६८॥

तां ददौ सा निदानं च कारयामास तस्करम् ।
नमस्कारवशादस्य स्यात्पुत्रो नृपतेरिति ॥३३६९॥

ततो ऽस्यैव नरेन्द्रस्य महादेव्याः सुतोऽभवत् ।
तस्य चक्रे प्रबन्धेन पिता जन्म-महोत्सवम् ॥३३७०॥

नामं च प्रथितानन्दं पुरन्दर इति व्यधात् ।
कलावत्यपि बालस्य यस्य क्रीडनधात्र्यऽभूत् ॥३३७१॥

दध्यौसाऽस्य समःकालो मृत्योः गर्भस्य वाऽभवत् ।
ततः कदाचिदेषः स्यात् स एव मम वल्लभः ॥३३७२॥

रामयन्ती जगादैषा मा रुदश्चण्डपिङ्गल ! ।
इति श्रुत्वा मुहुर्वाचं जातिस्मरणमाप सः ॥३३७३॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अथ गते जितशत्रु-नृपे दिवं,
नृपतिरत्र बभूव पुरन्दरः ।
परिहृताऽन्य-मनुष्य-समागमा,
मयमवेत्यबभाज कलावतीम् ॥३३७४॥

फलमिदं परमेष्टि-नमस्कृतेः,
क्षितिपतिर्यदभूवमहं महान् ।
इति वदन् जिनधर्म्म-कृतोद्यमः,
पठति तामनुवेलमयं नृपः ॥३३७५॥

पुरजनोऽपि ततः परमेष्ठिनां,
स्तुतिमयं पठति प्रथितादरः ।
शुभमथाशुभमाचरति ध्रुवं,
यदवनेरधिपस्तदपि प्रजाः ॥३३७६॥

इति निशम्य जगाद नृपात्मजः,
शुभमिदं सुमते कुरुते जनः ।
इह भवेऽन्यभवे च महोदयं,
दिशति पञ्च-नमस्कृतिरङ्गिनां ॥३३७७॥

यथैष चौरः परमेष्ठिमन्त्र-
प्रभावतो भूमिपतिर्बभूव ।
पुरा पुलिन्द्रो पि तथाधुनाहं
जातोस्मि भूपाल-कुले विशाले ॥३३७८॥

कुमारमूचे सुमतिः कथं ते,
पुलिन्द्रभावः समजायते ति ।
सोऽस्याचचक्षे परमेष्टिमन्त्र-
लाभान्वितं पूर्व-भवं समग्रम् ॥३३७९॥

उवाच सुमतिः सत्यं चलितो मतिपूर्वकम् ।
परिणेतुं पूराजन्म-पत्नीं रत्नमतीं भवान् ॥३३८०॥

परं पुरुषरूपेण पुरुषद्वेषिणी कथम् ।
द्रष्टुं रत्नवती लभ्या कुमार परिभावय ॥३३८१॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कुमारोऽवोचदत्रार्थे दैवमेव कृतोद्यमम् ।
प्रार्थने दुर्ल्लभार्थस्य चिन्ता हि विफला नृणाम् ॥३३८२॥

ततः प्रचलितो राजसिंहः सुमतिना समम् ।
महादर्शमिवाटव्याः प्रापदेकं सरोवरम् ॥३३८३॥

विराजयति यदुत्फुल्ल-पङ्कजाकर-मण्डितम् ।
व्योमेव तारकाकीर्णं विश्रान्तं पृथिवी-तले ॥३३८४॥

ऊर्व्यां संभाव्य शुष्यन्तमब्धिं पूरयितुं पुनः ।
मन्ये यन्निर्ममे धात्रा पृथुलः पाथसांनिधिः ॥३३८५॥

तत्र[62] कृत्वा जलक्रीडां तीरि चूततरोस्तले ।
विश्रान्तस्तत्क्षणान्निद्रां प्राप भूपालनन्दनः ॥३३८६॥

कुसुमस्तोम मुञ्चित्वं न लतान्तरित-विग्रहः ।
सुमतिः पुनरद्राक्षीत्तत्र खेचरमागतम् ॥३३८७॥

सुकुमारं समालोक्य लोक-लोचन-रोचनम् ।
चिन्तयामास चेत्कान्ता ममानुपदमागता ॥३३८८॥

द्रक्ष्यत्येनं तदेतस्मिन्ननुरागं करिष्यति ।
अतस्तत्प्रतिषेधार्थं नारीरूपं करोम्यमुम् ॥३३८९॥

ततस्तटलतागुल्मात्समादायौषधीमसौ ।
घृष्ट्वोपले जलेनाऽस्याः छटया तं स्त्रियं व्यधात् ॥३३९०॥

गते विद्याधरे प्राप तत्कान्ता साऽपि वीक्ष्य ताम् ।
स्त्रीरूपां निज-सौन्दर्य-निर्जितामरयोषिताम् ॥३३९१॥

निवृत्तो वर्त्मनानेन दृष्ट्वैतां मम वल्लभः ।
एतस्यामनुरक्तौ मां मात्याक्षीदिति खेचरी ॥३३९२॥

तथैवान्यौषधीयोगात् कृत्वा स्त्रीं पुरुषं ययौ ।
दृष्ट्वैतत्सुमतिः सम्यक् तज्जग्राहौषधिद्वयम् ॥३३९३॥

कुमारस्य प्रबुद्धस्य दर्शयन्नौषधीयुगम् ।
तं विद्याधर-वृत्तान्तं मन्त्रिपुत्रोऽव्यजिज्ञपत् ॥३३९४॥

ततः पद्मपुरं प्राप तत्राऽस्याद्धास्तिकाञ्चने ।
चिन्तारत्नानुभावेन जातः सर्व मनोरथः ॥३३९५॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एकदा केवल स्त्रीभिः विविधायुधपाणिभिः ।
दूरादुत्सार्यमाणेषु नृषु लोचनगोचरात् ॥३३९६॥

सुखासन-समासीना चैत्यं रत्नवती ययौ ।
स्त्रीरूपौ तावुभौ तत्र गत्वा पूर्वमवस्थितौ ॥३३९७॥

जिनेन्द्र-बिम्बमानर्च्य पुष्प-धूपाक्षतादिभिः ।
कुमारममरीतुल्य-दर्शनं व ददर्श सा ॥३३९८॥

चिरं निरूप्य सानन्दं निजगाद नृपात्मजा ।
कुमारस्त्रीमपूर्वेव भवती प्रतिभाति मे ॥३३९९॥

किं सदैवात्रवास्तव्या समायाताऽथवान्यतः ।
मित्रस्त्री निजगादैषा स्थानादत्रागताऽन्यतः ॥३४००॥

रत्नवत्यवदद्भद्रे त्वत्सखी मम सम्मुदम् ।
दृष्ट्वापि तनुते तेन सद्मन्यैतु मया समम् ॥३४०१॥

रत्नवत्या सहावासे जग्मतुः कृत्रिम-स्त्रियौ ।
तया रचित-सन्माने चिरं तत्रैव तस्थतुः ॥३४०२॥

अथैकदा कुमारस्त्री राजकन्यामभाषत ।
न ज्ञायते पुलिन्द्रः स तव पूर्वभव-प्रियः ॥३४०३॥

ऋते कञ्चन-भर्त्तारं कन्यका कान्तिमत्यपि ।
विना सुवर्ण-सम्बन्धं मणीव न विराजते ॥३४०४॥

ततः कंचिज्जगन्नेत्रा नन्दनं नृपनन्दनम् ।
विशाल-कुल-संभूतं परिणेतुं त्वमर्हसि ॥३४०५॥

राजकन्या जगादैवं मुक्त्वा पूर्वभव-प्रियम् ।
न शक्रमपि भर्त्तारं करोमीत्येष निश्चयः ॥३४०६॥

उवाचैवं कुमारस्त्री यद्येवं यौवनं वृथा ।
भोगशून्यं तवारण्ये मालत्या मुकुलं यथा ॥३४०७॥

राजकन्याऽवदच्चित्तविश्रान्तौ क्रियते प्रियः ।
सामेत्वद्यैव संजज्ञे किमन्येन प्रयोजनम् ॥३४०८॥

अभाविष्ट कुमारस्त्री तव पूर्वभव-प्रियः ।
अभिज्ञानेन केनैष विज्ञेय ? इति कथ्यताम् ॥३४०९॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सावोचद्येन पुण्येन जाताहं राजकन्यका ।
तद्यो वेत्ति स विज्ञेयो मम पूर्वभव-प्रियः ॥३४१०॥

आचचक्षे कुमारस्त्री मृगाक्षि मुनि-भाषितम् ।
स्मृत्वा पञ्च-नमस्कारं त्वं राजदुहिताऽभवः ॥३४११॥

ततो रत्नवती बाढं विस्मय-स्मेर-लोचना ।
चन्द्रलेखां सखीं प्रोचे पश्याश्चर्यमिदं महत् ॥३४१२॥

मद्वृत्तान्तमयं[63] वेत्ति किं स्वतः परतोऽथवा ?।
सखी जगाद वेत्त्येषा स्वत एवेति मे मतिः ॥३४१३॥

यदस्यां चित्त-विश्रान्तिर्वर्त्तते तेऽतिशायिनी ।
यदस्याः पुरुषस्यैव वचनादि-विचेष्टितम् ॥३४१४॥

यदस्याः निकटे कामविकारास्तु स्फुरन्ति ते ।
ये प्रोक्ताः[64] कामशास्त्रेषु स्त्रीणां दयित-सङ्गमे ॥३४१५॥

तथाहि-

स्त्री कान्तं वीक्ष्य नाभीं प्रकटयति मुहुर्विक्षिपन्ती कटाक्षान्,
दोर्मूलं दर्शयन्ती रचयति कुसुमापीडमुत्क्षिप्तपाणिः ।
रोमाञ्च-स्वेद-जृंभाः श्रयति कुच-तट-श्रंसि वस्त्रं विधत्ते,
सोत्कण्ठं वक्ति नीवीं शिथिलयति दशत्योष्टमङ्गं भनक्ति ॥३४१६॥

तत्कारणेन केनापि तव पूर्वभव-प्रियः ।
सोयं पुंस्त्वं तिरोधाय स्त्री-रूपं कृत्रिमं व्यधात् ॥३४१७॥

सलज्जं रत्नवत्याथ संज्ञिता प्राञ्जलिः सखी ।
व्यजिज्ञपदमुं नाथ स्वं रूपं दर्शयाद्यमे ॥३४१८॥

द्वितीयौषधि-योगेन स्त्रीत्वं संत्यज्य कृत्रिमम् ।
नटाविव प्रपन्नौ तौ रम्यं स्वाभाविकं वपुः ॥३४१९॥

वीक्ष्यामरकुमाराभं कुमारं राजकन्यका ।
आनन्दं प्राप तं यस्य त्रैलोक्यमपि संकटम् ॥३४२०॥

चन्द्रलेखाऽवदद्यद्भ्राथ रूपं प्रकाशितम् ।
विधायानुग्रहं तद्वत् कुलाद्यपि निवेद्यताम् ॥३४२१॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कुमारादेशतो देश-पुर-जाति-कुलादिकम् ।
पान्थ-वृत्तान्त-संयुक्तं सर्वं सुमतिरब्रवीत् ॥३४२२॥

अमुं वृत्तान्तमाकर्ण्य भूपतिस्तुष्टमानसः ।
ददौ कन्यां कुमाराय कुमारोऽप्युदवाह ताम् ॥३४२३॥

भूभुजा कृत-सत्कारः करीन्द्रादि-प्रदानतः ।
रत्नवत्या समं भोगान् बुभुजे भूप-नन्दनः ॥३४२४॥

अन्यदा प्रहितः पित्रा प्रतीहारः कृतानतिः ।
कुमारस्यार्प्पयामास लेखं तं सोऽप्यवाचयत् ॥३४२५॥

स्वस्ति श्री मणिमन्दिरात् पुरवरात् प्रालेय शैलोन्नत-,
प्राकाराग्र-निषन्न-खेचरवधू निध्यात सौधाद्भूतान् ।
श्रीमान् राजमृगाङ्क-भूपतिरति-प्रोत्तुङ्ग-देवाश्रये,
श्रीमत्पद्मपुरे कुमारतिलकं श्रीराजसिंहं मुदा ॥३४२६॥

सोत्कण्ठं परिरभ्य जल्पति यथाऽस्माकं समुज्जृम्भते,
क्षेमः किन्तु भवद्वियोग-विधुरा कष्टेन चेष्टामहे ।
वल्गद्वार्द्धक-वर्द्धितोज्जवलधियः संप्रत्यसंगस्थितिं
वाञ्छा मोचयमेत्य सत्वरमतस्त्वंराज्यमङ्गीकुरु ॥३४२७॥

तो रायसिंह-कुमरो सविणयमापुच्छिऊण पउम-निवं ।
करि-रह-तुरंग-पायक्क-चक्क-टिविडिक्किओ चलिओ ॥३४२८॥

पत्तो पुरं पविट्ठो सहरयणवईए गयगओ तत्थ ।
इंद व्व सईए सुरपुरम्मि एरावणारूढो ॥३४२९॥

पणमइ गुरूण चलणे सिर-चुंबिय-महियलो वहू-सहिओ ।
अहिणंदिओ य तेहिं आसीसादाणपुव्वमिमो ॥३४३०॥

राया रायमयंको चिंतइ कुमरं निवेसिउं रज्जे ।
ववगय-सयल-वियप्पो संपइ धम्मुज्जमं काहं ॥३४३१॥

अह पणमिऊण उज्जाणपालओ विन्नवेइ नरनाहं ।
उज्जाणे संपत्तो सूरी गुणसायरो नाम ॥३४३२॥

मज्झ अहो अणुकूलं दिव्वं जं आगओ गुरू समए ।
इय चिंतिऊण रज्जम्मि रायसिंहं सुयं ठवइ ॥३४३३॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दाऊण महादाणं काउं जिणमंदिरेसु पूयाओ ।
करि-कंध-गओ रन्ना समन्निओ रायसीहेण ॥३४३४॥

उज्जाणे संपत्तो दट्ठुं गुरुं गयाओ ओइन्नो ।
नमिऊण विणयपुव्वं रायमयंको इमं भणइ ॥३४३५॥

भयवं भवन्नवाओ जम्म-जरा-मरण-लहरि-हीरंतं ।
नित्थारसु झत्ति ममं वय-बोहित्थ-प्पयाणेणं ॥३४३६॥

गुरुणा वि वयं दिन्नं रायमयंकस्स राइणो विहिणा ।
तह साहु-वग्ग-जोग्गा पइदिण-किरिया समुवइट्ठा ॥३४३७॥

अह सम्मत्त-पवित्तो गिहत्थ-धम्मो गुरूण पयमूले ।
रयणवई-सहिएणं पडिवन्नो रायसीहेण ॥३४३८॥

भणियं च तेण- भयवं ! निच्चं सावगजणोचियं किच्चं ।
अम्हं पि कहसु तत्तो मुणिनाहो कहिउमाढत्तो ॥३४३९॥

पुव्विं पुलिंद-जम्मे जं संभरिऊण पियमा-सहिओ ।
कय-भवण-चमक्कारं संपइ पत्तो सि रज्जसिरिं ॥३४४०॥

पंचपरमेट्ठि-मंतं सुत्तविउद्धो सरेज्जं तं सड्ढो ।
उभय-भवेसुं कल्लाण-कारणं जो विणिद्दिट्ठो ॥३४४१॥

को हं ? किं मज्झ कुलं ? को देवो ? को गुरु ? य को धम्मो ? ।
काइं च अणुव्वयाइं ? इय अणुसरणं मणे कुज्जा ॥३४४२॥

सुइभूओ निय-घर-चेईयाइ निमज्जिऊण पूइज्जा ।
सुरहि-कुसुमेहिं तत्तो विहिणा चिइवंदणं कुज्जा ॥३४४३॥

काउं पच्चक्खाणं सत्तीए जिणालयम्मि वच्चेज्जा ।
पविसिज्ज तत्थ विहिणा वियरेज्ज पयाहिणा-तियगं ॥३४४४॥

अट्ठप्पयार-पूयाए जिणवरं पूईऊण वंदेज्ज ।
वच्चेज्ज गुरु-समीवे करेज्ज तेसिं इमं विणयं ॥३४४५॥

दट्ठुं अब्भुट्ठाणं आगच्छंताण सम्मुहं जाणं ।
सीसे अंजलिकरणं सयमासण-ढोयणं कुज्जा ॥३४४६॥

निवसेज्ज निसन्नेसु गुरुसु वंदणमुवासणं ताण ।
जं ताणं अणुगमणं इय विणयं अट्ठहा कुज्जा ॥३४४७॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पच्चक्खाणं पयडेज्ज ताण पासे सुणिज्ज सिद्धंतं ।
तत्तो करेज्ज वित्तिं गिहागओ धम्म-अविरुद्धं ॥३४४८॥

मज्झण्हे पुण काउं जियपूयं अतिहिसंविभाग-वयं ।
फासेज्ज तासु एसणिय-असण-दाणेण साहूण ॥३४४९॥

पंचनमोक्कारं सुमरिऊण निरवज्ज-भोयणं कुज्जा ।
कुसलेहिं समं सम्मं सत्थ-रहस्सं वियारिज्जा ॥३४५०॥

संझाए पुणरवि चेईयाइं संपूईऊण वंदिज्जा ।
विहियावस्सय-कम्मो करेज्ज सज्झायमेगमणो ॥३४५१॥

समयम्मि पंचपरमेट्ठि-मंत-सुमरण-परायणो निद्दं ।
थेवं सेवेज्ज अबंभचेर-परिवज्जओ पायं ॥३४५२॥

चम्मट्ठि-मंस-वस-मज्ज-सुक्क-सोणिय-पुरीस-मुत्त-हरं ।
जुवइ-सरीर-सरूवं निद्दा-विगमे वि चिंतिज्जा ॥३४५३॥

बालत्तणओ वि पवन्न-बंभचेराण विजिय-मयणाण ।
वज्जिय-महिलाणं महरिसीण सीलं सलाहिज्जा ॥३४५४॥

दोसेण जेण जेणेस जिप्पए तस्स तस्स पडियारं ।
चिंतेज्ज कयपमोओ मुणीसु तद्दोसमुक्केसु ॥३४५५॥ तहा,

अरिहंतो च्चिय देवो मुणिणो च्चिय सीलसंगया गुरुणो ।
जीवदय च्चिय धम्मो जम्मे जम्मे मह हवेज्ज ॥३४५६॥

सम्मत्त-पवित्त-मणो हवेज्ज चेडो वि तह दरिद्दो वि ।
मिच्छत्त-छन्न-मई मा राया चक्कवट्टी वि ॥३४५७॥

को सो हवेज्ज दियहो जम्मि अहं सव्व-संग-परिहारं ।
काउं पडिवज्जिस्सं गुरु-पयमूलम्मि पव्वज्जं ? ॥३४५८॥

कईया दुवालसंगं गिण्हिस्समहं गुरूण वयणाओ ।
कमलाओ महुयरं महुयरो व्व मयरंद-संदोहं ? ॥३४५९॥

दुव्वयणाइं सुणंतो घरे घरे फुरिय-असम-पसम-रसो ।
भिक्खागओ सहिस्सं बावीस परीसहे कईया ? ॥३४६०॥

बाहु व्व कया काहं उवग्गहं भत्त-पाण-दाणेण ? ।
साहूण कया वीसामणं च काउं सुबाहु व्व ? ॥३४६१॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कईया मसम्मि निसिकय-काउस्सग्गे थिरम्मि थंभे व्व ।
पुर-परिसरे करेस्संति कंध-कंडूयणं वसहा ? ॥३४६२॥

सम-सुह-दुक्खो सम-कणय-पत्थरो सम-सपक्ख-पडिवक्खो ।
सम-तरुणि-तणुक्केरो सम-मोक्ख-भवो कया होहं ?॥३४६३॥

गुण-पगरिसमारोढुं परम-सुहाराम-अमय-वुट्ठि-समं ।
इय सिवपुर-गमण-रहे मणोरहे माणसे कुज्जा ॥३४६४॥

एवं अहोरत्त विहिं कुणंतो पलित्त-गेहं व भवं मुणंतो ।
लद्धूण सुद्धिं खविऊण दुक्खं गिही वि पावेइ कमेण मोक्खं ॥३४६५॥

एवं गुरूवएसं कुणमाणो रायसिंह-नरनाहो ।
अप्पडिहय-प्पयावो चिरकालं पालए रज्जं ॥३४६६॥

पंचपरमेट्ठि-मंताणुभावओ दुज्जया वि नरवइणो ।
लीलाए तस्स आणं वहंति सेसं व सीसेण ॥३४६७॥

कुसुमेहि वणं व सरं व पंकएहिं नहं व रिक्खेहिं ।
भुवणं जिणभुवणेहिं विभूसियं कारए एसो ॥३४६८॥

पाविय-वय-परिणामो कयाइ एसो गओ गिलाणत्तं ।
मरणावसरं मुणिऊण अप्पणो रायसिंह-निवो ॥३४६९॥

रयणवई-अंगरुहं पयावसीहं निवेसए रज्जे ।
परलोय-मग्ग-आराहणत्थमह वाहरेइ गुरू ॥३४७०॥

नमिऊण भणइ एवं- भयवं ! समओचियं ममाइससु ।
तत्तो वागरइ गुरू पज्जंताराहणं एयं ॥३४७१॥

आलोयसु अईयारे वयाइं उच्चरसु खमसु जीवेसु ।
वोसिरसु भावियप्पा अट्ठारस-पावठाणाइं ॥३४७२॥

चउसरणं दुक्कड-गरिहणं च सुकडाणुमोयणं कुणसु ।
सुह-भावणं अणसणं पंचनमोक्कार-सरणं च ॥३४७३॥

नाणम्मि दंसणम्मि य चरणम्मि तवम्मि तह य विरियम्मि ।
पंचविहे आयारे अइयारालोयणं कुणसु ॥३४७४॥

काल-विणयाइ-अट्ठप्पयार-आयार-विरहियं नाणं ।
जं किं पि मए पढियं मिच्छा मे दुक्कडं तस्स ॥३४७५॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नाणीण जं न दिन्नं सइ सामत्थम्मि वत्थ-असणाई ।
जं च विहिया अवन्ना मिच्छा मे दुक्कडं तस्स ॥३४७६॥

जं पंचभेय-नाणस्स निंदणं जं इमस्स उवहासो ।
जं च कओ उवघाओ मिच्छा मे दुक्कडं तस्स ॥३४७७॥

नाणोवगरणभूयाण कवलिया-फलय-पुच्छयाईण ।
आसायणा कया जं मिच्छा मे दुक्कडं तस्स ॥३४७८॥

जं सम्मत्तं निस्संकियाइ अट्ठविह-गुण-समाउत्तं ।
धरियं मए न सम्मं मिच्छा मे दुक्कडं तस्स ॥३४७९॥

जं न जणिया जिणाणं जिण-पडिमाणं च भावओ पूया ।
जं च अभत्ती विहिया मिच्छा मे दुक्कडं तस्स ॥३४८०॥

जं विरइओ विणासो चेइयदव्वस्स तं विणासंतो ।
अन्नो उवेक्खिओ जं मिच्छा मे दुक्कडं तस्स ॥३४८१॥

आसायणं कुणंतो जं कहवि जिणिंद-मंदिराईसु ।
सत्तीए न निसिद्धो मिच्छा मे दुक्कडं तस्स ॥३४८२॥

जं पंचहि समिईहिं गुत्तीहिं तीहिं संगयं सययं ।
परिपालियं न चरणं मिच्छा मे दुक्कडं तस्स ॥३४८३॥

एगिंदियाण जं कहवि पुढवि-जल-जलण-मारुय-तरुणं ।
जीवाण वहो विहिओ मिच्छा मे दुक्कडं तस्स ॥३४८४॥

किमि-संख-सुत्ति-पूयर-जलूय-गंडोलया-ऽलसप्पमुहा ।
हणिया बिइंदिया जं मिच्छा मे दुक्कडं तस्स ॥३४८५॥

गद्दहय-कुंथू-जुया-मंकुण-मक्कोड-कीडियाईया ।
निहया तिइंदिया जं मिच्छा मे दुक्कडं तस्स ॥३४८६॥

कोलियय-कुत्तिया-तिड्ड-मच्छिया-सलह-छप्पयप्पमुहा ।
चउरिंदिया हया जं मिच्छा मे दुक्कडं तस्स ॥३४८७॥

जलयर-थलयर-खयरा आउट्टि-पमाय-दप्पकप्पेहिं ।
पंचिंदिया हया जं मिच्छा मे दुक्कडं तस्स ॥३४८८॥

जं कोह-लोह-भय-हास-परवसेणं मए विमूढेण ।
भासियमसच्च-वयणं मिच्छा मे दुक्कडं तस्स ॥३४८९॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जं कवडवावडेहिं मए परं वंचिऊण थेवं पि ।
गहियं धणं अदिन्नं मिच्छा मे दुक्कडं तस्स ॥३४९०॥

दिव्वं व माणुसं वा तेरिच्छं वा सरागहियएणं ।
जं मेहुणमायरियं मिच्छा मे दुक्कडं तस्स ॥३४९१॥

जं धण-धन्न-सुवन्न-प्पमुहम्मि परिग्गहे नवविहे ति ।
विहियं मए ममत्तं मिच्छा मे दुक्कडं तस्स ॥३४९२॥

जं राईभोयण-विरमणाइ-नियमेसु विविहरूवेसु ।
खलियं मह संजायं मिच्छा मे दुक्कडं तस्स ॥३४९३॥

बाहिरमब्भिंतरयं तवं दुवालसविहं जिणुद्दिट्ठं ।
जं सत्तीए न कयं मिच्छा मे दुक्कडं तस्स ॥३४९४॥

जोगेसु मोक्खपय-साहगेसु जं वीरियं न य पउत्तं ।
मण-वाया-काएहिं मिच्छा मे दुक्कडं तस्स ॥३४९५॥

पाणाइवायविरमण-पमुहाइं तुमं दुवालस-वयाइं ।
सम्मं परिभावंतो भणसु जहागहिय-भंगाइं ॥३४९६॥

खामेसु सव्व-सत्ते खमेसु तेसिं तुमं वि गयकोवो ।
परिहरिय-पुव्ववेरो सव्वे मित्ते त्ति चिंतेसु ॥३४९७॥

पाणाइवायमलियं चोरिक्कं मेहुणं दविण-मुच्छं ।
कोहं माणं मायं लोहं पेज्जं तहा दोसं ॥३४९८॥

कलहं अब्भक्खाणं पेसुन्नं अरइ-रइ-समाउत्तं ।
पर-परिवायं माया-मोसं मिच्छत्त-सल्लं च ॥३४९९॥

वोसिरसु इमाइं मोक्ख-मग्ग-संसग्ग-विग्घभूयाइं ।
दुग्गइ-निबंधणाइं अट्ठारस-पावट्ठाणाइं ॥३५००॥

चउतीस-अइसय-जुया जे केवलनाण-मुणिय-परमत्था ।
सुरविहिय-समोसरणा अरहंता मज्झ ते सरणं ॥३५०१॥

चउविह-कसाय-चत्ता चउवयणा चउप्पयार-धम्मकहा ।
जे चउगइ-दुह-दलणा अरहंता मज्झ ते सरणं ॥३५०२॥

जे अट्ठ-कम्म-रहिया अट्ठ-महापाडिहेर-पडिपुन्ना ।
अट्ठ-मयट्ठाण-विरया अरहंता मज्झ ते सरणं ॥३५०३॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भवखेत्ते अरुहंता भावारि-प्पहणणेण अरिहंता ।
जे तिजय-पुयणिज्जा अरहंता मज्झ ते सरणं ॥३५०४॥

तरिऊण भवसमुद्दं रउद्द-दुह-लहरि-लक्ख-दुल्लंघं ।
जे सिद्धि-सुहं पत्ता ते सिद्धा हुंतु मह सरणं ॥३५०५॥

जे भंजिऊण तव-मुग्गरेण निबिडाइं कम्म-नियलाइं ।
संपत्ता मोक्ख-सुहं ते सिद्धा हुंतु मह सरणं ॥३५०६॥

झाणानल-जोगेण जाओ निद्दड्ढ-सयल-कम्म-मलो ।
कणगं व जाण अप्पा ते सिद्धा हुंतु मह सरणं ॥३५०७॥

जाण न जम्मो न जरा न वाहिणो न मरणं न वाऽऽबाहा ।
न य कोहाइ कसाया ते सिद्धा हुंतु मह सरणं ॥३५०८॥

काउं महुयर-वित्तिं जे बायालीस-दोस-परिसुद्धं ।
भुंजंति भत्तपाणं ते मुणिणो हुंतु मह सरणं ॥३५०९॥

पंचिंदिय-दमणपरा निज्जिय-कंदप्प-दप्प-सर-पसरा ।
धारंति बंभचेरं ते मुणिणो हुंतु मह सरणं ॥३५१०॥

जे पंचसमिइ-समिया पंचमहव्वय-भरुव्वहण--वसहा ।
पंचमगइ-अणुरत्ता ते मुणिणो हुंतु मह सरणं ॥३५११॥

जे चत्त-सयल-संगा सम-मणि-तण-मित्त-सत्तुणो धीरा ।
साहंति मुक्ख-मग्गं ते मुणिणो हुंतु मह सरणं ॥३५१२॥

जो केवलनाण-दिवायरेहिं तित्थंकरेहिं पन्नत्तो ।
सव्व-जगज्जीव-हियओ सो धम्मो होउ मह सरणं ॥३५१३॥

कल्लाण-कोडि-जणणी जत्थ अणत्थप्पबंध-निद्दलणी ।
वन्निज्जइ जीवदया सो धम्मो होउ मह सरणं ॥३५१४॥

जो पावभरक्कंतं जीवं भीमम्मि कुगइ-कूवम्मि ।
धारेइ निवडमाणं सो धम्मो होउ मह सरणं ॥३५१५॥

सग्गापवग्ग-पुर-मग्ग-लग्ग-लोयाण सत्थवाहो जो ।
भवअडवि-लंघणखमो सो धम्मो होउ मह सरणं ॥३५१६॥

एवं चउण्हं सरणं पवन्नो,
निव्विन्न-चित्तो भवचारयाओ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जं दुक्कडं किं पि समक्खमेमि.
निंदामि सव्वं पि अहं तमिण्हिं ॥३५१७॥

जं एत्थ मिच्छत्त-विमोहिएण,
मए भमंतेण कयं कुतित्थं ।
मणेण वायाइ[६७] कलेवरेणं,
निंदामि सव्वं पि अहं तमिण्हिं ॥३५१८॥

पच्छाईओ जं जिणधम्म-मग्गो,
मए कुमग्गो पयडीकओ जं ।
जाओ अहं जं पर-पावहेऊ,
निंदामि सव्वं पि अहं तमिण्हिं ॥३५१९॥

जंताणि जं जंतुवहावहाइं,
हलुक्खलाईणि मए कयाइं ।
जं पोसियं पाव-कुंडुंबयं च,
निंदामि सव्वं पि अहं तमिण्हिं ॥३५२०॥

जिणभवण-बिंब-पुत्थय-संघ-सरूवाए सत्त-खित्तीए ।
जं वविय धण-बीयं तमहं अणुमोयए सुकयं[६८] ॥३५२१॥

जं सुद्ध-नाण-दंसण-चरणाइं भवन्न-वप्पवहणाइं ।
आराहियाइं सम्मं तमहं अणुमोयए सुकयं ॥३५२२॥

जिण-सिद्ध-सूरि-उवज्झाय-साहु-साहम्मिय-पवयणेसु ।
जं विहिओ बहुमाणो तमहं अणुमोयए सुकयं ॥३५२३॥

सामाइय-चउवीसत्थयाइं आवस्सयम्मि छब्भेए ।
जं उज्जमियं सम्मं तमहं अणुमोयए सुकयं ॥३५२४॥

पुव्वकय-पुन्न-पावाण सुक्ख-दुक्खाण कारणं लोए ।
न य अन्नो को वि जणो इय मुणिय कुणसु सुहभावं ॥३५२५॥

पुव्वं दुच्चिन्नाणं कम्माणं वेइयाण जं मोक्खा ।
न पुणो अवेइयाणं इय मुणिउं कुणसु सुहभावं ॥३५२६॥

जं तुमए नरए नारएण दुक्खं तितिक्खियं तिक्खं ।
तत्तो कत्तियमेत्तं इय मुणिउं कुणसु सुहभावं ॥३५२७॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जेण विणा चारित्तं सुयं तवं दाण-सीलमवि सव्वं ।।
कासकुसुमं व विहलं इय मुणिउं कुणसु सुहभावं ।।३५२८।।

जं भुंजिऊण बहुयं सुरपव्वय-पमुह-पव्वएहिंतो ।
तित्ति तए न पत्ता तं चयसु चउव्विहाहारं ।।३५२९।।

जं सुलहो जीवाणं सुर-नर-तिरि-नरय-गइचउक्के वि ।
मुणिउं दुल्लह-विरइं तं चयसु चउव्विहाहारं ।।३५३०।।

छज्जीवनिकाय-वहे अकयम्मि कहं पि जो न संभवइ ।
भवभमण-दुहाहारं तं चयसु चउव्विहाहारं ।।३५३१।।

''चत्तम्मि जम्मि जीवाण होइ करयल-गयं सुरिंदत्तं ।
सिद्धि-सुहं पि हु सुलहं तं चयसु चउव्विहाहारं ।।३५३२।।

नाणाविह-पावपरायणो वि जं पाविऊण अवसाणे ।
जीवो लहइ सुरत्तं तं सरसु मणे नमोक्कारं ।।३५३३।।

जेण सहाएण गयाण परभवे संभवंति भवियाण ।
मणवंछिय-''सोक्खाइं तं सरसु मणे नमोक्कारं ।।३५३४।।

सुलहाओ रमणीओ सुलहं रज्जं सुरत्तणं सुलहं ।
''एक्को च्चिय जो दुलहो तं सरसु मणे नमोक्कारं ।।३५३५।।

लद्धम्मि जम्मि जीवाण जायए गोपयं व भवजलही ।
सिवसुह-सच्चंकारं तं सुरसु मणे नमोक्कारं ।।३५३६।।

एवं गुरुवइट्ठं पज्जंताराहणं निसुणिऊण ।
वोसट्ठ-सव्व-पावो तहेव आसेवए एसो ।।३५३७।।

पंचपरमेट्ठि-सुमरण-परायणो पाविऊण पंचत्तं ।
पत्तो पंचमकप्पम्मि रायसिंहो सुरिंदत्तं ।।३५३८।।

रयणवई वि हु तेण क्कमेण तेणेव सह मया रन्ना ।
अत्थंगयम्मि चंदे कयावि किं चिट्ठए जोण्हा ? ।।३५३९।।

एसा वि तत्थ कप्पम्मि तस्स सामाणियत्तणं पत्ता ।
तत्तो चुयाइं दोन्नि वि कमेण मोक्खं लहिस्संति ।।३५४०।।

• • •

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पाठांतर :

१. तरस सचिवो **ल.** \\ २. हविज्ज **ल. रा.** \\ ३. निवगामे **द.** \\ ४. जरठकुर पासे **ल.** ॥ ५. परं न. **ल. रा.** ॥ ६. भणियं **ल. रा.** ॥ ७. जगिमं **द. पा.** ॥ ८. निलियाणि **ल. रा.** ॥ ९. तारिसा **पा.** ॥ १०. विपुलमई-विउलमई **द. पा.** ॥ ११. कंदलियामिसेण **द. पा.** ॥ १२. विवाहाणंतरे **ल. रा.** ॥ १३. भासइ वणिय-पुत्तो **ल. रा.** ॥ १४. सरूव **ल.** ॥ १५. परिक्खिवइ **ल. रा.** ॥ १६. जीव-तित्थे **द. पा.** ॥ १७. सव्व निच्छुभमाणा **ल.** ॥ १८. रोयंती **ल. रा.** ॥ १९. पडिवज्जिउं **ल. रा.** ॥ २०-२१ चंदसेणो **ल. रा.** ॥ २२. चिगिच्छा **द. पा.** ॥ २३. पुव्वं **द. पा. रा.** ॥ २४. कारविउं **रा.** ॥ २५. मरिऊण नरयं गओ । केसवो पुण गुरुणो पासे... **ल. रा.** ॥ २६. मे **द. पा.** ॥ २७. आएसु **ल. रा.** ॥ २८. ठाऊण **द. पा.** ॥ २९. संतसंतोसं **द. पा. रा.** ॥ ३०. पिच्छसि **ल. रा.** ॥ ३१. भुक्खियाइ **ल. रा.** ॥ ३२. कथामां आगळ 'रयणसारो' पाठ आवे छे. ३३. परिच्चयसु सोयं । **ल. रा.** ॥ ३४. कज्जं **ल. रा.** ॥ ३५. रयण कहि पि एस सिह खेयरिंदस्स **द. पा.** ३६. विमल **ल. रा.** ॥ ३७. सुंदेरु **द. ल. रा.** ॥ ३८. एयं **ल.** ॥ ३९. कविंजलाए राहु तुमए **ल. रा.** ॥ ४०. सहाविओ **ल. रा.** ॥ ४१. दुयं **ल. रा** ॥ ४२. 'अलिंगिऊण....... मणेण' आटलो पाठ **ल. रा** मां नथी. ४३. भवणवाम्मि **ल.** ॥ ४४. पडिहच्छे **ल. रा.** ॥ ४५. एवं **ल.** ॥ ४६. गहिऊण **ल.** ॥ ४७. जीइ **द.** ॥ ४८. तत्थ **ल. रा.** ॥ ४९. पब्बले **द. पा.** ॥ ५०. मणमंछयित्थ-विसए **द. पा.** ॥ ५१. चित्तमंगलुं० **ल. रा.** ॥ ५२. सिद्धाओ **ल. रा.** ॥ ५३. बहुयं पि सुवन्नं । एवं सोऊण तेणावि नीयं अइ-बहुय-सुवन्नं । कया सामग्गी । केणावि पयारेण चंदणं वंचिउं गहिऊण सुवन्नं पणट्ठो. **ल. रा.** ॥ ५४. जायं जाईसरण **द. पा.** ॥ ५५. पूवब्भासेण **ल. रा.** ॥ ५६. लहिऊण **ल.** ॥ ५७. भद्दसेणो **रा.** ॥ ५८. पुव्वेणमेव रन्ने उववन्ना **ल. रा.** ॥ ५९. तत्थ जिन्नरूवे **ल. रा.** ॥ ६०. केवलगो **ल. रा.** ॥ ६१. वसणंकुर **ल. रा.** ॥ ६२. ततः **ल. रा.** ॥ ६३. मद्वृत्तान्तमियं **द. पा.** ॥ ६४. यथोक्ताः **रा.** ॥ ६५. वायाए **द. पा.** ॥ ६६. गाथा **३५२१-३५३१** सुधी **द. पा.** मां नथी. ६७. जेण कएण जीवाण **द. पा.** ॥ ६८. सुक्खाइं **पा.** ॥ ६९. एसो च्चिय **ल. रा.** ॥

• • •

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दसमो पत्थावो

एवं अट्ठारस-पय-मयं मोक्ख-सोवाण-पंति,
मोक्खत्थीणं कुणइ चमरो देसणं जाव सम्मं ।
पत्तो सूरो पडिहय-तमो ताव वोमस्स मज्झं,
को मज्झत्थो नहवइ जए तारिसे देसगम्मि ? ॥३५४१॥

पुन्नाए य बीय पोरिसीए विरए धम्म-कहणाओ चमर-गणहरे सुराऽसुरा गया नंदीसरं । तत्थ सासय-जिण-पडिमाणं महिमं काऊण पत्ता सट्ठाणं । भयवं पि आगासगएणं पुरओ चक्कमंतेणं धम्मचक्केणं, आगासगएणं धवलायवत्तेणं, आगासगएणं फलिहमएणं सपायवीढेणं सिंहासणेणं, आगासगएहिं सेय-वर-चामरेहिं, अणेग-सुर-कोडि-समुक्खित्तेणं पुरओ पयट्टेणं पवण-पणच्चंत-महापडाएणं पडाईया-सहस्स-परियरिएणं रयणज्झएणं बहु-समण-समणी-संघेण चंदो व्व नक्खत्त-ताराचक्केण परिवुडो विहरिओ तओ ठाणाओ । विहरंतस्स य तस्स बहुमाणेण व नमंति मग्ग-पायवा । अंतरंग-कंटय-समुच्छेयच्छेयस्स भयवओ भएण व अहोमुहा चिट्ठंति कंटया । सगुण-सिरोमणिणो सामिणो सेवय व्व पयाहिणा संपज्जंति सउणा । कंदप्प-परिपंथिणो पहुणो सयल-काल-कय-कंदप्प-साहेज्जा वराह-विहुर व्व सेवत्थं निय-निय-समय-समुब्भव-पुप्फ-फल-पाहुड-पयाण-पुव्वं जुगवं पि उवट्ठिया उउणो । तिजय-रक्खणुज्जयस्स जय-गुरुणो पुव्व-कय-तिजग-जगडण-दोस-खामणत्थं व अणुकूलत्तणं पवन्ना सद्द-रूव-गंध-रस-फासा । परमेसरस्स सुरहि-वयण-परिमल-लुद्धो व धावए पिट्ठओ पवणो । अणहवुड्ढि-संगयस्स अबालभावस्स य भयवओ जुत्तं चेव न वट्टंति नहा वाला य । गंधसिंधुरस्स व गंधेण सेस-सिंधुरा नासंति अरहओ पभावेण ईइवेरामय(?) मारिय-वुट्ठि-अइवुट्ठि-दुब्भिक्ख-डमर-पमुहा उवद्दवा । उच्चिट्ठ-सुरलोय-सुलह-चिरंतणामयरस-पाण-लालसा जहन्नओ वि कोडि-संखा समीवं न मेल्लंति अमयभोइणो ।

इय चउतीसाए अइसएहिं सहिओ हिओवएसपरो ।
पर-उवयार-विहाणेण जंगमो कप्परुक्खो व्व ॥३५४२॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

केरल-कलिंग-कुंतल-तिलंग-कन्नाड-लाड-भोडेसु ।
बंगंग-मगह-मालव-मरहट्ठ-सुरट्ठ-गउडेसु ॥३५४३॥

अन्नेसु वि विविहेसुं देसेसु सुहावहो विहरमाणो ।
केसिं पि सव्वविरइं निहि व्व रयणासयं दिंतो ॥३५४४॥

पंचाणुव्वय-साहं गुण-सिक्खा-कुसुममल-मोक्ख-फलं ।
केसिं पि देसविरइं कप्पलयं पि समप्पंतो ॥३५४५॥

पायडिय-विसुद्ध-पहं दुरंत-दोगच्च-दुक्ख-निद्दलणं ।
केसिं पि महारयणं वियरमाणो य सम्मत्तं ॥३५४६॥

इय भविय-समूहं धम्ममग्गे ठवंतो,
तियस-कय-पसंसो संसउच्छेयच्छेओ ।
कुसमय-परचक्कं अक्कमंतो कमेणं,
गमइ सुमइनाहो वास-लक्खे बहूए ॥३५४७॥

अह अत्थि एत्थ भरहे कोसलदेसम्मि कुसलकोसम्मि ।
साकेयं नाम पुरं रिद्धीए पुरंदरपुरं व ॥३५४८॥

तत्थ समरसीहो राया ।

समरम्मि जो समग्गे विवक्ख-वग्गे पलायमाणम्मि ।
संमुहमप्पाणं चिय पेक्खइ करवाल-संकंतं ॥३५४९॥

तस्स दमयंती देवी-

पसुवइणो सुर-सरि-जल-संसित्तो भाल-नयण-सिहि-तत्तो ।
जल-जलण-वयं कुणइ व्व ससहरो जीए मुह-विजिओ ॥३५५०॥

तस्स रन्नो तीए सह विसय-सुहं सेवंतस्स वच्चंति वासरा । अन्नया देवीए सुहपसुत्ताए सुविणए किरण-कलाव-कवलिय-तिमिर-मंडलं दिट्ठं मणि-कुंडलं, पडिबुद्धाए साहियं रन्नो । तेण वुत्तं- देवि ! मणि-कुंडलं व महि-महिला-मंडलं पुत्तो ते भविस्सइ । तीए वि देव-गुरुप्पसाएण एवं होउ त्ति बहुमन्नियं रन्नो वयणं । पाउब्भूओ गब्भो । समए य देहप्पहा-पूरेण तिमिर-दारओ जाओ तीए दारओ । इमस्स नाल-निक्खिवणत्थं खणिज्जंते खोणीयले निग्गओ महग्घ-रयण-संगओ निही । सुविणय-निहि-लाभाणुसारेण कयं से निहिकुंडलो त्ति नामं । वड्ढिओ सो देहोवचएण कलाकलावेण य, पत्तो तरुणी-नयण-कुरंग-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कीलावणं जोव्वणं ।

तणु-तेय-तुलिय-तवणेज्ज-पुंज-कंतीसु तह वि तरुणीसु ।
चक्खुं पि खिवइ न मुहा मुणि व्व निहिकुंडल-कुमारो ॥३५५१॥

सो बालकाल-परिसीलियं पि सयले कलाकलावम्मि ।
कुणमाणो अब्भासं मयणस्स न देइ अवयासं ॥३५५२॥

अन्नया दिव्वाणुभावेण दिव्व-कन्नयं सुविणए दट्ठूण तदणुरत्तो पत्तो रणरणयं न पावए कत्थ वि रइं । मुणियमिणं पिउणा । पहाण-रायकन्ना-पडिच्छंदाण आणयत्थं पेसिया सव्वत्थ पुरिसा । आणिऊण दंसिया तेहिं ते कुमारस्स । न जाओ कत्थ वि सुविण-दिट्ठ-कन्नगा-संवाओ । कयाइ भवणुज्जाण-कयलीवणे निसन्नस्स कुमारस्स आगओ पुरिसो । पणमिऊण निविट्ठो पुरओ, दंसिया अणेण चित्तवट्टिया । दिट्ठं तत्थ कुमारेण सुविण-दिट्ठ-कन्नगाणुरूवं रूवं । भणियं च विम्हओफुल्ल-लोयणेण- अहो ! चित्तकला-कोसल्लं चित्तयरस्स, जेण सयल-भुवणच्छरियभुयं लिहियमेयं रूवं । पुरिसेण वुत्तं- कुमार !

चित्तयरस्स न किंचि विचित्तकरं चित्तकम्म-चउरत्तं ।
दट्ठुम्मि पडिचच्छंदं सम्मं लिहियं न जेण इमं ॥३५५३॥

एकस्स पयावइणो वन्नसु विन्नाण-कोसलं एत्थ ।
जेण पडिच्छिंदयमंतरेण बाला विणिम्मविया ॥३५५४॥

कुमारेण वुत्तं- कुविय-सुरवइ-साव-पब्भट्ठ किं अच्छर ? किं खयरि गलियविज्ज गयणाओ निवडिय ? पायालह नीहरिय नागकन्न किं नाग-विनडिय ?

मह आगरसइ एह मणु तं लोहु व अयकंतु ।
अवर-रमणि पवर विनिइवि जं किल आसि पसंतु ॥३५५५॥

ता भद्द ! कहेसु का एस ? त्ति ।

पुरिसेण वुत्तं-कुमार ! सुण, महाराय-समरसीहाएसेण रायधूयाए पडिच्छंदाणयणत्थं गओ अहं कुणाल-विसए सावत्थीए नयरीए । तत्थ अरिचक्क-चडयसेणो हरिसेणो राया, तस्स कणय-कमणिज्ज-काय-कंती कंतिमई कंता । ताणं धूया पुरंदरजसा । सा य अहिगय-कलाकलावा पत्त-जोव्वणा । जणाओ कुमार ! तुह कित्तिं सोऊण पुरिसंतरस्स नामं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पि न सहइ । न य निय-मणोगयं कस्स वि कहइ । जाया जणयस्स चिंता । भणिया अणेण मंतिणो-एत्थत्थे चिंतेह किंपि उवायं । मंतीहिं वुत्तं-देव ! दंसिज्जंतु इमीए रायकुमाराण पडिच्छंदया जइ कत्थ वि रागं करेज्ज । पेसिऊण पुरिसे आणाविया ते, दंसिया इमीए, न कत्थ वि वीसंता दिट्ठी । तुह पुण पडिच्छंदए दिट्ठे थंभिय व्व ठिया, समुल्लसिओ सव्वंगं पुलओ, जायं सेय-जल-बिंदु-संदोह-सुंदरं भालवट्टं, वियंभिओ चंदण-जलद्दाइ-सिसिरोवयाराणं पि असज्झो देह-दाहो ।

तुममेव चिंतयंती तुज्झ गुण-कित्तणं चिय कुणंती ।
तुममेव आलिहंती गमेइ दियहाइं सा बाला ॥३५५६॥

दिट्ठा य मए सा तदवत्था, तप्पडिच्छंदं च लिहिऊण समागओहं ति । तव्विसयं अणुरागं मुणिऊण कुमारस्स रन्ना मग्गिऊण वरिया पुरंदरजसा । विवाहत्थं महासामग्गीए चलिओ निहिकुंडलो । वच्चंतो रन्न-मज्झे अवहरिओ तुरएण, पिच्छए गिरि-निकुंजे पज्जलंतं जलणं । गओ तत्थ कोउगेणं, दिट्ठो चउकोण-दिन्न-दीवए दिप्पंत-जलण-कुंड-सणाहे मंडले निविट्ठो कावालिगो, तस्स पुरओ भय-कंपंत-गत्ता एगा जुवई । चिंतियं कुमारेण-

किमिमा बाला स च्चिय सुविणे ट्ठिते य जा मए दिट्ठा ।
अन्ना वा ? नवधूयत्तणेण तीए असंभवओ ॥३५५७॥
विहिविलसियाण चित्तत्तणेण संभवइ सा वि किं अहवा ।
रक्खेमि रक्खसाओ व एयाओ तं च अन्नं वा ॥३५५८॥

इओ य कत्तियं कड्ढिऊण भणियं कावालिगेण-'कुणसु दिट्ठं *जीवलोयं, सरसु इट्ठदेवयं । एय-पज्जवसाणो ते जीवलोओ'* त्ति । *सा वि* हा ताय ! हरिसेण महाराय ! हा पाणनाह ! निहिकुंडल कुमार ! एसा असरणा अहं विवज्जामि त्ति जंपंती परुन्ना । तओ सा चेव एसा हरिसेण-धूया ते(मे) पिययमेति निच्छिऊण खग्गवग्गकरो हक्कारव-भयंकरो 'रे रे अणज्ज ! किमेयमकज्जमारद्धं ?'ति भणंतो धाविओ कुमारो । तं च दट्ठूण मरण-भीओ पणट्ठो कावालिगो । पुरंदरजसा वि कहिऊण निय-वुत्तंतं आसासिया कुमारेण । पुच्छिया य- भद्दे ! कहमेयमवत्थं पत्ता सि ? । तीए वुत्तं-कुमार ! रयणीए सुहपसुत्ता अहं कहं पि हरिया इमिणा । पडिबुद्धाए य दिट्ठो एत्थ एसो, पुव्वं पि तुह गुणे

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सोऊण समप्पिओ मए अप्पा । संपयं पुण तए विक्कमेण किणीया अहं ति । कुमारो वि तं घेत्तूण आगओ आवासं, कमेण पत्तो सावत्थीए । संजाय-दुगुण-हरिसेण रण्णा परिणाविओ पुरंदरजसं । सक्कारिओ करि-तुरय-रह-सुवन्नाइ-दाणेण । आगओ स-नगरं । सेवए तीए सह विसयं । कयाइ समर-वावारेण परलोयं पवन्ने समरसीहे निसन्नो रज्जे निहिकुंडलो ।

> जे न पवन्ना सेवं कउज्जमाणं पि पुव्वनिवईणं ।
> ते वि हु पयावमेत्तेण तस्स आणापरा जाया ॥३५५९॥

अन्नया नंदिवद्धणायरिय-समीवे धम्मदेसणं सुणिऊण सहकंताए पवन्नो सावगत्तणं । कारेइ जिणाययणे, ठावेइ तेसु जिण-पडिमाओ, कारवेइ रहजत्ताओ, पूएइ चउव्विह-संघं, करेइ जिणसासण-प्पभावणं । जाओ य तस्स सुओ पुन्नजसो ।

> अह तत्थ तित्थनाहो सुमई निम्महिय-सयल-जण-कुमई ।
> विहरंतो संपत्तो पडिबोहंतो भविय-वग्गं ॥३५६०॥

कयं देवेहिं समोसरणं, उवविट्ठो भयवं पयाहिणा-पुव्वं सिंहासणे, वद्धाविओ निउत्त-पुरिसेण राया । दाऊण तस्स तुट्ठिदाणं गयकंधराधिरूढो गओ भयवओ वंदणत्थं । पंचविहाभिगमेण पविट्ठो समोसरणे, ति-पयाहिणा-पुव्वं पणमिऊण निविट्ठो स-ठाणे । निसन्नाए दुवालसविहाए परिसाए पुरओ पारद्धा भयवया देसणा-

> ते धत्तूर-तरुं वपंति भवने प्रोन्मूल्य कल्पद्रुमं,
> चिन्तारत्नमपास्य काच-शकलं स्वीकुर्वते ते जवात् ।
> विक्रीय त्रिदशाधिराज-करिणं क्रीणन्ति ते रासभं,
> ये लब्धं परिहत्य धर्म्ममधमा धावन्ति भोगाशया ॥३५६१॥

> तो रन्ना निहिकुंडलेण समयं लद्धूण पुट्ठो इमं-,
> सामी किं सुकयं कयं पियथमा-जुत्तेण पुव्वं मए ?।
> जेणाऽसेस-नरिंद-मत्थय-मणी-लीढ-क्कमांभोरुहं,
> पत्तं रज्जसुहं पुरंदरजसा जाया य मे वल्लहा ॥३५६२॥

सामिणा वुत्तं-अत्थि महाधणं नाम वणं । तत्थ जिण-पणमणत्थमागयाहिं अच्छराहिं व मणि-सालिभंजियाहिं रेहंत-कणयखंभ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नाहि-नरिंद-नंदण-जिणचंद-पडिमाए मणोहर-चेईहरं । तस्स उववण-मज्झे आसि एगं कीर-मिहुणं । तं च कयाइ जिणिंद-पडिमं दट्ठूण पहिट्ठ-मणं माणुस-भासाए परोप्परं जंपिउं पवत्तं-

अव्वो अपुव्वमेयं रूवं नयणाण अमयवुट्ठिसमं ।
अम्हेहिं जेहिं दिट्ठं सहलं चिय जीवियं तेसिं ॥३५६३॥

ता निच्चं पि पिच्छिस्समाणो इमं ति । पिच्छंताण पिच्छंताण गलिओ मोह-गंठी ।

फुरियं मणे-'कस्सइ देवाहिदेवस्स पडिमा इम' त्ति ।

पत्ते य वसंते चंचूहिं चूयमंजरीओ घेत्तूण तेहिं दिन्नाओ पडिमा-मत्थए । एवं तणु-कसायाण ताण अइक्कंतो कोइ कालो । कयाइ कीरो मरिऊण जाओ तुमं, कीरी वि जाया पुरंदरजसा । एयं सोऊण जायं दोण्हं पि जाईसरणं । रन्ना वुत्तं- तहाविह-विवेय-वियलत्तणेण अप्पमिणं नियाणं फलं पुण विउल-रज्ज-रिद्धि-लक्खणं महंतं ति । सामिणा वुत्तं-

अज्ज वि थोवं पत्तं तए फलं वीयराय-पूयाए ।
पुन्नाणुबंधि-पुन्नाणुभावओ पाविहिसि बहुयं ॥३५६४॥

तहाहि-

एत्तो पिया-समेओ सोहम्मं वच्चिउं तओ चविओ ।
पुव्वविदेहे पुंडरिगिणीए निवचंद-निवइस्स ॥३५६५॥

सिरिचंदाए पियाए होहिसि ललियंगओ तुमं पुत्तो ।
देवी वि एत्थ विजए मणिनिहि-नयरम्मि रम्मम्मि ॥३५६६॥

सिव-राइणो सिवाए देवीए सुंदरा सुया होही ।
नामेणुम्मायंती उम्मायंती तरुणलोयं ॥३५६७॥

मयरद्धय-निहि-कलसायमाण-थणमुल्लसंत-लायन्नं ।
सा तारुन्नं पत्ता तो जणणी-जणिय-सिंगारा ॥३५६८॥

पिउ-पाय-पणमणत्थं वच्चिस्सइ सो वि तीए रूवसिरिं ॥
सयल-जयब्भहियं पिच्छिऊण चिंतिस्सए एयं ॥३५६९॥

मन्ने न को वि उचिओ वरो इमीए नरिंद-तणएसु ।
जुत्तो सयंवरो ता वरउ वरं तत्थ इच्छाए ॥३५७०॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एवंकए न दोसो अणुचिय-वर-दाणओ मह हवेज्ज ।
तत्तो निवचंद-निवो सयंवरामंडवं काही ॥३५७१॥

मिलिस्संति तत्थ बहवे रायपुत्ता, तेसिं मज्झे चत्तारि- चउसु विज्जासु कुसला- जोइसे सीहो, विमाण-निम्माणे पुहइपालो, गारुडे अजो, धणुव्वेए ललियंगओ । उम्मायंती वि कयसिंगार-तिरच्छच्छ-विच्छोहेहिं समुच्छलंत-मच्छरिंछोलि-संछन्ना लायन्न-जलहि-लहरि व्व तत्थागया वागरिस्सइ- जोइस-विमाण-गारुड-धणुव्वेय-विज्जाण मज्झे जो एगाए वि विज्जाए कुसलो सो मम वरो होउ त्ति । तओ ललियंगो राहावेहं काऊण धणुव्वेय-कोसल्लं दंसिही ।

तस्स खिविस्सइ कंठे एसा गंधंध-महुयर-रवेण ।
ललियंग-धणुव्वेयं सलाहमाणिं व वरमालं ॥३५७२॥

एत्थंतरे काम-परव्वसो कामंकुरो नाम खेयरो उम्मायंतिं अवहरिस्सइ । तओ तीए जणगलोगो ललियंगय-पमुहा य रायपुत्ता परिहूयमत्ताणं मन्नंता विसायं गमिस्संति । तत्थ जोइसिओ जेण जत्थ वा सा नीया तं कहिस्सइ । विमाणकारी विमाणं करिस्सइ । जोइसिय-कहिय-मग्गो विमाणारूढो ललियंगओ गमिस्सइ, वच्चंतो य हिमवंत-पव्वए पेक्खिस्सइ सखेयं खेयरेण पायवडिएण पसाइज्जमणिं उम्मायंतिं । तओ धणुदंडहत्थो ललियंगो भणिस्सइ एयं-'अरे दुरायार ! परकलत्तं हरिऊण मणुस्सो होसु ।' कामंकुरो करवालकरो भविस्सइ संमुहो ।

मिल्लिस्सइ ललियंगो तहा सरं खेयरं पइ सरोसो ।
जह भिंदिऊण सो तं सहस त्ति परेण नीहरिही ॥३५७३॥

तेणेव बाण-मग्गेण तस्स पाणा वि निक्खमिस्संति ।
को वा सदोस-ठाणाओ लद्धछिद्दो न नीहरइ ? ॥३५७४॥

ललियंगो वि उम्मायंतिं विमाणारूढमाणिऊण समप्पिस्सइ पिउणो । तं च रयणीए भुयंग-डक्कं जीवाविस्सइ गारुडिओ । एत्थंतरे कओवयारा चत्तारि वि रायसुया तीए विवाह-कए विवायं करिस्संति । 'कस्सेसा दिज्जउ ?'त्ति चिंताउरे गुरुयणे भणिस्सइ उम्मायंती-'जो मए समं परलोयमणुसंधइ सो मे पइ होउ ।'त्ति । तओ ललियंगओ पुव्वभवारूढ-सिणेहो इमं पि पडिवज्जिऊण पविसिस्सइ तीए सह चियाए। पज्जालिए जलणे पुव्वकय-सुरंगादारेण दो वि नीहरिस्संति ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इयरे त्ति 'मया रायधुय' त्ति कयनिच्छया गमिस्संति सठाणं । परिणिस्सइ ललियंगओ उम्मायंतिं । तीए सह समागयं ललियंगयं निय-नयरे निवचंद राया सयं दिक्खा-गहणेण कओज्जमो ठविस्सइ निय-रज्जे । ललियंगो वि उम्मायंतीए सह विसए सेवंतो चिरं रज्जं पालिऊण सरयब्भ-पडलं पढमं पवड्ढमाणं पच्छा पवणाहयं तक्खण-विणट्ठं च पेच्छंतो विरत्तो चिंतिस्सइ जहा-

घण-पडलमिणं जह वड्ढिऊण पवणाहयं गयं विलयं ।
तह चेव रूव-जोव्वण-सिरीओ सहसा पणस्संति ।।३५७५।।

ता सुकयं चेव काउं जुज्जइ त्ति चिंतापरस्स तस्स आगमिस्सइ सिरिहर-नाम तित्थयरो । तस्संतिए देसणं सोऊण नियपुत्त-दिन्न-रज्जो भज्जाए समं ललियंगो दिक्खं गिण्हिस्सइ । तिव्व-तव-च्चरणपराणि मरिऊण ईसाणदेवलोए दोवि देवत्तं लहिस्संति । तओ चुओ ललियंगय-जीवो धाईसंडे पुव्व-विदेहे रयणावईए पुरीए रयणनाह-रन्नो कमलावईए देवीए देवसेणो नंदणो । निरुवमेणं रूवेणं ललिएणं लायन्नेणं उदग्गेणं सोहग्गेणं महल्लेणं कलाकोसल्लेणं तोसियत्थि-संघाएणं चाएणं गुरुयणाणंद-जणएणं विणएणं अलद्धहीलेणं सीलेणं सयल-सुर-नर-खेयराणं पि सलाहणिज्जो भविस्सइ । उम्मायंती-जीवो य वेयड्ढ-पव्वए उत्तर-सेढीए मणिकुंडल-नयरे मणिवइणो रन्नो मणिमालाए देवीए चंदकंता कन्ना होही । सा य विज्जाहर-मुहाओ देवसेणस्स गुणे सोऊण अणुराग-परवसा खेयराणं नामं पि न सहिस्सइ । भूगोयर-अणुरत्त त्ति निंदिस्संति तं खेयरा । पन्नविस्संति सयणा जहा- असरिसगुणो ते देवसेणो त्ति । तहावि न विरमिस्सइ तदणुबंधाओ । तओ चिंतिस्सइ गुरुजणो- अत्थि ताव चंदकंताए देवसेणे पेम्मं । जइ तस्स वि एयं पइ हवेज्ज ता सुंदरं ।

प्रेमरम्यमुभयोः समं दिशोर्जायते यदिह चाषपिच्छवत् ।
एकतस्तु न चकास्ति साध्वपि ध्यामपृष्टमिव बर्हिणच्छदम् ।।३५७६।।

तओ तस्स पेम्म-परिक्खण-पुव्वं आणयणत्थं पेसिस्सइ चित्तमायं नाम खेयरं । सो वि चंदकंताए पडिच्छंदयं घेत्तूण गमिस्सइ रयणावईए नयरीए । दंसिस्सइ देवसेणस्स पडिच्छंदयं । सो वि तं दट्ठूण विम्हिय-मणो भणिस्सइ इमं- भद्द ! अच्चब्भूयं रूवमेयं कीए संतियं ? त्ति ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चित्तमाओ भणिस्सइ- मायंगीए । वियक्किऊण भणिस्सइ देवसेणो-

नूणं कावि विसुद्ध-वंस-पभवा पंकेरुहच्छी इमा ?,
मायंगि त्ति कहेसि जं पुण तुमं मायं ति मन्नेमि तं ।
मायंगी जइ होज्ज ता मह कहं एसा पमोयं मणे ?,
उल्लासेइ जओ हरेइ हिययं हंसस्स किं वायसी ? ॥३५७७॥

एवं सोऊण मुणिय-देवसेण-चित्तो चित्तमाओ विउव्विय-तालतरु-दीहदेहो देवसेणं उक्खिविस्सइ, नइस्सइ मणिकुंडल-नयरे । तओ खेयरिंदो गरुय-रिद्धीए चंदकंताए करग्गहणं कारविस्सइ महासक्कारेण । कित्तियं पि कालं धरिऊण, गुरुयण-दंसणूसुयं सुयाए चंदकंताए समं विमाणारूढं नियपुरीए पराणिस्सइ ।

तीए सह देवसेणो विसय-सुहं सेविही विहिय-नेहो ।
अह सग्ग-गए जणए रज्जं परिपालिही सुइरं ॥३५७८॥
पिउ-पेसिएहिं वर-गंध-कुसुम-पमुहेहिं चंदकंताए ।
भोगो होही समए कुल-कप्पतरु त्ति तुह पुत्तो ॥३५७९॥

कयाइ किंकर-खयर-पमाय-दोसओ अहिणव-भोगंगाणं कुसुमाईणं असंपत्तीए वासिएहिं पि तेहिं चंदकंता करिस्सइ सिंगारं । सो य अच्चंत-मणहरो न भविस्सइ । तओ सहीजणो परिहासं विहिस्सइ जहा-देवि ! न वल्लहा तुमं पिउणो जमेवं भोगंगाण परिहाणी ! चंदकंता वि तक्खणेण वेरग्गं वच्चिहीही पिया वि मे मंद-नेहो जाओ ।

जत्थ सिणेहाभावं नियय-अवच्चेसु वच्चइ पिया वि ।
निय-कज्ज-नेहलाणं का गणणा तत्थ सेसाणं ? ॥३५८०॥

एवं भव-विरत्त-चित्तं चंदकंतं पेच्छिऊण राया वि विसय-विमुहो होही । एत्थंतरे विउलजसो तत्थ तित्थयरो समागमिस्सइ । तओ पुत्तं रज्जे ठविऊण देवसेणो देवी-सहिओ तस्संतीए वयं गेण्हिस्सइ ।

कय-तिव्व-तवच्चरणो वेयावच्चम्मि निच्चमुज्जुत्तो ।
सो देवसेण-समणो अज्जिस्सइ चक्किणो भोए ॥३५८१॥
सो जीवियावसाणे पाविस्सइ बंभलोय-इंदत्तं ।
देवी वि चंदकंता होही सामाणिओ तस्स ॥३५८२॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भोत्तूण तत्थ अक्खंड-सोक्खमाउक्खए तओ चविउं ।
धाईसंडे पुव्विल्ल-मंदरासन्न-विजयम्मि ॥३५८३॥

अमरावईपुरीए सिरिसेण-निवस्स सुजस-भज्जाए ।
गय-वसहाइ-चउद्दस-सुविणय-पायडिय-चक्किपओ ॥३५८४॥

सो देवसेण-देवो पियंकरो नाम नंदणो होही ।
देवी-जीवो पुण सुमइ-मंति-पुत्तो य पियमित्तो ॥३५८५॥

पुव्व-भवब्भासवसेण ताण होही परोप्परं पीई ।
अह सिरिसेणो दट्ठुं जरा-वियारं निय-सरीरे ॥३५८६॥

चिंतिस्सइ जस्स कए विवेय-वियलेहिं कीरए पावं ।
तं पि अधुवं सरीरं तम्हा धम्मो धुवो सरणं ॥३५८७॥

तत्तो रज्जे ठविउं पियंकरं गेण्हिही सयं दिक्खं ।
कय-तिव्व-तवच्चरणो लहिही कालेण निव्वाणं ॥३५८८॥

होही कमेण चक्की पियंकरो विजिय-विजय-छक्खंडो ।
पियमित्तो मंति-सुओ इमस्स मंतित्तणं काही ॥३५८९॥

सेणावइ गाहावइ पुरोहिय गय तुरय वड्ढइ इत्थी ।
चक्कं छत्तं चम्मं मणिकागिणि खग्ग दंडो य ॥३५९०॥

पुव्विल्लाणं सत्तण्हं पंचिदियाणं पच्छिमाणं सत्तण्हं एगिंदियाणं रयणाणं-

नेसप्प पंडुए पिंगले य सव्व-रयणे य महापउमे ।
काले य महाकाले माणवग महानिही संखे ॥३५९१॥

इमाणं नवण्हं निहीणं, सोलसण्हं अंगरक्ख-सहस्साणं, बत्तीसाए मउडबद्ध-रायसहस्साणं, बत्तीसाए रायकन्ना-सहस्साणं, बत्तीसाए जणवयधूया-सहस्साणं, बत्तीसाए नाडय-सहस्साणं, तिण्हं तेसट्ठाणं सूवयार-सयाणं, अट्ठारसण्हं सेणिप्पसेणीणं, पत्तेयं चउरासीए करि-तुरय-रह-लक्खाणं, छन्नवईए पायक्क-कोडीणं, बत्तीसाए जणवय-सहस्साणं, नवनवईए दोणमुह-सहस्साणं, अडयालीसाए पट्टण-सहस्साणं, चउवीसाए कव्वड-सहस्साणं, चउवीसाए मडंब-सहस्साणं, चउवीसाए आगर-सहस्साणं, सोलसण्हं खेड-सहस्साणं, चउद्दसण्हं संवाह-सहस्साणं, छन्नवईए गाम-कोडीणं, छप्पन्नाए अंतरोदगाणं,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एगूणपन्नासाए कुरूज्जाणं च । सामी चिरं चक्कवट्टि-भोए भुंजिस्सइ पियंकरो ।

अन्नया तित्थयर-पउत्ति-निउत्त-पुरिसा विन्नविस्संति तं-देव ! कुसुमसारुज्जाणे सयल-सुरासुरिंदविंद-वंदिज्जमाण-चलणारविंदो सिवंकरो अरहा समोसढो । तेसिं तोसभर-निब्भरो चक्की अद्ध-तेरस-कोडीओ तुट्ठिदाणं दाऊण सपरिवारो जिणिंद-वंदणत्थं वच्चिही ।

नमिऊण तित्थनाहं पुरो निसन्नो य पुच्छिही चक्की ।
चक्कित्तं कह पत्तं कहं च मे वल्लहो मंती ? ॥३५९२॥

तो जिणवरो कहिस्सइ तुमए कीरीजुएण करिण ।
विहिया जिणिंद-पूया इच्चाई पुव्वभव-चरियं ॥३५९३॥

किञ्च,

पुव्वं पुन्न-दुमो दुवेहिं ववियो तुब्भेहिं काऊण जं,
पूयं तित्थयरस्स चूय-कुसुमुक्केरेण कीरत्तणे ।
तस्सेमं कुसुमं नरामर-सुहं चक्कित्त-मंतिस्सिरी,
पजलंतं लहिउं लहिस्सह धुवं निव्वाण-सुखं फलं ॥३५९४॥

तयणु जिण-समीवे चक्कवट्टी खणेणं,
विसयसुह-विरत्तो पुत्त-निक्खित्त-रज्जो ।
सह निय-सचिवेणं गिण्हिउं साहु-दिक्खं,
गलिय-सयल-पावो पाविही मोक्ख-सोक्खं ॥३५९५॥

इय भूय-भाव-चरियं नियय निहिकुंडलो सह पियाए ।
सोऊण विसय-विमुहो निय-सुय-संठविय-रज्जभरो ॥३५९६॥

सुमइ-जिण-चलण-मूले गिण्हइ दिक्खं भवुक्खणण-दक्खं ।
कय-तिव्व-तवो समए मरिउं सोहम्ममणुपत्तो ॥३५९७॥

तत्तो साकेयाओ पुराओ अन्नत्थ विहरिओ भयवं ।
तियस-कय-कणय-कमलेसु नवसु संठविय-कम-कमलो ॥३५९८॥

सव्वत्तो पसरिय-गुरु-कसाय-दावानलेण डज्झंतं ।
भुवणं वणं व निव्वइ-वयण-धाराहि मेहो व्व ॥३५९९॥

एगेण दाहिणेणं करेण वरदो परेण सत्तिधरो ।
वामेण गाणगेयं पासं अवरेण वहमाणो ॥३६००॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तुंबरु नामा जक्खो धवलंगो गरुडवाहणो निच्चं ।
कुणइ सिरि-सुमइ-तित्थंकरस्स तित्थम्मि सन्निज्झं ॥३६०१॥

वरदा एगेण करेण दाहिणेणं परेण पासधरा ।
वज्जउरंकुस-कलिएहिं वाम-हत्थेहिं रेहंती ॥३६०२॥

नामेण महाकाली कमल-निसन्ना सुवन्नवन्न-तणू ।
सासणदेवी सिरि-सुमइ-नाह-तित्थम्मि संजाया ॥३६०३॥

विहरंतस्स भयवओ वीस-सहस्साहियाइं साहूण ।
मोक्खपय-बद्ध-लक्खाइं तिन्नि-लक्खाइं जायाइं ॥३६०४॥

सीलवईणं मत्थय-मणीण समणीण मोहसमणाणं ।
जायाइ पंचलक्खा तीस-सहस्सेहिं संजुत्ता ॥३६०५॥

केवलनाणीण गुणोह-रयण-खाणीण महुरवाणीणं ।
जणिय-जण-पावहाणीण हुंति तेरस-सहस्साइं ॥३६०६॥

मणपज्जवनाणीणं चारित्तनरिंद-रायहाणीणं ।
जायाइं दस-सहस्साइं अद्ध-पंचम-सयाइं च ॥३६०७॥

एक्कारस-सहस्साइं पुन्निक्कनिहीण ओहिनाणीणं ।
चउसयजुया चउद्दसपुव्वीण दुवे तह सहस्सा ॥३६०८॥

वेउव्वियलद्धीणं विलसंत-महंत-परमरिद्धीणं ।
वरबुद्धीणं चउसय-सहिया अट्ठारस-सहस्सा ॥३६०९॥

परवाइ-पराजय-जाय-जयपसिद्धीण वायलद्धीणं ।
पंचास-अहिय-चउसय-सहियाइं दस-सहस्साइं ॥३६१०॥

एक्कासीई-सहस्साहियाइ लक्खाइं सावयाण दुवे ।
पंचेव य लक्खा सावियाण सोलस-सहस्सजुया ॥३६११॥

केवलनाणुप्पत्तीए पुव्वलक्खं दुवालसं गूणं ।
वीसाए वरिसेहिं य रहियं विहरइ पहू भुवणे ॥३६१२॥

निव्वाण-गमण-समयं नियंयं नाऊण सुमइ तित्थयरो ।
निय-परिवार-समेओ सम्मेय-गिरिम्मि संपत्तो ॥३६१३॥

जो पवणाहय-बहु-विडविविडव-निवडंत-कुसुम-नियरेण ।
सोहइ पहुणो भत्तीए पाय-पूयं व विरयंतो ॥३६१४॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रयणमय-सिहर-दूरुच्छलंत-निज्झरण-नीर-पूरेण ।
हरिसेण सहइ सामिस्स मज्जणं काउकामो व्व ॥३६१५॥

वर-पउमराय-फलिहिंदनील-किरणेहिं रेहइ जिणस्स ।
घुसिण-सिरिखंडमय-मयविलेवणं विरयमाणो व्व ॥३६१६॥

रवि-किरणाहय-रविमणि-समुत्थ-जलणेण डज्झमाणेहिं ।
कप्पूरागरु-दारुहिं धूवमुग्गाहयंतो व्व ॥३६१७॥

पवणुव्वेल्लिर-पल्लव-करेहिं नट्टं पयासयंतो व्व ।
गायंतओ व्व कुसुमावसत्त-भसलावलि-रवेण ॥३६१८॥

तं सम्मेय-महीहरमारूढो जिणवरो तओ तत्थ ।
सुर-जोइसियासुर-वंतरेहिं विहियं समोसरणं ॥३६१९॥

तत्थ निसन्नो सिंहासणम्मि सूरो व्व उदय-सेलम्मि ।
वयण-किरणेहिं पयडइ भावाणं अवितहं रूवं ॥३६२०॥ तथाहि-

स्वाम्यं स्वप्नसमं समागम-सुखं सन्ध्याभ्रलेखा-मुखम्,
तारुण्यं करि-कर्ण्ण-ताल-तरलं लक्ष्मीं तडिद्भंगुरीम् ।
आयुर्वायुचलं बलं कुसलता-लग्नाम्बु-बिन्दूपमम्,
मत्वा विश्वमशाश्वतं वितनुत क्षेमाय धर्म्मोद्यमम् ॥३६२१॥

इय धम्मदेसणामयरसेण संपीणिऊण भविय-गणं ।
आरुहइ पहू तुंगं सिंगं सम्मेय-सेलस्स ॥३६२२॥

तत्थ पसत्थ-सिलाए समं सहस्सेण केवलि-मुणीणं ।
पउमासणोवविट्ठो सुमइ-जिणो अणसणं कुणइ ॥३६२३॥

अह बत्तीस सुरिंदा सामाणिय-पमुह-देव-परियरिया ।
निय-तणू-पहा-पयासिय-गयणयला तत्थ संपत्ता ॥३६२४॥

सह अच्छराहिं वंदंति सामिणं संथुणंति गायंति ।
नच्चंति पुरो बहुमाण-निब्भरा पज्जुवासंति ॥३६२५॥

इंतेहिं नियत्तेहिं देव-देवी-गणेहिं संछन्नं ।
सम्मेय-सेल-सग्गंतरालमुव्वहइ सग्ग-सिरिं ॥३६२६॥

मासंते ज्झायंतो सुक्कज्झाणस्स चरम-भेयमिमो ।
लहु-पंचक्खर-भणणप्पमाण-सेलेसिमारूढो ॥३६२७॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चित्तस्स सुद्ध-नवमीए रयणिनाहे पुणव्वसु-गयम्मि ।
लद्धूण नाण-दंसण-सुह-विरिय-चउक्कयमणंतं ॥३६२८॥
निट्ठविय-भवोवग्गाहिय-कम्म-वेयणिय-नाम-गोत्ताऊ ।
सह साहु-सहस्सेणं सुमइ-जिणिंदो सिवं पत्तो ॥३६२९॥
सिद्धिगइ-नामधेयं सिद्धंतधरेहिं जं समक्खायं ।
हिमहार-धवल-वन्नं उत्ताणिय-छत्त-संठाणं ॥३६३०॥
पणयालीसा जोयण-लक्ख-पमाणं च जं विणिद्दिट्ठं ।
जं अट्ठ-जोयणाइं बाहल्लं वहइ मज्झम्मि ॥३६३१॥
कमसो हायंते तम्मि मच्छिया-पत्त-तणुयरं अंते ।
जम्म-जरा-रोग-विओग-सोग-मरणेहिं रहियं जं ॥३६३२॥
जं कोह-माण-माया-लोहुब्भव-दुक्खलक्ख-परिचत्तं ।
ईसा-विसाय-भय-मयण-मोह-रइ-अरइ-परिहरियं ॥३६३३॥
निद्दा-खुहा-पिवासा-विसयासाणिट्ठजोग-मुक्कं जं ।
तस्संतिम-अट्ठम-जोयणस्स पज्जंत-कोसो जो ॥३६३४॥
तस्स वि छट्ठे भागे भणियमवट्ठाणमखिल-सिद्धाणं ।
जेसिं न इंदियाइं न इंदियत्था न य सरीरं ॥३६३५॥
भवतणु-तिभागहीणावगाहणो नाणदंसण-सरूवो ।
तेसिं मज्झे भयवं जाओ जीवप्पएस-घणो ॥३६३६॥
तत्तो निव्वाणगयं मुणिऊण जिणेसरं सुमइनाहं ।
बत्तीसा वि सुरिंदा समन्निया देवदेवीहिं ॥३६३७॥
हिययब्भंतर-पसरिय-सोयानल-डज्झमाण-सव्वंगा ।
मिल्लंति अद्ध-कड्ढं व बाह-संदोह-नीसंदं ॥३६३८॥
वेउव्विय-बाह-जलप्पवाह-संसित्त-सयल-महिवलया ।
गरूय-सरेण रूयंता सद्देक्कमयं कुणंति जयं ॥३६३९॥ तहा
एत्तिय-कालं ति-जयं आसि सणाहं तुमम्मि विहरंते ।
संपइ सिवपय-पत्ते नाह अणाहं इमं जायं ॥३६४०॥
तइं तइलोक्क-पईवे निव्वाण-गयम्मि नाह भविय-गणो ।
कह मोह-तमोह-घणे संचरिही मोक्ख-मग्गम्मि ? ॥३६४१॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तइं अत्थमिए सूरे व्व केवलालोय-पयडिय-पयत्थे ।
मोहंधयार-रुद्धं तिहुयणमेयं कहं होही ? ॥३६४२॥

भीम-भवाडवि-मज्झे कसाय-तक्करगणेण अम्हाणं ।
लूडिज्जंताण तुमं मुत्तुं को रक्खणं काही ? ॥३६४३॥

उद्धरणखमो वि तुमं भुवणं भव-कूव-निवडियं मोत्तुं ।
जं पत्तो मोक्खे तुह तं किं जुत्तं दयानिहिणो ? ॥३६४४॥

मोह-नरिंद-निरुद्धे कुवासणा-लोहसंकला-बद्धे ।
भवचारयाउ तुममंतरेण को कड्ढिही अम्हे ? ॥३६४५॥

नाह ! तुमं कप्पतरू संसार-मरुत्थलम्मि जाओ वि ।
संपइ गओ सि कत्थ वि अहह अहन्ना इमे अम्हे ॥३६४६॥

निस्संख-दुक्खलहरी-भीमे भवसायरम्मि बुड्डंतं ।
जं छड्डिऊण भुवणं पत्तो सि सिवं न तं जुत्तं ॥३६४७॥

एवं चउव्विह सुरा खयरा मणुया य सह निय-पियाहिं ।
सिरि-सुमइनाह-विरहे विलवंति महंत-सोएण ॥३६४८॥

मोक्खपयं संपत्ते पहुम्मि धम्मोवएसमलहंते ।
विलवइ सव्वो वि जणो निय-कज्जं वल्लहं जेण ॥३६४९॥

तत्तो सुरेसरेहिं खीरोयप्पमुह-नीरपूरेण ।
घण-घुसिण-गंध-मीसेण सामिणो देहमहिसित्तं ॥३६५०॥

मयणाहि-सणाहेणं लित्तं हरियंदणेण सव्वत्तो ।
सोरब्भ-गुण-निवासेहिं वासियं पवर-वासेहि ॥३६५१॥

धूवेहिं धूवियं देवदारु-कप्पूर-अगुरु-पमुहेहिं ।
संछाइयं अदूसेण सव्वओ देवदूसेण ॥३६५२॥

मंदार-पारियाय-संताणय-पमुह-कुसुममालाहिं ।
संपूईऊण ठवियं देवच्छंदम्मि रयणमए ॥३६५३॥

तं उक्खिविउं इंदा किंकरसुर-पहय-तूर-सद्देण ।
गोसीस-चंदणागुरु-निचियाए चियाए ठावंति ॥३६५४॥

एवं असेस-किच्चं काउं सामाणिएहिं देवेहिं ।
चियगासु ठावियाइं सेस-जईणं सरीराइं ॥३६५५॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तो अग्गिकुमारेहिं सुहेण जलणो चियासु पक्खित्तो ।
पज्जालियाओ एयाओ वाउणा वाउकुमरेहिं ॥३६५६॥

अह सुमइनाह-देहस्स मंस-रुहिरम्मि झामिए मुत्तुं ।
मेहकुमारेहिं जलं सुरेहिं विज्झाविया चियगा ॥३६५७॥

तत्तो गिण्हइ पहुणो उवरिल्लं दाहिणं हणुं सक्को ।
चमरिंदो हेट्ठिल्लं व गिण्हए दाहिणं हणुगं ॥३६५८॥

वामं ईसाणिंदो उवरिल्लं हिट्ठिमं बली लेइ ।
सेसट्ठवीस-दंते कमेण गिण्हंति सेसिंदा ॥३६५९॥

सेसऽट्ठियाणि देवा रक्खं पुण खेयरा नरा लिंति ।
अहमहमिगाए उवसग्ग-वग्ग-निग्घायण-निमित्तं ॥३६६०॥

माणवग-खंभ गयदंत-निहिय-सक्कय-समुग्गयगणेसु ।
वयरमएसु सुरिंदा ठवंति जत्तेण सकहाओ ॥३६६१॥

पूयंति ताओ निच्चं जइ तेसिं कोइ परिभवं कुज्जा ।
तो तन्हवण-जलेणं कुणंति ते अप्पणो रक्खं ॥३६६२॥

लोए वि कप्परुक्खो संकप्पियमप्पए वणसई वि ।
चिंतारयणं उवलो वि वियरए चिंतियं वत्थुं ॥३६६३॥

संजणइ तक्खणेणं कामियमत्थं पसू वि कामदुहा ।
दद्दुर-सप्पाइ-मणी अट्ठि-सरूवो वि हणइ विसं ॥३६६४॥

तणरूवाओ वि हु ओसहीओ साहेंति हत्थबद्धाओ ।
जरहरण-वसीयरण-प्पमुहाइं महंत-कज्जाइं ॥३६६५॥

इय जइ वि चेयणाण वि विसिट्ठ-गुण-लेस-वज्जियाणं पि ।
साइसय-कज्ज-करणप्पवण विप्फुरइ माहप्पं ॥३६६६॥

ता केवलनाणधराण जइ जिणिंदाण तव-समिद्धाण ।
देहावयवा साहंति वंछियं तत्थ किं चोज्जं ? ॥३६६७॥

पहु-सक्कारट्ठाणे तियसा थूभं कुणंति रयणमयं ।
रयणमयं पहु-पडिमं तदुवरि ठविऊण पुज्जंति ॥३६६८॥

उक्किरइ मोक्ख-सिलायलम्मि नामं च लक्खणाइं च ।
वज्जेणावज्जहरस्स वज्जपाणी-जिणिंदस्स ॥३६६९॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तत्तो य जंति नंदीसरम्मि दीवे सुरासुरा सव्वे ।
सासय-जिणभवणेसुं कुणंति अट्ठाहिया-महिमं ॥३६७०॥

अह चित्तम्मि धरंता टंकुक्किन्नं व सुमइ-जिणनाहं ।
निय-निय-परिवारजुया निय-निय-ठाणेसु वच्चंति ॥३६७१॥

कुमरत्ते दसलक्खा पुव्वाणं सुमइ-सामिणा गमिया ।
एगूणतीस लक्खा रज्जम्मि दुवालसंगजुया ॥३६७२॥

एगं च पुव्वलक्खं कयं चरित्तं दुवालसंगूणं ।
चालीस पुव्वलक्खा सव्वाओ भयवओ एवं ॥३६७३॥

अभिनंदण-निव्वाणाउ सुमइनाहस्स निव्वुई जाया ।
इह सागरोवमाणं गएसु नवकोडि-लक्खेसु ॥३६७४॥

अह सामि-विरह-विहुरिय-चित्तस्स चउव्विहस्स संघस्स ।
चमरो पढम-गणहरो एवं अणुसासणं कुणइ ॥३६७५॥

कम्म-नियलाइं छित्तूण भीम-भव-चारयाओ निक्खंतो ।
संपत्तो जत्थ पहू सासयमाणंदमय-सोक्खं ॥३६७६॥

तम्मि पहु-परम-पय-गमण-वासरे गरूय-मंगलप्पसरे ।
पडिहय-सोयावसरे किं न पमोयं मणे कुणह ॥३६७७॥

तत्तो पुच्छइ संघो- परम-पए केरिसं सुहं भयवं ? ।
चमरो पयंपए- सुणह इत्थ अत्थम्मि दिट्ठंतो ॥३६७८॥

को वि नरिंदो निय-पट्टणाओ विवरीय-सिक्ख-तुरएण ।
अडवीए पक्खित्तो खुहा-तिसा-पीडिओ संतो ॥३६७९॥

पायव-तलम्मि पडिओ केणावि पुलिंदएण करुणाए ।
विहिओ पउणसरीरो वर-सलिल-फलप्पयाणेण ॥३६८०॥

मिलियम्मि नियय-सेन्ने नेइ कयन्नु त्ति तं निवो नयरे ।
ठावइ मणिपासाए परिहावइ पट्टवत्थाइं ॥३६८१॥

वर-मोयग-पमुहेहिं दिव्वाहारेहिं पीणइ पुलिंदं ।
तह वि न सो लहइ रइं निय-जम्मसुवं सुमरमाणो ॥३६८२॥

मुणिऊण इमं रन्ना विसज्जिओ सो नियं गओ अडविं ।
मिलिओ सयणाण इमेहिं पुच्छिओ-'कत्थ पत्तो सि ?' ॥३६८३॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सो कहइ-'नरवरेणं नयरे नीओ म्हि' ते पयंपंति-।
'केरिसयं तं नयरं ?' सो बुल्लइ-'पल्लितुल्लं ति' ॥३६८४॥

ते बिंति-'कत्थ वसिओ ?' सो जंपइ-'मणिमयम्मि पासाए !'
ते बिंति-'केरिसो सो ?'सो जंपइ-'उडव-सारिच्छो' ॥३६८५॥

ते बिंति-'किं परिहियं तुमए ?'सो भणइ-'पट्टवत्थाइं' ।
ते बिंति-'केरिसाइं ?' सो जंपइ ।-'वक्कल-समाइं' ॥३६८६॥

ते बिंति-'किं चि भुत्तं ?'सो जंपइ-'मोयगा' भणंति इमे-।
'ते केरिसा ?'पुलिंदो जंपइ-'परिपक्क-बिल्ल-समा' ॥३६८७॥

इय अडवि-पसिद्धेहिं दिट्ठंतेहिं अदिट्ठ-नयराणं ।
अह सो सयणाण पुरो नयर-सरूवं परूवेइ ॥३६८८॥

तह अमुणिय-सिद्ध-सुहाण सिद्धि-सुक्खं पि अणुवमत्तेण ।
वुलुमसक्कं पि कहेमि किंपि जयपयड-नाएण ॥३६८९॥

सयलाऽऽहि-वाहि-रहिओ महुराहारेहिं पीणिय-ससरीरो ।
तरुणो कलासु कुसलो वियड्ड-मित्तेहिं परियरिओ ॥३६९०॥

सुणमाणो संपीणिय-कन्नं किन्नर-कयं सरस-गेयं ।
पेच्छंतो बहुविह-हावभाव-रम्मं रमणि-नट्टं ॥३६९१॥

कुसुम-मयणाहि-घणसार-चंदणामोय-मोइयप्पाणो ।
कप्पूर-पारिपरिगय-पगिट्ठ-तंबोल-सुरहि-सुहो ॥३६९२॥

पट्टंसुय-पच्छाईय-महल्ल-पल्लंक-हंसतूलि-गओ ।
पेसलए सन्निहिय-कामिणी-विहिय-चडुकम्मे ॥३६९३॥

इय अणुकूले विसए सेवंतो जं सुहं जणो लहइ ।
तं एक्क-सिद्ध-सुक्खस्स होइ नाणंतभागो वि ॥३६९४॥

भणियं च-

जं च कामसुहं लोए जं च दिव्वं महासुहं ।
वीयराय-सुहस्सेहाणंतभागे न अग्घई ॥३६९५॥

एवं निम्मिय-निक्कलंक-भुवणालोयम्मि अत्थंगए,
सव्वन्नुम्मि दिणेसरे व्व चमरो चारित्त-चूडामणी ।
तत्तेयं लहिऊण मोक्ख-पयवी पज्जोयणो पच्चलो,
लोए मोह-महंधयार-नियरं दीवो व्व विद्धंसए ॥३६९६॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कत्थाहं जड-बुद्धि धाम-चरियं ? सव्वन्नुणो कत्थ वा ?,
नाऊणं पि इमं इमं विरईयं हासावहं जं मए ।
तं एयस्स पभावओ च्चिय जणे सोहं परं पाविही,
लद्धुं सिप्पउडं न किं जललवो मुत्ताहलं जायए ? ॥३६९७॥

एयं पंचम-तित्थनाह-चरियं संवेय-संजीवणं,
संसारण्णव-लंघण-प्पवहणं कल्लाण-वल्ली-घणं ।
जो वक्खाणइ जो सुणेइ तह जो वाएइ जो ज्झायए,
भुत्तूणं मणुयामरे सुरसुहं सिद्धिं पि सो पावए ॥३६९८॥

* * *

चन्द्रार्कौ गुरुवृद्धगच्छनभसः कर्णावतंसौ क्षिते-
र्धुर्यौ धर्मरथस्य सर्वजगतस्तत्त्वावलोके दृशौ ।
निर्वाणावसथस्य तोरणमहास्तम्भावभूतामुभा-
वेकः श्रीमुनिचन्द्रसूरिरपरः श्रीमानदेवप्रभुः ॥३६९९॥

शिष्यस्तयोरजितदेव इति प्रसिद्धः
सूरिः समस्तगुणरत्ननिधिर्बभूव ।
प्रीतिं यदङ्घ्रिकमले मुनिभृङ्गराजि-
रास्वादितश्रुतरसा तरसा बबन्ध ॥३७००॥

श्रीदेवसूरिप्रमुखा बभूवुरन्येऽपि तत्पादपयोजहंसाः ।
येषामबाधारचितस्थितीनां नालीकमैत्रीमुदमाततान ॥३७०१॥

विशारदशिरोमणेरजितदेवसूरिप्रभो-
र्विनेयतिलकोऽभवद्विजयसिंहसूरिर्गुरुः ।
जगत्त्रयविजेतृभिर्विमलशीलवर्मावृतं
व्यभेदि न कदाचन स्मरशरैर्यदीयं मनः ॥३७०२॥

गुरोस्तस्य पदाम्भोजप्रसादान्मन्दधीरपि ।
श्रीमान्सोमप्रभाचार्यश्चरित्रं सुमतेर्व्यधात् ॥३७०३॥

प्राग्वाटान्वयसागरेन्दुरसमप्रज्ञः कृतज्ञः क्षमी
वाग्मी सूक्तिसुधानिधानमजनि श्रीपालनामा पुमान् ।
यं लोकोत्तरकाव्यरञ्जितमतिः साहित्यविद्यारतिः
श्रीसिद्धाधिपतिः कवीन्द्र-तिलकं भ्रातेति च व्याहरत् ॥३७०४॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सूनुस्तस्य कुमारपालनृपतिप्रीतेः पदं धीमता-
मुत्तंसः कविचक्रमस्तकमणिः श्री सिद्धपालोऽभवत् ।
यं व्यालोक्य परोपकारकरुणासौजन्यसत्यक्षमा-
दाक्षिण्यैः कलितं कलौ कृतयुगारम्भो जनो मन्यते ॥३७०५॥

तस्य पौषधशालायां पुरेऽणहिलपाटके ।
निष्प्रत्युहमिदं प्रोक्तं पदार्थान्त (?)......... ॥३७०६॥

अनाभोगात्किञ्चित्किमपि मतिवैकल्यवशतः
किमत्यौत्सुक्येन स्मृतिविरहदोषेण किमपि ।
मयोत्सूत्रं शास्त्रे यदिह किमपि प्रोक्तमखिलं
क्षमन्तां धीमन्तस्तदसमदयापूर्णहृदयाः ॥३७०७॥

* * *

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org